Bible. Hindi. N.T. [n.d.]

जगतारक

प्रभु यिसू मसीह का

नया नियम।

यूनानी भाषा से हिन्दुवी भाषा में उलथा
किया गया॥
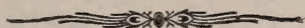
लुदेहाने के मिश्न प्रेस में, अमेरिकन बैबल सोसयटी की ओर से,
पादरी रुडालफ साहिब के यत्न से,
छापा गया।
सम्बत १८६८ यिसूई॥

लागत दो रुपैये॥

सूचीपत्र

सूची पत्र

मंगल समाचार

मत्ती रचित।

१ पर्ब्ब

१ अबिरहाम का पुत्र दाऊद उस के पुत्र यिसू मसीह की बंशावली।

२ अबिरहाम से इसहाक उत्पन्न हुआ और इसहाक से याकूब उत्पन्न हुआ और याकूब से यहूदाह और उस के भाई उत्पन्न हुए। ३ और यहूदाह और तमर से फारस और सराह उत्पन्न हुए और फारस से हसरून उत्पन्न हुआ और हसरून से आराम उत्पन्न हुआ। ४ और आराम से अमिनदब उत्पन्न हुआ और अमिनदब से नहसन उत्पन्न हुआ और नहसून से सलमून उत्पन्न हुआ। ५ और सलमून और राहब से बुअस उत्पन्न हुआ और बुअस और रूत से ओबेद उत्पन्न हुआ और ओबेद से यस्सी उत्पन्न हुआ। ६ और यस्सी से दाऊद राजा उत्पन्न हुआ और दाऊद राजा से और उस से जो ऊरियाह की पत्नी थी सुलेमान उत्पन्न हुआ। ७ और सुलेमान से रहबियाम उत्पन्न हुआ और रहबियाम से अबियाह

उत्पन्न हुआ और अबियाह से असा उत्पन्न हुआ। और ८ असा से यहूसफात उत्पन्न हुआ और यहूसफात से यहूराम उत्पन्न हुआ और यहूराम से उज्जियाह उत्पन्न हुआ। और उज्जियाह से यूताम उत्पन्न हुआ और यूताम ९ से आहस उत्पन्न हुआ और आहस से हिसकियाह उत्पन्न हुआ। और हिसकियाह से मनस्सी उत्पन्न हुआ १० और मनस्सी से अमून उत्पन्न हुआ और अमून से यूसियाह उत्पन्न हुआ। और जिस समय में बाबुल को उठ ११ जाने पड़ा यूसियाह से यहूयकीन और उस के भाई उत्पन्न हुए। और बाबुल को उठ जाने के पीछे यहूयकीन १२ से सियालतियेल उत्पन्न हुआ और सियालतियेल से सरुबाबल उत्पन्न हुआ। और सरुबाबल से अबिहूद १३ उत्पन्न हुआ और अबिहूद से इलयकीम उत्पन्न हुआ और इलयकीम से असूर उत्पन्न हुआ। और असूर से १४ सदुक उत्पन्न हुआ और सदुक से अकीम उत्पन्न हुआ और अकीम से इलिहूद उत्पन्न हुआ। और इलिहूद से १५ इलिअसर उत्पन्न हुआ और इलिअसर से मत्तान उत्पन्न हुआ और मत्तान से याकूब उत्पन्न हुआ। और १६ याकूब से यूसफ उत्पन्न हुआ जो मरियम का पति था जिस के गर्भ से यिसू उत्पन्न हुआ जो मसीह कहावता है। सो सब पीढ़ियां अबिरहाम से दाऊद लों चौदह १७ हैं और दाऊद से बाबुल को उठ जाने लों चौदह पीढ़ी और बाबुल को उठ जाने से मसीह लों चौदह पीढ़ी हैं।

अब यिसू मसीह का जन्म यों हुआ कि जब उस की १८

माता मरियम यूसफ से वचनदत्त हुई उस से पहिले कि
१९ वे एकट्ठे हुए वह पवित्र आत्मा से गर्भिणी पाई गई। तब
उस के पति यूसफ ने जो धर्म्मी था और न चाहा कि उसे
प्रगट में कलंक लगावे उसे चुपके से छोड़ने का मन
२० किया। परन्तु इन बातों की चिन्ता करते देखो कि प्रभु
के दूत ने स्वप्न में उसे दर्शन देके कहा कि हे दाऊद के
पुत्र यूसफ तू अपनी पत्नी मरियम को अपने यहां लाने से
मत डर क्योंकि जो उस के पेट में है सो पवित्र आत्मा से
२१ है। और वह पुत्र जनेगी और तू उस का नाम यिसू रखना
क्योंकि वह अपने लोगों को उन के पापों से बचावेगा।
२२ यह सब हुआ कि जो प्रभु ने भविष्यतवक्ता के द्वारा से
२३ कहा था सो पूरा होवे। कि देखो एक कुंवारी गर्भिणी
होगी और एक पुत्र जनेगी और वे उस का नाम इम्मानू-
एल रखेंगे जिस का अर्थ यह है परमेश्वर हमारे संग।
२४ तब यूसफ ने नींद से उठके जैसा परमेश्वर के दूत ने उस
से कहा था वैसा किया और अपनी पत्नी को अपने यहां
२५ ले आया। और उस को न जाना जब लों वह अपना पहि-
लौठा पुत्र न जनी और उस का नाम यिसू रखा॥

२ पर्व्व

और जब यिसू हेरोदेस राजा के समय में यहूदाह के
बैतलहम में उत्पन्न हुआ तो देखो कई ज्ञानियों ने पूरब
२ से यरूसलम में आके कहा। कि यहूदियों का राजा जो
उत्पन्न हुआ है सो कहां है क्योंकि हम ने पूरब में उस
३ का तारा देखा है और उसे पूजने को आये हैं। जब
हेरोदेस राजा ने यह सुना तो वह और सारा यरूसलम

उस के संग व्याकुल हुए। और जब उस ने लोगों के सब ४
प्रधान याजकों और अध्यापकों को एकट्ठे किया था उस
ने उन से पूछा कि मसीह कहां उत्पन्न होगा। उन्हों ५
ने उस से कहा कि यहूदाह के बैतलहम में क्योंकि भवि-
ष्यतवक्ता ने ऐसा लिखा है। कि हे यहूदाह देश के बैत- ६
लहम यहूदाह के प्रधानों में तू सब से छोटा नहीं है
क्योंकि एक प्रधान जो मेरे लोग इसराएल को चरावेगा
सो तुझ से निकलेगा। तब हेरोदेस ने ज्ञानियों को चुप- ७
के से बुलाके उन से यत्न से पूछा कि वह तारा किस समय
में दिखाई दिया। और उस ने उन्हें बैतलहम को भेजके ८
कहा कि जाओ और यत्न से बालक को ढूंढ़ो और जब तुम
उसे पाओ मुझ को सन्देश पहुंचाओ कि मैं भी आके उस
की पूजा करूं। राजा से यह सुनके वे चले गये और देखो ९
वह तारा जिसे उन्हों ने पूरब में देखा था उन के आगे
आगे चला यहां लों कि जहां वह बालक था वहां आके
ऊपर ठहरा। और वे उस तारे को देखके अत्यन्त आन- १०
न्दित हुए। और जब वे घर में आये उन्हों ने उस बालक ११
को उस की माता मरियम के संग पाया और दण्डवत
करके उस की पूजा किई और अपनी झोलियां खोलके
उसे सोना और लोबान और गन्धरस भेंट चढ़ाई। और १२
परमेश्वर से स्वप्न में आज्ञा पाके कि हेरोदेस के पास
फिर न जावें वे दूसरे पन्थ से अपने देश को फिरे।

उन के जाने के पीछे देखो कि प्रभु के दूत ने स्वप्न में १३
यूसफ को दर्शन देके कहा कि उठ और बालक और उस

की माता को लेकर मिसर को भाग जा और जब लों मैं तुझे न कहूं वहीं रह क्योंकि हेरोदेस बालक को नाश
१४ करने के लिये उसे ढूंढ़ेगा। तब वह उठके रातही को बालक और उस की माता को लेकर मिसर को चल
१५ निकला। और हेरोदेस के मरने लों वहीं रहा कि जो बात प्रभु ने भविष्यतवक्ता के द्वारा से कही थी कि मैं ने अपने पुत्र को मिसर से बुलाया सो पूरी होवे।

१६ जब हेरोदेस ने देखा कि ज्ञानियों से धोखा खाया तो अति क्रोधी हुआ और लोगों को भेजकर बैतलहम और उस के सिवाने के समस्त बालकों को जो दो बरस के और उस से छोटे थे उस समय के समान कि उस ने
१७ ज्ञानियों से यत्न से पूछा था मरवा डाला। तब वह जो
१८ यरमियाह भविष्यतवक्ता ने कहा था पूरा हुआ। कि रामः में एक शब्द सुना गया कि हाहाकार और रोना पीटना और बड़ा बिलाप; राहील अपने बालकों के लिये बिलाप करती और शान्त न होती थी क्योंकि वे नहीं हैं।

१९ परन्तु जब हेरोदेस मर गया देखो प्रभु के दूत ने मिसर
२० में यूसफ को स्वप्न में दर्शन देके कहा। उठ और उस बालक को और उस की माता को लेकर इसराएल के देश को जा क्योंकि वे जो बालक के प्राण के गाहक थे
२१ सो मर गये। तब वह उठके बालक को और उस की
२२ माता को लेकर इसराएल के देश में आया। परन्तु जब उस ने सुना कि अरकिलाऊस अपने पिता हेरोदेस की सन्ती यहूदाह में राज्य करता है तो उधर जाने से डरा

और स्वप्न में परमेश्वर से आज्ञा पाके गलील की ओर चला गया। और आके एक नगर में जो नसिरत कहावता है वास किया कि जो भविष्यतवक्ताओं के द्वारा से कहा गया था कि वह नासरी कहावेगा सो पूरा होवे ॥ २३

३ पर्व्व

उन्हीं दिनों में यहूदाह के बन में यूहन्ना बपतिसमा देनेवाला आकर प्रचारके कहने लगा। मन फिराओ २ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है। क्योंकि यह वही ३ है जिस के बिषय में यसइयाह भविष्यतवक्ता ने यह बचन कहा था कि बन में किसी का शब्द है यह पुकारता हुआ कि प्रभु का मार्ग बनाओ और उस के पन्थ सीधे करो। और यह यूहन्ना ऊंट के रोम का बस्त्र पहिनता और ४ चमड़े का पटुका अपनी कटि में बांधता था और उस का भोजन टिड्डी और बनमधु था। तब यरूसलम और सारे ५ यहूदाह और यर्दन के आस पास के समस्त रहनेवाले उस के पास निकल आये। और अपने अपने पापों को ६ मानकर यर्दन में उस से बपतिसमा पाया।

परन्तु जब उस ने देखा कि बहुत से फरीसी और ७ सदूकी बपतिसमा पाने को उस पास आये तो उस ने उन से कहा हे सांपों के बच्चो आनेवाले कोप से भागने को तुम्हें किस ने चिताया। इस लिये फिरे हुए मन के योग्य ८ फल लाओ। और अपने अपने मन में मत समझो कि ९ अबिरहाम हमारा पिता है क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि परमेश्वर में यह सामर्थ्य है कि इन पत्थरों से अबिरहाम के लिये सन्तान उत्पन्न करे। और अभी पेड़ों को १०

जड़ पर कुल्हाड़ी लगी है इस लिये जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं फलता सो काटा जाता और आग में झोंका जाता है। ११ मैं तो तुम्हें मन फिराने के लिये जल से बपतिसमा देता हूं परन्तु वह जो मेरे पीछे आता है सो मुझ से अधिक सामर्थी है कि उस की जूती उठाने को मैं योग्य नहीं हूं; वह तुम्हें पवित्र आत्मा से और आग से बपतिसमा देगा। १२ उस के हाथ में सूप है और वह अपने खलिहान को अच्छी रीति से उसावेगा और गोहूं को अपने खत्ते में एकट्ठा करेगा परन्तु भूसी को उस आग में जो नहीं बुझती जलावेगा।

१३ तब यिसू गलील से यर्दन को यूहन्ना के पास आया कि उस से बपतिसमा पावे। १४ परन्तु यूहन्ना ने यह कहके उसे बर्जा कि मुझे तुझ से बपतिसमा पाना अवश्य है और तू मुझ पास आता है। १५ यिसू ने उत्तर देके उस से कहा कि अब होने दे क्योंकि हमें यों सकल धर्म्म पूरा करने को चाहिये तब उस ने उसे होने दिया। १६ और यिसू बपतिसमा पाके ज्योंहीं पानी से ऊपर आया देखो उस पर स्वर्ग खुल गया और उस ने परमेश्वर के आत्मा को कपोत के समान उतरते और उस के ऊपर आते देखा। १७ और देखो यह आकाशवाणी हुई यह मेरा प्रिय पुत्र है जिस में मैं अति प्रसन्न हूं॥

४ पर्व्व

तब यिसू आत्मा से बन में पहुंचाया गया कि शैतान से परीक्षा किया जावे। २ और जब चालीस दिन रात उपवास कर चुका उस के पीछे वह भूखा हुआ। ३ तब परीक्षक ने

उस पास आके कहा यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो आज्ञा कर कि ये पत्थर रोटियां बन जावें। ४ उस ने उत्तर देके कहा यह लिखा है कि मनुष्य केवल रोटी से नहीं परन्तु हर एक बात से जो परमेश्वर के मुंह से निकलती है जीता है। ५ तब शैतान उस को पवित्र नगर में ले गया और मन्दिर के कलश पर बैठाया। ६ और उस से कहा यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो अपने को नीचे गिरा दे क्योंकि लिखा है वह तेरे लिये अपने दूतों को आज्ञा करेगा और वे तुझे हाथों हाथ उठा लेंगे न हो कि तेरे पांव को पत्थर से ठेस लगे। ७ यिसू ने उस से कहा फिर भी लिखा है कि तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा मत कर। ८ फिर शैतान उसे एक अति ऊंचे पहाड़ पर ले गया और उस को जगत के सब राज्य और उन का बिभव दिखाये। ९ और उस से कहा यदि तू झुकके मुझे दण्डवत करे तो मैं यह सब कुछ तुझे दूंगा। १० तब यिसू ने उस से कहा हे शैतान दूर हो क्योंकि लिखा है कि तू प्रभु को जो तेरा परमेश्वर है दण्डवत कर और केवल उसी की सेवा कर। ११ तब शैतान ने उसे छोड़ा और देखो कि स्वर्गीय दूत आये और उस की सेवा किई।

१२ जब यिसू ने सुना कि यूहन्ना बन्दीगृह में डाला गया तो वह गलील को चला। १३ और नासिरत को छोड़कर कफरनहूम में जो समुद्र के तीर पर सबुलून और नफताली के सिवानों में है आके रहा। १४ कि जो यसइयाह भविष्यतवक्ता ने कहा था सो पूरा होवे। १५ कि सबुलून और

नफताली की भूमि अर्थात अन्यदेशियों की गलील जो
१६ समुद्र के मार्ग पर यर्दन की ओर है। वहां के लोगों
ने जो अंधियारे में बैठे थे बड़ी ज्योति देखी है और उन
पर जो मृत्यु के देश और छाया में बैठे थे ज्योति प्रकाश
१७ हुआ। उस समय से यिसू ने उपदेश करना और यह
कहना आरंभ किया कि मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का
राज्य निकट आया है।

१८ और यिसू गलील के समुद्र के तीर फिरते फिरते दो
भाइयों को अर्थात समऊन जो पथरस कहावता है और
उस के भाई अन्द्रियास को समुद्र में जाल डालते देखा
१९ क्योंकि वे मछवे थे। और उस ने उन से कहा कि मेरे
२० पीछे हो लेओ कि मैं तुम्हें मनुष्यों के मछवे बनाऊंगा।
२१ वे तुरन्त जालों को छोड़के उस के पीछे हो लिये। और
वहां से आगे बढ़के उस ने और दो भाइयों को अर्थात
सबदी के बेटे याकूब और उस के भाई यूहन्ना को अपने
पिता सबदी के संग नाव पर अपने जालों को सुधारते
२२ देखा और उन्हें बुलाया। तब वे तुरन्त नाव और अपने
पिता को छोड़के उस के पीछे हो लिये।

२३ और यिसू सारे गलील में फिरता और उन की मण्ड-
लियों में उपदेश करता और राज्य का मंगल समाचार
प्रचारता और लोगों के सारे रोग और व्याधि चंगा
२४ करता था। और उस की कीर्त्ति समस्त सूरिया में फैल
गई और वे सब रोगियों को जो भांति भांति के रोगों
और पीड़ाओं से दुःखी थे और पिशाचग्रस्तों और अर्द्धां-

गियों को और मिर्गीहों को उस पास लाये और उस ने उन्हें चंगा किया। और बड़ी बड़ी भीड़ गलील और २५ दिकापोलिस और यरूसलम और यहूदाह और यर्दन पार से उस के पीछे हो लिई॥

५ पर्व्व

वह भीड़ को देखके एक पहाड़ पर चढ़ गया और जब बैठा उस के शिष्य उस पास आये। तब उस ने अपना २ मुंह खोलके उन से उपदेश में कहा।

धन्य वे जो मन में दीन हैं क्योंकि स्वर्ग का राज्य ३ उन्हीं का है। धन्य वे जो शोक करते हैं क्योंकि वे ४ शान्ति पावेंगे। धन्य वे जो कोमल हैं क्योंकि वे पृथिवी ५ के अधिकारी होंगे। धन्य वे जो धर्म्म के भूखे और पियासे ६ हैं क्योंकि वे तृप्त होंगे। धन्य वे जो दयावन्त हैं क्योंकि उन ७ पर दया किई जायगी। धन्य वे जिन के मन पवित्र हैं ८ क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे। धन्य वे जो मेल करवैये ९ हैं क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहावेंगे। धन्य वे जो धर्म्म १० के लिये सताये जाते हैं क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। धन्य हो तुम जब मनुष्य मेरे लिये तुम्हारी निन्दा ११ करें और तुम्हें सतावें और तुम पर समस्त रीति की बुरी बात झूठ से कहें। आनन्दित और अति आह्लादित हो १२ इस कारण कि स्वर्ग में तुम्हारा बड़ा फल है क्योंकि तुम से आगे उन्हों ने भविष्यतवक्ताओं को इसी रीति से सताया है।

तुम पृथिवी का लोन हो परन्तु यदि लोन का स्वाद १३ बिगड़ जाय तो वह किस से स्वादित किया जायगा; वह

फिर किसी काम का नहीं परन्तु वह फेंके जाने और
१४ मनुष्यों के पांव तले रौंदे जाने के योग्य है। तुम जगत
का उंजियाला हो ; जो नगर पहाड़ पर बना है सो छिप
१५ नहीं सकता। लोग दीपक को बार के नान्द के तले नहीं
रखते परन्तु दीवट पर ; तब वह सभों को जो घर में हैं
१६ उंजियाला देता है। इसी रीति से तुम्हारा उंजियाला
मनुष्यों के आगे चमके कि वे तुम्हारे सुकर्म्म देखें और
तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है स्तुति करें।

१७ यह मत समझो कि मैं व्यवस्था अथवा भविष्यतवक्ता-
ओं की बातें लोप करने को आया हूं ; मैं लोप करने को
१८ नहीं परन्तु पूरा करने को आया हूं। क्योंकि मैं तुम से
सच कहता हूं कि जब लों स्वर्ग और पृथिवी टल न जाय
व्यवस्था में से जब लों सब कुछ पूरा न हो ले एक बिन्दु
१९ अथवा एक विसर्ग टल न जायगा। इस कारण जो कोई
इन आज्ञाओं में से सब से छोटी को लोप करे और
मनुष्यों को ऐसाही सिखावे वह स्वर्ग के राज्य में
सब से छोटा कहलावेगा परन्तु जो कोई उन्हें माने
और सिखावे सोई स्वर्ग के राज्य में बड़ा कहावेगा।
२० इस कारण मैं तुम से कहता हूं कि यदि तुम्हारा धर्म्म
अध्यापकों और फरीसियों के से अधिक न हो तो तुम
किसी रीति से स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करोगे।

२१ तुम सुन चुके हो कि प्राचीनों से कहा गया है कि तू
हत्या मत कर और जो कोई हत्या करेगा सो न्याय स्थान
२२ में दण्ड के योग्य होगा। परन्तु मैं तुम से कहता हूं

कि जो कोई अपने भाई पर अकारण क्रोध करे सो न्याय स्थान में दण्ड के योग्य होगा और जो कोई अपने भाई से हे तुच्छ कहे सो सभा में दण्ड के योग्य होगा परन्तु जो कोई उस से हे दुष्ट कहे सो नरक की आग के योग्य होगा। इस कारण यदि तू अपना दान यज्ञबेदी पर ले २३ आवे और वहां चेत करे कि तेरे भाई का कुछ बैर तुझ पर है। तो यज्ञबेदी के आगे अपना दान छोड़के चला २४ जा; पहिले अपने भाई से मिलाप कर और तब आके अपना दान चढ़ा। जबलों तू अपने बैरी के संग मार्ग में २५ है तुरन्त उस से मिलाप कर न होवे कि बैरी तुझे न्यायी को सौंपे और न्यायी तुझे दण्डकारी को सौंप दे और तू बन्दीगृह में डाला जाय। मैं तुझ से सच कहता हूं कि २६ जब लों तू कौड़ी कौड़ी न भर दे तू किसी रीति से वहां से न छूटेगा।

तुम सुन चुके हो कि प्राचीनों से कहा गया है कि तू २७ व्यभिचार मत कर। परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि जो २८ कोई कुइच्छा से किसी स्त्री पर देखे वह अपने मन में उस से व्यभिचार कर चुका। सो यदि तेरी दहिनी आंख २९ तुझे ठोकर खिलावे तो उसे निकालके अपने पास से फेंक दे क्योंकि तेरे अंगों में से एक का नाश होना उस से भला है कि तेरी सर्ब देह नरक में डाली जाय। और ३० यदि तेरा दहिना हाथ तुझे ठोकर खिलावे तो उसे काट डाल और अपने पास से फेंक दे क्योंकि तेरे अंगों में से

एक का नाश होना तेरे लिये उस से भला है कि तेरी सर्व देह नरक में डाली जाय।

३१ यह कहा गया है कि जो कोई अपनी पत्नी को त्याग ३२ करे वह उस को त्यागपत्र देवे। परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि जो कोई परगमन को छोड़ अपनी पत्नी को त्याग करे वह उस से व्यभिचार करवाता है और जो कोई उस से जो त्यागी गई है बिवाह करे वह व्यभिचार करता है।

३३ यह भी तुम सुन चुके हो कि प्राचीनों से कहा गया है कि तू झूठी किरिया मत खा परन्तु प्रभु के कारण ३४ अपनी किरियाओं को पूरी कर। परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि कभी किरिया मत खाओ न तो स्वर्ग की क्योंकि वह ३५ परमेश्वर का सिंहासन है। न तो पृथिवी की क्योंकि वह उस के चरणों की पीढ़ी है न तो यरूसलम की क्योंकि वह ३६ महाराजा का नगर है। न तो अपने सिर की किरिया खा क्योंकि तू एक बाल को उजला अथवा काला नहीं कर ३७ सकता है। परन्तु तुम्हारी बातचीत हां हां नहीं नहीं होवे क्योंकि जो इन्हों से अधिक है सो बुरे से होता है।

३८ तुम सुन चुके हो कि कहा गया है कि आंख की सन्ती ३९ आंख और दांत की सन्ती दांत। परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि बुरे का साम्ना न करना परन्तु यदि कोई तेरे दहिने गाल पर थपेड़ा मारे तो उस को दूसरा भी ४० फेर दे। और यदि कोई चाहे कि तुझे बिचारस्थान में ले जाय और तेरा अंगरखा उतार लेवे तो दोहर भी ४१ उसे लेने दे। और यदि कोई तुझे एक कोस बेगारी ले

जाय तो उस के संग दो कोस चला जा। जो तुझ से मांगे ४२
उस को दे और तुझ से जो ऋण मांगे उस से तू मुंह
मत मोड़।

तुम सुन चुके हो कि कहा गया है कि तू अपने पड़ोसी ४३
को प्यार कर और अपने बैरी से विरोध कर। परन्तु मैं ४४
तुम से कहता हूं अपने बैरियों को प्यार करो; जो तुम्हें
स्राप देवें उन्हें आसीस देओ; जो तुम से बैर करें उन का
भला करो और जो तुम्हारी निन्दा करें और तुम्हें सतावें
तुम उन के लिये प्रार्थना करो। कि तुम अपने पिता के जो ४५
स्वर्ग में है सन्तान होओ क्योंकि वह अपने सूर्य्य को भलों
और बुरों पर उदय करता है और न्यायीओं और
अन्यायीओं पर मेंह बरसाता है। क्योंकि यदि तुम अपने ४६
प्रेम करनेवालों से प्रेम करो तो तुम्हारा क्या फल है:
क्या करग्राहक भी ऐसा नहीं करते हैं। और यदि तुम ४७
केवल अपने भाइयों को नमस्कार करो तो तुम ने अधिक
क्या किया; क्या करग्राहक भी ऐसा नहीं करते हैं। इस ४८
कारण जैसा तुम्हारा पिता जो स्वर्ग में है सिद्ध है तैसे
तुम भी सिद्ध बनो।

६ पर्व्व

चौकस हो कि मनुष्यों के आगे उन को देखावने के
लिये अपने धर्म्म के कार्य्य मत करो नहीं तो तुम्हारे
पिता से जो स्वर्ग में है तुम्हें कुछ फल न मिलेगा।

इस लिये जब तू दान करे तो अपने आगे तुरही मत २
बजवा जैसा कि कपटी मण्डलियों और मार्गों में करते
हैं जिसतें मनुष्य उन की बड़ाई करें; मैं तुम से सच कहता

३ हूं कि वे अपना फल पा चुके। परन्तु जब तू दान करे तो तेरा दहिना हाथ जो करता है सो तेरा बायां हाथ न ४ जाने। कि तेरा दान गुप्त में होवे और तेरा पिता जो गुप्त में देखता है सो आपही तुझ को प्रगट में फल देगा।

५ और जब तू प्रार्थना करे तो कपटियों के समान मत हो क्योंकि मनुष्यों को देखावने के लिये मण्डलियों में और मार्गों के कोनों में खड़े होके प्रार्थना करना उन्हें अच्छा लगता है; मैं तुम से सच कहता हूं कि वे अपना ६ फल पा चुके। परन्तु जब तू प्रार्थना करे तो अपनी कोठरी में जा और द्वार मूंदके अपने पिता से जो गुप्त में है प्रार्थना कर और तेरा पिता जो गुप्त में देखता है तुझे प्रगट ७ में फल देगा। परन्तु जब तुम प्रार्थना करो तो अन्यदेशियों की नाईं व्यर्थ बक बक मत करो क्योंकि वे समझते हैं ८ कि उन के अधिक बोलने से उन की सुनी जायगी। इस लिये तुम उन के समान मत होओ क्योंकि तुम्हारा पिता तुम्हारे मांगने से पहिले जानता है कि तुम्हें क्या क्या ९ आवश्यक है। इस कारण तुम इसी रीति से प्रार्थना करो; हे हमारे पिता जो स्वर्ग में है तेरा नाम पवित्र किया १० जाय। तेरा राज्य आवे; तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में वैसे ११ पृथिवी पर होवे। हमारे प्रतिदिन की रोटी आज हमें १२ दे; और जैसे हम अपने ऋणियों को क्षमा करते हैं तू १३ हमारे ऋणों को क्षमा कर। और हमें परीक्षा में न डाल परन्तु बुरे से बचा क्योंकि राज्य और पराक्रम और १४ महात्म सदा तेरे हैं आमीन। क्योंकि यदि तुम मनुष्यों के

अपराध क्षमा करो तो तुम्हारा स्वर्गवासी पिता भी तुम को क्षमा करेगा। परन्तु यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करो तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा। १५

फिर जब तुम उपवास करो तो कपटियों के समान उदास रूप मत होओ क्योंकि वे अपने मुंह को बिगाड़ते हैं कि लोग उन्हें उपवासी जानें; मैं तुम से सच कहता हूं कि वे अपना फल पा चुके। परन्तु जब तू उपवास करे तो अपने सिर को चिकना कर और अपने मुंह को धो। जिसतें मनुष्य नहीं परन्तु तेरा पिता जो गुप्त में है तुझे उपवासी जाने और तेरा पिता जो गुप्त में देखता है सो प्रगट में तुझे फल देगा। १६ १७ १८

अपने लिये पृथिवी पर धन मत बटोरो जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं और जहां चोर सेंध देते और चुराते हैं। परन्तु अपने कारण स्वर्ग में धन बटोरो जहां न कीड़ा न काई बिगाड़ता है और जहां चोर न सेंध देते न चुराते हैं। क्योंकि जहां तुम्हारा धन है तहां तुम्हारा मन भी लगा रहेगा। शरीर का दीपक आंख है इस लिये यदि तेरी आंख निर्मल होय तो तेरी सारी देह प्रकाशमय होगी। परन्तु यदि तेरी आंख बुरी होय तो तेरी सारी देह अंधकारमय होगी इस लिये यदि यह उंजियाला जो तुझ में है अंधकार होजाय तो वह अंधकार क्या ही बड़ा होगा। १९ २० २१ २२ २३

कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता है २४

क्योंकि वह एक से बैर रखेगा और दूसरे से प्रेम अथवा
वह एक को मानेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा; तुम
२५ परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते। इस
लिये मैं तुम से कहता हूं अपने जीवन के कारण तुम
चिन्ता मत करो कि हम क्या खायेंगे अथवा क्या पीयेंगे न
अपनी देह के कारण कि हम क्या पहिनेंगे; क्या भोजन
२६ से जीवन और वस्त्र से देह अधिक नहीं है। आकाश के
पंछियों को देखो क्योंकि वे न बोते हैं न लवते हैं न खत्तों
में बटोरते हैं तिस पर भी तुम्हारा पिता जो स्वर्ग में है
२७ उन्हें खिलाता है; क्या तुम उन्हों से श्रेष्ठ नहीं हो। तुम में
से कौन है जो चिन्ता करके अपने डौल को हाथ भर बढ़ा
२८ सके। और वस्त्र के लिये क्यों चिन्ता करते हो; जंगली
सोसन के फूलों को देखो वे क्योंकर बढ़ते हैं; वे परिश्रम
२९ नहीं करते हैं न वे सूत कातते हैं। तिस पर भी मैं तुम से
कहता हूं कि सुलेमान भी अपने सारे विभव में इन में से
३० एक के समान शोभित न था। इस लिये यदि परमेश्वर
खेत की घास को जो आज है और कल चूल्हे में झोंकी
जायगी ऐसी शोभित करता है तो हे अल्प विश्वासियो
३१ क्या वह तुम्हें अधिक करके न पहिनावेगा। इस लिये
चिन्ता करके मत कहो कि हम क्या खायेंगे अथवा क्या
३२ पीयेंगे अथवा क्या पहिनेंगे। क्योंकि इन सब वस्तुओं का
खोज अन्यदेशी करते हैं परन्तु तुम्हारा स्वर्गीय पिता
जानता है कि तुम्हें इन सारी वस्तुओं का प्रयोजन है।
३३ परन्तु पहिले परमेश्वर के राज्य का और उस के धर्म्म

का खोज करो तो ये सब वस्तें तुम्हें अधिक दिई जायेंगी।
इस कारण कल के लिये चिन्ता मत करो क्योंकि कल ३४
अपनी ही वस्तों के लिये आप ही चिन्ता करेगा; आज
का दुःख आज ही के लिये बस है॥

७ पर्ब्ब

दोष मत लगाओ कि तुम पर दोष न लगाया जाय।
क्योंकि जिस प्रकार से तुम दोष लगाते हो उसी प्रकार से २
तुम पर भी दोष लगाया जायगा और जिस नाप से तुम
नापते हो उसी से तुम्हारे लिये नापा जायगा। और उस ३
किरकिटी को जो तेरे भाई की आंख में है तू क्यों देखता
है परन्तु उस लट्ठे को जो तेरी ही आंख में है तू नहीं
देखता। अथवा तू अपने भाई से क्योंकर कह सकता है ४
कि रह जा उस किरकिटी को जो तेरी आंख में है निका-
लूं और देख तेरी ही आंख में एक लट्ठा है। हे कपटी ५
पहिले अपनी ही आंख से उस लट्ठे को बाहर कर तब
तू फरछाई से देखके अपने भाई की आंख से उस किर-
किटी को निकाल सकेगा।

पवित्र वस्तु कुत्तों को मत देओ और अपने मोतियों ६
को सूअरों के आगे मत फेंको न हो कि वे अपने पांवों
तले उन्हें रौंदें और फिरके तुम को फाड़ें।

मांगो तो तुम्हें दिया जायगा ढूंढ़ो तो तुम पाओगे ७
खटखटाओ तो तुम्हारे लिये खोला जायगा। क्योंकि जो ८
कोई मांगता है सो पाता है और जो ढूंढ़ता है उस को
मिलता है और जो खटखटाता है उस के लिये खोला
जायगा। तुम में कौन है यदि उस का पुत्र उस से रोटी ९

१० मांगे क्या वह उसे पत्थर देगा। अथवा यदि वह मछली
११ मांगे क्या वह उसे सांप देगा। इस लिये यदि बुरे होके
तुम अपने पुत्रों को अच्छे दान देने जानते हो तो तुम्हारा
पिता जो स्वर्ग में है क्या उन को जो उस से मांगते हैं
१२ अधिक भली वस्तु न देगा। इस कारण जो कुछ तुम
चाहते हो कि मनुष्य तुम से करें तुम भी उन से वैसा ही
करो क्योंकि व्यवस्था और भविष्यतवक्ता ये ही हैं।

१३ सकेत द्वार से प्रवेश करो क्योंकि चौड़ा है वह द्वार
और फैलाव है वह मार्ग जो बिनाश को पहुंचाता है और
१४ बहुत हैं जो उसी से प्रवेश करते हैं। क्या ही सकेत है
वह द्वार और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचा-
ता है और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं।

१५ झूठे भविष्यतवक्ताओं से सचेत रहो जो भेड़ों के भेष में
तुम्हारे पास आते हैं परन्तु मन में फाड़नेवाले हुण्डार
१६ हैं। तुम उन्हें उन के फलों से पहचानोगे; क्या मनुष्य
कांटों के पेड़ से दाख अथवा ऊंटकटारों से गूलर
१७ बटोरते हैं। इसी रीति से हर एक अच्छा पेड़ अच्छे फल
१८ लाता है परन्तु बुरा पेड़ बुरे फल लाता है। अच्छा पेड़
बुरे फल नहीं फल सकता न बुरा पेड़ अच्छे फल फल
१९ सकता। जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता सो काटा
२० जाता और आग में डाला जाता है। इस कारण तुम
उन्हें उन के फलों से पहचानोगे।

२१ हर एक जो मुझे प्रभु प्रभु कहता है स्वर्ग के राज्य में
प्रवेश न करेगा परन्तु वह जो मेरे पिता की जो स्वर्ग में

है इच्छा पर चलता है। बहुतेरे लोग उस दिन मुझ से २२ कहेंगे कि हे प्रभु हे प्रभु क्या हम ने तेरे नाम से भविष्य-बाणियां नहीं किईं और तेरे नाम से क्या पिशाचों को नहीं निकाला और तेरे नाम से क्या बहुतेरे आश्चर्य्य कर्म्म नहीं किये। तब मैं उन से कहूंगा मैं ने तुम्हें कभी २३ न जाना हे कुकर्म्मियो मुझ से दूर होओ।

इस लिये जो कोई मेरे ये बचन सुनता है और उन्हें २४ मानता है उस को मैं एक बुद्धिमान मनुष्य से उपमा देऊंगा जिस ने चटान पर अपना घर उठाया। और २५ मेंह बरसा और बाढ़ें आईं और आंधियां चलीं और उस घर पर बौछार लगी और वह न गिरा क्योंकि वह चटान पर उठाया गया था। परन्तु जो कोई मेरे ये बचन २६ सुनता और उन्हें नहीं मानता है सो एक बावरे मनुष्य से उपमा दिया जायगा जिस ने अपना घर रेत पर उठाया। और मेंह बरसा और बाढ़ें आईं और आंधियां २७ चलीं और उस घर पर बौछार लगी और वह गिर पड़ा और उस का गिरना बड़ा हुआ।

और ऐसा हुआ कि जब यिसू ये बातें कह चुका तब २८ लोग उस के उपदेश से अचंभित हुए। क्योंकि वह २९ अध्यापकों के समान नहीं परन्तु अधिकारी की रीति से उन्हें सिखाता था॥

८ पर्ब्ब

जब वह उस पहाड़ पर से उतरा बड़ी भीड़ उस के पीछे हो लिई। और देखो एक कोढ़ी ने आके उस को दण्ड- २ वत कर के कहा हे प्रभु यदि तू चाहे तो मुझे पवित्र कर

३ सकता है। तब यिसू ने हाथ बढ़ाके उस को छूके कहा मैं चाहता हूं पवित्र हो जा; और वोंहीं उस का कोढ़ जाता ४ रहा। तब यिसू ने उस से कहा देख किसी से मत कह परन्तु जाके अपने तईं याजक को दिखा और जो भेंट कि मूसा ने ठहराई है सो चढ़ा कि उन के लिये साक्षी होवे।

५ और जब यिसू ने कफरनहूम में प्रवेश किया तब एक ६ शतपति ने उस के पास आके बिनती किई। और कहा कि हे प्रभु मेरा दास अर्द्धांग के रोग से अति पीड़ित ७ घर में पड़ा है। यिसू ने उस से कहा मैं आके उसे चंगा ८ करूंगा। उस शतपति ने उत्तर देके कहा कि हे प्रभु मैं इस योग्य नहीं कि तू मेरी छत तले आवे परन्तु केवल ९ एक बात कह तो मेरा दास चंगा हो जायगा। क्योंकि मैं पराधीन मनुष्य हूं और सिपाही मेरे बश में हैं और मैं एक से कहता हूं कि जा तो वह जाता है और दूसरे से कि आ तो वह आता है और अपने दास को कि १० यह कर तो वह करता है। यिसू ने सुनकर अचंभा किया और जो उस के पीछे आते थे उन से कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि मैं ने ऐसा बिश्वास इसराएल में भी ११ न पाया है। और मैं तुम से कहता हूं कि बहुतेरे लोग पूरब और पच्छिम से आवेंगे और अबिरहाम और इसहाक और याकूब के संग स्वर्ग के राज्य में बैठेंगे। १२ परन्तु इस राज्य के सन्तान बाहर अंधकार में डाले १३ जायेंगे वहां रोना और दांत पीसना होगा। तब यिसू ने उस शतपति से कहा कि जा और तेरे बिश्वास के समान

तेरे लिये होवे और उस का दास उसी घड़ी चंगा होगया।

और यिसू ने पथरस के घर में आके उस की सास को १४ पड़ी हुई और ज्वर से पीड़ित देखा। और उस ने उस १५ का हाथ छूआ तब ज्वर उस पर से उतर गया और उस ने उठके उस की सेवा किई।

जब सांझ हुई वे बहुत से पिशाचग्रस्तों को उस पास १६ लाये और उस ने बचन से आत्माओं को निकाला और सभों को जो रोगी थे चंगा किया। ऐसा कि जो यसइयाह १७ भविष्यतवक्ता ने कहा था कि उस ने आप हमारी दुर्बलताओं को ले लिया और रोगों को उठा लिया सो पूरा हुआ।

जब यिसू ने अपने आस पास बड़ी भीड़ देखी तो उस १८ ने उस पार जाने की आज्ञा किई। और एक अध्यापक १९ ने आके उस से कहा कि हे गुरु जहां कहीं तू जाय मैं तेरे पीछे चलूंगा। यिसू ने उस से कहा लोमड़ियों के २० लिये मांदें हैं और आकाश के पंछियों को खोंते हैं परन्तु मनुष्य के पुत्र को सिर धरने का स्थान नहीं है।

और उस के शिष्यों में से एक ने उस से कहा हे प्रभु २१ मुझ को जाने दे कि पहिले अपने पिता को गाड़ूं। परन्तु यिसू ने उस से कहा मेरे पीछे चला आ और २२ मृतकों को अपने मृतकों को गाड़ने दे।

और जब वह नाव पर चढ़ा उस के शिष्य उस के पीछे २३ हो लिये। और देखो समुद्र में ऐसी बड़ी आंधी उठी २४ कि लहरों से नाव ढंप गई परन्तु वह सोता था। तब २५

उस के शिष्यों ने उस पास आके उसे जगाके कहा कि हे
२६ प्रभु हमें बचा हम नष्ट होते हैं। उस ने उस से कहा कि
हे अल्प बिश्वासियो तुम क्यों डरते हो; तब उस ने उठके
बयार और समुद्र को डांटा और बड़ा चैन हो गया।
२७ परन्तु लोग अचंभा करके बोले कि यह कैसा मनुष्य है
कि बयार और समुद्र भी उस के बश में हैं।

२८ और जब वह उस पार गिरगासी के देश में पहुंचा
तो दो पिशाच ग्रस्त कबरों से निकलके उस को मिले; वे
ऐसे भयंकर थे कि उस मार्ग से कोई नहीं जा सकता
२९ था। और देखो उन्हों ने चिल्लाके कहा कि हे यिसू पर-
मेश्वर के पुत्र हमें तुझ से क्या काम; क्या तू समय से
३० आगे हमें दुःख देने को इधर आया है। और उन से कुछ
३१ दूर बहुत से सूअरों का एक झुंड चरता था। तब पिशाचों
ने उस से बिनती करके कहा यदि तू हमें निकालता है
३२ तो उन सूअरों के झुंड में हमें पैठने दे। तब उस ने उन
से कहा जाओ और वे निकलके सूअरों के झुंड में पैठे
और देखो कि सूअरों का सारा झुंड कड़ाड़े पर से समुद्र
३३ में जा गिरे और जल में डूब मरे। तब चरवाहे भागे
और नगर में गये और सारी बातें और जो पिशाच ग्रस्तों
३४ पर बीता था सो बर्णन किया। और देखो सारा नगर
यिसू की भेंट को निकला और उस को देखके बिन्ती
किई कि उन के सिवानों से बाहर जाय॥

९ पर्ब्ब

वह नाव पर चढ़के पार उतरा और अपने नगर में
२ आया। और देखो लोग एक अर्द्धांगी को जो खटोले

पर पड़ा था उस पास लाये और यिसू ने उन का बिश्वास देखके उस अर्द्धांगी से कहा कि हे पुत्र सुस्थिर हो तेरे पाप क्षमा किये गये। तब देखो कितने अध्यापकों ने ३ अपने अपने मन में कहा कि यह तो परमेश्वर की निन्दा करता है। और यिसू ने उन की चिन्ताओं को जानके ४ कहा कि तुम अपने अपने मन में किस कारण बुरी चिन्ता करते हो। क्या सहज है यह कहना कि तेरे पाप ५ क्षमा किये गये हैं अथवा यह कहना कि उठ और चल। परन्तु जिसतें तुम जानो कि मनुष्य के पुत्र को पृथिवी ६ पर पाप क्षमा करने का अधिकार है [उस ने उस अर्द्धांगी से कहा उठ अपना खटोला उठा और अपने घर को जा। वह उठा और अपने घर को चला गया। तब लोगों ७ ८ ने यह देखके अचंभा किया और परमेश्वर की स्तुति किई कि उस ने ऐसा अधिकार मनुष्यों को दिया है।

और यिसू ने वहां से बढ़के कर उगाहने की चौकी ९ पर एक मनुष्य कि जिस का नाम मत्ती था बैठे देखा और उस से कहा मेरे पीछे आ; तब वह उठकर उस के पीछे हो लिया।

और यों हुआ कि जब यिसू घर में भोजन करने को १० बैठा तो देखो बहुत से करग्राहक और पापी लोग आये और उस के शिष्यों के संग बैठ गये। और जब फरीसियों ११ ने यह देखा तो उस के शिष्यों से कहा तुम्हारा गुरु करग्राहकों और पापियों के संग क्यों भोजन करता है। यिसू ने यह सुनके उन से कहा कि भले चंगों को नहीं १२

१३ परन्तु रोगियों को वैद्य का प्रयोजन है। परन्तु जाओ और इस का अर्थ सीखो कि मैं बलिदान को नहीं परन्तु कृपा को चाहता हूं; मैं धर्म्मियों को नहीं परन्तु पापियों को मन फिराने के लिये बुलाने आया हूं।

१४ तब यूहन्ना के शिष्यों ने उस पास आके कहा कि हम और फरीसी क्यों बारंबार उपवास करते हैं परन्तु तेरे
१५ शिष्य उपवास नहीं करते। यिसू ने उन से कहा जब लों दूल्हा संग है क्या तब लों बराती लोग बिलाप कर सकते हैं; परन्तु वे दिन आवेंगे कि दूल्हा उन से अलग
१६ किया जायगा तब वे उपवास करेंगे। कोई मनुष्य कोरे कपड़े का टुकड़ा पुराने बस्त्र पर नहीं लगाता है क्योंकि वह टुकड़ा बस्त्र से कुछ और भी फाड़ लेता है और
१७ वह चीर बढ़ जाता है। और लोग पुराने कुप्पों में नया दाखरस नहीं भरते हैं नहीं तो कुप्पे फट जाते हैं और दाखरस बह जाता है और कुप्पे नष्ट होते हैं परन्तु नया दाखरस नये कुप्पों में भरते हैं और दोनों बचे रहते हैं।

१८ वह उन से यह कह रहा था कि देखो एक अध्यक्ष ने आके उस को दण्डवत करके कहा कि मेरी बेटी अभी मर गई परन्तु आकर अपना हाथ उस पर रख
१९ तो वह जीयेगी। तब यिसू उठके अपने शिष्यों के संग
२० उस के पीछे चला। और देखो एक स्त्री ने जिस को बारह बरस से लहू बहने का रोग था उस के पीछे से
२१ आके उस के बस्त्र के आंचल को छूआ। क्योंकि उस ने

अपने मन में कहा यदि मैं केवल उस का बस्त्र छूओं तो मैं चंगी हो जाऊंगी। तब यिसू पीछे फिरा और उसे देखके कहा हे पुत्री सुस्थिर हो तेरे बिस्वास ने तुझे चंगा किया और वह स्त्री उसी घड़ी चंगी हो गई। २२

और जब यिसू उस अध्यक्ष के घर में आया और बजनियें और लोगों को धूम मचाते देखा। तो उन से कहा कि अलग हो जाओ क्योंकि कन्या मर नहीं गई परन्तु सोती है; और वे उस पर हंसे। परन्तु जब लोग बाहर निकाले गये उस ने भीतर जाके उस का हाथ पकड़ा और वह कन्या उठी। और उस की कीर्त्ति उस समस्त देश में फैल गई। २३ २४ २५ २६

जब यिसू वहां से चला गया दो अंधे उस के पीछे पुकारते और यह कहते हुए आये कि हे दाऊद के पुत्र हम पर दया कर। और जब वह घर में आया वे अंधे उस के पास आये और यिसू ने उन से कहा क्या तुम बिस्वास करते हो कि मैं यह कर सकता हूं; वे बोले हां प्रभु। तब उस ने उन की आंखें छूके कहा कि तुम्हारे बिस्वास के समान तुम पर होवे। तो उन की आंखें खुल गईं और यिसू ने उन्हें चिताके कहा कि देखो कोई न जाने। परन्तु उन्हों ने वहां से निकलके उस की कीर्त्ति उस समस्त देश में फैलाई। २७ २८ २९ ३० ३१

जब वे बाहर गये देखो लोग एक गूंगे पिशाचग्रस्त को उस के पास लाये। और जब पिशाच निकाला गया तब गूंगा बोला और लोग अचंभा करके कहने लगे ३२ ३३

३४ कि इसराएल में ऐसा कभी न देखा गया। परन्तु फरीसियों ने कहा कि पिशाचों के प्रधान की सहाय से वह पिशाचों को दूर करता है।

३५ और यिसू उन सब नगरों और गांवों में जाके उन की मण्डलियों में उपदेश देता हुआ और राज्य का मंगल समाचार प्रचारता हुआ और लोगों के हर एक रोग
३६ और व्याधि को चंगा करता हुआ फिरा। और जब उस ने लोगों को देखा तो उन पर दयालु हुआ क्योंकि वे उन भेड़ों के समान जिन का गड़रिया न हो थकित
३७ और छिन्न भिन्न किये हुए थे। तब उस ने अपने शिष्यों से कहा पक्की खेती तो बहुत है परन्तु बनिहार थोड़े
३८ हैं। इस कारण तुम खेत के स्वामी से बिन्ती करो कि वह अपने खेत काटने के लिये बनिहारों को भेजे॥

१० पर्व्व

और उस ने अपने बारह शिष्यों को पास बुलाके उन्हें अपवित्र आत्माओं पर सामर्थ्य दिई कि उन्हें निकालें और सब प्रकार के रोग और स[illegible] प्रकार की व्याधि को
२ चंगा करें। अब बारह प्रेरितों के नाम ये हैं पहिला समऊन जो पथरस कहावता है और उस का भाई अन्द्रियास; सबदी का पुत्र याकूब और उस का भाई
३ यूहन्ना। फिलिप और बरतलमी; तोमा और मत्ती करग्राहक; और हलफी का पुत्र याकूब; और लब्बी
४ जो थद्दी भी कहावता है। समऊन कनानी और यहूदाह इसकरियत जिस ने उसे पकड़वाया भी।

५ यिसू ने इन बारहों को भेजा और उन्हें आज्ञा कर के

कहा कि अन्यदेशियों की ओर मत जाओ और समरू-
नियों के किसी नगर में प्रवेश मत करो। परन्तु पहिले ६
इसराएल के घर की खोई हुई भेड़ों के पास जाओ।
और तुम जाते जाते प्रचार करके कहो कि स्वर्ग का ७
राज्य निकट आया है। रोगियों को चंगा करो कोढ़ियों ८
को पवित्र करो मृतकों को जिलाओ पिशाचों को निका-
लो; तुम ने सेंत पाया सेंत दो। अपने पटुके में न सोना ९
न रूपा न तांबा रखो। और यात्रा के लिये न झोली न १०
दो बस्त्र न जूते न लाठी लेओ क्योंकि बनिहार भोजन
के योग्य हैं।

और जिस जिस नगर अथवा गांव में प्रवेश करो ११
पूछो कि उस में योग्य कौन है और जब लों वहां से न
निकलो वहीं रहो। और जब तुम किसी घर में जाओ १२
तब उस पर आसीस देओ। और यदि वह घर योग्य १३
होय तो तुम्हारा कल्याण उस पर पहुंचे परन्तु यदि
वह योग्य न होय तो तुम्हारा कल्याण तुम पर फिर
आवे। और जो कोई तुम्हें ग्रहण न करे और तुम्हारी १४
बातें न सुने जब तुम उस घर से अथवा उस नगर से
निकलो तो अपने पांवों की धूल झाड़ डालो। मैं तुम १५
से सच कहता हूं कि बिचार के दिन उस नगर की
दशा से सदूम और अमूरः देश की दशा सहज होगी।

देखो मैं तुम्हें भेड़ों के समान हुंडारों के बीच में १६
भेजता हूं इस कारण तुम सांपों के समान बुद्धिमान
और कपोतों के समान सूधे होओ। परन्तु मनुष्यों से १७

चैाकस रहो क्योंकि वे तुम्हें सभाओं के हाथ सैांपेंगे
१८ और अपनी मण्डलियों में तुम को कोड़े मारेंगे। और
तुम मेरे कारण अध्यक्षों और राजाओं के आगे पहुं-
चाये जाओगे कि उन पर और अन्यदेशियों पर साक्षी
१९ होवे। परन्तु जब वे तुम्हें सैांपें तो तुम किस रीति से
अथवा क्या कहें इस की चिन्ता मत करो क्योंकि जो कुछ
तुम्हें कहना होगा सो उसी घड़ी तुम्हें दिया जायगा।
२० क्योंकि बोलनेवाले तुम नहीं हो परन्तु तुम्हारे पिता
२१ का आत्मा जो तुम में है वही बोलेगा। भाई भाई को
और पिता पुत्र को मारे जाने के लिये पकड़वावेगा
और लड़के अपने माता पिता के विरुद्ध उठेंगे और
२२ उन्हें वध करवावेंगे। और मेरे नाम के कारण सब
लोग तुम से बैर करेंगे पर जो अन्त लों स्थिर रहेगा
२३ सो त्राण पावेगा। जब वे तुम्हें एक नगर में सतावें तुम
दूसरे को भाग जाओः मैं तुम से सच कहता हूं कि जब
लों मनुष्य का पुत्र न आ ले तब लों तुम इसराएल के
२४ नगरों में सर्वत्र न फिर चुकोगे। शिष्य तो गुरु से
२५ बड़ा नहीं है और न सेवक अपने स्वामी से। यदि शिष्य
अपने गुरु के समान और सेवक अपने स्वामी के समान
होवे तब बस है; यदि उन्हों ने घर के स्वामी को बाल-
सबूल कहा है तो कितना अधिक वे उस के परिवारों
२६ को यों न कहेंगे। इस लिये उन से मत डरो क्योंकि
कोई बस्तु छिपी नहीं है जो प्रगट न होगी और न कुछ
२७ गुप्त है जो जाना न जायगा। जो कुछ मैं तुम्हें अंधियारे

में कहता हूं तुम उंजियाले में उसे कहो और जो कुछ तुम कानों कान सुनो उसे कोठों पर से प्रचार करो। जो शरीर को घात करते हैं पर आत्मा को घात कर (२८) नहीं सकते हैं उन से मत डरो परन्तु जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नाश कर सकता है उसी से तुम डरो। क्या एक पैसे को दो गौरे नहीं बिकते हैं (२९) तथापि तुम्हारे पिता विना उन में से एक भी भूमि पर नहीं गिरता। तुम्हारे सिर के बाल भी सब गिनें हुए (३०) हैं। इस लिये डरो मत क्योंकि तुम बहुतेरे गौरों से (३१) अधिक मोल के हो। इस कारण जो कोई मनुष्यों के (३२) आगे मुझे मान लेगा उस को मैं भी अपने पिता के आगे जो स्वर्ग में है मान लेऊंगा। परन्तु जो कोई (३३) मनुष्यों के आगे मुझ से मुकरेगा उस से मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के आगे मुकरूंगा।

यह मत समझो कि मैं भूमि पर मिलाप करवाने को (३४) आया हूं; मैं मिलाप करवाने को नहीं परन्तु तलवार चलवाने को आया हूं। क्योंकि मैं मनुष्य को उस के (३५) पिता से और बेटी को उस की माता से और पतोहू को उस की सास से फूट करवाने आया हूं। और मनुष्य (३६) के बैरी उस के घर ही के लोग होंगे। जो कोई माता (३७) अथवा पिता को मुझ से अधिक प्यार करता है सो मेरे योग्य नहीं और जो बेटा अथवा बेटी को मुझ से अधिक प्यार करता है सो मेरे योग्य नहीं। और जो (३८) कोई अपना क्रूस उठाके मेरे पीछे नहीं आता है सो

३९ मेरे योग्य नहीं। जो अपना प्राण बचाता है सो उसे गंवावेगा और जो मेरे कारण अपना प्राण गंवाता है सो उसे पावेगा।

४० जो तुम्हें ग्रहण करता है सो मुझे ग्रहण करता है और जो मुझे ग्रहण करता है सो मेरे भेजनेहारे को ४१ ग्रहण करता है। जो भविष्यतवक्ता के नाम से भविष्यतवक्ता को ग्रहण करता है सो भविष्यतवक्ता का फल पावेगा और जो धर्म्मी के नाम से धर्म्मी को ग्रहण ४२ करता है सो धर्म्मी का फल पावेगा। और जो कोई इन छोटों में से एक को शिष्य के नाम से केवल एक कटोरा ठंढा पानी पिलावेगा मैं तुम से सच कहता हूं वह किसी रीति से अपना फल बे पाये न रहेगा॥

११ पर्ब्ब

और ऐसा हुआ कि जब यिसू अपने बारह शिष्यों को आज्ञा कर चुका वह वहां से चला गया कि उन के नगरों में शिक्षा देवे और उपदेश करे।

२ और जब यूहन्ना ने बन्दीगृह में मसीह के कार्य्यों का समाचार सुना तो अपने शिष्यों में से दो को भेजके ३ उस से पुछवाया। कि जो आनेवाला था क्या तू वही है ४ अथवा हम दूसरे की बाट जोहें। यिसू ने उत्तर देके उन से कहा जाओ और जो कुछ कि तुम सुनते और ५ देखते हो सो यूहन्ना से कहो। कि अंधे देखते और लंगड़े चलते हैं कोढ़ी पवित्र होते और बहिरे सुनते हैं मृतक जिलाये जाते और कंगालों को मंगल समा-

चार सुनाया जाता है। और जो मेरे कारण ठोकर न खावे सो धन्य है। ६

जब वे चले गये तो यिसू यूहन्ना के विषय में लोगों से कहने लगा कि बन में तुम लोग क्या देखने को निकले; क्या एक नरकट पवन से हिलता हुआ। फिर तुम क्या देखने को निकले; क्या एक मनुष्य को जो मिहीन वस्त्र पहिने है; देखो जो मिहीन वस्त्र पहिनते हैं सो राजभवनों में हैं। फिर तुम क्या देखने को निकले क्या एक भविष्यतवक्ता को हां मैं तुम से कहता हूं कि एक जो भविष्यतवक्ता से श्रेष्ठ है। क्योंकि यह वह है जिस के विषय में लिखा है कि देखो मैं अपना दूत तेरे आगे भेजता हूं वह तेरे मार्ग को तेरे आगे बनावेगा। मैं तुम से सच कहता हूं कि जो स्त्रियों से उत्पन्न हुए हैं उन में यूहन्ना बपतिसमा देनेवाले से कोई बड़ा प्रगट नहीं हुआ परन्तु जो स्वर्ग के राज्य में छोटा है सो उस से बड़ा है। और यूहन्ना बपतिसमा देनेवाले के दिनों से अब लों स्वर्ग के राज्य पर प्रबलता होती है और बलवन्त लोग उस को बल से लेते हैं। क्योंकि यूहन्ना लों सारे भविष्यतवक्ता और व्यवस्था जो हुए उन्हों ने भविष्यवाणी कही है। और यदि तुम ग्रहण किया चाहो तो इलियाह जो आनेवाला था सो यही है। जिस किसी के कान सुनने को हों सो सुने। ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५

परन्तु मैं इस समय के लोगों को किस से उपमा देऊं; वे लड़कों की नाईं हैं जो हाटों में बैठके अपने १६

१७ संगियों को पुकारते। और कहते हैं कि हम ने तुम्हारे लिये बांसली बजाई है और तुम न नाचे; हम ने तुम्हारे लिये बिलाप किया है और तुम ने छाती न
१८ पीटी। क्योंकि यूहन्ना खाता पीता नहीं आया और वे
१९ कहते हैं कि उस पर पिशाच लगा है। मनुष्य का पुच खाता और पीता आया है और वे कहते हैं कि देखो खाऊ और मद्यप; करग्राहकों और पापियों का मिच परन्तु ज्ञान अपने पुचों के आगे निर्दोष ठहरा है।

२० तब वह उन नगरों को जिन में उस के बहुत से आश्चर्य्य कर्म्म हुए थे उलहना देने लगा क्योंकि उन्हों
२१ ने मन न फिराये थे। हे कुराजीन हाय तुझ पर; हे बैतसैदा हाय तुझ पर; क्योंकि जो आश्चर्य्य कर्म्म तुझ में प्रगट हुए यदि सूर और सैदा में प्रगट होते तो बहुत दिन बीते टाट पहिनके और राख में बैठके
२२ अपने पाप से पछताते। परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि बिचार के दिन में तुम्हारी दशा से सूर और सैदा की
२३ दशा सहज होगी। और हे कफरनहूम जो स्वर्ग लों ऊंचा किया गया है तू नरक लों गिराया जायगा क्योंकि जो आश्चर्य्य कर्म्म तुझ में किये गये यदि सदूम में
२४ किये जाते तो वह आज लों बना रहता। परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि बिचार के दिन में सदूम के देश की दशा तेरी दशा से सहज होगी।

२५ उस समय में यिसू फिर कहने लगा हे पिता स्वर्ग और पृथिवी के प्रभु मैं तेरी स्तुति करता हूं कि तू ने

इन बातें के ज्ञानियें और बुद्धिमानें से गुप्त रखा और उन्हें बच्चें पर प्रगट किया है। २६ हां हे पिता क्योंकि यही तुझ को अच्छा लगा। २७ मेरे पिता ने सब कुछ मुझे सौंपा है और पिता को छोड़ कोई पुत्र को नहीं जानता है और पुत्र को छोड़ कोई पिता को नहीं जानता है और जिस पर पुत्र उसे प्रगट किया चाहे सो उसे भी जानता है। २८ हे लोगो जो थके और बड़े बोझ से दबे हो सब मेरे पास आओ कि मैं तुम्हें सुख देऊंगा। २९ मेरा जूआ अपने ऊपर लेओ और मुझ से सीखो क्योंकि मैं कोमल और मन में दीन हूं तो तुम अपने प्राणें में सुख पाओगे। ३० क्योंकि मेरा जूआ कोमल और मेरा बोझ हलका है॥

१२ पर्व्व

उस समय में यिसू बिस्राम के दिन अनाज के खेतें में होके जाता था और उस के शिष्य भूखे थे; वे बालें तोड़ तोड़ खाने लगे। २ तब फरीसियें ने यह देखके उस से कहा देख तेरे शिष्य जो काम बिस्राम के दिन में करना योग्य नहीं है सो करते हैं। ३ उस ने उस से कहा क्या तुम ने नहीं पढ़ा है कि दाऊद ने जब वह और उस के संगी भूखे थे तब क्या किया। ४ परमेश्वर के घर में जाके भेंट की रोटियां कि जिन को खाना न उस को न उस के संगियें को परन्तु केवल याजकें को उचित था सो उस ने क्योंकर खाईं। ५ अथवा क्या तुम ने व्यवस्था में नहीं पढ़ा कि याजक लोग बिस्राम के दिनें में मन्दिर में बिस्राम का संमान नहीं करते

६ तथापि निर्दोष हैं। और मैं तुम से कहता हूं कि यहां
७ मन्दिर से एक भी बड़ा है। परन्तु यदि तुम इस का अर्थ
जानते कि मैं बलिदान को नहीं परन्तु दया को चाहता
८ हूं तो तुम निर्दोषों को अपराधी न ठहराते। क्योंकि
मनुष्य का पुत्र बिश्राम के दिन का भी प्रभु है।

९ और वह वहां से सिधारके उन की मण्डली में गया।
१० और देखो वहां एक मनुष्य था कि जिस का हाथ सूख
गया था और उन्हों ने उस पर दोष लगाने के लिये
उस से यह कहके पूछा क्या बिश्राम के दिनों में चंगा
११ करना उचित है। उस ने उन से कहा तुम में से ऐसा
कौन है जिस को एक भेड़ होय और यदि वह बिश्राम
के दिन गढ़े में गिरे क्या वह उसे पकड़के न निकाले-
१२ गा। फिर मनुष्य भेड़ से कितना भला है; इस कारण
बिश्राम के दिनों में भलाई के काम करना उचित है।
१३ तब उस ने उस मनुष्य से कहा कि अपना हाथ बढ़ा;
उस ने बढ़ाया और वह दूसरे के समान चंगा हो गया।
१४ तब फरीसियों ने बाहर जाके उस के बिरुद्ध परामर्श
किया कि उस को घात करें।

१५ यिसू यह जानके वहां से चला गया और बड़ी भीड़
उस के पीछे हो लिई और उस ने उन सभों को चंगा
१६ किया। और उन्हें आज्ञा किई कि मुझ को प्रगट मत
१७ करो। कि जो यसइयाह भविष्यतवक्ता ने कहा था सो
१८ पूरा होवे। अर्थात देखो मेरा सेवक जिस को मैं ने चु-
ना है और मेरा प्रिय जिस से मेरा मन अति प्रसन्न है;

मैं अपना आत्मा उस पर रखूंगा और वह अन्यदेशि-
यों पर न्याय प्रगट करेगा। वह न झगड़ा करेगा न | १९
धूम मचावेगा और मार्गों में कोई उस का शब्द न सुने-
गा। वह जब लों न्याय को प्रबल न करे तब लों कुचले | २०
हुए नरकट को न तोड़ेगा और धुवां उठते हुए सन
को न बुझावेगा। और उस के नाम पर अन्यदेशी लोग | २१
आस्था रखेंगे।

तब लोग एक अंधे गूंगे पिशाच ग्रस्त को उस पास | २२
लाये और उस ने उसे चंगा किया ऐसा कि वह अंधा
गूंगा देखने और बोलने लगा। और सब लोग अचं- | २३
भा करके बोले क्या यह दाऊद का पुत्र नहीं है।
परन्तु फरीसी यह सुनके बोले कि यह पिशाचों के | २४
प्रधान बालसबूल की सहायता बिना पिशाचों को नहीं
निकालता है। और यिसू ने उन के मन की बातें बूझके | २५
उन से कहा जिस जिस राज्य में फूट पड़े सो उजाड़
होता है और जिस जिस नगर अथवा घर में फूट पड़े
सो स्थिर न रहेगा। और यदि शैतान शैतान को नि- | २६
काले तो वह अपने विरुद्ध उठके फूट करता है फिर
उस का राज्य कैसे स्थिर रहेगा। और यदि मैं बाल- | २७
सबूल की सहायता से पिशाचों को निकालता हूं तो
तुम्हारे पुत्र किस की सहायता से निकालते हैं इस लिये
वे तुम्हारे न्यायी होंगे। परन्तु यदि मैं परमेश्वर के | २८
आत्मा से पिशाचों को निकालता हूं तो परमेश्वर का
राज्य निश्चय करके तुम पास आ पहुंचा है। अथवा | २९

कोई किसी बलवन्त मनुष्य के घर में क्योंकर पैठे और उस की सामग्री को लूटे; जब पहिले उस बलवन्त को बांधे पीछे वह उस के घर को लूटेगा। ३० जो मेरे संग नहीं सो मेरे बिरुद्ध है और जो मेरे संग एकट्ठा नहीं करता सो बिथराता है। ३१ इस लिये मैं तुम से कहता हूं कि समस्त प्रकार का पाप और निन्दा मनुष्यों को क्षमा किई जायगी परन्तु आत्मा के विषय की निन्दा मनुष्यों को क्षमा नहीं किई जायगी। ३२ और जो कोई मनुष्य के पुत्र के विषय में बुरा कहे वह उस को क्षमा किया जायगा परन्तु जो पवित्र आत्मा के विषय में बुरा कहे उस को क्षमा नहीं किया जायगा न तो इस लोक में न परलोक में। ३३ यदि पेड़ को अच्छा ठहराओ तो उस के फल को भी अच्छा अथवा पेड़ को बुरा ठहराओ तो उस के फल को भी बुरा क्योंकि पेड़ तो फल ही से जाना जाता है। ३४ हे सांपों के बंश तुम बुरे होके क्योंकर अच्छी बातें कह सकते हो; क्योंकि जो मन में भरा है सोही मुंह पर आता है। ३५ उत्तम मनुष्य मन के उत्तम भण्डार में से उत्तम बातें निकालता है और अधम मनुष्य मन के अधम भण्डार में से अधम बातें निकालता है। ३६ परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि हर एक व्यर्थ बात जो मनुष्य कहते हैं वे बिचार के दिन में उस का लेखा देंगे। ३७ क्योंकि तू अपनी बातों ही से निर्दोष ठहराया जायगा और अपनी बातों ही से दोषी ठहराया जायगा।

तब कई एक अध्यापकों और फरीसियों ने उत्तर देके कहा हे गुरु हम तुझ से एक चिन्ह देखा चाहते हैं। परन्तु उस ने उन्हें उत्तर देके कहा यह बुरी और परस्त्रीगामी पीढ़ी एक चिन्ह ढूंढ़ती है परन्तु यूनह भविष्यतवक्ता के चिन्ह को छोड़ उन्हें कोई चिन्ह दिया न जायगा। क्योंकि जैसा यूनह तीन रात दिन मछली के पेट में रहा वैसा ही मनुष्य का पुत्र तीन रात दिन पृथिवी के भीतर रहेगा। नीनवेह के लोग न्याय के दिन इस समय के लोगों के संग उठेंगे और उन्हें दोषी ठहरावेंगे क्योंकि उन्हों ने यूनह के उपदेश के कारण से मन फिराये और देखो यूनह से भी बड़ा एक यहां है। दक्षिण की रानी इस समय के लोगों के संग न्याय के दिन में उठेगी और उन्हें दोषी ठहरावेगी क्योंकि वह पृथिवी के अन्त सिवाने से सुलेमान का ज्ञान सुनने को आई और देखो सुलेमान से भी बड़ा एक यहां है। जब अपवित्र आत्मा मनुष्य से निकल जाता है तो सूखे स्थानों में बिश्राम ढूंढ़ता फिरता पर नहीं पाता है। तब कहता है कि मैं अपने घर में जहां से निकला हूं फिर जाऊंगा और आके वह उसे सूना और झाड़ा बुहारा पाता है। तब वह जाता है और सात आत्माओं को जो उस से अधिक दुष्ट हैं अपने संग लाता और वे भीतर जाके वहां बास करते हैं तब उस मनुष्य की पिछली दशा अगिली से अधिक बुरी होती

३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५

है; इसी रीति से इस समय के दुष्ट लोगों की दशा भी होगी।

४६ जब वह लोगों से कह रहा था देखो उस की माता और उस के भाई बाहर खड़े हुए उस से बात कर-
४७ ने चाहते थे। तब एक ने उस से कहा देख तेरी माता और तेरे भाई बाहर खड़े हुए तुझ से बात करने
४८ चाहते हैं। परन्तु उस ने कहनेवाले को उत्तर देके
४९ कहा कौन है मेरी माता और कौन हैं मेरे भाई। और उस ने अपने शिष्यों की ओर अपना हाथ बढ़ाके कहा
५० देख मेरी माता और मेरे भाई। क्योंकि जो कोई मेरे पिता की जो स्वर्ग में है इच्छा पर चलता है सोई मेरा भाई और बहिन और माता है॥

१३ पर्व्व

उसी दिन यिसू घर से निकलकर समुद्र के तीर जा
२ बैठा। और ऐसी बड़ी भीड़ उस के पास एकट्ठी हुई कि वह एक नाव पर चढ़ बैठा और समस्त भीड़ तीर पर खड़ी रही।

३ और वह उन्हें बहुत सी बातें दृष्टान्तों में कहने लगा कि देखो एक बोनेहारा बीज बोने को निकला।
४ और यों हुआ कि बोने में कुछ मार्ग की ओर गिरा
५ और पंछियों ने आकर उसे चुग लिया। कुछ पत्थरीली भूमि पर गिरा वहां उसे बहुत मिट्टी न मिली और बहुत मिट्टी न पाने से उन के अंकुर जल्द निकले।
६ और जब सूर्य्य उदय हुआ वे मुरझा गये और जड़ न
७ पकड़ने से सूख गये। और कुछ कांटों के बीच में

गिरा और कांटों ने बढ़के उसे दबा डाला। परन्तु कुछ ८
अच्छी भूमि पर गिरा और फल लाया कुछ तो सौ
गुणा कुछ साठ गुणा कुछ तीस गुणा। जिस किसी के ९
कान सुनने को हों सो सुने।

तब शिष्यों ने आके उसे कहा कि तू उन से दृष्टान्तों १०
में क्यों बोलता है। उस ने उत्तर देके उन से कहा ११
तुम्हें स्वर्ग के राज्य के भेद का ज्ञान तो दिया गया है
परन्तु उन को नहीं दिया गया। क्योंकि जिस पास कुछ १२
है उसे दिया जायगा और उस की अधिक बढ़ती होगी
परन्तु जिस पास कुछ नहीं है उस से वह भी जो उस
के पास हो फिर लिया जायगा। इस कारण मैं दृष्टां- १३
तों में उन से बोलता हूं कि वे देखते हुए नहीं देखते
और सुनते हुए नहीं सुनते और नहीं समझते हैं। और १४
उन पर यसइयाह की यह भविष्यवाणी पूरी हुई कि
तुम सुनते हुए सुनोगे पर न समझोगे और देखते
हुए देखोगे पर तुम्हें न सूझेगा। क्योंकि इन लोगों १५
का मन कठोर हो गया और वे अपने कानों से ऊंचा
सुनते हैं और अपनी आंखें उन्हों ने मूंद लिईं न हो कि
वे कभी आंखों से देखें और कानों से सुनें और मन से
समझें और फिराये जावें और मैं उन्हें चंगा करूं।
परन्तु धन्य तुम्हारी आंखें कि वे देखती हैं और तुम्हारे १६
कान कि वे सुनते हैं। क्योंकि मैं तुम से सच कहता १७
हूं कि जो कुछ तुम देखते हो सो बहुतेरे भविष्यत-
वक्ताओं और धर्म्मियों ने देखने चाहा पर न देखा

और जो कुछ तुम सुनते हो उस को सुनने चाहा पर न सुना।

१८ अब तुम बोनेहारे का दृष्टान्त सुनो। १९ जब कोई उस राज्य का बचन सुनता और नहीं समझता है तब वह दुष्ट आता है और जो कुछ उस के मन में बोया गया था सो छीन लेता है; यह वही है कि जिस ने मार्ग की २० ओर बीज पाया। परन्तु जिस ने बीज को पत्थरीली भूमि में पाया सो वही है कि जो बचन को सुनता है २१ और तुरन्त आनन्द से उसे ग्रहण करता है। पर जड़ न रखने से वह थोड़ी बेर ठहरता है कि जब बचन के कारण वह दुःख अथवा उपद्रव में पड़ता है तुरन्त २२ वह ठोकर खाता है। जिस ने बीज को कांटों के बीच में पाया सो वह है कि जो बचन को सुनता है और इस संसार की चिन्ता और धन का छल बचन को दबा २३ डालता है और वह बेफल रहता है। परन्तु जिस ने बीज को अच्छी भूमि में पाया सो वह है कि जो बचन को सुनता और समझता है; उस में फल भी लगते और सिद्ध होते हैं कितनों में सौ गुणा कितनों में साठ गुणा कितनों में तीस गुणा।

२४ उस ने उन से और एक दृष्टान्त कहा कि स्वर्ग का राज्य एक मनुष्य के तुल्य है कि जिस ने अपने खेत में २५ अच्छा बीज बोया। परन्तु जब लोग सो गये तब उस का बैरी आया और गोहूं के बीच में बनैला बीज बोके २६ चला गया। जब अंकुर निकले और बालें लगीं तब

बनैला बीज भी दिखाई दिया। तब उस गृहस्थ के २७
दासों ने आके उस से कहा हे स्वामी क्या तू ने अपने
खेत में अच्छा बीज नहीं बाया था; फिर बनैले बीज
कहां से आये। उस ने उन से कहा किसी बैरी ने यह २८
किया है; दासों ने उस से कहा यदि तेरी इच्छा होय
तो हम जाके उन्हें एकट्ठे करें। परन्तु उस ने कहा कि २९
नहीं ऐसा न हो कि जब तुम बनैले बीज को एकट्ठे करो
तुम उन के संग गोहूं भी उखाड़ लेओ। कटनी तक ३०
दोनों को एक संग बढ़ने देओ और कटनी के समय मैं
काटनेवालों से कहूंगा कि पहिले बनैले बीज बटोरो
और जलाने के लिये उन के गट्ठे बांधो परन्तु गोहूं
को मेरे खत्ते में बटोरो।

उस ने उन्हें एक और दृष्टान्त दिया कि स्वर्ग का ३१
राज्य राई के एक दाने के तुल्य है कि जिसे एक मनुष्य
ने लेके अपने खेत में बाया। वह सब बीजों में छोटा ३२
है परन्तु जब वह बढ़ जाता तो सब सागों से बड़ा
होता है और ऐसा पेड़ हो जाता है कि आकाश के
पंछी उस की डारों पर आके बसेरा करते हैं।

उस ने उन्हें एक और दृष्टान्त कहा कि स्वर्ग का ३३
राज्य खमीर के तुल्य है कि जिसे एक स्त्री ने लेके
तीन पसेरी आटे में मिलाया यहां लों कि सब खमीरी
हो गया।

यह सब बातें यिसू ने लोगों से दृष्टान्तों में कहीं ३४
और बिन दृष्टान्त वह उन से न बोलता था। जिसतें जो ३५

भविष्यतवक्ता ने कहा था कि मैं अपना मुंह दृष्टान्तों में खोलूंगा और जो बातें जगत के आरंभ से गुप्त थीं मैं प्रगट करूंगा सो पूरा हुआ।

३६ तब यिसू लोगों को बिदा करके घर को गया और उस के शिष्यों ने उस के पास आके कहा कि खेत के ३७ बनैले बीज के दृष्टान्त का अर्थ हमें समझा। उस ने उत्तर देके उन से कहा जो अच्छा बीज बोता है सो ३८ मनुष्य का पुत्र है। खेत तो जगत है अच्छा बीज उस राज्य के सन्तान हैं परन्तु बनैले बीज दुष्ट के सन्तान ३९ हैं। जिस बैरी ने उन्हें बोया सो शैतान है कटनी का समय जगत का अन्त है और काटनेवाले स्वर्गीय दूत ४० हैं। सो जैसे बनैले बीज बटोरे जाते और आग में जला- ४१ ये जाते हैं वैसा ही इस जगत के अन्त में होगा। मनुष्य का पुत्र अपने दूतों को भेजेगा और वे उस के राज्य में से सब ठोकर के कारणों को और बुराई करने- ४२ हारों को चुन लेंगे। और उन्हें आग के कुंड में डाल ४३ देंगे वहां रोना और दांत पीसना होगा। तब धर्म्मी लोग अपने पिता के राज्य में सूर्य्य के तुल्य प्रकाशित होंगे; जिस के कान सुनने को हों सो सुने।

४४ फिर स्वर्ग का राज्य उस धन के तुल्य है जो खेत में गड़ा है; उसे एक मनुष्य पाके छिपाता है और उस के आनन्द के मारे जाकर अपना सब कुछ बेचता और उस खेत को मोल लेता है।

४५ फिर स्वर्ग का राज्य एक ब्योपारी के तुल्य है जो चो-

खे मोतियें को ढूंढ़ता है। जब बड़े मोल का एक मे- | ४६
ती पाया ते। उस ने जाके अपना सब कुछ बेच डाला
और उस के। मोल लिया।

फिर स्वर्ग का राज्य एक जाल के तुल्य है जो समुद्र | ४७
में डाला गया और हर प्रकार की मछली बटोर ला-
या। जब वह भर गया तब वे उसे तीर पर खैंच लाये | ४८
और बैठके अच्छी अच्छी के। पात्रों में बटोरा परन्तु बु-
री बुरी के। फेंक दिया। जगत के अन्त में ऐसा ही हे।- | ४९
गा कि स्वर्गीय दूत निकलेंगे और दुष्टों के। धर्म्मियों
में से अलग करेंगे। और उन्हें आग के कुंड में डाल | ५०
देंगे वहां रोना और दांत पीसना होगा।

यिसू ने उन से कहा क्या तुम ने यह सब कुछ समझा | ५१
उन्हों ने उसे कहा हां प्रभु। तब उस ने उनसे कहा इस | ५२
लिये हर एक अध्यापक कि जिस ने स्वर्ग के राज्य की
सिक्षा पाई है से। एक गृहस्थ के समान है कि जो अपने
भण्डार में से नई और पुरानी वस्तुआं निकालता है।

और यों हुआ कि जब यिसू ये दृष्टान्त कह चुका तब | ५३
वहां से चला गया। और जब वह अपने देश में आया | ५४
उस ने उन की मण्डली में ऐसा उपदेश किया कि वे
अचंभित होके बोले कि यह ज्ञान और यह आश्चर्य्य
कर्म्म इस के। कहां से मिले। क्या यह बढ़ई का पुत्र | ५५
नहीं; क्या उस की माता का नाम मरियम नहीं है और
क्या याकूब और यूसी और समऊन और यहूदाह उस
के भाई नहीं हैं। और क्या उस की सब बहिनें हमारे | ५६

संग नहीं हैं; फिर इस को यह सब कहां से हुआ।
५७ और उन्हों ने उस से ठोकर खाई परन्तु यिसू ने उन
से कहा कि भविष्यतवक्ता अपने देश और अपने घर
५८ को छोड़ और कहीं निरादर नहीं होता है। और
उस ने उन के अविश्वास के कारण वहां बहुत आश्चर्य्य
कर्म्म नहीं किये॥

१४ पर्ब्ब

उस समय में राज्य के चौथाई के अध्यक्ष हेरोदेस ने
२ यिसू की कीर्त्ति सनी। और अपने सेवकों से कहा यह
यूहन्ना बपतिसमा देनेवाला है वह मृतकों में से जी
उठा है इस कारण आश्चर्य्य कर्म्म उस से किये जाते
३ हैं। क्योंकि हेरोदेस ने अपने भाई फिलिप की पत्नी
हेरोदिया के कारण यूहन्ना को पकड़के बांधा और
४ बन्दीगृह में डाल दिया था। इस लिये कि यूहन्ना ने
उस से कहा था कि उसे रखना तुझे उचित नहीं है।
५ और वह उसे वध करने चाहता था पर लोगों से
६ डरा क्योंकि वे उसे भविष्यतवक्ता जानते थे। परन्तु
जब हेरोदेस का जन्मदिन आया हेरोदिया की पुत्री
उन के आगे नाची और हेरोदेस को मगन किया।
७ तिस पर उस ने किरिया खाके प्रण किया कि जो कुछ
८ तू मांगेगी मैं तुझे देऊंगा। तब वह जैसा उस की
माता ने उसे सिखा रखा था बोली यूहन्ना बपतिसमा
देनेवाले का सिर एक थाल पर मुझे यहां मंगवा दे।
९ तब राजा उदास हुआ तथापि किरिया के लिये और
उन के कारण जो उस के संग भोजन पर बैठे थे उस

ने आज्ञा किई कि देवें। और उस ने भेजके बन्दीगृह में यूहन्ना का सिर कटवाया। और उस का सिर थाल पर लाके कन्या को दिया; वह अपनी माता के पास ले गई। और उस के शिष्यों ने आकर लोथ को उठाके गाड़ दिया और जाके यिसू से कहा। १० ११ १२

जब यिसू ने सुना तो वहां से नाव पर चढ़के एक सूने स्थान को अलग गया और जब लोगों ने सुना वे नगरों से निकलकर पांव पांव उस के पीछे हो लिये। १३

और यिसू ने निकलकर एक बड़ी भीड़ देखी और उन पर दया करके उन के रोगियों को चंगा किया। १४

जब सांझ ऊई उस के शिष्यों ने उस पास आके कहा यह सूना स्थान है और दिन भी ढल गया; लोगों को बिदा कर कि वे बस्तियों में जाके अपने लिये भोजन मोल लेवें। यिसू ने उन से कहा उन के जाने का प्रयोजन नहीं तुम ही उन्हें खाने को देओ। उन्हों ने उस से कहा हमारे पास यहां केवल पांच रोटियां और दो मछलियां हैं। उस ने कहा उन को यहां मेरे पास लाओ। फिर उस ने लोगों को आज्ञा किई कि घास पर बैठ जायें और पांच रोटियों और दो मछलियों को लेकर उस ने स्वर्ग को ओर दृष्टि करके धन्यबाद किया और रोटियों को तोड़के शिष्यों को दिया और शिष्यों ने लोगों को दिया। और वे सब खाके तृप्त ऊए और जो टुकड़े बच रहे थे उन्हों ने उन से बारह टोकरियां भरके उठाईं। और जिन्हों ने खाया था सो १५ १६ १७ १८ १९ २० २१

स्त्रियों और लड़कों को छोड़ पांच सहस्र पुरुषों के लगभग थे।

२२ तब यिसू ने तुरन्त अपने शिष्यों को आज्ञा किई कि नाव पर चढ़ो और जब लों मैं लोगों को बिदा करूं २३ तुम मेरे आगे उस पार जाओ। और लोगों को बिदा करके वह प्रार्थना करने को एक पहाड़ पर अलग २४ चढ़ गया और जब सांझ हुई वहां अकेला था। परन्तु नाव उस समय में समुद्र के बीच में होके लहरों से २५ डगमगाती थी क्योंकि बयार संमुख की थी। और रात के चौथे पहर में यिसू समुद्र पर चलते चलते उन के २६ पास आया। जब शिष्यों ने उस को समुद्र पर चलते देखा तो घबराके बोल उठे कि प्रेत है और मारे डर २७ के चिल्लाये। तब यिसू ने वोंहीं उन से कहा सुस्थिर २८ होओ मैं हूं डरो मत। तब पथरस ने उत्तर देके उस से कहा हे प्रभु यदि तू ही है तो मुझे आज्ञा कर कि २९ पानी पर तुझ पास आऊं। उस ने कहा कि आ तब पथरस नाव पर से उतरके पानी पर चलने लगा कि ३० यिसू पास जाय। परन्तु जब उस ने देखा कि बयार बड़ी है वह डर गया और जब डूबने लगा तो चिल्लाके बो- ३१ ला हे प्रभु मुझ को बचा। तब यिसू ने तुरन्त हाथ बढ़ाके उसे पकड़ लिया और कहा हे अल्प बिस्वासी ३२ तू ने क्यों सन्देह किया। और जब वे नाव पर आये ३३ तब बयार थम गई। तब वे जो नाव पर थे आके उस

को दण्डवत करके कहने लगे तू सचमुच परमेश्वर का पुत्र है।

फिर पार उतरके वे गिन्नेसरत के देश में पहुंचे। ३४ और वहां के लोगों ने उसे पहचानके उस देश की ३५ चारों ओर सन्देश भेजा और समस्त रोगियों को उस पास लाये। और उन्हों ने उस से बिन्ती किई कि केवल उस के वस्त्र के अंचल को छूवें और जितनों ने छूआ सो सर्वांग चंगे हो गये॥ ३६

१५ पर्व्व

तब यरूसलम के अध्यापकों और फरीसियों ने यिसु पास आके कहा। तेरे शिष्य प्राचीनों के व्यवहारों को क्यों उल्लंघन करते हैं क्योंकि जब वे रोटी खाते हैं तब हाथ नहीं धोते। उस ने उन्हें उत्तर देके कहा तुम क्यों अपने व्यवहारों से परमेश्वर की आज्ञा को उल्लंघन करते हो। क्योंकि परमेश्वर ने आज्ञा किई कि अपने माता पिता का संमान कर और जो माता अथवा पिता की निन्दा करे सो मार डाला जाय। परन्तु तुम कहते हो कि जो कोई माता अथवा पिता से कहे कि जो कुछ तुझ को मुझ से देना था सो भेट किई गई है और अपने माता अथवा पिता का संमान न करे तो कुछ चिन्ता नहीं। इस रीति से तुम ने अपने व्यवहारों से परमेश्वर की आज्ञा को उठा दिया है। हे कपटियो यसइयाह ने तुम्हारे विषय में यह भविष्यवाणी अच्छी कही है। कि ये लोग अपने मुंह से मेरे पास आते हैं और होंठों से मेरा संमान करते

२ ३ ४ ५ ६ ७ ८

९ हैं परन्तु उन का मन मुझ से दूर रहता है। पर वे
बृथा मेरी उपासना करते हैं क्योंकि मनुष्यों की आ-
१० ज्ञाओं को वे धर्म्मोपदेश ठहराके सिखाते हैं। तब उस
ने लोगों को पास बुलाके उन से कहा तुम सुनो और
११ समझो। जो कुछ मुंह में समाता है सो मनुष्य को अप-
वित्र नहीं करता है परन्तु जो मुंह से निकलता है सो
१२ ही मनुष्य को अपवित्र करता है। तब उस के शिष्यों
ने आके उस से कहा क्या तू जानता है कि फरीसियों
१३ ने यह बात सुनके ठोकर खाई। उस ने उत्तर देके
कहा जो पौधा मेरे स्वर्गबासी पिता ने नहीं लगाया है
१४ सो उखाड़ा जायगा। उन्हें जाने देओ वे अंधों के अंधे
अगवे हैं और यदि अंधा अंधे का अगवा होवे तो दो-
१५ नों गढ़े में गिर पड़ेंगे। तब पथरस ने उत्तर देके
१६ उस से कहा इस दृष्टान्त का अर्थ हमें समझा। यिसू
१७ ने कहा क्या तुम भी अब लों नासमझ हो। क्या अब
लों नहीं बूझते हो कि जो कुछ मुंह में समाता है सो
१८ पेट में पड़ता और गढ़े में फेंका जाता है। परन्तु जो
कुछ मुंह में से निकलता है सो मन में से बाहर आता
१९ है और वही मनुष्य को अपवित्र करता है। क्योंकि
मन में से बुरी चिन्ता हत्या परस्त्रीगमन व्यभिचार
चोरी झूठी साची परमेश्वर की निन्दा निकलती हैं।
२० येही बातें मनुष्य को अपवित्र करती हैं परन्तु बिन धोये
हाथ से भोजन करना मनुष्य को अपवित्र नहीं कर-
ता है।

तब यिसू वहां से चलके सूर और सैदा के सिवानों में | २१
गया। और देखो एक कनआनी स्त्री ने उन सिवानों | २२
में से निकलकर चिल्लाके उस से कहा हे प्रभु दाऊद
के पुत्र मुझ पर दया कर कि मेरी बेटी पिशाच से
अति दुःखी है। परन्तु उस ने उस को कुछ उत्तर न | २३
दिया और उस के शिष्यों ने आके बिन्ती करके उस से
कहा उस को बिदा कर क्योंकि वह हमारे पीछे चिल्ला-
ती है। तब उस ने उत्तर देके कहा इसराएल के | २४
घराने की खोई हुई भेड़ों को छोड़ मैं और किसी के
पास भेजा नहीं गया। तब वह आई और उस को | २५
दण्डवत करके कहा हे प्रभु मेरी सहाय कर। परन्तु | २६
उस ने उत्तर देके कहा बालकों की रोटी लेके कुत्तों
के आगे फेंकना अच्छा नहीं है। उस ने कहा सच हे | २७
प्रभु तथापि जो चूरचार उन के स्वामियों के मंच से
गिरते हैं सो कुत्ते खाते हैं। यिसू ने उत्तर देके उस | २८
से कहा हे स्त्री तेरा बिश्वास बड़ा है जो तू चाहती
है सो तुझ को होवे और उस की बेटी उसी घड़ी
चंगी हो गई।

और यिसू वहां से जाके गलील के समुद्र के निकट | २९
आया और एक पहाड़ पर चढ़के वहां बैठा। और | ३०
बहुत से लोग जिन के संग लंगड़े अंधे गूंगे टुंडे और
बहुत से और लोग थे सो उस पास आये और उन्हें
यिसू के पांवों पास डाल दिया और उस ने उन्हें चंगा
किया। यहां लों कि जब लोगों ने देखा कि गूंगे बोलते | ३१

और टुंडे अच्छे होते हैं लंगड़े चलते और अंधे देखते हैं तो अचंभा कर के इसराएल के परमेश्वर की बड़ाई किई।

३२ तब यिसू ने अपने शिष्यों को पास बुलाके कहा इन लोगों पर मुझे दया आती है क्योंकि वे तीन दिन से मेरे संग रहे हैं और उन के पास कुछ खाने को नहीं है और मैं नहीं चाहता कि उन्हें भोजन बिना बिदा करूं न हो कि वे मार्ग में निर्बल हो जावें। ३३ उस के शिष्यों ने उस से कहा इस बन में हम कहां से इतनी रोटी लावें कि हम इतने बहुत से लोगों को तृप्त करें। ३४ यिसू ने उन से कहा तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं; ३५ वे बोले सात और थोड़ी छोटी मछलियां। तब उस ३६ ने लोगों को भूमि पर बैठ जाने की आज्ञा किई। और उस ने उन सात रोटियों को और उन मछलियों को लेके धन्य मानके तोड़ा और अपने शिष्यों को दिया ३७ और शिष्यों ने लोगों को दिया। और वे सब खाके तृप्त हुए और जो टुकड़े बच रहे थे उन्हों ने उन से ३८ सात टोकरियां भरके उठाईं। और जिन्हों ने भोजन किया था सो स्त्रियों और लड़कों को छोड़ चार सहस्र ३९ पुरुष थे। तब वह लोगों को बिदा करके नाव पर चढ़ा और मगदला के सिवानों में आया॥

१६ पर्व्व

तब फरीसियों और सादूकियों ने आके उस की परीक्षा के लिये उस से चाहा कि हम को आकाश का २ एक चिन्ह दिखा। उस ने उत्तर देके उन से कहा जब

सांझ होती है तो तुम कहते हो कि कल फरछा होगा क्योंकि आकाश लाल है। और भोर को कि आज आंधी चलेगी क्योंकि आकाश लाल और घनघोर है; हे कपटियो आकाश के रूप को तुम बूझ सकते हो परन्तु समयों के चिन्ह तुम नहीं बूझ सकते हो। यह दुष्ट और परस्त्रीगामी लोग चिन्ह ढूंढ़ते हैं पर यूनह भविष्यतवक्ता के चिन्ह को छोड़ कोई चिन्ह उन्हें दिया न जायगा; और वह उन्हें छोड़के चला गया। ३ ४

और उस के शिष्य उस पार पहुंचे और रोटी संग लेने को भूल गये थे। तब यिसू ने उन से कहा फरीसियों और सादूकियों के खमीर से चौकस और परे रहो। और वे आपस में विचार करके कहने लगे हम रोटी न लाये इस लिये वह यह बात बोलता है। परन्तु यिसू ने यह जानकर उन से कहा हे अल्पविश्वासियो क्यों अपने मन में बिचारते हो कि यह रोटी न लाने के कारण है। क्या तुम अब लों नहीं समझते हो और उन पांच सहस्र की पांच रोटियां चेत नहीं करते और कि तुम ने कितनी टोकरियां भरके उठाईं। और न तुम उन चार सहस्र की सात रोटियां चेत करते हो और कि तुम ने कितनी टोकरियां भरकर उठाईं। क्या तुम नहीं समझते कि जो मैं ने तुम्हें फरीसियों और सादूकियों के खमीर से परे रहने को कहा सो रोटी के विषय में नहीं कहा। तब उन्हों ने समझा कि उस ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२

ने रोटी के खमीर से नहीं परन्तु फरीसियों और सा-
दूकियों के उपदेश से परे रहने को कहा था।

१३ जब यिसू कैसरिया फिलिपी के सिवानों में आया तो
उस ने अपने शिष्यों से यह कहके पूछा लोग क्या कह-
१४ ते हैं कि मैं जो मनुष्य का पुत्र हूं सो कौन हूं। उन्हों
ने कहा कितने तो कहते हैं कि तू यूहन्ना बपतिसमा
देनेवाला है कितने कि इलियाह और कितने कि
१५ यिरमियाह अथवा भविष्यतवक्ताओं में से एक है। उस
ने उन से कहा परन्तु तुम क्या कहते हो कि मैं कौन
१६ हूं। समऊन पथरस ने उत्तर देके कहा कि तू मसीह
१७ जीवत परमेश्वर का पुत्र है। तब यिसू ने उत्तर देके
उस से कहा हे यूनह के पुत्र समऊन तू धन्य है क्यों-
कि मांस और रुधिर ने नहीं परन्तु मेरा पिता जो
१८ स्वर्ग में है उसी ने तुझ पर यह प्रगट किया है। और
मैं भी तुझ से कहता हूं कि तू पथरस है और इस
पत्थर पर मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा और नरक
१९ के फाटक उस पर प्रबल नहीं होंगे। और मैं स्वर्ग
के राज्य की कुंजियां तुझे देऊंगा और जो कुछ तू
पृथिवी पर बांधेगा सो स्वर्ग में बांधा जायगा और
जो कुछ तू पृथिवी पर खोलेगा सो स्वर्ग में खोला जाय-
२० गा। तब उस ने अपने शिष्यों को चिता दिया कि किसी
मनुष्य से न कहना कि मैं यिसू जो हूं सो मसीह हूं।

२१ उस समय से यिसू अपने शिष्यों को बताने लगा
मुझे आवश्य है कि यरूसलम को जाऊं और प्राचीनों

और प्रधान याजकों और अध्यापकों से बक्कत कष्ट उ-
ठाऊं और मारा जाऊं और तीसरे दिन जी उठूं। तब २२
पथरस उसे अलग ले जाकर उस को डांटके कहने
लगा हे प्रभु तुझ पर दया रहे यह तुझ पर कधी न
होगा। परन्तु उस ने फिरके पथरस से कहा हे शै- २३
तान मेरे सामने से दूर हो तू मेरे लिये ठोकर है
क्योंकि तू परमेश्वर की नहीं परन्तु मनुष्य की बातों
का बिचार करता है।

तब यिसू ने अपने शिष्यों से कहा जो कोई मेरे पीछे २४
आया चाहे सो अपनी इच्छा को मारे और अपना क्रूस
उठावे और मेरे पीछे आवे। क्योंकि जो कोई अपने २५
प्राण को बचाने चाहेगा सो उसे खोवेगा और जो
कोई मेरे कारण अपने प्राण को खोवेगा सो उसे पा-
वेगा। क्योंकि यदि मनुष्य समस्त जगत को प्राप्त करे २६
और अपने प्राण को गंवावे तो उस को क्या लाभ हो-
गा; अथवा अपने प्राण की संती मनुष्य क्या देगा। क्यों- २७
कि मनुष्य का पुत्र अपने दूतों के संग अपने पिता के
ऐश्वर्य्य में आवेगा और तब वह हर एक मनुष्य को
उस के कर्म्म के समान फल देगा। मैं तुम से सच कह- २८
ता हूं कि जो यहां खड़े हैं उन में कितने हैं कि जबलों
मनुष्य के पुत्र को उस के राज्य में आते न देख लेवें वे
मृत्यु का स्वाद न चीखेंगे॥

१७ पर्ब्ब

और छः दिन के पीछे यिसू पथरस और याकूब
और उस के भाई यूहन्ना को संग लेके अलग एक

२ ऊंचे पहाड़ पर चढ़ गया। और उन के आगे उस का रूप बदल गया और उस का मुंह सूर्य्य के समान चमका और उस का बस्त्र ज्योति की नाईं उजला हुआ।
३ और देखो मूसा और इलियाह उस से वार्त्ता करते
४ हुए दिखाई दिये। तब पथरस ने यिसू से कहा हे प्रभु हमारा यहां रहना अच्छा है; यदि तेरी इच्छा होय तो हम तीन डेरे यहां बनावें एक तेरे लिये और एक
५ मूसा के लिये और एक इलियाह के लिये। वह यह कहता ही था कि देखो एक उजले मेघ ने उन पर छाया किई और देखो उस मेघ से यह कहते हुए एक शब्द निकला यह मेरा प्रिय पुत्र है उस से मैं अति
६ प्रसन्न हूं तुम उस की सुनो। और जब शिष्यों ने यह
७ सुना तो मुंह के बल गिरे और बहुत डर गये। तब यिसू ने आके उन्हें छूआ और कहा उठो और डरो
८ मत। और उन्हों ने अपनी आंखें उठाके यिसू को छोड़
९ और किसी को न देखा। और जब वे उस पहाड़ पर से उतरे यिसू ने उन्हें आज्ञा देके कहा जब लों मनुष्य का पुत्र मृतकों में से जी न उठे तब तक तुम इस दर्शन
१० का चर्चा किसी से न करना। तब उस के शिष्यों ने उस से पूछा फिर अध्यापक लोग किस कारण कहते हैं
११ कि पहिले इलियाह का आना अवश्य है। यिसू ने उन्हें उत्तर दिया कि इलियाह पहिले तो आवेगा ठीक
१२ और समस्त वस्तुओं को सुधारेगा। परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि इलियाह आ चुका है और उन्हों ने उस

को नहीं पहचाना परन्तु जो चाहा सो उस से किया; इसी रीति से मनुष्य का पुत्र भी उन से दुःख पावेगा। तब शिष्यों ने समझा कि उस ने यूहन्ना बपतिसमा देनेवाले के विषय में उन से कहा था। | १३

जब वे लोगों के पास आये एक मनुष्य ने उस के पास आकर घुटने टेकके उस से कहा। हे प्रभु मेरे पुत्र पर दया कर कि वह सिर्री और बड़ा दुःखी है क्योंकि वह वारंवार आग में और वारंवार पानी में गिर पड़ता है। और मैं उसे तेरे शिष्यों के पास लाया परन्तु वे उसे चंगा न कर सके। यिसू ने उत्तर देके कहा हे अविश्वासी और टेढ़े लोगो मैं कब लों तुम्हारे संग रहूं; मैं कब लों तुम्हारी सहूं; उस को यहां मेरे पास लाओ। और यिसू ने उस पिशाच को डांटा तब वह उस से निकल गया और वह बालक उसी घड़ी चंगा हो गया। तब शिष्यों ने यिसू पास निराले में आके कहा हम लोग उस को क्यों निकाल न सके। यिसू ने उन से कहा तुम्हारे अविश्वास के कारण क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं यदि तुम्हें राई भर विश्वास होता तो तुम इस पहाड़ से कहते कि यहां से वहां को चला जा तो वह चला जाता और तुम्हारी कोई बात अनहोनी न होती। तिस पर भी इस प्रकार का पिशाच विना प्रार्थना और उपवास से निकाला नहीं जाता है। | १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१

और जब वे गलील में फिरा करते थे यिसू ने उन | २२

से कहा मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया
२३ जायगा। और वे उस को मार डालेंगे और वह तीसरे
दिन जी उठेगा; तब वे अत्यन्त उदास हुए।
२४ और जब वे कफरनहूम में पहुंचे कर उगाहने-
वालों ने आके पथरस से कहा क्या तुम्हारा गुरु कर
२५ नहीं देता है; उस ने कहा हां देता है। और जब
वह घर में आया यिसू ने उस के बोलने से पहिले
उस से कहा हे समऊन तू क्या समझता पृथिवी के
राजा किन से शुल्क अथवा कर लेते हैं अपने लड़कों
२६ से अथवा परायों से। पथरस ने उस से कहा परायों
से; यिसू ने उस से कहा तो लड़के उस से छूटे हैं।
२७ तिस पर भी ऐसा न हो कि वे हमारे कारण ठोकर
खावें इस लिये तू समुद्र को जा और बंसी डाल और
जो मछली कि पहिले निकले उस को ले और उस
का मुंह खोल तो तू एक रुपैया पावेगा उसे लेकर
मेरे और अपने लिये उन्हें दे॥

१८ पर्व्व

उसी समय में शिष्यों ने यिसू के पास आके कहा
२ स्वर्ग के राज्य में बड़ा कौन है। यिसू ने एक बालक
को अपने पास बुलाके उसे उन के बीच में खड़ा किया।
३ और कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि यदि तुम मन
न फिराओ और बालकों के समान न बनो तो तुम
४ स्वर्ग के राज्य में कधी प्रवेश न करोगे। इस कारण
जो कोई अपने को इस बालक के समान छोटा जाने
५ वही स्वर्ग के राज्य में बड़ा है। और जो कोई ऐसे एक

बालक को मेरे नाम के लिये ग्रहण करे वह मुझे ग्रहण करता है। परन्तु जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर बिश्वास रखते हैं एक को ठोकर खिलावे तो उस के लिये यह भला होता कि चक्की का पाट उस के गले में लटकाया जाता और वह समुद्र के गहिराव में डुबाया जाता। ठोकरों के कारण जगत पर हाय है; ठोकरों का आना अवश्य है परन्तु जिस के कारण से ठोकर लगती है उस मनुष्य पर हाय है। यदि तेरा हाथ अथवा तेरा पांव तुझे ठोकर खिलावे तो उसे काट डाल और अपने पास से फेंक दे कि लंगड़ा अथवा टुंडा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है कि दो हाथ अथवा दो पांव होते तू अनन्त आग में डाला जाय। और यदि तेरी आंख तुझे ठोकर खिलावे तो उसे निकाल डाल और अपने पास से फेंक दे कि जीवन में काना होके प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है कि तेरी दो आंखें रहते तू नरक की आग में डाला जाय। सुचेत रहो कि तुम इन छोटों में से किसी को तुच्छ न जानो क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि स्वर्ग में उन के दूत मेरे स्वर्गबासी पिता का मुंह सदा देखते हैं। क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोये हुए को बचाने आया है। तुम क्या समझते हो यदि किसी मनुष्य की सौ भेड़ें होवें और उन में से एक भटक जाय तो क्या वह निन्नानवे को नहीं छोड़ता और पहाड़ों पर जाके

६ ७ ८ ९ १० ११ १२

१३ उस भटकी हुई को नहीं ढूंढ़ता। और यदि वह उसे पावे मैं तुम से सच कहता हूं कि जो निन्नानवे भटक न गई थीं उन से अधिक वह उस एक भेड़ के १४ लिये आनन्द करेगा। इसी रीति से तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है इच्छा नहीं है कि इन छोटों में से एक भी नाश होवे।

१५ यदि तेरा भाई तेरा अपराध करे तो जा और उस के संग एकान्त में उस को समझा; यदि वह तेरी १६ सुने तो तू ने अपने भाई को पाया है। परन्तु यदि वह न सुने तो एक अथवा दो जन को अपने संग ले कि दो अथवा तीन साक्षियों के मुंह से हर एक बात १७ ठहराई जाय। और यदि वह उन की न माने तो कलीसिया से कह परन्तु यदि वह कलीसिया की भी न माने तो तू उस को जैसा अन्यदेशी और करग्राहक १८ जान। मैं तुम से सच कहता हूं कि जो कुछ तुम पृथिवी पर बांधोगे सो स्वर्ग में बांधा जायगा और जो कुछ पृथिवी पर खोलोगे सो स्वर्ग में खोला जायगा।

१९ फिर मैं तुम से कहता हूं कि यदि तुम में से दो जन पृथिवी पर किसी बात के लिये एक मन होके प्रार्थना करें वह मेरे स्वर्गवासी पिता की ओर से उन २० के लिये होगी। क्योंकि जहां दो अथवा तीन मेरे नाम पर एकट्ठे हों वहां मैं उन के बीच में हूं।

२१ तब पथरस ने उस पास आके कहा हे प्रभु यदि मेरा भाई मेरा अपराध करे तो मैं उसे कै बेर क्षमा

करूं; क्या सात बेर लों। यिसू ने उस से कहा मैं तुझे सात बेर लों नहीं कहता हूं परन्तु सत्तर गुणा सात बेर लों। इस लिये स्वर्ग का राज्य एक राजा के तुल्य है कि जिस ने चाहा कि अपने दासों से लेखा लेवे। जब वह लेखा लेने लगा तब एक को जो उस के दस सहस्र तोड़े धारता था उस के पास लाये। परन्तु जब उस के पास भर देने को कुछ न था तो उस के स्वामी ने आज्ञा किई कि वह और उस की पत्नी और लड़के बाले और जो कुछ उस का हो सब बेचा जाय और ऋण भर दिया जाय। तब उस दास ने गिरके उसे प्रणाम करके कहा हे प्रभु धीरज धर कि मैं तेरा सब कुछ भर देऊंगा। उस दास के स्वामी ने दयाल होकर उस को छोड़ दिया और उस का ऋण क्षमा किया। परन्तु उस दास ने निकलके अपने संगी दासों में से एक को जो उस की एक सौ सूकी धारता था पाया; उस ने उसे पकड़के उस का गला घोंटके कहा जो तू मेरा धारता है सो मुझे दे। तब उस के संगी दास ने उस के पांव पर गिरके बिन्ती करके कहा धीरज धर कि मैं तुझे सब भर देऊंगा। पर उस ने न माना और जाके उस को बन्दीगृह में डाल दिया कि जब लों वह ऋण को न भर दे तब लों उस में रहे। उस के संगी दास जो हुआ था सो देखके अति दुःखी हुए और जाके अपने स्वामी को सारी बातें सुनाईं। तब उस के स्वामी ने उस को बुलाके उस

२२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२

से कहा हे दुष्ट दास जब तू ने मेरी बिन्ती किई तब
३३ मैं ने तुझे वह सब ऋण क्षमा किया। तो क्या उचित
न था कि जैसा मैं ने तुझ पर दया किई वैसा ही तू
३४ भी अपने संगी दास पर दया करता। और उस के
स्वामी ने रिसियाके उस को दण्डकारकों के हाथ
सौंपा कि जब लों वह सब ऋण भर न दे तब लों
३५ बन्धुवा रहे। इसी रीति से यदि तुम में से हर एक
अपने मन से अपने भाइयों का अपराध क्षमा न करे
तो मेरा स्वर्गबासी पिता तुम से वैसा ही करेगा॥

१९ पर्व्व

और ऐसा हुआ कि जब यिसू ये बातें कर चुका तो
गलील से चला गया और यर्दन के पार यहूदाह के
२ सिवानों में आया। और बड़ी बड़ी भीड़ उस के पीछे
हो लिई और उस ने उन्हें वहां चंगा किया।

३ और फरीसी लोग उस की परीक्षा करके उस पास
आके कहने लगे क्या मनुष्य को हर एक कारण से
४ अपनी पत्नी को त्यागना उचित है। उस ने उत्तर देके
कहा क्या तुम ने नहीं पढ़ा है कि सृजनहार ने उन्हें
५ आरंभ में नर और नारी बनाया। और कहा कि इस
कारण पुरुष अपने माता पिता को छोड़ेगा और अप-
नी पत्नी से मिला रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे।
६ सो वे आगे दो नहीं परन्तु एक तन हैं; इस कारण जो
कुछ परमेश्वर ने जोड़ा है सो मनुष्य अलग न करे।
७ उन्हों ने उस से कहा फिर मूसा ने किस कारण आ-
८ ज्ञा किई कि त्यागपत्र देके उसे छोड़ दे। उस ने उन

से कहा मूसा ने तुम्हारे मन की कठोरता के कारण तुम्हें अपनी अपनी पत्नियें को त्यागने दिया परन्तु आरंभ से ऐसा न था। और मैं तुम से कहता हूं कि जो कोई व्यभिचार को छोड़ किसी और कारण से अपनी पत्नी को त्याग दे और दूसरी से बिवाह करे सो व्यभिचार करता है और जो कोई उस त्यागी हुई से बिवाह करे सो व्यभिचार करता है। ९

उस के शिष्यों ने उस से कहा यदि पत्नी के संग पुरुष को इस प्रकार का व्यवहार है तो बिवाह करना अच्छा नहीं है। उस ने उन से कहा सब कोई इस बात को ग्रहण नहीं कर सकते हैं परन्तु केवल वे जिन को दिया गया है सो ही ग्रहण कर सकते हैं। क्योंकि कितने नपुंसक हैं कि जो माता के गर्भ ही से ऐसे उत्पन्न हुए और कितने नपुंसक हैं कि जिन्हें मनुष्यों ने नपुंसक बनाया है और कितने नपुंसक हैं कि जिन्हों ने स्वर्ग के राज्य के कारण अपने को नपुंसक बनाया है; जो कोई इसे ग्रहण कर सके सो ग्रहण करे। १० ११ १२

तब लोग बालकों को उस पास लाये कि वह उन पर हाथ रखे और प्रार्थना करे पर शिष्यों ने उन्हें डांटा। यिसू ने कहा बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मत बर्जो क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है। और उस ने अपना हाथ उन पर रखा और वहां से चला गया। १३ १४ १५

१६ और देखो कि एक मनुष्य ने आके उस से कहा हे उत्तम गुरु मैं कौनसा उत्तम कर्म्म करूं कि अनन्त जीवन पाऊं। १७ उस ने उस से कहा तू मुझे उत्तम क्यों कहता है; उत्तम तो कोई नहीं केवल एक अर्थात परमेश्वर; पर यदि तू जीवन में प्रवेश किया चाहे तो आज्ञाओं को मान। १८ उस ने उस से कहा कौनसी आज्ञाएं; यिसू ने कहा यह कि हत्या मत कर व्यभिचार मत कर चोरी मत कर झूठी साची मत दे। १९ अपने माता पिता का संमान कर और अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम कर। २० उस तरुण ने उस से कहा मैं लड़काई ही से यह सब मानता आया फिर मुझे और क्या चाहिये। २१ यिसू ने उस से कहा यदि तू सिद्ध हुआ चाहे तो जाके जो कुछ कि तेरा है सो बेच डाल और कंगालों को दे तो स्वर्ग में तू धन पावेगा; तब आ और मेरे पीछे हो ले। २२ वह तरुण यह सुनकर उदास चला गया क्योंकि वह बड़ा धनी था।

२३ तब यिसू ने अपने शिष्यों से कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि धनवान को स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना कठिन है। २४ फिर भी मैं तुम से कहता हूं कि सूई के नाके से ऊंट का पैठना उस से सहज है कि एक धनवान मनुष्य परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करे। २५ जब उस के शिष्यों ने यह सुना तो अत्यन्त अचंभित होके बोले फिर किस का त्राण हो सकता है। २६ परन्तु यिसू ने उन

की ओर देखके उन से कहा मनुष्यों से यह अनहोना है परन्तु परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है।

२७ तब पथरस ने उत्तर देके उस से कहा देख हम ने तो सब कुछ छोड़ा और तेरे पीछे हो लिये हैं सो हमें क्या मिलेगा। २८ यिसू ने उन से कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि तुम जो मेरे पीछे आये हो सो नई सृष्टि में जब मनुष्य का पुत्र अपने ऐश्वर्य्य के सिंहासन पर बैठेगा तब तुम भी बारह सिंहासनों पर बैठके इसराएल के बारह वंशों का न्याय करोगे। २९ और जिस किसी ने घरों अथवा भाइयों अथवा बहिनों अथवा माता पिता अथवा पत्नी अथवा लड़के बालों अथवा भूमि को मेरे नाम के कारण छोड़ा है सो सौ गुणा पावेगा और अनन्त जीवन का अधिकारी होगा। ३० परन्तु बहुत से जो पहिले हैं सो पिछले होंगे और जो पिछले हैं सो पहिले होंगे॥

२० पर्व्व

क्योंकि स्वर्ग का राज्य एक गृहस्थ के समान है जो भोर को निकला कि अपने दाख की बारी में बनिहारों को लगावे। २ और जब उस ने बनिहारों से दिन भर की एक एक सूकी चुकाई तो उस ने उन्हें अपने दाख की बारी में भेजा। ३ और पहर दिन चढ़े वह बाहर गया ४ और औरों को हाट में बिना काम खड़े देखा। और उन से कहा तुम भी दाख की बारी में जाओ और जो कुछ कि ठीक है सो मैं तुम्हें देऊंगा और वे गये। ५ फिर उस ने दो पहर और तीसरे पहर को बाहर

६ जाकर वैसा ही किया। एक घंटा दिन रहते वह बाहर गया और औरों को बिना काम खड़े पाया और उन से कहा तुम यहां दिन भर क्यों बिना काम खड़े
७ हो। उन्हों ने उस से कहा इस कारण कि हमें किसी ने काम में न लगाया है; उस ने उन से कहा तुम भी दाख की बारी में जाओ और जो कुछ कि ठीक है सो
८ तुम पाओगे। जब सांझ ऊई दाख की बारी के स्वामी ने अपने भण्डारी से कहा बनिहारों को बुला और
९ पिछलों से लेके पहिलों तक उन्हें बनि दे। सो जिन्हों ने घंटा भर काम किया था उन्हों ने आके एक एक
१० सूकी पाई। जब वे जो पहिले लगाये गये आये तो उन्हों ने समझा कि हम इन से अधिक पावेंगे परन्तु
११ उन्हों ने भी एक एक सूकी पाई। जब उन्हों ने यह
१२ पाया तो घर के स्वामी पर कुड़कुड़ाये। और बोले इन पिछलों ने एक ही घंटे का काम किया और हम ने दिन भर का परिश्रम और घाम सहा तो भी तू ने
१३ उन्हें हमारे तुल्य कर दिया है। तब उस ने उन में से एक को उत्तर देके कहा हे मित्र मैं तुझ से अनीति नहीं करता हूं; क्या तू ने मुझ से एक सूकी का ठीका
१४ नहीं किया था। अपना ले और चला जा: पर मैं जितना
१५ तुझे देता हूं इतना इस पिछले को भी दूंगा। क्या मुझे उचित नहीं कि मैं अपनी संपत्ति से जो चाहूं सो करूं; क्या तेरी आंख इस लिये बुरी है कि मैं भला करता हूं।
१६ ऐसा ही जो पिछले हैं सो अगले होंगे और जो अगले

हैं सो पिछले होंगे क्योंकि बुलाये ऊए बऊत हैं परन्तु चुने ऊए थोड़े हैं।

१७ और यिसू यरूसलम को जाते ऊए मार्ग में बारह १८ शिष्यों को एकान्त में ले गया और उन से कहा। देखो हम यरूसलम को जाते हैं और मनुष्य का पुत्र प्रधान याजकों और अध्यापकों के हाथ पकड़वाया जायगा १९ और वे उस पर मार डालने की आज्ञा करेंगे। और उसे अन्यदेशियों के हाथ सैांपेंगे कि उसे ठट्ठों में उड़ावें और कोड़े मारें और क्रूस पर घात करें पर वह तीसरे दिन फिर जी उठेगा।

२० तब सबदी के पुत्रों की माता अपने पुत्रों के संग उस पास आई और दण्डवत करके चाहा कि उस से कुछ २१ मांगे। तब उस ने उस से कहा तू क्या चाहती है; उस ने उस से कहा मैं यह चाहती हूं कि मेरे ये दो पुत्र तेरे राज्य में एक तेरी दहिनी दूसरा तेरी बाईं २२ ओर बैठे। परन्तु यिसू ने उत्तर देके कहा तुम नहीं जानते कि क्या मांगते हो; जिस कटोरे को मैं पीने पर हूं क्या तुम उस से पी सकते हो अथवा जो बपतिसमा मैं पाता हूं क्या तुम उसे पा सकते हो; वे बोले २३ हम सकते हैं। उस ने उन से कहा तुम मेरे कटोरे से तो पीवोगे और जो बपतिसमा मैं पाता हूं सो तुम पाओगे परन्तु मेरी दहिनी और मेरी बाईं ओर बैठना मेरे देने में नहीं है परन्तु जिन के कारण मेरे पिता २४ ने ठहराया है उन्हें दिया जायगा। और जब उन

दसों ने यह सुना तो उन दोनों भाइयों पर क्रोधित
२५ ज़ए। परन्तु यिसू ने उन्हें बुलाके कहा तुम जानते
हो कि अन्यदेशियों के अध्यक्ष उन पर प्रभुता करते
हैं और जो उन में बड़े हैं सो उन पर आज्ञा करते
२६ हैं। परन्तु तुम में ऐसा नहीं होगा पर जो कोई तुम
२७ में बड़ा ज़आ चाहे सो तुम्हारा सेवक होवे। और
जो कोई तुम में प्रधान ज़आ चाहे सोई तुम्हारा दास
२८ होवे। इसी रीति से मनुष्य का पुत्र भी इस लिये नहीं
आया कि सेवा करावे परन्तु कि सेवा करे और बज़ते-
रों के कारण अपने प्राण को प्रायश्चित्त में देवे।

२९ जब वे यरीहो से निकलते थे तो एक बड़ी भीड़ उस
३० के पीछे हो लिई। और देखो दो अंधे जो मार्ग की
ओर बैठे थे जब सुना कि यिसू चला जाता है तो
चिल्लाके बोले हे प्रभु दाऊद के पुत्र हम पर दया कर।
३१ पर लोगों ने उन्हें घुरक दिया कि चुप रहें परन्तु वे
अधिक चिल्लाके बोले हे प्रभु दाऊद के पुत्र हम पर
३२ दया कर। तब यिसू खड़ा रहा और उन्हें बुलाके कहा
३३ तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये करूं। उन्हों
ने उस से कहा हे प्रभु हमारी आंखें खुल जायें; तब
यिसू ने दयाल होके उन की आंखों को छूआ और वे
तुरन्त देखने लगे और उस के पीछे हो लिये॥

२१ पर्ब्ब

और जब वे यरूसलम के निकट पज़ंचे और बैत-
फगा में जलपाई के पहाड़ के समीप आये तब यिसू
२ ने दो शिष्यों को यह कहके भेजा। जो गांव तुम्हारे

संमुख है उस में जाओ और तुम एक बंधी हुई गधी को और उस के संग एक बच्चे को पाओगे; उन्हें खोलके मेरे पास लाओ। ३ और यदि कोई तुम से कुछ कहे तो कहियो कि प्रभु को उन का प्रयोजन है और वह तुरन्त उन को भेजेगा। ४ यह सब कुछ हुआ कि जो भविष्यत-वक्ता ने कहा था सो पूरा होवे। ५ अर्थात सैहून की पुत्री से कहो देख तेरा राजा गधी पर हां लादू के बच्चे पर चढ़के कोमलता से तेरे पास आता है। ६ सो शिष्यों ने जाके जैसा यिसू ने उन्हें आज्ञा किई थी वैसा किया। ७ और उस गधी को और बच्चे को ले आये और उन पर अपने वस्त्र रखके उस को उस पर बैठाया। ८ और बहुत से लोगों ने अपने वस्त्रों को मार्ग में बिछाया; औरों ने पेड़ों की डालियां काटके मार्ग में बिथराईं। ९ और जो लोग आगे पीछे जाते थे सो पुकारके कहते थे दाऊद के पुत्र को होशाना; धन्य वह जो प्रभु के नाम से आता है: अत्यन्त ऊंचे पर होशाना। १० और जब वह यरूसलम में पहुंचा समस्त नगर के लोग घबराके कहने लगे यह कौन है। ११ लोगों ने कहा यह गलील के नसिरत का भविष्यतवक्ता यिसू है।

१२ और यिसू परमेश्वर के मन्दिर में गया और सभों को जो मन्दिर में बेचते कीनते थे निकाल दिया और सर्राफों के पटरों को और कबूतर बेचनेवालों की चौकियों को उलट दिया। १३ और उन से कहा यह लिखा है कि मेरा घर प्रार्थना का घर कहावेगा परन्तु

१४ तुम ने उसे चोरों का खोह बनाया। और मन्दिर में अंधे और लंगड़े उस के पास आये और उस ने उन्हें
१५ चंगा किया। जब प्रधान याजकों और अध्यापकों ने उन आश्चर्य्य कर्म्मों को जो उस ने किये और लड़कों को मन्दिर में पुकारते और दाऊद के पुत्र को होशाना कहते हुए देखा तो वे क्रोधित हुए। और उस
१६ से कहा क्या तू सुनता है कि ये क्या कहते हैं; यिसू ने उन से कहा हां; क्या तुम ने कभी नहीं पढ़ा कि बालकों और दूध पीनेहारे लड़कों के मुंह से तू ने स्तुति करवाई है।

१७ और वह उन्हें छोड़कर नगर से बाहर बैतअनिया को गया और वहां रात बिताई।

१८ और बिहान को जब वह नगर में जाने लगा उसे
१९ भूख लगी। तब वह मार्ग में एक गूलर के पेड़ को देखके उस पास आया और जब उस पर पत्तों को छोड़ कुछ न पाया तो कहा अब से कधी तुझ में फिर फल
२० न लगे; वोंहीं गूलर का पेड़ सूख गया। और जब शिष्यों ने यह देखा तो अचंभा करके बोले कि गूलर
२१ का पेड़ कैसा जल्द सूख गया। यिसू ने उत्तर देके उन से कहा मैं तुम से सच कहता हूं यदि तुम बिश्वास रखो और सन्देह न करो तो तुम केवल यही जो गूलर के पेड़ पर हुआ है न करोगे परन्तु यदि तुम इस पहाड़ से कहो कि टल जा और समुद्र में जा गिर

तो वैसा ही होगा। और जो कुछ कि तुम प्रार्थना में विश्वास करके मांगोगे सो पाओगे। २२

जब वह मन्दिर में आके उपदेश करता था तब प्रधान याजक और लोगों के प्राचीन उस के पास आके कहने लगे तू किस अधिकार से यह काम करता है और यह अधिकार तुझे किस ने दिया है। यिसू ने उत्तर देके उन से कहा मैं भी तुम से एक बात पूछूं; यदि तुम मुझे बताओ तो मैं भी तुम्हें बताऊंगा कि किस अधिकार से यह काम करता हूं। यूहन्ना का बपतिसमा कहां से था स्वर्ग से अथवा मनुष्यों की ओर से; वे आपस में विचार करके कहने लगे यदि हम कहें कि स्वर्ग से तो वह हम से कहेगा फिर तुम ने उस का बिश्वास क्यों नहीं किया। और यदि हम कहें कि मनुष्यों की ओर से तो लोगों से डरते हैं क्योंकि सब कोई यूहन्ना को भविष्यतवक्ता जानते हैं। तब उन्हों ने यिसू को उत्तर देके कहा कि हम नहीं जानते; उस ने उन से कहा तो मैं भी तुम्हें नहीं बताता हूं कि मैं किस अधिकार से यह काम करता हूं। २३ २४ २५ २६ २७

परन्तु तुम को क्या बूझ पड़ता है; एक मनुष्य के दो पुत्र थे और उस ने पहिले के पास आके कहा हे पुत्र आज मेरे दाख की बारी में जाके काम कर। उस ने उत्तर देके कहा मैं नहीं जाऊंगा परन्तु पीछे पछताके गया। फिर उस ने दूसरे के पास आके वैसा ही कहा; उस ने उत्तर देके कहा हे प्रभु मैं जाता २८ २९ ३०

३१ हूं पर न गया। इन दोनों में से किस ने पिता की इच्छा के समान किया; उन्हों ने उस से कहा कि पहिले ने फिर यिसू ने उन से कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि करग्राहक और वेश्यायें तुम से पहिले परमेश्वर
३२ के राज्य में प्रवेश करती हैं। क्योंकि यूहन्ना धर्म्म के मार्ग से तुम्हारे पास आया था और तुम ने उस का बिश्वास न किया परन्तु करग्राहकों और वेश्याओं ने उस का बिश्वास किया और तुम लोग यह देखकर पीछे भी न पछताये कि उस का बिश्वास करते।

३३ एक और दृष्टान्त सुनो एक गृहस्थ ने दाख की बारी लगाई और उस की चारों ओर बाड़ा बांधा और खोदके उस में कोल्हू गाड़ा और एक गढ़ बनाया और
३४ उसे मालियों को सौंपके परदेश को चला गया। जब फल का समय निकट आया तब उस ने अपने दासों
३५ को मालियों कने भेजा कि उस का फल लेवें। परन्तु मालियों ने उस के दासों को पकड़के एक को मारा दूसरे को बध किया और तीसरे को पत्थरवाह किया।
३६ फिर उस ने पहिले से अधिक दूसरे दासों को भेजा
३७ और उन्हों ने उसी रीति से उन से भी किया। सब के पीछे उस ने अपने पुत्र को यह कहकर उन के पास भेजा
३८ कि वे मेरे पुत्र से दबेंगे। परन्तु जब मालियों ने पुत्र को देखा तो आपस में कहने लगे कि अधिकारी यही है आओ इस को मार डालें कि अधिकार हमारा
३९ हो जाय। तब उन्हों ने उस को पकड़के दाख की

बारी से बाहर निकालके मार डाला। अब जो दाख की बारी का स्वामी आवे तो उन मालियों को क्या करेगा। उन्हों ने उस से कहा वह उन बुरे लोगों को बुरी रीति से नाश करेगा और दाख की बारी दूसरे मालियों को सौंपेगा जो समय में उसे फलों को पहुंचावेंगे। ४० ४१

यिसू ने उन से कहा क्या तुम ने धर्म्मग्रन्थ में कभी नहीं पढ़ा कि जिस पत्थर को थवइयों ने निकम्मा ठहराया सो ही कोने का सिरा हुआ; यह प्रभु का कार्य्य और हमारी दृष्टि में अचंभित है। इस लिये मैं तुम से कहता हूं कि परमेश्वर का राज्य तुम से लिया जायगा और और लोगों को जो उस के फल लावें दिया जायगा। और जो कोई इस पत्थर पर गिरेगा सो चूर हो जायगा परन्तु जिस पर वह गिरेगा उस को वह पीस डालेगा। ४२ ४३ ४४

जब प्रधान याजकों और फरीसियों ने उस के दृष्टांतों को सुना तो जान गये कि उन के विषय में बोलता था। और उन्हों ने उसे पकड़ने चाहा पर लोगों से डरे क्योंकि वे उसे भविष्यतवक्ता जानते थे॥ ४५ ४६

२२ पर्ब्ब

यिसू फिर उन से दृष्टान्तों में कहने लगा। कि स्वर्ग का राज्य एक राजा के तुल्य है जिस ने अपने पुत्र का बिवाह किया। और उस ने अपने दासों को भेजा कि नेवतहारियों को बिवाह में बुलावें पर उन्हों ने आने न चाहा। फिर उस ने दूसरे दासों को यह २ ३ ४

कहके भेजा कि नेवतहरियों से कहो कि देखो मैं ने अपना भोजन तैयार किया है मेरे बैल और मोटे मोटे पशु मारे गये और सब कुछ तैयार है सो बि-
५ वाह में आओ। परन्तु वे इस का कुछ सोच न करके चले गये एक अपने खेत को और दूसरा अपने ब्यो-
६ पार को। औरों ने उस के दासों को पकड़के दुर्दशा
७ किई और उन्हें मार डाला। तब राजा यह सुनके क्रो-धी हुआ और अपनी सेनाओं को भेजके उन हत्यारों
८ को नाश किया और उन के नगर को फूंक दिया। फिर उस ने अपने दासों से कहा बिवाह का साज तो हुआ
९ परन्तु वे नेवतहरी योग्य न थे। इस कारण तुम सड़-कों में जाओ और जितने लोग तुम को मिलें बिवाह
१० में बुलाओ। सो दासों ने मार्गों में जाके भले बुरे जित-ने उन्हें मिले सब को एकट्ठे किया और बिवाह का घर
११ नेवतहरियों से भर गया। और जब राजा नेवत-हरियों को देखने को भीतर आया तो एक मनुष्य को
१२ जो बिवाह का वस्त्र पहिने न था वहां देखा। और उस ने उस से कहा हे मित्र तू किस रीति से बिना बिवाह
१३ का वस्त्र पहिने यहां आया; वह निरुत्तर हुआ। तब राजा ने सेवकों से कहा उस के हाथ पांव बांधकर उसे ले जाओ और बाहर के अंधेरे में डाल देओ वहां
१४ रोना और दांत पीसना होगा। क्योंकि बुलाये हुए बहुत हैं परन्तु चुने हुए थोड़े।

१५ तब फरीसियों ने जाके परामर्श किया कि उसे किस

रीति से बात में फंसावें। और उन्हों ने अपने शिष्यों १६
को हेरोदियों के संग उस पास भेजा कि उस से कहें
हे गुरु हम जानते हैं कि तू सच्चा है और सचाई से
परमेश्वर का मार्ग बताता है और तू किसी का खट-
का नहीं रखता है क्योंकि तू किसी का मुंह देखके
बात नहीं करता है। इस लिये हम से कह तू क्या १७
समझता है; कैसर को कर देना उचित है अथवा
नहीं। पर यिसु ने उन की दुष्टता जानके कहा हे कप- १८
टियो तुम क्यों मेरी परीक्षा करते हो। कर का सिक्का १९
मुझे दिखाओ; तब वे एक सूकी उस पास लाये। और २०
उस ने उन से कहा यह मूर्ति और सिक्का किस का है।
उन्हों ने उस से कहा कैसर का; तब उस ने उन से २१
कहा फिर जो कैसर का है सो कैसर को देओ और
जो परमेश्वर का है सो परमेश्वर को देओ। वे यह २२
सुनकर अचंभित हुए और उस को छोड़कर चले
गये।

उसी दिन सादूकी जो कहते हैं कि मृतकों का जी २३
उठना नहीं होगा उस पास आये और उस से यह
कहके पूछा। हे गुरु मूसा ने कहा कि जब कोई पुरुष २४
निर्वंश होके मरे तो उस का भाई उस की पत्नी से बि-
वाह करे और अपने भाई के लिये वंश चलावे। सो २५
हमारे यहां सात भाई थे; पहिला बिवाह करके मर
गया और इस कारण कि उस का वंश न था अपनी
पत्नी अपने भाई के लिये छोड़ गया। इसी रीति से २६

२७ दूसरे और तीसरे भाई ने भी सातवें लों किया। सब
२८ के पीछे वह स्त्री भी मर गई। सो मृतकों के जी उठने
के समय में उन सातों में से वह किस की पत्नी होगी
२९ क्योंकि सभों ने उस से बिवाह किया था। यिसू ने उत्तर
देके उन से कहा धर्म्मग्रन्थ और परमेश्वर के पराक्रम
३० को न जानके तुम चूक करते हो। क्योंकि मृतकों के जी
उठने के समय में लोग न तो बिवाह करेंगे न बिवाह
में दिये जायेंगे परन्तु स्वर्ग में परमेश्वर के दूतों की
३१ नाईं होंगे। और मृतकों के जी उठने के विषय में पर-
मेश्वर ने जो तुम से कहा क्या तुम ने वह नहीं पढ़ा है।
३२ कि मैं अबिरहाम का परमेश्वर और इसहाक का
परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर हूं; परमेश्वर तो
३३ मृतकों का नहीं परन्तु जीवतों का परमेश्वर है। और
लोग यह सुनके उस के उपदेश से अचंभित हुए।

३४ परन्तु जब फरीसियों ने सुना कि उस ने सादूकि-
३५ यों को निरुत्तर किया तब वे एकट्ठे हुए। और उन में
से एक व्यवस्था के ज्ञाता ने उस की परीक्षा करने को
३६ यह कहके पूछा। कि हे गुरु व्यवस्था में बड़ी आज्ञा
३७ कौनसी है। यिसू ने उस से कहा कि तू प्रभु को जो तेरा
परमेश्वर है अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण
३८ से और अपनी सारी बुद्धि से प्यार कर। पहिली और
३९ बड़ी आज्ञा यही है। और दूसरी उसी की नाईं है कि
४० तू अपने पड़ोसी को अपने समान प्यार कर। यही दो

आज्ञाएं समस्त व्यवस्था और भविष्यतवक्ताओं का सार है।

जब फरीसी लोग एकट्ठे थे तब यिसू ने उन से पूछा। ४१
मसीह को तुम क्या समझते हो वह किस का पुत्र है; ४२
वे बोले दाऊद का। उस ने उन से कहा फिर दाऊद ४३
आत्मा के बताने से क्योंकर उस को प्रभु कहता है।
कि वह बोला प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा कि जब लों मैं ४४
तेरे बैरियों को तेरे पांव की पीढ़ी न करूं तू मेरे दहि-
ने बैठ। यदि दाऊद उस को प्रभु कहता है तो वह ४५
क्योंकर उस का पुत्र ठहरा। और कोई उस के उत्तर ४६
में उस से एक बात न कह सका और उसी दिन से कि-
सी का हियाव न हुआ कि उस से फिर कुछ पूछे॥

२३ पर्ब्ब

तब यिसू लोगों से और अपने शिष्यों से कहने
लगा। अध्यापक और फरीसी लोग मूसा के आसन २
पर बैठे हैं। इस लिये सब कुछ जो वे तुम्हें मानने को ३
कहें सो मानो और पालन करो परन्तु तुम उन के
कामों के समान मत करो क्योंकि वे कहते हैं और
करते नहीं। वे भारी बोझ जिन का उठाना कठिन ४
है बांधते हैं और मनुष्यों के कांधों पर रखते हैं परन्तु
आप उन्हें एक उंगली से भी छूने नहीं चाहते हैं।
वे अपने सारे कामों को मनुष्यों को दिखाने के लिये ५
करते हैं; वे अपने जन्त्रों को चौड़े करते हैं और
अपने बस्त्रों के आंचल लंबे बनाते हैं। वे जेवनारों में ६
प्रधान स्थान और मण्डलियों में श्रेष्ठ आसन। और ७

हाटों में नमस्कार और मनुष्यों से रब्बी रब्बी कहला-
८ ने चाहते हैं। परन्तु तुम रब्बी मत कहलाओ क्योंकि
तुम्हारा गुरु एक है अर्थात मसीह और तुम सब भाई
९ हो। और पृथिवी पर किसी को अपना पिता मत कहो
क्योंकि तुम्हारा पिता एक है अर्थात वही जो स्वर्ग में
१० है। और न तुम गुरु कहलाओ क्योंकि तुम्हारा गुरु
११ एक है अर्थात मसीह। जो तुम में बड़ा है सो तुम्हारा
१२ सेवक होगा। और जो कोई अपने को बड़ा जानेगा
सो छोटा किया जायगा और जो कोई अपने को छो-
टा जानेगा सो बड़ा किया जायगा।

१३ हे कपटी अध्यापको और फरीसियो तुम पर हाय
क्योंकि तुम मनुष्यों पर स्वर्ग के राज्य का द्वार मून्द-
ते हो; न तुम आप भीतर जाते हो न आनेवालों को
१४ जाने देते हो। हे कपटी अध्यापको और फरीसियो
तुम पर हाय क्योंकि तुम बिधवाओं के घरों को निगल
जाते और छल से लंबी प्रार्थना करते हो इस कारण
तुम अधिक दण्ड पाओगे।

१५ हे कपटी अध्यापको और फरीसियो तुम पर हाय
क्योंकि तुम एक जन को अपने मत में लाने के लिये
समुद्र और भूमि में फिरा करते हो और जब वह
आ चुका तब तुम उस को अपने से दूना नरक का पुत्र
बनाते हो।

१६ हे अन्धे अगवो तुम पर हाय कि कहते हो यदि
कोई मन्दिर की किरिया खावे वह कुछ नहीं है

परन्तु यदि कोई मन्दिर के सोने की किरिया खावे तो उसे पूरा करना अवश्य है। १७ हे मूर्खों और अन्धो कौन बड़ा है वह सोना अथवा वह मन्दिर जो सोने को पवित्र करता है। १८ फिर कहते हो यदि कोई बेदी की किरिया खावे वह कुछ नहीं है परन्तु यदि कोई उस दान की जो उस पर धरा है किरिया खावे तो उसे पूरा करना अवश्य है। १९ हे मूर्खों और अन्धो कौन बड़ा है वह दान अथवा बेदी जो दान को पवित्र करती है। २० इस कारण जो कोई बेदी की किरिया खाय सो उस की किरिया और सब बस्तों की भी जो उस पर हैं किरिया खाता है। २१ और जो कोई मन्दिर की किरिया खाय वह उस की और जो उस में रहता है उस की भी किरिया खाता है। २२ और जो स्वर्ग की किरिया खाय सो परमेश्वर के सिंहासन की और जो उस पर बैठा है उस की भी किरिया खाता है।

२३ हे कपटी अध्यापको और फरीसियो तुम पर हाय क्योंकि तुम पोदीने और सोए और जीरे का दसवां अंश देते हो पर व्यवस्था की बड़ी आज्ञाएं अर्थात न्याय और दया और बिश्वास को छोड़ देते हो; इन्हें करना और उन्हें न छोड़ना अवश्य था। २४ हे अन्धे अगवो तुम मच्छर को छान डालते हो और ऊंट को निगल जाते हो।

२५ हे कपटी अध्यापको और फरीसियो तुम पर हाय क्योंकि तुम कटोरे और थाली को बाहर बाहर शुद्ध

करते हो परन्तु वे भीतर अन्धेर और अन्याय से भरे
२६ हुए हैं। हे अन्धे फरीसी पहिले कटोरे और थाली के
२७ भीतर शुद्ध करो तो बाहर भी शुद्ध होगा। हे कपटी
अध्यापको और फरीसियो तुम पर हाय क्योंकि तुम
चूना फेरी हुई कबरों की नाईं हो कि बाहर से सुन्दर
दिखाई देती हैं परन्तु भीतर मृतकों की हड्डियों से
२८ और समस्त मलिनता से भरी हुई हैं। इसी भांति
से तुम भी बाहर से मनुष्यों को धर्म्मी दिखाई देते
हो परन्तु भीतर कपट और दुष्टता से भरे हुए हो।

२९ हे कपटी अध्यापको और फरीसियो तुम पर हाय
क्योंकि तुम भविष्यतवक्ताओं की कबरें बनाते हो और
३० धर्म्मियों की कबरें संवारते हो। और कहते हो कि
यदि हम अपने पितरों के समय में होते तो भविष्य-
तवक्ताओं के लोहू बहाने में उन के संगी न होते।
३१ इस से तुम अपने पर साची देते हो कि तुम भविष्य-
३२ तवक्ताओं के हत्यारों के सन्तान हो। सो तुम अपने
३३ पितरों का परिमाण भरो। हे सांपो हे नाग बंशियो
तुम नरक के दण्ड से क्योंकर बचोगे।

३४ इस कारण देखो मैं भविष्यतवक्ताओं और बुद्धिमानों
और अध्यापकों को तुम्हारे पास भेजता हूं; उन में
से कितनों को तुम बध करोगे और क्रूस पर खैंचोगे
और उन में से कितनों को मण्डलियों में कोड़े मारो-
३५ गे और नगर नगर सताकर फिराओगे। सो धर्म्मी
हाबिल के लोहू से लेके बाराखियाह के पुत्र सकरि-

याह के लोहू तक जिस को तुम ने मन्दिर और बेदी के बीच में बध किया सब धर्म्मियों का लोहू जो पृथिवी पर बहाया गया है वह तुम पर पड़ेगा। ३६ मैं तुम से सच कहता हूं कि यह सब कुछ इस समय के लोगों पर आवेगा।

३७ हे यरूसलम यरूसलम तू भविष्यतवक्ताओं को बध करता है और जो तेरे पास भेजे गये उन्हें पत्थरवाह करता है मैं ने कितनी बेर चाहा कि जैसे कुक्कुटी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे एकट्ठे करती है वैसे ही मैं तेरे लड़कों को एकट्ठे करूं पर तुम ने नहीं चाहा। ३८ देखो तुम्हारा घर तुम्हारे लिये उजाड़ छोड़ा जाता है। ३९ क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि जब लों तुम यह न कहोगे कि धन्य वह जो प्रभु के नाम से आता है तब लों तुम मुझे अब से फिर न देखोगे॥

२४ पर्ब्ब

और यिसू मन्दिर में से निकलकर चला गया और उस के शिष्य उसे मन्दिर की बनावट दिखाने को उस पास आये। २ और यिसू ने उन से कहा क्या तुम यह सब देखते हो; मैं तुम से सच कहता हूं कि यहां पत्थर पर पत्थर नहीं रहेगा जो गिराया न जायगा।

३ और जब वह जलपाई के पहाड़ पर बैठा था उस के शिष्य निराले में उस पास आकर कहने लगे हमें बता कि यह सब कब होगा और तेरे आने का और जगत के अन्त का क्या चिन्ह होगा। ४ यिसू ने उत्तर देके उन से कहा चौकस रहो कि कोई तुम को न

५ भरमावे। क्योंकि बहुत लोग मेरे नाम पर आवेंगे
और यह कहेंगे मैं मसीह हूं और बहुतेरों को भर-
६ मावेंगे। और तुम लड़ाइयें और लड़ाइयें की चर्चा
सुनोगे; देखो मत घबराओ क्योंकि इन सभों का हो-
७ ना अवश्य है परन्तु अब तक अन्त नहीं आया है। क्यों-
कि देश देश पर और राज्य राज्य पर चढ़ाई करेंगे
और जगह जगह अकाल और मरियां और भूईंडोल
८ होंगे। यह सब दुःखों का आरंभ है। उस समय में
९ वे तुम को कष्ट पाने को पकड़वायेंगे और तुम्हें मार
डालेंगे और मेरे नाम के लिये सब देशों के लोग तुम
१० से बैर करेंगे। और तब बहुतेरे लोग ठोकर खायें-
गे और एक दूसरे को पकड़वायेगा और एक दूसरे
११ से बैर करेगा। और बहुत से झूठे भविष्यतवक्ता
१२ प्रगट होंगे और बहुत लोगों को भरमावेंगे। और
दुष्टता के बढ़ जाने से बहुतेरों का प्रेम ठण्डा हो जाय-
१३ गा। परन्तु जो अन्त लों स्थिर रहेगा सोई त्राण पावे-
१४ गा। और राज्य का यह मंगल समाचार समस्त सं-
सार में सुनाया जायगा कि सब देशों के लोगों पर
साक्षी होवे और तब अन्त आवेगा।

१५ सो जब तुम नाशन की वह घिनित वस्तु जिस के
विषय में दानियेल भविष्यतवक्ता ने कहा है पवित्र
१६ स्थान में खड़े होते देखो (जो पढ़े सो बूझे)। तब जो यहू-
१७ दाह में होवें सो पहाड़ों पर भाग जायें। जो कोठे पर
१८ हो सो अपने घर में से कुछ लेने को न उतरे। और जो

खेत में हो सो अपना बस्त्र लेने को पीछे न फिरे। और १९
जो उन दिनों में पेटवालियां और दूध पिलानेवालियां
हों उन पर हाय। और प्रार्थना करो कि तुम्हारा २०
भागना जाड़े में अथवा बिश्राम के दिन में न होवे।
क्योंकि उस समय में ऐसा महा कष्ट होगा जैसा कि २१
जगत के आरंभ से अब लों कभी न हुआ और कभी न
होगा। और जो वे दिन थोड़े न किये जाते तो कोई २२
प्राणी बच नहीं जाता परन्तु चुने हुए लोगों के लिये
वे दिन थोड़े किये जायेंगे। तब यदि कोई तुम से कहे २३
देखो मसीह यहां है अथवा वहां है तो मत पतियाओ।
क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यतवक्ता प्रगट हों- २४
गे और ऐसे बड़े चिन्ह और आश्चर्य्य कर्म्म दिखावेंगे
कि जो हो सकता तो वे चुने हुए लोगों को भी भर-
माते। देखो मैं आगे से तुम्हें कह चुका। सो यदि वे २५ २६
तुम से कहें देखो वह जंगल में है तो बाहर मत जा-
ओ अथवा देखो वह कोठरियों में है तो मत पतिया-
ओ। क्योंकि जैसे बिजली पूरब से कौंधके पश्चिम तक २७
चमकती है वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा।
क्योंकि जहां लोथ है तहां गिद्ध एकट्ठे होंगे। २८

उन दिनों के कष्ट के पीछे तुरन्त सूर्य्य अंधेरा हो २९
जायेगा और चन्द्रमा अपनी ज्योति न देगा और तारे
आकाश से गिरेंगे और आकाश की दृढ़तायें डिग जा-
येंगीं। तब मनुष्य के पुत्र का चिन्ह आकाश में दिखाई ३०
देगा और तब पृथिवी के सारे बंशों के लोग छाती पी-

टेंगे श्रीर मनुष्य के पुत्र को पराक्रम श्रीर बड़े ऐश्वर्य्य
३१ से श्राकाश के मेघों पर श्राते देखेंगे। श्रीर वह श्रपने
टूतों को तुरही के महा शब्द के संग भेजेगा श्रीर वे
उस के चुने ज्ञश्रों को चारों दिशा से श्राकाश के इस
सिवाने से उस सिवाने लों एकट्ठे करेंगे।

३२ श्रब गूलर के पेड़ से एक दृष्टान्त सीखो; जब उस
की डाली कोमल होती है श्रीर पत्ते निकलते हैं तब
३३ तुम जानते हो कि धूपकाल निकट है। इसी रीति से
जब तुम इन सब बातों को देखो तब जानो कि वह
३४ निकट है हां द्वार ही पर है। मैं तुम से सच कहता
हूं कि जब लों यह सब कुछ पूरा न हो ले तब लों इस
३५ समय के लोग जाते न रहेंगे। स्वर्ग श्रीर पृथिवी टल
३६ जायेंगे परन्तु मेरी बातें न टलेंगी। परन्तु उस दिन
श्रीर उस घड़ी को मेरे पिता को छोड़ न कोई मनुष्य न
स्वर्ग के दूत जानते हैं।

३७ जैसे नूह के दिनों में ज्ञश्रा था वैसा ही मनुष्य के
३८ पुत्र का श्राना भी होगा। क्योंकि जिस रीति से जलमय
के श्रागे के दिनों में ज्ञश्रा उस दिन लों कि नूह जहाज
पर चढ़ा लोग खाते थे पीते थे बिवाह करते थे श्रीर
३९ बिवाह देते थे। श्रीर जब लों जलमय न श्राया श्रीर
उन सभों को ले न गया तब लों उन्हें चेत न ज्ञश्रा वैसा
४० ही मनुष्य के पुत्र का श्राना भी होगा। तब दो जन खेत
में होंगे एक पकड़ा जायगा श्रीर दूसरा छूट जायगा।
४१ दो स्त्रियां चक्की पीसतियां होंगी एक पकड़ी जायगी

और दूसरी छूट जायगी। इस लिये जागते रहो क्यों- ४२
कि जिस घड़ी में तुम्हारा प्रभु आवेगा सो तुम नहीं
जानते हो। पर यह जानो कि यदि घर का स्वामी जान- ४३
ता कि चोर किस पहर आवेगा तो वह जागता रह-
ता और अपने घर में सेंध देने न देता। इस लिये तुम ४४
भी तैयार रहो क्योंकि जिस घड़ी तुम्हें सुरत न होगी
उस घड़ी में मनुष्य का पुत्र आवेगा।

फिर वह सच्चा और बुद्धिमान दास कौन है कि जिस ४५
को उस के स्वामी ने अपने घराने पर प्रधान किया है
कि समय पर उन्हें भोजन देवे। धन्य वह दास है जिस ४६
को उस का स्वामी आके ऐसा करते पावे; मैं तुम से ४७
सच कहता हूं कि वह अपनी समस्त संपत्ति पर उस
को प्रधान करेगा। परन्तु यदि वह दुष्ट दास अपने मन ४८
में कहे मेरा स्वामी आने में बिलम्ब करता है। और ४९
अपने संगी दासों को मारने और मतवालों के संग
खाने पीने लगे। तो जिस दिन में वह बाट जोहता न ५०
हो और जिस घड़ी में उसे सुरत न हो उसी में उस
दास का स्वामी आवेगा। और उस को दो टुकड़े कर- ५१
के उस का भाग कपटियों के संग ठहरावेगा वहां
रोना और दांत पीसना होगा॥

२५ पर्ब्ब

उस समय में स्वर्ग का राज्य दस कुंवारियों के तुल्य
होगा जो अपनी मशालों को लेकर दूल्हे से मिलने को
निकलीं। और उन में पांच बुद्धिमान और पांच निर्बुद्धि २
थीं। जो निर्बुद्धि थीं उन्हों ने अपनी मशालों को लिया ३

४ पर तेल अपने संग न लिया। परन्तु बुद्धिमानों ने अप-
५ नी मशालों के संग अपने पात्रों में तेल लिया। जब दूल्हे
ने बिलम्ब किया तब वे सब ऊंघने लगीं और सो गईं।
६ आधी रात को धूम मची देखो दूल्हा आता है उस से
७ मिलने को निकलो। तब उन सब कुंवारियों ने उठ-
८ कर अपनी मशालें सजीं। और निर्बुद्धियों ने बुद्धिमानों
से कहा अपने तेल में से हम को भी देओ क्योंकि
९ हमारी मशालें बुझी जाती हैं। परन्तु बुद्धिमानों ने
उत्तर देके कहा ऐसा न हो कि हमारे और तुम्हारे
लिये बस न हो; यह अच्छा है कि तुम बेचनेवालों
१० के पास जाके अपने लिये मोल लेओ। ज्यों वे मोल ले-
ने गईं इतने में दूल्हा आया और जो तैयार थीं सो उस
११ के संग बिवाह में गईं और द्वार मुन्द गया। पीछे वे
दूसरी कुंवारियां भी आईं और बोलीं हे प्रभु हे प्रभु
१२ हमारे लिये खोल। परन्तु उस ने उत्तर देके कहा मैं
१३ तुम से सच कहता हूं मैं तुम्हें नहीं जानता हूं। इस का-
रण जागते रहो क्योंकि तुम नहीं जानते हो कि मनुष्य
का पुत्र कौन से दिन और कौन सी घड़ी में आवेगा।

१४ क्योंकि वह एक मनुष्य के समान है जिस ने परदेश
को जाते हुए अपने दासों को बुलाया और अपना धन
१५ उन्हें सौंप दिया। एक को उस ने पांच तोड़े दिये दूस-
रे को दो और तीसरे को एक हर एक को उस के सा-
मर्थ्य के समान दिया और तुरन्त परदेश को चला
१६ गया। तब जिस ने पांच तोड़े पाये थे सो गया और

ब्योपार करके पांच तोड़े और कमाये। इसी रीति से | १७
जिस ने दो पाये थे उस ने भी दो और कमाये। परन्तु | १८
जिस ने एक पाया था उस ने जाकर मिट्टी में खोदके
अपने स्वामी के रुपैयों को छिपाया। बहुत दिन बीते | १९
उन दासों का स्वामी आया और उन से लेखा लेने
लगा। सो जिस ने पांच तोड़े पाये थे वह पांच तोड़े | २०
और भी लेकर आया और कहा हे प्रभु तू ने मुझे पांच
तोड़े सौंपे थे देख मैं ने उन से पांच तोड़े और कमाये
हैं। उस के स्वामी ने उस से कहा धन्य हे अच्छे और | २१
सच्चे दास तू थोड़े में सच्चा निकला मैं तुझे बहुत पर
प्रधान करूंगा तू अपने प्रभु के आनन्द का भागी
हो। जिस ने दो तोड़े पाये थे वह भी आया और बो- | २२
ला हे प्रभु तू ने मुझे दो तोड़े सौंपे थे देख मैं ने उन
से दो तोड़े और कमाये हैं। उस के स्वामी ने उस से | २३
कहा धन्य हे अच्छे और सच्चे दास तू थोड़े में सच्चा
निकला मैं तुझे बहुत पर प्रधान करूंगा तू अपने प्रभु
के आनन्द का भागी हो। तब जिस ने एक तोड़ा पाया | २४
था वह आके कहने लगा हे प्रभु मैं तुझे जानता था
कि तू कठोर मनुष्य है जहां नहीं बोया वहां तू काट-
ता है और जहां नहीं छींटा वहां तू बटोरता है।
इस लिये मैं डर गया और जाके तेरा तोड़ा मिट्टी में | २५
छिपा रखा सो अपना देख ले। उस के स्वामी ने उत्तर | २६
देके उस से कहा हे दुष्ट और आलसी दास तू तो
जानता था कि जहां मैं ने नहीं बोया वहां काटता हूं

और जहां मैं ने नहीं छीटा वहां एकट्ठा करता हूं।
२७ इस लिये चाहिये था कि तू मेरे रूपैये कोठी में रखता
२८ तो मैं आके अपना धन ब्याज समेत पाता। इस लिये
वह तोड़ा उस से ले लो और जिस पास दस तोड़े हैं
२९ उसे देओ। क्योंकि जिस पास कुछ है उसे दिया जाय-
गा और उस को बहुत होगा परन्तु जिस पास कुछ
नहीं है उस से जो कुछ उस के पास है सो ले लिया
३० जायगा। और उस निकम्मे दास को बाहर अंधकार में
डाल देओ वहां रोना और दांत पीसना होगा।

३१ जब मनुष्य का पुत्र समस्त पवित्र दूतों के संग अपने
३२ ऐश्वर्य्य में आवेगा। तब वह अपने ऐश्वर्य्य के सिंहासन
पर बैठेगा और सब देशों के लोग उस के आगे एकट्ठे
किये जायेंगे और जैसा गड़रिया भेड़ों को बकरियों
से अलग करता है वैसा वह उन्हें एक को दूसरे से
३३ अलग करेगा। और वह भेड़ों को अपनी दहिनी
ओर और बकरियों को अपनी बाईं ओर खड़ा करे-
३४ गा। तब जो उस की दहिनी ओर हैं राजा उन से
कहेगा हे मेरे पिता के धन्य लोगो आवो और जो
राज्य जगत के आरंभ से तुम्हारे लिये तैयार किया
३५ गया उस के तुम अधिकारी होओ। क्योंकि मैं भूखा
था और तुम ने मुझे खाने को दिया मैं प्यासा था और
तुम ने मुझे पानी पिलाया मैं परदेशी था और तुम
३६ मुझे अपने घर में लाये। मैं नंगा था और तुम ने मुझे
कपड़ा पहिनाया मैं रोगी था और तुम ने मेरी सुध

लिई मैं बन्दीगृह में था और तुम मेरे पास आये।
३७ तब धर्म्मी लोग उस को उत्तर देके कहेंगे हे प्रभु
हम ने कब तुझे भूखा देखा और खिलाया अथवा प्या-
३८ सा और पिलाया। हम ने तुझे कब परदेशी देखा
और अपने घर में लाये अथवा नंगा और पहिनाया।
३९ हम ने कब तुझे रोगी अथवा बन्दीगृह में देखा और
४० तेरे पास आये। तब राजा उत्तर देके उन से कहे-
गा मैं तुम से सच कहता हूं जो तुम ने मेरे इन अति
छोटे भाइयों में से एक से किया है सो तुम ने मुझ
से किया है।

४१ तब जो उस की बाईं ओर हैं वह उन से कहेगा
हे सरापितो मेरे साम्हने से उस अनन्त आग में जा-
ओ जो शैतान और उस की सेना के लिये तैयार किई
४२ गई है। क्योंकि मैं भूखा था और तुम ने मुझे खाने
को नहीं दिया मैं प्यासा था और तुम ने मुझे पानी
४३ नहीं पिलाया। मैं परदेशी था और तुम मुझे अप-
ने घर में नहीं लाये मैं नंगा था और तुम ने मुझे
कपड़ा नहीं पहिनाया मैं रोगी और बन्दीगृह में
४४ था और तुम ने मेरी सुध नहीं लिई। तब वे भी उस
को उत्तर देके कहेंगे हे प्रभु हम ने कब तुझे भूखा
देखा अथवा प्यासा अथवा परदेशी अथवा नंगा अथ-
वा रोगी अथवा बन्दीगृह में देखा और तेरी सेवा
४५ नहीं किई। तब वह उत्तर देके उन से कहेगा मैं
तुम से सच कहता हूं जो तुम ने इन अति छोटों में से

एक से नहीं किया है सो तुम ने मुझ से नहीं किया
४६ है। और ये सब अनन्त पीड़ा में जायेंगे परन्तु धर्म्मी
लोग अनन्त जीवन में ॥

२६ पर्ब्ब

और ऐसा हुआ कि जब यिसू ये सब बातें कर चुका
२ तो उस ने अपने शिष्यों से कहा। तुम जानते हो कि
दो दिन के पीछे फसह का पर्ब्ब होगा और मनुष्य का
पुत्र पकड़वाया जायगा कि क्रूस पर चढ़ाया जावे।
३ तब लोगों के प्रधान याजक और अध्यापक और
प्राचीन लोग कायफा नाम महायाजक के सदन में
४ एकट्ठे हुए। और परामर्श किया कि यिसू को छल से
५ पकड़के मार डालें। परन्तु उन्हों ने कहा पर्ब्ब में
नहीं न हो कि लोगों में हुल्लड़ मचे।
६ जब यिसू बैतअनिया में समऊन कोढ़ी के घर में था।
७ तब एक स्त्री संगमरमर की डिबिया में बहुमूल्य
सुगन्ध तेल लेके उस के पास आई और जब वह भो-
८ जन पर बैठा था तब उस के सिर पर ढाल दिया। उस
के शिष्यों ने यह देखके जलजलाहट करके कहा
९ यह व्यर्थ उठान क्यों हुआ। क्योंकि यह सुगन्ध तेल
बड़े दाम पर बिक सकता और वह कंगालों को दिया
१० जाता। यिसू ने यह जानके उन से कहा तुम स्त्री को
क्यों छेड़ते हो उस ने मुझ से अच्छा काम किया है।
११ क्योंकि कंगाल लोग तुम्हारे संग तो सदा रहते हैं
१२ परन्तु मैं तुम्हारे संग सदा नहीं रहूंगा। उस ने जो
यह सुगन्ध तेल मेरी देह पर ढाला है सो मेरे गाड़े

जाने के लिये किया है। मैं तुम से सच कहता हूं कि समस्त जगत में जहां कहीं यह मंगल समाचार सुनाया जायगा तहां जो इस ने किया है सो भी उस के स्मरण के लिये कहा जायगा। १३

तब उन बारहों में से एक ने जिस का नाम यहूदाह इसकरियत था सो प्रधान याजकों के पास जाके कहा। १४ यदि मैं उसे तुम्हारे हाथ पकड़वा दूं तो तुम मुझे क्या देगो; उन्हों ने उसे तीस रुपैये देने को ठहराया। १५ और उसी समय से वह उसे पकड़वाने का अवसर ढूंढ़ता था। १६

अखमीरी रोटी के पहिले दिन शिष्यों ने यिसू पास आके उस से कहा तू कहां चाहता है कि हम तेरे लिये फसह का भोजन खाने की तैयारी करें। १७ उस ने कहा नगर में उस मनुष्य पास जाके उस से कहो कि गुरु कहता है कि मेरा समय आन पहुंचा है मैं अपने शिष्यों के संग फसह का भोजन तेरे घर में करूंगा। १८ सो जैसे यिसू ने शिष्यों को आज्ञा किई थी उन्हों ने वैसा किया और फसह का भोजन तैयार किया। १९

जब सांझ हुई वह उन बारहों के संग खाने बैठा। २० जब वे भोजन कर रहे थे उस ने कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि तुम में से एक मुझे पकड़वायगा। २१ तब वे अति उदास हुए और हर एक उस से पूछने लगा हे प्रभु क्या मैं हूं। २२ उस ने उत्तर देके कहा जो मेरे २३

संग थाली में हाथ डालता है सो ही मुझे पकड़वा-
२४ वेगा। मनुष्य का पुत्र तो जैसा कि उस के विषय में
लिखा है तैसा जाता है परन्तु जिस मनुष्य से मनुष्य
का पुत्र पकड़वाया जाता है उस पर हाय है; जो वह
मनुष्य उत्पन्न न होता तो उस के लिये भला होता।
२५ तब यहूदाह उस के पकड़वानेवाले ने उत्तर देके
कहा हे रब्बी क्या मैं हूं; उस ने उस से कहा तू ने
आप ही कहा है।

२६ जब वे भोजन कर रहे थे तब यिसू ने रोटी लिई
और धन्यबाद करके तोड़ी और शिष्यों को देके
२७ कहा लेओ खाओ यह मेरी देह है। और उस ने
कटोरा भी लिया और धन्य मानके उन्हें दिया और
२८ कहा तुम सब इस से पीओ। क्योंकि यह मेरा लोहू
है अर्थात नये नियम का लोहू जो बहुतेरों के पाप
२९ मोचन के लिये बहाया जाता है। मैं तुम से कहता
हूं कि जिस दिन लों मैं अपने पिता के राज्य में तुम्हारे
संग उसे नया पीऊं मैं अब से उस दिन लों दाख रस
३० फिर न पीऊंगा। फिर वे भजन गाके जलपाई के
पहाड़ को गये।

३१ तब यिसू ने उन से कहा इसी रात में तुम सब मेरे
कारण ठोकर खाओगे क्योंकि लिखा है मैं गड़रिये
को मारूंगा और झुंड की भेड़ें तित्तर बित्तर हो
३२ जायेंगी। परन्तु अपने जी उठने के पीछे मैं तुम्हारे
३३ आगे गलील को जाऊंगा। पथरस ने उत्तर देके

उस से कहा यदि सब तेरे कारण ठोकर खावें तौ भी मैं कधी ठोकर न खाऊंगा। यिसू ने उस से कहा ३४ मैं तुझ से सच कहता हूं इसी रात में कुक्कुट के बोल-ने से आगे तू तीन बार मुझ से मुकरेगा। पथरस ने ३५ उस से कहा जो तेरे संग मुझे मरना भी होवे तौ भी मैं तुझ से न मुकरूंगा; सब शिष्य भी ऐसा ही बोले।

तब यिसू उन के संग गतसमने नाम एक स्थान में ३६ आया और शिष्यों से कहा जब लों मैं वहां जाके प्रार्थना करूं तब लों तुम यहां बैठो। और उस ने ३७ पथरस और सबदी के दो पुत्रों को संग ले गया और शोकित और अति उदास होने लगा। तब उस ने ३८ उन से कहा मेरा मन यहां लों अति शोकित है कि मैं मरने पर हूं; तुम यहां ठहरो और मेरे संग जाग-ते रहो। और वह थोड़ा आगे बढ़के मुंह के बल ३९ गिरा और यह कहके प्रार्थना किई कि हे मेरे पिता यदि हो सके तो यह कटोरा मुझ से टल जाय तिस पर भी जो मैं चाहता सो नहीं परन्तु जो तू चाहता है सोई होवे। तब उस ने शिष्यों के पास आके उन्हें ४० सोते पाया और पथरस से कहा क्या तुम एक घड़ी भर मेरे संग जाग न सके। जागते रहो और प्रार्थना ४१ करो कि तुम परीक्षा में न पड़ो आत्मा तो तैयार है परन्तु शरीर दुर्बल है। फिर वह दूसरी बेर गया ४२ और प्रार्थना किई कि हे मेरे पिता यदि मेरे पीने

बिना यह कटोरा मेरे पास से टल नहीं सके तो तेरी
४३ इच्छा पूरी होय। तब उस ने आके उन्हें फिर सोते
४४ पाया क्योंकि उन की आंखें नींद से भारी थीं। और
वह उन्हें छोड़कर फिर चला गया और तीसरी बेर
४५ वही बात कहके प्रार्थना किई। तब अपने शिष्यों के
पास आके उन से कहा अब सोते रहो और बिश्राम
करो देखो घड़ी आ पहुंची कि मनुष्य का पुत्र पापियों
४६ के हाथों में पकड़वाया जाता है। उठो चलें देखो
जो मुझे पकड़वाता है सो आ पहुंचा है।

४७ वह यह कह ही रहा था कि देखो यहूदाह जो
बारहों में से एक था सो आया और एक बड़ी भीड़
तलवारें और लाठियां लिये हुए प्रधान याजकों और
४८ लोगों के प्राचीनों की ओर से संग लाया। अब उस
के पकड़वानेवाले ने उन्हें यह कहके पता दिया था
४९ कि जिसे मैं चूमूं सो वही है उसे पकड़ लेना। और
तुरन्त उस ने यिसू पास आके कहा हे रब्बी प्रणाम
५० और उस को चूमा। यिसू ने उस से कहा हे मित्र तू
किस लिये आया है तब उन्हों ने पहुंचकर यिसू पर
५१ हाथ डाले और उस को पकड़ लिया। और देखो जो
यिसू के संग थे उन में से एक ने हाथ बढ़ाके अपनी
तलवार खैंची और महायाजक के एक दास पर
५२ चलाकर उस का कान उड़ा दिया। तब यिसू ने उस
से कहा अपनी तलवार को काठी में रख क्योंकि सब
जो तलवार खैंचते हैं सो तलवार ही से मारे जायें-

गे। क्या तू नहीं जानता कि मैं अभी अपने पिता से मांग सकता और वह दूतों की बारह सेनाओं से अधिक मेरे पास पहुंचा देता। परन्तु तब धर्म्मग्रन्थ की बात कि यों ही होना अवश्य है सो क्योंकर पूरी होगी। उसी घड़ी यिसू ने लोगों से कहा तुम मुझ को जैसे डाकू को पकड़ने के लिये तलवारें और लाठियां लेके निकले हो; मैं तो प्रति दिन तुम्हारे संग मन्दिर में बैठकर उपदेश करता था और तुम ने मुझे नहीं पकड़ा। पर यह सब हुआ जिसतें भविष्यतवक्ताओं के ग्रन्थों में जो लिखा है सो पूरा होवे; तब सब शिष्य उसे छोड़कर भागे। ५३ ५४ ५५ ५६

और जिन्हों ने यिसू को पकड़ा था वे उसे कायफा महायाजक के पास ले गये; वहां अध्यापक और प्राचीन लोग एकट्ठे हुए थे। परन्तु पथरस दूर दूर उस के पीछे पीछे महायाजक के सदन तक चला गया और भीतर जाके सेवकों के संग बैठा कि देखे कि इस का अन्त क्या होगा। तब प्रधान याजक और प्राचीन और समस्त सभा के लोग यिसू पर झूठी साची ढूंढ़ते थे कि उसे मार डालें परन्तु न पाई। यद्यपि बहुतेरे झूठे साची आये तथापि कोई बात न ठहरी; अन्त में दो झूठे साची आकर बोले। इस ने कहा है कि मैं परमेश्वर के मन्दिर को ढाने सकता और तीन दिन में फिर बनाने सकता हूं। तब महायाजक ने उठकर उस से कहा क्या तू कुछ उत्तर नहीं देता ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२

६३ है; ये तुझ पर क्या क्या साक्षी देते हैं। परन्तु यिसू चुपका रहा; तब महायाजक ने उत्तर देके उस से कहा मैं तुझे जीवते परमेश्वर की किरिया देता हूं कि जो तू मसीह परमेश्वर का पुत्र है तो हम से
६४ कह। यिसू उस से बोला हां वह जो तू ने कहा है और मैं यह भी तुम से कहता हूं कि इस के पीछे तुम मनुष्य के पुत्र को पराक्रम की दहिनी ओर बैठे और
६५ आकाश के मेघों पर आते देखोगे। तब महायाजक ने अपना बस्त्र फाड़के कहा यह परमेश्वर की निन्दा कर चुका है अब हम को और साक्षियों का क्या प्रयोजन है देखो अभी तुम ने आप उस से पर-
६६ मेश्वर की निन्दा सुनी है। अब क्या बिचार करते हो; उन्हों ने उत्तर देके कहा वह बध होने के योग्य
६७ है। तब उन्हों ने उस के मुंह पर थूका और उस को
६८ घूंसे मारे औरों ने थपेड़े मारे। और कहा हे मसीह हम से भविष्यतवाणी बोल कि किस ने तुझे मारा।
६९ अब पथरस बाहर सदन में बैठा था और एक लौंडी उस के पास आई और बोली तू भी यिसू गलीली के
७० संग था। परन्तु वह सब के साम्हने मुकर गया और
७१ कहा मैं नहीं जानता हूं कि तू क्या कहती है। और जब वह बाहर ओसारे में गया तब दूसरी ने उसे देखके उन से जो वहां खड़े थे कहा यह भी यिसू नासिरी
७२ के संग था। तब वह किरिया खाके फिर मुकर गया
७३ कि मैं उस मनुष्य को नहीं जानता हूं। और थोड़ी

बेर पीछे जो वहां खड़े थे से पथरस पास आके बोले निश्चय तू भी उन में से है क्योंकि तेरी बोली तुझे प्रगट करती है। ७४ तब वह धिक्कार देके और किरिया खाके कहने लगा मैं उस मनुष्य को नहीं जानता हूं और तुरन्त कुक्कुट बोला। ७५ तब पथरस ने यिसू के बचन को जो उस ने उस से कहा था कि कुक्कुट के बोलने से पहिले तू तीन बार मुझ से मुकर जायगा सो चेत किया और वह बाहर जाके बिलक बिलक रोया॥

२७ पर्व्व

जब बिहान हुआ तब सब प्रधान याजकों और लोगों के प्राचीनों ने यिसू के बिरुद्ध परामर्श किया कि उसे क्योंकर मार डालें। २ और वे उसे बांधकर ले चले और पोन्तियूस पिलातूस अध्यक्ष को सौंप दिया।

३ जब यहूदाह ने जिस ने उसे पकड़वाया था देखा कि उस पर मार डालने की आज्ञा दिई गई तब पछताया और उन तीस रुपैयों को प्रधान याजकों और प्राचीनों के पास फेर लाके कहा। ४ मैं ने जो निर्दोषी लोहू को पकड़वाया सो पाप किया; वे बोले हमें क्या है तू ही जान। ५ तब वह रुपैयों को मन्दिर में फेंकके चला गया और जाके अपने को फांसी दिई। ६ और प्रधान याजकों ने उन रुपैयों को लेकर कहा कि इन को भण्डार में डालना उचित नहीं है क्योंकि यह लोहू का दाम है। ७ तब उन्हों ने परामर्श

करके उन रुपैयें से कुम्हार का खेत परदेशियें के
८ गाड़ने के लिये मोल लिया। इस लिये वह खेत आज
९ लें लोहू का खेत कहलाता है। तब जे यिरमियाह
भविष्यतवक्ता से कहा गया था से पूरा ऊआ अर्थात
जिस का दाम इसराएल के कितने सन्तानें ने ठहरा-
या उस का दाम अर्थात तीस रुपैये उन्हें ने लिये
१० और जैसे प्रभु ने मुझे आज्ञा किई थी उन्हें ने उन के
कुम्हार के खेत के लिये दिया।

११ और यिसू अध्यक्ष के आगे खड़ा ऊआ; अध्यक्ष ने
उस से पूछा क्या तू यहूदियें का राजा है; यिसू ने उस
१२ से कहा हां तू ठीक कहता है। जब प्रधान याजक और
प्राचीन लोग उस पर दोष लगा रहे थे तब उस ने
१३ कुछ उत्तर न दिया। तब पिलातूस ने उस से कहा क्या
तू नहीं सुनता कि वे कैसी कैसी साक्षी तुझ पर देते
१४ हैं। परन्तु उस ने एक बात भी उस के उत्तर न दिया
यहां लें कि अध्यक्ष ने बऊत अचंभा किया।

१५ और उस पर्व्व में अध्यक्ष की रीति थी कि लोगें के
लिये एक बन्धुवे के जिसे वे चाहते थे छोड़ देता था।
१६ उस समय बरब्बा नाम उस का एक प्रसिद्ध बन्धुवा था।
१७ से जब वे एकट्ठे ऊए पिलातूस ने उन से कहा तुम किस
के चाहते हे कि मैं तुम्हारे लिये छोड़ देऊं बरब्बा
१८ के अथवा यिसू के जे मसीह कहावता है। क्योंकि
वह जानता था कि उन्हें ने उसे डाह से पकड़वा दिया
१९ था। जब वह बिचार आसन पर बैठा था तब उस की

पत्नी ने उस को यह कहला भेजा कि तू इस सज्जन से कुछ काम मत रख क्योंकि उस के कारण मैं ने आज स्वप्न में बज्जत दुःख पाया है। परन्तु प्रधान याजकों २० और प्राचीनों ने लोगों को उभारा कि बरब्बा को मांग लें और यिसू को मरवा डालें। अध्यक्ष ने फिर उन २१ से कहा तुम इन दोनों में से किस को चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये छोड़ दूं; वे बोले कि बरब्बा को। पि- २२ लातूस ने उन से कहा फिर यिसू को जो मसीह कहावता है मैं क्या करूं; सब बोल उठे वह क्रूस पर चढ़ाया जाय। तब अध्यक्ष ने कहा क्यों उस ने कौनसा २३ अपराध किया है; परन्तु वे और भी चिल्लाके बोले वह क्रूस पर चढ़ाया जाय। जब पिलातूस ने देखा कि २४ कुछ बन नहीं पड़ता परन्तु और भी झगड़ होता है तब उस ने पानी लेके लोगों के साम्हने अपने हाथ धोये और कहा मैं इस सज्जन के लोहू से निर्दोष हूं तुम ही जानो। तब सारे लोगों ने उत्तर देके कहा २५ उस का लोहू हम पर और हमारे सन्तानों पर होवे। तब उस ने बरब्बा को उन के लिये छोड़ दिया और २६ यिसू को कोड़े मारके क्रूस पर चढ़ाने के लिये सौंप दिया।

तब अध्यक्ष के सिपाहियों ने यिसू को अध्यक्ष की २७ कचहरी में ले जाके सारा जथा उस के पास एकट्ठा किया। और उन्हों ने उस का बस्त्र उतारके उसे लाल २८ बस्त्र पहिराया। और कांटों का मुकुट गून्धके उस के २९

सिर पर रखा और उस के दहिने हाथ में नरकट दिया और उस के आगे घुटने टेके और ठट्ठा करके
३० यह कहा कि हे यहूदियों के राजा प्रणाम। और उन्हों ने उस पर थूका और वह नरकट लेके उस के
३१ सिर पर मारा। और जब वे उस से ठट्ठा कर चुके तब उस लाल वस्त्र को उतारकर फिर उसी का वस्त्र उसे पहिनाया और उसे क्रूस पर चढ़ाने को ले गये।

३२ और बाहर आके उन्हों ने समऊन नाम कुरेनी नगर के एक मनुष्य को पाया और उसे बेगार पकड़ा
३३ कि उस का क्रूस ले चले। और जब वे एक स्थान में पहुंचे जिस का नाम गलगता अर्थात खोपरी का स्थान
३४ है। तब उन्हों ने सिरके में पित्त मिलाके उसे पीने
३५ को दिया और जब चीखा तो पीने न चाहा। तब उन्हों ने उस को क्रूस पर चढ़ाया और चिट्ठी डालके उस के वस्त्र बांट लिये कि जो भविष्यतवक्ता ने कहा था सो पूरा होवे अर्थात उन्हों ने मेरे वस्त्र आपस में बांट
३६ लिये और मेरे बागे पर चिट्ठी डाली। और वहां बैठ-
३७ के उन्हों ने उस का पहरा दिया। और उस का दोष पत्र लिखके कि यह यिसू यहूदियों का राजा है उसे
३८ उस के सिर के ऊपर में लगाया। तब दो डाकू भी एक उस के दहिने हाथ और दूसरा बायें हाथ उस के संग क्रूसों पर चढ़ाये गये।

३९ और जो उधर से आते जाते थे सो सिर हिलाके उस
४० की निन्दा करते। और कहते थे तू जो मन्दिर का ढा-

नेवाला और तीन दिन में फिर बनानेवाला है आप को
बचा ; जो तू परमेश्वर का पुत्र है तो क्रूस पर से उतर
आ। इसी रीति से प्रधान याजकों ने भी अध्यापकों ४१
और प्राचीनों के संग यह कहके उसे ठट्ठों में उड़ाया।
कि उस ने औरों को बचाया आप को बचा नहीं सकता ४२
है जो वह इसराएल का राजा है तो अब क्रूस पर से
उतर आवे तो हम उस पर विश्वास लावेंगे। उस ने ४३
परमेश्वर पर भरोसा रखा था जो वह उस का प्यारा
है तो उस को अब छुड़ावे क्योंकि उस ने कहा था मैं
परमेश्वर का पुत्र हूं। जो डाकू उस के संग भी क्रूस पर ४४
चढ़ाये गये थे सो इसी प्रकार से उसे धिक्कारते थे।

तब दो पहर से तीसरे पहर लों उस समस्त देश में ४५
अंधकार छा गया। और तीसरे पहर के समय में यिसू ४६
ने बड़े शब्द से चिल्लाके कहा एली एली लामा सबक्तनी
अर्थात हे मेरे परमेश्वर हे मेरे परमेश्वर तू ने क्यों
मुझे त्यागा है। जो लोग वहां खड़े थे उन में से कितनों ४७
ने यह सुनके कहा वह इलियाह को बुलाता है। और ४८
तुरन्त उन में से एक ने दौड़के इस्पंज को लेकर सिर-
के में भिंगोया और नल पर रखके उसे चुसाया। औ- ४९
रों ने कहा रह जाओ हम देखें कि इलियाह उसे छु-
ड़ाने को आता है कि नहीं। तब यिसू ने फिर बड़े शब्द ५०
से चिल्लाया और प्राण त्यागा।

और देखो मन्दिर का पर्दा ऊपर से नीचे लों फट ५१
गया और धरती काम्पी और पर्ब्बत तड़क गये। और ५२

कबरें खुल गईं और बज्ञत पवित्र लोग जो सोते थे तिन
५३ की लोथें उठीं। और उस के जी उठने के पीछे कबरों
में से निकलके पवित्र नगर में गये और बज्ञतों को
५४ दिखाई दिये। और जब शतपति और उन्हों ने जो उस
के संग यिसू का पहरा देते थे भूईंडोल और जो कुछ
कि ज्ञआ था उस को देखा तब वे डर गये और बोले
सचमुच यह परमेश्वर का पुत्र था।

५५ और बज्ञत सी स्त्रियां वहां थीं जो गलील से यिसू
के पीछे पीछे उस की सेवा करती आईं थीं सो दूर से
५६ देख रहीं थीं। उन में मरियम मिगदाली और याकूब
और योसे की माता मरियम और सबदी के पुत्रों की
माता थीं।

५७ जब सांझ ज्ञई तब यूसफ नाम अरमतिया का एक
धनबान मनुष्य जो आप भी यिसू का शिष्य था आया।
५८ और पिलातूस के पास जाकर यिसू की लोथ मांगी; तब
५९ पिलातूस ने आज्ञा किई कि लोथ उसे दिई जाय। और
यूसफ ने लोथ को लेकर उसे उजले सूती कपड़े में
६० लपेटा। और अपनी नई कबर में जो उस ने पत्थर में
खुदवाई थी उसे रखा और एक भारी पत्थर कबर के
६१ मुंह पर ढुलकाके चला गया। और मरियम मिगदा-
ली और दूसरी मरियम वहां कबर के साम्हने बैठी
थीं।

६२ अब दूसरे दिन जो तैयारी के दिन के पीछे है प्रधान
याजक और फरीसी लोग पिलातूस के पास एकट्ठे

ऊए। और बोले हे प्रभु हमें चेत है कि वह भरमानेवाला अपने जीते जी कहता था कि मैं तीन दिन के पीछे फिर जी उठूंगा। इस कारण आज्ञा कर कि तीन दिन लों कबर की रखवाली किई जावे न हो कि उस के शिष्य रात को आके उसे चुरा ले जावें और लोगों से कहें कि वह मृतकों में से जी उठा है; तब पिछली चूक पहिली से बरी होगी। तब पिलातूस ने उन से कहा पहरूए तो तुम्हारे पास हैं जाओ और अपने जानते भर रखवाली करो। उन्हों ने जाकर पत्थर पर छाप कर दिई और पहरूए बैठाकर कबर की रखवाली किई॥ ६३ ६४ ६५ ६६

२८ पर्व्व

बिश्रामदिन के पीछे अठवारे के पहिले दिन जब पह फटने लगी मरियम मिगदाली और दूसरी मरियम कबर को देखने आईं। और देखो बड़ा भूईंडोल ऊआ क्योंकि प्रभु का दूत स्वर्ग से उतरा और आके उस पत्थर को कबर के मुंह पर से ढुलकाके उस पर बैठ गया। उस का रूप बिजली के समान और उस का बस्त्र पाला की नाईं उजला था। उस के डर के मारे पहरूए काम्प गये और मृतकों के समान ऊए। उस दूत ने उत्तर देके स्त्रियों से कहा तुम मत डरो क्योंकि मैं जानता हूं कि तुम यिसू को जो क्रूस पर मारा गया ढूंढ़तियां हो। वह यहां नहीं है परन्तु अपने कहने के समान जी उठा है; आओ और जहां प्रभु पड़ा था उस स्थान को देखो। और तुरन्त जाओ और २ ३ ४ ५ ६ ७

उस के शिष्यों से कहो कि वह मृतकों में से जी उठा है और देखो वह तुम से आगे गलील को जाता है वहां तुम उसे देखोगे; देखो मैं ने तुम से कहा है।
८ और वे कबर से तुरन्त भय और बड़े आनन्द से
९ निकलके उस के शिष्यों से कहने को दौड़ीं। जब वे उस के शिष्यों से कहने को चली जाती थीं देखो यिसू उन्हें आ मिला और बोला कि कल्याण हो और उन्हों ने पास आके उस के चरण पकड़के उस को दण्डवत
१० किई। तब यिसू ने उन से कहा मत डरो जाके मेरे भाइयों से कहो कि गलील को जायें और वे मुझे वहां देखेंगे।

११ और जब वे चली जाती थीं देखो उन पहरुवों में से कितनों ने नगर में आके प्रधान याजकों को समस्त
१२ समाचार सुनाया। तब उन्हों ने प्राचीनों के संग एकट्ठे होके परामर्श किया और उन सिपाहियों को बहुत
१३ रुपैये देके कहा। कि कहियो रात को जब हम सो
१४ गये थे तब उस के शिष्य आके उसे चुरा ले गये। और यदि यह अध्यक्ष के कान लों पहुंचे तो हम उसे सम-
१५ झाके तुम्हें बचा लेंगे। सो उन्हों ने रुपैये लेकर जैसे सिखाये गये थे वैसा ही किया और इस बात की चर्चा आज लों यहूदियों में है।

१६ तब वे ग्यारह शिष्य गलील में उस पहाड़ पर जो
१७ यिसू ने उन्हें ठहराया था गये। और उसे देखके उसे
१८ दण्डवत किई परन्तु कितने दुबधे में रहे। यिसू ने पास

आकर उन से कहा स्वर्ग और पृथिवी पर सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इस लिये तुम जाओ और १९ सब देशों के लोगों को पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिसमा देके शिष्य करो। और २० जो बातें कि मैं ने तुम्हें आज्ञा किई है उन सभों को पालन करने को उन्हें सिखलाओ और देखो मैं जगत के अन्त लों सदा तुम्हारे संग हूं। आमीन॥

मंगल समाचार

मरकुस रचित।

१ पर्व्व

परमेश्वर के पुत्र यिसू मसीह के मंगल समाचार का आरंभ। २ जैसा कि भविष्यतवक्ताओं की पुस्तक में लिखा है कि देखो मैं अपने दूत को तेरे आगे भेजता हूं; वह तेरे साम्हने तेरा मार्ग बनावेगा। ३ बन में किसी का शब्द है यह पुकारता हुआ कि प्रभु का मार्ग बनाओ और उस के पन्थ सीधे करो। ४ यूहन्ना बन में बपतिसमा देता था और पाप मोचन के लिये मन फिराने के बपतिसमा का प्रचार करता था। ५ और सारे यहूदाह देश के और यरूसलम के रहनेवाले उस पास निकल आये और सभों ने अपने अपने पापों को मानके उस से यर्दन नदी में बपतिसमा पाया। ६ और यूहन्ना ऊंट के रोम का वस्त्र और अपनी कटि में चमड़े का पटुका पहिने था और टिड्डी और बन मधु खाया करता था। ७ और प्रचारके कहता था एक

मुझ से अधिक सामर्थी मेरे पीछे आता है; मैं उस के जूतों का बन्ध झुकके खोलने के योग्य नहीं हूं। मैं ने तो तुम्हें जल से बपतिसमा दिया है परन्तु वह तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिसमा देगा। ८

उन्हीं दिनों में ऐसा ज़ुआ कि यिसू ने गलील के नसिरत से आकर यूहन्ना से यर्दन में बपतिसमा लिया। और जोंहीं जल से बाहर निकला उस ने स्वर्ग को खुले और आत्मा को कपोत की नाईं अपने ऊपर उतरते देखा। और यह आकाशवाणी ज़ुई तू मेरा प्रिय पुत्र है जिस से मैं अति प्रसन्न हूं। ९ १० ११

और आत्मा तुरन्त उस को बन में ले गया। और वहां बन में वह चालीस दिन लों शैतान से परीक्षा किया गया और बन पशुओं के संग रहता था और स्वर्गीय दूत उस की सेवा करते थे। १२ १३

फिर यूहन्ना के बन्दीगृह में डाले जाने के पीछे यिसू ने गलील में आके परमेश्वर के राज्य का मंगल समाचार प्रचार किया। और कहा समय पूरा ज़ुआ और परमेश्वर का राज्य निकट आया है; मन फिराओ और मंगल समाचार पर बिश्वास लाओ। १४ १५

और गलील के समुद्र के तीर पर फिरते ज़ुए उस ने समऊन और उस के भाई अन्द्रियास को समुद्र में जाल डालते देखा क्योंकि वे मछवे थे। यिसू ने उन से कहा मेरे पीछे आओ और मैं तुम्हें मनुष्यों के मछवे बनाऊंगा। और वे तुरन्त अपने जाल छोड़- १६ १७ १८

१९ के उस के पीछे हो लिये। और वहां से थोड़ा आगे बढ़के उस ने सबदी के पुत्र याकूब और उस के भाई यूहन्ना को भी नाव पर जालों को सुधारते देखा।
२० और उस ने वोंहीं उन्हें बुलाया और वे अपने पिता सबदी को बनिहारों के संग नाव पर छोड़के उस के पीछे हो लिये।

२१ तब वे कफरनहूम में गये और तुरन्त विश्राम के
२२ दिन उस ने मण्डली में जाके उपदेश किया। और वे उस के उपदेश से अचंभित हुए क्योंकि उस ने अध्यापकों के समान नहीं परन्तु अधिकारी के समान
२३ उन्हें उपदेश किया। और एक मनुष्य कि जिस पर अपवित्र आत्मा था सो उन की मण्डली में था; उस ने
२४ पुकारके कहा। कि हे यिसू नासिरी रहने दे तुझ से हमें क्या काम; तू हमें नाश करने को आया है; मैं तुझे जानता हूं तू कौन है परमेश्वर का पवित्र जन।
२५ यिसू ने उस को डांटके कहा कि चुप रह और उस
२६ में से निकल आ। तब अपवित्र आत्मा ने उस को मरोड़के और बड़े शब्द से चिल्लाके उस में से निकल
२७ आया। और वे सब अचंभित होके आपस में बिचार करके बोले यह क्या है; यह कौनसा नया उपदेश है कि वह अधिकारी की नाईं अपवित्र आत्माओं को भी
२८ आज्ञा करता है और वे उस की मानते हैं। और तुरन्त उस की कीर्ति गलील के आस पास के सारे देश में फैल गई।

२९ और मण्डली से निकलकर वे तुरन्त याकूब और यूहन्ना के संग समऊन और अन्द्रियास के घर में गये। ३० और समऊन की सास ज्वर से पीड़ित पड़ी थी तब उन्हों ने उस के विषय में तुरन्त उस से कहा। ३१ उस ने आके उस का हाथ पकड़के उसे उठाया और ज्वर तुरन्त छूट गया और उस ने उन की सेवा किई।

३२ सांझ को जब सूर्य्य डूब गया लोग समस्त रोगियों ३३ और पिशाचग्रस्तों को उस के पास लाये। और सारे ३४ नगर के लोग द्वार पर एकट्ठे हुए। और उस ने बहुतों को जो नाना प्रकार के रोगों से दुःखी थे चंगा किया और बहुत से पिशाचों को निकाला और पिशाचों को बोलने न दिया क्योंकि वे उसे जानते थे। ३५ और बड़े तड़के कुछ रात रहते वह उठके निकला और एक जंगल स्थान में जाके वहां प्रार्थना किई। ३६ तब समऊन और जो उस के संग थे सो उस के पीछे ३७ हो लिये। और उसे पाके उस से कहा सब लोग ३८ तुझे ढूंढ़ते हैं। उस ने उन से कहा आओ हम आस पास के नगरों में चलें कि मैं वहां भी उपदेश करूं ३९ क्योंकि मैं इसी कारण बाहर निकला हूं। और वह समस्त गलील में उन की मण्डलियों में उपदेश करता और पिशाचों को निकालता था।

४० तब एक कोढ़ी ने उस के पास आके उस से बिन्ती किई और घुटने टेकके उस से बोला यदि तू चाहे ४१ तो मुझे पवित्र कर सकता है। यिसू ने दयाल होके

हाथ बढ़ाया और उसे छूकर कहा मैं चाहता हूं तू
४२ पवित्र हो जा। उस के कहते ही उस का कोढ़ जाता
४३ रहा और वह पवित्र हो गया। और उस ने उसे
४४ चिताके तुरन्त बिदा किया। और उस से कहा देख
किसी से कुछ मत कह परन्तु जाके अपने तईं याजक
को दिखा और तेरे पवित्र होने के कारण जो कुछ
मूसा ने आज्ञा किई है सो चढ़ा कि वह उन पर साक्षी
४५ होवे। परन्तु वह बाहर जाके इस बात की बहुत
चर्चा करने और यहां तक उसे सुनाने लगा कि यिसू
फिर नगर में प्रगट से नहीं जा सका परन्तु बाहर
जंगल स्थानों में रहा और चारों ओर से लोग उस
के पास आये॥

२ पर्ब्ब

और कई एक दिन बीते वह फिर कफरनहूम में
२ गया और चर्चा हुई कि वह घर में है। तुरन्त बहुत
लोग यहां लों एकट्ठे हुए कि द्वार के आस पास भी
उन की समाई न हुई और उस ने उन्हें बचन कह
सुनाया।

३ तब वे एक अर्द्धांगी को चार मनुष्यों से उठाये
४ हुए उस के पास ले आये। और जब वे भीड़ के मारे
उस पास न पहुंच सके तब उन्हों ने जहां वह था
तहां छत को उधेड़ा और खोलके उस खटोले को
५ जिस पर वह अर्द्धांगी पड़ा था उतार दिया। यिसू
ने उन का बिश्वास देखके उस अर्द्धांगी से कहा हे
६ पुत्र तेरे पाप क्षमा किये गये हैं। परन्तु कितने

अध्यापक वहां बैठे और अपने मन में बिचार करते थे। कि यह मनुष्य क्यों इस रीति से परमेश्वर की निन्दा करता है; परमेश्वर को छोड़ कौन पाप को चमा कर सकता है। और तुरन्त यिसू ने अपनी आत्मा में जाना कि वे अपने मनों में ऐसा बिचार करते हैं तब उन से कहा तुम अपने मनों में क्यों ऐसा बिचार करते हो। कौन बात सहज है अर्द्धांगी से यह कहना कि तेरे पाप चमा किये गये अथवा यह कहना कि उठ और अपना खटोला उठा ले और चल। परन्तु जिसतें तुम जानो कि मनुष्य के पुच को पृथिवी पर पाप चमा करने का अधिकार है [उस ने उस अर्द्धांगी से कहा]। मैं तुझ से कहता हूं उठ और अपना खटोला उठाके अपने घर को जा। और वह तुरन्त उठा और खटोला उठाके सभों के साम्हने चल निकला; इस से सब लोग बिस्मित हुए और परमेश्वर की स्तुति करके बोले कि हम ने ऐसा कभी नहीं देखा। ७ ८ ९ १० ११ १२

और वह फिर समुद्र की ओर गया और सारी भीड़ उस पास आई और उस ने उन्हें उपदेश किया। और जाते हुए उस ने हलफी के पुच लावी को कर उगाहने के स्थान में बैठे देखा और उस से कहा मेरे पीछे आ; तब वह उठकर उस के पीछे हो लिया। और ऐसा हुआ कि जब यिसू उस के घर में बैठके भोजन करता था तब बहुत से करग्राहक और पापी लोग उस के और उस के शिष्यों के संग बैठे १३ १४ १५

क्योंकि लोग बहुत थे और उस के पीछे चले आये थे।
१६ और जब अध्यापकों और फरीसियों ने उस को कर-ग्राहकों और पापियों के संग भोजन करते देखा तब उस के शिष्यों से कहा यह क्या है कि वह करग्राह-
१७ कों और पापियों के संग खाता पीता है। यिसू ने यह सुनके उन से कहा निरोगियों को नहीं परन्तु रोगि-यों को वैद्य का प्रयोजन है; मैं धर्म्मियों को नहीं परन्तु पापियों को मन फिराने के लिये बुलाने आया हूं।
१८ यूहन्ना और फरीसियों के शिष्य उपवास किया करते थे; उन्हों ने आके उस से कहा यूहन्ना के और फरीसियों के शिष्य क्यों उपवास करते हैं परन्तु तेरे
१९ शिष्य उपवास नहीं करते। यिसू ने उन से कहा क्या बराती लोग जब लों दूल्हा उन के संग है तब उप-वास कर सकते हैं; जब लों दूल्हा उन के संग है
२० तब लों वे उपवास नहीं कर सकते हैं। परन्तु वे दिन आवेंगे कि जिन में दूल्हा उन से अलग किया जायगा
२१ तब उन्हीं दिनों में वे उपवास करेंगे। कोई मनुष्य कोरे थान का टुकड़ा पुराने वस्त्र में नहीं लगाता है नहीं तो वह कोरा टुकड़ा जो लगाया गया है सो पुराने से कुछ और भी फाड़ लेता है और उस का
२२ फटा बढ़ जाता है। और कोई मनुष्य नये दाख रस को पुराने कुप्पों में नहीं भरता है नहीं तो नये दाख रस से कुप्पे फट जाते हैं और दाख रस बह जाता है

और कुप्पे नष्ट होते हैं परन्तु नये दाख रस को नये कुप्पों में भरा चाहिये।

२३ और ऐसा हुआ कि वह बिश्राम के दिन खेतों से जाता था और उस के शिष्य जाते जाते बालें तोड़ने लगे। २४ तब फरीसियों ने उस से कहा देख जो काम बिश्राम के दिन में करना उचित नहीं है सो ये लोग क्यों करते हैं। २५ उस ने उन से कहा दाऊद ने जब वह और उस के संगी सकेत में पड़े और भूखे थे तो उन्हों ने जो किया क्या तुम ने वह नहीं पढ़ा है। २६ उस ने क्योंकर अबियातर महायाजक के समय में परमेश्वर के घर में जाके भेंट की रोटियां कि जिन्हें खाना याजकों को छोड़ और किसी को उचित नहीं था सो आप खाईं और अपने संगियों को भी दिईं। २७ और उस ने उन से कहा बिश्राम का दिन मनुष्य के लिये हुआ पर मनुष्य बिश्राम के दिन के लिये नहीं। २८ इस कारण मनुष्य का पुत्र बिश्राम के दिन का भी प्रभु है॥

३ पर्व्व

वह फिर मण्डली में गया और वहां एक मनुष्य था कि जिस का हाथ सूख गया था। २ और वे उस को घात में लगे थे कि यदि वह उस को बिश्राम के दिन में चंगा करे तो उस पर दोष लगावें। ३ उस ने उस मनुष्य से कि जिस का हाथ सूख गया था कहा बीच में खड़ा हो। ४ और उस ने उन से कहा बिश्राम के दिनों में क्या भला करना अथवा बुरा करना प्राण बचाना अथवा घात करना उचित है; परन्तु वे चुप

५ रहे। तब उस ने उन के मन की कठोरता के कारण शोकित होके क्रोध से चारों ओर उन पर देखा और उस मनुष्य से कहा अपना हाथ बढ़ा; उस ने बढ़ाया ६ और उस का हाथ दूसरे की नाईं चंगा होगया। तब फरीसियों ने तुरन्त बाहर जाके हेरोदियों के संग उस के बिरुद्ध आपस में बिचार किया कि उसे किस रीति से घात करें।

७ और यिसू अपने शिष्यों के संग समुद्र के तीर पर ८ गया और बहुत लोग गलील और यहूदाह। और यरूसलम और अदूम और यर्दन के उस पार से उस के पीछे हो लिये और सूर और सैदा के आस पास के बहुत से लोगों ने जब सुना कि वह कैसे बड़े काम ९ करता है तब उस पास आये। उस ने अपने शिष्यों से कहा भीड़ के कारण से एक छोटी नाव मेरे लिये १० लगी रहे न हो कि लोग मुझे दबा लें। क्योंकि उस ने बहुतों को चंगा किया यहां लों कि जितने रोगी ११ थे सो उसे छूने को उस पर गिरे पड़ते थे। और अपवित्र आत्माओं ने भी जब उसे देखा तब उस के आगे गिरे और पुकार के बोले तू परमेश्वर का पुत्र १२ है। तब उस ने उन्हें दृढ़ता से आज्ञा किई मुझे प्रगट न करना।

१३ फिर वह एक पहाड़ पर चढ़ गया और जिन को चाहा उन्हें अपने पास बुलाया और वे उस पास आये। १४ तब उस ने बारहों को ठहराया कि उस के संग रहें

और कि वह उपदेश करने को उन्हें भेजे। और कि वे रोगों को चंगा करने और पिशाचों को निकालने का सामर्थ्य रखें। अर्थात समऊन को कि जिस का नाम पथरस रखा। और सबदी के बेटे याकूब को और याकूब के भाई यूहन्ना को जिन का नाम उस ने बनी-रगश अर्थात गर्जन के पुत्र रखा। और अन्द्रियास और फिलिप और बरतलमी और मत्ती और तोमा को और हलफी के बेटे याकूब को और यद्दी को और समऊन कनआनी को। और यहूदाह इसकरियत को जो उस का पकड़वानेवाला भी हुआ।
१५
१६
१७
१८
१९

फिर वे घर में आये और इतने लोग फिर एकट्ठे हुए कि वे रोटी भी न खा सके। जब उस के कुटुम्ब ने यह सुना तब वे उसे पकड़ने को निकले क्योंकि उन्हों ने कहा वह बेसुध है। पर अध्यापक लोग जो यरू-सलम से आये थे बोले बालसबूल उसे लगा है और वह पिशाचों के प्रधान की सहायता से पिशाचों को नि-कालता है। तब उस ने उन्हें बुलाके दृष्टान्तों में उन से कहा शैतान शैतान को क्योंकर निकाल सकता है। और यदि किसी राज्य में फूट पड़े तो वह राज्य ठहर नहीं सकता है। और यदि किसी घर में फूट पड़े तो वह घर ठहर नहीं सकता है। और यदि शैतान अपने ही बिरुद्ध उठके फूट करे तो वह ठहर नहीं सकता है परन्तु उस का अन्त होता है। किसी बलवन्त मनुष्य के घर में कोई पैठे तो जब लों वह पहिले उस
२०
२१
२२
२३
२४
२५
२६
२७

बलवन्त को न बांधे तब लों उस की सामग्री लूट नहीं
२८ सकता है पर पीछे वह उस के घर को लूटेगा। मैं
तुम से सच कहता हूं सब पाप और सब निन्दा कि
जिस से मनुष्यों के सन्तान परमेश्वर की निन्दा करते
२९ हैं सो उन को क्षमा किई जायगी। परन्तु जो कोई
पवित्र आत्मा की निन्दा करता है सो कभी क्षमा न
किया जायगा परन्तु वह अनन्त दण्ड के योग्य होता
३० है। क्योंकि उन्हों ने कहा था कि उसे अपवित्र आत्मा
लगा है।

३१ तब उस के भाई और उस की माता आये और
३२ बाहर खड़े होके उस को बुलवा भेजा। और बहुत
लोग उस के आस पास बैठे थे; सो उन्हों ने उस से
कहा देख तेरी माता और तेरे भाई बाहर तुझे
३३ ढूंढ़ते हैं। उस ने उन्हें उत्तर दिया कौन है मेरी
३४ माता अथवा मेरे भाई। और जो उस के आस पास
बैठे थे उस ने उन सभों पर दृष्टि करके कहा देखो
३५ मेरी माता और मेरे भाई। क्योंकि जो कोई परमे-
श्वर की इच्छा पर चले सो ही मेरा भाई और मेरी
बहिन और माता है॥

४ पर्व्व

वह फिर समुद्र के तीर पर उपदेश करने लगा
और ऐसी बड़ी भीड़ उस के पास एकट्ठी हुई कि वह
समुद्र में एक नाव पर चढ़ बैठा और समस्त भीड़
२ समुद्र के तीर भूमि पर रही। तब उस ने उन्हें बहुत
सी बातें दृष्टान्तों में सिखाईं और अपने उपदेश में उन

से कहा। सुनो देखो एक बोनेहारा बीज बोने को निकला। और यों ड़ुआ कि बोने में कुछ मार्ग की ओर गिरा और आकाश के पंछी आके उसे चुग गये। और कुछ पत्थरीली भूमि पर गिरा वहां उसे बड़ुत मिट्टी न मिली और गहरी मिट्टी न मिलने से वह जल्द उगा। परन्तु जब सूर्य्य उदय ड़ुआ तब वह जल गया और जड़ न पकड़ने से सूख गया। और कुछ कांटों के बीच में गिरा और कांटों ने बढ़के उसे दबा डाला और वह फल न लाया। और कुछ अच्छी भूमि पर गिरा और वह उगा और बढ़ा और फल लाया कुछ तीस गुणा कुछ साठ गुणा कुछ सौ गुणा। और उस ने उन से कहा जिस को सुनने के कान हों सो सुने। ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९

और जब वह अकेला था तब जो लोग उस के आस पास थे उन्हों ने उन बारहों के संग इस दृष्टान्त का अर्थ उस से पूछा। उस ने उन से कहा परमेश्वर के राज्य के भेद का ज्ञान तुम्हें दिया गया है परन्तु जो बाहर हैं उन से सब बातें दृष्टान्तों में होती हैं। कि वे देखते ड़ुए देखें और उन्हें न सूझे और सुनते ड़ुए सुनें और न समझें न हो कि वे कभी फिर जावें और उन के पाप क्षमा किये जायें। और उस ने उन से कहा क्या तुम यह दृष्टान्त नहीं समझते हो फिर सब दृष्टान्त क्योंकर समझोगे। १० ११ १२ १३

बोनेहारा वचन को बोता है। और मार्ग की ओर १४ १५

के जहां बचन बोया जाता है सो वे हैं कि जब वे सुन-
ते हैं तब शैतान तुरन्त आता है और जो बचन उन के
१६ मन में बोया गया था सो छीन लेता है। और वैसे ही
जो पत्थरीली भूमि में बीज बोया गया है सो वे हैं कि
जब बचन सुनते हैं तब तुरन्त आनन्द से उसे ग्रहण
१७ करते हैं। और आप में जड़ नहीं रखने से वे थोड़ी
बेर ठहरते हैं फिर पीछे जब बचन के कारण दुःख
अथवा उपद्रव होता है तब वे तुरन्त ठोकर खाते हैं।
१८ और जो बीज कांटों के बीच में बोया गया है सो वे हैं
१९ जो बचन सुनते हैं। और इस संसार की चिन्ता और
धन का छल और और बस्तुओं का लोभ उन में समाके
बचन को दबा डालते हैं और वह निष्फल होता है।
२० और जो बीज अच्छी भूमि में बोया गया है सो वे हैं जो
बचन सुनके ग्रहण करते हैं और फल लाते हैं कोई
तीस गुणा कोई साठ गुणा कोई सौ गुणा।

२१ और उस ने उन से कहा क्या दीपक इस लिये है
कि नान्द के नीचे अथवा खाट के नीचे रखा जाय; क्या
२२ इस लिये नहीं कि दीवट पर रखा जाय। कुछ गुप्त
नहीं है जो प्रगट न किया जायगा और न कोई बस्तु
२३ छिपी है परन्तु ऐसी कि खुल जाय। जिस को सुनने के
कान हों सो सुने।

२४ फिर उस ने उन से कहा सचेत रहो कि तुम क्या
सुनते हो; जिस नाप से तुम नापते हो उसी से तुम्हारे
लिये नापा जायगा और तुम्हें जो सुनते हो अधिक

दिया जायगा। क्योंकि जिस पास कुछ है उसे दिया जायगा और जिस के पास कुछ नहीं है उस से जो कुछ उस के पास है सो भी ले लिया जायगा। २५

फिर उस ने कहा कि परमेश्वर का राज्य ऐसा है जैसा कि मनुष्य भूमि में बीज बोय। और रात दिन सोते जागते रहे और बीज जमे और बढ़े ऐसा कि वह आप नहीं जाने। क्योंकि भूमि आप से आप फल निकलवाती है पहिले अंकुर तब बाल तब बाल में पक्का दाना। और जब दाना पक चुका तुरन्त वह हंसुआ लगाता है क्योंकि कटनी आ पहुंची है। २६ २७ २८ २९

फिर उस ने कहा हम परमेश्वर के राज्य की उपमा किस से देवें और उस के बर्णन में कौन सा दृष्टान्त लावें। वह राई के एक दाने के समान है कि जब भूमि में बोया जाता तब भूमि में के सब बीजों से छोटा है। परन्तु जब बोया गया तब बढ़ता और सब सागों से बड़ा होता है और उस की ऐसी बड़ी डालियां निकलती हैं कि आकाश के पंछी उस की छाया में बसेरा कर सकते हैं। ३० ३१ ३२

और वह उन्हें ऐसे बहुत से दृष्टान्तों में जैसा वे समझ सकते थे वैसा बचन सुनाता था। और बिना दृष्टान्त से वह उन से कहा न करता पर एकान्त में वह अपने शिष्यों को सब बातों का अर्थ बताता था। ३३ ३४

और उसी दिन जब सांझ हुई उस ने उन से कहा आवो उस पार चलें। और वे लोगों को बिदा करके ३५ ३६

उस को नाव पर जैसा था वैसे ले चले और और छोटी
३७ नावें भी उस के संग थीं। तब बड़ी आंधी उठी और
लहरें नाव पर ऐसी लगीं कि वह जल से भर जाती
३८ थी। और वह पतवार की ओर एक तकिया पर सो-
ता था उन्हों ने उसे जगाके उस से कहा हे गुरु क्या
३९ तुझ को चिन्ता नहीं कि हम नष्ट होते हैं। तब उस ने
उठके बयार को डांटा और समुद्र से कहा चुप रह
और थम जा और बयार थम गई और बड़ा चैन हो
४० गया। फिर उस ने उन से कहा तुम क्यों ऐसे डरते हो
४१ क्योंकर बिश्वास नहीं करते। तब वे बहुत ही डर गये
और आपस में कहने लगे यह किस रीति का मनुष्य
है कि बयार और समुद्र भी उस की आज्ञा मानते हैं॥

५ पर्ब्ब

वे समुद्र के उस पार गदरियों के देश में पहुंचे।
२ और जब वह नाव पर से उतरा वोंहीं एक मनुष्य जिस
पर अपवित्र आत्मा था कबरस्थान में से निकलके उस
३ से आ मिला। वह कबरस्थान में रहा करता था और
४ कोई उसे जंजीरों से भी बांध नहीं सकता था। क्योंकि
वह बहुत बेर बेड़ियों और जंजीरों से बांधा गया था
और उस ने जंजीरें तोड़ डालीं और बेड़ियां टुकड़े
टुकड़े कर दिईं और कोई उस को बश में नहीं कर
५ सकता था। वह सदा रात दिन पहाड़ों में और कब-
रों में चिल्लाया करता और अपने को पत्थरों से कूट-
६ ता था। जब उस ने यिसू को दूर से देखा तो दौड़ा
७ और उस को प्रणाम किया। और बड़े शब्द से चिल्ला-

के कहा हे यिसू अतिमहान परमेश्वर के पुत्र तुझ से मुझे क्या काम; मैं तुझे परमेश्वर की किरिया देता हूं कि मुझे न सता। क्योंकि उस ने उस से कहा हे अप- ८
वित्र आत्मा इस मनुष्य से निकल जा। फिर उस ने उस ९
से पूछा तेरा नाम क्या है; उस ने उत्तर दिया कि मेरा नाम सेना है क्योंकि हम बहुत हैं। और उस ने उस १०
से बड़ी बिन्ती किई कि हम को इस देश से मत नि-
काल। और वहां पहाड़ों के निकट सूअरों का बड़ा ११
झुंड चरते थे। तब सब पिशाचों ने उस की बिन्ती कर- १२
के कहा हम को उन सूअरों के पास भेज कि हम उन में पैठें। यिसू ने तुरन्त उन्हें जाने दिया और वे अप- १३
वित्र आत्मा निकलके सूअरों में पैठे और वह झुंड जो दो सहस्र के लगभग थे सो कड़ाड़े पर से समुद्र में कूद पड़े और समुद्र में डूब मरे। और सूअरों के चर- १४
वाहे भागे और नगर और गांवों में इस का समाचार सुनाया; तब जो हुआ था उस को देखने को लोग निकले। और यिसू पास आकर उस पिशाचग्रस्त को १५
जिसे पिशाचों की सेना लगी थी बैठे और वस्त्र पहिने सज्ञान देखा और डर गये। और जिन्हों ने यह १६
देखा था उन्हों ने जो कुछ उस पिशाचग्रस्त पर और सूअरों के विषय में हुआ था सो सब उन को कह दिया। तब वे उस से बिन्ती करने लगे कि हमारे १७
सिवानों से निकल जा। जब वह नाव पर चढ़ा तब १८
जो मनुष्य आगे पिशाचग्रस्त था उस ने उस से बिन्ती

१९ किई कि मैं तेरे संग रहूं। पर यिसू ने उस को रहने न दिया परन्तु उस से कहा अपने घर को अपने कुटुम्बों के पास जा और उन से कह दे कि प्रभु ने तुझ
२० पर दया करके तुझ से कैसे बड़े काम किये हैं। तब वह गया और जो बड़े काम यिसू ने उस के लिये किये थे सो दिकापोलिस में प्रचार करने लगा और सभों ने अचंभा किया।

२१ और जब यिसू नाव पर फिर उस पार आया तब बहुत लोग उस पास एकट्ठे हुए और वह समुद्र के
२२ तीर पर था। और देखो याइरस नाम मण्डली का एक प्रधान आया और उस को देखकर उस के पांवों
२३ पर गिरा। और उस से बहुत बिन्ती करके कहा मेरी छोटी बेटी मरने पर है; आ और उसे चंगा कर-
२४ ने के लिये उस पर हाथ रख तो वह जीयेगी। तब वह उस के संग गया और बहुत से लोग उस के पीछे हो लिये और उस पर भीड़ किई।

२५ और एक स्त्री जिस को बारह बरस से लोहू बहने
२६ का रोग था। और बहुत वैद्यों से बहुत दुःख उठाके अपना सब धन उठा चुकी तो भी कुछ चंगी न हुई
२७ परन्तु अधिक रोगी हुई थी। तिस ने यिसू का नाम सुनके उस भीड़ में उस के पीछे से आई और उस
२८ के बस्त्र को छू लिया। क्योंकि उस ने कहा यदि मैं केवल उस के बस्त्र को छूऊं तो चंगी हो जाऊंगी।
२९ और तुरन्त उस के लोहू का सोता सूख गया और उस

ने अपनी देह में जान लिया कि उस रोग से मैं चंगी हुई हूं। यिसू ने तुरन्त अपने में जाना कि मुझ में से शक्ति निकली है और भीड़ की ओर फिरके कहा मेरे बस्त्र को किस ने छूआ। उस के शिष्यों ने उस से कहा तू देखता है कि लोग तुझ पर गिरे पड़ते हैं फिर तू क्या कहता है किस ने मुझे छूआ। तब उस ने चारों ओर दृष्टि किई कि जिस ने यह काम किया था उसे देखे। और वह स्त्री जो उस पर हुआ था सो जानकर डरती और कांपती हुई आई और उस के आगे गिर के उस को सब कुछ सच सच कह दिया। उस ने उस से कहा हे पुत्री तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है कुशल से जा और अपने रोग से चंगी रह। ३० ३१ ३२ ३३ ३४

वह बोलता ही था कि मण्डली के प्रधान के यहां से लोगों ने आके कहा तेरी बेटी मर गई है तू गुरु को और दुःख क्यों देता है। यिसू ने जो बात वे कह रहे थे सो सुनके तुरन्त मण्डली के प्रधान से कहा मत डर केवल बिश्वास कर। तब उस ने पथरस और याकूब और उस के भाई यूहन्ना को छोड़ और किसी को अपने संग जाने नहीं दिया। और मण्डली के प्रधान के घर में आकर लोगों को धूम मचाते और रोते और चिल्लाते देखा। और भीतर जाके उन से कहा तुम क्यों धूम मचाते और रोते हो; कन्या मरी नहीं परन्तु सोती है। वे उस पर हंसे परन्तु ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४०

उस ने सब को बाहर किया और कन्या के माता पिता को और अपने संगियों को लेकर जहां कन्या पड़ी
४१ थी भीतर गया। और उस ने कन्या का हाथ पकड़के उस से कहा तालीता कूमी अर्थात हे कन्या मैं तुझ
४२ से कहता हूं उठ। और कन्या तुरन्त उठी और फिरने लगी क्योंकि वह बारह बरस की थी और वे अत्यन्त
४३ बिस्मित हुए। तब उस ने उन्हें दृढ़ आज्ञा दिई कि इस बात को कोई जानने न पावे और कहा कि उसे कुछ खाने को देवें।

६ पर्ब्ब

फिर वह वहां से चला और अपने देश में आया
२ और उस के शिष्य उस के पीछे हो लिये। और जब बिश्राम का दिन आया तब वह मण्डली में उपदेश करने लगा और बहुत लोग सुनके अचंभित होके कहने लगे ये बातें उस को कहां से मिलीं और यह कौनसा ज्ञान है जो उसे दिया गया है कि ऐसे आश्चर्य्य
३ कर्म्म उस के हाथों से किये जाते हैं। क्या यह बढ़ई नहीं है मरियम का पुत्र और याकूब और यूसी और यहूदाह और समऊन का भाई; और क्या उस की बहिनें यहां हमारे पास नहीं हैं; और उन्हों ने उस
४ के विषय में ठोकर खाई। तब यिसू ने उन से कहा भविष्यतवक्ता अपने देश और अपने कुटुम्ब और अपने
५ घर को छोड़ और कहीं निरादर नहीं होता है। और वह वहां कोई आश्चर्य्य कर्म्म नहीं कर सका केवल थोड़े रोगियों पर हाथ रखके उन्हें चंगा किया।

ओर उस ने उन के अविश्वास से अचंभा किया ओर चारों ओर के गांवों में उपदेश करता फिरा। ६

तब उस ने उन बारहों को बुलाया ओर उन्हें दो दो करके भेजने लगा ओर उन्हें अपवित्र आत्माओं पर अधिकार दिया। ओर उन्हें आज्ञा किई कि यात्रा के लिये लाठी बिना कुछ मत लेओ न झोली न रोटी न बटुवे में पैसे। परन्तु जूते पहिनो ओर दो अंगे मत पहिनो। ओर उस ने उन से कहा जहां कहीं तुम किसी घर में प्रवेश करो जब लों वहां से न निकलो तब लों वहीं रहो। ओर जो कोई तुम्हें ग्रहण न करे ओर तुम्हारी न सुने तो जब तुम वहां से निकलो तब अपने पांवों के नीचे की धूल झाड़ डालो कि उन पर साची होय; मैं तुम से सच कहता हूं कि बिचार के दिन उस नगर की दशा से सदूम ओर अमूरः की दशा सहज होगी। ७ ८ ९ १० ११

ओर उन्हों ने जाके यह उपदेश किया कि मन फिराओ। ओर बहुत से पिशाचों को निकाला ओर बहुत रोगियों पर तेल मलके उन्हें चंगा किया। १२ १३

ओर हेरोदेस राजा ने यिसू के विषय में सुना (क्योंकि उस का नाम प्रसिद्ध हुआ था) ओर कहा यूहन्ना बपतिसमा देनेवाला मृतकों में से जी उठा है इस लिये आश्चर्य्य कर्म्म उस से किये जाते हैं। ओरों ने कहा यह तो इलियाह है फिर ओरों ने कहा वह भविष्यतवक्ता है अथवा भविष्यतवक्ताओं में से १४ १५

१६ एक के समान है। परन्तु हेरोदेस ने सुनके कहा यूहन्ना जिस का सिर मैं ने कटवाया सो यही है कि वह मृतकों में से जी उठा है।

१७ क्योंकि हेरोदेस ने अपने भाई फिलिप की पत्नी हेरोदिया के कारण कि जिस से उस ने बिवाह किया था लोगों को भेजके यूहन्ना को पकड़वाया और
१८ बन्दीगृह में बन्द किया था। क्योंकि यूहन्ना ने हेरोदेस से कहा था अपने भाई की पत्नी को रखना तुझे
१९ उचित नहीं है। इस कारण हेरोदिया उस से बैर रखती और उसे मार डालने चाहती थी परन्तु न
२० सकती थी। क्योंकि हेरोदेस यूहन्ना को सज्जन और पवित्र पुरुष जानकर उस से डरता था और उस की रक्षा करता था और उस की सुनके बहुत सी बातों
२१ पर चलता और आनन्द से उस की सुनता था। और जब अवसर का दिन आया कि हेरोदेस ने अपने जन्मदिन में अपने बड़ों और सेनापतियों और गलील
२२ के प्रधानों के लिये जेवनार बनाई। और जब हेरोदिया की पुत्री भीतर आई और नाचके हेरोदेस को और उस के संग बैठनेहारों को प्रसन्न किया तब राजा ने कन्या से कहा जो कुछ तू चाहे सो मुझ से मांग
२३ और मैं तुझे देऊंगा। और उस ने उस से किरिया खाई कि मेरे आधे राज्य लों जो कुछ तू मुझ से मांगे-
२४ गी मैं वह देऊंगा। तब उस ने बाहर जाके अपनी माता से पूछा मैं क्या मांगूं; वह बोली यूहन्ना बप-

तिसमा देनेवाले का सिर। तब वह तुरन्त उतावली २५
से राजा के पास आई और उस से बिन्ती करके बोली
मैं चाहती हूं कि तू यूहन्ना बपतिसमा देनेवाले का
सिर थाल पर अभी मुझे दे। राजा बहुत शोकित २६
हुआ परन्तु अपनी किरिया के और संग बैठनेहारों
के कारण उसे टालने न चाहा। तब राजा ने तुरन्त २७
पहरूए को भेजकर यूहन्ना का सिर लाने की आज्ञा
किई; उस ने जाके बन्दीगृह में उस का सिर काटा।
और उस का सिर थाल पर लाके कन्या को दिया २८
और कन्या ने उसे अपनी माता को दिया। उस के २९
शिष्य यह सुनके आये और उस की लोथ को उठाके
कबर में रखा।

प्रेरितों ने यिसू के पास एकट्ठे होके जो कुछ उन्हों ३०
ने किया और सिखाया था सब बातें उसे कह दिईं।
तब उस ने उन से कहा तुम एकान्त में सूने स्थान को ३१
चलो और तनिक सस्ताओ क्योंकि बहुत लोग आते
जाते थे और उन्हें भोजन करने का भी अवकाश न
मिला। सो वे नाव पर चढ़के सूने स्थान को एकान्त ३२
में गये। पर लोगों ने उन्हें जाते देखा और बहुतेरों ३३
ने उसे चीन्हा और सब नगरों में से पांव पांव उधर
दौड़े और उन से आगे जा पहुंचे और उस पास एकट्ठे
हुए। तब यिसू ने निकलकर बहुत से लोगों को देखा ३४
और उन पर दयाल हुआ क्योंकि वे बिन गड़रिये के

भेड़ों के समान थे और वह उन्हें बहुत सा उपदेश देने लगा।

३५ जब दिन बहुत ढल गया तब उस के शिष्यों ने उस ३६ पास आके कहा यह तो सूना स्थान है। और दिन बहुत ढल गया है उन्हें बिदा कर कि वे चारों ओर के गांवों और बस्तियों में जाके अपने लिये रोटी मोल लेवें क्योंकि उन के पास कुछ खाने को नहीं है। ३७ उस ने उन्हें उत्तर देके कहा तुम ही उन्हें खाने को देओ तब उन्हों ने उस से कहा क्या हम जाके दो सौ सूकियों की रोटी मोल लेवें और उन्हें खाने को देवें। ३८ उस ने उन से कहा तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं; जाके देखो; उन्हों ने बूझके कहा पांच रोटियां और ३९ दो मछलियां। उस ने उन्हें आज्ञा दिई कि उन सभों ४० को हरी घास पर पांती पांती करके बैठाओ। तब वे सौ सौ और पचास पचास की पांतियां बांधके बैठ ४१ गये। और उस ने उन पांच रोटियों और दो मछलियों को लेके स्वर्ग की ओर देखके धन्यवाद किया और रोटियां तोड़के अपने शिष्यों को दिईं कि उन के आगे रखें और वे दो मछलियां भी उन सभों में ४२ बांटीं। वे सब खाके तृप्त हुए। और उन्हों ने रोटि- ४३ यों के टुकड़ों से बारह टोकरियां भरके उठाईं और कुछ मछलियों से भी उठाईं। ४४ और जिन्हों ने रोटी खाई थीं सो पांच सहस्र पुरुषों के लगभग थे।

४५ और तुरन्त उस ने शिष्यों को आज्ञा किई कि जब

लों मैं लोगों को बिदा करूं तब लों तुम लोग नाव पर चढ़के आगे उस पार बैतसैदा को जाओ। ४६ और उन्हें बिदा करके वह आप प्रार्थना करने को एक पहाड़ पर गया। ४७ और जब सांझ ऊई तब नाव समुद्र के बीच में थी और आप भूमि पर अकेला था। ४८ और उस ने उन्हें खेवने में परिश्रम करते देखा क्योंकि बयार उन के संमुख की थी; तब रात के चौथे पहर में वह समुद्र पर चलते ऊए उन के पास आया और उन के पास से होके निकला चाहता था। ४९ जब उन्हों ने उस को समुद्र पर चलते देखा तो समझा कि प्रेत है और चिल्ला उठे। ५० क्योंकि वे सब उस को देखके घबरा गये; वह तुरन्त उन से बोला और उन से कहा सुस्थिर होओ मैं हूं डरो मत। ५१ तब वह उन के पास नाव पर चढ़ा और बयार थम गई और उन्हों ने अपने मनों में अत्यन्त बिस्मित होके अचंभा किया। ५२ इस लिये कि उन रोटियों के आश्चर्य्य कर्म्म से उन्हें ज्ञान न ऊआ था क्योंकि उन के मन कठोर थे।

५३ और वे पार उतरके गिन्नेसरत के देश में आये ५४ और लगान किया। और जब वे नाव पर से उतर ५५ आये तब तुरन्त लोगों ने उसे चीन्हा। और उस देश को चारों ओर दौड़े और रोगियों को खाटों पर उठाके जहां सुना कि वह है तहां ले जाने लगे। ५६ और जहां कहीं उस ने बस्तियों अथवा नगरों अथवा गांवों में प्रवेश किया तहां उन्हों ने रोगियों को मार्गों

में रखके उस से बिन्ती किई कि वे केवल उस के वस्त्र के आंचल को छूने पावें और जितनों ने उस को छूआ सो चंगे हो गये ॥

७ पर्ब्ब

तब फरीसी और कितने अध्यापक जो यरूसलम २ से आये थे उस पास एकट्ठे हुए। जब उन्हों ने उस के शिष्यों को अशुद्ध अर्थात बिन धोये हाथों से रोटी ३ खाते देखा तब उन पर दोष दिया। क्योंकि फरीसी और सब यहूदी लोग प्राचीनों के व्यवहारों पर चल-के जब लों अपने हाथ मलके न धो लें तब लों नहीं ४ खाते हैं। और हाट से आके जब लों स्नान न करें तब लों नहीं खाते हैं और बहुतेरी और बातें हैं कि जिन को उन्हों ने मानने के लिये ग्रहण किया है जैसे कि कटोरों और थालियों और ताम्बे के बर्त्तनों और खा-५ टों का धोना। तब फरीसियों और अध्यापकों ने उस से पूछा कि तेरे शिष्य लोग प्राचीनों के व्यवहारों पर क्यों ६ नहीं चलते पर बिन धोये हाथों से रोटी खाते हैं। उस ने उन्हें उत्तर देके कहा यसइयाह ने तुम कपटियों के विषय में भविष्यवाणी अच्छी कही जैसा लिखा है कि ये लोग होंठों से मेरा संमान करते हैं परन्तु ७ उन का मन मुझ से दूर रहता है। पर वे वृथा मेरी उपासना करते हैं क्योंकि मनुष्यों की आज्ञाओं को ८ वे धर्म्मोपदेश ठहराके सिखाते हैं। क्योंकि परमेश्वर की आज्ञा को छोड़के तुम मनुष्यों के व्यवहार जैसे थालियों और कटोरों का धोना मानते हो और ऐसे

ऐसे बहुत और काम करते हो। और उस ने उन से कहा तुम अच्छी रीति से परमेश्वर की आज्ञा को टालके अपने ही व्यवहार पालन करते हो। क्योंकि मूसा ने कहा अपने माता पिता का संमान कर और जो कोई माता अथवा पिता की निन्दा करे सो मार डाला जाय। परन्तु तुम कहते हो कि यदि कोई अपनी माता अथवा पिता से कहे कि जो कुछ तुझ को मुझ से मिलता सो कुर्बान हुआ अर्थात वह भेंट दिई गई है तो भला। और आगे को तुम उसे उस की माता अथवा उस के पिता के लिये कुछ करने नहीं देते हो। सो अपने व्यवहारों से जिन को तुम ही ने ठहराया है तुम परमेश्वर के बचन को उठा देते हो और ऐसे ऐसे बहुत काम करते हो। ९ १० ११ १२ १३

फिर सब लोगों को पास बुलाके उस ने उन से कहा तुम सब मेरी सुनो और समझो। मनुष्य के बाहर ऐसा कुछ नहीं जो उस में समाके उस को अपवित्र कर सके परन्तु जो उस में से निकलता है सो ही मनुष्य को अपवित्र करता है। यदि किसी को सुनने के कान हों तो सुने। जब वह लोगों के पास से घर में आया तब उस के शिष्यों ने इस दृष्टान्त के विषय में उस से पूछा। तब उस ने उन से कहा क्या तुम भी ऐसे नासमझ हो; क्या तुम नहीं बूझते हो कि जो कुछ बाहर से मनुष्य में समाता है सो उसे अपवित्र नहीं कर सकता है। इस लिये कि वह १४ १५ १६ १७ १८ १९

उस के मन में नहीं परन्तु पेट में समाता है और वहां से भोजन का मल गढ़े में गिरता है और यों
२० सब भोजन शुद्ध होता है। फिर उस ने कहा जो कुछ मनुष्य में से निकलता है सो मनुष्य को अपवित्र करता
२१ है। क्योंकि भीतर से अर्थात मनुष्य के मन में से बुरी
२२ चिन्ता परस्त्रीगमन व्यभिचार हत्या। चोरी लोभ दुष्टता छल लुचपन कुदृष्टि परमेश्वर की निन्दा अभि-
२३ मान अज्ञानता निकलते हैं। ये सब बुरी बातें भीतर से निकलती और मनुष्य को अपवित्र करती हैं।

२४ फिर वहां से उठके वह सूर और सैदा के सिवानों में गया और एक घर में प्रवेश करके चाहा कि
२५ कोई न जाने परन्तु वह छिप न सका। क्योंकि एक स्त्री जिस की बेटी को अपवित्र आत्मा लगा था उस का
२६ नाम सुनकर आई और उस के पांवों पर गिरी। वह सूरोफैनीकिया देश की यूनानी स्त्री थी; उस ने उस से बिन्ती किई कि उस की बेटी से पिशाच को निकाले।
२७ परन्तु यिसू ने उस से कहा बालकों को पहिले तृप्त होने दे क्योंकि बालकों की रोटी लेके कुत्तों के आगे
२८ फेंकना अच्छा नहीं है। उस ने उत्तर देके कहा सच हे प्रभु तथापि कुत्ते मंच के नीचे बालकों के चूरचार
२९ खाते हैं। उस ने उस से कहा इस बात के कारण
३० चली जा पिशाच तेरी बेटी से निकल गया है। और जब वह अपने घर में पहुंची तो क्या देखा कि पिशाच निकल गया और बेटी खाट पर लेटी ऊई है।

फिर वह सूर और सैदा के सिवानों से निकलके दिकापोलिस के सिवानों के बीच में होके गलील के समुद्र की ओर आया। तब लोग एक बहिरे और तोतले मनुष्य को उस पास लाये और उस से बिन्ती किई कि उस पर हाथ रखे। वह उस को भीड़ में से एकान्त ले गया और अपनी उंगलियां उस के कानों में डालीं और थूकके उस की जीभ को छूआ। और स्वर्ग की ओर देखके आह खींची और उस से कहा एप्फतह अर्थात खुल जा। वोंहीं उस के कान खुल गये और उस की जीभ का बंधन भी खुल गया और वह ठीक बोलने लगा। और उस ने उन्हें आज्ञा किई कि किसी से न कहें परन्तु जितना उस ने उन्हें बर्जा उतना अधिक उन्हों ने प्रचार किया। और उन्हों ने अत्यन्त अचंभित होके कहा उस ने सब कुछ अच्छा किया है वह बहिरों को सुनने की और गूंगों को बोलने की शक्ति देता है॥ ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७

८ पर्व्व

उन दिनों में जब बड़ी भीड़ एकट्ठी हुई और उन के पास कुछ खाने को नहीं था तब यिसू ने अपने शिष्यों को अपने पास बुलाकर उन से कहा। इन लोगों पर मुझे दया आती है क्योंकि वे तीन दिन से मेरे संग रहे हैं और उन के पास कुछ खाने को नहीं है। यदि मैं उन्हें भोजन बिना घर जाने को बिदा करूं तो वे मार्ग में निर्बल हो जावेंगे क्योंकि उन में से कितने तो दूर से आये हैं। उस के शिष्यों ने उसे २ ३ ४

उत्तर दिया कहां से कोई इस बन में रोटी पावे कि
५ इन लोगों को तृप्त करे। उस ने उन से पूछा तुम्हारे
६ पास कितनी रोटियां हैं; वे बोले सात। तब उस ने
लोगों को भूमि पर बैठ जाने की आज्ञा किई और
उस ने उन सात रोटियों को लेकर धन्य मानके तोड़ा
और अपने शिष्यों को दिया कि उन के आगे रखें
७ और उन्हों ने लोगों के आगे रखा। और उन के पास
थोड़ी सी छोटी मछलियां थीं; उस ने धन्यवाद करके
८ आज्ञा किई कि उन्हें भी उन के आगे रखें। सो वे खाके
तृप्त हुए और जो टुकड़े बच रहे थे उन्हों ने उन से
९ सात टोकरियां भरके उठाईं। और जिन्हों ने भोजन
किया था सो चार सहस्र के लगभग थे और उस ने
उन्हें बिदा किया।

१० और तुरन्त अपने शिष्यों के संग नाव पर चढ़के
११ वह दलमनूथा के सिवानों में आया। तब फरीसी
लोग निकले और उस से बिबाद करके उस की परी-
क्षा करने के लिये उस से आकाश का एक चिन्ह
१२ चाहा। उस ने अपने मन में आह खींचके कहा इस
समय के लोग किस कारण चिन्ह ढूंढते हैं; मैं तुम
से सच कहता हूं कि इस समय के लोगों को कोई
१३ चिन्ह दिया नहीं जायगा। और वह उन्हें छोड़कर
फिर नाव पर चढ़के उस पार चला गया।

१४ और शिष्य लोग रोटी लेने को भूल गये थे और
१५ उन के पास नाव पर एक रोटी से अधिक न थी। और

उस ने उन्हें आज्ञा किई कि देखो फरीसियों के खमीर से और हेरोदेस के खमीर से परे रहो। तब वे आपस में बिचार करके कहने लगे कि हमारे पास रोटी नहीं है इस लिये वह यह बात कहता है। यिसू ने यह जानके उन से कहा तुम क्यों बिचार करते हो कि यह हमारे पास रोटी न होने के कारण है क्या तुम अब लों नहीं जानते और नहीं समझते हो; क्या तुम्हारा मन अब लों कठोर है। क्या आंखें रहते हुए तुम नहीं देखते और कान रहते हुए तुम नहीं सुनते हो और क्या तुम नहीं चेतते हो। जब मैं ने पांच रोटियां पांच सहस्रों के लिये तोड़ीं तब तुम ने टुकड़ों से कितनी टोकरियां भरकर उठाईं; वे बोले बारह। फिर जब चार सहस्रों के लिये सात रोटियां तोड़ीं तब तुम ने टुकड़ों से कितनी टोकरियां भर-कर उठाईं; वे बोले सात। तब उस ने उन से कहा फिर तुम क्यों नहीं समझते हो। | १६ १७ १८ १९ २० २१

फिर वह बैतसैदा में आया और लोग एक अन्धे को उस पास लाये और उस से बिन्ती किई कि उसे छूवे। और वह उस अन्धे का हाथ पकड़के उसे नगर के बाहर ले गया और उस की आंखों पर थूकके उस पर हाथ रखके उस से पूछा क्या तू कुछ देखता है। उस ने आंख उठाके कहा मैं वृक्षों के ऐसे मनुष्यों को फिरते देखता हूं। तब उस ने फिर उस की आंखों पर हाथ रखा और फिर उस से आंखें उठवाईं और वह | २२ २३ २४ २५

२६ चंगा हो गया और सब को फरछाई से देखा। और उस ने उसे यह कहके घर भेजा कि नगर में मत जा और नगर में किसी से मत कह।

२७ तब यिसू और उस के शिष्य कैसरिया फिलिपी के गांवों में गये और मार्ग में उस ने अपने शिष्यों से

२८ पूछा लोग क्या कहते हैं मैं कौन हूं। उन्हों ने उत्तर दिया कि यूहन्ना बपतिसमा देनेवाला और कितने कि इलियाह और कितने कि भविष्यतवक्ताओं में से

२९ एक है। उस ने उन से कहा फिर तुम क्या कहते हो मैं कौन हूं; पथरस ने उत्तर देके कहा तू मसीह

३० है। तब उस ने उन्हें आज्ञा किई मेरे विषय में किसी से मत कहो।

३१ तब वह उन्हें बताने लगा कि मनुष्य के पुत्र को अवश्य है कि बहुत दुःख उठावे और प्राचीनों और प्रधान याजकों और अध्यापकों से तुच्छ किया जाय और मार डाला जाय और तीन दिन के पीछे जी उठे।

३२ उस ने यह बात खोलके कही; तब पथरस उसे लेके

३३ उस को डांटने लगा। परन्तु उस ने घूमके अपने शिष्यों की ओर दृष्ट करके पथरस को डांटकर कहा हे शैतान मेरे साम्हने से दूर हो क्योंकि परमेश्वर की बातें नहीं परन्तु मनुष्य की बातें तुझे सुहाती हैं।

३४ और उस ने शिष्यों के संग लोगों को पास बुलाया और उन से कहा जो कोई मेरे पीछे आया चाहे सो अपनी इच्छा को मारे और अपना क्रूस उठावे और

मेरे पीछे आवे। क्योंकि जो कोई अपने प्राण को | ३५
बचाने चाहेगा सो उसे खोवेगा परन्तु जो कोई मेरे
और मंगल समाचार के कारण अपने प्राण को खोवे-
गा सो उसे बचावेगा। क्योंकि यदि मनुष्य समस्त जगत | ३६
को प्राप्त करे और अपने प्राण को गंवावे तो उस को
क्या लाभ होगा। अथवा मनुष्य अपने प्राण के सन्ते | ३७
क्या देगा। इस कारण जो कोई इस समय के परस्त्री- | ३८
गामी और पापी लोगों के बीच में मुझ से और मेरी
बातों से लजावेगा मनुष्य का पुत्र जब वह अपने पिता
के ऐश्वर्य्य में पवित्र दूतों के संग आवेगा तब उस से भी
लजावेगा॥

९ पर्ब्ब

उस ने उन से कहा मैं तुम से सच कहता हूं जो यहां
खड़े हैं उन में कोई कोई हैं कि जब लों परमेश्वर का
राज्य पराक्रम से आते न देखें तब लों वे मृत्यु का स्वाद
न चीखेंगे।

छः दिन के पीछे यिसू पथरस और याकूब और यू- | २
हन्ना को लेके उन्हें एकान्त में एक ऊंचे पहाड़ पर ले
गया और उन के आगे उस का रूप बदल गया। और | ३
उस का बस्त्र चमका और पाला की नाईं बहुत ही
उजला हो गया कि वैसा कोई धोबी पृथिवी पर उज-
ला नहीं कर सकता है। और मूसा के संग इलियाह | ४
उन को दिखाई दिया और वे यिसू के संग वार्त्ता करते
थे। पथरस ने यिसू से कहा हे गुरु हमारा यहां रह- | ५
ना अच्छा है हम तीन डेरे बनावें एक तेरे लिये एक

६ मूसा के लिये और एक इलियाह के लिये। परन्तु वह न जानता था कि क्या कहता क्योंकि वे बहुत डर
७ गये थे। तब एक मेघ ने उन पर छाया किई और उस मेघ से एक शब्द यह कहते हुआ यह मेरा प्रिय पुत्र
८ है उस को सुनो। और अचानक उन्हों ने चारों ओर दृष्टि किई तो क्या देखा कि यिसू बिना और कोई हमारे संग नहीं है।

९ जब वे पहाड़ से उतरते थे तब उस ने उन्हें आज्ञा किई कि जब लों मनुष्य का पुत्र मृतकों में से जी न उठे तब लों जो तुम ने देखा है सो किसी से मत कहो।
१० और वे यह बात अपने ही में रखके आपस में चर्चा करते थे कि मृतकों में से जी उठने का अर्थ क्या है।

११ फिर उन्हों ने उस से पूछा कि अध्यापक लोग किस कारण कहते हैं कि पहिले इलियाह का आना
१२ अवश्य है। उस ने उत्तर देके उन से कहा इलियाह तो आवेगा ठीक और सब कुछ सुधारेगा और जैसा मनुष्य के पुत्र के विषय में लिखा है वह बहुत दुःख
१३ उठावेगा और तुच्छ किया जायगा। परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि इलियाह आ चुका है और उन्हों ने उस के विषय के लिखे के समान जो कुछ चाहा सो उस से किया।

१४ और जब वह शिष्यों के पास आया तो क्या देखा कि उन की चारों ओर बड़ी भीड़ है और अध्यापक लोग
१५ उन से बिवाद कर रहे हैं। तब सब लोग उस को

देखते ही बिस्मित होकर उस के पास दौड़े आये और उस से प्रणाम किया। १६ उस ने अध्यापकों से पूछा तुम उन से क्या बिबाद करते हो। १७ तब भीड़ में से एक ने उत्तर देके कहा हे गुरु मैं अपने पुत्र को जिसे गूंगा पिशाच लगा है तेरे पास लाया हूं। १८ जहां वह उसे पकड़ता है तहां पटकता है और वह मुंह से फेन बहाता और अपने दांत किचकिचाता और वह सूख जाता है और मैं ने तेरे शिष्यों से कहा कि उसे निकालें पर वे न सके। १९ उस ने उत्तर देके उस से कहा हे अबिश्वासी लोगो। मैं कब लों तुम्हारे संग रहूं और मैं कब लों तुम्हारी सहूं; उस को मेरे पास लाओ। २० वे उस को उस पास लाये और पिशाच ने जों उसे देखा तो झट बालक को मरोड़ा और वह भूमि पर गिरा और मुंह से फेन बहाके लोटने लगा। २१ और उस ने उस के पिता से पूछा कितने दिनों से यह उस पर ज़ुआ; २२ वह बोला लड़कपन से। पिशाच ने उसे नाश करने को बारबार उस को आग में और पानी में गिराया है परन्तु यदि तू कुछ कर सके तो हम पर दयाल होके हमारी सहाय कर। २३ यिसू ने उस से कहा जो तू बिश्वास करता तो हो सकता कि बिश्वास करनेवाले के लिये सब कुछ हो सकता है। २४ तब उस बालक का पिता तुरन्त पुकारके आंसू बहाके बोला हे प्रभु मैं बिश्वास करता हूं मेरे अबिश्वास का उपकार कर। २५ जब यिसू ने देखा कि बज़त लोग दौड़े आ-

के एकट्ठे होते हैं तब उस ने अपवित्र आत्मा को डांट-
के उस से कहा हे गूंगे बहिरे पिशाच मैं तुझे आज्ञा
देता हूं कि उस में से निकल आ और उस में फिर
२६ कभी मत पैठ। तब वह चिल्लाकर और बालक को
बहुत मरोड़कर निकल आया और बालक यहां लों
मृतक के समान हो गया कि बहुतों ने कहा वह तो
२७ मर गया। परन्तु यिसू ने उस का हाथ पकड़के उसे
२८ उठाया और वह उठ खड़ा हुआ। जब वह घर में
आया उस के शिष्यों ने निराले में उस से पूछा हम
२९ उस को क्यों नहीं निकाल सके। उस ने उन से कहा
यह जाति केवल प्रार्थना और उपवास से निकाली
जाती और और किसी रीति से नहीं निकलती है।

३० फिर वे वहां से चले और गलील में होके निकल
३१ गये और वह नहीं चाहता था कि कोई जाने। क्योंकि
उस ने अपने शिष्यों को उपदेश किया और उन से
कहा मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथों में पकड़वाया
जाता है और वे उस को मार डालेंगे और वह मरके
३२ तीसरे दिन जी उठेगा। परन्तु उन्हों ने यह बात न
समझी और उस से पूछने को डरे।

३३ फिर वह कफरनहूम में आया और घर में होते
हुए उन से पूछा मार्ग में तुम आपस में किस बात का
३४ विचार करते थे। परन्तु वे चुप रहे क्योंकि मार्ग में
वे आपस में इस का बिचार करते थे कि हम में से
३५ बड़ा कौन है। तब उस ने बैठकर उन बारहों को

बुलाया और उन से कहा यदि कोई प्रधान हुआ चाहे तो वह सभों से छोटा और सभों का सेवक होगा। और उस ने एक बालक को लेकर उन के बीच में खड़ा किया और उसे गोदी में लेके उन से कहा। जो कोई ऐसे बालकों में से एक को मेरे नाम से ग्रहण करे वह मुझे ग्रहण करता है और जो कोई मुझ को ग्रहण करे वह मुझे नहीं परन्तु मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है। ३६ ३७

तब यूहन्ना ने उस को उत्तर दिया हे गुरु हम ने एक मनुष्य को तेरे नाम से पिशाचों को निकालते देखा और वह हमारे पीछे नहीं आता है सो हम ने उसे बर्जा क्योंकि वह हमारे पीछे नहीं आता है। तब यिसू ने कहा उसे मत बर्जो क्योंकि कोई नहीं है जो मेरे नाम से आश्चर्य्य कर्म्म करे और वोंहीं मुझे बुरा कह सके। क्योंकि जो हमारे बिरुद्ध नहीं है सो हमारी ओर है। पर जो कोई मेरे नाम से तुम्हें एक कटोरा पानी इस कारण पिलावे कि तुम मसीह के लोग हो मैं तुम से सच कहता हूं कि वह अपना फल नहीं खोवेगा। और जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर बिश्वास रखते हैं एक को ठोकर खिलावे उस के लिये भला होता कि चक्की का पाट उस के गले में बांधा जाता और वह समुद्र में फेंका जाता। यदि तेरा हाथ तुझे ठोकर खिलावे तो उसे काट डाल क्योंकि टुण्डा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३

लिये इस से भला है कि दो हाथ रहते हुए तू नरक में अर्थात उस आग में जो कधी नहीं बुझती डाला जावे। ४४ वहां उन का कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती। ४५ और यदि तेरा पांव तुझे ठोकर खिलावे तो उसे काट डाल क्योंकि लंगड़ा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है कि दो पांव रहते हुए तू नरक में अर्थात उस आग में जो कधी नहीं बुझती डाला जावे। ४६ वहां उन का कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती। ४७ और यदि तेरी आंख तुझे ठोकर खिलावे तो उसे निकाल डाल क्योंकि काणा होकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है कि दो आंखें रहते हुए तू नरक की आग में डाला जावे। ४८ वहां उन का कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती। ४९ क्योंकि हर एक आग से लोणा किया जायगा और हर एक बलि लोण से लोणा किया जायगा। ५० लोण अच्छा है परन्तु यदि लोण का लोणापन जाता रहे तो किस से उस को स्वादित करोगे; आप में लोण रखो और आपस में मिले रहो॥

१० पर्व्व

फिर वह वहां से उठकर यर्दन के उस पार यहूदाह के सिवानों में आया और बहुत लोग उस पास फिर एकट्ठे हुए और वह अपने व्यवहार पर उन्हें फिर उपदेश देने लगा।

२ तब फरीसियों ने उस पास आके उस की परीक्षा

करने को उस से पूछा क्या पुरुष को अपनी पत्नी
त्यागना उचित है। उस ने उत्तर देके उन से कहा ३
मूसा ने तुम्हें क्या आज्ञा दिई। वे बोले मूसा ने कहा ४
कि त्यागपत्र लिखे और उसे त्याग दे। तब यिसू ने ५
उत्तर देके उन से कहा उस ने तुम्हारे मन की
कठोरता के कारण तुम्हें यह आज्ञा लिखी। परन्तु ६
सृष्टि के आरंभ से परमेश्वर ने उन्हें नर और नारी
उत्पन्न किया। इस कारण पुरुष अपने माता पिता ७
को छोड़ेगा और अपनी पत्नी से मिला रहेगा। और ८
वे दोनों एक तन होंगे सो वे आगे दो नहीं परन्तु
एक तन हैं। इस लिये जो कुछ परमेश्वर ने जोड़ा है ९
उसे मनुष्य अलग न करे। और घर में उस के शिष्यों ने १०
इस बात के विषय में फिर उस से पूछा। उस ने उन से ११
कहा जो कोई अपनी पत्नी को त्याग दे और दूसरी से
बिवाह करे सो उस के विरुद्ध व्यभिचार करता है।
और यदि स्त्री अपने पति को त्यागे और दूसरे से बि- १२
वाह करे तो वह व्यभिचार करती है।

फिर लोग बालकों को उस पास लाये कि वह उन्हें १३
छूवे पर शिष्यों ने लानेवालों को डांटा। यिसू यह १४
देखकर अप्रसन्न हुआ और उन से कहा बालकों को
मेरे पास आने दो और उन्हें मत बर्जो क्योंकि परमे-
श्वर का राज्य ऐसों का है। मैं तुम से सच कहता हूं जो १५
कोई छोटे बालक के समान परमेश्वर के राज्य को
ग्रहण न करे वह उस में प्रवेश न करेगा। और उस १६

ने उन्हें गोदी में लिया और उन पर हाथ रखके उन्हें आशीस दिई।

१७ और जब वह मार्ग में जाता था एक मनुष्य उस पास दौड़ा आया और उस के आगे घुटने टेकके उस से पूछा हे उत्तम गुरु मैं क्या करूं कि अनन्त जीवन

१८ का अधिकारी होऊं। यिसू ने उस से कहा तू मुझे उत्तम क्यों कहता है; उत्तम तो कोई नहीं केवल

१९ एक अर्थात परमेश्वर। तू आज्ञाओं को जानता है कि व्यभिचार मत कर हत्या मत कर चोरी मत कर झूठी साक्षी मत दे ठगाई मत कर अपने माता पिता का

२० संमान कर। उस ने उत्तर देके उस से कहा हे गुरु

२१ मैं अपने लड़कपन से यह सब मानता आया। यिसू ने उस पर दृष्टि करके उसे प्रेम किया और उस से कहा एक बात तुझे और चाहिये जाके जो कुछ कि तेरा है सो बेच डाल और कंगालों को दे तो स्वर्ग में तू धन पावेगा और आ और क्रूस उठाके मेरे पीछे हो

२२ ले। और वह इस बात से अप्रसन्न होकर उदास चला

२३ गया क्योंकि वह बड़ा धनी था। तब यिसू ने चारों ओर दृष्टि करके अपने शिष्यों से कहा धनवानों को परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा ही कठिन है। शिष्य

२४ लोग उस की बातों से अचंभित हुए परन्तु यिसू ने फिर उत्तर देके उन से कहा हे बालको जो लोग धन पर भरोसा रखते हैं उन को परमेश्वर के राज्य में प्रवेश

२५ करना कैसा कठिन है। सूई के नाके से ऊंट का पैठ-

ना उस से सहज है कि एक धनवान मनुष्य परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करे। और वे अत्यन्त अचंभित हो- २६
के आपस में बोले फिर किस का त्राण हो सकता है। यिसू ने उन पर दृष्टि कर के कहा मनुष्यों से यह अन- २७
होना है परन्तु परमेश्वर से नहीं क्योंकि परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है।

तब पथरस उस से कहने लगा देख हम ने तो सब २८
कुछ छोड़ा और तेरे पीछे हो लिये हैं। यिसू ने २९
उत्तर देके कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि जिस ने घर अथवा भाइयों अथवा बहिनों अथवा पिता अथवा माता अथवा पत्नी अथवा सन्तानों अथवा भूमि को मेरे और मंगलसमाचार के लिये छोड़ा है। उन ३०
में कोई नहीं है कि जो अब इस समय में उपद्रव सहित सौ गुणा घरों और भाइयों और बहिनों और माताओं और सन्तानों और भूमि को और परलोक में अनन्त जीवन न पावेगा। परन्तु बहुत से जो पहिले हैं ३१
पिछले होंगे और जो पिछले हैं पहिले होंगे।

और जब वे यरूसलम को जाते हुए मार्ग में थे ३२
तब यिसू उन से आगे बढ़ा और वे अचंभित हुए और डरते डरते उस के पीछे चले और उस ने फिर बारहों को लिया और जो कुछ उस पर होन्हार था सो उन से कहने लगा। कि देखो हम यरूसलम को जाते ३३
हैं और मनुष्य का पुत्र प्रधान याजकों और अध्यापकों के हाथ पकड़वाया जायगा और वे उस को मार

डालने को आज्ञा देंगे और उस को अन्यदेशियों के
३४ हाथ सौंपेंगे। और वे उस को ठट्ठा करेंगे और
कोड़े मारेंगे और उस पर थूकेंगे और उसे घात करेंगे
और तीसरे दिन वह जी उठेगा।

३५ तब सबदी के पुत्र याकूब और यूहन्ना उस पास
आके कहने लगे हे गुरु हम चाहते हैं कि जो कुछ
३६ हम मांगते हैं सो तू हमारे लिये कर। उस ने उन
से कहा तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये
३७ करूं। उन्हों ने उस से कहा हमारे कारण यह कर
कि तेरे ऐश्वर्य्य में हम में से एक तेरी दहिनी ओर
३८ और दूसरा तेरी बाईं ओर बैठे। यिसू ने उन से कहा
तुम नहीं जानते कि क्या मांगते हो; जिस कटोरे
को मैं पीने पर हूं क्या तुम उस से पी सकते हो और
जो बपतिसमा मैं पाता हूं क्या तुम उसे पा सकते
३९ हो। वे बोले हम सकते हैं; तब यिसू ने उन से कहा
जिस कटोरे से मैं पीऊंगा उस से तुम तो पीओगे
४० और जो बपतिसमा मैं पाऊंगा तुम पाओगे। परन्तु
मेरी दहिनी और बाईं ओर बैठना मेरे देने में नहीं
है परन्तु जिन के लिये तैयार किया गया है उन का
४१ वह है। दसों ने यह सुनके याकूब और यूहन्ना पर
४२ क्रोधित हुए। तब यिसू ने उन्हें पास बुलाके कहा
तुम जानते हो कि जो अन्यदेशियों के प्रधान जाने
जाते हैं सो उन पर प्रभुता करते हैं और जो उन
४३ में बड़े हैं सो उन पर आज्ञा करते हैं। पर तुम में

ऐसा नहीं होगा परन्तु जो कोई तुम में बड़ा ज़ुआ चाहे सो तुम्हारा सेवक होगा। ४४ और जो कोई तुम में प्रधान ज़ुआ चाहे सो सभों का दास होगा। ४५ क्योंकि मनुष्य का पुत्र सेवा करवाने को नहीं परन्तु सेवा करने को और बज़तेरों के कारण अपने प्राण को प्रायश्चित्त में देने को आया।

४६ और वे यरीहो में आये और जब वह और उस के शिष्य और बड़ी भीड़ यरीहो से निकलती थी तब तिमाई का पुत्र बरतिमाई जो अन्धा था सो मार्ग की ओर बैठे भीख मांगता था। ४७ जब उस ने सुना कि यिसू नासरी है तो पुकारके कहने लगा हे दाऊद के पुत्र यिसू मुझ पर दया कर। ४८ और बज़त लोगों ने उस को घुरक दिया कि चुप रहे परन्तु उस ने बज़त अधिक पुकारा हे दाऊद के पुत्र मुझ पर दया कर। ४९ यिसू ने खड़े होके उसे बुलाने को कहा; तब उन्हों ने उस अन्धे को बुलाके उस से कहा सुस्थिर हो उठ वह तुझे बुलाता है। ५० वह अपना कपड़ा फेंकके उठा और यिसू पास आया। ५१ यिसू ने उस से कहा तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूं; उस अन्धे ने उस से कहा हे प्रभु मैं अपनी आंखें पाऊं। ५२ यिसू ने उस से कहा चला जा तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है; वोंहीं उस ने अपनी आंखें पाईं और मार्ग में यिसू के पीछे हो लिया॥

११ पर्व्व

और जब वे यरूसलम के निकट जलपाई के पहाड़

के लग बैतफगा और बैतअनिया में आये तब उस ने
२ अपने शिष्यों में से दो को यह कहके भेजा। जो
गांव तुम्हारे संमुख है उस में जाओ और उस में
प्रवेश करते ही तुम एक गधी के बच्चे को जिस पर
कोई मनुष्य नहीं बैठा था बांधे ङ्गए पाओगे; उसे
३ खोलके ले आओ। और यदि कोई तुम से कहे तुम
क्यों यह करते हो तो कहो प्रभु को उस का प्रयो-
४ जन है तो वह तुरन्त उसे यहां भेजेगा। तब वे गये
और दुराहे के सिरे पर द्वार के पास बाहर उस बच्चे
५ को बंधे ङ्गए पाया और उसे खोला। और जो लोग वहां
खड़े थे उन में से कितनों ने उन से कहा तुम क्या
६ करते हो जो बच्चे को खोलते हो। उन्हों ने यिसू की
आज्ञा के समान उन से कहा तब उन्हों ने उन को
७ जाने दिया। और वे उस बच्चे को यिसू पास लाये
और अपने वस्त्र उस पर डाले और वह उस पर बैठा।
८ और बङ्गत लोगों ने अपने वस्त्र मार्ग में बिछाये
और औरों ने पेड़ों की डालियां काटके मार्ग में बिथ-
९ राईं। और जो लोग आगे पीछे जाते थे सो पुकार-
के कहते थे होशाना धन्य वह जो प्रभु के नाम से
१० आता है। धन्य हमारे पिता दाऊद का राज्य जो
प्रभु के नाम से आता है अत्यन्त ऊंचे पर होशाना।
११ और यिसू यरूसलम में प्रवेश करके मन्दिर में गया
और जब चारों ओर सब वस्तुओं पर दृष्टि किई तो

बारहों के संग बैतअनिया को गया क्योंकि सांझ हुई थी।

१२ और बिहान को जब वे बैतअनिया से निकले तब १३ उसे भूख लगी। और वह एक गूलर का पेड़ पत्ते लगे हुए दूर से देखके आया कि क्या जाने उस में कुछ पावे परन्तु उस ने उस पास आके पत्तों को छोड़ कुछ न पाया क्योंकि गूलर चुनने का समय नहीं १४ था। तब यिसू ने उस पेड़ से कहा आगे कोई तुझ से कभी फल न खावे और उस के शिष्यों ने वह बात सुनी।

१५ वे यरूसलम में आये और यिसू ने मन्दिर में जाके जो लोग मन्दिर में बेचते और कीनते थे निकालने लगा और खरदियों के पटरों को और कबतर बेच- १६ नेवालों की चौकियों को उलट दिया। और किसी १७ मनुष्य को मन्दिर में से बर्त्तन ले जाने न दिया। और उपदेश देके उन से कहा क्या यह नहीं लिखा है कि मेरा घर सब देशों के लोगों के लिये प्रार्थना का घर कहावेगा परन्तु तुम ने उसे चोरों का खोह बना- १८ या। तब अध्यापक और प्रधान याजक यह सुनकर सोचने लगे कि उसे किस रीति से घात करें क्योंकि वे उस से डरते थे इस कारण कि सब लोग उस के १९ उपदेश से अचंभित हुए थे। और जब सांझ हुई तब वह नगर से बाहर निकल गया।

२० बिहान को जब वे उधर से जाते थे तब उन्हों ने

क्या देखा कि वह गूलर का पेड़ जड़ से सूख गया
२१ था। और पथरस ने चेत करके उस से कहा हे रब्बी
देख यह गूलर का पेड़ जिसे तू ने सराप दिया था
२२ सो सूख गया है। यिसू ने उत्तर देके उन से कहा
२३ परमेश्वर पर बिश्वास रखो। क्योंकि मैं तुम से सच
कहता हूं कि यदि कोई इस पहाड़ से कहे कि उठ
और समुद्र में जा गिर और अपने मन में सन्देह न
करे परन्तु बिश्वास करे कि जो मैं कहता हूं सो हो
२४ जायगा तो जो कुछ वह कहेगा सो हो जायगा। इस
कारण मैं तुम से कहता हूं कि प्रार्थना कर के जो कुछ
कि तुम मांगोगे तो बिश्वास करो कि हम पावेंगे
२५ तो तुम पाओगे। और जब तुम प्रार्थना करने को
खड़े हो यदि तुम्हारे मन में किसी के बिरुद्ध कुछ
होय तो क्षमा करो कि तुम्हारा पिता भी जो स्वर्ग
२६ में है तुम्हारे अपराध क्षमा करे। परन्तु यदि तुम
क्षमा न करो तो तुम्हारा पिता भी जो स्वर्ग में है
तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा।

२७ वे फिर यरूसलम में आये और जब वह मन्दिर
में फिरता था तब प्रधान याजक और अध्यापक और
२८ प्राचीन लोग उस पास आये। और उस से कहा तू
किस अधिकार से यह काम करता है और यह काम
२९ करने को तुझे किस ने यह अधिकार दिया। यिसू ने
उत्तर देके उन से कहा मैं भी तुम से एक बात पूछता
हूं मुझे उत्तर दो तो मैं तुम्हें बताऊंगा कि मैं किस

अधिकार से ये काम करता हूं। ३० क्या यूहन्ना का बपतिसमा स्वर्ग से अथवा मनुष्यों की ओर से हुआ मुझे उत्तर देओ। ३१ वे आपस में बिचार करके कहने लगे यदि हम कहें कि स्वर्ग से तो वह कहेगा फिर तुम ने उस का विश्वास क्यों नहीं किया। ३२ परन्तु यदि हम कहें मनुष्यों की ओर से तो लोगों से डरते हैं क्योंकि सब लोग यूहन्ना को जानते थे कि वह निश्चय करके भविष्यतवक्ता है। ३३ सो उन्हों ने उत्तर देके यिसू से कहा हम नहीं जानते हैं; तब यिसू ने उत्तर देके उन से कहा तो मैं भी तुम्हें नहीं बताता हूं कि मैं किस अधिकार से ये काम करता हूं।

१२ पर्व्व

फिर वह उन्हें दृष्टान्तों में कहने लगा एक मनुष्य ने दाख की बारी लगाई और उस की चारों ओर बाड़ा बांधा और खोदके कोल्हू गाड़ा और गढ़ बनाया और मालियों को उस का ठीका देके परदेश को चला गया। २ फल के समय में उस ने एक दास को मालियों के पास भेजा कि मालियों से दाख की बारी का फल लेवे। ३ उन्हों ने उस को पकड़के मारा और खाली हाथ फेर दिया। ४ फिर उस ने दूसरे दास को उन के पास भेजा; उस को उन्हों ने पत्थरोओ करके उस का सिर फोड़ा और उसे अपमान करके फेर दिया। ५ फिर उस ने एक तीसरे को भेजा और उस को उन्हों ने मार डाला और और बहुतेरों को वैसा किया कितनों को मारा और कितनों को बध किया। ६ अब उस का एक

ही पुत्र था वह उस का प्रिय था; उस ने सब के पीछे उस को यह कहके उन के पास भेजा कि वे मेरे पुत्र से ७ दबेंगे। परन्तु उन मालियों ने आपस में कहा अधिकारी यही है आओ उस को मार डालें कि अधिकार ८ हमारा हो जाय। और उन्हों ने उस को पकड़के मार डाला और दाख की बारी से बाहर फेंक दिया। ९ भला अब दाख की बारी का स्वामी क्या करेगा; वह आवेगा और उन मालियों को नाश करेगा और दाख १० की बारी औरों को सौंपेगा। और क्या तुम ने धर्म्मग्रन्थ में यह नहीं पढ़ा है कि जिस पत्थर को थवइयों ने निकम्मा ठहराया वही कोने का सिरा हुआ है। ११ यह प्रभु का कार्य्य है और हमारी दृष्टि में अचंभित १२ है। और उन्हों ने उसे पकड़ने चाहा परन्तु लोगों से डरे क्योंकि वे जान गये कि उस ने यह दृष्टान्त उन के विषय में कहा था और वे उसे छोड़के चले गये।

१३ तब उन्हों ने कई एक फरीसियों और हेरोदियों १४ को उस के पास भेजा कि उसे बातों में फंसावें। और आके उन्हों ने उस से कहा हे गुरु हम जानते हैं कि तू सच्चा है और किसी का खटका नहीं रखता है क्योंकि तू मनुष्यों का मुंह देखके बात नहीं करता परन्तु परमेश्वर के मार्ग को सचाई से सिखाता है; क्या कैसर को कर देना उचित है अथवा नहीं। १५ हम देवें अथवा न देवें; परन्तु उस ने उन का कपट जानके उन से कहा तुम मेरी परीक्षा क्यों करते हो; एक सूकी

मेरे पास लाओ कि मैं देखूं। वे लाये; तब उस ने उन से कहा यह मूर्ति और सिक्का किस का है; उन्हों ने कहा कैसर का। तब यिसू ने उत्तर देके उन से कहा फिर जो कैसर का है सो कैसर को देओ और जो परमेश्वर का है सो परमेश्वर को देओ; और वे उस से अचंभित हुए। १६ १७

तब सादूकी लोग जो कहते हैं कि मृतिकों का जी उठना नहीं होगा उस पास आये और उस से यह कहके पूछा। हे गुरु मूसा ने हमारे लिये लिखा कि यदि किसी का भाई मरे और उस की पत्नी रहे और वंश न होय तो उस का भाई उस की पत्नी से बिवाह करे और अपने भाई के लिये वंश चलावे। अब सात भाई थे पहिले ने बिवाह किया और निर्वंश मर गया। तब दूसरे ने उस से बिवाह किया और मर गया और उस को भी वंश न हुआ; तीसरे ने वैसा भी किया। सातों ने उस से बिवाह किया और किसी को वंश नहीं हुआ; सब के पीछे वह स्त्री भी मर गई। अब जी उठने के समय में जब वे फिर उठेंगे तब वह उन में से किस की पत्नी होगी क्योंकि सातों ने उस से बिवाह किया था। यिसू ने उत्तर देके उन से कहा क्या तुम इस कारण भूल में नहीं पड़े हो कि तुम न धर्म्मग्रन्थ और न परमेश्वर के पराक्रम को जानते हो। क्योंकि जब वे मृतकों में से जी उठेंगे तब तो न बिवाह करेंगे और न बिवाह दिये जायेंगे परन्तु १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५

२६ स्वर्गीय दूतों की नाईं होंगे। और मृतकों के जी उठने के विषय में क्या तुम ने मूसा के ग्रन्थ में नहीं पढ़ा कि झाड़ी में परमेश्वर ने उस से कहा मैं अबिर-हाम का परमेश्वर और इसहाक का परमेश्वर और
२७ याकूब का परमेश्वर हूं। परमेश्वर तो मृतकों का नहीं परन्तु जीवतों का परमेश्वर है सो तुम बड़ी भूल करते हो।

२८ फिर अध्यापकों में से एक आया और जब उन्हें बिबाद करते सुना और जाना कि उस ने उन्हें ठीक उत्तर दिया तब उस ने उस से पूछा आज्ञाओं में सब
२९ से बड़ी कौन है। यिसू ने उस से उत्तर दिया सब आज्ञाओं में बड़ी यह है हे इसराएल सुनो प्रभु जो
३० हमारा परमेश्वर है सो एक ही प्रभु है। और तू प्रभु को जो तेरा परमेश्वर है अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से और अपनी सारी बुद्धि से और अपनी सारी शक्ति से प्यार कर यही सब से बड़ी आज्ञा
३१ है। और दूसरी उसी की नाईं है सो यह है तू अपने पड़ोसी को अपने समान प्यार कर ; इन से और कोई
३२ आज्ञा बड़ी नहीं है। तब अध्यापक ने उस से कहा अच्छा हे गुरु तू ने सच कहा क्योंकि एक ही परमे-
३३ श्वर है और उस को छोड़ कोई दूसरा नहीं है। और उस को सारे मन से और सारी बुद्धि से और सारे प्राण से और सारी शक्ति से प्यार करना और पड़ो-सी को अपने समान प्यार करना सारे होमों से और

बलिदानों से अच्छा है। और जब यिसू ने देखा कि उस ने बुद्धि से उत्तर दिया तब उस ने उस से कहा तू परमेश्वर के राज्य से दूर नहीं है; फिर इस के पीछे किसी को उस से पूछने का हियाव न हुआ। ३४

तब यिसू ने मन्दिर में उपदेश करते हुए कहा अध्यापक लोग क्योंकर कहते हैं कि मसीह दाऊद का पुत्र है। क्योंकि दाऊद ने आप ही पवित्र आत्मा के बताने से कहा प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा जब लों मैं तेरे बैरियों को तेरे पांव की पीढ़ी न करूं तू मेरी दहिनी ओर बैठ। सो दाऊद आप ही उस को प्रभु कहता है फिर वह उस का पुत्र क्योंकर है; और बहुत लोग आनन्द से उस की सुनते थे। ३५ ३६ ३७

और उस ने अपने उपदेश में उन से कहा अध्यापकों से सचेत रहो; वे लंबे वस्त्र पहिने हुए फिरने चाहते हैं; वे हाटों में नमस्कारों की। और मण्डलियों में श्रेष्ठ आसन और जेवनारों में प्रधान स्थान चाहते हैं। वे बिधवाओं के घर निगल जाते हैं और छल से लंबी प्रार्थना करते हैं; वे अधिक दण्ड पावेंगे। ३८ ३९ ४०

फिर यिसू भण्डार के साम्हने बैठकर देख रहा था कि लोग किस प्रकार से भण्डार में रोकड़ डालते थे और बहुत धनवानों ने बहुत कुछ डाला। तब एक कंगाल विधवा ने दो छदाम अर्थात एक अधेला उस में डाला। और उस ने अपने शिष्यों को पास ४१ ४२ ४३

बुलाके उन से कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि जिन्हों ने भण्डार में डाला है उन सभों से अधिक इस कंगाल
४४ विधवा ने डाला। क्योंकि सभों ने अपनी बहुतात में से कुछ डाला है परन्तु इस ने अपनी घटती में से जो कुछ उस का था अर्थात अपना सारा उपजीवन डाला॥

१३ पर्व्व

जब वह मन्दिर में से बाहर आता था तब उस के शिष्यों में से एक ने उस से कहा हे गुरु देख यह
२ किस भांति के पत्थर और कैसी बनावट है। यिसू ने उत्तर देके उस से कहा क्या तू इस बड़े भवन को देखता है; यहां पत्थर पर पत्थर नहीं रहेगा जो
३ गिराया न जाय। जब वह जलपाई के पहाड़ पर मन्दिर के संमुख बैठा था तब पथरस और याकूब और यूहन्ना और अन्द्रियास ने निराले में उस से
४ पूछा। हम से कह यह सब कब होगा और जब यह सब कुछ पूरा होगा उस समय का क्या चिन्ह हो-
५ गा। यिसू उत्तर देकर उन्हें कहने लगा चौकस रहो
६ कि कोई तुम्हें न भरमावे। क्योंकि बहुत लोग मेरा नाम लेके आवेंगे और कहेंगे मैं वही हूं और बहु-
७ तों को भरमावेंगे। और जब तुम लड़ाइयां और लड़ाइयों की चर्चा सुनो तब मत घबराओ क्योंकि इन का होना अवश्य है परन्तु अन्त उस समय में नहीं हो-
८ गा। क्योंकि देश पर देश और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेंगे और जगह जगह भूईंडोल होंगे और अकाल

और झुलसड़ होंगे और यह दुःखों का आरंभ है। परन्तु तुम अपने लिये चौकस रहो क्योंकि वे तुम्हें सभाओं के हाथ सौंपेंगे और तुम मण्डलियों में मारे जाओगे और मेरे नाम के लिये प्रधानों और राजाओं के आगे खड़े किये जाओगे कि उन पर साची होय। पर अवश्य है कि पहिले मंगलसमाचार सब देशों के लोगों में सुनाया जाय। परन्तु जब वे तुम्हें पकड़के ले जावें तो हम क्या बोलें इस की चिन्ता आगे से मत करो और न सोच करो परन्तु जो कुछ तुम्हें उसी घड़ी दिया जाय वही बोलो क्योंकि तुम नहीं परन्तु पवित्र आत्मा बोलनेवाला है। और भाई भाई को और पिता पुत्र को मरवा डालने के लिये पकड़वावेगा और लड़के अपने माता पिता के विरुद्ध उठेंगे और उन्हें मरवा डालेंगे। और मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे परन्तु जो अन्त लों स्थिर रहेगा सो चाण पावेगा। ९ १० ११ १२ १३

परन्तु जब तुम नाशन की वह घिनित वस्तु जिस के विषय में दानियेल भविष्यतवक्ता ने कहा है जहां उचित नहीं है तहां खड़े होते देखो (जो पढ़े सो बूझे) तब जो यहूदाह में होवें सो पहाड़ों को भाग जायें। और जो कोठे पर हो सो घर में न उतरे और अपने घर में से कुछ लेने को उस में न पैठे। और जो खेत में हो सो अपना वस्त्र लेने को पीछे न फिरे। और जो उन दिनों में पेटवालियां और दूध पिलानेवालियां १४ १५ १६ १७

१८ हों उन पर हाय। और प्रार्थना करो कि तुम्हारा
१९ भागना जाड़े में न हो। क्योंकि उन दिनों में ऐसा
कष्ट होगा जैसा कि सृष्टि के आरंभ से जो परमेश्वर
२० ने सृजी अब लों न हुआ और कभी न होगा। और
यदि प्रभु उन दिनों को थोड़े न करता तो कोई प्राणी
बच नहीं जाता परन्तु चुने हुए लोगों के लिये जिन
को उस ने चुना है वह उन दिनों को थोड़े करेगा।

२१ तब यदि कोई मनुष्य तुम से कहे देखो मसीह
२२ यहां है अथवा देखो वहां है तो मत पतियाओ। क्यों-
कि झूठे मसीह और झूठे भविष्यतवक्ता उठेंगे और
चिन्ह और आश्चर्य्य कर्म्म दिखावेंगे कि जो हो सक-
२३ ता तो चुने हुए लोगों को भी भरमाते। परन्तु तुम
चौकस रहो देखो मैं आगे से तुम्हें सब बातें कह
चुका।

२४ पर उन दिनों में उस कष्ट के पीछे सूर्य्य अंधेरा हो
२५ जायगा और चंद्रमा अपनी ज्योति न देगा। और तारे
आकाश से गिरेंगे और आकाश की दृढ़ताएं डिग
२६ जायेंगी। और तब लोग मनुष्य के पुत्र को बड़े परा-
२७ क्रम और ऐश्वर्य्य से मेघों पर आते देखेंगे। और तब
वह अपने दूतों को भेजेगा और अपने चुने हुए लो-
गों को चारों दिशा से पृथिवी के सिवाने से आकाश
के सिवाने लों एकट्ठे करेगा।

२८ अब गूलर के पेड़ से एक दृष्टान्त सीखो जब उस
की डाली कोमल होती है और पत्ते निकलते हैं तब

तुम जानते हो कि धूपकाल निकट है। इसी रीति से जब तुम यह बातें होती देखो तब जानो कि वह निकट है हां द्वार पर है। मैं तुम से सच कहता हूं कि जब लों यह सब कुछ पूरा न हो ले तब लों इस समय के लोग जाते न रहेंगे। स्वर्ग और पृथिवी टल जायेंगे परन्तु मेरी बातें न टलेंगी। २९ ३० ३१

परन्तु उस दिन और उस घड़ी को पिता को छोड़ कोई मनुष्य नहीं जानता है न तो दूतगण जो स्वर्ग में हैं और न तो पुत्र जानता है। तुम सुचेत रहो जागते रहो और प्रार्थना करो क्योंकि तुम नहीं जानते हो कि वह समय कब होगा। जैसे एक मनुष्य अपना घर छोड़के परदेश को गया और अपने दासों को अधिकार दिया और हर एक को उस का काम दिया और द्वारपाल को जागते रहने की आज्ञा दिई ऐसे ही वह समय होगा। इस कारण जागते रहो क्योंकि तुम नहीं जानते कि घर का स्वामी कब आवेगा सांझ को अथवा आधी रात को अथवा कुक्कुट बोलने के समय अथवा भोर को। ऐसा न होवे कि वह अचानक आके तुम्हें सोते पावे। और जो मैं तुम से कहता हूं सो मैं सभों से कहता हूं जागते रहो॥ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७

१४ पर्व्व

दो दिन के पीछे फसह का पर्व्व और अखमीरी रोटी का पर्व्व था और प्रधान याजक और अध्यापक लोग विचार कर रहे थे कि उसे क्योंकर छल से

२ पकड़के मार डालें। परन्तु उन्हों ने कहा पर्ब्ब में नहीं न होवे कि लोगों में ऊल्लड़ मचे।

३ और जब वह बैतअनिया में समऊन कोढ़ी के घर में खाने बैठा था तब एक स्त्री संगमरमर की डिबिया में जटामासी का बज़मूल्य सुगन्ध तेल लेके आई और उस डिबिया को तोड़के उस के सिर पर ढाल दिया। ४ और वहां कोई कोई अपने मन में क्रोधित होके बोले ५ कि सुगन्ध तेल का यह व्यर्थ उठान क्यों ऊआ। क्योंकि वह तीन सौ सूकियों से अधिक दाम पर बिक सकता और कंगालों को दिया जाता; सो वे उस पर ६ कुड़कुड़ाने लगे। पर यिसू ने कहा उसे रहने देओ तुम उस को क्यों दुःख देते हो; उस ने मुझ से अच्छा ७ काम किया है। क्योंकि कंगाल लोग तुम्हारे संग तो सदा रहते हैं और जब तुम चाहो तब उन से भलाई कर सकते हो परन्तु मैं तुम्हारे संग सदा न रहूंगा। ८ जो कुछ वह कर सकी सो किया है; उस ने मेरे गाड़े जाने के लिये आगे से आके मेरी देह पर सुगन्ध ९ तेल लगाया है। मैं तुम से सच कहता हूं कि सारे जगत में जहां कहीं यह मंगल समाचार सुनाया जायगा तहां जो इस ने किया है सो भी उस के स्मरण के लिये कहा जायगा।

१० तब यहूदाह इसकरियत जो उन बारहों में से एक था सो प्रधानयाजकों के पास गया कि उसे उन के हाथ ११ पकड़वा देवे। वे यह सुनके आनन्दित ऊए और उसे

रुपैये देने की बाचा किई ; तब वह सोच में रहा कि उसे किस प्रकार से अवसर पाके पकड़वा देवे।

१२ अखमीरी रोटी के पहिले दिन जिस में वे फसह का बलि मारते थे उस के शिष्यों ने उस से कहा तू कहां चाहता है कि हम जाके तैयार करें कि तू फसह का भोजन खावे। १३ उस ने अपने शिष्यों में से दो को यह कहके भेजा कि नगर में जाओ और एक मनुष्य जल का घड़ा उठाये हुए तुम्हें मिलेगा उस के पीछे चले जाओ। १४ और जिस घर में वह प्रवेश करे तुम उस घर के स्वामी से कहो गुरु कहता है कि पाहुनशाला जहां मैं अपने शिष्यों के संग फसह का भोजन खाऊं सो कहां है। १५ और वह तुम्हें एक सजी और तैयार किई हुई बड़ी उपरौाठी कोठरी दिखावेगा वहां हमारे लिये तैयार करो। १६ तब उस के शिष्य गये और नगर में आके जैसा उस ने उन से कहा था वैसा ही पाया और फसह का भोजन तैयार किया।

१७ और सांझ को वह बारहों के संग आया। १८ और जब वे बैठके खा रहे थे तब यिसू ने कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि तुम में से एक जो मेरे संग खाता है मुझे पकड़वावेगा। १९ तब वे उदास होने और एक एक करके उस से कहने लगे वह क्या मैं हूं और दूसरे ने कहा क्या मैं हूं। २० उस ने उत्तर देके उस से कहा बारहों में से एक जो मेरे संग थाली में हाथ डाल-

२१ ता है वही है। मनुष्य का पुत्र तो जैसा उस के विषय में लिखा है तैसा ही जाता है परन्तु हाय उस मनुष्य पर जिस से मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता है; जो वह मनुष्य उत्पन्न न होता तो उस के लिये भला होता।

२२ जब वे भोजन कर रहे थे तब यिसू ने रोटी लिई और धन्यवाद करके तोड़ी और उन्हें देके कहा लेओ २३ खाओ यह मेरी देह है। और उस ने कटोरा लिया और धन्य मानके उन्हें दिया और उन सभों ने उस २४ से पीया। और उस ने उन से कहा यह मेरा लोहू अर्थात नये नियम का लोहू है जो बहुतेरों के लिये २५ बहाया जाता है। मैं तुम से सच कहता हूं कि जिस दिन लों मैं परमेश्वर के राज्य में उसे नया न पीऊं मैं अब से उस दिन लों दाख रस फिर न पीऊंगा। २६ तब वे भजन गाके जलपाई के पहाड़ पर गये।

२७ और यिसू ने उन से कहा इसी रात में तुम सब मेरे विषय में ठोकर खाओगे क्योंकि लिखा है कि मैं गड़रिये को मारूंगा और भेड़ें तित्तर बित्तर हो २८ जायेंगीं। परन्तु मैं अपने जी उठने के पीछे तुम्हारे २९ आगे गलील को जाऊंगा। पथरस ने उस से कहा ३० यदि सब ठोकर खावें तौ भी मैं न खाऊंगा। यिसू ने उस से कहा मैं तुझ से सच कहता हूं आज इसी रात में कुक्कुट के दो बार बोलने से आगे तू तीन ३१ बार मुझ से मुकरेगा। परन्तु वह और भी दृढ़ता

से बोला जो तेरे संग मुझे मरना होय तो भी मैं तुझ से न मुकरूंगा ; सभों ने भी वैसा ही कहा।

फिर वे गतसमने नाम एक स्थान में आये और उस ने अपने शिष्यों से कहा जब लों मैं प्रार्थना करूं तब लों तुम यहां बैठो। तब वह पथरस और याकूब और यूहन्ना को अपने संग ले गया और व्याकुल और अति उदास होने लगा। और उन से कहा मेरा मन यहां लों अति शोकित है कि मैं मरने पर हूं तुम यहां ठहरो और जागते रहो। तब वह थोड़ा आगे बढ़के भूमि पर गिरा और प्रार्थना किई कि यदि हो सके तो वह घड़ी उस से टल जाय। और कहा हे अब्बा हे पिता तुझ से सब कुछ हो सकता है यह कटोरा मुझ से टाल दे तिस पर भी जो मैं चाहता हूं सो नहीं परन्तु जो तू चाहता है सो ही होवे। फिर वह आया और उन्हें सोते पाया और पथरस से कहा हे समऊन क्या तू सोता है ; क्या तू एक घड़ी न जाग सका। जागते रहो और प्रार्थना करो न हो कि तुम परीक्षा में पड़ो आत्मा तो तैयार है परन्तु शरीर दुर्बल है। वह फिर गया और प्रार्थना करके वही बातें बोला। और वह फिर आके उन्हें फिर सोते पाया क्योंकि उन की आंखें नींद से भारी थीं और वे न जानते थे कि उसे क्या उत्तर देवें। फिर उस ने तीसरी बेर आके उन से कहा अब सोते रहो और विश्राम करो बस है घड़ी आ पहुंची है देखो मनुष्य का पुत्र

३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१

४२ पापियों के हाथ में पकड़वाया जाता है। उठो चलें देखो जो मुझे पकड़वाता है सो निकट आया है।

४३ वह यह कहता ही था कि यहूदाह जो बारहों में से एक था वोंहीं आ पहुंचा और प्रधान याजकों और अध्यापकों और प्राचीनों की ओर से एक बड़ी भीड़ तलवारें और लाठियां लेके उस के संग आई।

४४ और पकड़वानेवाले ने उन्हें यह पता दिया था कि जिस को मैं चूमूं सो वही है उसे पकड़के चौकसी

४५ से ले जाओ। वह तुरन्त उस के पास जाकर बोला

४६ हे रब्बी हे रब्बी और उस को चूमा। तब उन्हों ने

४७ उस पर हाथ डालके उसे पकड़ लिया। जो वहां खड़े थे उन में से एक ने तलवार खैंचकर महायाजक के एक दास को मारा और उस का कान उड़ा दिया।

४८ तब यिसू ने उत्तर देके उन से कहा क्या तुम तलवारें और लाठियां लेके मुझे जैसे डाकू को पकड़ने के

४९ लिये निकले हो। मैं तो प्रति दिन तुम्हारे संग मन्दिर में बैठके उपदेश करता था और तुम ने मुझे नहीं पकड़ा परन्तु धर्म्मग्रन्थ की बातों का पूरा होना

५० अवश्य है। तब वे सब उस को छोड़के भाग गये।

५१ और वहां एक तरुण जो सूती चद्दर अपनी देह पर ओढ़े हुए था सो उस के पीछे हो लेता था और तरुणों

५२ ने उसे पकड़ लिया। पर वह सूती चद्दर उन के हाथ में छोड़कर नंगा भागा।

५३ वे यिसू को महायाजक के पास ले गये और सब

प्रधान याजक और प्राचीन और अध्यापक लोग उस के पास एकट्ठे ऊए। और पथरस दूर दूर उस के पीछे पीछे महायाजक के सदन के भीतर तक चला गया और सेवकों के संग बैठकर आग तापता था। तब प्रधान याजक और समस्त सभा के लोग यिसू पर साची ढूंढ़ते थे कि उस को मार डालें परन्तु न पाई। यद्यपि बक्तेरों ने उस पर झूठी साची दिई तथापि उन की साची एकसां न मिली। तब कितनें ने उठके यह कहके उस पर झूठी साची देने लगे। कि हम ने इस को कहते सुना कि मैं इस मन्दिर को जो हाथ का बनाया ऊआ है ढाऊंगा और तीन दिन में एक दूसरा बिन हाथ का बनाया ऊआ उठाऊंगा। परन्तु तिस पर भी उन की साची एकसमान न ठहरी। तब महायाजक बीच में खड़ा ऊआ और यह कहके यिसू से पूछा क्या तू कुछ उत्तर नहीं देता है; ये लोग तेरे बिरुद्ध क्या क्या साची देते हैं। परन्तु वह चुप रहा और कुछ उत्तर न दिया; महायाजक ने फिर उस से पूछा और कहा क्या तू धन्यबादित परमेश्वर का पुत्र मसीह है। यिसू ने कहा मैं हूं और तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान की दहिनी ओर बैठे और आकाश के मेघों पर आते देखोगे। तब महायाजक ने अपने बस्त्र फाड़के कहा अब हमें और साचियों का क्या प्रयोजन है। तुम ने परमेश्वर की यह निन्दा सुनी है तुम्हें क्या समझ पड़ता है सभों ने उसे बध

५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४

६५ होने के योग्य ठहराया। तब कितने उस पर थूकने और उस का मुंह ढांपके और उस को घूंसे मार के उस से कहने लगे कि भविष्यतवाणी बोल; और सेवकों ने उस को थपेड़े मारे।

६६ जब पथरस नीचे सदन में था तब महायाजक की ६७ लौंडियों में से एक वहां आई। और जब पथरस को आग तापते देखा तब उस पर दृष्टि करके बोली तू ६८ भी यिसू नासिरी के संग था। परन्तु वह यह कहके मुकर गया मैं नहीं जानता और नहीं बूझता तू क्या कहती है; तब वह बाहर उसारे में गया और ६९ कुक्कुट बोला। लौंडी उस को फिर देखके जो पास खड़े ७० थे उन से कहने लगी यह उन में से एक है। वह फिर मुकर गया; और थोड़ी बेर पीछे फिर जो वहां खड़े थे उन्हों ने पथरस से कहा तू सचमुच उन में से एक है क्योंकि तू गलीली है और तेरी बोली वैसी ७१ ही है। परन्तु वह धिक्कार देने और किरिया खाने लगा कि जिस मनुष्य के विषय में तुम बोलते हो सो ७२ मैं नहीं जानता हूं। और कुक्कुट दूसरी बार बोला; तब जो बात यिसू ने उस से कही थी कि कुक्कुट के दो बार बोलने से आगे तू तीन बार मुझ से मुकर जायगा सो पथरस ने स्मरण किया और वह इस पर सोचके रोने लगा॥

१५ पर्ब्ब

भोर को प्रधान याजकों ने प्राचीनों और अध्यापकों और समस्त सभा के संग परामर्श करके यिसू को

बांधा और उसे ले जाके पिलातूस को सैांप दिया। पिलातूस ने उस से पूछा क्या तू यहूदियों का राजा है उस ने उत्तर देके उस से कहा तू सच कहता है। तब प्रधान याजकों ने उस पर बहुत से दोष लगाये। पिलातूस ने उस से फिर पूछा क्यों तू कुछ उत्तर नहीं देता है देख वे कितनी साची तेरे बिरुद्ध देते हैं। तौ भी यिसू ने कुछ उत्तर न दिया यहां लों कि पिलातूस ने अचंभा किया।

२ ३ ४ ५

उस पर्ब्ब में वह एक बन्धुवे को जिसे लोग चाहते थे छोड़ देता था। और बरब्बा नाम एक मनुष्य उन दंगैतों के संग जिन्हों ने दंगा में हत्या किई थी बन्धुवा हुआ था। तब लोग पकारके कहने लगे जैसा तू सदा करता था वैसा हमारे लिये कर। पिलातूस ने उत्तर में उन से कहा क्या तुम चाहते हो कि मैं यहूदियों के राजा को तुम्हारे लिये छोड़ देऊं। क्योंकि वह जानता था कि प्रधान याजकों ने उस को डाह से पकड़वाया था। परन्तु प्रधान याजकों ने लोगों को उभारा कि बरब्बा को उन के लिये छोड़ देवे। पिलातूस ने फिर उत्तर देके उन से कहा जिसे तुम यहूदियों का राजा कहते हो तुम क्या चाहते हो कि मैं उस से क्या करूं। उन्हों ने फिर पुकारा उस को क्रूस पर चढ़ा। तब पिलातूस ने उन से कहा क्यों उस ने कौनसा अपराध किया है उन्हों ने और भी अधिक पुकारा उसे क्रूस पर चढ़ा। पिलातूस ने लोगों को संतुष्ट

६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५

करने को चाहा इस कारण बरब्बा को उन के लिये छोड़ दिया और यिसू को कोड़े मारके क्रूस पर चढ़ाने के लिये सौंप दिया।

१६ तब सिपाहियों ने उस को उस सदन में जहां अध्यक्ष की कचहरी थी ले जाके सारा जथा एकट्ठा १७ बुलाया। और उन्हों ने उसे बैंजनी वस्त्र पहिनाया और १८ कांटों का मुकुट गून्थके उस के सिर पर रखा। और उस को नमस्कार करने लगे कि हे यहूदियों के राजा १९ प्रणाम। और उन्हों ने नरकट से उस के सिर पर मारा और उस पर थूका और घुटने टेकके उस को २० प्रणाम किया। और जब उस से ठट्ठा कर चुके तब उन्हों ने उस से वह बैंजनी वस्त्र उतारके उसी का वस्त्र उस को पहिनाया और उसे क्रूस पर चढ़ाने को ले गये।

२१ और समऊन नाम कुरेनी नगर का एक मनुष्य जो सिकन्दर और रूफुस का पिता था और गांव से आके उधर से जाता था उस को उन्हों ने बेगार पक- २२ ड़ा कि उस का क्रूस ले चले। और वे उस को गल- गता स्थान को लाये जिस का अर्थ यह है खोपरी २३ का स्थान। और उन्हों ने दाख रस में मुर मिलाके २४ उसे पीने को दिया परन्तु उस ने नहीं लिया। और उन्हों ने उसे क्रूस पर चढ़ाया और उस के वस्त्रों पर चिट्ठी डालके कि हर एक क्या क्या लेगा उन्हें बांट २५ लिया। एक पहर दिन चढ़ा था कि उन्हों ने उस को

क्रूस पर चढ़ाया। और उस के ऊपर में यह दोष- २६
पत्र लिखा गया था कि यहूदियों का राजा। उन्हों २७
ने उस के संग दो डाकू भी एक को उस की दहिनी
ओर और दूसरे को बाईं ओर क्रूसों पर चढ़ाये। तब २८
धर्म्मग्रन्थ में जो लिखा है कि वह कुकर्म्मियों के संग
गिना गया सो पूरा हुआ।

और जो लोग उधर से आते जाते थे सो सिर २९
हिलाके और उस की निन्दा करके कहते थे आहा
मन्दिर के ढानेवाले और तीन दिन में फिर बनाने-
वाले। आप को बचा और क्रूस पर से उतर आ। ३०
इसी रीति से प्रधान याजकों ने भी अध्यापकों के संग ३१
आपस में ठट्ठा करके कहा उस ने औरों को बचाया
आप को बचा नहीं सकता है। इसराएल का राजा ३२
मसीह क्रूस पर से अब उतर आवे कि हम देखें और
बिश्वास लावें; फिर जो उस के संग क्रूसों पर चढ़ाये
गये थे सो भी उस को धिक्कारते थे।

जब दो पहर हुआ तब सारे देश में अंधकार छा ३३
गया और तीसरे पहर तक रहा। और तीसरे पहर ३४
के समय में यिसु ने बड़े शब्द से पुकारके कहा एली
एली लामा सबक्तनी अर्थात हे मेरे परमेश्वर हे मेरे
परमेश्वर तू ने क्यों मुझे त्यागा है। जो लोग पास खड़े ३५
थे उन में से कितनों ने यह सुनके कहा देखो वह
इलियाह को बुलाता है। और एक ने दौड़के इस्पंज ३६
को सिरके में भिगोया और नल पर रखके उसे चुसा-

था और कहा रहने दो हम देखें कि इलियाह उस
३७ को उतारने को आवेगा कि नहीं। तब यिसू ने बड़े
शब्द से चिल्लाके प्राण त्यागा।

३८ और मन्दिर का पर्दा ऊपर से नीचे लों फटके दो
३९ भाग हो गया। और जब शतपति ने जो उस के संमुख
खड़ा था उसे यों चिल्लाते और प्राण त्यागते देखा
तो कहा सचमुच यह मनुष्य परमेश्वर का पुत्र था।

४० वहां कितनी स्त्रियां भी दूर से देखती रहीं उन में
मरियम मिगदालो और छोटे याकूब की और योसे
४१ की माता मरियम और सलूमी थीं। जब वह गलील
में था तब वे उस के पीछे हो लेतीं और उस की सेवा
करती थीं और बहुत सी और स्त्रियां जो उस के संग
यरूसलम में आईं थीं सो वहां थीं।

४२ और सांझ को कि तैयारी का दिन था जो बिश्राम
४३ दिन के एक दिन आगे है। अरमतिया का यूसफ एक
आदरवन्त मन्त्री जो आप भी परमेश्वर के राज्य की
बाट जोहता था सो आया और साहस से पिलातूस
४४ पास जाके यिसू की लोथ मांगी। पिलातूस ने अचंभा
किया कि वह ऐसा जल्द मर गया और शतपति को
बुलाके उस से पूछा क्या उस को मरे कुछ बेर हुई।
४५ और शतपति से बूझके यूसफ को लोथ दिई। और
४६ उस ने मिहीन कपड़ा मोल लिया और उसे उतार–
के उस कपड़े में लपेटा और उसे एक कबर में जो
पत्थर में खोदी गई थी रखा और कबर के मुंह पर

एक पत्थर ढुलका दिया। और मरियम मिगदाली और योसे की माता मरियम देख रही थीं कि वह कहां रखा गया। ४७

१६ पर्ब्ब

और जब बिश्राम दिन बीत गया तब मरियम मिगदाली और याकूब की माता मरियम और सलूमी ने सुगन्ध मोल लिया कि आके उस को मर्दन करें। २ और अठवारे के पहिले दिन बड़े तड़के सूर्य्य उदय होते ऊए वे कबर पर आईं। ३ और आपस में कहने लगीं कौन हमारे लिये पत्थर को कबर के मुंह पर से सरकावेगा। ४ और जब उन्हों ने दृष्टि किई तो क्या देखा कि पत्थर सरकाया ऊआ है और वह बऊत बड़ा था। ५ कबर के भीतर जाके उन्हों ने एक तरुण को उजले लंबे बस्त्र पहिने ऊए दहिनी ओर बैठे देखा और घबरा गये। ६ उस ने उन से कहा घबराओ मत तुम यिसू नासिरी को जो क्रूस पर मारा गया ढूंढतियां हो; वह जी उठा है वह यहां नहीं है देखो वह स्थान जहां उन्हों ने उसे रखा था सो यही है। ७ परन्तु तुम जाके उस के शिष्यों से और पथरस से कहो कि वह तुम से आगे गलील को जाता है; जैसे उस ने तुम से कहा था वैसे तुम उस को वहां देखोगे। ८ और वे जल्द निकलके कबर से भागीं और कम्पित और बिस्मित ऊईं और मारे डर के किसी से कुछ न बोलीं।

९ अब अठवारे के पहिले दिन वह तड़के जी उठके पहिले मरियम मिगदाली को जिस से उस ने सात

१० पिशाच निकाले थे दिखाई दिया। उस ने जाके उस के संगियों को जो शोक करते और रोते थे कह दिया। ११ जब उन्हों ने सुना कि वह जीता है और उस से देखा गया है तब प्रतीति न किई।

१२ इस के पीछे वह उन में से दो को जो किसी गांव को १३ चले जाते थे दूसरे रूप में दिखाई दिया। उन्हों ने जाके औरों को कह दिया पर उन्हों ने उन की भी प्रतीति न किई।

१४ पीछे वह उन ग्यारहों को जब वे भोजन पर बैठे थे दिखाई दिया और उन के अबिश्वास और मन की कठोरता पर उलहना दिया क्योंकि जिन्हों ने उस के जी उठने के पीछे उसे देखा था उन की बात उन्हों ने १५ प्रतीति न किई। तब उस ने उन से कहा तुम सारे जगत में जाओ और हर एक प्राणी को मंगल समा-१६ चार सुनाओ। जो बिश्वास लाता और बपतिसमा पाता है सो मुक्ति पावेगा परन्तु जो बिश्वास नहीं १७ लाता है उस पर दण्ड की आज्ञा किई जायगी। और बिश्वास लानेवालों के संग ये चिन्ह प्रगट होंगे वे मेरे नाम से पिशाचों को निकालेंगे वे नई नई भाषा १८ बोलेंगे। वे सांपों को उठा लेंगे और जो वे कोई प्राणहारी बस्तु पीवें तो उन्हें उस से कुछ हानि न होगी वे रोगियों पर हाथ रखेंगे और वे चंगे हो जायेंगे।

१९ जब प्रभु उन से यह कह चुका तब स्वर्ग को उठाया

गया और परमेश्वर की दहिनी ओर बैठा। फिर २० उन्हों ने निकलके सर्बत्र बचन को प्रचार किया और प्रभु ने उन के संग कार्य्य किया और बचन के संग जो चिन्ह प्रगट होते थे उन से उस को दृढ़ किया॥ आमीन॥

मंगल समाचार

लूका रचित।

१ पर्व्व

१ हे महामहिमन थियफिलुस; जब कि बक्रुत लोगों ने उन बातों का बेवरा जो हमारे बीच में प्रमाण २ ठहरीं बखान करने को जतन किया। जैसा कि जो आरंभ से अपनी ही आंखों से देखनेवाले और बचन ३ के सेवक थे उन्हों ने हमें सोंपा। तब मुझे भी अच्छा लगा कि सब बातें सिरे से ठीक ठीक बूझके तेरे लिये ४ बिधि से लिखूं। कि जिन बातों की तू ने शिक्षा पाई है उन का निश्चय जाने।

५ यहूदाह के राजा हेरोदेस के दिनों में अबियाह की पारीवालों में से जकरियाह नाम एक याजक था; उस की पत्नी हारून की पुत्रियों में से थी और उस का ६ नाम इलिसबा था। वे दोनों परमेश्वर के आगे धर्म्मी थे और प्रभु की सारी आज्ञाओं और रीतों पर ७ निर्दोष चलनेवाले थे। और उन के लड़का न था क्योंकि इलिसबा बांझ थी और वे दोनों बूढ़े थे।

और ऐसा ड़ुआ कि जब वह अपनी याजको जथा की पारी पर परमेश्वर के आगे याजक का कार्य्य करता था। और याजकता की रीति के समान उस की चिट्ठी निकली कि प्रभु के मन्दिर के भीतर जाके सुगन्ध जलावे। और लोगों की सारी मण्डली सुगन्ध जलाने के समय बाहर होके प्रार्थना कर रही थी। तब प्रभु का दूत सुगन्ध बेदी की दहिनी ओर खड़ा ड़ुआ उसे दिखाई दिया। जकरियाह उसे देखकर घबराया और बड़ुत डर गया। परन्तु दूत ने उस से कहा हे जकरियाह मत डर क्योंकि तेरी प्रार्थना सुनी गई और तेरी पत्नी इलिसबा तेरे लिये पुत्र जनेगी और तू उस का नाम यूहन्ना रखना। तुझे आनन्द और मंगल होगा और बड़ुत लोग उस के जन्म के कारण से मगन होंगे। क्योंकि वह प्रभु की दृष्टि में बड़ा होगा और दाखरस और मदिरा नहीं पीयेगा और वह अपनी माता के पेट ही से पवित्र आत्मा से भर जायगा। वह इसराएल के सन्तानों में से बड़ुतों को उन के प्रभु परमेश्वर की ओर फेरेगा। और वह इलियाह की आत्मा और सामर्थ्य से उस के आगे चलेगा कि पिताओं के मनों को पुत्रों की ओर और आज्ञा भंग करनेवालों को धर्म्मियों की बुद्धि की ओर फेरके प्रभु के लिये एक लोग तैयार करके बनावे। तब जकरियाह ने दूत से कहा मैं इस को कैसे जानूं क्योंकि मैं बूढ़ा हूं और मेरी पत्नी भी बूढ़ी है। दूत

८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९

ने उत्तर देके उस से कहा मैं गब्रियेल हूं जो पर-
मेश्वर के आगे खड़ा रहता है और मैं भेजा गया
कि तुझ से बोलूं और यह मंगल समाचार तेरे पास
२० पहुंचाटूं। और देख तू गूंगा हो जायगा और जिस
दिन लों ये बातें पूरी न हों तब लों तू बोल न सकेगा
इस लिये कि तू ने मेरी बातों को जो अपने समय में
२१ पूरी हो जायेंगीं बिश्वास न किया। और लोग जक-
रियाह के लिये ठहर रहे थे और अचंभा करते
थे कि वह मन्दिर में क्यों बिलम्ब करता है।

२२ और वह बाहर निकलके उन से बोल न सका तब
उन्हों ने जाना कि उस ने मन्दिर में कुछ दर्शन देखा
२३ था और वह उन्हें सैन करके गूंगा रह गया। ऐसा
हुआ कि जब उस की सेवकाई के दिन हो चुके तब
२४ वह अपने घर गया। और उन्हीं दिनों के पीछे उस
की पत्नी इलिसबा गर्भिणी हुई और यह कहके अप-
२५ ने को पांच महीने लों छिपाया। कि जिन दिनों में
प्रभु ने मुझ पर दृष्टि किई उन में उस ने मुझ से ऐसा
किया कि लोगों के आगे से मेरा अपमान मिटावे।

२६ और छठे महीने में गब्रियेल दूत परमेश्वर की
ओर से नसिरत नाम एक नगर में एक कुंवारी के पास
२७ भेजा गया। वह यूसफ नाम दाऊद के घराने के एक
पुरुष से बचनदत्त हुई और उस कुंवारी का नाम
२८ मरियम था। दूत ने उस पास आके कहा हे अति
अनुग्रहीत प्रणाम; प्रभु तेरे संग है; स्त्रियों में तू

धन्य है। वह उसे देखके उस की बात से घबराई २९
और सोचने लगी यह कैसा प्रणाम है। तब दूत ने ३०
उस से कहा हे मरियम मत डर क्योंकि परमेश्वर ने
तुझ पर अनुग्रह किया है। देख तू गर्भिणी होगी ३१
और एक पुत्र जनेगी और उस का नाम यिसू रखेगी।
वह महान होगा और अति महान परमेश्वर का पुत्र ३२
कहावेगा और प्रभु परमेश्वर उस के पिता दाऊद का
सिंहासन उसे देगा। और वह याकूब के घराने पर ३३
सदा राज्य करेगा और उस के राज्य का अन्त नहीं
होगा। तब मरियम ने दूत से कहा यह क्योंकर हो- ३४
गा कि मैं पुरुष को नहीं जानती। दूत ने उत्तर देके ३५
उस से कहा पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा और अति
महान परमेश्वर के सामर्थ्य की छाया तुझ पर होगी
इस लिये वह पवित्र बालक जो तुझ से उत्पन्न होगा
सो परमेश्वर का पुत्र कहावेगा। और देख तेरी ३६
कुटुम्ब इलिसबा को भी बुढ़ापे में पुत्र होनेवाला है
और यह उस का जो बांझ कहावती थी छठा महीना
है। क्योंकि परमेश्वर के लिये कोई बात अनहोनी ३७
नहीं है। तब मरियम बोली देख प्रभु की दासी; तेरे ३८
कहे के समान मेरे लिये होय; तब दूत उस के पास
से जाता रहा।

उन्हीं दिनों में मरियम उठके जल्दी से पहाड़ी ३९
देश को यहूदाह के एक नगर में गई। और जकरि- ४०
याह के घर में पहुंचके इलिसबा को प्रणाम किया।

४१ और ऐसा हुआ कि जोंहीं इलिसबा ने मरियम का प्रणाम सुना तोंहीं बालक उस के पेट में उछला और
४२ इलिसबा पवित्र आत्मा से भर गई। और बड़े शब्द से पुकारके कहा स्त्रियों में तू धन्य और तेरे गर्भ का
४३ फल धन्य। यह मेरे लिये कैसे हुआ कि मेरे प्रभु की
४४ माता मुझ पास आई। कि देख जोंहीं तेरे प्रणाम का शब्द मेरे कान तक पहुंचा तोंहीं बालक मेरे पेट में
४५ आनन्द के मारे उछला। तू जो बिश्वास लाई है धन्य है क्योंकि प्रभु की ओर से जो बातें उस से कही गई हैं सो पूरी हो जायेंगीं।

४६ तब मरियम बोली मेरा प्राण प्रभु की बड़ाई कर-
४७ ता है। और मेरा आत्मा मेरे मुक्तिदाता परमेश्वर
४८ से आनन्दित हुआ। क्योंकि उस ने अपनी दासी की छोटाई पर दृष्टि किई इस लिये देख अब से सब पी-
४९ ढ़ियों के लोग मुझे धन्य कहेंगे। क्योंकि जो सामर्थी है उस ने मुझ पर बड़ी कृपा किई और उस का नाम
५० पवित्र है। और जो उस से डरते हैं उन पर उस की
५१ दया पीढ़ी से पीढ़ी लों है। उस ने अपनी बांह का बल दिखलाया और जो अपने मन की भावना में अपने तईं बड़े जानते हैं उन को उस ने छिन्न भिन्न किया।
५२ बलवन्तों को उस ने उन के सिंहासनों पर से उतार
५३ दिया और दीनों को बढ़ाया। उस ने भूखों को अच्छी वस्तुओं से सन्तुष्ट किया और धनियों को खाली हाथ
५४ भेजा। जैसा उस ने हमारे पित्रों से अबिरहाम और

उस के बंश से सदा के लिये कहा था। वैसे उस ने अप- ५५
नी दया को स्मरण करके अपने दास इसराएल की
सहाय किई। और मरियम तीन महीने के लगभग ५६
उस के संग रहके फिर अपने घर को लौट गई।

अब इलिसबा के जनने के दिन पूरे हुए और वह ५७
एक पुत्र जनी। और उस के पड़ोसियों और कुटुम्बों ५८
ने सुना कि प्रभु ने उस पर बड़ी दया किई सो उन्हों ने
उस के संग आनन्द किया। और ऐसा हुआ कि वे ५९
आठवें दिन बालक का खतना करने को आये और
जैसा उस के पिता का नाम था वैसा उस का नाम जक-
रियाह रखा। परन्तु उस की माता ने उत्तर देके ६०
कहा कि नहीं उस का नाम यूहन्ना होगा। उन्हों ने ६१
उस से कहा तेरे घराने में कोई इस नाम का नहीं है।
तब उन्हों ने उस के पिता की ओर सैन किई कि वह ६२
उस का क्या नाम रखा चाहता है। उस ने पटिया ६३
मंगाके यह बात लिखी यूहन्ना उस का नाम है; इस से
उन सभों ने अचंभा किया। वोंहीं उस का मुंह और ६४
उस की जीभ खुल गई और वह बोलने लगा और
परमेश्वर की स्तुति किई। तब सारे आस पास के रह- ६५
नेवाले डर गये और यहूदाह के सारे पहाड़ी देश में
इन सब बातों की चर्चा फैल गई। और सब जो उसे ६६
सुनते थे सो अपने मन में सोचके कहते थे यह कैसा
लड़का होगा; और प्रभु का हाथ उस पर था।

तब उस का पिता जकरियाह पवित्र आत्मा से भर- ६७

६८ के यह भविष्यतवाणी बोला। प्रभु को जो इसराएल का परमेश्वर है धन्य हो क्योंकि उस ने अपने लोगों ६९ पर दृष्टि करके उन्हें छुटकारा दिया। और जैसा उस ने अपने पवित्र भविष्यतवक्ताओं के मुंह से जो जगत ७० के आरंभ से होते आये कहा था। वैसा उस ने अपने दास दाऊद के घराने में से निस्तार का सींग हमा- ७१ रे लिये निकलवाई। कि हम अपने शत्रुओं से और सब जो हम से बैर रखते हैं उन के हाथ से निस्तार ७२ पावें। कि अपनी दया जिस की उस ने हमारे पितरों से बाचा किई सो पूरी करे और अपने पवित्र नियम ७३ को। उस किरिया को जो उस ने हमारे पिता अबिर- ७४ हाम से किई सो स्मरण करे। कि वह हमें यह देगा ७५ कि हम अपने बैरियों के हाथों से छूटके। उस के आगे पवित्रताई और सच्चाई से अपने जीवन भर नि- ७६ डर उस की सेवा करें। और हे बालक तू अति महान परमेश्वर का भविष्यतवक्ता कहावेगा इस लिये कि तू ७७ प्रभु के आगे उस का मार्ग बनाते जायगा। कि निस्तार का ज्ञान कि जिस में उन के पापों की क्षमा हो सो ७८ उस के लोगों को देवे। यह हमारे परमेश्वर की कोमल दया से है कि जिस के कारण ऊपर का उदय ७९ हमारे पास आतरा है। जिस्तें जो अंधकार और मृत्यु की छाया में बैठे हैं उन को उजाला करे और हमारे पांवों को कुशल के मार्ग पर ले चले।

८० और वह लड़का बढ़ता और आत्मा में शक्ति पाता

गया और जब लों अपने तईं इसराएल को न दिखाया उस दिन लों बन में रहा॥

२ पर्व्व

उन्हीं दिनों में ऐसा हुआ कि कैसर औगुस्तुस की आज्ञा निकली कि हर एक देश के लोगों के नाम लिखे जायें। २ कुरेनियूस सूरिया के अध्यक्ष से यह पहिली नाम लिखाई हुई। ३ तब सब लोग अपने अपने नगर को नाम लिखाने चले। ४ और यूसफ भी गलील के नगर नासिरत से यहूदाह में दाऊद के नगर को जो बैतलहम कहावता है चला इस लिये कि वह दाऊद के घराने और सन्तान का था। ५ कि अपना और अपनी मंगेतर स्त्री मरियम का जो गर्भिणी थी नाम लिखावे। ६ ऐसा हुआ कि जब वे वहां थे तब उस के जनने के दिन पूरे हुए। ७ और वह अपना पहिलौटा पुत्र जनी और उस को कपड़े में लपेटके चरनी में रखा क्योंकि सरा में उन को जगह न मिली।

८ और उस देश में गड़रिये खेत में रहते थे वे रात को अपने झुण्ड की चौकी करते थे। ९ और देखो प्रभु का दूत उन पर प्रगट हुआ और प्रभु का तेज उन की चारों ओर चमका और वे बहुत ही डर गये। १० दूत ने उन से कहा डरो मत क्योंकि देखो मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूं वह सब लोगों के लिये है। ११ कि दाऊद के नगर में आज तुम्हारे लिये एक मुक्तिदाता उत्पन्न हुआ है सो मसीह प्रभु है। १२ और तुम्हारे लिये यह पता है कि

तुम बालक के कपड़े में लपेटा चरनी में पड़ा हुआ
१३ पाओगे। और एकाएक उस दूत के संग स्वर्गीय सेना
की एक मण्डली परमेश्वर की स्तुति करती और यह
१४ कहती प्रगट हुई। कि अत्यन्त ऊंचे पर परमेश्वर
की स्तुति और पृथिवी पर कुशल और मनुष्यों में
प्रसन्नता होवे।

१५ और ऐसा हुआ कि जब दूतगण उन के पास से
स्वर्ग के उठ गये थे तब गड़रियों ने आपस में कहा
आओ अब बैतलहम को चलें और जो बात हुई है
और जिसे प्रभु ने हम पर प्रगट किया है सो देखें।
१६ तब उन्हों ने जल्दी से आके मरियम और यूसफ को
१७ और चरनी में बालक को पड़ा हुआ पाया। और
देखके उस बात को जो बालक के विषय में उन से
१८ कही गई थी सो फैलाने लगे। और सब सुननेवाले
उन बातों से जो गड़रियों ने उन्हें कही थीं अचंभित
१९ हुए। परन्तु मरियम इन सब बातों को अपने मन में
२० स्मरण करके सोचती रही। और गड़रिये इन सब
बातों को सुनके और जैसा कि उन से कहा गया था
वैसा देखके परमेश्वर की स्तुति और बड़ाई करते
हुए लौट गये।

२१ जब आठ दिन पूरे हुए कि बालक का खतना करें
तब जैसा स्वर्गीय दूत ने उस के गर्भ में पड़ने से
पहिले कहा था वैसा उन्हों ने उस का नाम यिसू
रखा।

और जब मूसा की व्यवस्था के समान उन के पवित्र होने के दिन पूरे हुए तब वे बालक को प्रभु के आगे धरने को उसे यरूसलम में ले आये। जैसा कि प्रभु की व्यवस्था में लिखा है कि हर एक पहिलौटा बालक प्रभु को भेंट दिया जाय। और जैसा कि प्रभु की व्यवस्था कहती है कि पण्डुकियों का एक जोड़ा अथवा कपोतों के दो बच्चे बलिदान करना वैसा उन्हों ने किया। २२ २३ २४

और देखो यरूसलम में समऊन नाम एक मनुष्य था; वह सज्जन और धर्म्मी मनुष्य था और इसराएल की शांति की बाट जोहता था और पवित्र आत्मा उस पर था। और पवित्र आत्मा ने उसे बता दिया था कि जब लों तू ने प्रभु के मसीह को न देखा हो तब लों तू न मरेगा। वह आत्मा की शिक्षा से मन्दिर में आया और जब माता पिता बालक यिसू को भीतर लाये कि व्यवस्था की रीति के समान उस के लिये करें। तब उस ने उसे अपने हाथों में उठा लिया और परमेश्वर की स्तुति करके कहा। हे प्रभु अब तू अपने बचन के समान अपने दास को कुशल से बिदा करता है। क्योंकि मेरी आंखों ने तेरा निस्तार देखा है। कि जिसे तू ने सब लोगों के आगे तैयार किया है। वह अन्यदेशियों को प्रकाश देने के लिये ज्योति और तेरे लोग इसराएल का तेज है। तब यूसफ और उस की माता ने उन बातों से जो उस के विषय में २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३

३४ कही गई थीं अचंभा किया। और समऊन ने उन्हें आसीस दिई और उस की माता मरियम से कहा देख यही इसराएल में बहुतेरों के गिरने और उठने के कारण और बिरोध की लागी के लिये रखा हुआ ३५ है। [और तेरे ही प्राण के भीतर एक तलवार भी पैठेगी] कि बहुत लोगों के मनों की चिन्ताएं प्रगट हो जावें।

३६ और अशर के बंश में से फनुएल की पुत्री हन्नह नाम एक भविष्यतवक्ती थी वह बहुत बूढ़ी थी और अपने कुंवारीपन से सात बरस एक पति के संग ३७ निबाह किया था। वह बरस चौरासी एक की बिधवा थी और मन्दिर को न छोड़के उपवास और प्रार्थना ३८ करके रात दिन परमेश्वर की सेवा करती थी। उस ने उसी घड़ी आके प्रभु की स्तुति किई और जो यरूसलम में छुटकारे की बाट जोहते थे वह उन सभों से उस के विषय में बोली।

३९ और जब वे प्रभु की व्यवस्था के समान सब कार्य्य कर चुके तब गलील में अपने नगर नासिरत को ४० फिरे। और लड़का बढ़ता और ज्ञान से भरके आत्मा में शक्ति पाता गया और परमेश्वर का अनुग्रह उस पर था।

४१ अब उस के माता पिता बरस बरस फसह पर्व्व ४२ में यरूसलम को जाया करते थे। और जब वह बारह बरस का हुआ तब वे पर्व्व के व्यवहार पर यरूसलम

को गये। जब वे उन दिनों को पूरा करके फिर घर जाने लगे तब लड़का यिसू यरूसलम में पीछे रह गया पर यूसफ और उस की माता न जानते थे। परन्तु यह समझके कि वह संगी यात्रियों में होगा एक दिन का मार्ग गये और उसे कुटम्बों और चिन्हारों में ढूंढा। जब न पाया तब उस के खोज में यरूसलम को फिरे। और ऐसा हुआ कि तीन दिन पीछे उन्हों ने उसे मन्दिर में पण्डितों के बीच में बैठे हुए उन की सुनते और उन से प्रश्न करते हुए पाया। और सब जो उस की सुनते थे सो उस की समझ से और उस के उत्तरों से बिस्मित हुए। वे उसे देखकर अचंभित हुए और उस की माता ने उस से कहा हे पुत्र तू ने किस लिये हम से ऐसा किया; देख तेरा पिता और मैं हम दोनों कुढ़ते हुए तुझे ढूंढते थे। तब उस ने उन से कहा तुम क्यों मुझे ढूंढते थे; क्या यह नहीं जानते हो कि जो मेरे पिता का है उस में मुझे रहना है। पर यह बात जो उस ने उन से कही थी सो वे न समझे। और वह उन के संग चला जाके नासिरत में आया और उन के आधीन रहा परन्तु उस की माता ने इन सब बातों को अपने मन में रखा। और यिसू ज्ञान में और डील में और परमेश्वर की और मनुष्यों की कृपा में बढ़ता गया॥

४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२

३ पर्व्व

अब तिबेरियूस कैसर के राज्य के पन्द्रहवें बरस में जब पोन्तियूस पिलातूस यहूदाह का अध्यक्ष था

और हेरोदेस गलील का चौथअध्यक्ष था और उस का भाई फिलिप इतूरिया और त्रखोनीतिस देश का चौथअध्यक्ष था और जब लुसानियास अबिलेने का
२ चौथअध्यक्ष था। जब हन्ना और कायफा प्रधान याजक थे तब परमेश्वर की बात जकरियाह के पुत्र यूहन्ना
३ को बन में पहुंची। वह यर्दन के आस पास के सारे देश में आके पाप मोचन के लिये मन फिराने के
४ बपतिसमा का प्रचार करता था। जैसा कि यसइयाह भविष्यतवक्ता के बचनों की पुस्तक में लिखा है अर्थात बन में किसी का शब्द है यह पुकारता हुआ कि प्रभु
५ का मार्ग बनाओ और उस के पन्थ सीधे करो। हर एक नीचभूमि भरी जायगी और हर एक पहाड़ और टीला नीचा किया जायगा और जो टेढ़ा हो सो सीधा
६ बनेगा और बेहड़ पन्थ चौरस हो जायेंगे। और हर
७ एक जन परमेश्वर के निस्तार को देखेगा। तब उस ने उन लोगों से जो उस से बपतिसमा पाने को निकले थे कहा हे सांपों के बच्चो आनेवाले कोप से भागने
८ को तुम्हें किस ने चिताया। इस लिये फिरे हुए मन के योग्य फल लाओ और अपने अपने मन में मत कहने लगो कि अबिरहाम हमारा पिता है क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि परमेश्वर में यह सामर्थ्य है कि इन पत्थरों से अबिरहाम के लिये सन्तान उत्पन्न
९ करे। और अभी पेड़ों की जड़ पर कुल्हाड़ी लगी

है इस लिये जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता सो काटा जाता और आग में झोंका जाता है।

१० तब लोगों ने यह कहके उस से पूछा फिर हम क्या करें। ११ उस ने उत्तर देके उन से कहा जिस के पास दो वस्त्र हों सो उस को जिस के पास नहीं हो बांट दे और जिस के पास खाने को हो सो भी ऐसा ही करे। १२ तब करग्राहक लोग भी बपतिसमा पाने को आये और उस से कहा हे गुरु हम क्या करें। १३ उस ने उन से कहा जितना तुम्हारे लिये ठहराया गया उस से अधिक मत लेओ। १४ फिर सिपाहियों ने भी यह कहके उस से पूछा हम क्या करें ; उस ने उन से कहा किसी पर अंधेर मत करो झूठ अपबाद मत लगाओ और अपनी महिनवारी से सन्तोष करो।

१५ और जब लोग यूहन्ना के विषय में दुबधे में थे और सब अपने मन में बिचारने लगे कि क्या वह मसीह है कि नहीं। १६ तब यूहन्ना ने उत्तर देके सभों से कहा मैं तो तुम्हें जल से बपतिसमा देता हूं परन्तु मुझ से अधिक सामर्थी कोई आता है उस के जूतों का बन्ध मैं खोलने के योग्य नहीं हूं वह तुम्हें पवित्र आत्मा से और आग से बपतिसमा देगा। १७ उस के हाथ में सूप है और वह अपने खलिहान को अच्छी रीति से उसावेगा और गोहूं को अपने खत्ते में एकट्ठा करेगा परन्तु भूसी को उस आग में जो नहीं बुझती जलावे-

१८ गा। और वह लोगों को उपदेश देके बज्जत और बातों का मंगल समाचार सुनाता रहा।

१९ परन्तु हेरोदेस ने जो चौथअध्यक्ष था अपने भाई फिलिप की पत्नी हेरोदिया के कारण और अपनी सब बुराइयों के लिये जो उस ने किईं थीं यूहन्ना से

२० दोष पाया था। पर सभों पर अधिक उस ने यह भी किया कि उस ने यूहन्ना को बन्दीगृह में डाला।

२१ फिर ऐसा ज्जआ कि जब सब लोग बपतिसमा पा रहे थे और यिसू भी बपतिसमा पाकर प्रार्थना करता

२२ था तब स्वर्ग खुल गया। और पवित्र आत्मा शरीरिक रूप में कपोत के समान उस पर उतरा और यह आकाशवाणी ज्जई तू मेरा प्रिय पुत्र है तुझ से मैं अति प्रसन्न हूं।

२३ और यिसू बरस तीस एक का होने लगा और लोगों की समझ में वह यूसफ का पुत्र था; और यह

२४ हेली का पुत्र था। यह मत्तात का था; यह लावी का था; यह मल्की का था; यह यन्ना का था; यह यूसफ

२५ का था। यह मत्तातियाह का था; यह अमूस का था; यह नहूम का था; यह इसली का था; यह नग्गाई

२६ का था। यह मात का था; यह मत्ततियाह का था; यह समई का था; यह यूसफ का था; यह यहू-

२७ दाह का था। यह यूहन्ना का था; यह रेसा का था; यह सरुबाबल का था; यह सियालतियेल का था;

२८ यह नेरी का था। यह मल्की का था; यह अद्दी का

था ; यह कोसाम का था ; यह अलमोदाम का था ; यह
ईर का था। यह यूसी का था ; यह इलिअसर का था ; २९
यह यूराम का था ; यह मत्तात का था ; यह लावी का
था। यह समऊन का था ; यह यहूदाह का था ; यह यू- ३०
सफ का था ; यह यूनान का था ; यह इलियकीम का था।
यह मलिया का था ; यह मैनान का था ; यह मतथा का ३१
था ; यह नातन का था ; यह दाऊद का था। यह यस्सी ३२
का था ; यह ओबेद का था ; यह बुअस का था ; यह सल-
मून का था ; यह नहसून का था। यह अमिनदब का था ; ३३
यह आराम का था ; यह हसरून का था ; यह फारस
का था ; यह यहूदाह का था। यह याकूब का था ; ३४
यह इसहाक का था ; यह अबिरहाम का था ; यह
तारह का था ; यह नहूर का था। यह सरूग का था ; ३५
यह रऊ का था ; यह फलग का था ; यह ईबर का
था ; यह सिलाह का था। यह कीनान का था ; यह ३६
अर्फकसद का था ; यह सेम का था ; यह नूह का था ;
यह लामक का था। यह मतूसिलाह का था ; यह ३७
हनूख का था ; यह यारद का था ; यह महललियेल
का था ; यह कीनान का था। यह अनूस का था ; यह ३८
सेथ का था ; यह आदम का था ; यह परमेश्वर
का था॥

४ पर्व्व

और यिसू पवित्र आत्मा से भरा हुआ यर्दन से
फिरा और आत्मा से बन में पहुंचाया गया। और २
चालीस दिन लों वह शैतान से परीक्षा किया गया ;

उन्हीं दिनों में उस ने कुछ नहीं खाया और उन के
३ बीत जाने के पीछे वह भूखा हुआ। तब शैतान ने उस
से कहा यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो इस पत्थर
४ को कह कि रोटी बन जाय। यिसू ने उत्तर देके उस
से कहा यह लिखा है कि मनुष्य केवल रोटी से नहीं
५ परन्तु परमेश्वर की हर एक बात से जीता है। तब
शैतान ने उसे एक ऊंचे पहाड़ पर ले जाके जगत
६ के सब राज्य उसे एक क्षणभर में दिखाये। और
शैतान ने उस से कहा यह सारा अधिकार और उन
का विभव मैं तुझे देऊंगा क्योंकि वह मेरे हाथ में
सौंपा गया और जिसे चाहता हूं उसे मैं वह देता
७ हूं। इस लिये यदि तू मेरी पूजा करे तो वह सब तेरा
८ हो जायगा। यिसू ने उत्तर देके उस से कहा हे
शैतान मेरे साम्हने से जा क्योंकि लिखा है कि तू
प्रभु की जो तेरा परमेश्वर है पूजा कर और केवल
९ उसी की सेवा कर। तब वह उस को यरूसलम में
लाया और मन्दिर के कलश पर बैठाके उस से कहा
यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो अपने को यहां से
१० नीचे गिरा दे। क्योंकि लिखा है कि वह तेरे लिये
अपने दूतों को आज्ञा करेगा कि तेरी रक्षा करें।
११ और वे तुझे हाथों हाथ उठा लेंगे न हो कि तेरे
१२ पांव को पत्थर से ठेस लगे। यिसू ने उत्तर देके
उस से कहा यह कहा गया है कि तू प्रभु अपने
१३ परमेश्वर की परीक्षा मत कर। और जब शैतान

सारी परीक्षा कर चुका तब थोड़े समय लों उस से दूर रहा।

और यिसू आत्मा के सामर्थ्य से गलील को फिरा १४ और आस पास के सारे देश में उस की कीर्त्ति फैल गई। और उस ने उन की मण्डलीघरों में उपदेश १५ किया और सभों ने उस की स्तुति किई।

फिर नसिरत में जहां उस ने प्रतिपाल पाया था १६ वहां वह आया और अपने व्यवहार पर बिश्राम के दिन मण्डलीघर में प्रवेश करके बांचने को खड़ा हुआ। और यसइयाह भविष्यतवक्ता की पुस्तक उसे १७ दिई गई; उस ने पुस्तक खोलके उस स्थान को पाया जहां यह लिखा है। अर्थात प्रभु का आत्मा मुझ पर १८ है; उस ने मुझे इस लिये मसीह किया कि कंगालों को मंगल समाचार सुनाऊं; उस ने मुझे इस लिये भेजा कि जो टूटे मन हैं उन्हें चंगा करूं; जो बन्धुवे हैं उन्हें छूट जाने की और जो अन्धे हैं उन्हें फिर दृष्टि पाने की वार्त्ता सुनाऊं और जो बेड़ियों से घायल हुए उन्हें छुड़ाऊं। और प्रभु की प्रसन्नता का बरस १९ प्रचार करूं। तब पुस्तक को बन्द करके सेवक को २० देके वह बैठ गया और मण्डली के सब लोगों की आंखें उस पर लगी थीं। उस ने उन्हें कहना आरंभ २१ किया कि आज के दिन यही लिखा तुम्हारे सुनने में पूरा हुआ। और सभों ने उस पर साक्षी दिई और २२ उन कृपावन्त बातों से जो उस के मुंह से निकलीं अचं-

२३ भी कर के बोले क्या यह यूसफ का पुत्र नहीं है। उस ने उन से कहा निस्सन्देह तुम यह कहावत मुझे कहोगे वैद्य आप को चंगा कर; जो कुछ हम ने सुना है कि तू ने कफरनहूम में किया सो यहां अपने देश में २४ भी कर। परन्तु उस ने कहा मैं तुम से सच कहता हूं कोई भविष्यतवक्ता अपने देश में ग्रहण योग्य जाना २५ नहीं जाता है। मैं तुम से सच कहता हूं कि इलियाह के दिनों में जब साढ़े तीन बरस यहां लों मेघद्वार बन्द रहा कि सारे देश में बड़ा काल पड़ा तब २६ बहुत सी बिधवाएं इसराएल में थीं। तौ भी उन में से किसी के पास इलियाह न भेजा गया केवल सैदा २७ के सरफता में एक बिधवा के यहां भेजा गया। और इलीसा भविष्यतवक्ता के समय इसराएल में बहुत से कोढ़ी थे परन्तु नअमान सूरियानी को छोड़ उन में से कोई दूसरा पवित्र न किया गया।

२८ तब मण्डलीघर के सब लोग इन बातों को सुनके २९ क्रोध से भर गये। और उठके उस को नगर से बाहर निकाल दिया और पहाड़ की चोटी पर जिस पर उन का नगर बना था वहां उसे ले चले कि उसे औंधे ३० सिर ढकेल देवें। परन्तु वह उन के बीच में से निकलके चला गया।

३१ और वह गलील के एक नगर कफरनहूम में आया और बिश्राम के दिनों में उन्हें उपदेश दिया किया। ३२ और वे उस के उपदेश से अचंभित हुए क्योंकि उस

की बात अधिकार के संग थी। फिर एक मनुष्य कि जिसे अपवित्र पिशाच का आत्मा लगा था उन की मण्डलीघर में था; उस ने बड़े शब्द से पुकारके कहा। ३३
हे यिसू नासिरी रहने दे; तुझ से हमें क्या काम; क्या तू हमें नाश करने को आया है; मैं तुझे जानता हूं कि तू कौन है परमेश्वर का पवित्र जन। यिसू ने उस को डांटके कहा कि चुप रह और उस में से निकल आ; और पिशाच ने उस को बीच में पटकके बिना हानि बहुंचाय निकल आया। और वे सब अचंभित होके आपस में कहने लगे यह कैसी बात है क्योंकि वह अधिकार और सामर्थ्य से अपवित्र आत्माओं को आज्ञा करता है और वे निकल आते हैं। और आस पास के देश में सर्वत्र उस की कीर्त्ति फैल गई। ३४ ३५ ३६ ३७

वह मण्डलीघर में से उठ निकलके समऊन के घर गया और समऊन की सास को बड़ा ज्वर चढ़ा था और उन्हों ने उस के लिये उस से बिन्ती किई। उस ने उस के पास खड़ा होके ज्वर को डांटा और ज्वर उस पर से उतर गया और वोंहीं उस ने उठके उन की सेवा किई। ३८ ३९

और सूर्य्य डूबते सब लोग जिन पास नाना प्रकार के रोगों के रोगी लोग थे सो उन्हें उस के पास लाये और उस ने उन में से हर एक पर हाथ रखके उन को चंगा किया। और बहुतों में से पिशाच भी ४० ४१

पुकारके और यह कहके निकले तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है; पर उस ने उन्हें डांटके बोलने न
४२ दिया क्योंकि वे जानते थे कि यही मसीह है। और दिन होते हुए वह निकलके एक सूने स्थान में गया और लोग उसे ढूंढके उस पास आये और उसे उन
४३ के पास से चले जाने से रोका। परन्तु उस ने उन से कहा परमेश्वर के राज्य का मंगलसमाचार और ही नगरों में भी सुनाना हमें अवश्य है क्योंकि इसी
४४ कारण मैं भेजा गया हूं। और वह गालील के मण्डलीघरों में बचन को प्रचार करता रहा॥

५ पर्व्व

और ऐसा हुआ कि जब लोग परमेश्वर का बचन सुनने को उस पर भीड़ करते थे वह गिन्नेसरत की
२ झील के तीर खड़ा हुआ। और झील के तीर पर उस ने दो नावें लगी देखीं परन्तु मछवे उन पर से
३ उतरके अपने जालों को धो रहे थे। उस ने उन में से एक नाव पर जो समऊन की थी चढ़के उस से चाहा कि तीर से थोड़ी दूर ले जाय और वह बैठके लोगों को नाव पर से उपदेश देता था।

४ जब उपदेश दे चुका उस ने समऊन से कहा नाव को गहिरे में ले चल और मछली पकड़ने के लिये
५ अपना जाल डाल। समऊन ने उत्तर देके उस से कहा हे गुरु रात भर हम ने परिश्रम किया और कुछ नहीं पकड़ा तौभी तेरे कहने पर मैं जाल डालता
६ हूं। जब उन्हों ने ऐसा किया तब मछलियों का बड़ा

झुण्ड घेर आया ऐसा कि उन का जाल फटने लगा।
इस लिये उन्हों ने अपने साझियों को जो दूसरी नाव ७
पर थे सैन किई कि आके उन की सहायता करें; वे
आये और दोनों नावें यहां तक भरीं कि वे डूबने
लगीं। समऊन पथरस ने यह देखके यिसू के पांवों ८
पर गिरके कहा हे प्रभु मेरे पास से जा क्योंकि मैं
पापी जन हूं। इस लिये कि मछलियों के हाथ लगने ९
से वह और जो उस के संग थे सो विस्मित हुए।
और सबदी के पुत्र याकूब और यूहन्ना जो समऊन १०
के साझी थे सो भी विस्मित हुए; तब यिसू ने सम-
ऊन से कहा मत डर क्योंकि अब से लेके तू मनुष्यों
को पकड़ेगा। वे लोग नावें तीर पर लाके सब कुछ ११
छोड़के उस के पीछे हो लिये।

और जब वह किसी नगर में था तब देखो एक १२
मनुष्य जो कोढ़ से भरा हुआ था सो यिसू को देखके
औंधा गिरा और उस की बिन्ती करके कहा हे प्रभु
यदि तू चाहे तो मुझे पवित्र कर सक्ता है। उस ने १३
हाथ बढ़ाके उसे छूके कहा मैं चाहता हूं तू पवित्र
हो जा और वोंहीं उस का कोढ़ जाता रहा। और १४
उस ने उस को चिताके कहा किसी से मत कह परन्तु
जाके अपने तईं याजक को दिखा और तेरे पवित्र
होने के कारण जैसी मूसा ने आज्ञा किई है वैसी
तू भेंट चढ़ा कि वह उन पर साची होवे। परन्तु १५
उस की अधिक चर्चा फैल गई और बहुत से लोग

एकट्ठे ऊए कि उस की सुनें और अपने रोगों से उस
१६ से चंगे किये जावें। और उस ने बन में अलग जाके
प्रार्थना किई।

१७ और एक दिन ऐसा ऊआ जब वह उपदेश कर
रहा था कि गलील की और यहूदाह की हर एक
बस्ती से और यरूसलम से फरीसी और व्यवस्था के
ज्ञाता लोग आके वहां बैठे थे और लोगों को चंगा
१८ करने को प्रभु की सामर्थ्य प्रगट ऊई। और देखो
लोग एक मनुष्य को जो अर्द्धांगी था खटोले पर ले
आये और यह चाहते थे कि उसे भीतर लाके उस के
१९ आगे रखें। परन्तु जब भीड़ के कारण उन्हों ने उसे
भीतर ले जाने को अवसर न पाया तब वे कोठे पर
चढ़ गये और खपरैल से होके उस को खटोले
२० समेत बीच में यिसू के आगे उतार दिया। उस ने
उन का बिश्वास देखके उस से कहा हे मनुष्य तेरे
२१ पाप चमा किये गये हैं। इस पर अध्यापक और
फरीसी लोग बिचार करने लगे कि यह कौन है
कि परमेश्वर की निन्दा करता है; परमेश्वर को
२२ छोड़ कौन पापों को चमा कर सकता है। यिसू ने
उन की चिन्ताएं जानके उत्तर देके उन से कहा
तुम लोग अपने मनों में क्या बिचार करते हो।
२३ कौन बात सहज है यह कहना कि तेरे पाप चमा
२४ किये गये अथवा यह कहना कि उठ और चल। परन्तु
इस लिये कि तुम जानो कि मनुष्य के पुत्र को पृथिवी

पर पापों को क्षमा करने का अधिकार है (उस ने उस अर्द्धांगी से कहा) मैं तुझ से कहता हूं उठ और अपना खटोला उठाके अपने घर को जा। और वह तुरन्त उन के आगे उठा और जिस पर वह पड़ा था उसे लेकर परमेश्वर की स्तुति करते हुए अपने घर को चला गया। इस से सब लोग बहुत बिस्मित होके परमेश्वर की स्तुति करने लगे और बहुत ही डरके बोले आज हम ने अद्भुत बातें देखीं। २५ २६

इस के पीछे वह बाहर गया और लावी नाम एक करग्राहक को कर उगाहने के स्थान में बैठे देखा और उस से कहा मेरे पीछे हो ले। और वह सब कुछ छोड़के उठा और उस के पीछे हो लिया। और लावी ने उस के लिये अपने घर में बड़ी जेवनार किई और वहां बहुत से करग्राहक और और लोग थे और वे उन के संग खाने बैठ गये। तब वहां के अध्यापक और फरीसी लोग उस के शिष्यों से बखेड़ा करके कहने लगे तुम किस लिये करग्राहकों और पापियों के संग खाते पीते हो। यिसू ने उत्तर देके उन से कहा निरोगियों को नहीं परन्तु रोगियों को वैद्य का प्रयोजन है। मैं धर्म्मियों को नहीं परन्तु पापियों को मन फिराने के लिये बुलाने आया हूं। २७ २८ २९ ३० ३१ ३२

फिर उन्हों ने उस से कहा यूहन्ना के शिष्य क्यों बारबार उपवास और प्रार्थना करते हैं और वैसे ही फरीसियों के भी करते हैं परन्तु तेरे शिष्य तो खाते ३३

३४ पीते हैं। उस ने उन से कहा क्या तुम बराती लोगों को जब लों दूल्हा उन के संग है तब लों उपवास करा
३५ सकते हो। परन्तु वे दिन आवेंगे कि जिन में दूल्हा उन से अलग किया जायगा तब उन्हीं दिनों में वे उपवास करेंगे।

३६ और उस ने उन्हें एक दृष्टान्त भी कहा कोई मनुष्य कोरे थान का टुकड़ा पुराने वस्त्र में नहीं लगाता है नहीं तो वह कोरा टुकड़ा उसे फाड़ता है और कोरे थान का टुकड़ा पुराने से मेल भी नहीं खाता है।
३७ और कोई मनुष्य नये दाख रस को पुराने कुप्पों में नहीं भरता है नहीं तो नया दाख रस कुप्पों को
३८ फाड़के बह जाता है और कुप्पे नष्ट होते हैं। परन्तु नये दाख रस को नये कुप्पों में भरा चाहिये तब दोनों
३९ बचे रहेंगे। और कोई मनुष्य पुराना दाख रस पीके तुरन्त नया नहीं चाहता है क्योंकि वह कहता है कि पुराना इस से अच्छा है॥

६ पर्व्व

दूसरे बड़े बिश्राम दिन को यों हुआ कि वह अनाज के खेतों में से जाता था और उस के शिष्य बालें तोड़
२ तोड़ हाथों से मल मलके खाते थे। तब फरीसियों में से कोई कोई उन से कहने लगे जो काम बिश्राम दिनों में करना उचित नहीं है सो तुम लोग क्यों
३ करते हो। यिसू ने उत्तर देके उन से कहा दाऊद ने जब वह और उस के संगी भूखे थे तब उन्हों ने जो
४ किया क्या तुम ने वह नहीं पढ़ा है। परमेश्वर के घर

में जाके भेंट की रोटियां कि जिन का खाना केवल याजकों का उचित था सो उस ने लेके क्योंकर खाईं और अपने संगियों को भी दिईं। और उस ने उन से कहा मनुष्य का पुत्र बिश्राम दिन का भी प्रभु है। ५

फिर एक दूसरे बिश्राम दिन को भी ऐसा हुआ कि उस ने मण्डलीघर में जाके उपदेश किया और एक मनुष्य कि जिस का दहिना हाथ सूख गया था वहां था। पर अध्यापक और फरीसी लोग उस पर दोष लगाने के लिये उस की घात में लगे थे कि वह बिश्राम दिन में चंगा करेगा कि नहीं। उन की चिन्ताओं को जानके उस ने सूखे हाथवाले मनुष्य से कहा उठ और बीच में खड़ा हो; वह उठ खड़ा हुआ। फिर यिसू ने उन से कहा मैं एक बात तुम से पूछता हूं कि बिश्राम दिनों में क्या भला करना अथवा बुरा करना प्राण बचाना अथवा घात करना उचित है। और चारों ओर उन सभों पर देखके उस ने उस मनुष्य से कहा अपना हाथ बढ़ा; उस ने वैसा किया और उस का हाथ दूसरे के समान चंगा हो गया। तब वे सब बौरे से हो जाके आपस में कहने लगे हम यिसू को क्या करें। ६ ७ ८ ९ १० ११

और उन्हीं दिनों में ऐसा हुआ कि वह एक पहाड़ पर प्रार्थना करने को गया और परमेश्वर की प्रार्थना करने में रात बिताई। और जब दिन हुआ उस ने अपने शिष्यों को बुलाके उन में से बारह चुने और १२ १३

१४ उन का नाम प्रेरित रखा। सो ये हैं समऊन तिस का नाम उस ने पथरस भी रखा; और उस का भाई अन्द्रियास; याकूब और यूहन्ना; फिलिप और बर-
१५ तलमी। मत्ती और तोमा; और हलफी का पुत्र याकूब; और समऊन वह जिलोतिस भी कहावता है।
१६ और याकूब का भाई यहूदाह; और यहूदाह इसकरियत वह उस का पकड़वानेवाला भी हुआ।
१७ वह उन के संग उतरके चैागान में खड़ा हुआ और उस के सब शिष्य लोग और लोगों की बड़ी भीड़ जो उस की सुनने को और अपने रोगों से उस से चंगे होने को सारे यहूदाह और यरूसलम और सूर और सैदा के समुद्र तीर से उस पास आई थी सो
१८ वहां थी। और जो लोग अपवित्र आत्माओं से सताये
१९ गये सो भी आये और चंगे हो गये। और सब लोग उसे छूने चाहते थे क्योंकि उस से शक्ति निकलके सभों को चंगा करती थी।

२० फिर उस ने अपने शिष्योां की ओर देखके कहा तुम जो दीन हो सो धन्य हो क्योंकि परमेश्वर का
२१ राज्य तुम्हारा है। तुम जो अब भूखे हो सो धन्य हो क्योंकि तुम तृप्त किये जाओगे; तुम जो अब रोते हो
२२ सो धन्य हो क्योंकि तुम हंसोगे। जब मनुष्य के पुत्र के कारण लोग तुम से बैर रखें और तुम्हें निकाल दें और तुम्हारी निन्दा करें और तुम्हारा नाम बुरा
२३ जानके निकालें। उस दिन में आनन्दित होओ और

आनन्द करके उछल जाओ इस लिये कि देखो स्वर्ग में तुम्हारा बड़ा फल है क्योंकि उन के पितरों ने भविष्यतवक्ताओं से ऐसा ही किया। २४ परन्तु तुम पर जो धनी हो हाय है क्योंकि तुम अपनी शान्ति पा चुके। २५ तुम पर जो सन्तुष्ट हो हाय है क्योंकि तुम भूखे होओगे ; तुम पर जो अब हंसते हो हाय है क्योंकि तुम विलाप करोगे और रोओगे। २६ जब सब लोग तुम्हें भला कहें तब तुम पर हाय क्योंकि उन के पितरों ने झूठे भविष्यतवक्ताओं से ऐसा ही किया।

२७ परन्तु तुम जो सुनते हो मैं तुम से कहता हूं अपने बैरियों को प्यार करो ; जो तुम से लाग रखते हैं उन का भला करो। २८ जो तुम्हें सराप देवें उन्हें आसीस देओ ; और जो तुम्हें सतावें तुम उन के लिये प्रार्थना करो। २९ जो तुझे एक गाल पर थपेड़ा मारे उस को दूसरा भी फेर दे ; और जो कोई तेरा ओढ़ना उतार लेवे तू उसे अंगा भी लेने से मत रोक। ३० जो कोई तुझ से कुछ मांगे तू उसे दे और यदि कोई तेरी वस्तें ले लेवे तो तू उन्हें फिर मत मांग। ३१ और जैसा तुम चाहते हो कि लोग तुम से करें तुम वैसा ही उन से भी करो। ३२ क्योंकि यदि तुम अपने प्यार करनेवालों को प्यार करो तो तुम्हारी क्या बड़ाई है क्योंकि पापी लोग भी अपने प्यार करनेवालों को प्यार करते हैं। ३३ और जो तुम से भलाई करते हैं यदि तुम उन से भलाई करो तो तुम्हारी क्या बड़ाई है क्योंकि पापी

३४ लोग भी ऐसा ही करते हैं। और यदि इस आशा से कि हमें फिर मिलेगा तुम किसी को ऋण देओ तो तुम्हारी क्या बड़ाई है क्योंकि पापी भी पापियों
३५ को इस लिये ऋण देते हैं कि उतना फेर पावें। परन्तु तुम अपने बैरियों को प्यार करो और भला करो और फेर पाने की आशा छोड़कर ऋण देओ तो तुम्हारा बड़ा फल होगा और तुम अति महान परमेश्वर के पुत्र होओगे क्योंकि जो धनमानी नहीं हैं
३६ और जो बुरे हैं उन्हीं पर वह कृपालु है। इस लिये जैसा तुम्हारा पिता दयालु है वैसे तुम दयालु हो।
३७ दोष मत लगाओ तो तुम पर दोष न लगाया जायगा; अपराध किसी पर मत ठहराओ तो तुम पर अपराध न ठहराया जायगा; क्षमा करो तो तुम क्षमा किये
३८ जाओगे। देओ तो तुम्हें दिया जायगा; अच्छा परिमाण दाब दाबके हिला हिलाके उभरता हुआ लोग तुम्हारी गोद में देंगे क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो उसी से तुम्हारे लिये नापा जायगा।

३९ फिर उस ने उन से एक दृष्टान्त कहा क्या अन्धे का अगवा अन्धा हो सकता है; क्या दोनों गड़े में न गिर
४० पड़ेंगे। शिष्य अपने गुरु से बड़ा नहीं है परन्तु जब
४१ सिद्ध हुआ तब अपने गुरु के समान होगा। उस किरकिटी को जो तेरे भाई की आंख में है तू क्यों देखता है परन्तु उस लट्ठे को जो तेरी ही आंख में है तू नहीं
४२ देखता। फिर जब उस लट्ठे को जो तेरी ही आंख

में है तू नहीं देखता है तो तू अपने भाई से क्योंकर कह सकता है कि हे भाई जो किरकिटी तेरी आंख में है सो मैं निकालूं ; हे कपटी पहिले अपनी ही आंख में से लट्ठा बाहर कर तब तू फरछाई से देखके वह किरकिटी जो तेरे भाई की आंख में है निकाल सकेगा। ४३ क्योंकि अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं लाता न बुरा पेड़ अच्छा फल लाता है। ४४ क्योंकि हर एक पेड़ अपने फल से पहचाना जाता है इस लिये कि कांटों के पेड़ों से गूलर नहीं बटोरते हैं और न भटकटैया से दाख। ४५ उत्तम मनुष्य अपने मन के उत्तम भण्डार में से उत्तम बातें निकालता है और अधम मनुष्य अपने मन के अधम भण्डार में से अधम बातें निकालता है क्योंकि जो मन में भरा है सोई उस के मुंह पर आता है।

४६ तुम मुझे प्रभु प्रभु क्यों कहते हो और जो मैं कहता हूं सो तुम नहीं करते हो। ४७ जो कोई मेरे पास आता है और मेरे बचन सुनके उन्हें मानता है मैं तुम्हें बताता हूं कि वह किस की नाईं है। ४८ वह एक मनुष्य की नाईं है कि जिस ने घर उठाया और गहिरा खोदके चटान पर नेव डाली ; और जब बाढ़ आई तब उस घर पर धार का बड़ा तोड़ लगा पर उसे हिला न सका क्योंकि वह चटान पर उठाया गया था। ४९ परन्तु जो कोई सुनकर नहीं मानता है सो एक मनुष्य की नाईं है कि जिस ने बिना नेव डाले भूमि के ऊपर

घर उठाया; उस पर धार का बड़ा तोड़ लगा और वह झट गिर पड़ा और उस घर का बड़ा नाश ऊआ।

७ पर्ब्ब

और जब वह लोगों को अपनी सब बातें सुना चुका तब कफरनहूम में प्रवेश किया। २ और एक शतपति का दास जो उस का बज़त प्रिय था सो रोगी होके मरने पर था। ३ उस ने यिसू का नाम सुनके यहूदियों के प्राचीनों को उस पास भेजके उस से बिन्ती किई कि तू आके मेरे दास को चंगा कर। ४ उन्हों ने यिसू के पास आके उस से बज़त बिन्ती करके कहा वह इस के योग्य है कि तू उस पर यह करे। ५ क्योंकि वह हमारे लोगों से प्रेम करता है और उस ने एक मण्डलीघर हमारे लिये बनवाया है। ६ तब यिसू उन के संग चला; और जब वह उस के घर से बज़त दूर न रहा तब शतपति ने मित्रों से उस पास कहला भेजा कि हे प्रभु आप को दुःख न दे क्योंकि मैं इस योग्य नहीं कि तू मेरी छत तले आवे। ७ इस कारण मैं ने अपने को तेरे पास आने के योग्य न समझा परन्तु बात कह दे तो मेरा दास चंगा हो जायगा। ८ क्योंकि मैं भी पराधीन मनुष्य हूं और सिपाही मेरे बश में हैं और मैं एक से कहता हूं कि जा तो वह जाता है और दूसरे से कि आ तो वह आता है और अपने दास से कि यह कर तो वह करता है। ९ यिसू ने ये बातें सुनकर अचंभा किया और पीछे फिरके

लोगों से जो उस के पीछे आते थे कहा मैं तुम से कहता हूं कि मैं ने ऐसा बड़ा बिश्वास इसराएल में भी न पाया है। और जो भेजे गये थे जब वे घर में लौट आये तब उस रोगी दास को चंगा पाया। १०

और दूसरे दिन ऐसा हुआ कि वह नाईन नाम एक नगर को गया और उस के शिष्यों में से बहुतेरे और बहुत से और लोग उस के साथ चले। जब वह नगर के फाटक के निकट आया तब देखो लोग एक मृतक को बाहर लिये जाते थे; वह अपनी माता का कि विधवा थी एकलौता था और नगर के बहुत से लोग उस के संग थे। प्रभु ने उस को देखके उस पर दया किई और उस से कहा मत रो। और उस ने पास आके अर्थी को छुआ और उठानेवाले खड़े रहे; तब उस ने कहा हे तरुण मैं तुझ से कहता हूं उठ। और वह मृतक उठ बैठा और बोलने लगा और उस ने उसे उस की माता को सौंप दिया। इस से सब लोग डर गये और परमेश्वर की स्तुति करके बोले बड़ा भविष्यतवक्ता हम लोगों में उठा है और परमेश्वर ने अपने लोगों पर दृष्टि किई है। और उस की यह चर्चा सारे यहूदाह में और उस देश की चारों ओर फैल गई। ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७

और यहून्ना ने अपने शिष्यों से इन सब बातों का समाचार सुना। तब यहून्ना ने अपने शिष्यों में से दो को बुलाके यिसू पास कहला भेजा कि जो आने- १८ १९

वाला था क्या तू वही है अथवा हम दूसरे की बाट
२० जोहें। उन पुरुषों ने उस पास आके कहा यूहन्ना
बपतिसमा देनेवाले ने हम से तेरे पास कहला भेजा
है कि जो आनेवाला था क्या तू वही है अथवा हम
२१ दूसरे की बाट जोहें। वह उसी घड़ी बहुत लोगों को
उन के दुःखों से और रोगों से और दुष्ट आत्माओं से
चंगा करता था और बहुत से अन्धों को आंखें देता
२२ था। यिसू ने उत्तर देके उन से कहा जाके जो कुछ कि
तुम ने देखा और सुना है सो यूहन्ना से कहो कि अन्धे
देखते हैं लंगड़े चलते हैं कोढ़ी पवित्र होते हैं बहिरे
सुनते हैं मृतक जिलाये जाते हैं कंगालों को मंगल
२३ समाचार सुनाया जाता है। और जो मुझ से ठोकर
न खावे सो धन्य है।

२४ जब यूहन्ना के दूत चले गये थे तब वह यूहन्ना के
विषय में लोगों से कहने लगा बन में तुम लोग क्या
देखने को निकले; क्या एक नरकट पवन से हिलता
२५ हुआ। फिर तुम क्या देखने को निकले; क्या एक
मनुष्य को जो मिहीन वस्त्र पहिने है; देखो जो भड़-
कीले वस्त्र पहिनते और सुख बिलास में अपने दिन
२६ बिताते हैं सो राजभवनों में हैं। फिर तुम क्या देख-
ने को निकले; क्या एक भविष्यतवक्ता को हां मैं तुम
से कहता हूं कि एक जो भविष्यतवक्ता से श्रेष्ठ है।
२७ जिस के विषय में लिखा है कि देख मैं अपना दूत तेरे
आगे भेजता हूं वह तेरे मार्ग को तेरे आगे बना–

वेगा सो यही है। क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि जो स्त्रियों से उत्पन्न ज़ुए हैं उन में यूहन्ना बपतिसमा देनेवाले से कोई भविष्यतवक्ता बड़ा नहीं है परन्तु जो परमेश्वर के राज्य में छोटा है सो उस से बड़ा है। तबसब लोगों ने जो उस की सुनते थे और कर-ग्राहकों ने परमेश्वर को सच मानके यूहन्ना से बप-तिसमा लिया। परन्तु फरीसियों और व्यवस्था के ज्ञा-ताओं ने उस से बपतिसमा न लेके परमेश्वर के मत को अपने विषय में तुच्छ जाना। २८ २९ ३०

और प्रभु ने कहा इस समय के लोगों को मैं किस से उपमा देऊं और वे किस की नाईं हैं। वे बालकों की नाईं हैं जो हाट में बैठकर एकदूसरे को पुकारके कहते हैं हम ने तुम्हारे लिये बांसली बजाई है और तुम न नाचे; हम ने तुम्हारे लिये बिलाप किया है और तुम न रोये। क्योंकि यूहन्ना बपतिसमा देनेवा-ला न तो रोटी खाता न दाख रस पीता आया और तुम कहते हो कि उसे पिशाच लगा है। मनुष्य का पुत्र खाता और पीता आया है और तुम कहते हो कि देखो खाऊ और मद्यप; करग्राहकों और पापि-यों का मित्र। परन्तु ज्ञान अपने सब पुत्रों के आगे निर्दोष ठहरा है। ३१ ३२ ३३ ३४ ३५

फिर फरीसियों में से एक ने उस का नेवता किया कि उस के संग भोजन करे और वह फरीसी के घर में जाके खाने बैठा। और देखो उस नगर की एक स्त्री ३६ ३७

ने जो पापिन थी जब जाना कि यिसू फरीसी के घर में खाने बैठा है संगमरमर की डिबिया में सुगन्ध
३८ तेल लाई। और उस के पांवों के पीछे खड़ी होके रो रोके आंसुओं से उस के पांवों को धोने लगी और अपने सिर के बालों से पोंछके उस के पांवों को चूमा
३९ और उन पर वह सुगन्ध तेल डाला। जब फरीसी ने जिस ने उस का नेवता किया था यह देखा तब अपने मन में कहा यदि यह भविष्यतवक्ता होता तो जान जाता कि जो स्त्री उसे छूती है सो कौन और कैसी है
४० क्योंकि वह पापिन है। यिसू ने उत्तर देके उस से कहा हे समऊन मैं तुझ से कुछ कहा चाहता हूं;
४१ वह बोला हे गुरु कह। किसी धनिक के दो धारनिक थे एक पांच सौ सूकियों का और दूसरा पचास का।
४२ जब उन पास भर देने को कुछ नहीं था तब उस ने दोनों को क्षमा किया; अब उन में से कौन उस को
४३ अधिक प्यार करेगा सो मुझे बता। समऊन ने उत्तर देके कहा मेरे जानते जिस का उस ने बहुत क्षमा किया सो ही अधिक करेगा; तब उस ने उस से कहा
४४ तू ने ठीक बिचार किया। और स्त्री की ओर मुंह फेरके उस ने समऊन से कहा क्या तू इस स्त्री को देखता है; मैं तेरे घर आया और तू ने मुझे पांव धोने को पानी नहीं दिया परन्तु इस ने मेरे पांवों को आंसुओं से धोया और अपने सिर के बालों से पोंछा।
४५ तू ने मेरा चूमा नहीं लिया परन्तु जब से मैं यहां आया

तब से यह मेरे पांवों को चूम रही है। तू ने मेरे सिर पर तेल नहीं डाला परन्तु इस स्त्री ने मेरे पांवों पर सुगन्ध तेल डाला। इस लिये मैं तुझ से कहता हूं कि उस के पाप जो बहुत हैं सो क्षमा किये गये क्योंकि उस ने बहुत प्यार किया परन्तु जिस के थोड़े क्षमा किये गये उस का थोड़ा प्यार है। फिर उस ने स्त्री से कहा तेरे पाप क्षमा किये गये हैं। तब जो उस के संग भोजन पर बैठे थे सो अपने अपने मन में कहने लगे यह कौन है जो पापों को भी क्षमा करता है। और उस ने स्त्री से कहा तेरे विश्वास ने तुझे बचाया है कुशल से चली जा॥ ४६ ४७ ४८ ४९ ५०

८ पर्ब्ब

उस के पीछे यों हुआ कि वह नगर नगर और गांव गांव जाते हुए उपदेश करता और परमेश्वर के राज्य का मंगल समाचार सुनाता था और वे बारह उस के संग थे। और कितनी स्त्रियां जो दुष्ट आत्माओं और दुःखों से चंगी हुई थीं अर्थात मरियम जो मिगदाली कहावती थी और जिस से सात पिशाच निकाले गये थे। और हेरोदेस के भण्डारी कूजा की पत्नी यूहनह; और ससनह और और बहुतेरी स्त्रियां जो अपने द्रव्य से उस की सेवा करती थीं सो उस के संग हो लेती थीं। २ ३

और जब बड़ी भीड़ एकट्ठी हुई थी और नगर नगर से लोग उस के पास आये थे तब उस ने दृष्टान्त देके कहा। एक बोनेहारा बीज बोने को निकला और ४ ५

बोते ऊए कुछ मार्ग की ओर गिरा और रौंदा
६ गया और पंछियों ने उसे चुग लिया। और कुछ
पत्थर पर गिरा और उस के अंकुर निकले पर तरा-
७ वत उसे न पऊंचने से वह सूख गया। और कुछ कां-
टों के बीच में गिरा और कांटों ने उस के संग बढ़के
८ उसे दबा डाला। और कुछ अच्छी भूमि पर गिरा
और उगा और सौ गुणा फल लाया; जब यह बातें
कह चुका तब उस ने पुकारा जिस के कान सुनने
९ को हों सो सुने। उस के शिष्यों ने यह कहके उस
१० से पूछा इस दृष्टान्त का अर्थ क्या है। तब उस ने कहा
परमेश्वर के राज्य के भेद का ज्ञान तुम्हें तो दिया
गया है परन्तु औरों को दृष्टान्तों में दिया जाता है
कि वे देखते ऊए नहीं देखें और सुनते ऊए नहीं
११ समझें। अब दृष्टान्त का अर्थ यह है बीज परमेश्वर
१२ का बचन है। मार्ग की ओर के वे हैं जो सुनते हैं;
तब शैतान आता है और बचन को उन के मन में से
छीन लेता है न हो कि वे बिश्वास लाके निस्तार पावें।
१३ पत्थर पर जो बीज गिरा सो वे हैं जो बचन को सुनके
आनन्द से उसे ग्रहण करते हैं और जड़ नहीं रखने
से थोड़ी बेर बिश्वास करते हैं परन्तु परीक्षा के
१४ समय में फिर जाते हैं। और जो कांटों के बीच में
गिरा सो वे हैं कि सुनके चले जाते हैं और चिन्ता-
ओं से और धन से और जीवन के सुख बिलास से वे
१५ दब जाते और पक्का फल नहीं लाते हैं। परन्तु अच्छी

अब वहां पहाड़ पर सूअरों का एक बड़ा झुण्ड ३२ चरता था; सो उन्हों ने उस से बिन्ती किई हम को उन में पैठने दे; उस ने उन्हें जाने दिया। वे पिशाच ३३ मनुष्य से निकलके सूअरों में पैठे और वह झुण्ड कड़ाड़े पर से झील में कूद पड़े और डूब मरे। तब ३४ उस के चरवाहे इन बातों को देखके भागे और नगर में और गांवों में जाके इस का समाचार सुनाया। तब ३५ जो हुआ था उस को देखने को लोग निकलके यिसू के पास आये और उस मनुष्य को कि जिस से पिशाच निकल गये थे वस्त्र पहिने हुए यिसू के पांवों पर सज्ञान बैठे हुए पाया और डर गये। और जिन्हों ३६ ने देखा था उन्हों ने उन्हें बताया कि जिसे पिशाच लगा था सो किस रीति से चंगा हुआ। तब गदरियों ३७ के आस पास के देश के सब लोगों ने उस की बिन्ती किई कि हमारे यहां से निकल जा क्योंकि उन को बड़ा डर लगा था; सो वह नाव पर चढ़के फिर गया। अब जिस मनुष्य से पिशाच निकल गये थे उस ३८ ने उस की बिन्ती किई मैं तेरे संग रहूं परन्तु यिसू ने उसे यह कहके बिदा किया। कि अपने घर को लौट ३९ जा और जो कुछ परमेश्वर ने तुझ से किया है सो उन्हें बता; वह गया और जो कुछ यिसू ने उस से किया था सो सारे नगर में प्रचार किया।

और ऐसा हुआ कि जब यिसू फिर आया तब लो- ४० गों ने उस को आगे से लिया क्योंकि वे सब उस की

४१ बाट जोहते थे। और देखो कि याइरस नाम एक मनुष्य जो मण्डलीघर का प्रधान था आया और यिसू के पांवों पर गिरके उस से बिन्ती किई कि उस के
४२ घर पर चले। क्योंकि उस को एकलौती बेटी जो बरस बारह एक की थी सो मरने पर थी; और उस के जाते ज़ए लोग उस पर गिरे पड़ते थे।
४३ और एक स्त्री जिस को बारह बरस से लोहू बहने का रोग था और अपना सब धन वैद्यों को देके उठाया
४४ था परन्तु किसी से चंगी न ज़ई थी। उस ने पीछे से आके उस के वस्त्र का आंचल छूआ और तुरन्त उस
४५ का लोहू बहना बन्द हो गया। तब यिसू ने कहा किस ने मुझे छूआ; जब सब लोग मुकर गये तब पथरस और उस के संगियों ने कहा हे गुरु लोग तुझ पर गिरे पड़ते और तुझे दबाय लेते हैं फिर तू क्या कह-
४६ ता है किस ने मुझे छूआ। यिसू ने कहा किसी ने मुझे छूआ है क्योंकि मैं जानता हूं कि मुझ से शक्ति निक-
४७ ली है। जब स्त्री ने देखा कि छिप न सकी तब काम्प-ती ज़ई आई और उस के पांव पर गिरके सब लो-गों के आगे उसे बता दिया कि किस कारण से उस
४८ को छूआ था और कि तत्क्षण चंगी हो गई थी। उस ने उस से कहा हे पुत्री सुस्थिर हो तेरे बिश्वास ने तुझे चंगा किया है कुशल से जा।

४९ वह बोलता ही था कि मण्डलीघर के प्रधान के यहां से एक ने आके उस से कहा तेरी बेटी मर गई

सो गुरु को दुःख मत दे। परन्तु जब यिसू ने यह सुना ५० तो उत्तर देके उस से कहा मत डर केवल विश्वास कर तो वह चंगी हो जायगी। ५१ और जब वह घर में आया तो पथरस और याकूब और यूहन्ना और कन्या के माता पिता को छोड़ और किसी को भीतर जाने न दिया। ५२ और सब उस के कारण रोते पीटते थे परन्तु उस ने कहा रोओ मत वह मरी नहीं परन्तु सोती है। ५३ तब वे यह जानके कि वह मर गई है उस पर हंसे। ५४ उस ने सभों को बाहर करके उस का हाथ पकड़ा और पुकारके कहा हे कन्या उठ। ५५ और उस का प्राण फिर आया और वह तुरन्त उठी; और उस ने आज्ञा दिई कि उसे कुछ खाने को दो। ५६ तब उस के माता पिता विस्मित हुए पर उस ने उन से कहा यह जो हुआ है सो किसी से मत कहो॥

९ पर्व्व

उस ने अपने बारह शिष्यों को एकट्ठे बुलाके उन्हें सारे पिशाचों पर और रोगों को दूर करने को सामर्थ्य और अधिकार दिया। २ और उन्हें भेजा कि परमेश्वर के राज्य को प्रचार करें और रोगियों को चंगा करें। ३ और उस ने उन से कहा यात्रा के लिये कुछ मत लेओ न लाठी न झोली न रोटी न पैसे न दो दो अंगे। ४ और जिस किसी घर में तुम प्रवेश करो वहीं रहो और वहीं से सिधारो। ५ और जो कोई तुम्हें ग्रहण न करे तो जब तुम उस नगर से निकलो तब उन पर साक्षी होने के लिये अपने पांवों की धूल

६ झाड़ डालो। तब वे चल निकले और बस्ती बस्ती में मंगल समाचार सुनाते और सर्वत्र चंगा करते गये।

७ अब चौथअध्यक्ष हेरोदेस सब कुछ जो यिसू ने किया था सुनके घबराया क्योंकि कोई कोई कहते थे
८ कि यूहन्ना मृतकों में से जी उठा है। औरों ने कहा इलियाह प्रगट हुआ फिर औरों ने कि अगले
९ भविष्यतवक्ताओं में से एक फिर उठा है। पर हेरोदेस ने कहा यूहन्ना का तो मैं ने सिर कटवाया परन्तु यह जिस के विषय में मैं ऐसी बातें सुनता हूं सो कौन है और उस ने उसे देखने चाहा।

१० तब प्रेरितों ने फिर आके सब कुछ जो उन्हों ने किया था उस से कहा और वह उन को लेके एकान्त
११ में बैतसैदा नगर के एक सूने स्थान को चला। और लोग जब जान गये तब उस के पीछे हो लिये और उस ने उन्हें आने दिया और परमेश्वर के राज्य की बातें उन से किईं और जिन्हें चंगा होने का प्रयोजन था उन्हें चंगा किया।

१२ जब दिन ढलने लगा बारहों ने आके उस से कहा लोगों को विदा कर कि वे चारों ओर की बस्तियों और गांवों में जाके टिकें और खाने को पावें क्योंकि
१३ हम यहां सूने स्थान में हैं। परन्तु उस ने उन से कहा तुम ही उन्हें खाने को देओ; वे बोले हमारे पास पांच रोटियों और दो मछलियों से अधिक कुछ नहीं है तिस पर हां हम जाके इन सब लोगों के

लिये खाने को मोल लेवें। क्योंकि वे पांच सहस्र पुरुषों के लगभग थे; तब उस ने अपने शिष्यों से कहा पचास पचास की पांतियां बांधके उन्हें बैठाओ। उन्हों ने वैसा ही किया और सभों को बैठा दिया। तब उस ने उन पांच रोटियों और दो मछलियों को लेके स्वर्ग की ओर देखके धन्यवाद किया और तोड़के शिष्यों को दिया कि लोगों के आगे रखें। और उन्हों ने खाया और सब तृप्त ज़ए और जो टुकड़े बच रहे थे उन से उन्हों ने बारह टोकरियां भरके उठाईं। १४ १५ १६ १७

और यों ज़आ कि जब वह अकेला होके प्रार्थना करता था तब उस के शिष्य उस के संग थे; और उस ने उन से पूछा लोग क्या कहते हैं मैं कौन हूं। वे उत्तर देके बोले कि यूहन्ना बपतिसमा देनेवाला और कितने कि इलियाह और कितने कि अगले भविष्यतवक्ताओं में से एक फिर उठा है। उस ने उन से कहा फिर तुम क्या कहते हो मैं कौन हूं; पथरस ने उत्तर देके कहा तू परमेश्वर का मसीह है। तब उस ने उन्हें दृढ़ता से आज्ञा दिई कि यह बात किसी से मत कहो। और कहा मनुष्य के पुत्र को अवश्य है कि बज़त दुःख उठावे और प्राचीनों और प्रधान याजकों और अध्यापकों से तुच्छ किया जाय और मार डाला जाय और तीसरे दिन जी उठे। १८ १९ २० २१ २२

फिर उस ने सभों से कहा जो कोई मेरे पीछे आया चाहे सो अपनी इच्छा को मारे और प्रतिदिन अपना २३

२४ क्रूस उठावे और मेरे पीछे आवे। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाने चाहेगा सो उसे खोवेगा परन्तु जो कोई मेरे कारण अपना प्राण खोवेगा सो उसे
२५ बचावेगा। इस लिये कि यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे पर आप को खोवे अथवा वह नाश होवे तो
२६ उस को क्या लाभ होगा। क्योंकि जो कोई मुझ से और मेरी बातों से लजावेगा मनुष्य का पुत्र जब वह अपने और अपने पिता के और पवित्र दूतों के ऐश्वर्य्य
२७ में आवेगा तब उस से भी लजावेगा। और मैं तुम से सच कहता हूं कि जो यहां खड़े हैं उन में कितने हैं कि जब लों परमेश्वर के राज्य को न देख लें तब लों मृत्यु का स्वाद न चीखेंगे।

२८ और इन बातों से दिन आठ एक पीछे ऐसा हुआ कि वह पथरस और यूहन्ना और याकूब को लेके एक
२९ पहाड़ पर प्रार्थना करने को चढ़ गया। और उस के प्रार्थना करते हुए उस के मुंह का रूप और ही हो गया और उस का बस्त्र उजला होके चमकने लगा।
३० और देखो दो पुरुष अर्थात मूसा और इलियाह उस
३१ से वार्त्ता करते हुए। तेज में उसे दिखाई दिये और उस की मृत्यु के विषय की जो यरूसलम में पूरा होने
३२ पर था बातें करते थे। पर पथरस और उस के संगियों की आंखें नींद से भारी थीं और जब वे जागे तब उन्हों ने उस के ऐश्वर्य्य को और उन दो पुरुषों
३३ को जो उस के संग खड़े थे देखा। जब वे उस के पास

से जाते रहे तब पथरस ने यिसू से कहा हे गुरु हमारा यहां रहना अच्छा है हम तीन डेरे बनावें एक तेरे लिये और एक मूसा के लिये और एक इलियाह के लिये परन्तु वह न जानता था कि क्या कहता। ३४ वह यह कहता ही था कि एक मेघ ने आके उन पर छाया किई और उन के मेघ में जाने से ये डर गये। ३५ और मेघ में से यह कहते हुए एक शब्द निकला यह ३६ मेरा प्रिय पुत्र है उस की सुनो। और शब्द होते ही उन्हों ने यिसू को अकेला पाया और वे चुप रहे और जो कुछ उन्हों ने देखा था सो उन दिनों में उन्हों ने किसी से न कहा।

३७ और ऐसा हुआ कि दूसरे दिन जब वे पहाड़ पर ३८ से उतर आये तब बहुत लोग उस से आ मिले। और देखो भीड़ में से एक मनुष्य ने पुकारके कहा हे गुरु मैं तेरी बिन्ती करता हूं कि मेरे पुत्र पर दृष्टि कर ३९ क्योंकि वह मेरा एकलौता है। देख एक आत्मा उसे पकड़ता है और वह एकाएक चिल्लाता है और वह उसे ऐसा मरोड़ता है कि वह फेन बहाता है और वह उस को बलहीन करके कठिन से उस से निकल ४० जाता है। और मैं ने तेरे शिष्यों से बिन्ती किई कि ४१ उसे निकालें पर वे न सके। तब यिसू ने उत्तर देके कहा हे अविश्वासी और टेढ़े लोगो मैं कब लों तुम्हारे संग रहूं और तुम्हारी सहूं अपना पुत्र इधर ला। ४२ उस के आते ही पिशाच ने उसे पटकके मरोड़ा;

तब यिसू ने अपवित्र आत्मा को डांटा और बालक को
४३ चंगा करके उसे उस के पिता को सोंप दिया। और
सब लोग परमेश्वर के बड़े पराक्रम से विस्मित हुए
परन्तु जब वे उन कार्य्यों के लिये जो यिसू ने किये
४४ अचंभा करते थे तब उस ने अपने शिष्यों से कहा। ये
बातें कान धरके सुनो क्योंकि मनुष्य का पुत्र लोगों के
४५ हाथों में पकड़वाया जायगा। परन्तु वे यह बात न
समझे और वह उन से छिपी रही कि उन की बूझ
में न आई और वे इस बात के पूछने में उस से डरे।

४६ फिर वे आपस में विचार करने लगे कि हम में
४७ से बड़ा कौन है। यिसू ने उन के मनों का विचार जान-
४८ के एक बालक को लेकर अपने पास खड़ा किया। और
उन से कहा जो कोई इस बालक को मेरे नाम से
ग्रहण करे सो मुझे ग्रहण करता है और जो कोई
मुझे ग्रहण करे सो मेरे भेजनेवाले को ग्रहण कर-
ता है क्योंकि जो तुम में सब से छोटा है वही बड़ा
होगा।

४९ तब यूहन्ना ने उत्तर देके कहा हे गुरु हम ने एक
मनुष्य को तेरे नाम से पिशाचों को निकालते देखा
और उसे बर्जा क्योंकि वह हमारे संग नहीं हो लेता
५० था। यिसू ने उस से कहा उसे मत बर्जो क्योंकि जो
हमारे विरुद्ध नहीं है सो हमारी ओर है।

५१ और ऐसा हुआ कि जब उस के उठ जाने के दिन
निकट आये तब उस ने यरूसलम को जाने को अपना

मन दृढ़ किया। और अपने आगे दूत भेजे और उन्हों ५२
ने जाके समरून की एक बस्ती में आये कि उस के
लिये तैयार करें। परन्तु उन्हों ने उस को ग्रहण न ५३
किया इस कारण कि वह यरूसलम को जाने को था।
और उस के शिष्य याकूब और यूहन्ना ने यह देखके ५४
कहा हे प्रभु तेरी इच्छा होय तो जैसा इलियाह ने
किया था वैसे हम आज्ञा करें कि स्वर्ग से आग बरसे
और उन्हें भस्म कर डाले। परन्तु उस ने पीछे फिरके ५५
उन को धमकाके कहा तुम नहीं जानते हो कि तुम
में कौनसा आत्मा है। क्योंकि मनुष्य का पुत्र लोगों ५६
के प्राण नाश करने को नहीं परन्तु बचाने को आया
है; तब वे दूसरी बस्ती को गये।

और ऐसा हुआ कि जब वे मार्ग में चले जाते थे तब ५७
किसी मनुष्य ने उस से कहा हे प्रभु जहां कहीं तू जाय
मैं तेरे पीछे चलूंगा। यिसू ने उस से कहा लोमड़ियों ५८
के लिये मांदें हैं और पंछियों को खोंते हैं परन्तु
मनुष्य के पुत्र के लिये सिर धरने का स्थान नहीं है।
फिर उस ने दूसरे से कहा मेरे पीछे चला आ परन्तु ५९
उस ने कहा हे प्रभु मुझे जाने दे कि पहिले जाके अप-
ने पिता को गाड़ूं। यिसू ने उस से कहा मृतकों को ६०
अपने मृतकों को गाड़ने दे परन्तु तू जाके परमेश्वर
के राज्य का प्रचार। फिर किसी दूसरे ने भी कहा हे ६१
प्रभु मैं तेरे पीछे चलूंगा परन्तु पहिले मुझ को जाने
दे कि अपने घर के लोगों से बिदा हो आऊं। यिसू ६२

ने उस से कहा जो कोई अपना हाथ हल पर रखके पीछे देखे सो परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं है॥

१० पर्ब्ब

इन बातों के पीछे प्रभु ने सत्तर और भी ठहराये और जिस जिस नगर और जगह में वह आप जाया चाहता था वहां उन्हें दो दो करके अपने आगे भेजा। २ और उस ने उन से कहा पक्की खेती तो बहुत है परन्तु बनिहार थोड़े हैं इस लिये तुम खेत के स्वामी से बिन्ती करो कि वह अपने खेत काटने के लिये बनिहार भेजे। ३ जाओ देखो मैं तुम्हें लेलों की नाईं हुण्डारों के बीच में भेजता हूं। ४ न बटूआ न झोली न जूते संग लेओ और मार्ग में किसी को नमस्कार मत करो। ५ और जिस किसी घर में प्रवेश करो वहां पहिले कहो इस घर पर कल्याण। ६ और यदि कल्याण का पुत्र वहां होय तो तुम्हारा कल्याण उस पर ठहरेगा नहीं तो वह तुम हीं पर फिर आवेगा। ७ और उसी घर में रहो और जो कुछ वे तुम्हें देवें सो खाओ पीओ क्योंकि बनिहार अपनी बनी के योग्य है; घर घर मत फिरो। ८ और जिस जिस नगर में प्रवेश करो और वे तुम्हें ग्रहण करें जो कुछ वहां तुम्हारे आगे रखा जाय सो खाओ। ९ और वहां के रोगियों को चंगा करो और उन्हें कहो कि परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आया है। १० परन्तु जिस जिस नगर में तुम प्रवेश करो और वे तुम्हें ग्रहण न करें वहां से निकलके उन की सड़कों पर जाके कहो। ११ तुम्हारे

नगर की धूल भी जो हम पर पड़ी है हम तुम पर झाड़ डालते हैं तथापि यह निश्चय जानो कि पर-मेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आया है। मैं तुम से १२ कहता हूं कि उस दिन में उस नगर की दशा से सदूम की दशा सहज होगी। हे कुराजीन हाय तुझ पर; १३ हे बैतसैदा हाय तुझ पर; क्योंकि जो आश्चर्य्य कर्म्म तुम में किये गये यदि सूर और सैदा में किये जाते तो बहुत दिन बीते वे टाट पहिनके और राख में बैठके अपने पाप से पछता चुकते। परन्तु बिचार के १४ दिन में सूर और सैदा की दशा तुम्हारी दशा से सहज होगी। और हे कफरनहूम जो स्वर्ग लों ऊंचा किया १५ गया है तू नरक लों गिराया जायगा। जो तुम्हारी १६ सुनता है सो मेरी सुनता है; जो तुम्हारा अनादर करता है सो मेरा अनादर करता है फिर जो मेरा अनादर करता है सो मेरे भेजनेवाले का अनादर करता है।

वे सत्तर मगन होके फिर आये और बोले हे प्रभु १७ तेरे नाम से पिशाच भी हमारे बश में हैं। तब उस १८ ने उन से कहा मैं ने शैतान को बिजली की नाईं स्वर्ग से गिरते देखा। देखो सांपों और बिच्छुओं को रौंद- १९ ने पर और शत्रु के सारे पराक्रम पर मैं तुम्हें अधि-कार देता हूं और कोई किसी रीति से तुम्हें हानि न पहुंचा सकेगा। तिस पर भी आत्मा तुम्हारे बश में २०

जो हुए इस में आनन्द मत करो परन्तु तुम्हारे नाम स्वर्ग में जो लिखे हुए हैं इस में आनन्द करो।

२१ उसी घड़ी यिसू ने आत्मा में आनन्दित होके कहा हे पिता स्वर्ग और पृथिवी के प्रभु मैं तेरी स्तुति करता हूं कि तू ने इन बातों को ज्ञानियों और बुद्धिमानों से गुप्त रखा और बच्चों पर उन्हें प्रगट किया है

२२ हां हे पिता क्योंकि यही तुझ को अच्छा लगा। मेरे पिता ने सब कुछ मुझे सौंपा है और पिता को छोड़ कोई नहीं जानता है कि पुत्र कौन है और पुत्र को छोड़ कोई नहीं जानता है कि पिता कौन है और जिस पर पुत्र उसे प्रगट किया चाहे सो उसे भी जानता है।

२३ तब शिष्यों की ओर मुंह फेर के उस ने एकान्त में कहा जो आंखें वह देखते हैं जो तुम देखते हो सो

२४ धन्य। क्योंकि मैं तुम्हें कहता हूं कि जो कुछ तुम देखते हो सो बहुतेरे भविष्यतवक्ताओं और राजाओं ने देखने चाहा पर न देखा और जो कुछ तुम सुनते हो उस को सुनने चाहा पर न सुना।

२५ और देखो किसी व्यवस्था के ज्ञाता ने उठके उस की परीक्षा करने को पूछा कि हे गुरु अनन्त जीवन

२६ का अधिकारी होने को मैं क्या करूं। उस ने उस से

२७ कहा व्यवस्था में क्या लिखा है तू कैसे पढ़ता है। उस ने उत्तर देके कहा तू प्रभु अपने परमेश्वर को अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से और अपनी

सारी शक्ति से और अपनी सारी बुद्धि से प्यार कर और अपने पड़ोसी को अपने समान प्यार कर। २८ उस ने उस से कहा तू ने ठीक उत्तर दिया यही कर तो तू जीयेगा। २९ परन्तु उस ने अपने को धर्म्मी ठहराने की मनसा करके यिसू को कहा भला कौन मेरा पड़ोसी है।

३० यिसू ने उत्तर में कहा एक मनुष्य था कि जो यरूसलम से यरीहो को जाके डाकूओं में पड़ा; वे उसे नंगा और घायल करके उस को अधमूआ छोड़ गये। ३१ संयोग से एक याजक उस मार्ग से जा निकला और उसे देखकर वह साम्हने चला गया। ३२ वैसे ही एक लावी भी जब उस स्थान में पहुंचके उसे देखा तब साम्हने चला गया। ३३ परन्तु एक यात्री समरूनी वहां आया और उसे देखके दयाल हुआ। ३४ और जाके उस के घावों को तेल और मदिरा डालके बांधा और उसे अपने पशु पर बैठाके सरा में लाया और उस की टहल किई। ३५ दूसरे दिन जब चला गया तब उस ने दो सूकी निकालकर भठियारे को देकर उस से कहा उस की टहल कर और जो कुछ इस से अधिक तेरा लगेगा सो मैं फिर आके तुझे भर देऊंगा। ३६ अब जो डाकूओं में पड़ा था उस का पड़ोसी तू इन तीनों में से किस को जानता है। ३७ उस ने कहा जिस ने उस पर दया किई वही मैं जानता हूं; फिर यिसू ने उस से कहा तू जाके भी वैसा ही कर।

३८ और यों हुआ कि जाते जाते उस ने एक बस्ती में प्रवेश किया और मरतह नाम एक स्त्री ने उसे अपने घर में उतारा। ३९ और मरियम नाम उस की एक बहिन थी वह यिसू के पांवों पास बैठके उस की बार्त्ता सुनती थी। ४० तब मरतह बहुत सेवा टहल करने से ब्याकुल हुई और उस पास आके बोली हे प्रभु क्या तू कुछ चिन्ता नहीं करता है कि मेरी बहिन ने मुझे सेवा टहल करने में अकेली छोड़ा है इस लिये उसे कह दे कि काम में भी हाथ लगावे। ४१ यिसू ने उत्तर देके उस से कहा मरतह हे मरतह तू बहुत सी बातों की चिन्ता और घबराहट में है। ४२ परन्तु एक बस्तु आवश्यक है ; सो मरियम ने वह अच्छा भाग जो उस से फेर लिया न जायगा चुना है ॥

११ पर्ब्ब

और ऐसा हुआ कि वह किसी स्थान में प्रार्थना करता था ; जब कर चुका तब उस के शिष्यों में से एक ने उस से कहा हे प्रभु जैसा यूहन्ना ने अपने शिष्यों को प्रार्थना करना सिखाया वैसा हम को भी सिखा। २ उस ने उन्हें कहा जब तुम प्रार्थना करो तब कहो हे हमारे पिता जो स्वर्ग में है तेरा नाम पवित्र किया जाय तेरा राज्य आवे तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में वैसे पृथिवी पर होवे। ३ हमारे दिन भर की रोटी प्रतिदिन हमें दे। ४ और हमारे पापों को क्षमा कर कि हम भी हर एक को जो हमारा ऋणी है क्षमा करते हैं और हमें परीक्षा में न डाल परन्तु बुरे से बचा।

और उस ने उन से कहा तुम में से कौन है जिस का | ५
एक मित्र हो और वह आधी रात को उस पास जाके
कहे हे मित्र तीन रोटी मुझे उधार दे। क्योंकि मेरा | ६
एक मित्र यात्रा से मेरे यहां आया है और मेरे पास
उस के आगे धरने को कुछ नहीं है। पर वह भीतर | ७
से उत्तर देवे और कहे कि मुझे दुःख मत दे द्वार अब
मुन्द गया और मेरे बालक मेरे संग बिछौने पर हैं
मैं उठके तुझे दे नहीं सकता हूं। मैं तुम से कहता | ८
हूं कि यद्यपि वह उस के मित्र होने के कारण उसे
वह न देगा तथापि उस के लगातार गिड़गिड़ाने
के कारण वह उठके जितना वह चाहता है उतना
देगा। सो मैं तुम्हें कहता हूं मांगो तो तुम्हें दिया | ९
जायगा ढूंढो तो तुम पाओगे खटखटाओ तो तुम्हारे
लिये खोला जायगा। क्योंकि जो कोई मांगता है सो | १०
पाता है और जो ढूंढता है उस को मिलता है और
जो खटखटाता है उस के लिये खोला जायगा। तुम | ११
में से कौन ऐसा पिता है यदि उस का पुत्र उस से रोटी
मांगे कि उस को पत्थर दे; अथवा यदि वह मछली
मांगे क्या वह मछली के सन्ती उसे सांप देगा। अथवा | १२
यदि वह अण्डा मांगे क्या वह उसे बिच्छू देगा। सो | १३
यदि बुरे होके तुम अपने बालकों को अच्छे दान देने
जानते हो तो कितना अधिक तुम्हारा स्वर्गीय पिता
अपने मांगनेवालों को पवित्र आत्मा देगा।

और वह एक पिशाच को जो गूंगा था निकालता था | १४

और ऐसा ऊआ कि जब वह पिशाच निकल गया तब वह गंगा बोलने लगा और लोगों ने अचंभा किया।
१५ परन्तु उन में से कोई कोई बोले यह पिशाचों के प्रधान बालसबूल की सहायता से पिशाचों को निकालता है।
१६ औरों ने उस की परीक्षा करके आकाश का
१७ एक चिन्ह उस से देखने चाहा। परन्तु उस ने उन की चिन्ताएं जानके उन से कहा जिस जिस राज्य में फूट पड़े सो उजाड़ होता है और हर एक घर ऐसा होके
१८ भी उजड़ जाता है। यदि शैतान भी अपने बिरुद्ध उठके फूट करे तो उस का राज्य कैसे ठहरेगा; क्योंकि तुम कहते हो कि मैं बालसबूल की सहायता से पिशाचों को निकालता हूं।
१९ फिर यदि मैं बालसबूल की सहायता से पिशाचों को निकालता हूं तो तुम्हारे पुत्र किस की सहायता से निकालते हैं; सो वे तुम्हारे
२० न्यायी होंगे। परन्तु यदि मैं परमेश्वर के सामर्थ्य से पिशाचों को निकालता हूं तो निश्चय परमेश्वर का
२१ राज्य तुम पास आ पऊंचा है। जब कोई बलवन्त मनुष्य हथियार बांधके अपने घर की चौकी दे तब
२२ उस की सामग्री बची रहती है। परन्तु जब उस से कोई बलवन्त आके उस को जीते तब सारे हथियार जिस पर उस का भरोसा था छीन लेता है और उस
२३ की लूट को बांट देता है। जो मेरे संग नहीं है सो मेरे बिरुद्ध है और जो मेरे संग एकट्ठा नहीं करता
२४ सो बिथराता है। जब अपवित्र आत्मा मनुष्य से निकल

जाता है तब वह सूखे स्थानों में बिश्राम ढूंढता फिरता और नहीं पाता है ; तब कहता है मैं अपने घर में जहां से निकला हूं फिर जाऊंगा। और आके वह २५ उसे झाड़ा बुहारा पाता है। तब वह जाता है और २६ सात आत्मा जो उस से अधिक दुष्ट हैं अपने संग लाता और वे भीतर जाके वहां बास करते हैं तब उस मनुष्य की पिछली दशा अगली से अधिक बुरी होती है।

जब वह यह कह रहा था तब ऐसा हुआ कि उस २७ मण्डली में से एक स्त्री ने पुकार के उस से कहा धन्य वह गर्भ कि जिस में तू रहा था और वे स्तन कि जिन्हें तू ने चूसा है। परन्तु उस ने कहा जो लोग पर- २८ मेश्वर का बचन सुनते हैं और उसे मानते हैं सो धन्य ही धन्य।

जब बड़ी भीड़ होने लगी उस ने कहना आरंभ २९ किया कि इस समय के लोग बुरे हैं ; वे चिन्ह ढूंढते हैं परन्तु यूनह भविष्यतवक्ता के चिन्ह को छोड़ उन्हें कोई चिन्ह दिया न जायगा। क्योंकि जैसा यूनह नीन- ३० वेह के लोगों के लिये एक चिन्ह ठहरा वैसा मनुष्य का पुत्र भी इस समय के लोगों के लिये होगा। दक्षिण की रानी इस समय के मनुष्यों के संग न्याय के ३१ दिन में उठेगी और उन्हें दोषी ठहरावेगी क्योंकि वह पृथिवी के अन्त सिवाने से सुलेमान का ज्ञान सुनने को आई और देखो सुलेमान से भी बड़ा एक यहां

३२ है। नीनवेह के लोग न्याय के दिन में इस समय के लोगों के संग उठेंगे और उन्हें दोषी ठहरावेंगे क्योंकि उन्हों ने यूनह के उपदेश से मन फिराये और ३३ देखो यूनह से भी बड़ा एक यहां है। कोई मनुष्य दीपक बारके उसे छिपे स्थान में अथवा नान्द के तले नहीं परन्तु दीवट पर रखता है कि भीतर आनेवाले उजाला देखें। ३४ देह का दीपक आंख है इस लिये जब तेरी आंख निर्मल होय तब तेरी सारी देह उजाली होगी परन्तु जब बुरी होय तब तेरी सारी देह ३५ अन्धियारी होगी। इस लिये चैाकस रह ऐसा न हो ३६ कि जो उजाला तुझ में है सो अन्धियारा होय। सो यदि तेरी सारी देह उजाली हो कि कोई अंग अन्धियारा न रहे तो जैसा दीपक अपनी चमक से तुझे उजाला देता है वैसे वह सब उजाली होगी।

३७ और जब वह बात कर रहा था तब एक फरीसी ने उस से बिन्ती करके कहा मेरे संग भोजन कर और ३८ वह भीतर जाके खाने बैठा। और जब फरीसी ने देखा कि वह बिना पहिले धोये भोजन करता है तब ३९ अचंभा किया। प्रभु ने उस से कहा हे फरीसियो तुम कटोरे और थाली को बाहर बाहर शुद्ध करते हो परन्तु तुम्हारा भीतर अन्धेर और बुराई से भरा ४० हुआ है। हे मूर्खो जिस ने बाहर को बनाया क्या उस ४१ ने भीतर को भी बनाया कि नहीं। परन्तु जो तुम्हारा है उस का दान देओ और देखो सब कुछ तुम्हारे

लिये पवित्र होगा। परन्तु हे फरीसियो तुम पर हाय ४२
क्योंकि तुम पोदीने और सुदाब और हर एक तर्कारी
का दशांश देते हो और न्याव को और परमेश्वर के
प्रेम को चिन्ता नहीं करते हो इन्हें करना और उन्हें
न छोड़ना अवश्य था। हे फरीसियो तुम पर हाय ४३
क्योंकि तुम मण्डलीघरों में श्रेष्ठ आसन और हाटों
में नमस्कार चाहते हो। हे कपटी अध्यापको और ४४
फरीसियो तुम पर हाय क्योंकि तुम छिपी कबरों की
नाईं हो कि लोग जो उन के ऊपर चलते हैं सो नहीं
जानते हैं।

तब एक व्यवस्था के ज्ञाता ने उत्तर देके उस से ४५
कहा हे गुरु यह कहके तू हमारी भी निन्दा कर-
ता है। तब उस ने कहा हे व्यवस्था के ज्ञानियो तुम ४६
पर भी हाय क्योंकि तुम भारी बोझ जिन का उठा-
ना कठिन है मनुष्यों पर डालते हो पर तुम आप
उन बोझों को एक उंगली से नहीं छूते हो। तुम ४७
पर हाय क्योंकि तुम भविष्यतवक्ताओं की कबरें
बनाते हो और तुम्हारे पितरों ने उन्हें बध किया।
सो तुम अपने पितरों के कर्म्मों में प्रसन्न होने पर ४८
साची देते हो क्योंकि उन्हों ने तो उन्हें बध किया
और तुम उन की कबरें बनाते हो। इस लिये परमे- ४९
श्वर के ज्ञान ने भी कहा मैं भविष्यतवक्ताओं और
प्रेरितों को उन के पास भेजूंगा और वे उन में से
कितनों को बध करेंगे और सतावेंगे। कि सारे ५०

भविष्यतवक्ताओं का लोहू जो जगत के आरंभ से बहाया गया है सो इस समय के लोगों से लिया जाय।
५१ हाबिल के लोहू से लेके जकरियाह के लोहू तक जो बेदी और मन्दिर के बीच में मारा गया; मैं तुम से कहता हूं वह सब इस समय के लोगों से लिया जायगा।
५२ हे व्यवस्था के ज्ञानियो तुम पर हाय क्योंकि ज्ञान की कुंजी तुम ने अपनाई है; फिर तुम ने आप प्रवेश नहीं किया और प्रवेश करनेवालों को तुम ने बर्जा।
५३ जब वह ये बातें उन्हें कह रहा था तब अध्यापक और फरीसी लोग उसे खिजाने और उस से बक्रत बातें करवाने में बक्रत ही लगे रहे।
५४ और वे उस की घात तकके उस के मुंह की कोई बात पकड़ने चाहते थे जिसतें उस पर दोष लगावें॥

१२ पर्ब्ब

इतने में जब झुण्ड के झुण्ड एकट्ठे क्रए और लोग एक दूसरे पर गिरे पड़ते थे तब उस ने अपने शिष्यों से कहना आरंभ किया तुम सब से पहिले फरीसियों के खमीर से अर्थात कपट से परे रहो।
२ क्योंकि कोई वस्तु छिपी नहीं है जो प्रगट न होगी न कुछ गुप्त है जो जाना न जायगा।
३ इस कारण जो कुछ तुम ने अन्धियारे में कहा है सो उजाले में सुना जायगा और जो कुछ तुम ने कोठरियों में कानों कान कहा है सो कोठों पर से प्रचारा जायगा।
४ और हे मित्रो मैं तुम से कहता हूं जो शरीर को घात करते हैं और उस के पीछे और कुछ नहीं कर सकते हैं उन

से तुम डरो मत। परन्तु मैं तुम्हें बताता हूं कि किस से डरा चाहिये; जिस को मारने के पीछे नरक में डालने का अधिकार है उसी से तुम डरो हां मैं तुम से कहता हूं उसी से तुम डरो। क्या दो पैसे को पांच गौरे नहीं बिकते हैं; फिर परमेश्वर के आगे उन में से एक भी भूला हुआ नहीं है। और तुम्हारे सिर के बाल भी सब गिने हुए हैं इस लिये डरो मत क्योंकि तुम बहुतेरे गौरों से अधिक मोल के हो। और मैं तुम से कहता हूं जो कोई मनुष्यों के आगे मुझे मान लेगा मनुष्य का पुत्र भी उसे परमेश्वर के दूतों के आगे मान लेगा। परन्तु जो कोई मनुष्यों के आगे मुझ से मुकरेगा सो परमेश्वर के दूतों के आगे मुकरा जायगा। फिर जो कोई मनुष्य के पुत्र के विषय में बुरा कहता है वह उस को क्षमा किया जायगा परन्तु जो पवित्र आत्मा की निन्दा करता है उस को क्षमा नहीं किया जायगा। और जब वे तुम्हें मण्डलीघरों में और अध्यक्षों और पराक्रमियों के आगे पहुंचावें तो हम किस रीति से अथवा क्या उत्तर दें अथवा हम क्या कहें तुम इस की चिन्ता मत करो। क्योंकि जो कुछ तुम्हें कहना होगा सो पवित्र आत्मा उसी घड़ी तुम को बतावेगा। | ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२

तब लोगों में से एक ने उस से कहा हे गुरु मेरे भाई से कह कि वह बपौती का मेरा भाग मुझे दे। उस ने उस से कहा हे मनुष्य किस ने मुझे न्यायक | १३ १४

१५ अथवा बांटनेवाला तुम्हारे ऊपर ठहराया। और उस ने उन से कहा सुचेत रहो और लोभ से परे रहो क्योंकि किसी मनुष्य का जीवन उस के धन की अधिकाई से नहीं होता है।

१६ फिर उस ने उन्हें एक दृष्टान्त कहा कि एक धन-
१७ वान की खेती बहुत लगी थी। तब वह अपने मन में सोचने लगा मैं क्या करूं कि अपनी भूमि की बढ़ती
१८ रखने को मेरे पास समाव न रहा। फिर कहा मैं यह करूंगा मैं अपनी कोठियां ढाऊंगा और बड़ी बनाऊंगा और अपनी बढ़ती और संपत्ति सब वहीं
१९ एकट्ठी करूंगा। और अपने प्राण से मैं कहूंगा कि हे प्राण तेरे पास बहुत सी संपत्ति बहुत बरसों के लिये एकट्ठी धरी है; तू चैन कर खा पी और मगन
२० हो। परन्तु परमेश्वर ने उस से कहा हे मूर्ख इसी रात तेरा प्राण तुझ से लिया जायगा फिर जो कुछ
२१ तू ने बटोर लिया है सो किस का होगा। जो कोई अपने लिये धन बटोरता है और परमेश्वर की ओर धन रहित है उस की यही दशा है।

२२ फिर उस ने अपने शिष्यों से कहा इस लिये मैं तुम से कहता हूं अपने जीवन के लिये चिन्ता मत करो कि हम क्या खायेंगे और न देह के लिये कि हम
२३ क्या पहिनेंगे। खाने से अधिक तो जीवन और वस्त्र
२४ से अधिक तो देह है। कौवों को देखो वे न बोते हैं न लवते हैं; उन के न तो खलियान हैं न खत्ते हैं तो

भी परमेश्वर उन्हें खाने को देता है फिर तुम तो पंछियों से कहीं भले हो। तुम में से कौन है जो चिन्ता २५ करके अपने डील को हाथ भर बढ़ा सके। फिर २६ यदि तुम इतनी छोटी बात नहीं कर सकते हो तो और बातों के लिये क्यों चिन्ता करते हो। सोसन २७ के फूलों को देखो वे क्योंकर बढ़ते हैं वे परिश्रम नहीं करते हैं न वे सूत कातते हैं तिस पर भी मैं तुम से कहता हूं कि सुलेमान अपने सारे बिभव में इन में से एक के समान शोभित नहीं था। फिर यदि पर- २८ मेश्वर घास को जो आज खेत में है और कल चूल्हे में झोंकी जायगी ऐसी शोभित करता है तो हे अल्प बिश्वासियो क्या वह तुम्हें अधिक करके न पहिनावे- गा। और हम क्या खायेंगे अथवा क्या पीयेंगे इस की २९ चिन्ता मत करो और मत घबराओ। क्योंकि संसार ३० के लोग इन सब बस्तुओं का खोज करते हैं और तुम्हा- रा पिता जानता है कि तुम्हें इन का प्रयोजन है। परन्तु ३१ पहिले परमेश्वर के राज्य का खोज करो और ये सब बस्तें तुम्हें अधिक दिई जायेंगी। हे छोटे झुण्ड मत डर ३२ इस लिये कि तुम्हारे पिता की प्रसन्नता है कि तुम्हें राज्य देवे। जो कुछ तुम्हारा है सो बेचो और दान ३३ करो; थैलियां जो पुरानी नहीं होतीं और धन जो नहीं घटता सो स्वर्ग में जहां चोर नहीं आता और कीड़ा नहीं खाता है अपने लिये सहेजो। क्योंकि जहां तुम्हा- ३४ रा धन है तहां तुम्हारा मन भी लगा रहेगा।

३५ अपनी कमरें बन्धी रखो श्रोर अपने दीपक बरते ३६ रखो। श्रोर तुम ऐसे लोगें के समान होश्रो कि जो अपने स्वामी की बाट जोहते हैं कि वह बिवाह से कब फिर श्रावेगा कि जब वह श्राके खटखटावे तब ३७ वे उस के लिये तुरन्त द्वार खोलें। धन्य वे दास जिन्हें स्वामी अपने श्राने पर जागते पावे; मैं तुम से सच कहता हूं कि वह अपनी कमर बांधके उन्हें खाने ३८ बैठावेगा श्रोर श्राके उन की टहल करेगा। श्रोर यदि वह दूसरे पहर अथवा तीसरे पहर में श्रावे श्रोर ३९ उन्हें ऐसा करते पावे वे दास धन्य हैं। तुम यह जानो कि यदि घर का स्वामी जानता कि चोर किस पहर श्रावेगा तो वह जागता रहता श्रोर अपने घर में ४० सेंध देने न देता। इस लिये तुम भी तैयार रहो क्यों-कि जिस घड़ी तुम्हें सुरत न होगी उस घड़ी में मनुष्य का पुत्र श्रावेगा।

४१ तब पथरस ने उस से कहा हे प्रभु यह दृष्टान्त तू ४२ हम ही लोगें से अथवा सभों से कहता है। प्रभु ने कहा फिर वह सच्चा श्रोर बुद्धिमान भण्डारी कैान है कि जिसे प्रभु अपने दासें पर प्रधान करे कि उन्हें ४३ समय पर एक एक को भोजन देवे। धन्य वह दास है कि जिसे उस का स्वामी श्राके ऐसा करते पावे। ४४ मैं तुम से सच कहता हूं कि वह अपनी समस्त संपत्ति ४५ पर उसे प्रधान करेगा। परन्तु यदि वह दास अपने मन में कहे मेरा स्वामी श्राने में बिलम्ब करता है

और दासों और दासियों को मारने लगे और खाने पीने और मतवाला होने लगे। तो जिस दिन में वह ४६ बाट जोहता न हो और जिस घड़ी में उसे सुरत न हो उसी में उस दास का स्वामी आवेगा और उस को दो टुकड़े कर के उस का भाग अविश्वासियों के संग ठहरावेगा। जिस दास ने अपने स्वामी की ४७ इच्छा जानी परन्तु अपने को तैयार न रखा और उस की इच्छा के समान न किया सो बहुत मार खायगा। परन्त जिस दास ने नहीं जाना और मार खाने के ४८ योग्य का काम किया सो थोड़ी मार खायगा; सो जिस को बहुत दिया गया उस से बहुत लेखा लिया जायगा और जिसे बहुत सोंपा गया उस से लोग अधिक मांगेंगे।

मैं पृथिवी पर आग लगाने आया हूं और मैं क्या ४९ ही चाहता हूं कि लग चुकी होती। परन्तु मुझे एक ५० बपतिसमा पाना है और जब लों वह पूरा न हो ले तब लों मैं कैसी सकेत में हूं। क्या तुम समझते हो ५१ कि पृथिवी पर मैं मेल करवाने आया हूं मैं तुम से कहता हूं कि नहीं परन्तु फूटी करने को। क्योंकि ५२ अब से लेके एक घर के पांच मनुष्यों में से दो के बिरुद्ध तीन होंगे और तीन के बिरुद्ध दो होंगे। पुत्र के ५३ बिरुद्ध पिता होगा और पिता के बिरुद्ध पुत्र; पुत्री के बिरुद्ध माता और माता के बिरुद्ध पुत्री; बहू के बिरुद्ध सास और सास के बिरुद्ध बहू होगी।

५४ उस ने यह भी लोगों से कहा जब तुम पश्चिम से घटा उठती देखते हो तो झट कहते हो कि मेंह ५५ आता है और ऐसा ही होता है। और जब दखिनैया चलती है तब तुम कहते हो कि गरमी होगी और ५६ ऐसा ही होता है। हे कपटियो आकाश और पृथिवी का रूप तुम बूझ सकते हो पर इस समय को तुम ५७ क्यों नहीं बूझते। और तुम आप ही क्यों बिचार नहीं ५८ करते हो कि क्या ठीक है। जब तुझे तेरे बैरी के संग न्यायक के पास जाना है तो मार्ग में उस से छूट जाने का यत्न कर न हो कि वह तुझे न्यायक के आगे खींच ले जाय और न्यायक तुझे दण्डकारी को ५९ सोंपे और दण्डकारी तुझे बन्दीगृह में डाल दे। मैं तुझ से कहता हूं कि जब लों तू कौड़ी कौड़ी न भर दे तब लों तू किसी रीति से वहां से न छूटेगा॥

१३ पर्व्व

उस समय में वहां कितने लोग थे जो उन गलीलियों के विषय में कि जिन का लोहू पिलातूस ने उन के बलिदान के संग मिलाया था उस से कहते थे। २ यिसू ने उत्तर देके उन से कहा क्या तुम समझते हो कि ये गलीली सब गलीलियों से अधिक पापी ठहरे ३ कि ऐसा दुःख पाया। मैं तुम से कहता हूं कि नहीं परन्तु यदि तुम लोग मन न फिराओ तो तुम सब वैसे ४ ही नष्ट हो जाओगे। फिर वे अठारह मनुष्य जिन पर सिलोहा में गुम्मट गिरा और वे दब मरे क्या तुम समझते हो कि वे यरूसलम के सब रहनेवालों

से अधिक पापी ठहरे। मैं तुम से कहता हूं कि नहीं परन्तु यदि तुम मन न फिराओ तो तुम सब वैसे ही नष्ट हो जाओगे। ५

उस ने यह दृष्टान्त भी कहा किसी की दाख की बारी में गूलर का एक पेड़ लगा था और उस ने आके उस में फल ढूंढा पर नहीं पाया। तब उस ने माली से कहा देख तीन बरस से मैं इस गूलर के पेड़ का फल ढूंढता आया और कुछ नहीं पाता हूं; उसे काट डाल वह काहे को भूमि छेंक रखता है। उस ने उत्तर देके उस से कहा हे प्रभु यही बरस और उसे रहने दे कि मैं उस का थाला खोदूं और खाद डालूं। क्या जाने फलेगा नहीं तो पीछे उसे काट डाल। ६ ७ ८ ९

फिर बिश्राम दिन में वह एक मण्डलीघर में उपदेश देता था। और देखो एक स्त्री कि जो अठारह बरस से एक रोगात्मा के कारण से कुबड़ी हो गई थी और जो किसी रीति से सीधी न हो सकी सो वहां थी। यिसू ने उसे देखके बुलाया और उस से कहा हे स्त्री तू अपने रोग से छूट गई। उस ने अपने हाथ उस पर रखे और वोंहीं वह सीधी हो गई और परमेश्वर की स्तुति किई। फिर जो यिसू ने बिश्राम दिन में चंगा किया इस लिये मण्डलीघर का प्रधान क्रोधित होके लोगों से कहने लगा काम करने के लिये तो छः दिन हैं सो उन हीं में और न बिश्राम दिन में १० ११ १२ १३ १४

१५ तुम चंगा होने के लिये आना। तब प्रभु ने उत्तर देके उस से कहा हे कपटी क्या तुम में से हर एक बिश्राम दिन में अपने बैल और गधे को थान से नहीं खोलता
१६ और पानी पिलाने नहीं ले जाता है। फिर यह अबिरहाम की पुत्री है और देखो उसे शैतान ने अठारह बरस से बांध रखा था; क्या उसी को बिश्राम
१७ दिन में इस बन्धन से छुड़ाना उचित न था। और जब उस ने ये बातें कहीं तब उस के सब बैरी लज्जित ज़ए और सारी मण्डली उन सब बड़े कार्य्यों से जो उस ने किये थे आनन्दित ज़ई।

१८ फिर उस ने कहा परमेश्वर का राज्य किस बात
१९ की नाईं है और मैं उस को किस से उपमा देऊं। वह राई के दाने की नाईं है कि जिसे एक मनुष्य ने लेके अपने खेत में बोया; वह उगा और बड़ा पेड़ ज़आ और आकाश के पंछियों ने उस की डालियों पर आके बसेरा किया।

२० फिर उस ने कहा मैं परमेश्वर के राज्य को किस
२१ से उपमा देऊं। वह खमीर की नाईं है कि जिसे एक स्त्री ने लेके तीन पसेरी आटे में मिलाया यहां लों कि सब खमीरी हो गया।

२२ और वह यरूसलम को जाते ज़ए नगर नगर
२३ और गांव गांव फिर के उपदेश करता था। तब किसी ने उस से कहा हे प्रभु क्या मुक्ति पानेवाले थोड़े हैं।
२४ उस ने उन से कहा सकेत द्वार से प्रवेश करने को

तुम जो से परिश्रम करो क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि बक्तेरे लोग उस से प्रवेश करने चाहेंगे पर न सकेंगे। २५ जब घर के स्वामी ने उठके द्वार को मून्दा हो और तुम बाहर खड़े होके द्वार पर खटखटाने और कहने लगोगे कि हे प्रभु हे प्रभु हमारे लिये खोल और वह उत्तर देके तुम से कहेगा मैं तुम्हें नहीं जानता हूं कि तुम कहां के हो। २६ तब तुम कहने लगोगे कि हम ने तो तेरे आगे खाया पीया था और तू ने हमारे मार्गों में उपदेश किया था। २७ पर वह बोलेगा मैं तुम से कहता हूं कि मैं तुम्हें नहीं जानता हूं कि तुम कहां के हो हे कुकर्म्मियो तुम सब मुझ से दूर होओ। २८ जब तुम लोग अबिरहाम और इसहाक और याकूब को और सारे भविष्यतवक्ताओं को परमेश्वर के राज्य ही में और अपने को बाहर निकाले ऊए देखोगे तब वहां रोना और दांत पीसना होगा। २९ और लोग पूर्व और पश्चिम और उत्तर और दक्षिण से आवेंगे और परमेश्वर के राज्य में खाने बैठेंगे। ३० और देखो कितने जो पिछले हैं सो पहिले होंगे और जो पहिले हैं सो पिछले होंगे।

३१ उसी दिन कई फरीसियों ने आके उस से कहा कि निकल जा और यहां से सिधार क्योंकि हेरोदेस तुझे मार डालने चाहता है। ३२ उस ने उन से कहा जाके उस लोमड़ी से कहो कि देख मैं पिशाचों को निकालता हूं और आज और कल चंगा कर रहा हूं

३३ और परसों मेरा काम पूरा हो जायगा। तिस पर भी अवश्य है कि मैं आज और कल और परसों फिरा करूं क्योंकि भविष्यतवक्ता का यरूसलम से बाहर ३४ ही नाश होना अनहोनी बात है। हे यरूसलम यरूसलम तू भविष्यतवक्ताओं को बध करता है और जो तेरे पास भेजे गये उन्हें पथरवाह करता है मैं ने कितनी बेर चाहा कि जैसे कुक्कुटी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे एकट्ठे करती है वैसे ही मैं तेरे लड़कों को एकट्ठे करूं परन्तु तुम ने नहीं चाहा। ३५ देखो तुम्हारा घर तुम्हारे लिये उजाड़ छोड़ा जाता है और मैं तुम से सच कहता हूं कि जब लों वह समय न आवे कि तुम यह कहोगे धन्य वह जो प्रभु के नाम से आता है तब लों तुम मुझे न देखोगे॥

१४ पर्व्व

ऐसा हुआ कि जब वह बिश्राम दिन में प्रधान फरीसियों में से एक के घर रोटी खाने गया और वे उस २ की घात में थे। और देखो एक मनुष्य जिसे जलन्धर ३ था सो उस के आगे था। तब यिसू उत्तर में व्यवस्था के ज्ञानियों और फरीसियों से कहने लगा क्या बिश्राम ४ दिन में चंगा करना उचित है कि नहीं। वे चुप रहे; तब उस ने उस को पकड़के चंगा करके जाने दिया। ५ और उत्तर देके उन से कहा तुम में से किसी का गधा अथवा बैल गढ़े में गिर पड़े क्या वह उसे तुरन्त ६ बिश्राम दिन में न निकालेगा। वे उसे इन बातों का उत्तर न दे सके।

फिर जब उस ने नेवतहरियों को देखा कि वे क्योंकर श्रेष्ठ स्थानों को चुनते हैं तब उस ने उन्हें एक दृष्टान्त दे के कहा। जब कोई तुझे विवाह में बुलावे तब सब से ऊंचे स्थान मत बैठ ऐसा न हो कि उस ने तुझ से भी बड़ा किसी को बुलाया हो। और जिस ने उस को और तुझ को बुलाया है सो आके तुझ से कहे यह स्थान इसी को दे और तुझे लाज के संग नीचे स्थान में बैठना पड़े। परन्तु जब तेरा नेवता किया जावे तब जाके सब से नीचे स्थान में बैठ कि जब नेवतनहार आवे तो तुझ से कहे कि हे मित्र आ और ऊंचे स्थान में बैठ तब उन के आगे जो तेरे संग भोजन पर बैठे हैं तेरा आदरमान होगा। क्योंकि जो कोई अपने को बड़ा जानता है सो छोटा किया जायगा और जो कोई अपने को छोटा जानता है सो बड़ा किया जायगा। | ७ ८ ९ १० ११

तब उस ने अपने नेवतनहार से भी कहा जब तू खाना अथवा बियारी करे तब अपने मित्र और भाईबन्द और अपने कुटुम्ब और धनवान पड़ोसियों को मत बुला न हो कि वे भी तेरा नेवता करें और यों तेरा बदला हो जाय। परन्तु जब तू बड़ा खाना करे तब कंगालों को और टुण्डों को और लंगड़ों को और अन्धों को बुला। सो तू धन्य होगा क्योंकि उन के पास तेरा बदला देने को कुछ है नहीं पर धर्म्मियों के जीउठान में तुझे बदला होगा। नेवतहरियों में | १२ १३ १४ १५

से एक ने यह सुनके उस से कहा धन्य वह जो पर-
१६ मेश्वर के राज्य में रोटी खायगा। तब उस ने उस से
कहा किसी मनुष्य ने बड़ा खाना किया और बहुतों
१७ को बुलाया। और खाने के समय अपने दास को भेजा
कि नेवतहरियों से कहे आओ अब सब कुछ तैयार
१८ है। पर वे सब मिलके बातें बनाने लगे पहिले ने उस
से कहा मैं ने खेत मोल लिया है और मुझे वह देखने
को जाना है मैं तुझ से बिन्ती करता हूं तू मुझे क्षमा
१९ करवा। दूसरे ने कहा मैं ने पांच जोड़े बैल मोल लिये
हैं और मैं उन्हें परखने जाता हूं मैं तुझ से बिन्ती
२० करता हूं तू मुझे क्षमा करवा। तीसरे ने कहा मैं ने
विवाह किया है इस लिये मैं नहीं आ सकता हूं।
२१ उस दास ने आके अपने स्वामी को ये बातें कहीं;
तब घर के स्वामी ने क्रोधित होके अपने दास से कहा
झट नगर के मार्गों और गलियों में जा और कंगा-
लों और टुण्डों और लंगड़ों और अन्धों को यहां ले
२२ आ। दास ने कहा हे स्वामी जैसी तू ने आज्ञा किई
२३ वैसा ही हुआ है पर अब भी जगह है। स्वामी ने
दास से कहा सड़कों में और बाड़ों की ओर जा और
जैसे बने तैसे लोगों को ला जिसतें मेरा घर भर
२४ जाय। क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि जो लोग बुलाये
गये थे उन में से कोई मेरा खाना न चखने पावे-
गा।
२५ और बड़ी भीड़ उस के संग चली और उस ने उन

की ओर मुंह फेरके उन से कहा। यदि कोई मेरे पास आवे और अपने पिता से और माता से और स्त्री से और बालकों और भाइयों और बहिनों से हां और अपने प्राण से भी बैर न करे तो वह मेरा शिष्य नहीं हो सकता है। और जो कोई अपना क्रूस उठाके मेरे पीछे नहीं आता है सो मेरा शिष्य नहीं हो सकता है। क्योंकि तुम में से कौन है जो एक गुम्मट बनाया चाहे और पहिले बैठके उस की लागत का लेखा न लगावे कि देखे कि उसे तैयार करने को मेरे पास है कि नहीं। ऐसा न हो कि जब नेव डाली और तैयार न कर सका तब सब देखनेवाले उस की हंसी करके कहने लगें। यह मनुष्य बनाने लगा तो है परन्तु तैयार करने नहीं सका। फिर कौनसा राजा दूसरे राजा से संग्राम करने को चलेगा कि पहिले बैठके बिचार न कर ले कि मैं दस सहस्र लेके उस का जो बीस सहस्र लेके आता है सामना कर सकूंगा। नहीं तो जब भी दूसरा दूर हो तब वह दूतों को भेजकर मिलाप के लिये बिन्ती करेगा। इसी रीति से जो कोई तुम में से अपना सब कुछ न छोड़े सो मेरा शिष्य हो नहीं सकता। लोण अच्छा है परन्तु यदि लोण का स्वाद बिगड़ जाय तो वह किस से स्वादित किया जायगा। वह न खेत के न खाद के काम का है परन्तु वह फेंका जाता है; जिस के कान सुनने को हों सो सुने॥

२६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५

१५ पर्ब्ब
तब सब करग्राहक और पापी लोग उस की सुनने
२ को उस पास आये। और फरीसी और अध्यापक
लोग कुड़कुड़ाके कहने लगे यह मनुष्य पापियों को
३ ग्रहण करता और उन के संग खाना खाता है। उस
४ ने उन से यह दृष्टान्त कहा। तुम में से कौन मनुष्य
है कि उस को सौ भेड़ें हों और उन में से एक खो
जाय क्या वह निन्नानवे को चौगान में नहीं छोड़ता
और जब लों उस खोई हुई को नहीं पाता क्या तब
५ लों उसे नहीं ढूंढता फिरता है। और पाके वह
आनन्द करके उसे अपने कंधे पर उठा लेता है।
६ और घर में लौटके वह अपने मित्रों और पड़ोसि-
यों को एकट्ठे बुलाके उन से कहता है तुम मेरे संग
आनन्द करो क्योंकि मैं ने अपनी खोई हुई भेड़ पाई
७ है। मैं तुम से कहता हूं कि इसी रीति से एक पापी
के लिये जो मन फिरावे निन्नानवे धर्म्मियों से कि
जिन्हें मन फिराने का प्रयोजन नहीं है अधिक आनन्द
स्वर्ग में होगा।

८ फिर कौन स्त्री है कि उस की दस सूकी हों और
एक खो जाय क्या वह दीपक नहीं बारती और घर
को नहीं झाड़ती है और जब लों नहीं पाती क्या तब
९ लों ढूंढती नहीं फिरती है। और पाके वह मित्रों
और पड़ोसियों को बुलाके कहती है तुम मेरे संग
आनन्द करो क्योंकि मैं ने अपनी खोई हुई सूकी पाई
१० है। मैं तुम से कहता हूं कि इसी रीति से एक पापी

के कारण जो मन फिरावे परमेश्वर के दूतों के आगे आनन्द होता है।

फिर उस ने कहा किसी मनुष्य के दो पुत्र थे। ११ उन में से छोटे ने पिता से कहा हे पिता संपत्ति का १२ जो मेरा भाग है सो मुझे दे; तब उस ने उपजीवन उन्हें बांट दिया। बज्जत दिन न बीते छोटा पुत्र सब १३ कुछ एकट्ठा करके दूर देश को चल निकला और वहां अपनी संपत्ति कुकर्म्म करने में उड़ाई। जब वह १४ सब कुछ उड़ा चुका तब उस देश में बड़ा अकाल पड़ा और वह दरिद्र होने लगा। तब वह उस देश १५ के एक रहनेवाले के यहां जा लगा और उस ने उसे अपने खेतों में सूअर चराने भेजा। और जो छिलके १६ सूअर खाते थे उन से अपना पेट भरने की उस की लालसा थी पर कोई उसे नहीं देता था। और अप- १७ नी सुधि में आके उस ने कहा मेरे पिता के कितने बनिहारों की बज्जत ही रोटी है और मैं भूखों मर- ता हूं। मैं उठके अपने पिता पास जाऊंगा और उसे १८ कहूंगा कि हे पिता मैं ने स्वर्ग का और तेरा पाप किया है। और फिर तेरा पुत्र कहाने के मैं योग्य १९ नहीं हूं; सो मुझे अपने बनिहारों में से एक के समान रख। तब वह उठके अपने पिता पास चला और २० वह अभी दूर था कि उस के पिता ने उसे देखा और दया किई और दौड़के उस को गले लगा लिया और उसे चूमा। पुत्र ने उस से कहा हे पिता मैं ने स्वर्ग २१

का और तेरा पाप किया है और फिर तेरा पुत्र कहा-
२२ ने के योग्य नहीं हूं। पिता ने अपने दासों से कहा
अच्छे से अच्छा वस्त्र लाके उसे पहिनाओ और उस
२३ के हाथ में अंगूठी और पांवों में जूती दो। और पला
हुआ बछड़ा लाके मारो कि हम खावें और आनन्द
२४ करें। क्योंकि यह मेरा पुत्र मरा था अब जीया है वह
खो गया था अब मिला है; तब वे आनन्द करने लगे।
२५ अब उस का बड़ा पुत्र खेत में था; जब आया और
घर के निकट पहुंचा तब गाने और नाचने की धुनि
२६ सुनके। दासों में से एक को बुलाके उस से पूछा यह
२७ क्या है। उस ने उस से कहा तेरा भाई आया है और
तेरे पिता ने जब उस को भला चंगा पाया तब पला
२८ हुआ बछड़ा मारा। उस ने क्रोधी होके भीतर जाने
न चाहा इस लिये उस के पिता ने बाहर आके उसे
२९ मनाया। तब उस ने उत्तर देके पिता से कहा देख
इतने बरसों से मैं तेरी सेवा करता आया हूं और मैं
ने कधी तेरी आज्ञा न टाली और तू ने मुझे एक बक-
री का बच्चा भी कभी नहीं दिया कि मैं अपने मित्रों
३० के संग आनन्द करता। फिर जब यह तेरा पुत्र आया
कि जिस ने वेश्याओं की संगत में तेरा उपजीवन उड़ा
दिया है तब तू ने उस के लिये वह मोटा बछड़ा
३१ मारा। उस ने उस से कहा हे पुत्र तू सदा मेरे संग
३२ है और जो कुछ कि मेरा है सो तेरा है। पर आ-
नन्दित और मगन हुआ चाहिये क्योंकि यह तेरा

भाई मरा था और अब जीआ है वह खो गया था और अब मिला है।

उस ने अपने शिष्यों से यह भी कहा किसी धनवान मनुष्य का एक भण्डारी था; उसी पर लोगों ने उस के आगे उलहना दिया कि यह तेरी संपत्ति उड़ाता है। २ तब उस ने उसे बुलाके उस से कहा जो मैं तेरे विषय में सुनता हूं सो क्या है; अपने भण्डारीपन का लेखा दे कि आगे को तू भण्डारी न रहेगा। ३ भण्डारी ने अपने जी में कहा मैं क्या करूं क्योंकि मेरा स्वामी भण्डारीपन को मुझ से लेता है फौड़ा चलाना मुझ से हो नहीं सकता फिर भीख मांगने में मुझे लाज आती है। ४ अब जान गया कि मैं क्या करूं कि जब मैं भण्डारीपन से छोड़ाया जाऊं तब वे अपने घरों में मुझे रखें। ५ तिस पर उस ने अपने स्वामी के एक एक धारक को बुलाया और पहिले से पूछा तू मेरे स्वामी का कितना धारता है। ६ उस ने कहा कि सौ परिमाण तेल; तब उस ने उस से कहा अपनी बही ले और बैठकर जल्द पचास लिख। ७ फिर उस ने दूसरे से कहा तू कितना धारता है; उस ने कहा कि सौ परिमाण गेहूं; उस ने उस से कहा अपनी बही ले और अस्सी लिख। ८ तब स्वामी ने अधर्म्मी भण्डारी को सराहा इस लिये कि उस ने चतुराई किई क्योंकि इस संसार के लोग अपने चलन में उजाले के लोगों से बुद्धिमान हैं। ९ सो मैं तुम से कह-

ता हूं झूठे धन से तुम अपने लिये मित्र करो कि जब तुम जाते रहो तब वे तुम्हें अक्षय निवासें में जगह
१० दें। जो थोड़े में सच्चा है सो बहुत में भी सच्चा है और जो थोड़े में अधर्म्मी है सो बहुत में भी अधर्म्मी है।
११ इस लिये यदि तुम झूठे धन में सच्चे न ठहरो तो सच्चे
१२ को तुम्हें कौन सोंपेगा। और यदि तुम पराये की बस्तु में सच्चे न ठहरो तो तुम्हारा तुम्हें कौन देगा।
१३ कोई दास दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता है क्योंकि वह एक से बैर रखेगा और दूसरे से प्रेम अथवा वह एक को मानेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा; तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।

१४ और फरीसियों ने जो द्रव्य के लालची थे यह भी
१५ सुनके उस को ठट्ठों में उड़ाया। तब उस ने कहा तुम तो अपने तईं मनुष्यों के आगे धर्म्मी दिखाते हो तौ भी परमेश्वर तुम्हारे मनों को जानता है क्योंकि जो मनुष्यों के आगे बड़ा ठहरता है सो परमेश्वर की
१६ दृष्टि में घिणौना है। व्यवस्था और भविष्यतवक्ता यूहन्ना तक थे; तब से परमेश्वर के राज्य का मंगल समाचार सुनाया जाता है और बल से हर एक उस
१७ में प्रवेश करता है। और स्वर्ग और पृथिवी का टल जाना व्यवस्था की एक बिन्दु के मिट जाने से सहज
१८ है। जो कोई अपनी पत्नी को त्याग करे और दूसरी से बिवाह करे सो व्यभिचार करता है और जो कोई

उस से जो पति से त्यागी गई है बिवाह करे सो व्यभिचार करता है।

१९ एक धनवान मनुष्य था वह लाल और मिहीन बस्त्र पहिनता और प्रतिदिन बिभव से सुख बिलास करता था। २० और लाजर नाम एक भिखारी घावें से भरा हुआ था; उसे लोग उस की डेवढ़ी पर डाल जाते थे। २१ जो टुकड़े धनवान के मेज से गिरते थे उन से अपना पेट भरने की उस की लालसा थी फिर कुत्ते आके उस के घावें को चाटते थे। २२ ऐसा हुआ कि वह भिखारी मर गया और स्वर्गीय दूतों ने उसे उठाके अबिरहाम की गोद में रखा; वह धनवान भी मर गया और गाड़ा गया। २३ और नरक में अपनी आंखें उठाके उस ने अपने को पीड़ा में पाया और दूर से अबिरहाम को देखा और उस की गोद में लाजर को। २४ वह पुकारके बोला हे पिता अबिरहाम मुझ पर दया करके लाजर को भेज कि वह अपनी उंगली का सिरा जल में डुबोके मेरी जीभ ठण्डी करे क्योंकि मैं इस लौ में तड़फता हूं। २५ परन्तु अबिरहाम ने कहा हे पुत्र चेत कर कि तू अपने जीतेजी अपनी अच्छी बस्तें पा चुका है फिर लाजर बुरी बस्तें; सो वह अब शांति पाता है और तू तड़फता है। २६ और इन सभों से अधिक हमारे और तुम्हारे बीच में एक बड़ा गढ़ा है कि जो इधर से तुम्हारे पास जाया चाहें सो जा नहीं सकते हैं न उधरवाले इस पार हमारे

२७ पास आ सकते हैं। तब उस ने कहा फिर हे पिता मैं तेरी बिन्ती करता हूं कि तू उसे मेरे पिता के घर २८ भेज। क्योंकि मेरे पांच भाई हैं; वह उन को चितावे २९ न हो कि वे भी इस पीड़ा के स्थान में आवें। अबिर-हाम ने उस से कहा उन पास मूसा और भविष्यतवक्ता ३० हैं सो वे उन की सुनें। उस ने कहा नहीं हे पिता अबिरहाम परन्तु यदि मृतकों में से कोई उन के पास ३१ जाय तो वे मन फिरावेंगे। उस ने उस से कहा यदि वे मूसा और भविष्यतवक्ताओं की न सुनें तो यद्यपि मृतकों में से कोई उठे तथापि वे न मानेंगे॥

१७ पर्ब्ब

फिर उस ने शिष्यों से कहा ठोकरों का न आना अनहोनी बात है; परन्तु जिस मनुष्य के कारण से २ ठोकर आवें उस पर हाय। इन छोटों में से किसी को ठोकर खिलाने से उस के लिये यह भला होता कि चक्की का पाट उस के गले में लटकाया जाता और ३ वह समुद्र में फेंका जाता। चौकस रहो यदि तेरा भाई तेरा अपराध करे तो उसे जता दे और यदि ४ वह पछतावे तो उसे क्षमा कर। और यदि वह एक दिन में सात बार तेरा अपराध करे और एक दिन में सात बार फिर के कहे मैं पछताता हूं तो तू उसे ५ क्षमा कर। तब प्रेरितों ने प्रभु से कहा हमारा बिश्वास ६ बढ़ा। फिर प्रभु ने कहा यदि तुम्हें राई भर बिश्वास होता तो तुम इस गूलर के पेड़ से कहते कि जड़ से उखड़के समुद्र में लग जा और वह तुम्हारी मानता।

७ तुम में कौन है कि जिस का दास हल जोते अथवा गोरू बैल चरावे जब वह खेत से आवे क्या वोंहीं उस
८ से कहेगा कि अब जा और खाने बैठ। क्या वह उस से न कहेगा मेरी बियारी तैयार कर और जब लों खाऊं पीऊं तब लों कमर बांधके मेरी सेवा टहल कर और
९ पीछे तू आप खा पी। क्या उस की आज्ञा मानने से वह उस दास का धन्य मानेगा; मेरे जानते नहीं मानेगा।
१० वैसा ही तुम भी जब तुम सब कुछ जो तुम्हें आज्ञा किई गई है कर चुके तब कहो हम निकम्मे दास हैं क्योंकि जो हम को करना उचित था सो हम ने किया है।

११ और ऐसा हुआ कि वह यरूसलम को जाते हुए
१२ समरून और गलील के बीच से गया। और किसी बस्ती में प्रवेश करते हुए दस कोढ़ी उसे मिले जो दूर
१३ से खड़े थे। और वे पुकार उठे और बोले हे यिसू
१४ हे गुरु हम पर दया कर। उस ने देखके उन से कहा जाके अपने को याजकों को दिखाओ और ऐसा हुआ
१५ कि वे जाते जाते पवित्र हो गये। और उन में से एक ने जब देखा कि चंगा हुआ तब बड़े शब्द से परमेश्वर
१६ की स्तुति करता हुआ फिर आया। और उस का धन्य मानते हुए उस के पांवों पर मुंह के भल गिरा और
१७ यह समरूनी था। तब यिसू ने उत्तर देके कहा क्या
१८ दसों चंगे न हुए फिर वे नव कहां हैं। क्या इस परदेशी को छोड़ कोई न मिला कि फिर आके परमे-

१९ श्वर की स्तुति करे। और उस ने उस से कहा उठके चला जा तेरे बिश्वास ने तुझे चंगा किया।

२० और जब फरीसियों ने उस से पूछा कि परमेश्वर का राज्य कब आवेगा तब उस ने उन्हें उत्तर देके कहा परमेश्वर का राज्य दिखलावा से नहीं

२१ आता है। लोग न कहेंगे कि देखो वह यहां है अथवा देखो वह वहां है इस लिये कि देखो परमेश्वर

२२ का राज्य तुम में है। और उस ने शिष्यों से कहा वे दिन आवेंगे कि जब तुम मनुष्य के पुत्र के दिनों में से

२३ एक को देखा चाहोगे पर न देखोगे। और वे तुम से कहेंगे देखो यहां है अथवा देखो वहां है पर तुम

२४ मत निकलो और उन के पीछे मत जाओ। क्योंकि जैसे बिजली आकाश की एक दिशा से कौंधके आकाश की दूसरी दिशा लों चमकती है वैसा ही मनुष्य का

२५ पुत्र भी अपने दिन में होगा। परन्तु पहिले अवश्य है कि वह बहुत दुःख उठावे और इस समय के लो-

२६ गों से तुच्छ किया जाय। फिर जैसे नूह के दिनों में हुआ था वैसा ही मनुष्य के पुत्र के दिनों में भी हो-

२७ गा। जिस दिन लों कि नूह जहाज पर न चढ़ा तब लों लोग खाते थे पीते थे बिवाह करते थे बिवाह में देते थे; फिर जलमय आया और उन सभों को

२८ नाश किया। और जैसे लूत के दिनों में था कि लोग खाते थे पीते थे कीनते थे बेचते थे बोते थे और

२९ घर उठाते थे। परन्तु जिस दिन लूत सदूम में से

निकल गया तब आग और गंधक ने स्वर्ग से बरसके उन सभों को नाश किया। वैसा ही मनुष्य के पुत्र के ३० प्रगट होने के दिन में होगा। उस दिन में जो कोई ३१ कोठे पर हो और उस की सामग्री घर में सो उसे लेने को नीचे न उतरे; वैसे ही जो खेत में हो सो लौट न जावे। लूत की पत्नी को स्मरण करो। जो कोई ३२ ३३ अपना प्राण बचाने चाहेगा सो उसे खोवेगा और जो कोई अपना प्राण खोवेगा सो उसे बचावेगा। मैं ३४ तुम से कहता हूं कि उस रात में दो जन एक खाट पर होंगे एक पकड़ा जायगा दूसरा छूट जायगा। दो स्त्रियां एकट्ठी चक्की पीसतियां होंगी एक पकड़ी ३५ जायगी और दूसरी छूट जायगी। दो जन खेत में हों- ३६ गे एक पकड़ा जायगा और दूसरा छूट जायगा। तब ३७ उन्हों ने उत्तर देके उस से कहा कहां हे प्रभु; उस ने उन से कहा जहां कहीं लोथ है तहां गिद्ध एकट्ठे होंगे॥

१८ पर्व्व

फिर उस ने इस अर्थ का एक दृष्टान्त कहा कि उन को नित्य प्रार्थना करना और आलसी न होना अवश्य है। सो यह है किसू नगर में एक न्यायक था वह न २ तो परमेश्वर से डरता था न मनुष्य की चिन्ता कर- ता था। और उसी नगर में एक बिधवा थी वह उस ३ पास यह कहती हुई आई कि मेरे बैरी के हाथ से मेरा न्याव कर। उस ने कुछ दिन लों न चाहा परन्तु ४ पीछे उस ने अपने जी में कहा यद्यपि मैं परमेश्वर

से नहीं डरता हूं न मनुष्य की चिन्ता करता हूं।
५ तथापि यह बिधवा मुझे सताती है इस लिये मैं उस का न्याव करूंगा ऐसा न हो कि वह अपने फिर फिर
६ आने से मुझे हरा देवे। तब प्रभु बोला जो उस
७ अधर्म्मी न्यायक ने कहा है सो सुनो। फिर क्या परमेश्वर अपने चुने लोगों का जो रात दिन उस की दुहाई देते हैं न्याव न करेगा; क्या उन के लिये अबेर
८ करेगा। मैं तुम से कहता हूं कि वह उन का न्याव जल्द करेगा; तौ भी जब मनुष्य का पुत्र आवेगा क्या वह जगत में बिश्वास पावेगा।

९ फिर कितने लोग जो अपने पर भरोसा रखके जानते थे कि हम धर्म्मी हैं और औरों को तुच्छ
१० जानते थे उन के लिये उस ने यह दृष्टान्त कहा। दो मनुष्य एक फरीसी और दूसरा करग्राहक प्रार्थना
११ करने को मन्दिर में गये। फरीसी ने अलग खड़ा होके यह प्रार्थना किई कि हे परमेश्वर मैं तेरा धन्य मानता हूं कि जैसे और लोग लूटनेवाले अंधेर करनेवाले परस्त्रीगमन करनेवाले हैं अथवा जैसा यह
१२ करग्राहक है वैसा मैं नहीं हूं। अठवारे में दो बार मैं उपवास करता हूं मैं अपनी सारी प्राप्ति का दशांश
१३ देता हूं। फिर करग्राहक ने दूर से खड़ा होके अपनी आंखें स्वर्ग की ओर उठाने भी नहीं चाहा परन्तु अपनी छाती पीटके कहा हे परमेश्वर मुझ पापी
१४ पर दयाल हो। मैं तुम से कहता हूं कि यह मनुष्य

दूसरे से धर्म्मी ठहरके अपने घर गया क्योंकि हर एक जो आप को बड़ा जानता है सो छोटा किया जायगा और जो आप को छोटा जानता है सो बड़ा किया जायगा।

फिर वे छोटे बालक भी उस पास लाये कि वह उन्हें छूवे परन्तु शिष्यों ने यह देखके उन्हें डांटा। १५
तब यिसू ने उन्हें पास बुलाके कहा बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मत बर्जो क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों का है। मैं तुम से सच कहता हूं कि जो कोई छोटे बालक के समान परमेश्वर का राज्य ग्रहण न करे सो किसी रीति से उस में प्रवेश न करेगा। १६ १७

और किसी प्रधान ने उस से यह कहके पूछा हे उत्तम गुरु मैं क्या करूं कि अनन्त जीवन का अधिकारी होऊं। यिसू ने उस से कहा तू मुझे उत्तम क्यों कहता है; उत्तम तो कोई नहीं केवल एक अर्थात परमेश्वर। तू आज्ञाओं को जानता है कि व्यभिचार मत कर हत्या मत कर चोरी मत कर झूठी साची मत दे अपने माता पिता का संमान कर। उस ने कहा मैं अपने लड़कपन से यह सब मानता आया। यिसू ने यह सुनके उस से कहा एक बात तुझे और चाहिये जो कुछ कि तेरा है सो बेच डाल और कंगालों को बांट दे तब स्वर्ग में तू धन पावेगा और आके मेरे पीछे हो ले। वह यह सुनके बहुत उदास १८ १९ २० २१ २२ २३

२४ ऊआ क्योंकि वह बड़ा धनी था। यिसू ने उसे बऊत उदास देखके कहा धनवानों को परमेश्वर के राज्य
२५ में प्रवेश करना कैसा कठिन है। क्योंकि सूई के नाके से ऊंट का पैठना उस से सहज है कि एक धनवान
२६ मनुष्य परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करे। तब सुननेवाले
२७ बोले फिर किस का त्राण हो सकता है। उस ने कहा जो बातें मनुष्यों से अनहोनी हैं सो परमेश्वर से हो सकती हैं।

२८ पथरस ने कहा देख हम ने तो सब कुछ छोड़ा
२९ और तेरे पीछे हो लिये हैं। उस ने उन से कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि जिस ने घर अथवा माता पिता अथवा भाइयों अथवा पत्नी अथवा लड़के बालों
३० को परमेश्वर के राज्य के लिये छोड़ा है। उन में कोई नहीं है कि जो अब इस समय में उस से कहीं अधिक और परलोक में अनन्त जीवन न पावेगा।

३१ फिर उस ने बारहों को संग लेके उन से कहा देखो हम यरूसलम को जाते हैं और सब बातें जो भविष्यतवक्ताओं ने मनुष्य के पुत्र के विषय में लिखी
३२ हैं सो पूरी होंगी। क्योंकि वह अन्यदेशियों के हाथ सोंपा जायगा; वे उस को ठट्ठों में उड़ावेंगे और
३३ दुर्दशा करेंगे और उस पर थूकेंगे। और उस को कोड़े मारेंगे और घात करेंगे और तीसरे दिन वह
३४ जी उठेगा। पर वे ये बातें कुछ न समझे और वह

बचन उन से छिपा रहा और वह उन को बूझ में न आया।

३५ ऐसा हुआ कि जब वह यरीहो के निकट आया तब एक अन्धा मार्ग की ओर बैठे भीख मांगता था। ३६ और भीड़ के जाने की आहट सुनकर उस ने पूछा ३७ कि क्या है। उन्हों ने उस से कहा यिसू नासिरी चला ३८ जाता है। तब उस ने पुकारा हे दाऊद के पुत्र यिसू ३९ मुझ पर दया कर। और जो आगे जाते थे उन्हों ने उसे घुरका दिया कि चुप रहे परन्तु उस ने बहुत अधिक पुकारा हे दाऊद के पुत्र मुझ पर दया कर। ४० तब यिसू ने खड़ा होके कहा उस को मेरे पास लाओ; ४१ और जब वह पास आया उस ने उस से पूछा। तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूं; वह बोला हे प्रभु ४२ मैं अपनी आंख पाऊं। यिसू ने उस से कहा कि पाईं ४३ तेरे बिश्वास ने तुझे चंगा किया है। वोंहीं उस ने अपनी आंखें पाईं और परमेश्वर की स्तुति करता हुआ उस के पीछे हो लिया और सब लोगों ने यह देखके परमेश्वर की स्तुति किई॥

१९ पर्ब्ब

और यिसू यरीहो में प्रवेश कर के चला जाता था। २ और देखो जकी नाम एक धनी पुरुष और करग्राह- ३ कों का प्रधान था। उस ने यिसू को देखने चाहा कि वह कौन है परन्तु भीड़ के कारण देख न सका क्योंकि ४ वह नाटा था। तब वह आगे दौड़के एक गूलर के पेड़ पर चढ़ा कि उसे देखे क्योंकि उस को उधर से

५ जाना था। जब यिसू उस स्थान में पहुंचा उस ने आंखें ऊपर उठाके उसे देखा और उस से कहा हे जक्की जल्द उतर आ क्योंकि आज तेरे घर में रहना मुझे
६ अवश्य है। वह जल्दी से उतरा और आनन्द से उस
७ को अपने घर में लाया। जब लोगों ने देखा तब सब कुड़कुड़ाके कहने लगे वह एक पापी पुरुष के यहां
८ जा उतरा है। और जक्की ने खड़ा होके प्रभु से कहा हे प्रभु देख अपने धन का आधा मैं कंगालों को देता हूं और जो मैं ने ठगाई करके किसी का कुछ लिया
९ है तो उस का चौगुणा फेर देता हूं। तब यिसू ने उस से कहा आज इस घर में मुक्ति आई इस लिये
१० कि यह भी अबिरहाम का पुत्र है। क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोये हुए को ढूंढने और बचाने आया है।

११ जब वे यह बातें सुन रहे थे तब इस लिये कि वह यरूसलम के निकट था और वे समझते थे कि परमेश्वर का राज्य अभी दिखाई देगा उस ने एक दृष्टान्त
१२ भी कहा। वह बोला एक बड़ा मनुष्य दूर देश को
१३ चला कि अपने लिये राज्य लेके हो आवे। और उस ने अपने दासों में से दस बुलाके दस तोड़े उन्हें सोंपे और उन से कहा जब लों मैं न हो आऊं तब लों
१४ ब्योहार करो। परन्तु उस के नगर के लोगों ने उस से बैर रखके उस के पीछे सन्देश भेजके कहा हम
१५ नहीं चाहते कि यह मनुष्य हम पर राज्य करे। और ऐसा हुआ कि जब वह राज्य लेके फिर आया तब उस

ने उन दासों को जिन्हें रुपैये सोंपे थे बुलवा भेजा कि जाने कि हर एक ने ब्योहार करके क्या क्या कमाया। सो पहिले ने आके कहा हे प्रभु तेरे तोड़े से दस १६ तोड़े प्राप्त ज़ुए। उस ने उस से कहा धन्य हे अच्छे १७ दास कि तू बज़ुत थोड़ें में सच्चा निकला अब तू दस नगरों का अधिकारी हो। दूसरे ने आके कहा हे १८ प्रभु तेरे तोड़े से पांच तोड़े प्राप्त ज़ुए। उस ने उस से १९ भी कहा तू पांच नगरों का प्रधान हो। तीसरे ने आ- २० के कहा हे प्रभु तेरा तोड़ा जिसे मैं ने अंगोछे में बांध रखा था सो देख यहां है। क्योंकि मैं तुझ से डरता २१ था इस लिये कि तू कठोर मनुष्य है जो नहीं रखा सो तू लेता है और जो तू ने नहीं बोया सो ही काटता है। तब उस ने उस से कहा हे दुष्ट दास तेरे ही मुंह २२ की बात से मैं तेरा अपराध ठहराता हूं; तू जानता था कि मैं कठोर मनुष्य हूं जो मैं ने नहीं रखा सो ही लेता हूं और जो मैं ने नहीं बोया सो ही काटता हूं। फिर तू ने मेरे रुपैये कोठी में क्यों न रखे कि २३ मैं आके अपना धन ब्याज समेत पाता। और उस ने २४ उन से जो पास खड़े थे कहा वह तोड़ा उस से ले लो और दस तोड़ेवाले को देओ। पर उन्हों ने उस से २५ कहा हे प्रभु उस के पास दस तोड़े तो हैं। सो मैं २६ तुम से कहता हूं कि जिस पास कुछ है उसे दिया जायगा और जिस पास कुछ नहीं है उस से जो कुछ उस पास है सो ले लिया जायगा। परन्तु मेरे उन बै- २७

रियें को जो नहीं चाहते थे कि मैं उन पर राज्य
२८ करूं इधर ले आके मेरे साम्हने मार डालो। जब यह
कह चुका तब वह लोगों के आगे बढ़के यरूसलम
की ओर चला।

२९ और ऐसा हुआ कि जब वह बैतफगा और बैत-
अनिया के निकट उस पहाड़ के लग जो जलपाई का
पहाड़ कहावता है पहुंचा तब उस ने अपने शिष्यों
३० में से दो को यह कहके भेजा। जो गांव तुम्हारे साम्ह-
ने है उस में जाओ और उस में पहुंचते ही तुम एक
गधे का बच्चा जिस पर कोई मनुष्य कभी नहीं बैठा था
३१ बन्धा हुआ पाओगे उसे खोलके ले आओ। और यदि
कोई तुम से पूछे कि तुम उसे क्यों खोलते हो तो उस
३२ से यों कहो प्रभु को इस का प्रयोजन है। जो भेजे गये
थे उन्हों ने जाके जैसा उस ने उन से कहा था वैसा ही
३३ पाया। और जब वे उस बच्चे को खोलने लगे तब उस
के स्वामियों ने उन से कहा तुम बच्चे को क्यों खोलते
३४ हो। वे बोले कि प्रभु को इस का प्रयोजन है। और
३५ वे उसे यिसू पास लाये और अपने वस्त्र उस पर डाले
३६ और यिसू को उस पर बैठाया। और जब वह चला
३७ जाता था लोगों ने अपने वस्त्र मार्ग में बिछाये। और
जब वह जलपाई के पहाड़ के उतार पर पहुंचा तब
उस के शिष्यों की सारी मण्डली उन सब आश्चर्य्य
कर्म्मों के लिये जो उन्हों ने देखे थे आनन्दित होके
बड़े शब्द से परमेश्वर की स्तुति करने लगी और

कहा। धन्य है वह राजा जो प्रभु के नाम से आता ३८
है स्वर्ग में कुशल और अत्यन्त ऊंचे पर स्तुति। तब ३९
मण्डली में से कई फरीसियों ने उस से कहा हे गुरु
अपने शिष्यों को घुरक दे। उस ने उत्तर देके उन ४०
से कहा मैं तुम से कहता हूं कि यदि ये चुप रहें तो
वोंहीं पत्थर पुकार उठेंगे।

और जब उस ने पास आके नगर को देखा तो उस ४१
पर रोया। और कहा मैं क्या ही चाहता हूं कि तू ४२
इसी अपने दिन में वे बातें जो तेरे कुशल की हैं जानता
परन्तु अब वे तेरी आंखों से गुप्त हैं। क्योंकि तुझ पर ४३
वे दिन आवेंगे कि तेरे बैरी तेरी चारों ओर खाई
खोदके और तुझे चहुंदिश घेरके हर एक अलंग से
तुझे सकेत में डालेंगे। और तुझ को और तेरे बाल- ४४
कों को जो तुझ में हैं मिट्टी में मिला देंगे और तुझ
में पत्थर पर पत्थर न छोड़ेंगे किस लिये कि वह
समय जब कि तुझ पर दयादृष्टि हुई सो तू ने नहीं
जाना।

फिर वह मन्दिर में जाके सभों को जो उस में ४५
बीनते बेचते थे निकालने लगा। और उन से कहा ४६
लिखा है मेरा घर प्रार्थना का घर है परन्तु तुम ने उसे
चोरों का खोह बनाया। और वह प्रतिदिन मन्दिर में ४७
उपदेश करता था; और प्रधान याजक और अध्या-
पक लोग और लोगों के प्रधान उसे घात करने चाह-

४८ ते थे। परन्तु वे नहीं जानते थे कि कैसे करें क्योंकि सब लोग ध्यान लगाके उस की सुनते थे ॥

२० पर्व्व

और उन्हीं दिनों में जब वह मन्दिर में लोगों को सिक्षा देता और मंगल समाचार सुनाता था तब एक दिन ऐसा हुआ कि प्रधान याजक और अध्यापक लोग २ प्राचीनों के संग उस पास आके। उस से कहने लगे तू किस अधिकार से ये काम करता है और जिस ने तुझे यह अधिकार दिया है सो कौन है हमें बता ३ दे। उस ने उत्तर देके उन से कहा मैं भी तुम से एक ४ बात पूछता हूं वह मुझे बता दो। यूहन्ना का बप- तिसमा क्या वह स्वर्ग से था अथवा मनुष्यों की ओर ५ से। वे आपस में बिचार करके कहने लगे यदि हम कहें कि स्वर्ग से तो वह कहेगा फिर तुम ने उस ६ का विश्वास क्यों नहीं किया। और यदि हम कहें कि मनुष्यों की ओर से तो सब लोग हम को पथरवाह करेंगे क्योंकि वे निश्चय जानते हैं कि यूहन्ना ७ भविष्यतवक्ता था। उन्हों ने उत्तर दिया हम नहीं ८ जानते कि कहां से था। तब यिसू ने उन से कहा तो मैं भी तुम्हें नहीं बताता हूं कि किस अधिकार से ये काम करता हूं।

९ फिर वह लोगों से यह दृष्टान्त कहने लगा किसी मनुष्य ने दाख की बारी लगाई और उसे मालियों को सोंप दिया और जाके बहुत दिन लों परदेश में १० रहा। रितु में उस ने एक दास मालियों के पास भेजा

कि वे दाख की बारी का फल उसे देवें परन्तु मालियों
ने उसे मारके खाली हाथ फेर दिया। फिर उस ने ११
दूसरा दास भेजा और उसे भी उन्हों ने मारके अप-
मान करके खाली हाथ फेर दिया। फिर उस ने तीस- १२
रा भेजा; उसे भी उन्हों ने घायल करके निकाल
दिया। तब दाख की बारी के स्वामी ने कहा मैं क्या १३
करूं; मैं अपने प्यारे पुत्र को भेजूंगा क्या जाने वे उसे
देखके दब जायेंगे। परन्तु जब मालियों ने उसे देखा १४
तब आपस में बिचार करके कहा अधिकारी यही है
आओ इसे मार डालें कि अधिकार हमारा हो जाय।
सो उन्हों ने उस को दाख की बारी से बाहर नि- १५
कालके मार डाला; अब कहो दाख की बारी का
स्वामी उन को क्या करेगा। वह आके उन मालियों १६
को नाश करेगा और दाख की बारी दूसरों को सोंपे-
गा; उन्हों ने यह सुनके कहा ऐसा न होवे। तब उन १७
की ओर देखके उस ने कहा फिर जो लिखा है अर्थात
जिस पत्थर को थवइयों ने निकम्मा ठहराया वही
कोने का सिरा हुआ सो क्या है। जो कोई इस पत्थर १८
पर गिरेगा सो चूर हो जायगा परन्तु जिस पर वह
गिरेगा उस को वह पीस डालेगा।

तब प्रधान याजकों और अध्यापकों ने उसी घड़ी १९
उस पर हाथ डालने चाहा क्योंकि वे जानते थे कि
उस ने यह दृष्टान्त उन हीं पर कहा था परन्तु लो-
गों से डरे। और वे उस की घात तक रहे और २०

भेदिये भेजे जो भक्त का भेष लगाके देखें कि हम उस की कोई बात पकड़ पावें कि नहीं जिसतें उस को
२१ अध्यक्ष के बश और अधिकार में सोंप देवें। उन्हों ने उस से यह कहके पूछा कि हे गुरु हम जानते हैं कि तू सच्ची कहता और सिखाता है और किसी का मुंह देखके बात नहीं करता परन्तु सच्चाई से पर-
२२ मेश्वर का मार्ग बताता है। कैसर को कर देना हमें
२३ उचित है अथवा नहीं। परन्तु उस ने उन की कपट जानके उन से कहा तुम क्यों मेरी परीक्षा करते हो।
२४ एक सूकी मुझे दिखाओ; उस पर किस की मूर्ति और
२५ सिक्का है वे उत्तर देके बोले कैसर की। तब उस ने उन से कहा फिर जो कैसर का है सो कैसर को देओ और जो परमेश्वर का है सो परमेश्वर को देओ।
२६ और वे लोगों के आगे उस की कोई बात पकड़ न सके और उस के उत्तर से अचंभित होके चुप रह गये।

२७ तब सादूकियों में से जो मृतकों का जी उठना नहीं
२८ मानते हैं कई एक ने उस पास आके उस से पूछा। हे गुरु मूसा ने हमारे लिये लिखा है कि यदि किसी का भाई निर्बंश होके मर जाय और उस की पत्नी रहे तो उस का भाई उस की पत्नी से बिवाह करे और
२९ अपने भाई के लिये बंश चलावे। अब सात भाई थे
३० पहिला बिवाह करके निर्बंश होके मर गया। तब दूसरे ने उस स्त्री से बिवाह किया और वह भी निर्बंश

होके मर गया। और तीसरे ने उस से बिवाह किया ३१
और वैसा ही सातों ने किया और सब निर्बंश होके ३२
मरे। सब के पीछे वह स्त्री भी मर गई। सो मृतकों के ३३
पुनरुत्थान में वह उन में से किस की पत्नी होगी क्यों-
कि वह सातों की पत्नी हुई थी। तब यिसू ने उत्तर ३४
देके उन से कहा इस जगत के लोग बिवाह करते
और बिवाह दिये जाते हैं। परन्तु जो जो परलोक के ३५
योग्य और मृतकों के पुनरुत्थान के योग्य जाने जाते
हैं सो न तो बिवाह करते हैं न बिवाह दिये जाते
हैं। न वे फिर मर सकते हैं क्योंकि वे स्वर्गीय दूतों ३६
के समान हैं और पुनरुत्थान के पुत्र होके वे परमे-
श्वर के पुत्र हैं। मूसा ने भी झाड़ी की कथा में जब ३७
उस ने प्रभु को अबिरहाम का परमेश्वर और इस-
हाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर कहा
तब मृतकों के जी उठने की बात बताई। क्योंकि पर- ३८
मेश्वर मृतकों का नहीं परन्तु जीवतों का परमेश्वर
है क्योंकि उस के लिये सब जीवते हैं। तब कितने ३९
अध्यापकों ने उत्तर देके उस से कहा हे गुरु तू ने
अच्छा कह दिया। और उस के पीछे किसी का हि- ४०
याव न हुआ कि उस से कुछ पूछे।

और उस ने उन से कहा लोग क्योंकर कहते हैं ४१
कि मसीह दाऊद का पुत्र है। और दाऊद आप ही ४२
गीतों की पुस्तक में कहता है प्रभु ने मेरे प्रभु से
कहा। जब लों मैं तेरे बैरियों को तेरे पांवों की पीढ़ी ४३

४४ न करूं तू मेरे दहिने बैठ। सो दाऊद उसे प्रभु कहता है फिर वह क्योंकर उस का पुत्र ठहरा।

४५ तब सब लोगों के सुनते ही उस ने अपने शिष्यों से ४६ कहा। अध्यापकों से चैाकस रहो वे लंबे वस्त्र पहिने ऊए फिरने चाहते हैं और हाटों में नमस्कार और मण्डलीघरों में श्रेष्ठ आसन और जेवनारों में प्रधान ४७ स्थान पाना उन्हें अच्छा लगता है। वे बिधवाओं के घर निकल जाते हैं और छल से लंबी प्रार्थना करते हैं; वे अधिक दण्ड पावेंगे॥

२१ पर्व्व

उस ने आंखें उठाके धनवान लोगों को अपने २ अपने दान रोकड़स्थान में डालते देखा। और उस ने एक कंगाल बिधवा को भी दो छदाम उस में डालते ३ देखा। और उस ने कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि इस कंगाल बिधवा ने उन सभों से अधिक डाला। ४ क्योंकि उन सभों ने अपने धन की अधिकाई से परमेश्वर की भेंट के लिये डाला परन्तु इस ने अपने कंगालपन की सारी जीविका उस में डाली।

५ और जब कितने लोग मन्दिर के विषय में कहते थे कि यह कैसे सुन्दर पत्थरों और दान के पदार्थों ६ से संवारा ऊआ है तब उस ने कहा। वे दिन आवेंगे कि जो तुम देखते हो उस का पत्थर पर पत्थर न ७ रहेगा जो गिराया न जायगा। तब उन्हों ने उस से पूछा हे गुरु ये बातें कब होंगी और जब ये बातें ८ होंगी उस समय का क्या चिन्ह होगा। उस ने कहा

चैाकस रहो कि कोई तुम्हें न भरमावे क्योंकि बहुतेरे लोग मेरा नाम लेके आवेंगे और कहेंगे मैं वही हूं और समय निकट आया है ; तुम उन के पीछे मत जाओ। और जब तुम संग्रामें और दंगों की बातें सुनो तो घबराओ मत क्योंकि इन का होना तो पहिले अवश्य है पर अब तक अन्त नहीं आया है। फिर उस ने उन से कहा देश पर देश और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेंगे। और जगह जगह बड़े भूईडोल होंगे और अकाल और मरियां होंगी और भयंकर बातें और बड़े चिन्ह स्वर्ग से दिखाई देंगे। परन्तु सब से पहिले वे मेरे नाम के लिये तुम पर हाथ डालेंगे और तुम्हें सतावेंगे और मण्डलीघरों और बन्दीगृहों में सोंपेंगे और राजाओं और प्रधानों के आगे खड़े करेंगे। और यह तुम्हारे साक्षी देने के लिये होगा। सो तुम अपने मन में ठहरा रखो कि हम आगे से चिन्ता न करेंगे कि क्या उत्तर देवें। क्योंकि मैं तुम्हें बोलने की शक्ति और ज्ञान देऊंगा ऐसा कि तुम्हारे सारे बैरी इस के बिरुद्ध न बोल सकेंगे न तुम्हारा साम्हना कर सकेंगे। और तुम्हारे माता पिता और भाई और कुटुम्ब और मित्र तुम्हें पकड़वावेंगे और तुम में से कितनों को मरवा डालेंगे। और मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर रखेंगे। परन्तु तुम्हारे सिर का एक बाल बांका न होगा। तुम धीरज से अपना प्राण बचाय रखो। फिर जब तुम यरूसलम

९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०

को सेनाओं से घेरा हुआ देखो तब जानो कि उस
२१ का उजाड़ होना निकट है। तब जो यहूदाह में हों
सो पहाड़ों को भाग जायें; जो नगर के भीतर हों
सो बाहर निकल जावें; और जो बाहर हों सो भीतर
२२ न आवें। क्योंकि ये बदला लेने के दिन हैं कि सारी
२३ बातें जो लिखी हैं सो पूरी होवें। परन्तु जो उन्हीं
दिनों में पेटवालियां और दूध पिलानेवालियां हों
उन पर हाय क्योंकि देश पर बड़ी बिपत्ति होगी और
२४ इन लोगों पर कोप होगा। वे तलवार की धार से
मारे पड़ेंगे और लोग उन्हें बन्धवाके सारे अन्यदे-
शियों में ले जायेंगे और जब लों अन्यदेशियों का
समय पूरा न होवे तब लों यरूसलम अन्यदेशियों से
रौंदा जायगा।

२५ और सूर्य्य में और चन्द्रमा में और तारों में चिन्ह
होंगे और पृथिवी के लोगों पर क्लेश होगा और
वे घबरा जायेंगे और समुद्र और उस की लहरों का
२६ बड़ा शोर होगा। और डर के मारे और जो बातें
भूमि पर आती हैं उन की बाट जोहने के कारण
लोग मरते हुओं के समान हो जायेंगे क्योंकि आ-
२७ काश की दृढ़ताएं डिग जायेंगी। और तब लोग मनुष्य
के पुत्र को बड़े पराक्रम और ऐश्वर्य्य से मेघ पर आते
२८ देखेंगे। और जब ये बातें होने लगें तब आंखें उठाके
अपने सिर सीधे करो क्योंकि तुम्हारा छुटकारा
निकट आया है।

फिर उस ने उन से एक दृष्टान्त कहा कि गूलर के पेड़ को और सब पेड़ों को देखो। जब उन में कोंपलें निकलती हैं तब तुम आप ही जानते हो कि अब धूपकाल निकट है। इसी रीति से जब तुम ये बातें होते देखो तब जानो कि परमेश्वर का राज्य निकट आया है। मैं तुम से सच कहता हूं कि जब लों सब कुछ न पूरा हो ले तब लों इस समय के लोग जाते न रहेंगे। स्वर्ग और पृथिवी टल जायेंगे परन्तु मेरी बातें न टलेंगी। अपने लिये चौकस रहो न होवे कि बहुत खाने से और मतवाला होने से और जीवन की चिन्ताओं से तुम्हारे मन भारी हो जावें और वह दिन अचानक तुम पर आ पड़े। क्योंकि फन्दे के समान वह सारी पृथिवी के सब रहनेवालों पर आ पड़ेगा। इस लिये जागते रहो और नित्य प्रार्थना करो कि तुम इन सब होनेवाली बातों से बचने के योग्य और मनुष्य के पुत्र के आगे खड़े होने के योग्य ठहरो। | २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६

और दिन को वह मन्दिर में उपदेश करता था और रात को बाहर जाके जलपाई नाम के पहाड़ पर रहता था। और भोर को तड़के सब लोग उस की बातें सुनने को मन्दिर में आते थे॥ | ३७ ३८

२२ पर्व्व

अब अखमीरी रोटी का पर्व्व जो फसह कहावता है निकट आया। और प्रधान याजक और अध्यापक लोग सोच में थे कि उस को कैसे मार डालें क्योंकि वे लोगों से डरते थे। | २

३ तब यहूदाह में जो इसकरियत कहलाता और ४ बारहों में गिना जाता था शैतान पैठा। और उस ने जाके प्रधान याजकों और सेनापतियों से बात चीत किई कि उस को किस रीति से उन के हाथ में पकड़- ५ वा देवे। तब वे आनन्दित हुए और उसे रुपैये देने ६ की बाचा किई। और उस ने बात हारी और अव- सर ढूंढता था कि जब भीड़ न होय तब उसे उन के हाथ पकड़वावे।

७ तब अखमीरी रोटी का दिन जिस में फसह का ८ बलि मारना था आ पहुंचा। उस ने पथरस और यूहन्ना को यह कहके भेजा कि जाओ और हमारे कारण फसह का भोजन करने की तैयारी करो। ९ उन्हों ने उस से कहा तू कहां चाहता है कि हम १० तैयार करें। उस ने उन से कहा देखो जब तुम नगर में पहुंचो तब वहां एक मनुष्य जल का घड़ा उठाये हुए तुम्हें मिलेगा; जिस घर में वह प्रवेश करे तुम ११ उस के पीछे चले जाओ। और उस घर के स्वामी से कहो गुरु तुझे कहता है कि पाहुनशाला जहां मैं अपने शिष्यों के संग फसह का भोजन करूं सो कहां १२ है। वह एक बड़ी उपरौठी सजी कोठरी तुम्हें दि- १३ खावेगा वहां तैयार करो। और उन्हों ने जाके जैसा उस ने उन से कहा था वैसा ही पाया और फसह का भोजन तैयार किया।

१४ जब घड़ी आ पहुंची वह बारह प्रेरितों के संग

खाने बैठा। और उन से कहा बड़ी चाह से मैं ने १५
अपने दुःख उठाने से पहिले तुम्हारे संग फसह का
भोजन करने चाहा है। क्योंकि मैं तुम से कहता हूं १६
कि जब लों वह परमेश्वर के राज्य में पूरा न होवे
तब लों मैं उस से फिर कधो न खाऊंगा। और उस १७
ने कटोरा लेके धन्य माना और कहा इसे लेओ और
आपस में बांटो। कि मैं तुम से कहता हूं कि जब लों १८
परमेश्वर का राज्य न आवे तब लों मैं दाख का रस १९
फिर न पीऊंगा। फिर उस ने रोटी लिई और धन्य
मानके उसे तोड़ी और उन्हें देके कहा यह मेरी देह
है जो तुम्हारे लिये दिई जाती है मेरे स्मरण के लिये २०
ऐसा किया करो। इसी प्रकार से बियारी के पीछे उस
ने कटोरा भी देके कहा यह कटोरा वह नया नियम
मेरे लोहू से है जो तुम्हारे लिये बहाया जाता है।

परन्तु देखो मेरे पकड़वानेवाले का हाथ मेरे संग २१
मेज पर है। मनुष्य का पुत्र तो जैसा कि ठहराया २२
गया वैसा जाता है परन्तु जिस मनुष्य से वह पकड़-
वाया जाता है उस पर हाय। तब वे आपस में पूछने २३
लगे हम में से जो ऐसा करेगा सो कौन है।

उन में यह बिवाद भी हुआ कि हम में से कौन २४
बड़ा ठहरता है। उस ने उन से कहा अन्यदेशियों २५
के राजा उन पर प्रभुता करते हैं और जो उन पर
आज्ञा करते हैं उन्हें लोग प्रतिपालक कहते हैं।
पर तुम ऐसे मत होओ परन्तु जो तुम में सब से बड़ा २६

है सो छोटे के समान होय और जो प्रधान है सो जैसा
२७ सेवक होय। क्योंकि बड़ा कौन है जो खाने बैठा है
अथवा जो सेवा करता है क्या वह नहीं जो खाने बैठा
है तौ भी मैं तुम्हारे बीच में सेवा करनेवाले के
२८ समान हूं। तुम मेरी परीक्षों में नित्य मेरे संग संग
२९ रहे हो। और जैसे मेरे पिता ने मेरे लिये राज्य
३० ठहराया है वैसे मैं तुम्हारे लिये ठहराता हूं। कि
तुम मेरे राज्य में मेरी मेज पर खाओ और पीओ
और सिंहासनों पर बैठके इसराएल के बारह
पितृबंशों का न्याव करो।

३१ और प्रभु ने कहा समऊन हे समऊन देख शैतान
३२ ने तुम को जैसे गेहूं को फटकने चाहा। परन्तु मैं
ने तेरे लिये प्रार्थना किई है कि तेरा बिश्वास जाता
न रहे और जब तू फिर आवे तब अपने भाइयों को
३३ ढाढ़स बन्धा आ। उस ने उस से कहा हे प्रभु मैं तेरे
संग बन्दीगृह में जाने और मरने को भी तैयार
३४ हूं। उस ने कहा हे पथरस मैं तुझे कहता हूं कि
आज कुक्कुट के बोलने से आगे तू तीन बार मुझ
को जानने से मुकरेगा।

३५ फिर उस ने उन से कहा जब मैं ने तुम्हें बिना
बटुआ और झोली और जूते भेजा था क्या तुम्हें किसी
३६ बस्तु की घटी ऊई थी; वे बोले किसी की नहीं। तब
उस ने उन से कहा परन्तु अब जिस का बटुआ होवे
सो उसे लेवे और वैसे झोली भी और जिस पास न

हो सो अपना वस्त्र बेचके तलवार मोल ले। क्योंकि ३७ मैं तुम से कहता हूं कि यह लिखा हुआ कि वह कुकर्म्मियों के संग गिना गया सो भी मेरे विषय अवश्य पूरा होगा क्योंकि मेरे विषय की बातें समाप्त होती हैं। तब वे बोले हे प्रभु देख यहां दो तलवार ३८ हैं; उस ने उन से कहा अब बस है।

वह बाहर निकलके अपने व्यवहार पर जलपाई ३९ के पहाड़ पर गया और उस के शिष्य भी उस के पीछे हो लिये। उस स्थान में पहुंचके उस ने उन से ४० कहा प्रार्थना करो कि तुम परीक्षा में न पड़ो। फिर ४१ उस ने ढेलाफेंक के टप्पे पर आगे बढ़के घुटने टेके और प्रार्थना करके कहा। हे पिता यदि तू चाहे ४२ तो यह कटोरा मुझ से टाल दे तिस पर भी मेरी इच्छा नहीं परन्तु तेरी इच्छा पूरी होवे। तब स्वर्ग ४३ से एक दूत ने दिखाई देके उसे ढाड़स दिई। और ४४ वह महासंकट में आके बहुत गिड़गिड़ाके प्रार्थना करता था और उस का पसीना लहू के थक्कों के समान होकर भूमि पर गिरता था। और प्रार्थना करने से ४५ उठकर वह अपने शिष्यों के पास आया और उन्हें शोक के मारे सोते पाया। तब उस ने उन से कहा ४६ तुम क्यों सोते हो उठके प्रार्थना करो न हो कि तुम परीक्षा में पड़ो।

वह यह कहता ही था कि देखो एक भीड़ दि- ४७ खाई दिई और यहूदाह नाम बारहों में से एक उन

के आगे आगे होकर यिसू पास आया कि उस को
४८ चूमे। तब यिसू ने उस से कहा हे यहूदाह क्या तू
४९ मनुष्य के पुत्र को चूमा देके पकड़वाता है। जो उस
के संग थे जब उन्हों ने जो कि होने पर था देखा
५० तब बोले हे प्रभु क्या हम तलवार चलावें। और उन
में से एक ने महायाजक के दास पर चलाके उस का
५१ दहिना कान उड़ा दिया। पर यिसू ने उत्तर देके
कहा इतने ही पर रहने देओ; और उस ने उस के
५२ कान को छूके उसे चंगा किया। तब यिसू ने प्रधान
याजकों और मन्दिर के सेनापतियों और प्राचीनों
से जो उस पास आये थे कहा क्या तुम जैसे डाकू को
पकड़ने के लिये तलवारें और लाठियां लेके निकले
५३ हो। मैं तो प्रतिदिन तुम्हारे संग मन्दिर में था और
तुम ने मुझ पर हाथ न डाले परन्तु यह तुम्हारी
घड़ी और अंधकार का अधिकार है।

५४ तब वे उसे पकड़के ले चले और महायाजक के
घर में ले गये और पथरस दूर दूर उस के पीछे
५५ पीछे चला जाता था। और वे आंगन के बीच में आग
सुलगाके एकट्ठे बैठ गये और पथरस उन में बैठ गया।
५६ तब एक लौंडी ने उसे आग के पास बैठे देखा और
ध्यान से उस पर दृष्टि करके कहा यह मनुष्य भी उस
५७ के संग था। उस ने मुकर जाके कहा हे स्त्री मैं उसे
५८ नहीं जानता हूं। और थोड़ी बेर पीछे किसी दूसरे ने
उसे देखके कहा तू भी उन में से है; तब पथरस ने

कहा हे मनुष्य मैं नहीं हूं। और घड़ी एक बीते और किसी ने निश्चय से कहा सचमुच यह भी उस के संग था क्योंकि यह गलीली है। तब पथरस ने कहा हे मनुष्य मैं नहीं जानता तू क्या कहता है और वोंहीं जब बोलता ही था तब कुक्कुट बोला। इस पर प्रभु ने मुंह फेरके पथरस पर दृष्टि किई तब जो बात प्रभु ने उस से कहा था कि कुक्कुट के बोलने से आगे तू तीन बार मुझ से मुकर जायेगा सो पथरस ने स्मरण किया। और पथरस बाहर जाके बिलक बिलक रोया। | ५९ ६० ६१ ६२

और जो लोग यिसू के धरनेवाले थे सो उसे मारके ठट्ठों में उड़ाने लगे। और उस की आंखों में पट्टी बांधके उस के मुंह पर थपेड़ा मारा और उस से यह कहके पूछा कि भविष्यतवाणी कर कि किस ने तुझे मारा है। और बहुत सी और निन्दा की बातें उन्हों ने उस पर कहीं। | ६३ ६४ ६५

जब दिन हुआ तब लोगों के प्राचीन और प्रधान याजक और अध्यापक लोग एकट्ठे हुए और उसे अपनी सभा में लाके कहा। यदि तू मसीह है तो हम से कह; उस ने उन से कहा यदि मैं तुम से कहूं तो तुम प्रतीति न करोगे। और यदि मैं तुम से भी पूछूं तो तुम मुझे उत्तर न देओगे और न छोड़ोगे। अब से मनुष्य का पुत्र परमेश्वर के पराक्रम की दहिनी ओर बैठेगा। तब उन सभों ने कहा तो क्या तू परमे- | ६६ ६७ ६८ ६९ ७०

श्वर का पुत्र है; उस ने उन से कहा तुम ठीक कहते
७१ हो मैं हूं। फिर उन्हों ने कहा अब हमें और साक्षी
का क्या प्रयोजन है क्योंकि हम सभों ने उसी के मुंह
से आप सुना है॥

२३ पर्व्व

फिर सारी मण्डली उठके उस को पिलातूस पास
२ ले गई। और वे उस पर दोष लगाके कहने लगे कि
हम ने इसे लोगों को बहकाते और कैसर को कर
देने से बर्जते और यह कहते हुए पाया कि मैं आप
३ ही मसीह राजा हूं। तब पिलातूस ने उस से पूछा
क्या तू यहूदियों का राजा है; उस ने उत्तर दिया
४ और कहा तू ठीक कहता है। तब पिलातूस ने प्र-
धान याजकों और लोगों से कहा मैं इस मनुष्य में
५ कुछ दोष नहीं पाता हूं। पर उन्हों ने और भी
चिल्लाके कहा वह गलील से लेके यहां लों सारे
यहूदाह में उपदेश करते करते लोगों को उस्काता
६ है। जब पिलातूस ने गलील का नाम सुना तब पूछा
७ क्या वह गलीली है। और जब जाना कि वह हेरो-
देश के अधिकार का है तब उसे हेरोदेस के पास जो
उन दिनों यरूसलम में था भेजा।

८ और हेरोदेश यिसू को देखके बहुत आनन्दित
हुआ क्योंकि वह बहुत दिनों से उस को देखा
चाहता था इस लिये कि उस ने उस के विषय में
बहुत सी बातें सुनी थीं और उसे उस का कोई
९ आश्चर्य्य कर्म्म देखने का आसा था। तब उस ने उस

से बहुत सी बातें पूछीं परन्तु उस ने उस का कुछ उत्तर न दिया। १० और प्रधान याजकों और अध्यापकों ने खड़े होके उस पर बड़े बड़े दोष लगाये। ११ और हेरोदेस ने अपने सिपाहियों के संग उस को निन्दा और हंसी किई और उस को भड़कीला बस्त्र पहिनाके पिलातूस पास फेर भेजा। १२ उसी दिन पिलातूस और हेरोदेस आपस में मित्र हुए कि पहिले उन में लाग थी।

१३ फिर पिलातूस ने प्रधान याजकों और लोगों के प्रधानों को एकट्ठे बुलाके उन से कहा। १४ तुम इस मनुष्य को यह कहते हुए मेरे पास लाये कि वह लोगों को बहकाता है और देखो मैं ने तुम्हारे साम्हने उस की परीक्षा किई और जिन अपराधों का तुम ने इस मनुष्य पर दोष लगाये उन का मैं ने उस में कुछ नहीं पाया। १५ और न हेरोदेस ने पाया क्योंकि मैं ने तुम्हें उस के पास भेजा था; सो देखो उस ने कोई घात होने के योग्य का काम नहीं किया। १६ इस लिये मैं उस का ताड़ना करके उसे छोड़ देऊंगा। १७ कि पर्ब्ब में एक को उन के लिये छोड़ देना उसे अवश्य था। १८ तब वे सब मिलके पुकार रहे कि इसे ले जा और बरब्बा को हमारे लिये छोड़ दे। १९ वह किसी दंगे के कारण जो नगर में हुआ था और हत्या के लिये बन्धुवा हुआ था। २० पिलातूस ने यिसू को छोड़ने की मनसा रखके उन को फिर समझाया। २१ परन्तु वे पुकारके बोले उसे

२२ क्रूस पर चढ़ा क्रूस पर चढ़ा। उस ने तीसरी बार उन से कहा क्यों उस ने कौनसा अपराध किया है मैं ने उसे मार डालने को उस में कोई कारण नहीं पाया
२३ सो मैं उस का ताड़ना करके उसे छोड़ देऊंगा। और उन्हों ने धूम मचाके उस से यह मांग रहे कि वह क्रूस पर चढ़ाया जाय और उन की और प्रधान याज-
२४ कों की धूम ने उसे दबा लिया। तब पिलातूस ने
२५ आज्ञा किई कि उन की इच्छा के समान हो। सो जो दंगा और हत्या के कारण बन्धुवा हुआ था उस को उस ने उन के लिये छोड़ दिया परन्तु यिसू को उन की इच्छा पर सोंप दिया।

२६ और ज्यों वे उस को ले चले तो उन्हों ने एक समऊन कुरेनी को जो गांव से आता था पकड़ा और क्रूस उस पर रखा कि उसे उठाके यिसू के पीछे ले चले।
२७ और लोगों की बड़ी भीड़ और स्त्रियां भी जो उस के
२८ लिये रोती पीटती थीं सो उस के पीछे हो लिईं। यिसू ने उन की ओर मुंह फेरके कहा हे यरूसलम की पुत्रियो मुझ पर मत रोओ परन्तु आप पर और अप-
२९ ने लड़कों पर रोओ। क्योंकि देखो वे दिन आते हैं कि जिन में लोग कहेंगे धन्य हैं बांझ स्त्रियां और वे गर्भ जो न जने और वे छातियां जिन्हों ने दूध न पिला-
३० या। तब लोग पहाड़ों से कहने लगेंगे कि हम पर
३१ गिरो और पहाड़ियों से कि हमें छिपाओ। क्योंकि

यदि हरे बृक्ष को ऐसा करते हैं तो सूखे को क्या न किया जायगा।

और वे दो मनुष्य भी जो अपराधी थे उस के संग ३२ मार डालने के लिये ले चले। और जब वे उस स्थान ३३ में जो खोपड़ी का स्थान कहावता है पहुंचे तब उस को वहां क्रूस पर चढ़ाया और वे दो अपराधी एक उस के दहिने और दूसरा उस के बायें हाथ क्रूसें पर चढ़ाये। और यिसू ने कहा हे पिता उन को क्षमा ३४ कर क्योंकि वे नहीं जानते कि क्या करते हैं; और उन्हों ने चिट्ठी डालके उस के बस्त्र बांट लिये। और ३५ लोग खड़े देखरहे थे और प्रधान लोग भी उस की हंसी करके कहते थे औरों को उस ने बचाया यदि वह मसीह परमेश्वर का चुना हुआ है तो आप को बचावे। और सिपाहियों ने भी उस का ठट्ठा किया ३६ और पास आके उसे सिरका देके बोले। जो तू यहू- ३७ दियों का राजा है तो आप को बचा। और उस के ३८ ऊपर में यूनानी और लातीनी और इबरानी अक्षरों में यह पत्र लिखा हुआ था यह यहूदियों का राजा है।

और उन अपराधियों में से जो क्रूसें पर लट- ३९ काये गये एक ने उस की निन्दा करके कहा यदि तू मसीह है तो आप को और हम को बचा। परन्तु ४० दूसरे ने उत्तर देकर उसे घुरकके कहा क्या तू पर- मेश्वर से नहीं डरता है कि तू उसी दण्ड का भागी

४१ है। और हम तो न्याव की रीति से क्योंकि हम अपने किये का फल पाते हैं पर इस ने तो कुछ
४२ अनीति नहीं किई। और उस ने यिसू से कहा हे प्रभु
४३ जब तू अपने राज्य में आवे तब मुझे स्मरण कर। यिसू ने उस से कहा मैं तुझे सच कहता हूं कि आज तू मेरे संग स्वर्गलोक में होगा।

४४ और दो पहर के समय में तीसरे पहर लों उस
४५ समस्त देश में अंधकार छा गया। सूर्य्य अन्धेरा हो
४६ गया और मन्दिर का पर्दा बीच से फट गया। और यिसू बड़े शब्द से चिल्लाया और बोला हे पिता मैं अपना आत्मा तेरे हाथ में सोंपता हूं और यह कहके उस ने प्राण त्यागा।

४७ जब सेनापति ने जो कि हुआ था देखा तब परमेश्वर की स्तुति करके बोला यह मनुष्य निश्चय धर्म्मी
४८ था। और सब लोग जो यह देखने को एकट्ठे हुए थे जब वह जो हुआ था देखा तो छाती पीटते हुए फिर
४९ गये। और उस के सब जानपहचान और वे स्त्रियां जो गलील से उस के पीछे आई थीं सो दूर से खड़ी होके यह देख रही थीं।

५० और देखो यूसफ नाम यहूदियों के नगर अरमतिया का एक पुरुष एक मन्त्री था और वह सज्जन
५१ और धर्म्मी पुरुष था। और उन के मत और काम में न मिल गया था और आप भी परमेश्वर के राज्य
५२ की बाट जोहता था। उस ने पिलातूस पास जाके यिसू

की लोथ मांगी। और उसे उतार के कपड़े में लपेटा ५३
और एक कबर में जो पत्थर में खोदी गई थी और
जिस में कधी कोई नहीं पड़ा था रखा। और वह ५४
तैयारी का दिन था और बिस्राम दिन आरंभ होने
लगा।

और जो स्त्रियां उस के संग गलील से आईं थीं ५५
उन्हों ने पीछे पीछे जाके कबर को और लोथ को
कि कैसे रखी ऊई है देखा। और लौट के सुगन्ध और ५६
फुलेल तैयार किया पर आज्ञा के समान बिस्राम दिन
में बिस्राम किया॥

२४ पर्ब्ब

और अठवारे के पहिले दिन बड़े तड़के वे उस
सुगन्ध को जो उन्हों ने तैयार किई थी लेके कबर
पर आईं और कई एक और भी उन के संग थीं।
उन्हों ने पत्थर को कबर पर से सरकाया ऊआ पाया। २
और भीतर जाके प्रभु यिसू की लोथ न पाई। ३
ऐसा ऊआ कि जब वे इस पर बऊत घबरा रहीं थीं ४
तब देखो दो पुरुष चमचमाते बस्त्र पहिने ऊए उन के
पास खड़े थे। जब वे डरती और अपने सिर भूमि पर ५
झुकाती थीं तब उन्हों ने उन से कहा वह जो जीता
है उस को तुम मृतकों में क्यों ढूंढतियां हो। वह ६
यहां नहीं है परन्तु जी उठा है क्या तुम्हें सुधि नहीं
है कि जब वह गलील में था उस ने तुम से यह कहा
था। कि अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ ७

में पकड़वाया जाय और क्रूस पर चढ़ाया जाय और तीसरे दिन जी उठे।

८ तब उस की बातें उन की सुधि में आईं। ९ और कबर से हो आके उन बातों का समाचार ग्यारहों को और १० औरों को सुनाया। जिन्हों ने ये बातें प्रेरितों से कहीं सो मरियम मिगदाली और यूहनह और याकूब की माता मरियम और उन के संग की और स्त्रियां थीं। ११ परन्तु उन की बातें उन को कहानी सी समझ पड़ीं १२ और उन्हों ने उन की प्रतीति न किई। तब पथरस उठके कबर को दौड़ा और झुकके क्या देखा कि केवल सूती कपड़ा पड़ा हुआ है और वह इस बात से जो हुई थी अपने जी में अचंभा करता हुआ चला गया।

१३ और देखो उसी दिन उन में से दो इम्माऊस नाम एक गांव को जो यरूसलम से साठ स्तादियुस पर था १४ जाते थे। और आपस में उन सब बातों की जो बीत १५ गई थीं चर्चा करते थे। ऐसा हुआ कि जब वे बात चीत और पूछ पाछ कर रहे थे तब यिसू आप पास १६ आकर उन के संग हो लिया। परन्तु उन की आंखें १७ मूंदी सी हुई थीं कि उन्हों ने उसे न पहचाना। उस ने उन से कहा जो बातें तुम चलते हुए और उदास १८ मुख होते हुए आपस में करते हो सो क्या हैं। तब उन में से एक ने जिस का नाम क्लीओपास था उत्तर देके उस से कहा क्या तू यरूसलम में अकेला ऊपरी

मनुष्य है कि जो कुछ इन दिनों में वहां ज़ुआ है सो न जाने। उस ने उस से पूछा क्या ज़ुआ है उन्हों ने १९ उस से कहा यिसू नासिरी की बात; वह भविष्यतवक्ता था और परमेश्वर और सब लोगों के आगे काम और बात में सामर्थवाला था। कि प्रधान याजकों और २० हमारे प्रधानों ने उस के घात करने की आज्ञा दिल- वाई और उसे क्रूस पर चढ़ाया। पर हमें भरोसा था २१ कि इसराएल का छुड़ानेवाला यही है और इस से अधिक आज तीसरा दिन है कि ये बातें ज़ुई। और २२ हम में से कितनी स्त्रियों ने भी हमें घबरा रखा है कि वे भार को कबर को गई थीं। और उस की २३ लोथ न पाई पर यह कहती आईं कि हम ने स्वर्गीय दूतों का दर्शन देखा जो यह कहते थे कि वह जीता है। और हमारे साथवालों में से कोई कोई कबर २४ को गये और जैसा स्त्रियों ने कहा था वैसा ही पाया परन्तु उस को नहीं देखा। तब उस ने उन से कहा २५ हे निर्बुद्धियो और भविष्यतवक्ताओं की सारी बातें बिस्वास करने में ढीले मनवालो। क्या मसीह को वह २६ दुःख उठाना और अपने ऐश्वर्य्य में प्रवेश करना उचित न था। और मूसा और सब भविष्यतवक्ताओं की बातें २७ जो सारी धर्म्मग्रन्थ में उस के विषय में लिखी हैं उस ने उन्हें आरंभ से उन के लिये बखान किया। और २८ वे उस गांव के जिधर वे जाते थे पास पज़ंचे और ऐसा जान पड़ा कि वह आगे जाया चाहता है। परन्तु २९

उन्हों ने उसे रोकके कहा हमारे साथ रह क्योंकि सांझ हुआ चाहती है और दिन बहुत ढला ; तब
३० वह भीतर गया कि उन के साथ रहे। और ऐसा हुआ कि जब उन के संग भोजन करने बैठा या उस ने रोटी लेके धन्यवाद किया और तोड़के उन्हें दिई।
३१ तब उन की आंखें खुल गईं और उन्हों ने उसे पह-
३२ चाना और वह उन के संमुख अलोप हो गया। और उन्हों ने आपस में कहा जब वह मार्ग में हमारे संग चलके बातें करता था और जब वह धर्म्मग्रन्थ का अर्थ खोलता था क्या हमारे मन तब आनन्द से हम में
३३ न तपते थे। और वे उसी घड़ी उठके यरूसलम को फिरे और ग्यारहों को और उन के संगियों को
३४ एकट्ठे पाया। कि कहते थे प्रभु सचमुच जी उठा है
३५ और समऊन को दिखाई दिया। और इन्हों ने मार्ग की बातें और वह किस रीति से रोटी तोड़ने में पहचाना गया बर्णन किया।

३६ जब वे यों बोल ही रहे थे तब यिसू आप उन के बीच में खड़ा होके उन से कहा तुम को कल्याण।
३७ उन्हों ने घबराके और डरके सोचा कि कोई आत्मा
३८ देखते हैं। परन्तु उस ने उन से कहा तुम क्यों ब्याकुल हो और तुम्हारे मन में क्यों खटके उठते हैं।
३९ मेरे हाथ और मेरे पांव देखो कि मैं आप ही हूं हाथ से मुझे छूओ और मुझे देखो क्योंकि मांस और हाड़ जैसे तुम मुझ में देखते हो वैसे आत्मा में नहीं

हैं। और यह कहके उस ने अपने हाथ पांव उन्हें दिखाये। और जब वे तिस पर आनन्द से प्रतीति न करते थे और अचंभित रहते थे तब उस ने उन से कहा क्या यहां तुम्हारे पास कुछ खाने को है। उन्हों ने उसे भूनी मछली का टुकड़ा और मधु के छत्ते का कुछ दिया। उस ने लेके उन के साम्हने खाया। ४० ४१ ४२ ४३

और उस ने उन से कहा ये वे बातें हैं जो मैं ने तुम्हारे संग रहते ऊए तुम से कहीं कि सब बातें जो मेरे विषय में मूसा की व्यवस्था में और भविष्यत-वक्ताओं में और दाऊदगीता में लिखी हैं उन का पूरा होना अवश्य है। तब उस ने उन की बुद्धि खोली कि वे धर्म्मग्रन्थ को समझें। और उन्हें कहा कि यों लिखा है और यों अवश्य था कि मसीह दुःख उठावे और कि तीसरे दिन मृतकों में से जी उठे। और कि यरूसलम से लेके सब देशों के लोगों में मनफिरावा और पापमोचन का प्रचार उस के नाम से किया जाय। और तुम इन बातों के साक्षी हो। और देखो मैं अपने पिता की बाचा तुम पर भेजता हूं परन्तु जब लों तुम ऊपर से पराक्रम न पाओ तब लों यरूसलम नगर में ठहरो। ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९

फिर वह उन्हें वहां से बाहर बैतअनिया तक ले गया और अपना हाथ उठाके उन्हें आशीश दिई। और ऐसा ऊआ कि जब वह उन्हें आशीश दे रहा ५० ५१

५२ था वह उन से अलग होके स्वर्ग को उठ गया। और वे उस की पूजा करके बड़े आनन्द से यरूसलम को
५३ फिरे। और नित्य मन्दिर में होके परमेश्वर की स्तुति और धन्यवाद करते रहे॥ आमीन॥

मंगल समाचार

१ पर्व्व

आरंभ में बचन था और बचन परमेश्वर के संग था और बचन परमेश्वर था। वही आरंभ में परमेश्वर के संग था। सब बस्तें उस से रची गई हैं और रचना भर में उस बिना कुछ नहीं रचा गया। जीवन उस में था और जीवन मनुष्यों का उजाला था। और उजाला अन्धियारे में चमकता है और अन्धियारे ने उसे नहीं बूझा।

परमेश्वर की ओर से भेजा हुआ यूहन्ना नाम एक मनुष्य था। वह साक्षी देने के लिये आया कि उजाले पर साक्षी देवे जिसतें सब लोग उस के कारण बिश्वास लावें। वह आप यह उजाला नहीं था परन्तु उजाले पर साक्षी देने को आया था।

२ ३ ४ ५ ६ ७ ८

९ सच्चा उजाला जो हर एक मनुष्य को उजाला करता
१० है सो जगत में आनेवाला था। वह जगत में था
और जगत उस ही से रचा गया है और जगत ने
११ उस को नहीं पहचाना। वह अपने लोगों पास
१२ आया और अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया। परन्तु
जितनों ने उसे ग्रहण किया उन्हों को उस ने परमे-
श्वर के पुत्र होने का अधिकार दिया कि वे उस के
१३ नाम पर बिश्वास लाते हैं। वे न तो लहू से और न
शरीर की इच्छा से और न पुरुष की इच्छा से परन्तु
१४ परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं। और बचन ने देह
धारण किई और कृपा और सचाई से भरपूर होके
हमारे बीच में डेरा किया और जैसे पिता के एकलौते
का ऐश्वर्य्य हम ने उस का वैसा ऐश्वर्य्य देखा।

१५ यूहन्ना ने उस पर साक्षी दिई और पुकार के कहा
जिस के विषय में मैं ने कहा था कि जो मेरे पीछे
आता है वह मुझ से उत्तम है क्योंकि वह मुझ से
१६ आगे था सो यही है। और उस की भरपूरी में से
१७ हम सभों ने पाया और कृपा पर कृपा पाई। क्योंकि
व्यवस्था मूसा के द्वारा से दिई गई फिर कृपा और
१८ सचाई यिसू मसीह से पहुंची। किसी ने परमेश्वर
को कभी नहीं देखा है; एकलौता पुत्र जो पिता की
गोद में है उसी ने उसे प्रगट किया है।

१९ जब यहूदियों ने यरूसलम से याजकों और लावियों
को यह पूछने को यूहन्ना पास भेजा तू कौन है

तब उस की साची यह थी। उस ने मान लिया और | २०
नहीं मुकरा परन्त उस ने मान लेके कहा मैं मसीह
नहीं हूं। तब उन्हों ने उस से पूछा फिर तू कौन | २१
है क्या तू इलियाह है; वह बोला मैं नहीं हूं; क्या
तू वह भविष्यतवक्ता है; उस ने उत्तर दिया कि
नहीं। फिर उन्हों ने उस से कहा तू कौन है कि | २२
जिन्हों ने हमें भेजा हम उन्हें कुछ उत्तर देवें तू
अपने विषय में क्या कहता है। वह बोला यसइयाह | २३
भविष्यतवक्ता ने कहा है बन में एक पुकारनेवाले का
शब्द है प्रभु का मार्ग बनाओ वह शब्द मैं हूं। और | २४
ये भेजे हुए लोग फरीसियों में से थे। उन्हों ने यह | २५
कहके उस से पूछा यदि तू न तो मसीह न तो इलियाह
और न वह भविष्यतवक्ता है फिर क्यों बपतिसमा देता
है। यूहन्ना ने उन्हें उत्तर देके कहा मैं तो पानी का | २६
बपतिसमा देता हूं परन्तु एक जिसे तुम नहीं जानते
हो सो तुम्हारे बीच में खड़ा है। जो मेरे पीछे आने- | २७
वाला था और मुझ से उत्तम है सो यही है और
उस की जूती का बन्धन मैं खोलने के योग्य नहीं हूं।
यर्दन पार बैतइबरा में जहां यूहन्ना बपतिसमा देता | २८
था तहां ये बातें हुईं।

दूसरे दिन यूहन्ना ने यिसू को अपने पास आते | २९
देखा और कहा देखो परमेश्वर का लेला जो जगत
का पाप उठा ले जाता है। मैं ने कहा था कि एक | ३०
पुरुष जो मुझ से उत्तम है क्योंकि वह मुझ से आगे

था से मेरे पीछे आता है यह मैं ने इस ही के विषय
३१ में कहा था। मैं उसे नहीं जानता था पर मैं इस लिये
पानी से बपतिसमा देता आया कि वह इसराएल पर
३२ प्रगट होवे। और यूहन्ना ने साची देके कहा मैं ने
आत्मा को कपोत के समान आकाश से उतरते देखा
३३ और वह उस पर ठहरा। और मैं उसे नहीं जानता
था परन्तु जिस ने मुझे पानी से बपतिसमा देने को
भेजा है उसी ने मुझ से कहा था कि जिस पर तू
आत्मा को उतरते और ठहरते देखेगा वह पवित्र
३४ आत्मा से बपतिसमा देनेवाला है। सो मैं ने देखा
और साची दिई कि परमेश्वर का पुत्र यही है।

३५ फिर दूसरे दिन यूहन्ना और उस के शिष्यों में से
३६ दो खड़े थे। और यिसू को फिरते देखके उस ने कहा
३७ देखो परमेश्वर का लेला। और ये दोनों शिष्य उस
३८ की बात सुनके यिसू के पीछे हो लिये। तब यिसू ने
मूंह फेरके उन्हें पीछे आते देखा और कहा तुम
क्या ढूंढते हो; उन्हों ने उस से कहा हे रब्बी अर्थात
३९ हे गुरु तू कहां रहता है। उस ने उन से कहा आओ
देखो और जहां वह रहता था तहां उन्हों ने आके
देखा और उस दिन उस के यहां रहे; अटकल से
४० दो घड़ी दिन रहते यह हुआ था। उन दोनों में से
जो यूहन्ना की बात सुनकर उस के पीछे हो लिये एक
४१ समऊन पथरस का भाई अन्द्रियास था। उस ने पहिले
अपने भाई समऊन को पाया और उस से कहा

मसीह कि जिस का अर्थ क्रिस्तुस है उस को हम ने पाया है। वह उसे यिसू पास लाया और यिसू ने उस पर दृष्टि करके कहा तू यूनह का पुत्र समऊन है तू केफा कहावेगा; उस का अर्थ है पत्थर। ४२

दूसरे दिन यिसू ने गलील को जाने चाहा और फिलिप को पाके उस से कहा मेरे पीछे हो ले। ४३ फिलिप तो अन्द्रियास और पथरस के नगर बैतसैदा का था। ४४ फिलिप ने ननतनियेल को पाकर उस से कहा जिस के विषय में मूसा ने व्यवस्था में और भविष्यत-वक्ताओं ने लिखा है अर्थात यूसफ के पुत्र यिसू नासिरी को हम ने पाया है। ४५ नतनियेल ने उस से कहा क्या नसिरत से कोई अच्छी वस्तु निकल आ सकती है; ४६ फिलिप ने उस से कहा आ और देख। यिसू ने नत-नियेल को अपनी ओर आते देखकर उस के विषय में कहा देखो एक सच्चा इसराएली उस में कपट नहीं है। ४७ नतनियेल ने उस से कहा तू कहां से मुझे जानता है; यिसू ने उत्तर देके उस से कहा जब फिलिप ने तुझे बुलाया इस से पहिले जब तू गूलर के पेड़ तले था तब मैं ने तुझे देखा था। ४८ नतनियेल ने उत्तर देके उस से कहा हे रब्बी तू परमेश्वर का पुत्र है तू इस-राएल का राजा है। ४९ यिसू ने उत्तर देके उस से कहा मैं ने जो तुझ से कहा कि गूलर के पेड़ तले तुझे देखा क्या तू इस लिये बिश्वास लाता है तू इन से बड़ी बातें देखेगा। ५० फिर उस ने उस से कहा मैं तुम से ५१

सच सच कहता हूं कि अब से तुम स्वर्ग को खुला और परमेश्वर के दूत ऊपर जाते ऊए और मनुष्य के पुत्र पर उतरते ऊए देखोगे॥

२ पर्ब्ब

२ फिर तीसरे दिन गलील के कानह में किसी का विवाह ऊआ और यिसू की माता वहां थी। और यिसू और उस के शिष्य भी उस विवाह में बुलाये गये थे। ३ जब दाख रस नहीं रहा तब यिसू की माता ने उस से कहा उन के पास दाख रस नहीं रहा है। ४ यिसू ने उस से कहा हे स्त्री मुझे तुझ से क्या काम मेरा समय अब लों नहीं आया है। ५ उस की माता ने सेवकों से कहा जो कुछ वह तुम से कहे सो करो। ६ और वहां यहूदियों के पवित्र करने की रीति के समान पत्थर के छः मटके धरे ऊए थे और एक एक में दो दो अथवा तीन तीन मन की समाई थी। ७ यिसू ने उन से कहा मटकों में पानी भरो सो उन्हों ने उन को मुंहेमुंह भर दिया। ८ फिर उस ने उन से कहा अब निकालो और जेवनार के भण्डारी पास ले जाओ सो वे ले गये। ९ जब जेवनार के भण्डारी ने वह पानी जो दाख रस हो गया था चीखा और न जानता था कि वह कहां से आया परन्तु सेवक लोग जिन्हों ने वह पानी निकाला था सो जानते थे तब जेवनार के भण्डारी ने दूल्हे को बुलाया। १० और उस से कहा हर एक मनुष्य अच्छे दाख रस को पहिले देता है और जब लोग पीके छक गये तब मध्यम को

देता है पर तू ने अच्छे दाख रस को अब लों रखा था। यह पहिला आश्चार्य्य कर्म्म यिसू ने गलील के कानह में किया और अपना ऐश्वर्य्य प्रगट किया और उस के शिष्य उस पर विश्वास लाये। इस के पीछे वह और उस की माता और भाई और उस के शिष्य कफरनहूम को गये पर वे बज्रत दिनों तक वहां न ठहरे। ११ १२

तब यहूदियों का फसह पर्व्व निकट आया और यिसू यरूसलम को गया। और बैलों और भेड़ों और कबूतरों के बेचनेवालों को और खुरदियों को मन्दिर में बैठे ज्ञए पाया। तब उस ने रस्सी का कोड़ा बनाके उन सभों को बैलों और भेड़ों समेत मन्दिर में से निकाल दिया और खुरदियों के टके बिखरा दिये और उन के पटरों को उलट दिया। और कबूतरों के बेचनेवालों से कहा इन वस्तुओं को यहां से ले जाओ; मेरे पिता के घर को ब्योपार का घर मत बनाओ। और उस के शिष्यों ने वह लिखा ज्ञआ कि तेरे घर का ताप मुझे खा गया है चेत किया। १३ १४ १५ १६ १७

तब यहूदियों ने उत्तर देके उस से कहा तू कौनसा चिन्ह हमें दिखाता है जो यह काम करता है। यिसू ने उत्तर दिया और उन से कहा इस मन्दिर को ढा दो और मैं तीन दिन में उसे उठाऊंगा। यहूदियों ने कहा छियालीस बरस से यह मन्दिर बन रहा है और क्या तू उसे तीन दिन में उठावेगा। १८ १९ २०

२१ परन्तु वह अपनी देह के मन्दिर की बात कहता था।
२२ इस लिये जब वह मृतकों में से जी उठा तब उस के शिष्यों ने इस बात को जो उस ने उन से कही थी चेत किया और वे ग्रन्थ पर और यिसू के बचन पर बिश्वास लाये।

२३ और जब वह फसह के पर्व्व में यरूसलम में था तब बहुतेरे लोग उस के आश्चर्य्य कर्म्मों को देखके
२४ उस के नाम पर बिश्वास लाये। परन्तु यिसू ने अपने तईं उन पर न छोड़ा क्योंकि वह सब मनुष्यों को जान-
२५ ता था। और मनुष्य के विषय में किसी का साची देना उस के लिये अवश्य न था क्योंकि जो कुछ कि मनुष्य में है सो वह आप ही जानता था॥

३ पर्व्व

फरीसियों में से निकोदेमुस नाम एक मनुष्य यहू-
२ दियों का एक प्रधान था। उस ने रात को यिसू पास आकर उस से कहा हे रब्बी हम जानते हैं कि तू परमेश्वर की ओर से गुरु होके आया है क्योंकि जो आश्चार्य्य कर्म्म तू करता है सो कोई मनुष्य जब लों कि परमेश्वर उस के संग न हो तब लों कर नहीं
३ सकता है। यिसू ने उत्तर देके उस से कहा मैं तुझ से सच सच कहता हूं कि जब लों मनुष्य फिरके उत्पन्न न होवे तब लों वह परमेश्वर का राज्य देख नहीं
४ सकता। निकोदेमुस ने उस से कहा जब मनुष्य बूढ़ा हो गया तब वह क्योंकर उत्पन्न हो सकता है; क्या वह दूसरी बार अपनी माता के पेट में जाके उत्पन्न

हो सकता है। यिसू ने उत्तर दिया मैं तुझ से सच सच कहता हूं यदि मनुष्य जल से और आत्मा से उत्पन्न न होवे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता है। जो शरीर से उत्पन्न हुआ है सो शरीर है और जो आत्मा से उत्पन्न हुआ है सो आत्मा है। मैं ने जो तुझ से कहा कि तुम्हें फिर के उत्पन्न होना चाहिये तू इस पर अचंभा मत कर। पवन जिधर चाहती है तिधर चलती है और तू उस का शब्द सुनता है परन्तु वह कहां से आती है और कहां को जाती है सो तू नहीं जानता है; जो कोई आत्मा से उत्पन्न हुआ है सो वैसा ही है। निकोदेमुस ने उत्तर देके उस से कहा ये बातें क्योंकर हो सकती हैं। यिसू ने उत्तर देके उस से कहा क्या तू इसराएल का गुरु होके ये बातें जानता है। मैं तुझ से सच सच कहता हूं कि जो हम जानते हैं सो हम कहते हैं और जो हम ने देखा है उस पर साक्षी देते हैं परन्तु तुम हमारी साक्षी नहीं मानते हो। जो मैं ने तुम्हें पृथिवी की बातें कहीं और तुम बिश्वास नहीं करते तो यदि मैं तुम्हें स्वर्ग की बातें कहूं तो तुम क्योंकर बिश्वास करोगे। और जो स्वर्ग से उतरा है अर्थात मनुष्य का पुत्र जो स्वर्ग में है उस को छोड़ कोई मनुष्य स्वर्ग पर नहीं गया है। और जिस रीति से मूसा ने बन में सांप को ऊंचे पर रखा उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊंचाया जाय।

५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४

१५ कि जो कोई उस पर बिश्वास लावे सो नाश न होवे परन्तु अनन्त जीवन पावे।

१६ क्योंकि परमेश्वर ने जगत को ऐसा प्यार किया है कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया कि जो कोई उस पर बिश्वास लावे सो नाश न होवे परन्तु

१७ अनन्त जीवन पावे। क्योंकि परमेश्वर ने अपने पुत्र को इस लिये जगत में नहीं भेजा कि जगत पर दण्ड की आज्ञा करे परन्तु इस लिये भेजा कि जगत उस

१८ के कारण निस्तार पावे। जो उस पर बिश्वास रखता है उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं परन्तु जो बिश्वास नहीं रखता है उस पर दण्ड की आज्ञा हो चुकी क्योंकि वह परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर बिश्वास

१९ न लाया। और दण्ड की आज्ञा इस में है कि उजाला जगत में आया और मनुष्यों ने अन्धियारे को उजाले से अधिक प्यार किया क्योंकि उन के कर्म्म बुरे थे।

२० क्योंकि जो कोई बुरा करता है सो उजाले से बैर रखता है और उजाले के पास नहीं आता है न हो

२१ कि उस के कर्म्म प्रगट होवें। परन्तु जो सच करता है सो उजाले के पास आता है जिस्तें उस के कर्म्म प्रगट होवें कि वे परमेश्वर में किये गये हैं।

२२ इस के पीछे यिसू और उस के शिष्य यहूदाह देश में आये और वह वहां उन के संग कुछ दिन रहा

२३ और बपतिसमा देता था। और यूहन्ना भी सालिम के समीप ऐनोन में बपतिसमा देता था क्योंकि वहां

पानी बहुत था और लोग आके बपतिसमा पाते थे। कि यूहन्ना अब लों बन्दीगृह में डाला नहीं गया था। २४

तब यूहन्ना के शिष्यों और यहूदियों के बीच में पवित्र होने के विषय बिबाद हुआ। उन्हों ने यूहन्ना के पास आके उस से कहा हे रब्बी जो यर्दन के पार तेरे संग था जिस पर तू ने साक्षी दिई थी देख वही बपतिसमा देता है और सब लोग उस के पास आते हैं। यूहन्ना ने उत्तर देके कहा जब लों मनुष्य को स्वर्ग से दिया न जाय तब लों वह कुछ पा नहीं सकता है। तुम आप मेरे साक्षी हो कि मैं ने कहा है मैं मसीह नहीं हूं परन्तु मैं उस के आगे भेजा गया हूं। जिस की दुल्हिन है सो ही दूल्हा है परन्तु दूल्हे का मित्र जो खड़ा होके उस की सुनता है सो दूल्हे की बाणी से बहुत आनन्दित होता है सो मेरा यह आनन्द पूरा हुआ। चाहिये कि वह बढ़े और मैं घटूं। जो ऊपर से आता है सो सब के ऊपर है; जो पृथिवी से होता है सो पृथिवी का है और पृथिवी की कहता है; जो स्वर्ग से आता है सो सब के ऊपर है। और जो कुछ उस ने देखा और सुना है उसी की वह साक्षी देता है और कोई मनुष्य उस की साक्षी ग्रहण नहीं करता है। जिस ने उस की साक्षी ग्रहण किई उस ने इस बात पर छाप किई है कि परमेश्वर सच्चा है। इस लिये कि जिसे ईश्वर ने भेजा है सो परमेश्वर की बातें कहता है क्योंकि परमेश्वर परि- २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४

३५ माण करके आत्मा को नहीं देता है। पिता पुत्र को प्यार करता है और सब वस्तें उस के हाथ में दिई
३६ हैं। जो पुत्र पर बिश्वास लाता है उसी का अनन्त जीवन है और जो पुत्र पर बिस्वास नहीं लाता है सो जीवन को न देखेगा परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर बना रहता है॥

४ पर्ब्ब

जब प्रभु ने जाना कि फरीसियों ने सुना है कि यिसू यूहन्ना से अधिक शिष्य करता और बपतिसमा
२ देता है। यद्यपि यिसू आप नहीं परन्तु उस के शिष्य
३ बपतिसमा देते थे। तब वह यहूदाह को छोड़के
४ गलील को फिर गया। और समरून से होके जाना
५ अवश्य था। तब समरून के एक नगर में जो सिखर कहावता है उस भूमि के पास जो याकूब ने अपने
६ पुत्र यूसफ को दिई थी वहां वह आया। और याकूब का कूआ वहीं था; सो यिसू यात्रा से थकके कूए पर योंही बैठ गया; यह दो पहर के लग भग था।

७ तब समरून की एक स्त्री पानी भरने आई और
८ यिसू ने उस से कहा मुझे पानी पिला। क्योंकि उस के शिष्य नगर में गये थे कि कुछ खाने को मोल लेवें।
९ तब समरून की स्त्री ने उस से कहा तू यहूदी होके मुझ से जो समरून की स्त्री हूं क्योंकर पानी पीने को मांगता है क्योंकि यहूदी लोग समरूनियों से मेल
१० नहीं रखते थे। यिसू ने उत्तर देके उस से कहा यदि तू परमेश्वर का दान जानती और जो तुझ से कहता

है मुझे पानी पिला उस को पहचानती तो तू उस से मांगती और वह तुझे अमृत जल देता। स्त्री ने उस से कहा हे प्रभु तेरे पास जल भरने को कुछ नहीं है और कूआ गहिरा है फिर वह अमृत जल तू ने कहां से पाया। क्या तू हमारे पिता याकूब से बड़ा है उस ने हमें यह कूआ दिया और उस ने आप और उस के लड़कों ने और उस के पशुओं ने उस का जल पीया। यिसू ने उत्तर देके उस से कहा जो कोई यही जल पीता है सो फिर प्यासा होगा। परन्तु जो कोई वह जल जो मैं उसे दूंगा पीता है सो कभी प्यासा न होगा परन्तु जो जल मैं उसे देऊंगा सो उस में जल का ऐसा सोता हो जायगा जो अनन्त जीवन लों बहता रहेगा। स्त्री ने उस से कहा हे प्रभु यह जल मुझे दे कि मैं प्यासी न होऊं और यहां भरने को न आऊं। यिसू ने उस से कहा जाके अपने पति को बुला और यहां आ। स्त्री ने उत्तर देके कहा मेरा पति नहीं है; यिसू ने उस से कहा तू ने ठीक कहा है कि मेरा पति नहीं है। क्योंकि तू पांच पति कर चुकी है और जो अब तू रखती है सो तेरा पति नहीं है; तू ने इस में सच कहा। स्त्री ने उस से कहा हे प्रभु मुझे सूझ पड़ती है कि तू भविष्यतवक्ता है। हमारे पितरों ने इस पहाड़ पर पूजा किई और तुम कहते हो कि वह स्थान कि जिस में पूजा किई चाहिये सो यरूसलम है। यिसू ने उस से कहा हे स्त्री मेरी

११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१

बात सच जान कि वह समय आता है कि तुम लोग न तो इस पहाड़ पर और न यरूसलम में पिता की
२२ पूजा करोगे। तुम जिसे नहीं जानते हो उस की पूजा करते हो; हम जिसे जानते हैं उस की पूजा करते
२३ हैं क्योंकि मुक्ति यहूदियों में से है। परन्तु वह समय आता है और अब है कि सच्चे पूजनेवाले पिता की पूजा आत्मा से और सच्चाई से करेंगे क्योंकि पिता
२४ ऐसे पूजनेवालों को चाहता है। परमेश्वर आत्मा है और जो उस की पूजा करते हैं उन्हें अवश्य है कि
२५ आत्मा से और सच्चाई से पूजा करें। स्त्री ने उस से कहा मैं जानती हूं कि मसीह आता है जो क्रिस्तुस कहावता है जब वह आवेगा तब हमें सब बातें बता-
२६ वेगा। यिसू ने उस से कहा मैं जो तुझ से बोलता हूं सो वही हूं।

२७ इतने में उस के शिष्य आये और अचंभा किया कि वह स्त्री से बातें करता है परन्तु किसी ने न कहा कि तू क्या चाहता है अथवा तू किस लिये उस से
२८ बातें करता है। तब स्त्री ने अपने पानी का घड़ा छोड़ा
२९ और नगर में जाके लोगों से कहा। आओ एक मनुष्य जिस ने सब कुछ जो मैं ने किया है मुझे बता दिया
३० उस को देखो क्या वह मसीह नहीं है। तब वे नगर से निकलके उस पास आये।

३१ इतने में उस के शिष्यों ने उस से बिन्ती करके
३२ कहा हे रब्बी कुछ खा। परन्तु उस ने उन से कहा

खाने को भोजन जिसे तुम नहीं जानते हो सो मेरे पास है। इस लिये शिष्यों ने आपस में कहा क्या कोई ३३ उस के लिये भोजन लाया है। यिसू ने उन से कहा ३४ मेरा भोजन यह है कि मैं अपने भेजनेवाले की इच्छा पर चलूं और उस का काम पूरा करूं। क्या तुम ३५ नहीं कहते हो कि चार महीने के पीछे कटनी होगी; देखो मैं तुम से कहता हूं अपनी आंखें उठाओ और खेतों को देखो कि वे कटनी के लिये पक चुके हैं। जो लवता है सो बनी पाता है और अनन्त जीवन ३६ के लिये फल एकट्ठे करता है जिसतें बोनेवाला और लवनेवाला दोनों मिलके आनन्द करें। और उस पर ३७ यह कहावत सच ठहरी कि एक बोता और दूसरा लवता है। जहां तुम ने परिश्रम न किया है तहां ३८ मैं ने तुम्हें लवने को भेजा औरों ने परिश्रम किया है और तुम ने उन के परिश्रम में प्रवेश किया।

और उस नगर के बहुत से समरूनी लोग उस ३९ स्त्री के कहने से कि जिस ने साची दिई थी कि जो कुछ मैं ने कभी किया है सो उस ने मुझ से कहा उस पर विश्वास लाये। और उन समरूनियों ने उस ४० पास आके उस से बिन्ती किई कि हमारे संग रह; सो वह दो दिन वहां रहा। और बहुत से और ४१ लोग उस का बचन सुनके विश्वास लाये। और उस ४२ स्त्री से कहा अब हम केवल तेरे कहे से विश्वास नहीं लाते हैं क्योंकि हम ने आप ही सुना है और जान-

ते हैं कि निश्चय यही जगत का मुक्तिदाता मसीह है।

४३ और दो दिन के पीछे वह वहां से सिधार के गलील
४४ को गया। क्योंकि यिसू ने आप साक्षी दिई कि भविष्यतवक्ता अपने देश में आदर नहीं पाता है।
४५ और जब वह गलील में आया तब गलीलियों ने उसे ग्रहण किया कि सब कुछ जो उस ने यरूसलम में पर्ब्ब में किया सो उन्हों ने देखा था क्योंकि वे भी पर्ब्ब में गये
४६ थे। और यिसू फिर गलील के कानह में जहां उस ने पानी को दाख रस बनाया था आया।

४७ और एक राजा का मनुष्य था जिस का पुत्र कफर-नहूम में रोगी था; जब उस ने सुना कि यिसू यहूदाह से गलील में आया तब उस ने उस पास जाके उस से बिन्ती किई कि आके उस के पुत्र को चंगा करे क्योंकि
४८ वह मरने पर था। यिसू ने उस से कहा जब तुम लोग चिन्ह और आश्चर्य्य कर्म्म न देखते हो तब तुम
४९ बिश्वास न लाते हो। राजा के मनुष्य ने उस से कहा हे
५० प्रभु मेरे लड़के के मरने से पहिले आ। यिसू ने उस से कहा जा तेरा पुत्र जीता है; उस मनुष्य ने उस बात को जो यिसू ने उस से कहा था प्रतीति किई और चला
५१ गया। वह जाता ही था कि उस के दास उसे मिले
५२ और उस से कहा तेरा पुत्र जीता है। तब उस ने पूछा कि किस घड़ी से वह अच्छा होने लगा; उन्हों ने उस से कहा कल सातवीं घड़ी से ज्वर उस पर से उतर

गया। तब उस के पिता ने जाना कि वही घड़ी है कि जिस में यिसू ने उस से कहा था कि तेरा पुत्र जीता है और आप और उस का सारा घर बिश्वास लाया। ५३
दूसरा आश्चर्य्य कर्म्म जो यिसू ने यहूदाह से आके गलील में किया सो यही है॥ ५४

५ पर्व्व

इस के पीछे यहूदियों का एक पर्व्व हुआ और यिसू यरूसलम को गया। अब यरूसलम में भेड़ फाटक के पास एक कुंड है और उस के पांच उसारे हैं; २
वह इबरानी भाषा में बैतहसदा कहावता है। उन में बहुतेरे दुर्बल अन्धे लंगड़े और चयरोगी पड़े थे ३
वे पानी के हिलने की आशा में थे। क्योंकि एक स्वर्गीय दूत कभी कभी उस कुंड में उतर के पानी को हिलाता था और पानी के हिलने पर जो कोई पहिले उस में उतरता था कैसे ही रोग में क्यों न हो वह उस से चंगा हो जाता था। ४
और एक मनुष्य अठतीस बरस से रोगी होके वहां था। ५
यिसू ने जब उसे पड़े हुए देखा और जान गया कि वह बहुत दिनों से उस दशा में है उस ने उस से कहा क्या तू चंगा हुआ चाहता है। ६
रोगी मनुष्य ने उसे उत्तर दिया कि हे प्रभु मेरा कोई नहीं कि जो पानी के हिलने पर मुझे कुंड में डाल दे और जब लों मैं आप से आता हूं इतने में कोई दूसरा मुझ से आगे उतर पड़ता है। ७
यिसू ने उस से कहा उठ अपना खटोला उठाके चला जा। ८
वोंहीं वह मनुष्य चंगा हो गया और अपना ९

खटोला उठाके चल निकला और यह विश्राम का दिन था।

१० इस लिये यहूदियों ने उस से जो चंगा हुआ था कहा विश्राम का दिन है खटोला उठा ले जाना तुझे ११ उचित नहीं है। उस ने उन्हें उत्तर दिया कि जिस ने मुझे चंगा किया उसी ने मुझ से कहा था अप- १२ ना खटोला उठाके चला जा। तब उन्हों ने उस से पूछा कि जिस मनुष्य ने तुझ से कहा था कि अपना १३ खटोला उठाके चला जा सो कौन है। वह जो चंगा हुआ था सो नहीं जानता था कि वह कौन है इस लिये कि यिसू वहां से चला गया था क्योंकि बहुत १४ लोग वहां थे। इस के पीछे यिसू ने उसे मन्दिर में पाया और उस से कहा देख तू चंगा हुआ है फिर पाप न करना न होवे कि तू अधिक विपत्ति में पड़े। १५ उस मनुष्य ने जाके यहूदियों से कहा जिस ने मुझे १६ चंगा किया सो यिसू था। इस लिये यहूदी लोग यिसू को सताने लगे और उसे घात करने चाहते थे क्यों- कि उस ने ये कार्य्य विश्राम दिन में किये।

१७ परन्तु यिसू ने उन्हें उत्तर दिया मेरा पिता अब लों कार्य्य करता है और मैं भी कार्य्य करता हूं। १८ इस लिये यहूदी लोग उसे घात करने को अधिक चाहते थे क्योंकि उस ने केवल विश्राम दिन को उल्लं- घन न किया परन्तु परमेश्वर को अपना पिता कह- १९ के अपने को परमेश्वर के तुल्य किया। तब यिसू ने

उत्तर देके उस से कहा मैं तुम से सच सच कहता हूं कि पुच आप से कुछ नहीं कर सकता है परन्तु जो कुछ कि वह पिता को करते देखता है सो वह करता है क्योंकि जो कार्य्य कि वह करता है सो ही पुच भी उसी रीति से करता है। क्योंकि पिता पुच को २० प्यार करता है और जो कार्य्य कि आप करता है सो उसे दिखाता है और वह इन से बड़े कार्य्य उसे दिखावेगा ऐसा कि तुम अचंभा करोगे। इस लिये २१ कि जैसे पिता मृतकों को उठाता है और जिलाता है वैसे पुच भी जिन्हें चाहता है उन्हें जिलाता है। कि २२ पिता किसी मनुष्य का न्याव नहीं करता है परन्तु उस ने सारा न्याव पुच को सौंप दिया। कि सब लोग २३ जैसे पिता का आदर करते हैं वैसे पुच का भी आदर करें; जो पुच का आदर नहीं करता सो पिता का जिस ने उसे भेजा है आदर नहीं करता है। मैं तुम से सच सच कहता हूं कि जो कोई मेरा बचन २४ सुनता है और मेरे भेजनेवाले पर बिश्वास लाता है उस का अनन्त जीवन है और दण्ड की आज्ञा उस पर नहीं होती है परन्तु वह मृत्यु से छूटके जीवन को पहुंचा है। मैं तुम से सच सच कहता हूं वह समय २५ आता है और अब है कि मृतक परमेश्वर के पुच की बाणी सुनेंगे और सुनके जीयेंगे। क्योंकि जैसे पिता २६ आप में जीवन रखता है वैसे उस ने पुच को दिया कि आप में जीवन रखे। और उस ने उस को न्याव २७

करने का अधिकार दिया है इस लिये कि वह मनुष्य
२८ का पुत्र है। इस से अचंभा मत करो क्योंकि वह समय
आता है कि जिस में सब जो कबरों में हैं सो उस
२९ की बाणी सुनेंगे। और निकलेंगे; जिन्हों ने भलाई
किई है सो जीवन के लिये जी उठेंगे और जिन्हों ने
३० बुराई किई है सो दण्ड पाने के लिये जी उठेंगे। मैं
आप से कुछ नहीं कर सकता हूं; जैसा मैं सुनता हूं
वैसा मैं बिचार करता हूं और मेरा बिचार ठीक है
क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं परन्तु पिता की इच्छा
३१ जिस ने मुझे भेजा है चाहता हूं। यदि मैं अपने लिये
३२ साक्षी देऊं तो मेरी साक्षी सच नहीं है। जो मेरे
लिये साक्षी देता है सो दूसरा है और मैं जानता हूं
कि जो साक्षी वह मेरे लिये देता है सो सच है।

३३ तुम ने यूहन्ना पास भेजा और उस ने सच्चाई पर
३४ साक्षी दिई। तो भी मैं मनुष्य की साक्षी नहीं चाह-
ता हूं पर मैं इस लिये ये बातें कहता हूं कि तुम मुक्ति
३५ पाओ। वह जलता और चमकता दीपक था और
तुम थोड़े दिन लों उस के उजाले में आनन्द करने
३६ चाहते थे। परन्तु मुझ पास यूहन्ना की साक्षी से
एक बड़ी साक्षी है इस लिये कि जो कार्य्य पिता ने
मुझे पूरे करने को दिये हैं अर्थात जो कार्य्य मैं कर-
ता हूं सो मुझ पर साक्षी देते हैं कि पिता ने मुझे
३७ भेजा है। और पिता ने जिस ने मुझे भेजा है मुझ पर
आप साक्षी दिई है; तुम ने कभी न तो उस की बा-

णो सुनी न उस का रूप देखा है। और उस का वचन तुम में बना नहीं रहता है क्योंकि जिस को उस ने भेजा है उस का तुम बिश्वास नहीं करते हो। धर्म्मग्रन्थ में ढूंढो क्योंकि तुम समझते हो कि उस में तुम्हारे लिये अनन्त जीवन है और ये वे ही हैं जो मुझ पर साक्षी देते हैं। और तुम मुझ पास आने नहीं चाहते हो कि जीवन पाओ। मैं मनुष्यों से महिमा नहीं चाहता हूं। परन्तु मैं तुम्हें जानता हूं कि परमेश्वर का प्यार तुम में नहीं है। मैं अपने पिता के नाम से आया हूं और तुम मुझे ग्रहण नहीं करते हो; यदि कोई दूसरा अपने नाम से आवे तो तुम उसे ग्रहण करोगे। तुम जो आपस में एक एक का आदर चाहते हो और जो आदर केवल परमेश्वर से है सो नहीं ढूंढते हो तुम क्योंकर बिश्वास ला सकते हो। यह मत समझो कि मैं पिता के आगे तुम्हें दोष देऊंगा; एक है जिस पर तुम लोग भरोसा रखते हो अर्थात मूसा वही तुम्हारा दोष देनेवाला है। क्योंकि यदि तुम मूसा के बिश्वासी होते तो तुम मेरे भी बिश्वासी होते इस लिये कि उस ने मेरे विषय में लिखा है। परन्तु यदि तुम उस के लिखे पर बिश्वास नहीं लाते तो मेरे वचनों पर कैसे बिश्वास लाओगे॥

३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७

६ पर्ब्ब

इन बातों के पीछे यिसू गलील के समुद्र के जो तिबेरियास का समुद्र है पार गया। और बहुत से लोग जब उस के आश्चर्य्य कर्म्मों को जो उस ने

२

रोगियों पर किये थे देखा तब उस के पीछे हो
३ लिये। फिर यिसू एक पहाड़ पर चढ़ गया और
४ वहां अपने शिष्यों के संग बैठ गया। और फसह जो
यहूदियों का एक पर्व्व है सो निकट आया था।

५ यिसू ने आंखें उठाके देखा कि बड़ी भीड़ उस के
पास आती है; उस ने फिलिप से कहा हम कहां
६ से उन के खाने के लिये रोटी मोल लें। परन्तु उस
ने उन के परखने के लिये यह कहा था क्योंकि जो
७ किया चाहता था सो वह जानता था। फिलिप ने
उसे उत्तर दिया कि यदि उन में से एक एक को
थोड़ा थोड़ा भी दिया जाय तो भी दो सौ सूकियों
८ की रोटी उन के लिये बस न होगी। उस के शिष्यों
में से एक अर्थात समऊन पथरस का भाई अन्द्रियास
९ ने उस से कहा। यहां एक छोकरे के पास जव की
पांच रोटियां और दो मछलियां हैं परन्तु इतने
१० बहुत लोगों में ये क्या हैं। यिसू ने कहा लोगों
को बैठाओ; अब उस स्थान में बहुत घास थी सो
गिनती में अटकल से पांच सहस्र पुरुष बैठ गये।
११ और यिसू ने रोटियां लिईं और धन्य मानके शिष्यों
को दिईं और शिष्यों ने उन्हें बैठनेवालों में बांटा
और वैसा ही मछलियों से भी जितना वे चाहते
१२ थे इतना दिया। जब वे तृप्त हुए तब उस ने अपने
शिष्यों से कहा जो टुकड़े बच रहे हैं सो एकट्ठे करो
१३ कि कुछ नष्ट न हो। सो उन्हों ने उन को एकट्ठे किया

और जव की पांच रोटियों के टुकड़े जो खानेवालों से वच रहे थे बटोरके बारह टोकरियां भरीं।

१४ तव उन लोगों ने यह आश्चर्य्य कर्म्म जो यिसू ने किया था देखके कहा जो भविष्यतवक्ता जगत में आने को था सो सचमुच यही है। १५ जब यिसू ने जाना कि लोग आने और उसे बरबस पकड़के राजा करने चाहते थे तो वह आप अकेला फिर पहाड़ पर गया।

१६ जब सांझ ऊई तब उस के शिष्य समुद्र पर गये। १७ और नाव पर चढ़के समुद्र पार कफरनहूम को चले ; उस समय अन्धेरा हो चला था और यिसू उन के पास नहीं आया था। १८ और आंधी के चलने के कारण से समुद्र लहराने लगा। १९ जब वे डेढ़ एक कोस खेव चुके तब यिसू को समुद्र पर चलते और नाव के पास आते देखा और डर गये। २० उस ने उन से कहा मैं हूं डरो मत। २१ तब उन्हों ने आनन्द से उस को नाव पर ले लिया और तुरन्त नाव तीर पर जहां वे जाते थे वहां आ पऊंची।

२२ दूसरे दिन उस भीड़ ने जो समुद्र के पार खड़ी थी देखा कि वहां केवल वह एक नाव थी कि जिस पर उस के शिष्य चढ़े थे और दूसरी कोई न थी और कि यिसू अपने शिष्यों के संग उस नाव पर नहीं गया था परन्तु केवल उस के शिष्य ही गये थे। २३ तिस पर भी तिबेरियास से उस स्थान के पास जहां उन्हों ने प्रभु के धन्य मानने के पीछे रोटी खाई थी वहां और

२४ नावें आईं। सो जब उस भीड़ ने देखा कि न यिसू न उस के शिष्य वहां थे तब वे भी नाव पर चढ़े और
२५ यिसू को ढूंढने को कफरनहूम में आये। और समुद्र के पार उस को पाके उस से कहा हे रब्बी तू कब यहां आया।

२६ यिसू ने उन्हें उत्तर देके कहा मैं तुम से सच सच कहता हूं तुम मुझे ढूंढते हो न इस लिये कि तुम ने आश्चर्य्य कर्म्म देखा परन्तु इस लिये कि तुम
२७ रोटियां खाके तृप्त हुए हो। तुम नाशमान भोजन के लिये नहीं परन्तु जो भोजन अनन्त जीवन लों ठहरे और जो मनुष्य का पुत्र तुम्हें देगा उसी के लिये परिश्रम करो क्योंकि पिता परमेश्वर ने उस पर
२८ छाप किई है। तब उन्हों ने उस से कहा हम क्या
२९ करें जिसतें हम परमेश्वर के कार्य्य करें। यिसू ने उत्तर देके उन से कहा परमेश्वर का कार्य्य यह है कि जिसे उस ने भेजा है तुम उस पर बिश्वास लाओ।
३० तब उन्हों ने उस से कहा फिर तू कौनसा चिन्ह दिखाता है जिसतें हम देखके तुझ पर बिश्वास लावें;
३१ तू क्या कार्य्य करता है। हमारे पितरों ने बन में मन्न खाया जैसा कि लिखा है कि उस ने स्वर्ग से उन्हें रोटी खाने को दिई।

३२ यिसू ने उन से कहा मैं तुम से सच सच कहता हूं मूसा ने तुम्हें स्वर्ग से वह रोटी नहीं दिई परन्तु
३३ मेरा पिता तुम्हें सच्ची रोटी स्वर्ग से देता है। क्योंकि

परमेश्वर की रोटी वह है जो स्वर्ग से उतरती और जगत को जीवन देती है। ३४ तब उन्हों ने उस से कहा हे प्रभु हमें नित यह रोटी दिया कर। ३५ यिसू ने उन से कहा जीवन की रोटी मैं हूं; जो मेरे पास आता है सो कभी भूखा नहीं होगा और जो मुझ पर बिश्वास रखता है सो कभी प्यासा नहीं होगा। ३६ परन्तु मैं ने तुम से कहा कि तुम मुझे देखके भी बिश्वास नहीं लाते। ३७ हर एक जो पिता ने मुझे दिया है सो मुझ पास आवेगा और जो मेरे पास आता है उसे मैं कभी निकाल न देऊंगा। ३८ क्योंकि मैं अपनी इच्छा पर नहीं परन्तु अपने भेजनेवाले की इच्छा पर चलने को स्वर्ग से उतरा हूं। ३९ और पिता मेरे भेजनेवाले की यह इच्छा है कि उन सभों में से जो उस ने मुझे दिये हैं मैं किसी को न खोऊं परन्तु पिछले दिन में उसे फिर उठाऊं। ४० और जिस ने मुझे भेजा है उस की यह इच्छा है कि हर एक जो पुत्र को देखे और उस पर बिश्वास लावे सो अनन्त जीवन पावे और मैं उसे पिछले दिन में उठाऊंगा।

४१ तब यहूदी लोग उस पर कुड़कुड़ाये इस लिये कि उस ने कहा था जो रोटी स्वर्ग से उतरी है सो मैं हूं। ४२ और उन्हों ने कहा क्या यह यूसफ का पुत्र यिसू नहीं है कि उस के माता पिता को हम जानते हैं; फिर वह क्योंकर कहता है कि मैं स्वर्ग से उतरा हूं। ४३ यिसू ने उत्तर देके उन से कहा आपस

४४ में मत कुड़कुड़ाओ। कोई मनुष्य जब लों पिता जिस ने मुझे भेजा है उसे न खेंचे तब लों मेरे पास आ नहीं सकता है और मैं उसे पिछले दिन में उठाऊं-
४५ गा। भविष्यतवक्ताओं की पुस्तकों में लिखा है कि वे सब परमेश्वर से सिक्षा पावेंगे; सो हर एक मनुष्य जिस ने पिता से सुना और सीखा है सो मेरे पास आता है।
४६ यह नहीं कि किसी मनुष्य ने पिता को देखा है; केवल वह जो परमेश्वर की ओर से है उसी ने पिता को देखा
४७ है। मैं तुम से सच सच कहता हूं जो मुझ पर बिश्वास
४८ लाता है सो अनन्त जीवन रखता है। जीवन की रोटी
४९ मैं हूं। तुम्हारे पितरों ने बन में मन्न खाया और मर
५० गये। जो रोटी स्वर्ग से उतरती है सो वह है कि मनुष्य
५१ उसे खाके न मरे। जीवती रोटी जो स्वर्ग से उतरी है सो मैं हूं; यदि कोई मनुष्य यह रोटी खाय तो वह सदा जीवता रहेगा और जो रोटी मैं देऊंगा सो मेरा मांस है कि मैं उसे जगत के जीवन के लिये देऊंगा।

५२ तब यहूदी लोग आपस में झगड़ने लगे कि यह मनुष्य अपना मांस हमें कैसे खाने को दे सकता है।
५३ यिसू ने उन से कहा मैं तुम से सच सच कहता हूं यदि तुम मनुष्य के पुत्र का मांस न खाओ और उस
५४ का लोहू न पीयो तो तुम में जीवन न होगा। जो कोई मेरा मांस खाता है और मेरा लोहू पीता है सो अनन्त जीवन रखता है और मैं उसे पिछले दिन में
५५ उठाऊंगा। क्योंकि मेरा मांस ठीक भोजन है और

मेरा लोहू ठीक पान है। जो मेरा मांस खाता है ५६
और मेरा लोहू पीता है सो मुझ में रहता है और
मैं उस में रहता हूं। जैसा कि जीवते पिता ने मुझे ५७
भेजा है और मैं पिता से जीवता हूं वैसा जो मुझे
खाता है सो मुझ से जीवेगा। स्वर्ग से उतरी हुई ५८
रोटी यह है; जैसा तुम्हारे पितरों ने मन्न खाया और
मर गये वैसा नहीं; जो यह रोटी खाता है सो सदा
जीवता रहेगा। कफरनहूम में उस ने मण्डलीघर में ५९
उपदेश करते हुए ये बातें कहीं।

तब उस के शिष्यों में से बहुतों ने सुनके कहा ६०
यह कठिन वचन है कौन उसे सुन सकता है। यिसू ६१
ने जब आप में जाना कि मेरे शिष्य आपस में उस
बात पर कुड़कुड़ाते हैं तब उन से कहा क्या यह
बात तुम्हारे ठोकर का कारण है। फिर जो तुम ६२
मनुष्य के पुत्र को ऊपर को जहां वह आगे था तहां
जाते देखोगे तो क्या होगा। आत्मा जो है सो जि- ६३
लानेवाला है मांस से कुछ लाभ नहीं; जो बातें मैं
तुम से कहता हूं सो ही आत्मा हैं और जीवन हैं।
परन्तु कोई कोई जो बिश्वास नहीं करते हैं सो तुम ६४
में हैं क्योंकि यिसू आरंभ से जानता था कि जो बिश्वास
न लाते हैं सो कौन हैं और कौन मुझे पकड़वावे-
गा। फिर वह बोला इस लिये मैं ने तुम से कहा कोई ६५
मनुष्य जबलों उसे मेरे पिता की ओर से दिया न जाय
तबलों वह मेरे पास नहीं आ सकता है। उसी घड़ी ६६

से उस के शिष्यों में से बहुतेरे फिर गये और आगे
६७ उस के संग न चले। तब यिसू ने उन बारहों से कहा
६८ क्या तुम भी चाहते हो कि चले जाओ। समऊन
पथरस ने उसे उत्तर दिया हे प्रभु हम लोग किस पास
६९ जायें; अनन्त जीवन के बचन तो तेरे पास हैं। और
हम तो बिश्वास रखते हैं और जानते हैं कि तू जीवते
७० परमेश्वर का पुत्र मसीह है। यिसू ने उन से कहा क्या
मैं ने तुम्हें बारह नहीं चुना है पर एक तुम में से शैतान
७१ है। उस ने समऊन के पुत्र यहूदाह इसकरियत को
कहा क्योंकि वह उस को पकड़वानेवाला था और
बारहों में से था॥

७ पर्व्व

इन बातों के पीछे यिसू गलील में फिरता रहा
क्योंकि यहूदी लोग उस के मार डालने की घात में
लगे थे इस लिये वह यहूदाह में फिरने न चाहा।
२ और यहूदियों का तंबुओं का पर्व्व निकट आया। इस
३ लिये उस के भाइयों ने उस से कहा यहां से सिधार के
यहूदाह में जा जिसतें जो कार्य्य तू करता है सो तेरे
४ शिष्य भी देखें। क्योंकि ऐसा कोई नहीं है जो छिपके
कुछ कार्य्य करे और आप लोगों में प्रगट होने चाहे;
यदि तू ये कार्य्य करता है तो अपने को संसार को
५ दिखा। क्योंकि उस के भाई भी उस पर बिश्वास न
६ लाये। यिसू ने उन से कहा मेरा समय अभी नहीं आया
७ परन्तु तुम्हारा समय सदा बना है। संसार तुम से
बैर नहीं कर सकता है परन्तु मुझ से वह बैर करता

है क्योंकि मैं उस पर यह साची देता हूं कि उस के कार्य्य बुरे हैं। तुम इस पर्ब्ब में जाओ मैं अभी इस पर्ब्ब में नहीं जाता हूं क्योंकि मेरा समय अभी पूरा नहीं हुआ। ये बातें कहके वह गलील में रहा। परन्तु जब उस के भाई पर्ब्ब में जा चुके तब वह भी प्रगट से तो नहीं परन्तु छिपके गया। ८ ९ १०

यहूदी लोग पर्ब्ब में उसे ढूंढने और कहने लगे वह कहां है। और लोगों में उस के विषय में बहुत बखेड़ा हुआ; कोई कोई कहते थे वह भला मनुष्य है और कोई कोई कहते थे कि नहीं परन्तु वह लोगों को भरमाता है। तिस पर भी यहूदियों के डर के मारे कोई उस के विषय में कुछ खोलके नहीं बोलता था। ११ १२ १३

और पर्ब्ब के दिनों के बीच में यिसू ने मन्दिर में जाके उपदेश किया। तब यहूदी लोग अचंभित होके बोले इस मनुष्य को बिना पढ़े पुस्तकों का ज्ञान कहां से हुआ। यिसू ने उन्हें उत्तर देके कहा मेरा उपदेश मेरा नहीं परन्तु मेरे भेजनेवाले का है। जो कोई उस की इच्छा पर चला चाहे सो जानेगा कि यह उपदेश क्या परमेश्वर की ओर का है अथवा क्या मैं आप से बोलता हूं। जो अपनी ओर से कुछ कहता है सो अपनी बड़ाई चाहता है परन्तु जो अपने भेजनेवाले की बड़ाई चाहता है सो ही सच्चा है और उस में कुछ अधर्म्म नहीं है। क्या मूसा ने तुम्हें व्यवस्था १४ १५ १६ १७ १८ १९

नहीं दिई है तौ भी तुम में से कोई व्यवस्था पर नहीं चलता है; तुम मेरे मार डालने की घात में क्यों लगे
२० हो। लोगों ने उत्तर देके कहा तुझे पिशाच लगा है
२१ कौन तेरे मार डालने की घात में है। यिसू ने उत्तर देके उन से कहा मैं ने एक कार्य्य किया और तुम अचं-
२२ भा करते हो। मूसा ने खतना करने की आज्ञा तुम्हें दिई है यद्यपि कि वह मूसा से नहीं परन्तु पितरों से है और तुम बिश्राम दिन में मनुष्य का खतना करते हो।
२३ जब कि मूसा की व्यवस्था के भंग न होने के लिये तुम विश्राम के दिन मनुष्य का खतना करते हो तो क्या तुम इस लिये मुझ पर रिसियाते हो कि मैं ने बिश्राम
२४ दिन में एक मनुष्य को सर्वांग चंगा किया है। देखाई का बिचार मत करो परन्तु ठीक बिचार करो।

२५ तब कितने यरूसलमियों ने कहा जिसे वे घात
२६ करने चाहते हैं क्या यह वही है कि नहीं। फिर देखो वह तो निधड़क बातें करता है और वे उसे कुछ नहीं कहते हैं; क्या प्रधानों ने भी निश्चय किया
२७ कि मसीह सचमुच यही है। हम तो जानते हैं कि यह कहां का है पर जब मसीह आवेगा तब कोई नहीं
२८ जानेगा कि वह कहां का है। फिर यिसू ने मन्दिर में उपदेश करते हुए यों पुकारा तुम मुझे पहचानते हो और तुम जानते हो कि मैं कहां का हूं; मैं आप से नहीं आया परन्तु जिस ने मुझे भेजा है सो सच्चा
२९ है उसे तुम नहीं जानते हो। पर मैं उसे जानता हूं

क्योंकि मैं उस की ओर से हूं और उस ने मुझे भेजा है।
तब उन्हों ने उसे पकड़ने चाहा पर किसी मनुष्य ने ३०
उस पर हाथ न डाला क्योंकि उस का समय अब लों
पहुंचा नहीं था। और लोगों में से बहुतेरे उस पर ३१
बिश्वास लाये और बोले जब मसीह आवेगा क्या वह
इन से जो इस ने किये हैं अधिक आश्चर्य कर्म्म करे-
गा।

फरीसियों ने सुना कि लोग उस के विषय में ऐसा ३२
बखेड़ा करते थे; फिर फरीसियों और प्रधान याजकों
ने उसे पकड़ने को प्यादे भेजे। यिसू ने उन से कहा ३३
थोड़ी बेर और मैं तुम्हारे संग रहूं फिर मैं अपने
भेजनेवाले के पास जाता हूं। तुम मुझे ढूंढोगे और ३४
नहीं पाओगे और जहां मैं हूं वहां तुम आ नहीं सक-
ते हो। तब यहूदियों ने आपस में कहा वह कहां ३५
जायगा कि हम उसे न पावें; जो लोग यूनानियों में
इधर उधर हैं क्या वह उन के पास जायगा और
यूनानियों को उपदेश देगा। जो बात उस ने कही ३६
कि तुम मुझे ढूंढोगे और न पाओगे और जहां मैं
हूं तहां तुम आ नहीं सकते हो सो क्या है।

फिर पिछले दिन जो पर्ब्ब का बड़ा दिन है यिसू ३७
ने खड़ा होकर यह कहके पुकारा यदि कोई प्यासा
हो तो मुझ पास आवे और पीवे। धर्म्मग्रन्थ के लिखे ३८
के समान जो मुझ पर बिश्वास रखता है उस के घट से
अमृत जल की नदियां बहेंगीं। उस ने आत्मा के विषय ३९

में जो उस के बिश्वासी पाने को थे यह बात कही क्योंकि पवित्र आत्मा अब लों उतरा नहीं था इस लिये कि
४० यिसू अब लों अपने ऐश्वर्य्य को न पहुंचा था। तब उन लोगों में से बहुतेरों ने यह सुनके कहा निश्चय यह
४१ वह भविष्यतवक्ता है। औरों ने कहा यह मसीह है परन्तु कोई कोई बोले क्या मसीह गलील से निकलता
४२ है। क्या धर्म्मग्रन्थ में नहीं लिखा है कि मसीह दाऊद के बंश से और बैतलहम की बस्ती से जहां दाऊद
४३ था आता है। सो लोगों में उस के विषय में फूट हुई।
४४ कितनों ने उसे पकड़ने को चाहा परन्तु किसी
४५ ने उस पर हाथ न डाले। तब प्यादे प्रधान याजकों और फरीसियों पास आये और उन्हों ने उन से कहा
४६ तुम उसे क्यों न लाये। प्यादों ने उत्तर दिया कि कोई मनुष्य कभी इस मनुष्य के समान बातें नहीं
४७ करता था। तब फरीसियों ने उन्हें उत्तर दिया क्या
४८ तुम भी भरमाये गये। क्या प्रधानों अथवा फरी-
४९ सियों में से भी कोई उस पर बिश्वास लाया। परन्तु यह लोग जो व्यवस्था को नहीं जानते हैं सो सरा-
५० पित हैं। निकोदेमुस ने जो रात को यिसू के पास
५१ आया था और उन में से एक था उन से कहा। हमारी व्यवस्था जब किसी को पहिले न सुने और न जाने कि वह क्या करता है क्या उसे तब दोषी ठहराती
५२ है। उन्हों ने उत्तर देके उस से कहा क्या तू भी गलीली है ढूंढ और देख कि गलील से कोई

भविष्यतवक्ता नहीं निकलता है। फिर हर एक अपने अपने घर को गया ॥ | ५३

८ पर्व्व

यिसू जलपाई के पहाड़ को गया। और बड़े तड़के २ वह फिर मन्दिर में आया और सब लोग उस के पास आये और उस ने बैठके उन्हें उपदेश दिया। ३ तब अध्यापक और फरीसी लोग एक स्त्री को जो व्यभिचार में पकड़ी गई थी उस पास लाये और उसे बीच में खड़ी करके उस से कहा। ४ हे गुरु यह स्त्री व्यभिचार करते ही पकड़ी गई। ५ अब मूसा ने तो व्यवस्था में हमें आज्ञा किई कि ऐसियों को पत्थरवाह करें फिर तू क्या कहता है। ६ उन्हों ने उस को परीक्षा करने के लिये यह कहा कि उस में दोष का कारण पावें परन्तु यिसू ने नीचे झुकके उंगली से भूमि पर लिखने लगा। ७ सो जब वे उस से पूछते गये उस ने सीधा होकर उन से कहा जो तुम में से पाप रहित है सो पहिले इस को पत्थर मारे। ८ और फिर झुकके वह भूमि पर लिख रहा। ९ यह सुनके वे मन ही मन में आप को दोषी जानके बड़ों से लेके छोटों तक एक एक करके निकल गये और यिसू अकेला रह गया और स्त्री बीच में खड़ी रही। १० जब यिसू ने सीधा होकर स्त्री को छोड़ और किसी को न देखा तब उस ने उस से कहा हे स्त्री तेरे अपवादी कहां हैं; क्या किसी ने तुझ पर दण्ड की आज्ञा नहीं किई। ११ वह बोली हे प्रभु किसी ने नहीं; यिसू ने उस से कहा फिर मैं भी तुझ पर

दण्ड की आज्ञा नहीं करता हूं ; जा और फिर पाप मत कर।

१२ फिर यिसू ने उन से कहा मैं जगत का उजाला हूं जो मेरे पीछे हो लेता है सो अन्धियारे में न चलेगा
१३ परन्तु जीवन का उजाला पावेगा। तब फरीसियों ने उस से कहा तू अपने विषय में साची देता है तेरी
१४ साची सच नहीं है। यिसू ने उत्तर देके उन से कहा यद्यपि मैं अपने विषय में साची देता हूं तौ भी मेरी साची सच है क्योंकि मैं जानता हूं कि मैं कहां से आया और कहां को जाता हूं परन्तु तुम लोग नहीं जानते हो कि मैं कहां से आया हूं और कहां को जाता हूं।
१५ तुम लोग शरीर के समान बिचार करते हो मैं किसी
१६ का बिचार नहीं करता हूं। तथापि यदि मैं बिचार करूं तो मेरा बिचार सच है क्योंकि मैं अकेला नहीं हूं परन्तु मैं हूं और पिता जिस ने मुझे भेजा है सो भी
१७ है। फिर तुम्हारी व्यवस्था में लिखा है कि दो मनुष्यों
१८ की साची सच है। एक तो मैं हूं कि अपने विषय में साची देता हूं और एक तो पिता जिस ने मुझे भेजा है
१९ सो मेरे लिये साची देता है। तब उन्हों ने उस से कहा तेरा पिता कहां है; यिसू ने उत्तर दिया तुम लोग न तो मुझ को न मेरे पिता को जानते हो; यदि तुम मुझे
२० जानते तो मेरे पिता को भी जानते। यिसू ने मन्दिर में उपदेश करते हुए रोकड़स्थान में ये बातें कहीं और

किसी ने उस पर हाथ न डाले क्योंकि उस का समय अब लों नहीं आया था ।

२१ यिसू ने फिर उन से कहा मैं तो जाता हूं और तुम मुझे ढूंढोगे और अपने पापों में मरोगे; जहां मैं जाता हूं तहां तुम नहीं आ सकते हो। २२ तब यहूदियों ने कहा क्या वह अपने को घात करेगा कि वह कहता है जहां मैं जाता हूं तहां तुम नहीं आ सकते हो। २३ फिर उस ने उन से कहा तुम तले से हो मैं ऊपर से हूं; तुम इस जगत के हो मैं इस जगत का नहीं हूं। २४ इस लिये मैं ने तुम से कहा कि तुम अपने पापों में मरोगे क्योंकि यदि तुम बिश्वास न करो कि मैं वही हूं तो तुम अपने पापों में मरोगे। २५ तब उन्हों ने उस से कहा तू कौन है; यिसू ने उन से कहा जो मैं ने तुम्हें पहिले ही से कहा था सो ही मैं हूं। २६ तुम्हारे विषय में कहने और बिचार करने को बज़्त बातें मेरे पास हैं परन्तु मेरा भेजनेवाला सच्चा है और जो बातें मैं ने उस से सुनी हैं सो मैं जगत को कहता हूं। २७ उन्हों ने न समझा कि वह उन्हें पिता के विषय में कहता था। २८ फिर यिसू ने उन से कहा जब तुम मनुष्य के पुत्र को उंचाओगे तब जानोगे कि मैं वही हूं और कि मैं आप से कुछ नहीं करता परन्तु जैसा कि मेरे पिता ने मुझे सिखाया है वैसा मैं ये बातें कहता हूं। २९ और मेरा भेज-नेवाला मेरे संग है; पिता ने मुझे अकेला नहीं छोड़ा

क्योंकि जो कार्य्य उसे सुहाते हैं सो मैं सदा करता हूं।

३० जब वह ये बातें कहता था तब बहुत लोग उस पर
३१ बिश्वास लाये। फिर यिसू ने उन यहूदियों से जो उस पर बिश्वास लाये थे कहा यदि तुम मेरे बचन में बने
३२ रहोगे तो तुम सचमुच मेरे शिष्य हो। और तुम सचाई को जानोगे और सचाई तुम्हें निर्बन्ध करेगी।
३३ उन्हों ने उस को उत्तर दिया कि हम अबिरहाम के बंश हैं और कभी किसी के दास न हुए थे सो तू क्यों-
३४ कर कहता है तुम निर्बन्ध किये जाओगे। यिसू ने उन्हें उत्तर दिया मैं तुम से सच सच कहता हूं जो
३५ कोई पाप करता है सो पाप का दास है। फिर दास सदा घर में नहीं रहता है परन्तु पुत्र सदा रहता है।
३६ इस लिये यदि पुत्र तुम्हें निर्बन्ध करे तो तुम ठीक
३७ निर्बन्ध ठहरोगे। मैं जानता हूं कि तुम अबिरहाम के बंश हो परन्तु तुम मुझे घात करने चाहते हो क्योंकि
३८ मेरा बचन तुम में नहीं ठहरता है। जो मैं ने अपने पिता के संग देखा है सो मैं कहता हूं और जो तुम ने अपने पिता के संग देखा है सो तुम करते हो।
३९ उन्हों ने उत्तर देके उस से कहा अबिरहाम हमारा पिता है; यिसू ने उन से कहा यदि तुम अबिरहाम के सन्तान होते तो तुम अबिरहाम के कार्य्य करते।
४० परन्तु तुम मुझे घात करने चाहते हो और मैं एक मनुष्य हूं कि सच बात जो मैं ने परमेश्वर से सुनी है सो

तुम्हें कही है; अबिरहाम ने यह नहीं किया। तुम अपने पिता के कार्य्य करते हो; उन्हों ने उस से कहा हम लोग तो व्यभिचार से उत्पन्न नहीं ऊए हैं हमारा पिता एक है अर्थात परमेश्वर। यिसू ने उन से कहा यदि परमेश्वर तुम्हारा पिता होता तो तुम मुझे प्यार करते क्योंकि मैं परमेश्वर से निकलके आया हूं; मैं आप से नहीं आया परन्तु उस ने मुझे भेजा है। तुम मेरी बोली क्यों नहीं समझते हो इस लिये कि तुम मेरी बातें सुन नहीं सकते हो। तुम अपने पिता शैतान से हो और अपने पिता की इच्छा के समान करने चाहते हो; वह तो आरंभ से हत्यारा था और सचाई में बना न रहा क्योंकि उस में सचाई है नहीं; जब वह झूठ कहता है तब वह अपने ही का कहता है क्योंकि वह झूठा है और झूठ का जनक है। पर मैं सच कहता हूं इस कारण तुम लोग मेरी प्रतीति नहीं करते। तुम में से कौन मुझ पर पाप ठहराता है फिर यदि मैं सच कहता हूं तो तुम लोग मेरी प्रतीति क्यों नहीं करते। जो परमेश्वर का है सो परमेश्वर की बातें सुनता है तुम लोग परमेश्वर के नहीं हो इस लिये तुम उन्हें नहीं सुनते हो।

४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७

तब यहूदियों ने उत्तर दिया और उस से कहा क्या हम अच्छा नहीं कहते कि तू समरूनी है और तुझे पिशाच लगा है। यिसू ने उत्तर दिया कि मुझे पिशाच नहीं लगा परन्तु मैं अपने पिता का आदर करता हूं

४८ ४९

५० और तुम मेरा अनादर करते हो। और मैं अपनी महिमा नहीं ढूंढता; एक है जो ढूंढता है और बि-
५१ चार करता है। मैं तुम से सच सच कहता हूं यदि कोई मनुष्य मेरा बचन पालन करे तो वह मृत्यु को
५२ कभी नहीं देखेगा। तब यहूदियों ने उस से कहा अब हम ने जाना कि तुझे पिशाच लगा है; अबिरहाम और भविष्यतवक्ता मर गये और तू कहता है यदि कोई मेरा बचन पालन करे तो वह मृत्यु का स्वाद
५३ कभी न चीखेगा। क्या तू हमारे पिता अबिरहाम से जो मर गया बड़ा है; सब भविष्यतवक्ता मर गये फिर
५४ तू अपने को क्या ठहराता है। यिसू ने उत्तर दिया यदि मैं अपनी महिमा करूं तो मेरी महिमा कुछ नहीं है; मेरा पिता है जिस को तुम कहते हो कि हमारा परमेश्वर है वही मेरी महिमा करता है।
५५ तुम ने उसे नहीं जाना परन्तु मैं उसे जानता हूं और यदि मैं कहूं कि मैं उसे नहीं जानता तो मैं तुम्हारे समान झूठा ठहरूंगा परन्तु मैं उसे जानता हूं और
५६ उस का बचन पालन करता हूं। तुम्हारा पिता अबिरहाम मेरा दिन देखने को तरसता था सो उस
५७ ने देखा और आनन्द किया। यहूदियों ने उस से कहा तेरी आयुर्बल पचास बरस की भी नहीं है और क्या तू
५८ ने अबिरहाम को देखा। यिसू ने उन से कहा मैं तुम से सच सच कहता हूं जब अबिरहाम भी न था तब
५९ मैं हूं। तब उन्हों ने उसे मारने को पत्थर उठाये परन्तु

यिसू ने आप को छिपा लिया और मन्दिर से निकल-
के उन के बीच से होके चला गया।

९ पर्ब्ब

और जाते हुए उस ने एक मनुष्य जो जन्म का अन्धा
२ था देखा। और उस के शिष्यों ने उस से पूछा हे रब्बी
पाप किस ने किया कि यह अन्धा होके उत्पन्न हुआ
क्या इस मनुष्य ने अथवा उस के माता पिता ने किया।
३ यिसू ने उत्तर दिया न तो इस मनुष्य ने पाप किया न
उस के माता पिता ने परन्तु यह इस लिये हुआ कि
परमेश्वर के कार्य्य उस में प्रगट होवें। ४ जब लों दिन
है तब लों अपने भेजनेवाले के कार्य्य करना मुझे चा-
हिये; रात आती है और कोई उस में कार्य्य नहीं
कर सकता है। ५ जगत में रहते हुए मैं जगत का उजा-
ला हूं। ६ यों कहके उस ने भूमि पर थूका और थूक
से मिट्टी गूंधी और वह मिट्टी अन्धे की आंखों पर
मली। ७ और उस से कहा जाके सिलोहा कुंड में (उस
का अर्थ है भेजा) स्नान कर; सो उस ने जाके स्नान
किया और देखता आया।

८ तब पड़ोसी और जिन्हों ने उसे आगे अन्धा देखा
था सो बोले जो बैठा भीख मांगता था क्या यह वह
नहीं है। ९ कोई कोई बोले कि वही है औरों ने कहा
वह उसी के ऐसा है उस ने कहा मैं वही हूं। १० फिर
उन्हों ने उस से कहा तेरी आंखें क्योंकर खुल गईं।
११ उस ने उत्तर देके कहा एक मनुष्य ने जो यिसू कहाव-
ता है मिट्टी गूंधके मेरी आंखों पर मली और मुझ से

कहा सिलोहा कुंड में जाके स्नान कर सो मैं ने जाके
१२ स्नान किया और आंखें पाईं। तब उन्हों ने उस से कहा
वह कहां है; वह बोला मैं नहीं जानता।

१३ लोग उस को जो आगे अन्धा था फरीसियों के
१४ पास लाये। और जब कि यिसू ने मिट्टी को गूंधके उस
१५ की आंखें खोलीं तब बिश्राम का दिन था। फिर फरी-
सियों ने भी उस से पूछा तू ने अपनी आंखें किस रीति
से पाईं; उस ने उन से कहा उस ने मेरी आंखों पर
गीली मिट्टी लगाई और मैं नहाया और देखता हूं।
१६ तब फरीसियों में से कितनों ने कहा यह मनुष्य पर-
मेश्वर की ओर से नहीं है क्योंकि वह बिश्राम का दिन
नहीं मानता है; औरों ने कहा पापी मनुष्य ऐसे आश्चर्य्य
१७ कर्म्म कैसे कर सकता है और उन में फूट हुई। उन्हों
ने उस अन्धे मनुष्य से फिर कहा जिस ने तेरी आंखें
खोलीं तू उस के विषय में क्या कहता है; उस ने कहा
१८ वह भविष्यतवक्ता है। परन्तु यहूदियों ने जब लों उस
मनुष्य के माता पिता को जिस ने आंखें पाईं थीं न
बुलाया तब लों इस बात की प्रतीति न करते थे कि वह
१९ अन्धा था और अपनी आंखें पाईं थीं। सो उन्हों ने उन
से पूछा तुम्हारा पुत्र कि जिसे तुम कहते हो कि अन्धा
उत्पन्न हुआ था क्या यही है फिर वह अब क्योंकर
२० देखता है। उस के माता पिता ने उन्हें उत्तर देके
कहा हम जानते हैं कि यह हमारा पुत्र है और यह
२१ कि वह अन्धा उत्पन्न हुआ था। परन्तु वह किस रीति

से अब देखता है सो हम नहीं जानते और उस की आंखें किस ने खोलीं सो हम नहीं जानते; वह सियाना है उस से पूछ लो वह अपनी आप कहेगा। २२ उस के माता पिता ने यहूदियों के डर के मारे यह कहा क्योंकि यहूदियों ने ठहरा रखा था कि यदि कोई मान लेवे कि वह मसीह है तो वह मण्डलीघर से निकाला जाय। २३ सो उस के माता पिता ने कहा कि वह सियाना है उसी से पूछो। २४ तब उन्हों ने उस मनुष्य को जो अन्धा था फिर बुलाया और उस से कहा परमेश्वर की स्तुति कर हम जानते हैं कि यह मनुष्य पापी है। २५ उस ने उत्तर देके कहा वह पापी है कि नहीं है मैं नहीं जानता; एक बात मैं जानता हूं कि मैं अन्धा था अब देखता हूं। २६ तब उन्हों ने उस से फिर पूछा उस ने तुझ को क्या किया; उस ने किस रीति से तेरी आंखें खोलीं। २७ उस ने उन्हें उत्तर दिया कि मैं तो तुम से अभी कह चुका और तुम ने नहीं सुना क्यों फिर सुना चाहते हो; क्या तुम लोग भी उस के शिष्य हुआ चाहते हो। २८ तब उन्हों ने उसे गाली देके कहा तू ही उस का शिष्य है हम मूसा के शिष्य हैं। २९ हम जानते हैं कि परमेश्वर ने मूसा से वार्त्ता किई पर हम नहीं जानते कि यह जन कहां का है। ३० उस मनुष्य ने उत्तर देके उन से कहा तुम नहीं जानते हो कि वह कहां का है और तो भी उस ने मेरी आंखें खोलीं हैं यह तो अचंभे की बात है। ३१ हम जानते हैं कि परमेश्वर पापियों की नहीं

सुनता परन्तु यदि कोई परमेश्वर का भक्त होय और उस की इच्छा पर चलता होय तो उस की वह सुनता
३२ है। जगत के आरंभ से कभी यह बात सुनने में न आई कि किसी ने एक जन्म के अन्धे की आंखें खोली हों।
३३ यदि यह मनुष्य परमेश्वर की ओर से नहीं होता तो
३४ कुछ नहीं कर सकता। उन्हों ने उत्तर देके उस से कहा तू तो सर्वथा पापों में जनमा और क्या तू हमें सिखाता है; तब उन्हों ने उसे निकाल दिया।

३५ यिसू ने सुना कि उन्हों ने उसे निकाल डाला था; उस ने उसे पाके कहा क्या तू परमेश्वर के पुत्र पर बिश्वास
३६ लाता है। उस ने उत्तर देके कहा हे प्रभु वह कौन
३७ है कि मैं उस पर बिश्वास लाऊं। यिसू ने उस से कहा तू ने उसे देखा है और जो तुझ से बातें करता है सो
३८ वही है। उस ने कहा हे प्रभु मैं बिश्वास लाता हूं और
३९ उस ने उस को दण्डवत किई। तब यिसू ने कहा मैं न्याय के लिये इस जगत में आया हूं कि जो नहीं देखते
४० हैं सो देखें और जो देखते हैं सो अन्धे हो जावें। फरीसियों ने जो उस के संग थे ये बातें सुनके उस से कहा
४१ क्या हम भी अन्धे हैं। यिसू ने उन से कहा जो तुम अन्धे होते तो तुम को पाप न होता परन्तु तुम तो कहते हो कि हम देखते हैं इस लिये तुम्हारा पाप रहता है॥

१० पर्ब्ब

मैं तुम से सच सच कहता हूं जो कोई द्वार से भेड़शाले में प्रवेश नहीं करता परन्तु और कहीं से ऊपर
२ चढ़के आता है सो चोर और बटमार है। परन्तु जो

द्वार से प्रवेश करता है सो भेड़ों का चरवाहा है। द्वारपाल उस के लिये खोलता है और भेड़ें उस का ३ शब्द सुनती हैं और वह अपनी भेड़ों को नाम लेके बुलाता है और उन्हें बाहर ले जाता है। और जब वह ४ अपनी भेड़ों को बाहर करता है तब वह उन के आगे आगे जाता है और भेड़ें उस के पीछे पीछे चलती हैं क्योंकि वे उस का शब्द पहचानती हैं। और वे बाहरी ५ के पीछे नहीं जातीं परन्तु उस से भागती हैं इस लिये कि वे बाहरियों का शब्द नहीं पहचानतीं। यिसू ६ ने यह दृष्टान्त उन्हें कहा परन्तु वे न समझे कि जो बातें वह हम से कहता है सो क्या हैं।

यिसू ने फिर उन से कहा मैं तुम से सच सच कहता ७ हूं भेड़ों का द्वार मैं हूं। सब जितने मुझ से आगे ८ आये सो चोर और बटमार हैं परन्तु भेड़ों ने उन की न सुनी। वह द्वार मैं हूं; यदि कोई मेरे द्वारा प्रवेश ९ करे तो वह बच जायगा और भीतर बाहर आया जाया करेगा और चराव पावेगा। चोर केवल इस १० लिये आता है कि चोरी करे और मार डाले और नाश करे; मैं आया हूं कि वे जीवन पावें और कि वे अधिक बढ़ती पावें। अच्छा चरवाहा मैं हूं; अच्छा चरवाहा ११ भेड़ों के लिये अपना प्राण देता है। परन्तु जो १२ बनिहार है और चरवाहा नहीं जिस की भेड़ें अपनी नहीं हैं सो झुण्डार को आते देखकर भेड़ों को छोड़के भागता है तब झुण्डार उन्हें पकड़ता और भेड़ों

१३ को छिन्न भिन्न करता है। बनिहार भागता है क्योंकि वह बनिहार है और भेड़ों के लिये कुछ चिन्ता
१४ नहीं करता है। अच्छा चरवाहा मैं हूं और अपनियों
१५ को जानता हूं और मेरी मुझे जानती हैं। जैसे पिता मुझे जानता है वैसे मैं पिता को जानता हूं और मैं
१६ भेड़ों के लिये अपना प्राण देता हूं। मेरी और भी भेड़ें हैं जो इस भेड़शाले की नहीं उन्हें भी लाना मुझे अवश्य है और वे मेरा शब्द सुनेंगी और पाल एक और
१७ चरवाहा एक होगा। पिता मुझे इस लिये प्यार करता है कि मैं अपना प्राण देता हूं कि मैं उसे फेर लेऊं।
१८ कोई मनुष्य उस को मुझ से नहीं लेता परन्तु मैं आप से उसे देता हूं; उसे देने को मुझे अधिकार है और उसे फेर लेने को मुझे अधिकार है; यही आज्ञा मैं ने अपने पिता से पाई है।

१९ तब इन बातों के कारण यहूदियों में फिर फूटी
२० हुई। उन में से बहुतों ने कहा उसे पिशाच लगा है
२१ और वह सिर्री है तुम उस की क्यों सुनते हो। औरों ने कहा ये बातें पिशाच लगे हुए मनुष्य की नहीं हैं क्या पिशाच ग्रस्त अन्धे की आंखें खोल सकता है।

२२ और यरूसलम में मन्दिर की प्रतिष्ठा का पर्व्व हुआ
२३ और जाड़े की रितु थी। यिसू मन्दिर में सुलेमानी
२४ उसारे में फिरता था। तब यहूदियों ने उस को घेरके उस से कहा कब लों तू हमारे मन अधर में रखेगा
२५ यदि तू मसीह है तो खोलके हमें कह दे। यिसू ने

उन्हें उत्तर दिया मैं ने तो तुम्हें कह चुका और तुम ने बिश्वास न किया ; जो कार्य्य मैं अपने पिता के नाम से करता हूं सो मेरे साक्षी हैं। परन्तु तुम बिश्वास नहीं लाते क्योंकि जैसा मैं ने तुम्हें कहा तुम मेरी भेड़ों में से नहीं हो। २६ मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं और मैं उन्हें जानता हूं और वे मेरे पीछे चलती हैं। २७ और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूं और वे कभी नाश न होंगी २८ और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा। मेरा पिता २९ जिस ने उन्हें मुझे दिया है सो सभों से बड़ा है और कोई उन्हें मेरे पिता के हाथ से छीन ले नहीं सकता है। ३० मैं और पिता एक हैं। ३१ तब यहूदियों ने फिर पत्थर उठाये कि उसे पत्थरवाह करें। ३२ यिसू ने उन्हें उत्तर दिया मैं ने अपने पिता के अनेक अच्छे कार्य्य तुम्हें दिखाये हैं उन में के कौन से कार्य्य के लिये तुम मुझे पत्थरवाह करते हो। ३३ यहूदियों ने उसे उत्तर देके कहा किसी अच्छे कार्य्य के लिये नहीं परन्तु जो तू परमेश्वर की निन्दा करता है और मनुष्य होके अपने को परमेश्वर ठहराता इसी लिये हम तुझे पत्थरवाह करते हैं। ३४ यिसू ने उन्हें उत्तर दिया क्या तुम्हारी व्यवस्था में यह नहीं लिखा है कि मैं ने कहा तुम परमेश्वर हो। ३५ जिन के पास परमेश्वर का बचन आया जब उन्हें परमेश्वर कहा और धर्म्मग्रन्थ का लोप हो नहीं सकता। ३६ फिर जिसे पिता ने प्रतिष्ठित करके जगत में भेजा है क्या तुम उस से कहते हो तू

परमेश्वर को निन्दा करता है क्योंकि मैं ने कहा मैं
३७ परमेश्वर का पुत्र हूं। यदि मैं अपने पिता के कार्य्य
३८ नहीं करता तो मुझ पर बिश्वास मत लाओ। परन्तु
यदि मैं करता तो यद्यपि तुम मुझ पर बिश्वास न ला-
ओ तौ भी कार्य्यों पर बिश्वास लाओ कि तुम जानो
और निश्चय करो कि पिता मुझ में है और मैं उस में
३९ हूं। तब उन्हों ने उसे फिर पकड़ने चाहा परन्तु वह
४० उन्हों के हाथ से निकल गया। और यर्दन के उस पार
जिस स्थान में यूहन्ना पहिले बपतिसमा देता था वहां
४१ वह फिर जाके रहा। और बहुत लोगों ने उस के
पास आ के कहा यूहन्ना ने कोई आश्चर्य्य कर्म्म न किया
परन्तु जो बातें यूहन्ना ने उस के विषय में कहीं सो
४२ सब सच हैं। और बहुत से लोग वहां उस पर विश्वास
लाये॥

११ पर्व्व

लाजर नाम एक मनुष्य जो मरियम और उस की
बहिन मरतह की बस्ती बैतअनिया का था सो रोगी
२ था। वह मरियम कि जिस ने प्रभु पर सुगन्ध तेल डाला
और उस के पांवों को अपने बालों से पोंछा था उसी
३ का भाई लाजर रोगी था। तब उस की बहिनों ने उसे
कहला भेजा कि हे प्रभु देख जिसे तू प्यार करता है सो
४ रोगी है। यिसू ने सुनके कहा यह मृत्यु का रोग नहीं
परन्तु परमेश्वर की महिमा के लिये है कि परमेश्वर
५ के पुत्र की महिमा उस से होवे। पर यिसू मरतह को
और उस की बहिन और लाजर को प्यार करता था।

सो जब उस ने सुना कि वह रोगी है तब जिस स्थान में वह था उस में दो दिन और भी रहा। ६

और उस के पीछे उस ने अपने शिष्यों से कहा आओ हम फिर यहूदाह को जायें। शिष्यों ने उस से कहा हे रब्बी अभी यहूदियों ने तुझे पत्थरवाह करने को चाहा और क्या तू फिर वहां जाता है। यिसू ने उत्तर दिया दिन के बारह घंटे हैं कि नहीं यदि कोई मनुष्य दिन को चले तो ठोकर नहीं खाता है क्योंकि वह इस जगत का उजाला देखता है। परन्तु यदि कोई रात को चले तो वह ठोकर खाता है क्योंकि उस में उजाला नहीं है। जब ये बातें कह चुका उस ने उन से फिर कहा लाजर हमारा मित्र सो गया परन्तु मैं उसे जगाने जाता हूं। तब उस के शिष्यों ने कहा हे प्रभु यदि वह सोता है तो अच्छा हो जायगा। यिसू ने तो उस की मृत्यु की कही थी परन्तु वे समझे कि उस ने नींद के चैन की कही। फिर यिसू ने उन्हें खोलके कहा लाजर मर गया। और तुम्हारे लिये मैं आनंदित हूं कि मैं वहां न था जिसतें तुम बिश्वास लाओ; आओ उस पास चलें। तब तोमा ने जिसे दीदमुस कहते हैं अपने गुरु भाइयों से कहा आओ हम भी चलें कि उस के संग मरें। ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६

यिसू ने आके देखा कि चार दिन से वह कबर में पड़ा हुआ था। अब बैतअनिया यरूसलम के निकट पैान कोस पर अटकल से था। और बहुत से यहूदी १७ १८ १९

लोग मरतह और मरियम के पास उन के भाई के
२० लिये उन्हें शान्ति देने को आये। सो जब मरतह ने
सुना कि यिसू आता है तब निकलके उसे आगे से लि-
२१ या परन्तु मरियम घर में बैठी रही। मरतह ने यिसू
से कहा हे प्रभु यदि तू यहां होता तो मेरा भाई न
२२ मरता। परन्तु मैं जानती हूं कि अब भी जो कुछ तू
२३ परमेश्वर से मांगे सो परमेश्वर तुझे देगा। यिसू ने
२४ उस से कहा तेरा भाई फेर उठेगा। मरतह ने उस
से कहा मैं जानती हूं कि पुनरुत्थान में पिछले दिन
२५ वह फेर उठेगा। यिसू ने उस से कहा पुनरुत्थान और
जीवन मैं हूं जो मुझ पर बिश्वास रखता है यद्यपि वह
२६ मर जाय तथापि जीयेगा। और जो कोई जीता है और
मुझ पर बिश्वास रखता है सो कभी न मरेगा क्या तू
२७ यह बात प्रतीति करती है। उस ने उस से कहा हे
प्रभु मैं प्रतीति करती हूं कि परमेश्वर का पुत्र मसीह
जो जगत में आनेवाला था सो तू ही है।

२८ यह कहके वह चली गई और चुपके से अपनी
बहिन मरियम को बुलाके कहा गुरु आया है और
२९ तुझे बुलाता है। यह बात सुनते ही वह उठी और उस
३० पास आई। अब लों यिसू बस्ती में न पहुंचा था परन्तु
जिस जगह में मरतह उसे मिली थी वहां वह था।
३१ तब यहूदी लोग जो उस के संग घर में होके उसे शान्ति
देते थे जब मरियम को झप से उठती और बाहर
जाती देखा तब यह कहके उस के पीछे हो लिये कि

वह कबर पर रोने को जाती है। जब मरियम जहां ३२
यिसू था वहां आई और उसे देखा तब उस के पांवों
पर गिर के बोली हे प्रभु यदि तू यहां होता तो मेरा
भाई न मरता। जब यिसू ने उसे देखा कि रोती है ३३
और यहूदियों को भी जो उस के संग आये थे कि रोते
हैं तब मन में आह मारी और खेदित हुआ। और ३४
कहा तुम ने उसे कहां रखा; उन्हों ने कहा हे प्रभु
आ और देख। यिसू रोया। तब यहूदी लोग बोले ३५ ३६
देखो वह कितना उसे प्यार करता था। उन में से ३७
कोई कोई बोले क्या यह पुरुष जिस ने अन्धे की आंखें
खोलीं इस मनुष्य को भी मरने से नहीं बचा सका।
तब यिसू अपने मन में फिर आह भरके कबर पर ३८
आया; वह एक गुहा थी और एक पत्थर उस पर
धरा था। यिसू ने कहा पत्थर को सरकाओ; मरतह ३९
उस मूए हुए की बहिन ने उस से कहा हे प्रभु उस
से तो अब दुर्गन्ध आती है क्योंकि उसे चार दिन हुए।
यिसू ने उस से कहा क्या मैं ने तुझे नहीं कहा है कि ४०
यदि तू विश्वास लावे तो परमेश्वर की महिमा दे-
खेगी। तब उन्हों ने जहां वह मृतक पड़ा था वहां से ४१
पत्थर को सरकाया और यिसू ने आंखें ऊपर करके
कहा हे पिता मैं तेरा धन्य मानता हूं कि तू ने मेरी
सुनी है। मैं ने तो जाना कि तू मेरी नित्य सुनता है ४२
पर जो लोग आस पास खड़े हैं उन के लिये मैं ने
यह कहा जिसतें वे बिश्वास लावें कि तू ने मुझे भेजा

४३ है। यह कहके उस ने बड़े शब्द से पुकारा हे लाजर
४४ निकल आ। तब वह जो मरा था सो कपड़े से हाथ
पांव बन्धे हुए कबर में से निकल आया और उस का
मुंह अंगोछे से लपेटा हुआ था; यिसू ने उन से कहा
४५ उसे खोल दो और जाने दो। तब जो यहूदी लोग
मरियम के पास आये थे और यिसू के ये काम देखे
४६ थे उन में से बहुतेरे बिश्वास लाये। परन्तु उन में से
कितने एक फरीसियों के पास गये और जो यिसू ने
किया था उन्हें कह दिया।

४७ तब प्रधान याजकों और फरीसियों ने सभा को
एकट्ठी करके कहा हम क्या करते हैं कि यह मनुष्य
४८ बहुत आश्चर्य्य कर्म्म करता है। यदि हम उसे ऐसा
रहने देवें तो सब लोग उस पर बिश्वास लावेंगे और
रूमी लोग आके हमारे देश और लोग दोनों को
४९ ले लेंगे। और उन में से एक ने कायफा नाम जो उस
बरस महायाजक था उन से कहा तुम तो कुछ नहीं
५० जानते हो। और बिचार भी नहीं करते हो कि जो
लोगों के सन्ते एक पुरुष मरे और सब लोग नाश न
५१ होवें तो हमारे लिये भला है। उस ने अपनी ओर से
यह न कहा परन्तु उस बरस में महायाजक होके उस
ने भविष्यत की बात कही कि यिसू उन लोगों के लिये
५२ मरेगा। और केवल उन लोगों के कारण नहीं परन्तु
इस लिये भी कि वह परमेश्वर के बालक जो तित्तर-
५३ बित्तर हुए एकट्ठे करे। उस दिन से उन्हों ने एक संग

परामर्श किया कि उसे घात करें। इस लिये यिसू ने यहूदियों में प्रगट से फिरना छोड़ दिया परन्तु वहां से जाके बन के समीप अफराईम नाम एक नगर में गया और वहां अपने शिष्यों के संग रहने लगा। ५४

यहूदियों के फसह का पर्ब्ब निकट हुआ और पर्ब्ब के पहिले बहुत लोग उस देश से यरूसलम को अपने तईं पवित्र करने को गये। उन्हों ने यिसू को ढूंढा और मन्दिर में खड़े होके आपस में कहने लगे तुम क्या समझते हो क्या वह पर्ब्ब में न आवेगा। अब प्रधान याजकों और फरीसियों ने भी आज्ञा किई थी कि यदि कोई जानता हो कि वह कहां है तो बता देवे कि उसे पकड़ लेवें॥ ५५ ५६ ५७

१२ पर्ब्ब

फिर बैतअनिया में जहां लाजर रहता था जो कि मर गया था और जिसे यिसू ने मृतकों में से जिलाया था वहां यिसू फसह से छः दिन आगे आया। वहां उन्हों ने उस के लिये बियारी तैयार किई और मरतह सेवा टहल करती थी और उन में से जो उस के संग भोजन कर बैठे थे एक लाजर था। तब मरियम ने जटामासी का आध सेर चोखा और बहुमूल्य सुगन्ध तेल लेके यिसू के पांवों पर डाला और अपने बालों से उस के पांव पोंछे और तेल की सुगन्ध से घर भर गया। तब उस के शिष्यों में से एक समऊन का पुत्र यहूदाह इसकरियत जो उसे पकड़वाया चाहता था उस ने कहा। यह सुगन्ध तेल तीन सौ सूकियों को २ ३ ४ ५

क्यों न बेचा गया और कंगालों को क्यों न दिया गया।
६ यह उस ने इस लिये नहीं कहा कि वह कंगालों की चिन्ता करता परन्तु इस लिये कि वह चोर था और थैली ले जाता था और जो कुछ उस में डाला गया सो
७ उठा लेता था। तब यिसू ने कहा उसे रहने दे; उस
८ ने मेरे गाड़े जाने के दिन के लिये यह रखा था। क्योंकि कंगाल लोग तुम्हारे संग तो सदा रहते हैं परन्तु मैं तुम्हारे संग सदा न रहूंगा।

९ यहूदियों में से बज्जतेरे जानते थे कि वह यहां है और वे केवल यिसू के लिये नहीं परन्तु लाजर को भी जिसे उस ने मृतकों में से जिलाया था देखने आये।
१० परन्तु प्रधान याजकों ने परामर्श किया कि लाजर को
११ भी घात करें। क्योंकि उस के कारण से बज्जत यहूदी लोग फिर गये और यिसू पर बिश्वास लाये।

१२ दूसरे दिन बज्जत लोग जो पर्व्व में आये थे यह सुन-
१३ के कि यिसू यरूसलम में आता है। खजूर की डालियां लेके उस से मिलने को निकले और पुकारा कि होशाना; इसराएल का राजा जो प्रभु के नाम से आता है सो
१४ धन्य है। और यिसू एक गधे का बच्चा पाके उस पर
१५ चढ़ा जैसा कि लिखा है। कि हे सैहून की पुत्री मत डर देख तेरा राजा गधे के बच्चे पर चढ़ा ज्जआ आता है।
१६ उस के शिष्य पहिले ये बातें न समझे परन्तु जब यिसू अपने ऐश्वर्य्य को पज्जंचा था तब ये बातें जो उस के

विषय में लिखीं थीं और जो लोगों ने उस से किया था सो उन की सुरत में आई।

फिर जब उस ने लाजर को कबर में से बाहर बुलाया और उसे मृतकों में से जिलाया जो लोग उस समय उस के संग थे उन्हों ने उस की साची दिई। लोगों ने सुना कि उस ने यह आश्चर्य्य कर्म्म किया था इस कारण भी वे उसे मिलने को निकले। पर फरीसियों ने आपस में कहा तुम देखते हो कि तुम से कुछ नहीं बन पड़ता है देखो संसार उस के पीछे हो चला। १७ १८ १९

और उन लोगों में जो आराधना के लिये पर्ब्ब में आये थे कितने यूनानी थे। उन्हों ने फिलिप गलील के बैतसैदावाले के पास आके उस से बिन्ती करके कहा अजी हम यिसू को देखने चाहते हैं। फिलिप ने आके अन्द्रियास से कहा फिर अन्द्रियास और फिलिप ने यिसू को कह दिया। तब यिसू ने उन्हें उत्तर देके कहा समय आया है कि मनुष्य के पुत्र की महिमा प्रकाश होवे। मैं तुम से सच सच कहता हूं कि गेहूं का दाना जब लों भूमि में गिरके मर न जाय तब लों अकेला रहता है परन्तु यदि वह मरे तो बहुत सा फल लाता है। जो अपना प्राण प्यार करता है सो उसे खोवेगा और जो इस जगत में अपने प्राण का बैरी है सो उसे अनन्त जीवन लों रखेगा। यदि कोई मनुष्य मेरी सेवा करे तो चाहिये कि वह मेरे पीछे चला २० २१ २२ २३ २४ २५ २६

आवे और जहां मैं हूं वहां मेरा सेवक भी होगा; यदि कोई मनुष्य मेरी सेवा करे तो मेरा पिता उस
२७ का आदर करेगा। अब मेरा प्राण व्याकुल है और मैं क्या कहूं; हे पिता इस घड़ी से मुझे बचा परन्तु मैं तो
२८ इसी लिये इस घड़ी तक पहुंचा हूं। हे पिता अपने नाम की महिमा प्रकाश कर; वहीं यह आकाशवाणी हुई मैं ने उस की महिमा प्रकाश किई है और उस
२९ की महिमा फिर प्रकाश करूंगा। तब जो लोग आस पास खड़े थे सो यह सुनके बोले कि मेघ गरजा; औरों ने कहा एक स्वर्गदूत ने उस से वार्त्ता किई।
३० यिसू ने उत्तर देके कहा यह वाणी मेरे लिये नहीं
३१ परन्तु तुम्हारे लिये हुई। अब इस जगत का न्याव किया जाता है अब इस जगत का प्रधान निकाल दिया
३२ जायगा। और मैं जो हूं यदि मैं पृथिवी से ऊंचा किया
३३ जाऊं तब सब लोग अपनी ओर खैंचूंगा। उस ने यह
३४ कहके बता दिया कि किस मृत्यु से मरेगा। लोगों ने उत्तर देके उस से कहा हम ने व्यवस्था में सुना है कि मसीह सदा रहेगा फिर तू क्योंकर कहता है कि अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र ऊंचा किया जाय; यह
३५ मनुष्य का पुत्र कौन है। तब यिसू ने उन से कहा उजाला अभी थोड़ी बेर और तुम्हारे संग है; उजाले के रहते हुए तुम चलो न हो कि अन्धियारा तुम पर आ पड़े फिर जो अन्धियारे में चलता है सो नहीं जानता
३६ कि किधर जाता है। उजाले के रहते हुए उजाले पर

बिश्वास लाओ जिसतें तुम उजाले के पुत्र होओ ; यिसू ये बातें कहके चला गया और आप को उन से छिपाया ।

परन्तु यद्यपि उस ने उन के साम्हने इतने आश्चर्य्य कर्म्म किये तथापि वे उस पर बिश्वास न लाये । यसइयाह भविष्यतवक्ता का वचन जो उस ने कहा था कि हे प्रभु हमारे समाचार को किस ने प्रतीति किई है और प्रभु का हाथ किस पर प्रगट हुआ है यह बात उन में पूरी हुई । इस लिये वे बिश्वास न ला सके कि यसइयाह ने फिर कहा । उन की आंखें उस ने अन्धी कियां और उन के मन कठोर किये न होवे कि वे आंखों से देखें और मन से समझें और फिर आवें और मैं उन्हें चंगा करूं । जब यसइयाह ने उस का ऐश्वर्य्य देखा तब उस ने ये बातें कहीं और उस के विषय में बोला । तिस पर प्रधानों में से बहुतेरे उस पर बिश्वास लाये परन्तु फरीसियों के लिये उन्हों ने मान न लिया न हो कि वे मण्डलीघर से निकाले जायें । क्योंकि वे मनुष्यों की ओर का यश परमेश्वर की ओर के यश से अधिक चाहते थे ।

यिसू ने पुकारके कहा जो मुझ पर बिश्वास लाता है सो मुझ पर नहीं परन्तु मेरे भेजनेवाले पर बिश्वास लाता है । और जो मुझे देखता है सो मेरे भेजनेवाले को देखता है । मैं जगत में उजाला होके आया हूं कि जो कोई मुझ पर बिश्वास लावे सो अन्धियारे में

३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६

४७ न रहे। और यदि कोई मनुष्य मेरी बातें सुने और बिश्वास न लावे तो मैं उस का न्याव नहीं करता हूं क्योंकि मैं जगत का न्याव करने को नहीं परन्तु जगत का
४८ बचाव करने को आया हूं। जो कोई मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें नहीं मानता है तो उस का न्याव करनेवाला है; जो बचन मैं ने कहा है वही अन्तदिन
४९ में उस का न्याव करेगा। क्योंकि मैं तो आप से नहीं बोला परन्तु पिता मेरे भेजनेवाले ने मुझे आज्ञा दिई
५० है कि मैं क्या बोलूं और क्या कहूं। और मैं जानता हूं कि उस की आज्ञा अनन्त जीवन है; इस लिये जो कुछ कि मैं बोलता हूं सो जैसा पिता ने मुझे कहा है वैसा मैं बोलता हूं॥

१३ पर्ब्ब

अब फसह के पर्ब्ब से आगे यिसू ने जाना कि मेरा समय आ पहुंचा है कि मैं इस जगत से पिता पास जाऊं; सो जैसा वह अपनों को जो जगत में थे आगे प्यार करता था वैसा ही उस ने अन्त लों उन्हें प्यार
२ करता रहा। और जब बियारी तैयार हुई तब शैतान ने समऊन के पुत्र यहूदाह इसकारियत के मन में डाला
३ कि उसे पकड़वावे। यिसू ने जाना कि पिता ने सब कुछ मेरे हाथों में दिया है और मैं परमेश्वर के पास से आ-
४ या और परमेश्वर के पास जाता हूं। उस ने बियारी से उठकर अपने बस्त्र उतार रखे और एक अंगोछा लेके
५ अपनी कटि में बांधा। इस पर उस ने पात्र में पानी डाला और शिष्यों के पांव धोने लगा और उस अंगोछे

से जो कटि में बन्धा था पोंछने लगा। तब वह समऊन ६
पथरस तक आया; उस ने उस से कहा हे प्रभु क्या तू
मेरे पांव धोता है। यिसू ने उत्तर देके उस से कहा ७
जो मैं करता हूं सो तू अब नहीं जानता परन्तु पीछे तू
जानेगा। पथरस ने उस से कहा तू मेरे पांव कभी न ८
धोना; यिसू ने उसे उत्तर दिया यदि मैं तुझे न धोऊं तो
मेरे संग तेरा भाग न होगा। समऊन पथरस ने उस ९
से कहा हे प्रभु केवल मेरे पांव नहीं परन्तु हाथ और
सिर भी। यिसू ने उस से कहा जो धोया गया है उसे १०
पांवों को छोड़ और न धोना चाहिये परन्तु वह
सम्पूर्ण पवित्र है और तुम पवित्र हो परन्तु सब नहीं।
क्योंकि वह अपना पकड़वानेवाला जानता था इस ११
लिये उस ने कहा तुम सब पवित्र नहीं हो।

जब वह उन के पांव धो चुका तब अपने बस्त्र लेके १२
फिर बैठके उन से कहा क्या तुम जानते हो कि मैं ने
तुम्हें क्या किया। तुम मुझे गुरु और प्रभु कहते हो १३
और तुम अच्छा कहते हो क्योंकि मैं हूं। फिर जब कि १४
प्रभु और गुरु होके मैं ने तुम्हारे पांव धोये तो तुम्हें भी
उचित है कि एक दूसरे के पांव धोओ। इस से मैं ने तुम्हें १५
एक दृष्टान्त दिया कि जैसा मैं ने तुम से किया है वैसा
तुम भी करो। मैं तुम से सच सच कहता हूं दास अपने १६
स्वामी से बड़ा नहीं न भेजा हुआ अपने भेजनेवाले से
बड़ा है। ये बातें जानके यदि तुम उन्हें पालन करो तो १७
धन्य हो। मैं तुम सभों के विषय में नहीं कहता मैं जान- १८

ता हूं कि मेरे चुने ज़ए कौन हैं परन्तु यह इस लिये है कि जो लिखा है अर्थात जो मेरे संग रोटी खाता है उस
१९ ने मुझ पर लात उठाई है सो पूरा होय। मैं अब उस के होने से आगे तुम्हें कहता हूं कि जब वह हो जावे
२० तब तुम प्रतीति करो कि मैं हो हूं। मैं तुम से सच सच कहता हूं जो मेरे भेजे ज़ए को ग्रहण करता है सो मुझे ग्रहण करता है और जो मुझे ग्रहण करता है सो मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है।

२१ यिसू यों कहके मन में व्याकुल ज़आ और साची देके बोला मैं तुम से सच सच कहता हूं तुम में से एक मुझे
२२ पकड़वावेगा। तब शिष्य लोग दुबधे में होके कि किस
२३ पर वह यह कहता है एक टूसरे को ताक रहे। उस के शिष्यों में से एक जिसे यिसू प्यार करता था सो यिसू
२४ की छाती पर तकिया कर रहा था। उसी को समऊन पथरस ने सैन किई कि पूछे कि जिस को वह कहता
२५ है सो कौन है। तब उस ने यिसू की छाती पर सिर
२६ लगाके उस से कहा हे प्रभु कौन वह है। यिसू ने उत्तर दिया जिसे मैं कौर को बोर लेके देता हूं सो ही है; इस पर उस ने कौर को बोर लेके समऊन के पुच यहूदाह
२७ इसकरियत को दिया। और उस कौर के पीछे शैतान उस में पैठा; तब यिसू ने उस से कहा जो कुछ
२८ कि तू करता है सो जल्द कर। और उन में से जो खाने बैठे थे किसो ने न जाना कि उस ने किस मनसा से
२९ उस को यह कहा था। कितने समझते थे कि यहूदाह

के पास थैली है इस लिये यिसू ने उस से यह कहा था कि जो कुछ पर्व्व के लिये हमें आवश्यक है सो मोल ले अथवा कंगालों को कुछ देओ। तब वह कौर को पाकर वोंहीं निकला और रात थी। ३०

जब चला गया तब यिसू ने कहा अब मनुष्य के पुत्र की महिमा प्रकाश होती है और उस में परमेश्वर की महिमा प्रकाश होती है। यदि परमेश्वर की महिमा उस में प्रकाश होती है तो परमेश्वर भी उस के आप ही में उस की महिमा प्रकाश करेगा और उसे तुरन्त प्रकाश करेगा। हे बच्चो अब थोड़ी बेर लों मैं तुम्हारे संग हूं; तुम मुझे ढूंढोगे और जैसा कि मैं ने यहूदियों से कहा वैसा अब मैं तुम से भी कहता हूं जहां मैं जाता हूं वहां तुम आ नहीं सकते हो। एक नई आज्ञा मैं तुम्हें देता हूं तुम एक दूसरे को प्यार करो; जैसा मैं ने तुम्हें प्यार किया वैसा तुम भी एक दूसरे को प्यार करो। यदि तुम लोग आपस में एक दूसरे को प्यार करो तो इस से सब लोग जानेंगे कि तुम मेरे शिष्य हो। ३१ ३२ ३३ ३४ ३५

समऊन पथरस ने उस से कहा हे प्रभु तू कहां जाता है; यिसू ने उस को उत्तर दिया जहां मैं जाता हूं वहां तू अब मेरे पीछे आ नहीं सकता है परन्तु आगे को तू मेरे पीछे आवेगा। पथरस ने उस से कहा हे प्रभु मैं अब तेरे पीछे क्यों नहीं आ सकता हूं; मैं अपना प्राण तेरे लिये देऊंगा। यिसू ने उसे उत्तर ३६ ३७ ३८

दिया क्या तू मेरे लिये अपना प्राण देगा; मैं तुझ से सच सच कहता हूं कि कुक्कुट न बोलेगा जब लों तू तीन बार मुझ से मुकर न जाय॥

१४ पर्ब्ब

तुम्हारा मन व्याकुल न होवे; तुम परमेश्वर पर २ बिश्वास रखते हो मुझ पर भी बिश्वास रखो। मेरे पिता के घर में बहुत से निवास हैं जो ऐसा न होता तो मैं तुम से कहता; मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने ३ जाता हूं। और मैं जाके और जगह तुम्हारे लिये तैयार करके फिर आऊंगा और तुम्हें अपने संग लेऊं- ४ गा कि जहां मैं हूं वहां तुम भी होओ। और तुम जानते हो कि मैं कहां जाता हूं और तुम मार्ग को जान- ५ ते हो। तोमा ने उस से कहा हे प्रभु हम नहीं जानते कि तू कहां जाता है और मार्ग को हम क्योंकर ६ जान सकें। यिसू ने उस से कहा मार्ग और सचाई और जीवन मैं हूं मेरे बिना कोई पिता के पास नहीं आता ७ है। यदि तुम मुझे जानते तो मेरे पिता को भी जानते और अब से तुम उसे जानते हो और तुम ने उसे देखा ८ है। फिलिप ने उस से कहा हे प्रभु पिता को हमें ९ दिखा तो हमारे लिये बस है। यिसू ने उस से कहा हे फिलिप क्या इतनी बड़ी बेर से मैं तुम्हारे संग रहा हूं और अब लों तू ने मुझे नहीं जाना है जिस ने मुझ को देखा है उस ने पिता को देखा है फिर तू क्योंकर १० कहता है पिता को हमें दिखा। क्या तू यह प्रतीति नहीं करता है कि मैं पिता में हूं और पिता मुझ में

है; जो बातें मैं तुम से कहता हूं सो मैं आप से नहीं कह-
ता परन्तु पिता जो मुझ में रहता है वही ये कार्य्य कर-
ता है। मेरी बात कि मैं पिता में हूं और पिता मुझ में ११
है प्रतीति करो और नहीं तो उन हीं कार्य्यों के लिये
मेरी प्रतीति करो। मैं तुम से सच सच कहता हूं जो १२
मुझ पर विश्वास रखता है वह ये कार्य्य जो मैं करता
हूं भी करेगा और उन से बड़े कार्य्य करेगा क्योंकि मैं
अपने पिता के यहां जाता हूं। और जो कुछ तुम मेरा १३
नाम लेके मांगोगे मैं वही करूंगा जिसतें पुत्र से
पिता की महिमा प्रकाश होवे। यदि तुम मेरा नाम १४
लेके कुछ मांगोगे तो मैं वही करूंगा। जो तुम मुझे १५
प्यार करो तो मेरी आज्ञाओं का पालन करो। और १६
मैं अपने पिता से मांगूंगा और वह दूसरा उपकारक
जो सदा तुम्हारे संग रहे तुम्हें देगा। अर्थात सचाई १७
का आत्मा देगा; जगत उसे पा नहीं सकता है क्योंकि
वह उसे नहीं देखता और न उसे जानता है परन्तु तुम
उसे जानते हो क्योंकि वह तुम्हारे संग रहता है
और तुम में होवेगा। मैं तुम्हें अनाथ नहीं छोड़ूंगा मैं १८
तुम्हारे पास आऊंगा। अब थोड़ी बेर और जगत १९
मुझे फिर न देखेगा परन्तु तुम मुझे देखोगे और इस
लिये कि मैं जीवता हूं तुम भी जीओगे। उस दिन तुम २०
जानोगे कि मैं पिता में हूं और तुम मुझ में हो और
मैं तुम में हूं। जिस पास मेरी आज्ञाएं हैं और जो २१
उन्हें पालन करता है सो ही मेरा प्यार करनेवाला

है फिर जो मुझे प्यार करता है सो मेरे पिता का प्यारा होगा और मैं उस को प्यार करूंगा और आप को
२२ उस पर प्रगट करूंगा। यहूदाह ने (वह इसकरियत नहीं) उस से कहा हे प्रभु यह कैसा है कि तू आप को
२३ हम पर प्रगट करेगा और जगत पर नहीं। यिसू ने उत्तर देके उस से कहा यदि कोई मुझे प्यार करे तो मेरा बचन पालन करेगा और मेरा पिता उसे प्यार करेगा और हम उस पास आवेंगे और उस के संग
२४ बास करेंगे। जो मुझे प्यार नहीं करता है सो मेरा बचन पालन नहीं करता है और जो बचन तुम सुनते हो सो मेरा नहीं परन्तु पिता मेरे भेजनेवाले का है।
२५ ये बातें मैं ने तुम्हारे संग होते हुए तुम से कहीं।
२६ परन्तु उपकारक अर्थात पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा वह तुम्हें सब बातें बतावेगा और सब बातें जो मैं ने तुम से कहीं हैं वह तुम्हें चेत करावेगा।
२७ शान्ति मैं तुम्हें दे जाता हूं अपनी शान्ति मैं तुम्हें देता हूं जैसी जगत देता है वैसी मैं तुम्हें नहीं देता हूं ; तुम्हारा मन ब्याकुल न होवे और डर न जावे।
२८ तुम सुन चुके हो कि मैं ने तुम से कहा मैं जाता हूं और तुम्हारे पास फिर आता हूं ; जो तुम मुझे प्यार करते तो तुम मेरे इस कहने से कि मैं पिता के यहां जाता हूं आनन्दित होते क्योंकि मेरा पिता मुझ से बड़ा है।
२९ और अब मैं ने उस के होने से आगे तुम्हें कहा है कि जब
३० हो जावे तब तुम बिश्वास लाओ। आगे को मैं बहुत

बातें तुम से न करूंगा क्योंकि इस संसार का प्रधान आता है और उस का मुझ से कुछ नहीं है। परन्तु ३१ यह इस लिये है कि जगत जाने कि मैं पिता को प्यार करता हूं और जैसे पिता ने मुझे आज्ञा दिई है वैसा ही मैं करता हूं; उठो यहां से चलें॥

१५ पर्व्व

मैं सच्चा दाख का पेड़ हूं और मेरा पिता माली है। जो जो डाली मुझ में फल नहीं लाती है वह उसे तोड़ २ डालता है और जो जो डाली फल लाती है वह उसे छांटता है जिसतें वह अधिक फल लावे। अब उस ३ बचन के कारण जो मैं ने तुम्हें कहा है तुम पवित्र हो। तुम मुझ में बने रहो और मैं तुम में; जैसे डाली यदि ४ पेड़ में लगी न रहे तो आप से फल नहीं ला सकती वैसा ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो फल नहीं ला सकते हो। दाख का पेड़ मैं हूं तुम डालियां हो; ५ जो मुझ में बना रहता है और मैं उस में वही बहुत फल लाता है क्योंकि मुझ से अलग तुम कुछ नहीं कर सकते हो। यदि कोई मुझ में बना न रहे तो वह डाली ६ के समान फेंका जाता है और वह सूख जाता है; लोग उन्हें बटोर के आग में झोंकते हैं और वे जलाई जाती हैं। यदि तुम मुझ में बने रहो और मेरी बातें ७ तुम में रहें तो जो चाहोगे सो मांगोगे और वह तुम्हारे लिये हो जायगा। मेरे पिता की महिमा इस ८ से होती है कि तुम बहुत फल लाओ और तुम मेरे शिष्य होओगे। जैसा मेरे पिता ने मुझे प्यार किया है ९

वैसा ही मैं ने तुम्हें प्यार किया है; तुम मेरे प्यार में
१० बने रहो। यदि तुम मेरी आज्ञाओं को पालन करो
तो मेरे प्यार में बने रहोगे जैसा मैं ने अपने पिता की
आज्ञाओं को पालन किया है और उस के प्यार में
बना हूं।
११ मैं ने ये बातें तुम से कहीं कि मेरा आनन्द तुम में
१२ बना रहे और तुम्हारा आनन्द पूरा होवे। यह मेरी
आज्ञा है कि जैसा मैं ने तुम्हें प्यार किया है वैसा तुम
१३ एक दूसरे को प्यार करो। अपना प्राण अपने मित्रों के
लिये देना इस से बड़ा प्यार कोई नहीं रखता है।
१४ यदि तुम मेरी आज्ञाओं पर चलो तो मेरे मित्र ठहरे।
१५ आगे को मैं तुम्हें दास न कहूंगा क्योंकि दास नहीं
जानता कि मेरा स्वामी क्या करता है परन्तु मैं ने तुम्हें
मित्र कहा है क्योंकि सब बातें जो मैं ने अपने पिता से
१६ सुनी हैं सो मैं ने तुम्हें बतलाई। तुम ने मुझे नहीं चुना
है परन्तु मैं ने तुम्हें चुना है और तुम्हें इस लिये ठहरा-
या कि तुम जाके फल लाओ और तुम्हारा फल बना
रहे कि जो कुछ तुम मेरा नाम लेके पिता से मांगो
१७ वह तुम्हें देवे। मैं तुम्हें इन बातों की आज्ञा करता हूं
कि तुम एक दूसरे को प्यार करो।
१८ यदि संसार तुम से बैर करे तो तुम जानते हो कि
१९ उस ने तुम से आगे मुझी से बैर किया है। यदि तुम
लोग संसार के होते तो संसार अपने ही को प्यार
करता पर तुम संसार के नहीं हो परन्तु मैं ने तुम्हें

संसार से चुन लिया है इस लिये संसार तुम से बैर रखता है। जो बात मैं ने तुम्हें कही कि दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं है सो चेत करो; यदि उन्हों ने मुझे सताया है तो वे तुम्हें भी सतावेंगे; यदि उन्हों ने मेरी बात को माना है तो वे तुम्हारी भी मानेंगे। ये सब बातें वे मेरे नाम के लिये तुम से करेंगे क्योंकि वे मेरे भेजनेवाले को नहीं जानते हैं। यदि मैं न आया होता और उन्हें न कहता तो उन का पाप न होता परन्तु अब उन के पाप की आड़ न रही। जो मुझ से बैर करता है सो मेरे पिता से भी बैर करता है। ये कार्य्य जो किसी दूसरे ने नहीं किये यदि मैं उन्हें उन के बीच में न किया होता तो उन का पाप न होता पर अब तो उन्हों ने मुझ को और मेरे पिता को दोनों देखा और बैर किया है। परन्तु यह इस लिये हुआ कि जो बचन उन की व्यवस्था में लिखा है अर्थात उन्हों ने मुझ से अकारण बैर किया सो पूरा होवे। परन्तु वह उपकारक जिसे मैं तुम्हारे लिये पिता की ओर से भेजूंगा अर्थात सत्य का आत्मा जो पिता से निकलता है जब वह आवे तब मुझ पर साक्षी देगा। और तुम भी साक्षी देओगे क्योंकि तुम आरंभ से मेरे संग रहे थे॥ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७

१६ पर्व्व

ये बातें मैं ने तुम से कहीं कि तुम ठोकर न खाओ। वे तुम्हें मण्डलीघरों से निकाल देंगे और समय आता है कि जो कोई तुम्हें घात करेगा सो समझेगा कि मैं परमेश्वर की सेवा करता हूं। और ये बातें लोग तुम २ ३

से इस लिये करेंगे कि उन्हों ने न तो पिता को न मुझ
४ को जाना है। और ये बातें मैं ने तुम से कहीं कि जब
समय आवे तुम चेत करो कि मैं ने उन को तुम से
कहो थी; मैं ने आरंभ में ये बातें तुम से न कहीं क्यों-
५ कि मैं तुम्हारे संग था। और अब मैं अपने भेजनेवाले
के यहां जाता हूं और तुम में से कोई मुझ से नहीं
६ पूछता कि तू कहां जाता है। परन्तु मैं ने जो ये बातें
७ तुम से कहीं तो तुम्हारा मन शोक से भर गया। तौ
भी मैं तुम से सच कहता हूं कि मेरा जाना तुम्हारे
लिये सफल है क्योंकि यदि मैं न जाऊं तो उपकारक
तुम्हारे पास न आवेगा परन्तु यदि मैं जाऊं तो मैं उस
८ को तुम्हारे पास भेज देऊंगा। और जब वह आवेगा
तब वह पाप के और धर्म्म के और न्याव के विषय में
९ संसार की समझौती करेगा। पाप के विषय में इस
१० लिये कि लोग मुझ पर बिश्वास न लाये। धर्म्म के
विषय में इस लिये कि मैं अपने पिता पास जाता हूं
११ और तुम मुझे फिर न देखोगे। न्याव के विषय में इस
१२ लिये कि इस संसार के प्रधान का न्याव हुआ है। अब
भी मेरी बहुत सी बातें तुम्हें कहने को हैं परन्तु तुम
१३ अब उन्हें सह नहीं सकते हो। पर जब वह सचाई का
आत्मा आवेगा तब वह तुम्हें सारी सचाई का मार्ग
बतावेगा क्योंकि वह अपनी न कहेगा परन्तु जो कुछ
वह सुनेगा सो बोलेगा और जो आनेवाला है सो तुम्हें
१४ बतावेगा। वह मेरी महिमा प्रकाश करेगा क्योंकि

वह मेरी बातें से पावेगा और तुम्हें बतावेगा। जो कुछ पिता का है से मेरा है इस लिये मैं ने कहा वह मेरी बातें से लेगा और तुम्हें बतावेगा। थोड़ी बेर में तुम मुझे न देखोगे और फिर थोड़ी बेर में तुम मुझे देखोगे क्योंकि मैं पिता के यहां जाता हूं। १५ १६

तब उस के शिष्यों में से कितनें ने आपस में कहा वह जो हम से कहता है थोड़ी बेर में तुम मुझे न देखोगे और फिर थोड़ी बेर में तुम मुझे देखोगे और यह इस लिये कि मैं पिता के यहां जाता हूं सो क्या है। फिर उन्हों ने कहा वह जो कहता है कि थोड़ी बेर सो क्या है हम नहीं जानते कि वह क्या कहता है। यिसू ने जाना कि वे मुझ से पूछने चाहते हैं सो उस ने उन से कहा जो मैं ने कहा कि थोड़ी बेर में तुम मुझे न देखोगे और फिर थोड़ी बेर में तुम मुझे देखोगे क्या तुम इस के विषय में आपस में पूछते हो। मैं तुम से सच सच कहता हूं तुम रोओगे और बिलाप करोगे परन्तु संसार आनन्द करेगा; तुम शोकित होओगे परन्तु तुम्हारा शोक आनन्द हो जायगा। स्त्री जब जनने लगती है तब दुःखित होती है क्योंकि उस की घड़ी आ पहुंची है परन्तु जोंहीं बालक जनी फिर जगत में एक मनुष्य के उत्पन्न होने के आनन्द से वह उस पीड़ा को सुरत नहीं करती है। सो अब तुम्हें शोक है परन्तु मैं तुम्हें फिर देखूंगा और तुम्हरा मन आनन्दित होगा और तुम्हारा आनन्द तुम १७ १८ १९ २० २१ २२

२३ से कोई छीन न लेगा। और उस दिन तुम मुझ से कुछ नहीं पूछोगे ; मैं तुम से सच सच कहता हूं तुम मेरा नाम लेके जो कुछ पिता से मांगोगे सो वह तुम्हें
२४ देगा। अब लों तुम ने मेरे नाम से कुछ नहीं मांगा; मांगो तो तुम पाओगे कि तुम्हारा आनन्द पूरा होवे।

२५ मैं ने ये बातें दृष्टान्तों में तुम से कहीं परन्तु वह समय आता है कि मैं दृष्टान्तों में तुम से फिर न बोलूंगा पर मैं पिता के विषय में खोलके तुम्हें बताऊंगा।
२६ उस दिन में तुम मेरे नाम से मांगोगे और मैं नहीं कहता कि मैं तुम्हारे लिये पिता से प्रार्थना करूंगा।
२७ क्योंकि पिता तो आप ही तुम्हें प्यार करता है इस लिये कि तुम ने मुझे प्यार किया है और विश्वास कर-
२८ ते हो कि मैं परमेश्वर से निकला हूं। मैं पिता से निकलके जगत में आया हूं फिर मैं जगत को छोड़के
२९ पिता पास जाता हूं। उस के शिष्यों ने उस से कहा देख अब तू खोलके बोलता है और दृष्टान्त नहीं
३० कहता। अब हम जानते हैं कि तू सब बातें जानता है और तुझ से पूछने को किसी का प्रयोजन नहीं है ; इस से हमें निश्चय ज़ुआ कि तू परमेश्वर से निकला ज़ु-
३१ आ है। यिसू ने उन्हें उत्तर दिया क्या तुम अब विश्वास
३२ करते हो। देखो घड़ी आती है हां अब आ चुकी है कि तुम लोग छिन्न भिन्न होके हर एक अपने अपने यहां भाग जायगा और तुम मुझे अकेला छोड़ोगे तौभी

मैं अकेला नहीं हूं क्योंकि पिता मेरे संग है। मैं ने ये बातें तुम से कहीं हैं कि तुम मुझ में शान्ति पाओ; जगत में तुम दुःख पाओगे परन्तु ढाड़स बन्धे रहो मैं ने जगत को जीता है॥ ३३

१७ पर्ब्ब

यिसू ने ये बातें कहीं और स्वर्ग की ओर अपनी आंखें उठाके उस ने कहा हे पिता घड़ी आ पहुंची है अपने पुत्र की महिमा प्रकाश कर कि तेरा पुत्र भी तेरी महिमा प्रकाश करे। २ क्योंकि तू ने उसे सारे लोगों पर अधिकार दिया है कि वह उन सभों को जिन्हें तू ने उसे दिया है अनन्त जीवन देवे। ३ और अनन्त जीवन यह है कि वे तुझे अकेला सच्चा परमेश्वर और यिसू मसीह को जिसे तू ने भेजा है जानें। ४ मैं ने पृथिवी पर तेरी महिमा प्रकाश किई है; जो काम तू ने मुझे करने को दिया है मैं उसे कर चुका हूं। ५ और अब हे पिता तू अपने संग उस ऐश्वर्य्य से जो मैं जगत के रचने से आगे तेरे संग रखता था मेरी महिमा कर। ६ जिन्हें तू ने जगत में से मुझे दिया है उन लोगों पर मैं ने तेरा नाम प्रगट किया है; वे तेरे थे और तू ने उन्हें मुझे दिया है और उन्हों ने तेरा बचन माना है। ७ अब उन्हों ने जाना कि सब वस्तें जो तू ने मुझे दिईं हैं सो तेरी ओर से हैं। ८ क्योंकि जो बातें तू ने मुझे दिईं हैं सो मैं ने उन्हें दिईं और उन्हों ने उन्हें माना है और निश्चय जाना है कि मैं तुझ से निकला हूं और वे बिश्वास लाये हैं कि तू ने मुझे भेजा है। ९ मैं उन के

लिये प्रार्थना करता हूं मैं जगत के लिये नहीं परन्तु जिन्हें तू ने मुझे दिया है उन के लिये मैं प्रार्थना कर-
१० ता हूं क्योंकि वे तेरे हैं। और सब जो मेरे हैं सो तेरे हैं और जो तेरे हैं सो मेरे हैं और मेरी महिमा
११ उन में प्रकाश होती है। मैं जगत में आगे न रहूंगा परन्तु ये लोग जगत में हैं और मैं तेरे पास आता हूं; हे पवित्र पिता जिन्हें तू ने मुझे दिया है अपने ही नाम से तू उन को रक्षा कर कि वे हमारे समान एक
१२ होवें। जब लों मैं उन के संग जगत में था तब लों मैं ने तेरे नाम से उन की रक्षा किई; जिन्हें तू ने मुझे दिया मैं ने उन को रक्षा किई और सत्यानाश के पुत्र को छोड़ उन में से कोई नष्ट न हुआ जिसतें धर्म्मग्रन्थ पूरा
१३ हो। और अब मैं तेरे पास आता हूं और ये बातें मैं जगत में कहता हूं कि मेरा आनन्द उन में पूरा होवे।
१४ मैं ने तेरा बचन उन्हें दिया है और जगत ने उन से बैर किया है क्योंकि जैसा मैं जगत का नहीं हूं वैसे वे भी
१५ जगत के नहीं हैं। मैं यह प्रार्थना नहीं करता हूं कि तू उन्हें जगत में से उठा ले परन्तु यह कि तू उन्हें
१६ दुष्ट से बचा ले। जैसा कि मैं जगत का नहीं हूं वैसे वे
१७ भी जगत के नहीं हैं। अपनी सच्चाई से उन्हें पवित्र
१८ कर; तेरा बचन सच्चाई है। जैसा तू ने मुझे जगत में
१९ भेजा है वैसा मैं ने भी उन्हें जगत में भेजा है। और उन के कारण मैं आप को पवित्र करता हूं जिसतें वे
२० भी सच्चाई से पवित्र होयें। केवल इन हीं के लिये नहीं

परन्तु जो लोग इन के बचन से मुझ पर बिश्वास लावेंगे उन्हों के लिये भी मैं प्रार्थना करता हूं। जिसतें वे सब (२१) एक होवें हे पिता जैसा कि तू मुझ में है और मैं तुझ में वैसे वे भी हम में एक होवें जिसतें जगत बिश्वास लावे कि तू ने मुझे भेजा है। और जो महिमा तू ने मुझे (२२) दिई है सो मैं ने उन्हें दिई है कि जैसा हम एक हैं वैसा वे भी एक होवें। मैं उन में और तू मुझ में कि वे एक (२३) होके सिद्ध होवें और कि संसार जाने कि तू ने मुझे भेजा है और जैसा तू ने मुझे प्यार किया है वैसा मैं ने उन्हें भी प्यार किया है। हे पिता मैं चाहता हूं कि (२४) जिन्हें तू ने मुझे दिया है जहां मैं हूं वहां वे भी मेरे संग होवें कि वे मेरी महिमा को जो तू ने मुझे दिई है देखें क्योंकि जगत की रचना से आगे तू ने मुझे प्यार किया है। हे धार्मिक पिता संसार ने तुझे नहीं जाना (२५) है परन्तु मैं ने तुझे जाना है और इन्हों ने जाना है कि तू ने मुझे भेजा है। और मैं ने तेरा नाम उन पर प्रगट (२६) किया है और प्रगट करूंगा कि जिस प्यार से तू ने मुझे प्यार किया है वही प्यार उन में हो और मैं उन में होऊं॥

१८ पर्ब्ब

यिसू ये बातें कहके अपने शिष्यों के संग केदरुन नाले के पार गया; वहां एक बारी थी और उस में उस ने और उस के शिष्यों ने प्रवेश किया। और यहूदाह (२) उस का पकड़वानेवाला वह जगह भी जानता था क्योंकि यिसू बारंबार अपने शिष्यों के संग वहां जाया कर-

३ ता था। तब यहूदाह सिपाहियों का एक जथा और प्रधान याजकों और फरीसियों से प्यादे लोग पलीते और मशाल और हथियार सहित लेके वहां आया।
४ और यिसू सब कुछ जो उस पर होनेवाला था जानके आगे बढ़के उन से कहा तुम किस को ढूंढते हो।
५ उन्हों ने उत्तर दिया कि यिसू नासिरी को; यिसू ने उन से कहा कि मैं हूं; यहूदाह उस का पकड़वानेवाला भी
६ उन के संग खड़ा था। जो उस ने उन से कहा कि मैं हूं
७ वोंहीं वे पीछे हटे और भूमि पर गिर पड़े। तब उस ने उन से फिर पूछा तुम किस को ढूंढते हो; वे बोले
८ यिसू नासिरी को। यिसू ने उत्तर दिया मैं ने तो तुम्हें कहा कि मैं हूं सो जो तुम मुझे ढूंढते हो तो इन्हें जाने
९ देओ। इस से उस का वचन जो उस ने कहा था कि जिन्हें तू ने मुझे दिया है उन में से एक भी नष्ट न ज़ुआ
१० सो पूरा ज़ुआ। तब समऊन पथरस ने अपनी तलवार खैंचके महायाजक के दास पर चलाया और उस का दहिना कान उड़ा दिया; उस दास का नाम मलकूस
११ था। तब यिसू ने पथरस से कहा अपनी तलवार काठी में रख जो कटोरा मेरे पिता ने मुझे दिया है क्या
१२ मैं उसे न पीऊं। तब जथा और सेनापति और यहूदि-
१३ यों के प्यादों ने यिसू को पकड़के बांधा। और उसे पहिले हन्ना के पास ले गये कि वह उस बरस के
१४ महायाजक कायफा का ससुरा था। वह कायफा जिस

ने यहूदियों को समझा दिया कि लोगों के लिये एक मनुष्य का मरना अच्छा है सो यही है।

तब समऊन पथरस एक दूसरे शिष्य के संग होके यिसू के पीछे हो लिया; वह शिष्य महायाजक का जानपहचान था और यिसू के साथ महायाजक के सदन में गया। परन्तु पथरस बाहर द्वार पर खड़ा रहा; तब दूसरा शिष्य जो महायाजक का जानपहचान था बाहर निकला और द्वारपालिन से बोलके पथरस को भीतर लाया। फिर द्वारपालिन दासी ने पथरस से कहा क्या तू भी इस मनुष्य के शिष्यों में से एक है कि नहीं; वह बोला मैं नहीं हूं। और दास और प्यादे लोग कोयलों की आग सुलगाकर जाड़े के मारे खड़े हुए तापरहे थे और पथरस उन के संग खड़ा ताप रहा था। १५ १६ १७ १८

तब महायाजक ने यिसू से उस के शिष्यों के और उस के उपदेश के विषय में पूछा। यिसू ने उस को उत्तर दिया मैं संसार से खोलके बोला; मण्डलीघर में और मन्दिर में जहां यहूदी लोग नित्य एकट्ठे हुआ करते हैं वहां मैं ने उपदेश किया और गुप्त में मैं ने कुछ न कहा। तू मुझ से क्यों पूछता है; जिन्हों ने मेरी सुनी थी तू उन से पूछ कि मैं ने उन से क्या कहा; देख जो मैं ने कहा है सो वे जानते हैं। जब उस ने यों कहा तब प्यादों में से जो पास खड़े थे एक ने यिसू को थपेड़ा मारके कहा क्या तू ऐसा बोलके महाया- १९ २० २१ २२

२३ जक को उत्तर देता है। यिसू ने उस को उत्तर दिया कि यदि मैं ने बुरा कहा तो बुराई की साची दे परन्तु
२४ यदि अच्छा कहा तो तू मुझे क्यों मारता है। और हन्ना ने उसे बांधा हुआ कायफा महायाजक के पास भेजा।

२५ और समऊन पथरस खड़ा हुआ ताप रहा था; सो उन्हों ने उस से कहा तू भी उस के शिष्यों में से एक
२६ है कि नहीं; वह मुकर जाके बोला मैं नहीं हूं। महायाजक के दासों में से एक ने जिस के कुटुम्ब का कान पथरस ने काट डाला था उस ने कहा क्या मैं ने तुझे
२७ उस के संग बारी में नहीं देखा था। तब पथरस फिर मुकर गया और वोंहीं कुक्कुट बोला।

२८ तब वे यिसू को कायफा के यहां से कचहरी में ले गये और अब बिहान हुआ था; और वे आप कचहरी में न गये कि अपवित्र न हों परन्तु वे फसह का
२९ खाना खायें। तब पिलातूस उन के पास निकल आके बोला तुम इस मनुष्य पर क्या अपवाद लगाते हो।
३० उन्हों ने उत्तर देके कहा यदि यह मनुष्य अपराधी
३१ न होता तो हम उस को तेरे हाथ में न सोंपते। पिलातूस ने उन से कहा तुम उसे ले जाओ और अपनी व्यवस्था की रीति पर उस का न्याय करो; यहूदियों ने उस से कहा हमें किसी को घात करने का अधि-
३२ कार नहीं है। यह इस लिये हुआ कि यिसू की बात

जो उस ने कही थी जब उस ने अपने मर जाने की रीति बताई सो पूरी होवे।

तब पिलातूस फिर कचहरी में गया और यिसू को ३३ बुलाके कहा क्या तू यहूदियों का राजा है। यिसू ने ३४ उस को उत्तर दिया क्या तू यह बात आप से कहता है अथवा क्या औरों ने मेरे विषय में तुझे कहा है। पि- ३५ लातूस ने उत्तर दिया क्या मैं यहूदी हूं तेरे ही देश के लोगों ने और प्रधान याजकों ने तुझे मेरे हाथ में सोंप दिया है सो तू ने क्या किया है। यिसू ने उत्तर ३६ दिया मेरा राज्य इस जगत का नहीं है; यदि मेरा राज्य इस जगत का होता तो मेरे सेवक लड़ाई करते कि मैं यहूदियों के हाथ सोंपा न जाता पर मेरा राज्य तो यहां का नहीं है। पिलातूस ने उस से कहा फिर ३७ क्या तू राजा है; यिसू ने उत्तर दिया तू सच कहता है मैं राजा हूं; इसी लिये मैं उत्पन्न हुआ और इसी लिये मैं जगत में आया कि सच्चाई पर साक्षी देऊं; जो कोई कि सच्चाई का है सो मेरी वाणी सुनता है। पिलातूस ने उस से कहा सच्चाई क्या है; और यह ३८ कहके वह फिर बाहर यहूदियों के पास गया और उन से कहा मैं उस का कुछ दोष नहीं पाता हूं। परन्तु ३९ तुम्हारा एक व्यवहार है कि मैं फसह में एक को तुम्हारे लिये छोड़ देऊं; क्या तुम चाहते हो कि मैं यहूदियों के राजा को तुम्हारे लिये छोड़ देऊं। तब ४०

वे सब फिर पुकारके बोले इस मनुष्य को नहीं परन्तु बरब्बा को छोड़ देना ; पर बरब्बा बटमार था॥

१९ पर्व्व

२ तब पिलातूस ने यिसू को लेके कोड़े मारे। और सिपाहियों ने कांटों का मुकुट गून्धके उस के सिर ३ पर रखा और उसे बैंजनी बस्त्र पहिनाया। और उस से कहा यहूदियों के राजा प्रणाम और उन्हों ने उसे ४ थपेड़े मारे। तब पिलातूस ने फिर बाहर आके उन से कहा देखो मैं उस को तुम्हारे पास बाहर लाता हूं जिसतें तुम जानो कि मैं उस का कुछ दोष नहीं पाता ५ हूं। तब यिसू कांटों का मुकुट रखे और बैंजनी बस्त्र पहिने ऊए बाहर आया और पिलातूस ने उन से कहा ६ देखो इस मनुष्य को। जब प्रधान याजकों और प्यादों ने उसे देखा तब पुकारके बोले क्रूस पर चढ़ा क्रूस पर चढ़ा ; पिलातूस ने उन से कहा तुम उसे लेके क्रूस पर चढ़ाओ क्योंकि मैं उस का कुछ दोष नहीं पाता ७ हूं। यहूदियों ने उसे उत्तर दिया हमारी व्यवस्था है और हमारी व्यवस्था की रीति से वह घात होने के योग्य है क्योंकि उस ने आप को परमेश्वर का पुत्र ठह-राया है।

८ जब पिलातूस ने यह बात सुनी तब अधिक डर गया। ९ और फिर कचहरी में जाके यिसू से कहा तू कहां का १० है ; परन्तु यिसू ने उसे कुछ उत्तर न दिया। तब पिला-तूस ने उस से कहा क्या तू मुझ से नहीं बोलता है ; क्या तू नहीं जानता कि तुझे क्रूस पर चढ़वाने को मुझे

अधिकार है और तुझे छुड़ाने को मुझे अधिकार है। यिसू ने उत्तर दिया यदि वह तुझे ऊपर से दिया न जाता तो मुझ पर तेरा कुछ अधिकार न होता; इस लिये जिस ने मुझे तेरे हाथ सोंप दिया उस का पाप बड़ा है। ११

उस समय से पिलातूस ने उसे छुड़ाने का जतन किया पर यहूदियों ने पुकारके कहा यदि तू इस मनुष्य को छुड़ावे तो तू कैसर का मित्र नहीं है; जो कोई अपने को राजा ठहराता है सो कैसर का बिरोध करता है। १२

पिलातूस यह बात सुनकर यिसू को बाहर लाया और उस स्थान में जो चबूत्रा और इबरानी भाषा में गब्बता कहलाता है न्याव की गद्दी पर बैठा। और यह फसह की तैयारी का समय और दो पहर के लगभग था; फिर उस ने यहूदियों से कहा देखो अपना राजा। पर उन्हों ने पुकारा कि ले जा ले जा उसे क्रूस पर चढ़ा; पिलातूस ने कहा क्या मैं तुम्हारे राजा को क्रूस पर चढ़ाऊं; प्रधान याजकों ने उत्तर दिया कैसर को छोड़ हमारा कोई राजा नहीं है। तब उस ने क्रूस पर चढ़ाने के लिये उस को उन के हाथ सोंप दिया और वे यिसू को पकड़के ले गये। १३ १४ १५ १६

और वह उस स्थान को जो इबरानी में गलगता अर्थात खोपड़ी का स्थान कहावता है अपना क्रूस उठाये ऊपर गया। वहां उन्हों ने उस को और उस के संग और दो को एक को इधर एक को उधर और यिसू को बीच में क्रूसों पर खेंचा। १७ १८

१९ और पिलातूस ने एक नामपत्र लिखके उसे क्रूस के ऊपर में लगा दिया; वह लिखा हुआ यह था कि यिसू
२० नासिरी यहूदियों का राजा। बहुतेरे यहूदियों ने यह नामपत्र पढ़ा क्योंकि वह स्थान जहां यिसू क्रूस पर खैंचा गया था नगर के निकट था और वह इबरानी और
२१ यूनानी और लातीनी भाषा में लिखा हुआ था। तब यहूदियों के प्रधान याजकों ने पिलातूस से कहा यहूदियों का राजा तू मत लिख परन्तु उस ने अपने को
२२ यहूदियों का राजा कहा था यही लिख। पिलातूस ने उत्तर दिया जो लिखा सो लिखा।

२३ फिर जब सिपाहियों ने यिसू को क्रूस पर चढ़ाया था तब उन्हों ने उस के वस्त्र लेके उस के चार भाग किये एक एक सिपाही को एक एक भाग; फिर उस का बागा भी लिया और बागा बिन सीया ऊपर से नीचे
२४ लों बुना हुआ था। इस लिये वे आपस में बोले हम इसे न फाड़ें परन्तु उस पर चिट्ठी डालें कि यह किस का होगा; यह इस लिये हुआ कि धर्म्मग्रन्थ जो कहता है कि उन्हों ने मेरे वस्त्र आपस में बांट लिये और मेरे बागे के लिये चिट्ठी डाली सो पूरा होवे; सिपाहियों ने ऐसा ही किया।

२५ अब उस की माता और उस की माता की बहिन मरियम जो क्लीओपास की पत्नी थी और मरियम मिग-
२६ दाली यिसू के क्रूस के पास खड़ी थीं। यिसू ने अपनी माता को और उस शिष्य को जिसे वह प्यार करता

या पास खड़े ज़ए देखकर अपनी माता से कहा हे स्त्री देख यह तेरा पुत्र। फिर उस ने उस शिष्य से कहा देख यह तेरी माता; और उसी घड़ी से वह शिष्य उसे अपने घर ले गया। २७

इस के पीछे यिसू ने जाना कि अब सब बातें समाप्त ज़ईं जिसतें धर्म्मग्रन्थ पूरा होवे उस ने कहा मैं प्यासा हूं। अब एक पात्र सिरके से भरा ज़आ वहां धरा था; उन्हों ने इस्पंज को सिरके में भिगोके जूफा के ऊपर रखके उस के मुंह में दिया। फिर जब यिसू ने वह सिरका लिया था तब कहा पूरा ज़आ और सिर झुकाके प्राण त्यागा। २८ २९ ३०

फिर तैयारी का समय था इस लिये यहूदियों ने पिलातूस से चाहा कि उन की टांगें तोड़वावे और उन्हें उतरवावे न हो कि लोथें बिश्राम दिन में क्रूस पर रह जायें क्योंकि वह बिश्राम दिन बड़ा था। तब जो उस के साथ क्रूसों पर खैंचे गये थे सिपाहियों ने आके पहिले और दूसरे की टांगें तोड़ीं। परन्तु जब उन्हों ने यिसू पास आके देखा कि वह मर चुका है तब उस की टांगें न तोड़ीं। परन्तु सिपाहियों में से एक ने भाले से उस की पसली छेदी और वोंहीं लोहू और पानी उस से निकला। और जिस ने यह देखा उस ने उस की साक्षी दिई और उस की साक्षी सत्य है और वह जानता है कि सत्य कहता है जिसतें तुम बिश्वास लाओ। क्योंकि ये बातें ज़ईं कि वह लिखा ज़आ कि उस की ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६

३७ कोई हड्डी तोड़ी न जायगी पूरा होवे। फिर एक दूसरी लिखी ऊई बात यह है जिसे उन्हों ने छेदा है उस पर वे दृष्टि करेंगे।

३८ इन बातों के पीछे अरमतिया का यूसफ जो यिसू का शिष्य था परन्तु यहूदियों के डर के मारे छिपके था उस ने पिलातूस से बिन्ती किई कि यिसू की लोथ को मुझे ले जाने दे; पिलातूस ने लेने दिया; सो उस ने

३९ आके यिसू की लोथ लिई। फिर निकोदेमुस जो पहिले रात को यिसू पास गया था वह भी आया और सेर पचास एक का गन्धरस और एलवा मिलाके लाया।

४० तब उन्हों ने यहूदियों के गाड़ने की रीति के समान यिसू की लोथ को लेके सूती कपड़े में सुगन्ध के संग

४१ लपेटा। और जिस स्थान में उसे क्रूस पर खैंचा था वहां एक बारी थी और उस बारी में एक नई कबर थी

४२ कि उस में कभी कोई धरा नहीं गया था। सो उन्हों ने यहूदियों की तैयारी के कारण यिसू को वहीं रखा क्योंकि वह कबर निकट थी॥

२० पर्ब्ब

अठवारे के पहिले दिन में तड़के जब भी अंधेरा था तब मरियम मिगदाली कबर पर आई और पत्थर को

२ कबर से सरकाया ऊआ देखा। तब वह समऊन पथरस और दूसरे शिष्य के पास जिसे यिसू प्यार करता था दौड़ी आई और उन से कहा प्रभु को कोई कबर में से उठा ले गया और हम नहीं जानते हैं कि उसे

३ कहां रखा। फिर पथरस दूसरे शिष्य के संग होके

निकला और कबर को चले। सो वे दोनों एकट्ठे दौड़े ४
परन्तु वह दूसरा शिष्य पथरस से आगे निकल जाके
पहिले कबर पर पहुंचा। उस ने झुकके जो देखा तो ५
क्या देखा कि सूती कपड़े पड़े हैं पर भीतर वह नहीं
गया। फिर समऊन पथरस उस के पीछे पहुंचा और ६
कबर के भीतर जाके सूती कपड़े पड़े हुए देखा। और ७
वह अंगोछा जिस से उस का सिर बन्धा था कपड़ों के
संग नहीं परन्तु लपेटा हुआ एक स्थान में अलग रखा
हुआ देखा। तब दूसरा शिष्य जो पहिले कबर पर ८
आया था सो भी भीतर गया और देखके प्रतीति किई।
क्योंकि अबलों वे धर्म्मग्रन्थ को न समझते थे कि वह ९
अवश्य मृतकों में से जी उठेगा। तब वे शिष्य फिर १०
अपने लोगों के पास लौट गये।

परन्तु मरियम कबर के पास बाहर खड़ी होके रो ११
रही थी और रोती हुई जो कबर में देखने को झुकी।
तो क्या देखा कि जहां यिसू की लोथ रखी गई थी वहां १२
दो स्वर्गीय दूत उजले वस्त्र में एक सिरहाने में और
दूसरा पैंताने में बैठा हुआ है। उन्हों ने उस से कहा १३
हे स्त्री तू क्यों रोती है; उस ने कहा इस लिये कि वे
मेरे प्रभु को ले गये हैं और मैं नहीं जानती कि उन्हों
ने उसे कहां रखा है। यह कहके उस ने पीछे फिरके १४
यिसू को खड़े देखा और न जाना कि यह यिसू है। यिसू १५
ने उस से कहा हे स्त्री तू क्यों रोती है तू किसे ढूंढती
है; उस ने उस को माली जानके उस से कहा हे सा-

हिब यदि तू ने उस के यहां से उठाया हो तो मुझ से कह कि उसे कहां रख दिया कि मैं उसे ले जाऊंगी। १६ यिसू ने उस से कहा मरियम; उस ने उस की ओर १७ फेरके उस से कहा रब्बूनी अर्थात हे गुरु। यिसू ने उस से कहा मुझे मत छू क्योंकि मैं अब लों अपने पिता पास ऊपर नहीं गया परन्तु मेरे भाइयों पास जा और उन से कह कि मैं ऊपर अपने पिता और तुम्हारे पिता पास और अपने परमेश्वर और तुम्हारे पर- १८ मेश्वर पास जाता हूं। मरियम मिगदाली ने आके शिष्यों से कहा मैं ने प्रभु को देखा है और ये बातें उस ने मुझ से कहीं।

१९ फिर उसी दिन जो अठवारे का पहिला था सांझ के समय में जब उस स्थान के द्वार जहां शिष्य लोग एकट्ठे थे यहूदियों के डर से बन्द थे तब यिसू आया और उन के बीच में खड़ा होके उन से कहा तुम को २० कल्याण। और यह कहके उस ने उन्हें अपने हाथ और अपने पंजरों को दिखाया; तब शिष्य लोग प्रभु २१ को देखके आनन्दित हुए। यिसू ने फिर उन से कहा तुम को कल्याण; जैसे पिता ने मुझे भेजा है वैसे मैं तुम्हें भेजता हूं। २२ उस ने यह कहके उन पर फूंका २३ और उन से कहा लेओ पवित्र आत्मा को। जिन के पाप तुम क्षमा करो उन के क्षमा किये जाते हैं और जिन के पाप तुम धरते हो उन के धरे हैं।

२४ परन्तु तोमा उन बारहों में से एक जिस को पदवी

दोदमुस थी यिसू के आने के समय उन के संग न था।
२५ तब और शिष्यों ने उस से कहा हम ने प्रभु को देखा है परन्तु उस ने उन से कहा जब लों मैं उस के हाथों में कीलों के चिन्ह न देखूं और कीलों के चिन्हों में अपनी उंगली न डालूं और अपने हाथ उस की पसली में न डालूं तब लों मैं प्रतीति न करूंगा।

२६ आठ दिन के पीछे जब उस के शिष्य फिर भीतर थे और तोमा उन के संग था तब द्वार बन्द होते ऊए यिसू आए और उन के बीच में खड़ा होके बोला तुम को कल्याण। २७ फेर तोमा से उस ने कहा अपनी उंगली पास ला और मेरे हाथ देख और अपना हाथ पास ला और उसे मेरी पसली में डाल और अबिश्वासी मत हो परन्तु बिश्वासी हो। २८ तोमा ने उत्तर देके उस से कहा हे मेरे प्रभु और हे मेरे परमेश्वर। २९ यिसू ने उस से कहा हे तोमा तू ने मुझे देखा तों बिश्वास लाया; धन्य वे हैं जिन्हों ने नहीं देखा और तौ भी बिश्वास लाये हैं।

३० और बऊतेरे और आश्चर्य्य कर्म्म जो इस पुस्तक में लिखे नहीं हैं सो यिसू ने अपने शिष्यों के आगे किये। ३१ परन्तु ये लिखे गये जिसतें तुम बिश्वास करो कि यिसू वह मसीह परमेश्वर का पुत्र है और कि तुम बिश्वास लाके उस के नाम से अनन्त जीवन पाओ॥

इन बातों के पीछे यिसू ने फिर आप को तिबेरियास के समुद्र के तीर शिष्यों को दिखाया और इस

२ रीति से दिखाई दिया। समऊन पथरस और तोमा जो दीदमुस कहावता है और नतनियेल जो गलील के काना का है और सबदी के पुत्र और उस के शिष्यों में
३ से और दो एकट्ठे थे। समऊन पथरस ने उन से कहा मैं मछली पकड़ने जाता हूं; उन्हों ने कहा हम भी तेरे संग चलेंगे; सो वे निकलके तुरन्त एक नाव पर
४ चढ़े पर उस रात कुछ न पकड़ा। जब भोर ऊई यिसू तीर पर खड़ा था परन्तु शिष्यों ने न जाना कि यिसू है।
५ तब यिसू ने उन से कहा हे लड़को क्या तुम्हारे पास कुछ खाने को है; उन्हों ने उसे उत्तर दिया कि नहीं।
६ उस ने कहा तुम नाव की दहिनी ओर जाल डालो तो पाओगे; उन्हों ने डाला तब मछलियों की बऊताई
७ से वे उसे खींच न सके। इस पर उस शिष्य ने जिसे यिसू प्यार करता था पथरस से कहा यह प्रभु है; जब समऊन पथरस ने सुना कि प्रभु है तब उस ने अपना बस्त्र कटि से बांधा क्योंकि वह नंगा था और समुद्र में कूद
८ पड़ा। और और शिष्य जो तीर से दूर न थे पर दो सौ हाथ के अटकल सो जाल को मछलियों समेत खींच-
९ ते ऊए नाव में होके आये। तीर पर आते ही उन्हों ने वहां कोयलों की आग और उस पर मछली धरी
१० ऊई और रोटी देखी। यिसू ने उन से कहा जो मछ-
११ लियां तुम ने अभी पकड़ी हैं उन में से लाओ। समऊन पथरस ने जाके जाल को एक सौ तिरपन बड़ी मछलियों से भरा ऊआ किनारे खींच लाया; और जो कि

इतनी बक़्त थीं तौ भी जाल न फटा। यिसू ने उन से कहा आओ भोजन करो; और शिष्यों में से किसी को हियाव न ऊआ कि उस से पूछे तू कौन है क्योंकि वे जानते थे कि प्रभु है। तब यिसू ने आके रोटी लिई और उन्हें दिई और वैसा ही मछलियां दिईं। यह तीसरी बार है कि यिसू ने मृतकों में से जी उठकर आप को शिष्यों को दिखाया। १२ १३ १४

फिर जब वे भोजन कर चुके यिसू ने समऊन पथ-रस से कहा हे यूनह के पुत्र समऊन क्या तू मुझे इन से अधिक प्यार करता है; उस ने उस से कहा हां हे प्रभु तू जानता है कि मैं तुझे प्यार करता हूं; उस ने उस से कहा मेरे लेले चरा। उस ने फिर दूसरी बार उस से कहा हे यूनह के पुत्र समऊन क्या तू मुझे प्यार करता है; उस ने उस से कहा हां हे प्रभु तू तो जानता है कि मैं तुझे प्यार करता हूं; उस ने उस से कहा मेरी भेड़ें चरा। उस ने तीसरी बार उस से कहा हे यूनह के पुत्र समऊन क्या तू मुझे प्यार करता है; तब पथ-रस इस लिये कि उस ने तीसरी बार उस से कहा क्या तू मुझे प्यार करता है उदास ऊआ और उस ने उस से कहा हे प्रभु तू तो सब कुछ जानता है तू जानता है कि मैं तुझे प्यार करता हूं; यिसू ने उस से कहा मेरी भेड़ें चरा। मैं तुझ से सच सच कहता हूं जब लों तू तरुण था तब लों तू अपनी कटि बांधता था और जहां चाहता था तहां जाता था परन्तु जब तू बूढ़ा १५ १६ १७ १८

होगा तब तू अपने हाथ फैलायेगा और कोई दूसरा तेरी कटि बांधेगा और जहां तू न चाहे तहां तुझे ले
१९ जायगा। उस ने यह कहके पता दिया कि वह किस मृत्यु से परमेश्वर की महिमा प्रगट करेगा और यह कहके वह बोला मेरे पीछे हो ले।

२० तब पथरस ने पीछे फिरके उस शिष्य को पीछे आते देखा जिसे यिसू प्यार करता था और जिस ने बियारी के समय उस की छाती पर तकिया करके पूछा था
२१ कि हे प्रभु वह जो तुझे पकड़वाता है कौन है। उस को पथरस ने देखके यिसू से कहा हे प्रभु इस का क्या
२२ होगा। यिसू ने उस से कहा यदि मैं चाहूं कि जब लों मैं आऊं तब लों वह ठहरे तो तुझ को क्या; तू मेरे
२३ पीछे हो ले। तब भाइयों में यह बात फैल गई कि वह शिष्य न मरेगा परन्तु यिसू ने उस से नहीं कहा कि वह न मरेगा परन्तु यह कहा यदि मैं चाहूं कि जब लों मैं आऊं तब लों वह ठहरे तो तुझ को क्या।

२४ यह वह शिष्य है जिस ने इन बातों की साक्षी दिई और इन बातों को लिखा और हमें निश्चय है कि उस
२५ की साक्षी सत्य है। और बहुत से कार्य्य हैं जो यिसू ने किये कि जो वे अलग अलग लिखे जाते तो मैं समझता हूं कि पुस्तकें जो लिखी जातीं सो जगत में न समा सकतीं॥ आमीन॥

प्रेरितें। की क्रिया

१ पर्व्व

हे टेवफिलुस जो कुछ कि यिसू आरंभ से करता और सिखाता रहा। उस दिन लें। कि वह पवित्र आत्मा से अपने चुने ज़ए प्रेरितें। को आज्ञा दे के ऊपर उठाया गया मैं पहिली पुस्तक में वह सब वर्णन कर चुका। उन पर उस ने अपने मरने के पीछे आप को बज़त से सिद्ध प्रमाणें। से जीवता प्रगट किया कि चालीस दिन लें। वह उन्हें दिखाई दिया करता और परमेश्वर के राज्य की बातें कहा करता था। और उन्हें एकट्ठा कर के उस ने आज्ञा दिई कि तुम यरूसलम से बाहर न जाओ परन्तु पिता की उस बाचा की जो तुम ने मुझ से सुनी है बाट जोहते रहे। कि यूहन्ना ने तो पानी का बपतिसमा दिया परन्तु तुम लोग थोड़े दिनें। के पीछे पवित्र आत्मा से बपतिसमा पाओगे। सो जब वे एकट्ठे ज़ए तब उन्हों ने यह कहके उस से पूछा हे प्रभु क्या तू इसी समय इसराएल को राज्य

२ ३ ४ ५ ६

७ फेर देगा। उस ने उन से कहा जो जो समय अथवा रितु पिता ने अपने ही वश में रखा है उन्हें जानना ८ तुम्हारा काम नहीं है। परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आवेगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे और यरूसलम में और सारे यहूदाह में और समरून में और पृथिवी के ९ अन्त सिवाने लों मेरे साक्षी होओगे। और यह कहके वह उन के देखते ही ऊपर उठाया गया और मेघ ने १० उस को उन की दृष्टि से ओट करके उठा लिया। और उस के जाते ज़ुए जब वे आकाश की ओर ताक रहे थे तब देखो दो पुरुष उजले वस्त्र पहिने उन के पास खड़े ११ ज़ुए। और कहने लगे हे गलीली लोगो तुम क्यों खड़े होके ऊपर स्वर्ग की ओर ताक रहे हो; यही यिसू जो तुम्हारे पास से स्वर्ग को उठाया गया है सो जिस रीति से तुम लोगों ने उसे स्वर्ग को जाते देखा उसी रीति से आवेगा।

१२ तब वे उस पहाड़ से जो जलपाई का कहावता है और यरूसलम के निकट एक विश्राम दिन के मार्ग १३ पर है यरूसलम को फिरे। और जब पज़ंचे तब एक कोठे पर गये; वहां पथरस और याकूब और यूहन्ना और अन्द्रियास और फिलिप और तोमा और बरतलमी और मत्ती और हलफी का पुत्र याकूब और समऊन जिलोतिस और याकूब का भाई यहूदाह रहते १४ थे। यह सब लोग स्त्रियों के संग और यिसू की माता

मरियम के और उस के भाइयों के संग एक मन होके प्रार्थना और बिन्ती करने में लौलीन रहे।

१५ उन्हीं दिनों में शिष्यों के बीच में (वे गिणती में एकसौ बीस के लगभग थे) पथरस खड़ा होके बोला। १६ हे भाइयो वह लिखा जो पवित्रआत्मा ने दाऊद के मुंह से यहूदाह के विषय में जो यिसू के पकड़नेवालों का अगवा ठहरा आगे से कहा था उस का पूरा होना अवश्य था। १७ क्योंकि वह हम लोगों में गिना जाता था और उस ने इस सेवकाई का भाग पाया था। १८ अब इस मनुष्य ने अधर्म्म के दाम से एक खेत मोल लिया और औंधे मुंह गिरा और उस का पेट फट गया और उस की सारी अन्तड़ियां निकल पड़ीं। १९ और यह बात यरूसलम के सब रहनेवालों में जानी गई यहां लों कि उस खेत का नाम उन की भाषा में हकलदमा अर्थात लोहू का खेत ज़ुआ। २० क्योंकि दाऊदगीता की पुस्तक में यह लिखा है कि उस का घर उजड़ जाय और उस में कोई बसनेवाला न रहे और उस का पद दूसरा लेवे। २१ सो जो लोग जब प्रभु यिसू हम में आया जाया २२ करता था सारे समय हमारे साथ रहे। यूहन्ना के बपतिसमा से लेके उस दिन लों कि वह हमारे पास से ऊपर उठाया गया चाहिये कि उन में से एक जन हमारे साथ उस के जी उठने का साची होवे। २३ तब उन्हों ने एक यूसफ़ जो बर्सबा कहावता है जिस की पदवी युस्तुस है और दूसरा मतियास दो जन खड़े

२४ किये। और वे प्रार्थना करके बोले कि हे प्रभु घट घट के अन्तर्जामी तू दिखा दे कि इन दोनें में से तू ने २५ किस को चुना है। जिसतें वह उस सेवकाई और प्रेरिताई का भाग पावे कि जिस से यहूदाह छूटके भ्रष्ट २६ ज्ञआ कि अपनी निज जगह को जाय। और उन्हों ने चिट्ठियां डालीं और चिट्ठी मतियास के नाम पर निकली; तब वह ग्यारह शिष्यों में गणा गया॥

२ पर्ब्ब

और जब पन्तिकोस्त का दिन आया तब वे सब एक-२ मत होके एकट्ठे ज्ञए। और अचानक जैसे बड़ी आंधी चले वैसा शब्द स्वर्ग से आया और सारा घर जहां वे ३ बैठे थे उस से भर गया। और उन्हें आग की सी जीभ अलग अलग दिखाई दिईं और उन में से एक एक पर ४ पड़ीं। तब वे सब के सब पवित्र आत्मा से भर गये और आन आन भाषा जैसा कि आत्मा ने उन्हें बोलने की शक्ति दिई वैसा बोलने लगे।

५ और भक्त यहूदी लोग हर एक देश में से जो आ-६ काश के तले हैं सो यरूसलम में आ रहे थे। और जब यह शब्द ज्ञआ तब भीड़ लग गई और सब लोग व्याकुल ज्ञए क्योंकि हर एक ने अपनी अपनी बोली उन्हें ७ बोलते सुना। और वे सब बिस्मित और अचंभित होके आपस में कहने लगे देखो यह सब लोग जो बोलते ८ हैं क्या वे गलीली नहीं हैं। फिर यह कैसा है कि हम में से एक एक अपने अपने देश की बोली सुनता है। ९ पारथी और मेदी और एलामी और मेसोपोतामिया

के रहनेवाले और यहूदाह के और कपादोकिया के और पनतस के और आसिया के। और फ्रोगिया के और पंफोलिया के और मिसर के लोग और लिबिया के उन सिवानों के लोग जो कुरेनी के पास हैं और रूमी परदेशी और यहूदी और जो यहूदी हो गये। करीती और अरबी लोग; हम अपनी अपनी भाषा में उन्हें परमेश्वर की बड़ी बड़ी बातें बोलते सुनते हैं। और वे सब बिस्मित हुए और खटके में होके एक दूसरे से कहने लगा यह क्या हुआ चाहता है। औरों ने ठट्ठा करके कहा ये लोग नई मदिरा के अमल में हैं। १० ११ १२ १३

तब पथरस उन ग्यारहों के संग खड़ा होके पुकारके उन से कहने लगा हे यहूदियो और यरूसलम के सब रहनेवालो तुम यह जानो और मेरी बातें कान लगाके सुनो। तुम जो ये लोग मतवाले समझते हो सो नहीं हैं क्योंकि अभी पहर दिन चढ़ा है। परन्तु जो योएल भविष्यतवक्ता के द्वारा से कहा गया सोही है। अर्थात परमेश्वर कहता है अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि मैं अपने आत्मा में से सब मनुष्यों पर डालूंगा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियां भविष्यतवाणियां कहेंगी और तुम्हारे तरुण दर्शन देखेंगे और तुम्हारे बूढ़े स्वप्न देखेंगे। और मैं उन दिनों में अपने दासों और अपनी दासियों पर अपने आत्मा में से डालूंगा और वे भष्यितवाणियां कहेंगे। १४ १५ १६ १७ १८

१९ और मैं ऊपर स्वर्ग में आश्चर्य्य की बातें और नीचे पृथिवी पर चिन्हें लोहू और आग और धूवें का २० उठान दिखाऊंगा। प्रभु के बड़े और प्रकाशमान दिन के पहिले सूर्य्य अंधेरा और चन्द्रमा लोहू हो जायगा। २१ और ऐसा होगा कि जो कोई प्रभु का नाम लेगा सो २२ निस्तार पावेगा। हे इसराएली लोगो ये बातें सुनो; यिसू नासिरी एक मनुष्य परमेश्वर की ओर से था कि उन अचंभों और आश्चर्य्य कर्म्मों और चिन्हों से जो परमेश्वर ने उस के द्वारा से तुम्हारे बीच में दिखाये जैसा तुम आप भी जानते हो यह बात तुम में प्रमाण २३ ठहरी। जब कि परमेश्वर के ठहराये गये मत और पूर्व्वज्ञान से वह सोंपा गया था तब तुम ने उसी को पकड़ा और अधर्म्मियों के हाथों से कील गड़वाके २४ उसे घात किया। उसी को परमेश्वर ने मृत्यु के बन्धन खोलके फेर उठाया क्योंकि उस के बश में पड़ा रहना २५ अनहोनी बात थी। इस लिये कि दाऊद उस के विषय में कहता है मैं ने प्रभु पर जो सदा मेरे साम्हने है आ-गे से दृष्टि किई कि वह मेरी दहिनी ओर है न होवे २६ कि मैं हट जाऊं। इस से मेरा मन आनन्दित और मे-री जीभ निहाल है फिर मेरी देह भी आशा में चैन २७ करेगी। क्योंकि तू मेरे प्राण को परलोक में न छोड़े-२८ गा न अपने पवित्र जन को सड़ने देगा। तू ने जीवन के मार्ग मुझे बतलाये; अपना दर्शन देके तू मुझे आनन्द २९ से भर देगा। हे भाइयो दाऊद पित्राध्यक्ष के विषय

में मुझे निधड़क बोलने दो कि वह तो मर गया और गाड़ा भी गया और उस की कबर आज लों हम में है। ३० सो भविष्यतबक्ता होके और यह जानके कि परमेश्वर ने किरिया खाके उस से कहा था कि मैं मसीह को देह के विषय में तेरे बंश में से उठाऊंगा जिसतें तेरे सिंहासन पर बैठे। ३१ यह आगे से जानके उस ने यिसू के जी उठने की कही कि उस का प्राण परलोक में न छोड़ा गया न उस की देह सड़ने पाई। ३२ उसी यिसू को परमेश्वर ने उठाया है; इस बात के हम सब साक्षी हैं। ३३ सो परमेश्वर की दहिनी ओर बढ़ाया जाके और पिता से पवित्र आत्मा की बाचा पाके उस ने यह जो तुम अब देखते और सुनते हो डाला। ३४ क्योंकि दाऊद स्वर्ग को नहीं उठ गया परन्तु वह आप कहता है प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा। ३५ कि जब लों मैं तेरे बैरियों को तेरे पांव की पीढ़ी न करूं तू मेरे दहिने बैठ। ३६ सो इसराएल का सारा घराना निश्चय जाने कि जिस यिसू को तुम लोगों ने क्रूस पर चढ़ाया है उसी को परमेश्वर ने प्रभु और मसीह किया।

३७ जब उन्हों ने यह सुना तो उन के मन छिद गये और उन्हों से पथरस और और प्रेरितों से कहा हे भाइयो हम क्या करें। ३८ तब पथरस ने उन से कहा मन फिराओ और तुम में से हर एक पाप मोचन के लिये यिसू मसीह के नाम पर बपतिसमा ले तो तुम लोग पवित्र आत्मा का दान पाओगे। ३९ क्योंकि वह बाचा तुम लो-

गों से और तुम्हारे बालकों से है और उन सभों से जो दूर हैं जितनों को हमारा प्रभु परमेश्वर बुलावे उन से वह भी है। ४० और उस ने बहुतेरी और बातों से साक्षी ला लाके और उपदेश कर करके कहा आप को इन टेढ़े लोगों से बचाओ।

४१ सो जिन्हों ने उस की बात आनन्द से ग्रहण किई उन्हों ने बपतिसमा पाया और उसी दिन तीन सहस्र प्राणी के लगभग उन में मिल गये। ४२ और वे प्रेरितों के उपदेश में और संगत में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में नित्य बने रहे। ४३ और हर एक प्राणी पर डर पड़ी और बहुत से आश्चर्य्य कर्म्म और चिन्ह प्रेरितों से दिखाये गये। ४४ और सब जो बिश्वास लाये सो एकट्ठे रहे और सब बस्तें सब की थीं। ४५ और वे अपनी अपनी संपत्ति और सामग्री को बेचके जैसा एक एक को आवश्यक था वैसा सभों को बांट देते थे। ४६ और वे एक मत होके प्रतिदिन मन्दिर में रहते थे और घर घर रोटी तोड़के आनन्दता और मन की सुधाई से खाना खाते थे। ४७ और परमेश्वर की स्तुति करते थे और सब लोग उन्हें चाहते थे; और प्रभु कलीसिया में निस्तार पानेहारों को प्रतिदिन अधिक करता था॥

३ पर्ब्ब

फिर पथरस और यूहन्ना एक साथ प्रार्थना के जून तीसरे पहर मन्दिर को चले। २ और लोग जन्म के एक लंगड़े को ले जाते थे और उसे प्रतिदिन मन्दिर के द्वार पर जो सुन्दर कहाता है बैठाते थे कि जो मन्दिर

में जाते थे उन से भीख मांगे। जब उस ने पथरस और ३
यूहन्ना को मन्दिर में जाते देखा तब उन से भीख मां-
गी। पथरस ने यूहन्ना के संग उस पर दृष्टि करके ४
उस से कहा हमारी ओर देख। वह उन से कुछ पाने ५
की आशा से उन्हें तक रहा। तब पथरस ने कहा रूपा ६
और सोना मेरे पास नहीं है परन्तु जो मेरे पास है सो
मैं तुझे देता हूं; यिसू मसीह नासिरी के नाम से उठ
और चल। और उस ने उस का दहिना हाथ पकड़के ७
उसे उठाया और तुरन्त उस के पांव और टखने बल
पा गये। और वह कूदके उठ खड़ा हुआ और चलता ८
फिरता था और चलता कूदता और परमेश्वर की
स्तुति करता हुआ उन के संग मन्दिर में गया। और ९
सब लोगों ने उसे चलते फिरते और परमेश्वर की
स्तुति करते देखा। और जाना कि जो मन्दिर के सुन्दर १०
द्वार पर बैठे भीख मांगता था सो यही है; और जो
उस के साथ हुआ था वे उस से निपट अचंभित और
बिस्मित हुए।

और ज्यों वह लंगड़ा जो चंगा हुआ पथरस और ११
यूहन्ना को लिपटा जाता था तो सब लोग बहुत ही
अचंभा करके उस उसारे में जो सुलेमानी कहावता
था उन के पास दौड़े आये। पथरस ने यह देखके १२
लोगों से कहा हे इसराएली लोगो तुम इस पर क्यों
अचंभा करते हो और क्यों हमें ऐसा तक रहे हो जैसा
कि हम ने अपने प्रताप अथवा धर्म्म से इस मनुष्य को

१३ चलने की शक्ति दिई। अबिरहाम और इसहाक और याकूब के परमेश्वर ने हमारे पितरों के परमेश्वर ने अपने पुत्र यिसू की महिमा प्रकाश किई; उस को तुम लोगों ने पिलातूस के हाथ सौंप दिया और उस के साम्हने जब उस ने उसे छोड़ देना उचित जाना तब तुम
१४ उस से मुकर गये। सो तुम लोग उस धर्म्मी और सत्यवादी से मुकर गये और यह मांगा कि एक हत्यारा
१५ तुम्हारे लिये छोड़ दिया जाय। जीवन के अध्यक्ष को तुम ने घात किया; उसे परमेश्वर ने मृतकों में से उठाया और
१६ हम उस के साक्षी हैं। फिर उस के नाम पर बिश्वास लाने से उस के नाम ने इस मनुष्य को जिसे तुम लोग देखते और जानते हो चंगा किया; हां उस बिश्वास ने जो उस की ओर से है उसे तुम सभों के साम्हने ऐसा संपूर्ण
१७ आरोग्य दिया। और अब हे भाइयो मैं ने जाना कि तुम ने और तुम्हारे प्रधानों ने भी अज्ञानता से यह किया।
१८ परन्तु परमेश्वर ने जो कुछ पहिले अपने समस्त भविष्यतवक्ताओं के द्वारा से कहा था कि मसीह दुःख
१९ उठावेगा सो उस ने पूरा किया। सो अब मन फिराओ और फेर आओ कि तुम्हारे पाप मिटाये जायें
२० जिसतें प्रभु के यहां से सुख चैन के दिन आवें। और वह यिसू मसीह को जिस का समाचार आगे से तुम्हें दिया
२१ गया है भेजे। जब लों सब बातें जिन के विषय में परमेश्वर ने जगत के आदि से अपने सारे पवित्र भविष्यतवक्ताओं के द्वारा कहा था फिर स्थापन न हों तब

लों चाहिये कि स्वर्ग उसे लिये रहे। क्योंकि मूसा ने २२ पितरों से कहा कि प्रभु जो तुम्हारा परमेश्वर है तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिये एक भविष्यतवक्ता मेरे समान उठावेगा जो कुछ वह तुम्हें कहे उस की सब बातें सुनो। और ऐसा होगा कि हर एक प्राणी जो २३ उस भविष्यतवक्ता को न सुनेगा सो लोगों में से नाश किया जायगा। और सब भविष्यतवक्ताओं ने सम्मुएल २४ से लेके और जो उस के पीछे आये जितनों ने कुछ कहा उन्हों ने इन दिनों का भी सन्देश दिया है। तुम २५ उन भविष्यतवक्ताओं और उस नियम के सन्तान हो जो परमेश्वर ने हमारे पितरों से करके अबिरहाम से कहा कि तेरे बंश से पृथिवी के सारे घराने आशीश पावेंगे। परमेश्वर ने अपने पुत्र यिसू को उठाके उसे २६ पहिले तुम्हारे पास भेजा कि तुम में से हर एक को उस की बुराइयों से फिरने की आशीश देवे॥

४ पर्ब्ब

और जब वे लोगों से बोल रहे थे तब याजक और मन्दिर का प्रधान और सादूकी लोग उन पर चढ़ आये। किस लिये कि वे इस बात से कि लोगों को उप- २ देश देते और यिसू के कारण से मृतकों के जी उठने की बार्त्ता सुनाते थे रिसिया गये। सो उन्हों ने उन पर ३ हाथ डाले और उन्हें दूसरे दिन लों बन्दीगृह में रखा क्योंकि सांझ हो गई थी। तथापि जिन्हों ने वचन सुना ४ उन में से बहुत लोग बिश्वास लाये और गिनती में पांच सहस्र पुरुषों के लगभग हुए थे। और दूसरे ५

दिन ऐसा हुआ कि उन के प्रधान और प्राचीन और
६ अध्यापक लोग। और हन्ना महायाजक और कायफा
और यूहन्ना और सिकन्दर और जितने महायाजक
७ के कुटुम्ब थे सो यरूसलम में एकट्ठे हुए। और उन्हें
उन के बीच में खड़ा करके उन्हों ने पूछा तुम ने किस
८ पराक्रम और किस नाम से यह किया। तब पथरस ने
पवित्र आत्मा से भरपूर होके उन से कहा हे लोगों
९ के प्रधानो और इसराएल के प्राचीनो। जो उस शुभ
कार्य्य के विषय में जो इस रोगी मनुष्य पर किया गया
है तुम हम से आज पूछते हो कि वह क्योंकर चंगा
१० हुआ। तो तुम सब और इसराएल के सारे लोग जानो
कि यिसू मसीह नासिरी के नाम से जिस को तुम लो-
गों ने क्रूस पर चढ़ाया और जिसे परमेश्वर ने मृतकों
में से फेर उठाया उसी से यह मनुष्य तुम्हारे साम्हने
११ चंगा खड़ा है। यह वह पत्थर है जिसे तुम थवइयों
ने निकम्मा ठहराया; वह कोने का सिरा हुआ है।
१२ और किसी दूसरे में मोक्ष नहीं है क्योंकि स्वर्ग के
तले दूसरा कोई नाम कि जिस से हम लोग मुक्ति पा
सकें मनुष्यों को नहीं दिया गया है।

१३ और जब उन्हों ने पथरस और यूहन्ना का हियाव
देखा और जाना कि वे अनपढ़े और ऐसे बैसे लोग हैं
तब अचंभा किया; फिर जान गये कि वे यिसू के संग
१४ थे। और वह मनुष्य जो चंगा किया गया उन के संग
१५ खड़ा देखके वे निरुत्तर हुए। और उन्हें आज्ञा करके

कि सभा से बाहर जावें वे आपस में बिचार करने लगे। और बोले इन मनुष्यों को हम क्या करें; क्योंकि यरूसलम के सब रहनेवालों पर प्रगट है कि उन्हों ने एक प्रमाण आश्चर्य्य कर्म्म दिखाया और हम लोग उस से मुकर नहीं सकते हैं। परन्तु वह लोगों में अधिक फैलने न पावे इस लिये हम उन्हें बहुत धमका देवें कि वे यह नाम फिर किसी जन से न बोलें। तब उन को बुलाके उन्हों ने उन्हें आज्ञा दिई कि तुम यिसू के नाम से कधी न बोलना और न सिखाना। पथरस और यूहन्ना ने उत्तर देके उन से कहा क्या परमेश्वर के आगे यह ठीक है कि हम परमेश्वर की बात से तुम्हारी बात अधिक मानें तुम ही बिचारो। क्योंकि जो कुछ हम ने देखा और सुना है सो न कहना यह हो नहीं सकता। सो जब लोगों के कारण उन्हें दण्ड देने को उन्हों ने कोई बात न पाई तब उन को और धमका-के छोड़ दिया क्योंकि सब लोग उस पर जो हुआ था परमेश्वर की स्तुति करते थे। कि जिस मनुष्य पर यह चंगा होने का अचंभा हुआ था सो चालीस बरस के ऊपर था।

१६ १७ १८ १९ २० २१ २२

तब वे छूटके अपने लोगों के पास गये और जो कुछ प्रधान याजकों और प्राचीनों ने कहा था सो उन्हें कह सुनाया। वे यह सुनके एक मन होके परमेश्वर को दोहाई देके बोले कि हे सर्व्वस्वामी तू परमेश्वर है कि स्वर्ग और पृथिवी और समुद्र और सब कुछ जो

२३ २४

२५ उन में हैं तू ने बनाया। तू ने अपने दास दाऊद के मुंह से कहा था अन्यदेशियों ने क्यों धूम मचाई और
२६ लोगों ने क्यों अनर्थ मनसा कियां। प्रभु के और उस के मसीह के विरुद्ध होके पृथिवी के राजा उठे और
२७ प्रधान मिलके एकट्ठे हुए। सच कि तेरा पवित्र पुत्र जिसे तू ने मसीह किया उस के विरुद्ध हेरोदेस और पोन्ति-यूस पिलातूस अन्यदेशियों और इसराएली लोगों
२८ के संग एकट्ठे हुए। कि जो कुछ तेरे हाथ और तेरी मनसा ने आगे से ठहराया था कि हो जाय सो करें।
२९ और अब हे प्रभु तू उन की धमकियां देख और अपने दासों को अपना बचन सारे हियाव से बोलने की शक्ति
३० दे। इस लिये अपना हाथ लोगों को चंगा करने को बढ़ा कि तेरे पवित्र पुत्र यिसू के नाम से चिन्ह और
३१ आश्चर्य्य कर्म्म किये जावें। फिर उन के प्रार्थना करने पर वह स्थान जिस में वे एकट्ठे थे हिल गया और वे सब पवित्र आत्मा से भर गये और निर्भय होके पर-मेश्वर का बचन सुनाते रहे।

३२ और बिश्वासियों की मण्डली एक मन और एक मत थी और किसी ने अपनी संपत्ति के विषय में न कहा कि यह मेरा है परन्तु सब वस्तुओं में सब लोग भागी
३३ थे। और प्रेरितों ने बड़े पराक्रम से प्रभु यिसू के जी उठने पर साक्षी दिई और उन सभों पर बड़ा अनुग्रह
३४ था। फिर उन के बीच में कोई दरिद्र न था क्योंकि जो जो भूमि और घर रखते थे सो उन्हें बेच बेचके उन का

दाम लाके। प्रेरितों के पांवों पर रखते थे और जितना एक एक को आवश्यक था उतना बांट उन्हें दिया जाता था। और यूसी जिस का नाम प्रेरितों ने बरनबा (अर्थात उपदेश का पुत्र) रखा जो बंश का लावी और जन्म का कप्रसी था। वह एक खेत रखता था सो उसे बेचा और रुपैया लाके प्रेरितों के पांवों पर रखा॥ ३५ ३६ ३७

५ पर्ब्ब

और हननियाह नाम एक मनुष्य और उस की पत्नी सफीरह ने अपनी भूमि बेची। और दामों में से कुछ रख छोड़ा सो उस की पत्नी भी जानती थी; और कुछ लाके प्रेरितों के पांवों पर रखा। तब पथरस ने कहा हे हननियाह शैतान क्यों तेरे मन में समा गया कि तू पवित्र आत्मा से झूठ बोले और भूमि के दाम में से कुछ रख छोड़े। जब लों धरी थी क्या वह तेरी न थी और जब बेची गई तो क्या वह तेरे बश में न रही; तू ने अपने मन में इस बात को क्यों जगह दिई; तू मनुष्यों से नहीं परन्तु परमेश्वर से झूठ बोला। हननियाह ये बातें सुनते ही गिर पड़ा और प्राण त्यागा और सब लोग ये बातें सुनके बहुत डर गये। और तरुणों ने उठके उसे कपड़े में लपेटा और बाहर ले जाके उसे गाड़ दिया। और पहर भर बीते उस की पत्नी इस बात को न जानके भीतर आई। पथरस ने उस से कहा मुझ से कह क्या तुम ने भूमि इतने को बेची; वह बोली हां इतने को। फिर पथरस ने उस से कहा यह कैसे हुआ कि तुम परमेश्वर के आत्मा की २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९

परीक्षा करने के लिये एक मत ऊए हो; देख तेरे पति के गाड़नेवालों ने डेवढ़ी पर पांव रखा कि तुझे बा-
१० हर ले जायें। वहीं वह उस के पांवों पर गिर पड़ी और प्राण त्यागा; और तरुणों ने भीतर आके उसे मरी ऊई पाया और उसे बाहर ले जाके उस के पति
११ पास गाड़ा। और सारी कलीसिया और जिन्हों ने ये बातें सुनीं सब बऊत डर गये।

१२ और प्रेरितों के हाथों से बऊत से चिन्ह और आश्चर्य्य कर्म्म लोगों में किये गये (और वे सब एक मत
१३ होके सलेमानी उसारे में थे। और और लोगों में से किसी को उन में मिल जाने का साहस न ऊआ परन्तु
१४ लोग उन की बड़ाई करते थे। और पुरुष और स्त्रियां मण्डली की मण्डली परमेश्वर पर बिश्वास लाके उन
१५ में मिलते गये)। यहां लों कि लोग रोगियों को मार्गों में ले आके बिछौनों और खटोलों पर रखते थे जिस-तें जब पथरस आवे तब उस की छाया उन में से किसी
१६ पर पड़े। और बऊत से लोग चारों ओर के नगरों में से यरूसलम में आये और रोगियों को और जो अपवित्र आत्माओं के सताये ऊए थे उन्हें लाये और सब चंगे हो गये।

१७ तब महायाजक और उस के सब संगी जो सादूकि-
१८ यों के पन्थ के थे डाह से भरके उठे। और प्रेरितों पर हाथ डालके उन्हें सामान्य बन्दीगृह में बन्द कि-
१९ या। परन्तु प्रभु के दूत ने रात को बन्दीगृह के द्वार

खोले और उन्हें बाहर लाके कहा। जाओ और | २०
मन्दिर में खड़े होके इस जीवन की सारी बातें लोगों
से कहा। वे यह सुनके बड़े तड़के मन्दिर में जाके | २१
उपदेश देने लगे; तब महायाजक और उस के सं-
गियों ने आके सभा को और इसराएल के सन्तानों के
सब प्राचीनों को एकट्ठे बुलाया और बन्दीगृह में कह-
ला भेजा कि उन्हें लावें। परन्तु प्यादों ने आके उन्हें | २२
बन्दीगृह में न पाया; तब लौटके उन्हें सन्देश देके
कहा। हम ने तो बन्दीगृह को बड़ी चौकसी से बन्द | २३
पाया और पहरूओं को द्वारों पर बाहर खड़ा देखा
परन्तु जब खोला तब किसी को भीतर न पाया। सो | २४
जब महायाजक और मन्दिर के प्रधान और प्रधान
याजकों ने ये बातें सुनीं तब घबरा गये कि यह क्या
हुआ चाहता है। फिर एक जन ने आके उन्हें सन्देश | २५
दिया कि देखो जिन मनुष्यों को तुम ने बन्दीगृह में डा-
ला था सो मन्दिर में खड़े होके लोगों को उपदेश
देते हैं। तब प्यादों को लेके प्रधान गया और वे बिना | २६
उन पर उपद्रव किये हुए उन्हें लाये क्योंकि वे लोगों
से डरे ऐसा न हो कि उन्हें पत्थर मारें। और उन्हें | २७
लाके सभा के आगे खड़ा किया और महायाजक ने
उन से यह कहके पूछा। क्या हम ने तुम्हें दृढ़ आज्ञा न | २८
दिई कि तुम लोग इस नाम पर शिक्षा न करना; फिर
देखो तुम ने यरूसलम को अपनी शिक्षा से भर दिया
है और इस मनुष्य का लोहू हम पर धरने चाहते

२९ हो। तब पथरस और और प्रेरितों ने उत्तर देके कहा परमेश्वर को मनुष्यों से अधिक माना चाहिये।
३० हमारे पितरों के परमेश्वर ने यिसू को उठाया जिसे
३१ तुम लोगों ने लकड़े पर लटकाके घात किया। उस को परमेश्वर ने अपने दहिने हाथ से बढ़ाके प्रधान और मुक्तिदाता ठहराया जिसतें इसराएल को फिरा
३२ ज़ुआ मन और पापों की क्षमा देवे। और इन बातों के हम साक्षी हैं और पवित्र आत्मा जिसे परमेश्वर ने अपने आज्ञाकारों को दिया है सो भी है।
३३ वे यह सुनके कट गये और उन्हें घात करने को
३४ परामर्श किया। तब गमालिएल नाम एक फरीसी ने जो व्यवस्था का पाठक और सब लोगों में आदरवन्त था सो सभा में उठके प्रेरितों को तनिक बाहर करने
३५ की आज्ञा किई। तब उन से कहा हे इसराएली लोगो तुम सुचेत रहो कि इन मनुष्यों के विषय में क्या किया
३६ चाहते हो। क्योंकि इन दिनों से आगे थेवदास ने उठके कहा कि मैं कुछ हूं और गिन्ती में सौ चार एक जन उस से मिल गये; वह मारा गया और जितने उस के माननेवाले थे सब छिन्न भिन्न होके नाश ज़ुए।
३७ उस के पीछे नाम लिखाई के दिनों में यहूदाह गलीली उठा और बज़ुत से लोगों को अपनी ओर खैंच लाया; वह भी नष्ट ज़ुआ और जितने उस के मानने-
३८ वाले थे सब बिथर गये। सो अब मैं तुम से कहता हूं इन मनुष्यों से परे रहो और उन्हें जाने दो क्योंकि जो

यह बिचार अथवा यह कार्य्य मनुष्यों से है तो मिट जायगा। परन्तु यदि परमेश्वर से है तो तुम उसे मिटा ३९ नहीं सकते हो ऐसा न हो कि तुम लोग परमेश्वर से लड़नेहारे ठहरो। तब उन्हों ने उसे माना और ४० प्रेरितों को बुलाके उन्हें मारा और आज्ञा किई कि यिसू के नाम पर बात न करना और उन्हें छोड़ दिया। सो वे सभा के आगे से आनन्द करते चले गये कि ४१ उस के नाम के लिये अपमान पाने के योग्य गणे गये। और उन्हों ने प्रतिदिन मन्दिर में और घर घर उप- ४२ देश करना और यिसू मसीह का मंगल समाचार सु- नाना न छोड़ा॥

६ पर्व्व

उन दिनों में जब शिष्य बहुत हुए यूनानी लोग इब- रानियों से कुड़कुड़ाने लगे क्योंकि उन की विधवाओं को सदाब्रत बांटने में ढील होती थी। तब उन बार- २ हों ने शिष्यों की मण्डली को बुलाके कहा यह उचित नहीं है कि हम परमेश्वर का वचन छोड़के मेज की सेवकाई करें। सो हे भाइयो सात प्रमाणिक मनुष्य ३ जो पवित्र आत्मा और ज्ञान से भरे हुए हैं तुम अपने में से चुनो कि हम उन्हें इस कार्य्य पर ठहरावें। परन्तु हम आप प्रार्थना में और वचन की सेवकाई में ४ लगे रहेंगे। इस बात से सारी मण्डली प्रसन्न हुई ५ और स्तिफान नाम एक मनुष्य को जो बिश्वास और पवित्र आत्मा से भरा था और फिलिप को और प्रो- करस और नीकानूर और तीमोन और परमनस को

और अन्ताकिया के नवयहूदी निकलाऊस को इन को
६ उन्हों ने चुन लिया। और प्रेरितों के आगे खड़ा
किया; उन्हों ने प्रार्थना करके अपने हाथ उन पर
रखे।

७ और परमेश्वर का वचन फैल गया और यरूसलम
में शिष्यों की गिन्ती बहुत ही बढ़ गई और याजकों
८ की बड़ी मण्डली विश्वास के आधीन हुई। और स्ति-
फान बिश्वास और सामर्थ्य से परिपूर्ण होके बड़े बड़े
अचंभे और आश्चर्य कर्म्म लोगों के बीच में किये।
९ तब उस मण्डली से जो लीबरतीनियों की कहाती है
और कुरेनियों की और इस्कन्दरियों की और उन की
जो किलकिया और आसिया से आये थे उन में से कोई
१० कोई उठके स्तिफान से विवाद करने लगे। पर वे
उस ज्ञान और आत्मा का कि जिस से वह बातें करता
११ था सामना न कर सके। तब उन्हों ने कितने मनुष्यों
को गांठा कि कहें हम ने उस को मूसा और परमे-
१२ श्वर की निन्दा करते सुना है। और उन्हों ने लोगों
और प्राचीनों और अध्यापकों को उस्काया और उस
पर चढ़ आये और उसे पकड़के सभा में ले गये।
१३ और झूठे साक्षी खड़े किये; उन्हों ने कहा यह मनुष्य
इस पवित्र स्थान की और व्यवस्था की निन्दा करना
१४ नहीं छोड़ता है। क्योंकि हम ने उसे यह कहते सुना
है कि वही यिसू नासिरी इस स्थान को ढावेगा और
जो व्यवहार कि मूसा ने हम लोगों को सौंपे सो बदल

देगा। तब सभा में के सब बैठनेवालों ने उस पर ध्यान करके दृष्टि किई और उस का मुंह स्वर्गदूत का सा मुंह देखा॥ १५

७ पर्ब्ब

तब महायाजक ने पूछा क्या ये बातें यों ही हैं। वह बोला हे भाइयो और हे पितरो सुनो; हमारे पिता अबिरहाम पर उस के हरान में बसने से पहिले जब वह मेसोपोतामिया में था ऐश्वर्य्य का परमेश्वर प्रगट २ हुआ। और उस से कहा अपने देश और अपने कुंबे ३ में से निकल जा और जो देश मैं तुझे दिखाऊंगा उस में चला आ। तब कल्दियों के देश से निकलके वह ४ हरान में आ रहा और जब उस का पिता मर गया तब उस ने उसे वहां से इस देश में जिस में अब तुम रहते हो पहुंचाया। और उसे इस में कुछ अधिकार ५ हां पांव रखने की जगह भी नहीं दिई; पर जब कि उस का कोई लड़का न था तब उसे वचन दिया कि मैं यह भूमि तेरे वश में और तेरे पीछे तेरे वंश के वश में करूंगा। और परमेश्वर इस रीति से बोला तेरा वंश ६ पराये देश में परदेशी होंगे; वे उन को दास करेंगे और चार सौ बरस लों उन की दुर्दशा करेंगे। और ७ परमेश्वर ने कहा जिन लोगों के वे दास होंगे मैं उन्हें दण्ड देऊंगा और उस के पीछे वे बाहर आवेंगे और इस स्थान में मेरी सेवा करेंगे। और उस ८ ने उसे खतना का नियम दिया; सो उस से इसहाक उत्पन्न हुआ और आठवें दिन उस ने उस का खतना

किया ; और इसहाक से याकूब और याकूब से बारह
९ पिचाध्यच उत्पन्न हुए। और पिचाध्यचों ने डाह के
मारे यूसफ को मिसर में बेचा परन्तु परमेश्वर उस के
१० संग रहा। और उस ने उस को सारे कष्ट से छुड़ाया
और मिसर के राजा फिरऊन के आगे उसे अनुग्रह
और ज्ञान दिया ; और उस ने उसे मिसर का और
११ अपने सारे घर का अध्यच किया। अब मिसर के सारे
देश और कनआन में अकाल पड़ा और बड़ा कष्ट हुआ
१२ और हमारे पितरों को जीविका न मिलती थी। परन्तु
जब याकूब ने सुना कि मिसर में अनाज है तब उस ने
१३ पहिले हमारे पितरों को भेजा। और दूसरी बेर
यूसफ ने आप को अपने भाइयों पर प्रगट किया और
१४ फिरऊन ने यूसफ का घराना जान लिया। तब यूसफ
ने भेजकर अपने पिता याकूब को और उस के सारे
१५ कुंबे को जो पचहत्तर प्राणी थे बुलवाया। सो याकूब
मिसर को गया और वह और हमारे पितर मर गये।
१६ वे उन्हें सिखम को ले गये और जिस कबर को अबिर-
हाम ने रुपैया देके सिखम के पिता हमूर के बेटों
१७ से मोल लिया था उस में उन्हें गाड़ दिया। परन्तु जिस
बाचा पर परमेश्वर ने अबिरहाम से किरिया खाई थी
जब उस का समय निकट आया तब लोग बढ़ गये और
१८ मिसर में बहुत हुए। उस समय लों कि दूसरा राजा
१९ हुआ कि जो यूसफ को नहीं जानता था। उस ने हमा-
रे लोगों से चतुराई करके हमारे पितरों को यहां

लों दुर्दशा किई कि उन के बच्चों को फेंकवा दिया कि जीते न रहें। उसी समय में मूसा उत्पन्न हुआ; वह २० बहुत सुन्दर था और तीन महीने भर अपने पिता के घर में पाला गया। जब वह फेंका गया तब फिरऊन २१ की पुत्री ने उसे उठाके अपना ही पुत्र करके पाला। और मूसा ने मिसरियों की सारी विद्या की शिक्षा पाई २२ और बातों और कामों में निपुण था। जब वह पूरे चा- २३ लीस बरस का हुआ तो उस के मन में आया कि मैं अपने भाईबन्द इसराएल के सन्तान जाके देखूं। जब २४ एक को अन्धेर सहते देखा तब उस की रक्षा किई और अन्धेर सहनेहारे का पलटा लेके मिसरी को घात किया। क्योंकि वह सोचता था कि मेरे भाईबन्द सम- २५ झेंगे कि परमेश्वर मेरे हाथों उन्हें छुटकारा देगा परन्तु वे न समझे। फिर दूसरे दिन जब वे लड़ रहे २६ थे वह अपने को उन्हें दिखाके उन को मिला देने चाहा और बोला अजी तुम तो भाई हो एक दूसरे पर क्यों अन्धेर करते हो। परन्तु जो अपने पड़ोसी २७ पर अन्धेर कर रहा था उस ने उसे हटाके कहा तुझे किस ने हम पर प्रधान और न्यायक किया है। जैसा २८ तू ने कल मिसरी को घात किया क्या मुझे वैसे घात करेगा। इस बात पर मूसा भागा और मिदियान देश २९ में जा रहा; वहां उस से दो पुत्र उत्पन्न हुए। जब ३० चालीस बरस बीत गये तब सीना पर्वत के बन में प्रभु का दूत आग की लौ में एक झाड़ी के बीच उस पर

३१ प्रगट ज़ुआ। उसे देखते ही मूसा ने उस दर्शन से अचंभा किया और जब उसे देख भालने को निकट ३२ गया तब प्रभु की वाणी यह कहती उसे पज़ंची। कि मैं तेरे पितरों का परमेश्वर अबिरहाम का परमेश्वर और इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर हूं; इस पर मूसा कांप गया और उसे देख भालने ३३ को हियाव न ज़ुआ। फिर प्रभु ने उसे कहा जूती अपने पांवों से उतार क्योंकि जिस स्थान पर तू खड़ा है सो ३४ पवित्र भूमि है। मैं दृष्टि करके अपने लोगों की दुर्दशा जो मिसर में हैं देख रहा हूं और मैं ने उन का आह मारना सुना और उन्हें छुड़ाने को उतरा हूं; अब आ ३५ मैं तुझे मिसर में भेजूंगा। यह मूसा जिसे उन्हों ने नकारके कहा था कि किस ने तुझे हम पर प्रधान और न्यायक किया उसी को उस दूत की ओर से जो झाड़ी में उसे दिखाई दिया परमेश्वर ने प्रधान और ३६ छुटकारा देनेहारा करके भेजा। वही उन्हें निकाल लाया और मिसर के देश में और लाल समुद्र में और चालीस बरस बन में आश्चर्य्य कर्म्म और चिन्ह दिखाता ३७ रहा। यह वही मूसा है कि जिस ने इसराएल के सन्तान से कहा कि प्रभु जो तुम्हारा परमेश्वर है सो तुम्हारे भाइयों में से मेरे समान का एक भविष्यतवक्ता ३८ तुम्हारे लिये प्रगट करेगा; तुम उस की सुनियो। यह वह है जो बन में मण्डली के बीच उस दूत के संग जो उस से सीना पर्बत पर बोला और हमारे पितरों के

संग रहा; उसी को जीवत बचन मिला कि हमें देवे।
३९ हमारे पितरों ने उसे न मानने चाहा परन्तु उसे अपने पास से दूर किया और उन के मन मिसर को फिर गये।
४० और उन्हों ने हारून से कहा तू हमारे कारण ऐसे देव जो हमारे आगे आगे चलें बना क्योंकि वह मूसा जो हमें मिसर की भूमि से निकाल लाया हम नहीं जानते कि वह क्या हुआ।
४१ और उन दिनों में उन्हों ने एक बछड़ा बनाया और मूर्त को बलि चढ़ाया और अपने हाथों के कार्य्यों से मगन हुए।
४२ तब परमेश्वर ने फिर के उन्हें छोड़ दिया कि आकाश की सेना की पूजा करें जैसा कि भविष्यतवक्ताओं की पुस्तक में लिखा है कि हे इसराएल के घराने क्या तुम ने बन में चालीस बरस मुझे बलिदान और भेंटें चढ़ाईं।
४३ मोलख के तंबू को और अपने देवता रंफान के तारे को अर्थात जो मूर्तें तुम ने पूजने के लिये बनाईं उन को तुम ने खड़ा किया; सो मैं तुम्हें निकालके बाबुल के उधर बसाऊंगा।
४४ हमारे पितरों के साथ साक्षी का तंबू बन में था जैसा कि उस ने मूसा से बातें करके ठहराया था कि जैसा तू ने देखा है वैसी डौल का उसे बनाना।
४५ उसे हमारे पितर अगिलों से पाके योशुआ के संग अन्यदेशियों के देश में जिन्हें परमेश्वर ने हमारे पितरों के आगे निकाल दिया लाये और वह दाऊद के दिनों लों रहा।
४६ उस ने परमेश्वर के आगे अनुग्रह पाया और उस ने चाहा कि याकूब के परमेश्वर के

४७ लिये एक डेरा हो जावे। पर सुलेमान ने उस के लिये ४८ घर बनाया। तौभी अति महान परमेश्वर हाथों के बनाये ऊए मन्दिरों में नहीं रहता है जैसा कि भविष्यत- ४९ वक्ता कहता है। स्वर्ग मेरा सिंहासन और पृथिवी मेरे पांवों तले की पीढ़ी है; प्रभु कहता है तुम लोग मेरे लिये कौनसा घर बनाओगे; अथवा मेरे ५० ठहरने का कौनसा स्थान है। मेरे हाथ ने ये सारी ५१ वस्तें बनाई हैं कि नहीं। हे हठीलो और मन के और कानों के खतनाहीन लोगो तुम पवित्र आत्मा का नित्य साम्हना करते हो; जैसा तुम्हारे पितरों ने किया वैसा ५२ ही तुम लोग भी करते हो। भविष्यतवक्ताओं में से किस को तुम्हारे पितरों ने नहीं सताया; उन्हों ने उस धर्म्मी के आने के सन्देश देनेवालों को घात किया और तुम अब उस के पकड़वानेवाले और हत्यारे ऊए ५३ हो। तुम ने स्वर्गदूतों के द्वारा व्यवस्था पाई और न मानी।

५४ ये बातें सुनते ही वे अपने मन में कट गये और उस ५५ पर दांत किचकिचाने लगे। परन्तु वह पवित्र आत्मा से भरा ऊआ स्वर्ग की ओर देख रहा था और परमेश्वर के ऐश्वर्य्य को और परमेश्वर के दहिने हाथ यिसू ५६ को खड़ा देखा। और कहा देखो मैं स्वर्ग को खुला और मनुष्य के पुत्र को परमेश्वर के दहिने हाथ खड़ा ५७ देखता हूं। तब उन्हों ने बड़े शब्द से चिल्लाके अपने कान मूंद लिये और एक मत होके उस पर लपके।

५८ और उसे नगर से बाहर करके उस पर पथराओ किया; और साक्षियों ने अपने वस्त्र सौलुस नाम एक तरुण के पांवों पास रख दिये। ५९ उन्हों ने स्तिफान पर पथराओ किया; वह प्रार्थना करके बोला हे प्रभु यिसू तू मेरे आत्मा को ग्रहण कर। ६० और वह घुटने टेकके बड़े शब्द से पुकारके बोला हे प्रभु यह पाप उन पर मत धर; और यह कहके वह सो गया॥

८ पर्ब्ब

और सौलुस उस के मर जाने से प्रसन्न हुआ; और उस समय में यरूसलम की कलीसिया पर बड़ा उपद्रव हुआ और प्रेरितों को छोड़ सब के सब यहूदाह और समरून के देश में तित्तर बित्तर हो गये। २ और भक्तों ने स्तिफान को गाड़ा और उस के लिये बड़ा विलाप किया। ३ और सौलुस कलीसिया को सत्यानाश किया करता था और घर घर घुसके पुरुषों और स्त्रियों को घसीटके बन्दीगृह में डालता था। ४ पर जो लोग तित्तर बित्तर हुए थे सो सर्वत्र जाके बचन का मंगल समाचार सुनाते गये।

५ तब फिलिप ने समरून के एक नगर में जाके वहां मसीह का प्रचार किया। ६ और लोगों ने उन आश्चर्य्य कर्म्मों को जो फिलिप करता था सुनकर और देखकर एक मन होके उस की बातों पर चित्त लगाया। ७ क्योंकि अपवित्र आत्मा बहुत लोगों से जिन पर चढ़े थे बड़े शब्द से चिल्लाके उतर गये और बहुतेरे अर्द्धांगी

८ और लंगड़े लोग चंगे ऊए। और उस नगर में बड़ा आनन्द ऊआ।

९ उस के आगे उस नगर में समऊन नाम एक मनुष्य ने टोनाटानी कर के समरून के लोगों को मोह लिया १० और यह कहा था कि मैं बड़ा कोई हूं। और छोटे बड़े सब लोग उस को मानके कहते थे यह परमेश्वर की ११ महाशक्ति है। उस ने बऊत दिनों से टोना करके उन्हें मोह लिया था इस लिये उन्हों ने उसे माना। १२ परन्तु जब उन्हों ने फिलिप के सुनाने पर परमेश्वर के राज्य के और यिसू मसीह के नाम के मंगल समाचार की प्रतीति किई तब क्या पुरुष क्या स्त्री सब बपतिसमा १३ पाने लगे। और समऊन आप भी बिश्वास लाया और बपतिसमा पाके फिलिप के संग रहा किया और आश्चर्य्य कर्म्म और बड़े चिन्ह जो किये गये देखके बिस्मित ऊआ।

१४ फिर यरूसलम में के प्रेरितों ने जब सुना कि समरूनियों ने परमेश्वर का बचन ग्रहण किया तब पथ- १५ रस और यूहन्ना को उन पास भेजा। उन्हों ने वहां जाके उन के लिये प्रार्थना किई कि वे पवित्र आत्मा १६ पावें। क्योंकि तब लों वह उन में से किसी पर न पड़ा था; केवल उन्हों ने प्रभु यिसू के नाम से बपतिसमा १७ पाया था। तब उन्हों ने उन पर हाथ रखे और उन्हों ने पवित्र आत्मा पाया।

१८ जब समऊन ने देखा कि प्रेरितों के हाथ रखने से

पवित्र आत्मा मिलता है तब उन के पास रुपैया लाके कहा। यह शक्ति मुझे भी देओ कि जिस पर मैं हाथ रखूं वही पवित्र आत्मा को पावे। परन्तु पथरस ने उस से कहा तेरा रुपैया तेरे संग नष्ट होय क्योंकि तू ने समझा कि परमेश्वर का दान रुपैयों से प्राप्त होता है। इस पदार्थ में तेरा न भाग न अधिकार है क्योंकि परमेश्वर के आगे तेरा मन सीधा नहीं है। इस लिये अपनी इस दुष्टता से पछता और परमेश्वर से मांग क्या जाने तेरे मन की यह भावना क्षमा किई जाय। क्योंकि मैं देखता हूं कि तू पित्त की कड़वाहट में और अधर्म्म के बन्ध में है। समऊन ने उत्तर देके कहा तुम मेरे लिये प्रभु से प्रार्थना करो कि जो बातें तुम ने कही हैं उन में से कुछ मुझ पर न पड़े। फिर वे साक्षी देके और प्रभु का बचन सुनाके यरूसलम को फिरे और समरूनियों के बज़त गांवों में मंगल समाचार सुनाया। | १९ २० २१ २२ २३ २४ २५

तब प्रभु का दूत फिलिप से यह कहके बोला कि उठ और दक्षिण की ओर उस मार्ग पर जा जो यरूसलम से गाजा को जाता है और बन है। वह उठके चला गया और देखो कि एक हबशी खोजा जो हबश की रानी कन्दाकी का प्रधान और उस के समस्त धन का भण्डारी था और यरूसलम में आराधना के लिये आया था। सो फिरा चला जाता था और अपने रथ पर बैठा ज़आ यसइयाह भविष्यतवक्ता पढ़ रहा था। | २६ २७ २८

२९ आत्मा ने फिलिप से कहा कि पास जा और उस रथ के
३० साथ हो ले। तब फिलिप ने उधर दौड़के उसे यसइ-
याह भविष्यतवक्ता को पढ़ते सुना और कहा जो तू
३१ पढ़ता है क्या उसे समझता है। वह बोला जब लों
कोई मुझे अर्थ न बतावे तब लों मैं क्योंकर समझ
सकूं; और उस ने फिलिप से बिन्ती किई कि चढ़के
३२ उस के साथ बैठे। धर्म्मग्रन्थ का स्थल जो वह पढ़ता था
सो यह था जैसे भेड़ घात करने को ले जाते हैं वैसे
उस को ले गया और जैसे लेला अपने बाल कतरने-
हारे के आगे चुपचाप है वैसे वह अपना मुंह नहीं
३३ खोलता। उस की दीनताई में अनीति से उस का दण्ड
ज़आ और उस के काल का बर्णन कौन करेगा; क्यों-
कि उस का जीवन पृथिवी पर से उठाया जाता है।
३४ खोजे ने फिलिप को उत्तर देके कहा मैं तेरी बिन्ती
करता हूं मुझे बता कि भविष्यतवक्ता किस के विषय
में यह कहता है क्या अपने अथवा किसी दूसरे के वि-
३५ षय में। इस पर फिलिप ने अपना मुंह खोलके उस
बचन से आरंभ करके यिसू का मंगल समाचार उसे
३६ सुनाया। और जाते जाते वे मार्ग में एक पानी पर
पज़ंचे; तब खोजे ने कहा देख पानी है मुझे बप-
३७ तिसमा पाने से अब कौन सी बात रोकती है। फि-
लिप ने कहा यदि तू अपने सारे मन से बिश्वास लाता
है तो पा सकता है; उस ने उत्तर देके कहा मैं
बिश्वास करता हूं कि यिसू मसीह परमेश्वर का पुच

है। तब उस ने रथ खड़ा करने को आज्ञा दिई और फिलिप और खोजा दोनों पानी में उतरे और उस ने उसे बपतिसमा दिया। और जब वे पानी से निकले प्रभु का आत्मा फिलिप को ले गया और खोजे ने उसे फिर न देखा क्योंकि वह आनन्द करता हुआ अपने मार्ग चला गया। फिर फिलिप अश्दोद में मिला और जाते जाते कैसरिया को पहुंचने तक सारे नगरों में मंगल समाचार को सुनाता गया॥
३८
३९
४०

९ पर्ब्ब

और सौलुस अब लों प्रभु के शिष्यों के धमकाने और घात करने पर जी चलाके महायाजक के पास गया। और उस से दमिश्क की मण्डलीघरों के लिये ऐसी पत्री मांगी कि जो मैं किसी को इस पन्थ में पाऊं क्या स्त्री क्या पुरुष तो उन्हें बांधके यरूसलम में लाऊं। और जब वह चला जाता था और दमिश्क के पास आया तब अचानक स्वर्ग से एक ज्योति उस की चारों ओर चमकी। और वह भूमि पर गिर पड़ा और एक वाणी यह कहती सुनी कि हे साऊल हे साऊल तू मुझे क्यों सताता है। उस ने पूछा कि हे प्रभु तू कौन है; प्रभु ने कहा मैं यिसू हूं जिसे तू सताता है; आरों पर लात मारना तेरे लिये कठिन है। वह कांपके और बिस्मित होके बोला हे प्रभु तू क्या चाहता है मैं क्या करूं; प्रभु ने उस से कहा उठ और नगर में जा और जो तुझे करना है सो तुझ से कहा जायगा। और उस के संग के लोग बिस्मित हो खड़े रह गये क्योंकि वा-
२
३
४
५
६
७

णी को वे तो सुनते थे परन्तु किसी को नहीं देखते
८ थे। और सौलुस भूमि पर से उठा और आंखें खोलके
किसी को नहीं देखा ; तब वे उस का हाथ पकड़के
९ उसे दमिश्क में लाये। और वह तीन दिन लों अन्धा
रहा और न खाता न पीता था।

१० और दमिश्क में हननियाह नाम एक शिष्य था ;
उसे प्रभु ने दर्शन में कहा कि हे हननियाह ; वह बो-
११ ला हे प्रभु देख मैं हूं। प्रभु ने उस से कहा तू उठकर
उस सड़क पर जो सीधी कहाती है जा और यहूदाह
के घर में सौलुस नाम तर्सस के एक मनुष्य को ढूंढ कि
१२ देख वह प्रार्थना करता है। और उस ने दर्शन में दे-
खा है कि हननियाह नाम एक जन ने भीतर आके
उस पर हाथ रखा कि वह अपनी आंखें फिर पावे।
१३ हननियाह ने उत्तर दिया कि हे प्रभु मैं ने बक्कत लो-
गों से उस जन के विषय में सुना है कि यरूसलम में
१४ उस ने तेरे सन्तों से कैसी बुराई किई है। और यहां
भी उस ने प्रधान याजकों की ओर से सब तेरे नाम ले-
१५ नेहारों को बांधने का अधिकार पाया है। परन्तु प्रभु
ने उस से कहा तू जा क्योंकि अन्यदेशियों और राजा-
ओं और इसराएल के सन्तान के आगे मेरा नाम पक्कं-
चाने को वह मेरे लिये चुना क्कआ हथियार है।
१६ क्योंकि मैं उसे दिखाऊंगा कि मेरे नाम के लिये उसे
१७ कैसा दुःख उठाना है। तब हननियाह ने जाके उस
घर में प्रवेश किया और अपने हाथ उस पर रखके

कहा हे भाई साऊल प्रभु अर्थात् यिसू जो तुझे उस मार्ग में कि जिस से तू आया है दर्शन दिया उस ने मुझ को भेजा है जिसतें तू अपनी आंखें पावे और पवित्र आत्मा से भर जाये। १८ और तुरन्त उस की आंखों से कुछ छिलके से गिरे और तत्काल उस की आंखें खुलीं और उस ने उठके बपतिसमा पाया। १९ फिर कुछ खाके बल पाया; और सौलुस कई दिन दमिश्क में शिष्यों के संग रहा।

२० और तुरन्त उस ने मण्डलीघरों में मसीह को प्रचारा कि वह परमेश्वर का पुत्र है। २१ और सब सुननेहारे बिस्मित होके बोले जो यरूसलम में इस नाम के लेनेहारों को सत्यानाश करता था और यहां इस मनसा से आया था कि उन्हें बांधके प्रधान याजकों के पास ले जाय सो यह मनुष्य है कि नहीं। २२ परन्तु सौलुस और भी दृढ़ हो गया और प्रमाण ला लाके कि मसीह वही है दमिश्कबासी यहूदियों को घबराया। २३ और जब बहुत दिन बीत गये तब यहूदियों ने उसे बध करने को परामर्श किया। २४ परन्तु उन की घात सौलुस को जान पड़ी; और वे उसे बध करने को रात दिन फाटकों पर लगे रहे। २५ तब शिष्यों ने रात को उसे लेके भीत पर से टोकरे में उतार दिया।

२६ और सौलुस ने यरूसलम में पहुंचके शिष्यों में मिल जाने चाहा परन्तु सब उस से डरे क्योंकि वे प्रतीति न करते थे कि वह शिष्य है। २७ तब बरनबा उसे अपने

संग प्रेरितों के पास ले गया और कि उस ने प्रभु को मार्ग में यों देखा था और कि वह उस से बोला था और कि उस ने यों दमिश्क में निधड़क यिसू के नाम को प्रचार किया था यह सब उस ने उन्हें बता दिया। २८ सो वह यरूसलम में उन के संग आया जाया करता था। २९ और वह प्रभु यिसू का नाम निधड़क प्रचारता था और यूनानियों के संग विवाद करता था और वे उसे ३० वध करने की घात में लगे। यह जानकर भाई लोग उस को कैसरिया में ले गये और तर्सस को विदा करके भेजा। ३१ तब सारे यहूदाह और गलील और समरून की कलीसियाओं ने शान्ति पाई और बढ़ते गये और प्रभु के भय में चलते थे और पवित्र आत्मा की ढाड़स से भर गये।

३२ और ऐसा हुआ कि पथरस सर्वत्र फिरते उन सन्तों ३३ के पास भी जो लिद्दा में रहते थे पहुंचा। और वहां उस ने अनियास नाम एक मनुष्य झोले का मारा पाया ३४ वह आठ बरस से खाट पर पड़ा हुआ था। पथरस ने उस से कहा हे अनियास यिसू मसीह तुझे चंगा करता है उठ अपना बिछौना सजा; और वह तुरन्त ३५ उठा। तब लिद्दा और सरून के सब रहनेहारे उसे देखकर प्रभु की ओर फिरे।

३६ फिर याफा में ताबीता नाम एक स्त्री शिष्य थी; उस नाम का अर्थ हरिणी है; वह शुभ कर्म्मों से भरी और ३७ बहुत दान करती थी। ऐसा हुआ उन दिनों में कि

वह रोगी ऊई और मर गई; उन्हों ने उसे नहलाके कोठे पर रखा। और याफा से लिद्दा निकट होने ३८ से जब शिष्यों ने सुना कि पथरस वहीं है तब दो जन उस पास भेजके उस से बिन्ती किई कि बिन विलम्ब किये हमारे पास आ। पथरस उठके उन के संग ३९ चला; जब पहुंचा तब वे उसे कोठे पर ले गये; सब विधवाएं उस पास खड़ी होके रोती थीं और जो कुरते और कपड़े ताबीता ने जीतेजी बनाये थे सो उसे दिखा-ती थीं। तब पथरस ने सभों को बाहर करके घुटने ४० टेकके प्रार्थना किई; फिर लोथ की ओर मुंह फेरके उस ने कहा हे ताबीता उठ; तब उस ने अपनी आंखें खोलीं और पथरस को देखके उठ बैठी। उस ने हाथ ४१ देके उसे उठाया और सन्तों को और विधवाओं को बुलाके उसे जीवती उन्हें सौंप दिया। यह बात सारे ४२ याफा में फैल गई और बऊत से लोग प्रभु पर विश्वास लाये। और ऐसा ऊआ कि वह बऊत दिन लों समऊन ४३ नाम एक चर्मकार के यहां रहा॥

१० पर्ब्ब

कैसरिया में कुरनेलियुस नाम एक मनुष्य इतालीकी नाम के जथा का शतपति था। वह भक्त जन था और २ अपने सारे घराने समेत परमेश्वर से डरता था और लोगों को बऊत दान देता था और नित्य परमेश्वर की प्रार्थना करता था। उस ने दिन के तीसरे पहर ३ के अटकल में साक्षात यह दर्शन देखा कि परमेश्वर के दूत ने उस के पास आके उस से कहा कि हे कुरने-

४ लियुस। वह उसे देख भालके डर गया और कहा हे प्रभु क्या है; उस ने उसे कहा तेरी प्रार्थना और तेरे दान स्मरण के लिये परमेश्वर के आगे पड़ंचे।
५ सो याफा में लोगों को भेज और समऊन को जिस
६ की पदवी पथरस है बुलवा। समऊन नाम एक चर्मकार के यहां जिस का घर सागर तीर है वह उतरा है; जो कुछ तुझे करना है सो वह तुझ को बतावेगा।
७ और जब वह दूत कुरनेलियुस से बातें करके चला गया तब उस ने अपने टहलुओं में से दो और जो नित्य उस के पास रहते थे उन में से एक भक्त सिपाही
८ को बुलाया। और सब बातें उन्हें बताके उन को याफा को भेजा।

९ दूसरे दिन जब वे मार्ग में चले जाते थे और नगर के पास पड़ंचे तब पथरस दो पहर के अटकल में
१० कोठे पर प्रार्थना करने को चढ़ा। उसे बड़ी भूख लगी और उस ने कुछ खाने चाहा परन्तु जब वे बना
११ रहे थे तब वह बेसुध ड़आ। और क्या देखा कि स्वर्ग खुल गया और बड़ी चद्दर की सी बस्तु चारों खूंट बन्धी
१२ ड़ई उस के पास उतरती भूमि लों लटक आई। उस में पृथिवी के सब प्रकार के चौपाये और बन पशु और
१३ रेंगनेवाले जन्तु और आकाश के पंछी थे। और एक बाणी उस पास आई कि हे पथरस उठके मार और
१४ खा जा। पथरस बोला हे प्रभु ऐसा नहीं क्योंकि मैं ने
१५ कधी कोई अपवित्र अथवा अशुद्ध बस्तु नहीं खाई। दूस-

री बेर उसे फिर यह वाणी ऊई कि जिस को परमे- श्वर ने शुद्ध किया है उसे तू अपविच मत कह। यह तीन बार ऊआ फिर वह वस्तु स्वर्ग को उठाई गई। १६

जब पथरस मन में खटका कर रहा था कि जो दर्शन मैं ने देखा है सो क्या है तो देखो कुरनेलियुस के भेजे ऊए मनुष्य समऊन का घर पूछते द्वार पर खड़े ऊए। उन्हों ने पुकारके पूछा कि समऊन जिस की पदवी पथरस है सो यहां उतरा है कि नहीं। जब पथरस उस दर्शन को सोच रहा था तब आत्मा ने उसे कहा देख तीन मनुष्य तुझे ढूंढते हैं। सो उठके नीचे जा और बिना खटका उन के संग चला जा क्योंकि मैं ने उन्हें भेजा है। तब पथरस ने उतरके उन मनुष्यों से जो कुरनेलियुस के भेजे ऊए थे कहा देखो जिसे तुम लोग ढूंढते हो सो मैं हूं; तुम किस लिये आये हो। वे बोले कुरनेलियुस शतपति जो धर्म्मी और परमे- श्वर से डरनेवाला है और यहूदियों के सारे लोगों में शुभनाम है उसे परमेश्वर की ओर से एक पविच दूत ने आज्ञा दिई कि तुझे अपने घर बुलावे और तुझ से बातें सुने। तब उस ने उन्हें भीतर बुलाके टिका दिया; और दूसरे दिन पथरस उन के संग गया और याफा में के कई भाई उस के संग हो लिये। १७ १८ १९ २० २१ २२ २३

फिर दूसरे दिन वे कैसरिया में पऊंचे और कुरने- लियुस अपने कुटुम्ब और मन मिचों को एकट्ठे करके उन की बाट जोहता था। और ऐसा ऊआ कि पथरस २४ २५

के प्रवेश करते ही कुरनेलियुस उस से जा मिला और
२६ उस के पांवों पर गिरके उसे दण्डवत किई। परन्तु
पथरस ने उसे उठाके कहा खड़ा हो मैं भी तो मनुष्य
२७ हूं। और वह उस से बातें करता हुआ भीतर गया
२८ और बहुत लोग एकट्ठे पाये। और उन से कहने लगा
तुम जानते हो कि यहूदी को अन्यदेशी से संगति
करना अथवा उस के यहां जाना उचित नहीं है परन्तु
परमेश्वर ने मुझे बता दिया कि मैं किसी को अपवित्र
२९ अथवा अशुद्ध न कहूं। इस लिये मैं जब ही बुलाया गया
तब बिन नकारके तुम्हारे पास चला आया ; सो मैं
पूछता हूं कि तुम ने मुझे किस बात के लिये बुलाया
३० है। कुरनेलियुस ने कहा चार दिन हुए मैं इस घड़ी
लों उपवास कर रहा था और तीसरे पहर को अपने
घर में प्रार्थना करता था और क्या देखा कि एक मनुष्य
३१ उजले बस्त्र में मेरे साम्हने खड़ा था। और बोला हे
कुरनेलियुस तेरी प्रार्थना सुनी गई और तेरे दान पर-
३२ मेश्वर के आगे स्मरण किये गये। सो किसी को याफा
में भेज और समऊन को जिस की पदवी पथरस है
यहां बुलवा ; वह सागर तीर समऊन चर्मकार के
३३ यहां उतरा है ; वह आके तुझे कहेगा। इस लिये मैं
ने तुरन्त तेरे पास लोग भेजे और तू ने अच्छा किया
जो आया ; अब हम सब यहां परमेश्वर के आगे एकट्ठे
हुए जिसतें जो कुछ परमेश्वर ने तुझे आज्ञा किई है
सो सुनें।

तब पथरस ने मुंह खोलके कहा मुझे निश्चय समझ पड़ता है कि परमेश्वर किसी की बाहरी दशा पर दृष्टि नहीं करता है। परन्तु हर एक जाति में जो उस से डरता है और धर्म्म कार्य्य करता है उस को वह ग्रहण करता है। वह बचन जिसे उस ने यिसू मसीह के द्वारा जो सब का प्रभु है कुशल का मंगल समाचार प्रचारते हुए इसराएल के संन्तानों के पास भेजा। तुम वह बचन जानते हो जो यूहन्ना के बपतिसमा को प्रचारने के पीछे गलील से आरंभ होके सारे यहूदाह में फैल गया। अर्थात यिसू नासिरी का बचन कि परमेश्वर ने उसे पवित्र आत्मा से और पराक्रम से मसीह किया और वह भलाई करता और जितने शैतान से सताये गये थे उन सभों को चंगा करता फिरा क्योंकि परमेश्वर उस के संग था। और उन सब कार्य्यों के जो उस ने यहूदियों के देश और यरूसलम में किये हम लोग साक्षी हैं; उस को उन्हों ने लकड़े पर लटकाके घात किया। उस को परमेश्वर ने तीसरे दिन उठाया और साक्षात दिखाया। सब लोगों को तो नहीं परन्तु उन साक्षियों को जो आगे से परमेश्वर के चुने हुए थे अर्थात हम को जो उस के मृतकों में से जी उठने के पीछे उस के संग खाया और पीया उन्हें उस ने आप को दिखाया। और उस ने हमें आज्ञा दिई कि लोगों में तुम इस बात को प्रचारो और साक्षी दिओ कि जीवतों और मृतकों का न्यायी होने को परमेश्वर

३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२

४३ ने इसी को ठहराया है। सारे भविष्यतवक्ता उस पर साची देते हैं कि जो कोई उस पर बिश्वास लावेगा सो उस के नाम से पाप का मोचन पावेगा।

४४ जब पथरस ये बातें कह रहा था तब बचन के सब ४५ सुननेवालों पर पवित्र आत्मा पड़ा। और खतनावाले बिश्वासी जो पथरस के संग आये थे सो विस्मित ऊए क्योंकि अन्यदेशियों पर भी पवित्र आत्मा का दान ४६ उण्डेला गया। क्योंकि उन्हों ने उन्हें भांति भांति की बोलियां बोलते और परमेश्वर की बड़ाई करते सुना; ४७ तब पथरस ने कहा। इन्हों ने हमारे समान पवित्र आत्मा जो पाया तो कौन जन पानी रोक सकता है कि ४८ वे लोग बपतिसमा न पावें। तब उस ने उन्हें प्रभु के नाम से बपतिसमा देने की आज्ञा किई; फिर उन्हों ने उस से बिन्ती किई कि कुछ दिन उन के यहां रहे॥

११ पर्व्व

प्रेरितों और भाइयों ने जो यहूदाह में थे सुना कि अन्यदेशियों ने भी परमेश्वर का बचन ग्रहण किया। २ और जब पथरस यरूसलम में आया खतनावाले लो-३ गों ने विवाद कर के कहा। तू खतनाहीन लोगों के ४ पास गया और उन के संग खाना खाया है। तब पथरस आरंभ से बात पर बात उन के आगे बर्णन करने लगा। ५ कि मैं याफा के नगर में प्रार्थना करता था और बेसुध होके मैं ने एक दर्शन देखा कि बड़ी चद्दर की सी एक बस्तु चारों खूंट से स्वर्ग से लटकती ऊई मेरे पास ६ उतर आई। जब मैं ने उस पर ध्यान से दृष्टि करके

सोचा तो पृथिवी के चैापाये और बन पशु और रेंग-
नेवाले जन्तु और आकाश के पंछी उस में देखे। और ७
मुझ से बोलती ज़ई मैं ने एक बाणी सुनी कि हे पथ-
रस उठके मार और खा जा। तब मैं बोला हे प्रभु ऐसा ८
नहीं क्योंकि कोई अपवित्र अथवा अशुद्ध वस्तु कभी
मेरे मुंह में नहीं पड़ी। तब उत्तर देके दूसरी बेर ९
स्वर्ग से बाणी आई कि जिस को परमेश्वर ने शुद्ध
किया है उसे तू अपवित्र मत कह। यह तीन बार १०
ज़आ फिर सबकुछ स्वर्ग में खींचा गया। और देखो ११
तत्काल कैसरिया से मेरे पास भेजे ज़ए तीन जन जिस
घर में मैं था उस के द्वार पर खड़े थे। और आत्मा ने १२
मुझ से कहा तू बिना खटका उन के संग चला जा;
फिर ये छः भाई मेरे संग हो लिये और हम ने उस
मनुष्य के घर में प्रवेश किया। तब उस ने हमें समा- १३
चार कहा कि मैं ने यों स्वर्गदूत अपने घर में खड़ा
देखा उस ने मुझे कहा कि याफा में लोगों को भेज
और समऊन को जिस की पदबी पथरस है बुलवा।
वह ऐसी बातें कि जिन से तू अपने सारे घराने समेत १४
मुक्ति पावेगा तुझे बता देगा। जब मैं बोलने लगा १५
था तब जैसे आरंभ में पवित्र आत्मा हम पर पड़ा था
वैसे उन पर पड़ा। तब मैं ने प्रभु का बचन चेत किया १६
अर्थात यूहन्ना ने तो पानी का बपतिसमा दिया परन्तु
तुम लोग पवित्र आत्मा से बपतिसमा पाओगे। सो १७
परमेश्वर ने जो दान हम को दिया जब हम प्रभु यिसू

मसीह पर बिश्वास लाये जब कि उन्हों को वही दान
१८ दिया तो मैं कौन था जो परमेश्वर को रोक सके। वे
ये बातें सुनके चुप रहे और परमेश्वर की स्तुति करके
बोले सो परमेश्वर ने अन्यदेशियों को भी जीवन के
लिये मनफिरावे का दान दिया।

१९ जो लोग स्तिफान पर बिपत्ति पड़ने के समय तित्तर
बित्तर हो गये थे सो फिरते फिरते फुनीकी और
कप्रस और अन्ताकिया में पहुंचे परन्तु वे यहूदियों
२० को छोड़ किसी को बचन न सुनाते थे। और उन में
से कई एक कप्रसी और कुरेनी थे वे अन्ताकिया में
आके यूनानियों से बातें करके प्रभु यिसू का मंगल समा-
२१ चार प्रचारा। और प्रभु का हाथ उन पर था और
बहुत से लोग बिश्वास लाके प्रभु की ओर फिरे।

२२ तब उन बातों का चर्चा यरूसलम की कलीसिया के
कान लों पहुंचा और उन्हों ने बरनबा को भेजा कि
२३ अन्ताकिया तक जाय। वह आके परमेश्वर का अनुग्रह
देखके आनन्दित हुआ और उन सभों को उपदेश
२४ दिया कि मन की दृढ़ता से प्रभु से लगे रहो। क्यों-
कि वह उत्तम मनुष्य था और पवित्र आत्मा से और
बिश्वास से भरा हुआ था और बहुत लोग प्रभु की
२५ ओर फिरे। तब बरनबा सौलुस के खोज में तरसुस
को चला गया और उस को पाके अन्ताकिया में लाया।
२६ और ऐसा हुआ कि वे बरस भर कलीसिया के संग
एकट्ठा हुआ करते और बहुत लोगों को सिखाया

करते थे और शिष्य लोग पहिले अन्ताकिया में क्रि- स्तियान कहलाये।

उन्हीं दिनों में कई एक भविष्यतवक्ता यरूसलम से अन्ताकिया में आये। और उन में से अगबुस नाम एक ने उठके आत्मा की ओर से बतलाया कि सारे जगत में बड़ा काल पड़ेगा; सो ही कैसर क्लौदियस के समय में हुआ। तब शिष्यों में से हर एक ने अपनी बिसात के समान ठाना कि उन भाइयों के लिये जो यहूदाह में रहते हैं कुछ भेजें। सो उन्हों ने किया और बरनबा और सौलस के हाथ प्राचीनों के पास भेजा॥ २७ २८ २९ ३०

१२ पर्ब्ब

उस समय हेरोदेस राजा ने कलीसिया में के कितनों पर हाथ डाला कि उन्हें सतावे। और यूहन्ना के भाई याकूब को उस ने तलवार से मार डाला। और जब उस ने देखा कि यह यहूदियों को अच्छा लगा तो उस से अधिक करके उस ने पथरस को भी पकड़ लिया (यह अखमीरी रोटी के दिनों में हुआ)। और उस ने उसे पकड़के बन्दीगृह में डाला और उस की रखवाली करने के लिये उसे चार चार सिपाहियों के चार पहरों के हाथ सोंपा कि फसह पर्ब्ब के पीछे उस ने उस को लोगों के आगे ले जाने चाहा। सो पथरस बन्दीगृह में तो पड़ा था परन्तु कलीसिया उस के लिये परमेश्वर से लौ लगाके प्रार्थना कर रही थी। और जब हेरोदेस ने उसे बाहर लाने चाहा उसी रात पथरस दो सिपाहियों के बीच में दो जनजीरों २ ३ ४ ५ ६

से जकड़ा ज़ुआ सोता था और पहरेवाले बन्दीगृह
७ के द्वार के साम्हने पहरा देते थे। और देखो कि प्रभु
का दूत आया और उस घर में एक उजाला चमका
और उस ने पथरस की पसली पर मारके उसे जगाके
कहा जल्द उठ; तब जनजीरें उस के हाथों से गिर
८ पड़ीं। और दूत ने उस से कहा कमर बांध और खरपा
पहिन ले; उस ने वैसा किया; फिर उस ने उस से
९ कहा अपना ओढ़ना ओढ़के मेरे पीछे हो ले। वह
निकलके उस के पीछे हो लिया और न जाना कि यह
जो दूत ने किया सत्य है परन्तु वह समझा कि दर्शन
१० देखता हूं। सो वे पहिले और दूसरे पहरे में से नि-
कलके लोहे के फाटक पर जो नगर की ओर है पज़ं-
चे; वह आप से आप उन के लिये खुल गया और वे
निकलके एक गली से होके चले गये और वोंहीं
११ स्वर्गदूत उस पास से जाता रहा। तब पथरस ने अप-
नी सुध में आके कहा अब मैं ने ठीक जाना कि प्रभु ने
अपने दूत को भेजा और हेरोदेस के हाथ से और
१२ यहूदियों की सारी घात से मुझे बचाया। फिर वह
सोचके मरियम के घर आया; वह यूहन्ना की जो मर-
कुस कहावता है माता थी; वहां बज़ंत लोग एकट्ठे
१३ होके प्रार्थना कर रहे थे। और जब पथरस फाटक की
खिड़की खटखटाता था तब रोदा नाम एक छोकरी
१४ आई कि चुपके सुने। और पथरस का शब्द पहचान-
के उस ने आनन्द के मारे फाटक न खोला परन्तु भी-

तर दौड़के कहा कि पथरस फाटक पर खड़ा है। उन्हों ने उस से कहा तू बौरही है; वह अपनी बात पर रही कि यों ही है; तब वे बोले उस का स्वर्गदूत होगा। परन्तु पथरस खटखटाता रहा और जब उन्हों ने खोलके उस को देखा तब बिस्मित हुए। और उस ने उन्हें हाथ से सैन दिई कि चुप रहो फिर वर्णन किया कि प्रभु ने किस रीति से उसे बन्दीगृह से निकाल लाया और कहा यह समाचार तुम याकूब को और भाइयों को पहुंचाओ; फिर वह निकलके दूसरी जगह चला गया। | १५ १६ १७

जब दिन हुआ तब सिपाही बहुत घबरा गये कि पथरस क्या हुआ। और जब हेरोदेस ने उस का खोज करके उसे न पाया तब पहरूओं को जांचके आज्ञा दिई कि उन्हें ठिकाने लगाओ; और आप यहूदाह से कैसरिया में जा रहा। | १८ १९

और हेरोदेस सूर और सैदा के लोगों से क्रोधी था; तब वे एकमत होके उस के पास आये; और उन्हों ने राजा के शयन स्थान के प्रधान अर्थात ब्लास्तुस को अपनी ओर करके मिलाप चाही क्योंकि उन के देश का प्रतिपाल राजा के देश से होता था। तब हेरोदेस एक दिन ठहराके राजवस्त्र पहिनके सिंहासन पर बैठा और उन्हें वचन सुनाया। और लोग पुकार उठे कि यह तो परमेश्वर की वाणी है मनुष्य की नहीं है। तत्क्षण प्रभु के दूत ने उसे मारा क्योंकि उस ने परमे- | २० २१ २२ २३

श्वर की महिमा न किई; और उस में कीड़े पड़ गये
२४ और उस का प्राण निकल गया। परन्तु परमेश्वर का
२५ वचन बढ़ा और फैला। और बरनबा और सौलुस
अपनी सेवकाई पूरी करके और यूहन्ना को जो मर-
कुस कहाता है साथ लेके यरूसलम से फिर आये॥

१३ पर्ब्ब

और अन्ताकिया की कलीसिया में कई भविष्यत-
वक्ता और उपदेशक थे अर्थात बरनबा और समऊन
जो नीगर कहावता था और लूकियुस कुरेनी और मा-
नायन जो चौथाध्यक्ष हेरोदेस का दूधभाई था और
२ सौलुस। जब वे प्रभु की आराधना करते थे और उप-
वास करते थे तब पवित्र आत्मा ने कहा बरनबा और
सौलुस को तुम उस कार्य्य के लिये जिसे करने को मैं
३ ने उन्हें बुलाया मेरे लिये अलग करो। तब उन्हों ने
उपवास और प्रार्थना करके और उन पर हाथ रखके
उन्हें बिदा किया।

४ सो वे पवित्र आत्मा के भेजे हुए सलूकिया को गये
५ और वहां से जहाज पर कप्रस को चले। और सला-
मीस में पहुंचके उन्हों ने यहूदियों के मण्डलीघरों में
परमेश्वर का वचन सुनाया और यूहन्ना उन की सेव-
६ काई करता था। और उस टापू में सर्वत्र फिरके पा-
फस लों पहुंचके उन्हों ने बरयसू नाम एक यहूदी पा-
या वह टोना करनेहार और झूठा भविष्यतवक्ता था।
७ वह वहां के अध्यक्ष सरगियुस पौलुस एक बुद्धिमान
मनुष्य के संग था; उस ने बरनबा और सौलुस को बु-

जाके परमेश्वर का बचन सुनने चाहा। परन्तु एली- ८
मस टोन्हा ने (कि यही उस के नाम का अर्थ है) अध्यक्ष
को बिश्वास से फेरने की इच्छा से उन का सामना
किया। तब सौलुस अर्थात पौलुस ने पवित्र आत्मा से ९
भर जाके उसे घूरके कहा। अरे तू जो निरी कपट १०
और सारी दुष्टता से भरा हुआ है शैतान के बच्चे और
सारे धर्म्म के बैरी क्या तू प्रभु के सीधे मार्गों को टेढ़ा
करना न छोड़ेगा। अब देख प्रभु का हाथ तुझ पर ११
उठा और तू अन्धा होा जायगा और कुछ दिन लों
सूर्य्य को न देखेगा; और तुरन्त उस पर धुंधलाई और
अंधकार छा गया और वह ढूंढता फिरा कि कोई
उस का हाथ पकड़के उसे ले चले। जब अध्यक्ष ने जो १२
कुछ हुआ था देखा तब प्रभु के उपदेश से अचंभा कर-
के बिश्वास लाया। फिर पौलुस और उस के संगी पा- १३
फस से जहाज खोलके पंफीलिया के पर्गा में आये और
यूहन्ना उन से अलग होके यरूसलम को फिर गया।

और वे पर्गा से होके पिसीदिया के अन्ताकिया १४
में आये और बिश्राम के दिन मण्डलीघर में जा बैठे।
और व्यवस्था और भविष्यतवक्ता के पढ़ने के पीछे १५
मण्डलीघर के प्रधानों ने उन्हें कहला भेजा कि हे
भाइयो जो लोगों के लिये कुछ उपदेश की बात तुम्हा-
रे पास होय तो सुनाओ। तब पौलुस खड़ा हुआ और १६
हाथ से सैन करके बोला हे इसराएली लोगो और
परमेश्वर से डरनेवालो सुनो। इसराएली लोगों के १७

परमेश्वर ने हमारे पितरों को चुन लिया और इस कौम के लोग जब कि वे मिसर देश में परदेशी थे बढ़ाया और बलवन्त हाथ से उन को वहां से निकाल
१८ लाया। और बरस चालीस एक उस ने बन में उन को
१९ सह लिया। और जब उस ने कनआन देश में सात कौमें नाश किईं तब उन के देश को चिट्ठी डलवाके
२० उन्हें बांट दिया। उस के पीछे उस ने साढ़े चार सौ बरस के लगभग समुएल भविष्यतवक्ता लों उन में
२१ न्याई ठहराये। उस समय से उन्हों ने एक राजा चाहा; तब परमेश्वर ने बिन्यामीन के बंश में से कीस के पुत्र साऊल को चालीस बरस लों उन पर ठहरा दिया।
२२ फिर उस को दूर करके दाऊद को उन का राजा होने को ठहराया और उस के लिये यह साक्षी दिई मैं ने अपना मनोनीत अर्थात यस्सी के पुत्र दाऊद को
२३ पाया वही मेरी सारी इच्छा पूरी करेगा। उसी के बंश से परमेश्वर ने अपनी बाचा के समान इसराएल
२४ के लिये एक मुक्तिदाता यिसू को प्रगट किया। उस के आने से आगे यूहन्ना ने इसराएल के सारे लोगों को
२५ मन फिराने के बपतिसमा का प्रचार किया। और जब यूहन्ना अपना काम समाप्त करने पर था तब वह बोला तुम मुझे कौन समझते हो; मैं वह नहीं हूं परन्तु देखो वह मेरे पीछे आता है कि जिस की जूती का
२६ बन्द मैं खोलने के योग्य नहीं हूं। हे भाइयो अबिरहाम के सन्तानो और तुम में से जो परमेश्वर से डर-

ते हो तुम्हारे लिये इस निस्तार का सन्देश भेजा गया है। क्योंकि यरूसलम के रहनेवालों ने और उन के २७ प्रधानों ने उस को और भविष्यतवक्ताओं की बातों को जो हर बिश्राम के दिन में पढ़ी जाती हैं न जानके उस पर दण्ड की आज्ञा देने से उन्हें पूरा किया। और २८ यद्यपि उन्हों ने उसे घात करने का कोई कारण न पाया तथापि उन्हों ने पिलातूस से चाहा कि वह घात किया जाय। और जब वे सब कुछ जो उस के विषय २९ में लिखा था पूरा कर चुके तब उस को खकड़े पर से उतारके कबर में रखा। परन्तु परमेश्वर ने उस ३० को मृतकों में से जिलाया। और जो उस के संग गलील ३१ से यरूसलम को आये थे उन्हें वह बक़त दिन लों दिखाई दिया; वे लोगों के आगे उस के साची हैं। और ३२ हम तुम्हें मंगल समाचार सुनाते हैं कि जो बाचा पितरों से किई गई थी। उस को परमेश्वर ने हमारे लिये ३३ जो उन के सन्तान हैं पूरा किया है कि उस ने यिसू को फिर जिलाया जैसा कि दूसरे गीत में लिखा है अर्थात तू मेरा पुत्र है आज तू मुझ से उत्पन्न ज़आ। और ३४ वह बात कि उस ने उस को मृतकों में से फिर उठाया कि उस के पीछे सड़ न जाय सो उस ने यों कही मैं तुम्हें दाऊद के सत्य पदार्थ देऊंगा। इस लिये उस ने ३५ दूसरे स्थल में भी यों कहा तू अपने पवित्र जन को सड़ने न देगा। दाऊद तो अपने समय में परमेश्वर ३६ की इच्छा पर चलके सो गया और अपने पितरों से

३७ जा मिला और सड़ गया। परन्तु जिस को परमेश्वर
३८ ने फिर उठाया सो सड़ न गया। सो हे भाइयो तुम
जानो कि उसी के द्वारा से तुम को पाप मोचन की
३९ वार्त्ता दिई जाती है। और उन सब बातों से कि जिन
से तुम मूसा की व्यवस्था के द्वारा निर्दोष नहीं ठहर
सकते थे हर एक जो बिश्वास लाता है सो उस के द्वारा
४० निर्दोष ठहरता है। इस लिये चौकस रहो न होवे
कि जो भविष्यतवक्ताओं की पुस्तक में कहा गया है सो
४१ तुम पर आ पड़े। अर्थात हे तुच्छ करनेहारो देखो
और अचंभा करो और नष्ट हो जाओ कि मैं तुम्हारे
दिनों में एक ऐसा काम करता हूं कि कोई तुम से
कैसा ही बर्णन करे तुम कभी उस की प्रतीति न
करोगे।

४२ और जब यहूदी लोग मण्डलीघर से निकल गये
थे तब अन्यदेशियों ने बिन्ती किई कि दूसरे बिश्राम
४३ दिन में ये बातें हम से कहो। और जब मण्डली उठ
गई तब बहुत से यहूदी और भक्त नवयहूदी लोग
पौलुस और बरनबा के पीछे हो लिये और उन्हों ने
उन से बातचीत करके उन्हें उपदेश दिया कि तुम
४४ परमेश्वर के अनुग्रह में बने रहो। और दूसरे बिश्राम
के दिन में सारे नगर के लगभग परमेश्वर का बचन
४५ सुनने को लोग एकट्ठे आये। परन्तु इतनी भीड़ देखके
यहूदी लोग डाह से भर गये और बिरोध और पर-
मेश्वर की निन्दा की बातें बकते हुए पौलुस की बातों

के विरुद्ध बोले। तब पौलुस और बरनबा निधड़क बोले परमेश्वर का बचन पहिले तुम्हें सुनाना अवश्य था परन्तु जब कि तुम लोग उसे टाल देते हो और आप को अनन्त जीवन के अयोग्य ठहराते हो सो देखो हम अन्यदेशियों की ओर जाते हैं। क्योंकि प्रभु ने हम को ऐसी आज्ञा दिई कि मैं ने तुझ को अन्य-देशियों की ज्योति कर रखी है जिसतें तू पृथिवी के अन्त लों निस्तार का कारण होवे। ४६ ४७

अन्यदेशी लोग यह सुनते ही आनन्दित हुए और प्रभु के बचन की बड़ाई किई और जितने कि अनन्त जीवन के लिये ठहराये गये थे सो बिश्वास लाये। और प्रभु का बचन उस सारे देश में फैल गया। परन्तु यहूदियों ने भक्तिन और आदरवन्त स्त्रियों को और नगर के प्रधानों को उस्काया और पौलुस और बरनबा पर उपद्रव किया और अपने सिवानों से उन्हें निकाल दिया। सो वे अपने पांवों की धूल उन पर झाड़के इकोनियुम में आये। परन्तु शिष्य लोग आनन्द से और पवित्र आत्मा से भर गये॥ ४८ ४९ ५० ५१ ५२

१४ पर्ब्ब

और इकोनियुम में ऐसा हुआ कि वे यहूदियों की मण्डलीघर में एक संग गये और कथा ऐसी सुनाई कि यहूदियों और यूनानियों की भी बड़ी मण्डली बिश्वास लाई। परन्तु अबिश्वासी यहूदियों ने अन्यदेशियों को उभारा और उन के मन भाइयों की ओर बुरे कर दिये। इस लिये वे बहुत दिन लों वहां रहके २ ३

प्रभु के विषय में निधड़क बोलते रहे; वह अपनी कृपा की बात पर साक्षी देता और चिन्ह और अचंभे
४ उन के हाथों से दिखाता रहा। और नगर के लोगों में फूट पड़ी; कोई कोई तो यहूदियों की ओर और
५ कोई कोई प्रेरितों की ओर हो गये। और जब अन्यदेशियों और यहूदियों ने प्रधानों समेत हल्ला किया कि उन का अपमान करें और उन पर पत्थरवाओ करें।
६ तब वे यह जानके लिकाओनिया के नगर लिस्तरा और दर्बी और उन के आस पास के देश में भागे।
७ और वहां मंगल समाचार सुनाते रहे।

८ और लिस्तरा का एक मनुष्य पांवों का दुर्बल बैठा था; वह जन्म का लुंजा था और कभी न चला था।
९ उस ने पौलुस को बातें करते सुना; इस ने उस पर ध्यान से देखके जान लिया कि उसे चंगा होने का
१० विश्वास है। इस लिये बड़े शब्द से कहा अपने पांवों
११ से सीधा खड़ा हो; वह उछलके चलने लगा। लोगों ने जो पौलुस ने किया था उसे देखके बड़े शब्द से लिकाओनिया की बोली में कहा देवते नररूप धारण
१२ करके हमारे पास अवतरे हैं। और उन्हों ने बरनबा को बृहस्पति कहा और पौलुस को बुध कहा क्योंकि
१३ बोलने में वह अगवा था। और बृहस्पति जो उन के नगर के साम्हने था उस के पुरोहित ने बैल और फूलों के हार द्वारों पर लाके लोगों के संग बलिदान
१४ चढ़ाने चाहा। जब बरनबा और पौलुस दोनों प्रेरितों

ने यह सुना तब अपने कपड़े फाड़े और लोगों में दौड़ गये और पुकारके कहा। हे मनुष्यों तुम यह क्यों १५ करते हो; हम भी तुम्हारे समभाव के मनुष्य ही हैं और तुम्हें मंगल समाचार सुनाते हैं कि तुम इन झूठों को छोड़के जीवते परमेश्वर की ओर फिरो कि उस ने आकाश और पृथिवी और समुद्र और सब कुछ जो उन में है बनाया। उस ने अगले दिनों में सब देशों १६ के लोगों को अपने अपने मार्गों पर चलने दिया। तथापि उस ने भलाई करके और आकाश से पानी १७ बरसाके और फलवन्त रितु देके और हमारे मन भोजन और आनन्द से भरके आप को बिना साक्षी न छोड़ा। और ये बातें कहके उन्हों ने बड़ी कठिनता से १८ लोगों को बलिदान चढ़ाने से रोक रखा।

और कोई कोई यहूदी लोग अन्ताकिया और इकोनियम से आके लोगों को बहकाके पौलुस पर पत्थराओ किया और यह समझके कि वह मर गया उसे १९ नगर के बाहर घसीट ले गये। परन्तु जब शिष्य लोग २० उस के आस पास एकट्ठे ऊए तब वह उठके नगर में आया और दूसरे दिन बरनबा के संग दर्बी को चला गया।

और उस नगर में मंगल समाचार सुनाके और २१ बऊत लोगों को शिष्य करके वे लिस्तरा और इकोनियम और अन्ताकिया को फिरे। और शिष्यों के मन २२ दृढ़ करते थे और बिश्वास पर स्थिर रहने को उप-

देश देके कहते थे कि हमें बज्जत क्लेश सहके पर-
२३ मेश्वर के राज्य में प्रवेश करना है। और उन्हों ने हर
एक कलीसिया में उन के लिये प्राचीन ठहराये और
उपवास और प्रार्थना करके उन्हें प्रभु को जिस पर वे
२४ बिश्वास लाये थे सोंप दिया। और पिसीदिया से होके
२५ वे पंफीलिया में आये। और पर्गा में बचन सुनाके
२६ अतालिया को गये। और वहां से जहाज पर अन्ता-
किया में आये; वहां से वे यह काम करने के लिये
परमेश्वर के कृपा के हाथ सोंपे गये थे और यह काम
२७ उन्हों ने समाप्त किया। और पज्जंचके उन्हों ने कली-
सिया को एकट्ठा करके जो कुछ परमेश्वर ने उन के
साथ किया और जो उस ने अन्यदेशियों के लिये
२८ बिश्वास का द्वार खोला सो सब बर्णन किया। और वे
शिष्यों के संग वहां बज्जत दिन लों रहे॥

१५ पर्ब्ब

और कोई कोई यहूदाह से आके भाइयों को
सिच्छा देके बोले जो तुम लोग मूसा की रीति के
समान खतना न कराओ तो तुम मुक्ति नहीं पा सकते
२ हो। सो जब पौलुस और बरनबा ने उन से झगड़ा और
बड़ा बिवाद किया तब उन्हों ने ठाना कि पौलुस और
बरनबा और उन में से और कई जन यरूसलम को प्रे-
रितों और प्राचीनों कने इस प्रश्न के कारण जावें।
३ सो कलीसिया ने उन्हें पज्जंचाया और वे फुनीकी और
समरून से होके शिष्यों को सन्देश देते गये कि अन्य-
देशी लोग धर्म्म में आये और सब भाइयों को बज्जत

आनन्दित किया। और जब वे यरूसलम में आये तब ४
कलीसिया और प्रेरितों और प्राचीनों ने उन्हें जी
खोलके ग्रहण किया और जो कुछ परमेश्वर ने उन के
द्वारा से किया था सो सब कह सुनाया।

परन्तु फरीसियों के पन्थ में से जो बिश्वासी ऊए उन ५
में कोई कोई उठके कहने लगे कि उन का खतना
करना और मूसा की व्यवस्था पर चलने की उन्हें आज्ञा
देना अवश्य है। तब प्रेरित और प्राचीन लोग इस ६
बात को बिचार करने को एकट्ठे ऊए। और जब बऊत ७
बादानुबाद ऊआ था तब पथरस ने खड़ा होके उन से
कहा हे भाइयो तुम जानते हो कि बऊत दिन ऊए
परमेश्वर ने हम में से चुना कि अन्यदेशी लोग मेरे
मुंह से मंगल समाचार की बात सुनें और बिश्वास
लावें। और अन्तर्जामी परमेश्वर ने उन्हें भी हमारे ८
समान पवित्र आत्मा दिया और यों उन के लिये साची
दिई। और बिश्वास के कारण उन के मन पवित्र कर- ९
के हम में और उन में कुछ बीच न रखा। सो अब तुम १०
लोग क्यों परमेश्वर को परखते हो कि जो जूआ न
हमारे पितर न हम लोग उठा सकते थे सो तुम
शिष्यों के गले पर रखते हो। और हमारा निश्चय है ११
कि जैसा वे लोग वैसा हम लोग प्रभु यिसू मसीह की
कृपा से मुक्ति पावेंगे। तब सारी मण्डली चुप रही १२
और बरनबा और पौलुस से जो जो चिन्ह और आश्चर्य्य

कर्म्म परमेश्वर ने उन के हाथ अन्यदेशियों में किये थे उन का बर्णन उन्हों ने सुना।

१३ और जब वे चुप रहे याकूब ने उत्तर देके कहा हे १४ भाइयो मेरी सुनो। समऊन ने बर्णन किया है कि परमेश्वर ने पहिले किस रीति से अन्यदेशियों पर दयादृष्टि करके उन में से अपने नाम के लिये एक १५ मण्डली चुन लिई। और भविष्यतवक्ताओं की बातें उस १६ से मिलती हैं जैसा कि लिखा है। कि उस के पीछे मैं फिर आके दाऊद के गिरे ऊए डेरे को फिर बनाऊंगा और उस के टूटे फूटे को सुधारूंगा और उसे फिर १७ खड़ा करूंगा। कि जो लोग रह गये हैं और सारे अन्यदेशी जो मेरे नाम के कहलाते हैं सो प्रभु को ढूंढें; प्रभु जो ये सब बातें करता है उस की यह कही १८ ऊई बात है। परमेश्वर आदि से अपने सारे कार्य्य १९ जानता है। सो मेरा बिचार यह है कि जो लोग अन्यदेशियों में से परमेश्वर की ओर फिरे हैं उन २० पर हम बोझ न डालें। परन्तु उन्हें लिख भेजें कि मूर्तों की मलिनता से और व्यभिचार से और गलाघोंटे २१ जन्तुओं से और लहू से परे रहें। क्योंकि ऐसे लोग जो हर बिश्राम दिन मण्डलीघरों में मूसा को पढ़के प्रचार करते हैं सो अगले समय से नगर नगर में होते आये हैं।

२२ तब प्रेरितों को और प्राचीनों को सारी कलीसिया समेत अच्छा लगा कि अपने में से कई जन

अर्थात यहूदाह जिस की पदवी बर्सबा थी और सीलास जो भाइयों में श्रेष्ट मनुष्य थे उन को चनके पौलुस और बरनबा के संग अन्ताकिया को भेजें। और उन के हाथ यह लिख भेजा; उन भाइयों को जो अन्यदेशियों में से होके अन्ताकिया और सूरिया और किलीकिया में रहते हैं प्रेरितों और प्राचीनों और भाइयों का नमस्कार। जब कि हम ने सुना कि हम में से कई लोगों ने जिन को हम ने कुछ आज्ञा नहीं दिई थी जाके तुम्हें कितनी बातों से घबरा दिया और तुम्हारे मनों में दुबधा डालके कह दिया कि खतना करो और व्यवस्था पर चलो। सो हम ने एक मत होके उचित जाना कि कई मनुष्य चुनके अपने प्रिय बरनबा और पौलुस के संग तुम्हारे पास भेजें। ये ऐसे मनुष्य हैं कि जिन्हों ने हमारे प्रभु यिसू मसीह के नाम के लिये अपने प्राण को भी जोखिम उठाई। सो हम ने यहूदाह और सीलास को भेजा है और वे अपने मुंह से भी ये बातें कहेंगे। क्योंकि पवित्र आत्मा ने और हम ने उचित जाना कि इन अवश्य कार्य्यों को छोड़ तुम लोगों पर और बोझ न डालें। अर्थात तुम मूर्तों के प्रसाद से और लहू से और गलाघोंटे जन्तुओं से और व्यभिचार से परे रहो; यदि तुम इन बस्तुन से आप को बचाये रखोगे तो भला करोगे; आगे शुभ। २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९

वे लोग बिदा होके अन्ताकिया में आये और मण्डली को एकट्ठा करके पत्री दिई। वे उसे पढ़के ३० ३१

३२ इस ढाड़स की बात से आनन्दित हुए। और यहूदाह और सीलास जो भविष्यतवक्ता भी थे सो बहुत सी ३३ बातों से भाइयों को उपदेश देके दृढ़ किया। और वे कुछ दिन रहके कुशलक्षेम से भाइयों से बिदा होके ३४ प्रेरितों के पास गये। परन्तु सीलास को वहां रहना ३५ अच्छा लगा। और पौलुस और बरनबा अन्ताकिया में रहे और बहुत औरों के संग प्रभु का बचन सिखाते और मंगल समाचार सुनाते रहे।

३६ और कुछ दिनों के पीछे पौलुस ने बरनबा से कहा आओ हम हर एक नगर में जहां हम ने प्रभु का बचन सुनाया है वहां फिर जाके अपने भाइयों को देखें ३७ कि कैसे हैं। और बरनबा की इच्छा थी कि यूहन्ना को जिस की पदवी मरकुस है अपने संग ले जावे। ३८ परन्तु पौलुस ने समझा कि जो जन पंफीलिया में उन से अलग हुआ और इस काम के लिये उन के संग न गया ३९ उस को संग लेना उचित नहीं है। और उन में ऐसा बड़ा बिबाद हुआ कि एक दूसरे से अलग हो गया और बरनबा मरकुस को लेके जहाज पर कुप्रस को ४० चला गया। और पौलुस ने सीलास को चुना और भाइयों से परमेश्वर की कृपा को सौंपा जाके वह बिदा ४१ हुआ। और वह सूरिया और किलीकिया की कलीसियाओं को दृढ़ करता फिरा॥

१६ पर्ब्ब

फेर वह दर्बी और लिस्त्रा में पहुंचा और देखो वहां तिमोथेउस नाम एक शिष्य था; उस की माता यहू-

दिन होके बिस्वास लाई थी पर उस का पिता यूनानी था। वह लिस्तरा और इकोनियुम के भाइयों में शुभनाम था। उस को पौलुस ने अपने संग ले चलने चाहा; सो उधर के यहूदियों के लिये उस ने उसे लेके उस का खतना किया क्योंकि सब लोग जानते थे कि उस का पिता यूनानी था। और नगरों से जाते ज़ए जो जो आज्ञाएं प्रेरितों और प्राचीनों ने यरूसलम में होके ठहराईं थीं उन्हों ने उन को पज़ंचाया कि उन पर चलें। सो कलीसियाएं बिस्वास में दृढ़ ज़ईं और प्रतिदिन गिनती में बढ़ती गईं। ‌‌ २ ३ ४ ५

और जब वे फ्रोगिया और गलातिया के देश से होके निकले और पवित्र आत्मा ने आसिया में बचन सुनाने से उन्हें रोक रखा। तब मोसिया तक आके उन्हों ने बितीनिया को जाने चाहा परन्तु आत्मा ने उन्हें जाने न दिया। सो वे मोसिया से होके त्रोआस में उतर आये। और पौलुस को रात में दर्शन ज़आ कि मकदूनिया का एक मनुष्य खड़ा ज़आ उस की बिन्ती करके कहता है कि मकदूनिया में पार आ और हमारा उपकार कर। जब उस ने वह दर्शन पाया तब हमें निश्चय ज़आ कि उन को मंगल समाचार सुनाने को प्रभु ने हमें बुलाया है; सो हम ने तुरन्त मकदूनिया को जाने का मन किया। ६ ७ ८ ९ १०

हम त्रोआस से जहाज खोलके सीधे समोत्राके को आये और दूसरे दिन नियापोलिस को। और वहां से ११ १२

फिलिपी में आये वह मकदूनिया के उधर का बड़ा नगर और रूमियों की नवबस्ती है; हम उसी नगर
१३ में कुछ दिन रहे। और विश्राम के दिन हम लोग उस नगर से निकलके नदी तीर पर जहां प्रार्थना हुआ करती थी वहां हम जा बैठे और स्त्रियों से जो
१४ एकट्ठी थीं बातें करने लगे। और थियातीरा नगर की लोदिया नाम एक किरमिज बेचनेहारी स्त्री जो परमेश्वर की भजनेहारी थी सो हमारी सुनती थी; उस का मन प्रभु ने खोला कि पैालुस की बातों पर चित
१५ लगाया। और जब वह अपने घराने समेत बपतिसमा पा चुकी तब बिन्ती करके कहने लगी जो तुम मुझे प्रभु की विश्वासिनी जानते हो तो चलके मेरे घर में रहो; और वह हम को बरबस ले गई।

१६ और जब हम प्रार्थना को चले तब ऐसा हुआ कि एक लौंडी कि जिसे गुप्तज्ञानी भूत लगा था हम को मिली; वह भविष्य कहके अपने स्वामियों को बहुत
१७ कुछ कमवा देती थी। वह पैालुस के और हमारे पीछे आके पुकारके बोली ये मनुष्य अतिमहान परमेश्वर के सेवक हैं और हम को मुक्ति का मार्ग बतलाते
१८ हैं। वह बहुत दिन लों यह करती रही परन्तु पैालुस शोकित होके फिरा और उस भूत से कहा मैं यिसू मसीह के नाम से तुझ को आज्ञा देता हूं तू उस से निकल जा और वह उसी घड़ी उस से निकल गया।

१९ जब उस के स्वामियों ने देखा कि उन की कमाई

की आशा जाती रही तब पौलुस और सीलास को पकड़के हाट में नगरपतियों कने खैंच ले चले। २० और उन्हें प्रधानों के पास ले जाके कहा ये मनुष्य यहूदी होके हमारे नगर को निपट सताते हैं। २१ और ऐसे व्यवहार जो हम लोगों को कि रूमी हैं मानना और पालन करना उचित नहीं है सिखाते हैं। २२ तब लोग मिलके उन के बिरुद्ध उठे और प्रधानों ने उन के कपड़े फाड़े और उन्हें बेत मारने की आज्ञा किई। २३ और उन्हें बज़त मारके बन्दीगृह में डाला और बन्दीगृह के पालिक को आज्ञा दिई कि इन को बज़त चौकसी से रखना। २४ उस ने यह आज्ञा पाके उन्हें भीतर के बन्दीगृह में डाला और उन के पांव काठ में दिये।

२५ आधी रात को पौलुस और सीलास प्रार्थना करते और परमेश्वर की स्तुति गाते थे और बन्धुवे उन्हें सुनते थे। २६ अचानक बड़ा भुईंडोल ज़आ ऐसा कि बन्दीगृह की नेवें हिल गईं और झट सारे द्वार खुल गये और सभों के बन्धन खुल गये। २७ जब बन्दीगृह का पालिक जाग उठा और बन्दीगृह के द्वार खुले देखे तब समझा कि बन्धुवे भाग गये और तलवार खैंचकर आप को घात करने चाहा। २८ परन्तु पौलुस ने बड़े शब्द से पुकारके कहा कि अपनी हानि मत कर क्योंकि हम सब यहीं हैं। २९ तब वह दिया मंगवाकर भीतर लपका और काम्पता ज़आ पौलुस और सीलास के

३० आगे गिर पड़ा। और उन्हें बाहर लाके कहा कि साहिबो निस्तार पाने के लिये मुझे क्या करना है।
३१ वे बोले प्रभु यिसू मसीह पर बिश्वास ला तो तू और
३२ तेरा घराना निस्तार पावेगा। तब उन्हों ने उस को और सभों को जो उस के घर में थे प्रभु का बचन
३३ सुनाया। और उन्हें उसी घड़ी रात को लेके उस ने उन के घावों को धोया और वोंहीं उस ने और जो
३४ उस के थे सभों ने बपतिसमा पाया। और उन को अपने घर लाके उस ने उन के आगे भोजन रखा और अपने सारे घर समेत परमेश्वर पर बिश्वास लाके आनन्द किया।

३५ जब दिन हुआ तब प्रधानों ने प्यादों से कहला
३६ भेजा कि उन मनुष्यों को छोड़ देना। बन्दीगृह के पालिक ने ये बातें पौलुस को कह सुनाईं कि प्रधानों ने तुम को छोड़ देने को कहला भेजा है; सो अब
३७ निकलके कुशल से चले जाओ। परन्तु पौलुस ने उन से कहा उन्हों ने हमें जो रूमी हैं बिन दोषी ठहराये लोगों के साम्हने बेंत मारके बन्दीगृह में डाला और अब वे हम को चुपके से निकाल देते हैं ऐसा न होगा;
३८ वे आप आके हमें बाहर पहुंचा दें। तब प्यादों ने जाके ये बातें प्रधानों को सुनाईं; जब उन्हों ने सुना
३९ कि वे रूमी हैं तब डर गये। और आकर उन्हें मनाया और बाहर पहुंचाके उन से बिन्ती किई कि नगर से
४० चले जायें। सो वे बन्दीगृह से निकलके लोदिया के

यहां गये और भाइयों को देखके ढाड़स बन्धाके वहां से सिधारे॥

१७ पर्ब्ब

तब वे अंफीपोलिस और अपल्लोनिया से होके थस्सलोनीके में जहां यहूदियों का मण्डलीघर था आये। और पौलुस अपने व्यवहार पर उन के बीच २ गया और तीन विश्राम दिन उन से खोल खोलके और प्रमाण ला लाके पुस्तकों से बर्णन किया। कि मसीह ३ का दुःख उठाना और मृतकों में से जी उठना अवश्य था और कि यह यिसू जिस की वार्त्ता मैं तुम्हें सुनाता हूं सोही मसीह है। तब उन में से कोई कोई बिस्वास ४ लाये और पौलुस और सीलास से मिल गये और भक्त यूनानियों की एक बड़ी मण्डली और कुलीन स्त्रियों में से भी बहुतेरी।

परन्तु जिन यहूदियों ने न माना उन्हों ने डाह से ५ भरके बाजार के कई एक लुच्चे अपने साथ लेके और भीड़ लगाके नगर में हुल्लड़ मचाया और यासून का घर घेरके उन्हें ढूंढा जिसतें लोगों के साम्हने खैंच लावें। और जब उन्हें न पाया तब यासून को और कई ६ भाइयों को नगराध्यक्षों के पास यों पुकारते हुए खैंच लाये कि ये लोग जिन्हों ने संसार को उलट दिया है सो यहां भी आये हैं। उन को यासून ने अपने घर ७ में उतारा और ये सब लोग कैसर की आज्ञा के बिरुद्ध कहते हैं कि दूसरा राजा कोई यिसू है। सो उन्हों ८ ने लोगों को और नगराध्यक्षों को ये बातें सुनाके घब-

९ रा दिया। तब उन्हों ने यासून से और दूसरों से जामिनी लेके उन्हें छोड़ दिया।

१० परन्तु भाइयों ने तुरन्त पौलुस और सीलास को रातोंरात बरोया नगर को भेज दिया; वे वहां पहुंचके यहूदियों के मण्डलीघर में गये। ११ वहां के लोग थस्सलोनीके के लोगों से आदरवन्त थे कि उन्हों ने बचन को बड़े मन मान से ग्रहण किया और प्रतिदिन पुस्तकों में ढूंढते रहे कि ये बातें योंहीं हैं कि नहीं। १२ इस कारण उन में से बहुत लोग और यूनानी कुलवन्त स्त्रियों में से और पुरुषों में से बहुतेरे बिश्वास लाये। १३ परन्तु जब थस्सलोनीके के यहूदियों ने जान लिया कि पौलुस परमेश्वर का बचन बरोया में सुनाता है तब वे वहां भी लोगों को उभारने आये। १४ सो भाइयों ने तुरन्त पौलुस को बिदा किया कि वह समुद्र की दिसा जावे परन्तु सीलास और तिमोदेउस वहीं रहे। १५ और जो पौलुस को पहुंचाने गये थे सो उसे अथेने तक लाये और जब सीलास और तिमोदेउस के लिये आज्ञा लिई कि जैसे हो सके वैसे जल्द वे उस के पास आवें तब चल निकले।

१६ सो जब पौलुस अथेने में उन की बाट जोह रहा था और नगर को मूर्तों से भरा देखा तब उस का जी जल गया। १७ इस लिये वह मण्डलीघर में यहूदियों से और भक्तों से और बाजार में उन से जो उसे प्रतिदिन १८ मिलते थे बातें करता था। तब एपिकूरी और स्तोइकी

पण्डितों में से कई एक उस से विवाद करने लगे; और कोई कोई बोले यह बकबादी क्या कहा चाहता है; फिर औरों ने कहा यह नये देवतों का प्रचारक समझ पड़ता है क्योंकि वह उन्हें यिसू का और पुनरुत्थान का मंगल समाचार सुनाता था। १९ तब वे उसे पकड़के अरियोपगस पर ले गये और कहा जो नई सिच्छा तू सुनाता है क्या हम लोग उसे जान सकते हैं। २० क्योंकि तू अनोखी बातें हमें सुनाता है सो हम जानने चाहते हैं कि वह क्या हैं। २१ इस लिये कि सारे अथेनी और परदेशी जो वहां जा रहे थे सो कोई नई बात कहने और सुनने को छोड़ और किसी बात पर अपना जी न लगाते थे।

२२ तब पौलुस अरियोपगुस के बीच में खड़ा होके बोला हे अथेनी लोगो मैं तुम को हर भांति से देवतों के बड़े पूजनेहारे देखता हूं। २३ क्योंकि जाते हुए और तुम्हारी पूजा की बातें देखते हुए मैं ने क्या देखा कि एक बेदी है और उस पर यह लिखा है अनजाने परमेश्वर को; सो जिसे तुम लोग अनजाने पूजते हो उसी का सन्देश मैं तुम्हें देता हूं। २४ परमेश्वर जिस ने संसार और जो कुछ उस में है सब उत्पन्न किया है सो आकाश और पृथिवी का प्रभु होके हाथ के बनाये हुए मन्दिरों में बास नहीं करता है। २५ न वह किसी वस्तु का आधीन होके मनुष्यों के हाथों से सेवा करवाता है क्योंकि वह तो आप जीवन और श्वास और सब कुछ

२६ सभों को देता है। उस ने एक ही लोहू से सब देशों के लोगों को सारी पृथिवी में बसने के लिये उत्पन्न किया है और उन के निज समय और उन के रहने के
२७ सिवाने ठहराये। जिसतें प्रभु को ढूंढें क्या जाने वे उस को टटोलके पावें जो कि वह हम में से किसी से दूर
२८ नहीं है। क्योंकि उसी से हम जीते और चलते फिरते और हो रहते हैं जैसा कि तुम्हारे ही कई कवित्रों ने
२९ भी कहा है कि हम तो उसी के वंश हैं। फिर परमेश्वर के वंश होके हमें समझा न चाहिये कि परमेश्वरत्व सोने अथवा रूपे अथवा पत्थर के समान है मनुष्य
३० के गुण और मत से बने हुए। सो अज्ञानता के समयों की आनाकाणी करके परमेश्वर अब हर एक मनुष्य
३१ को हर कहीं मन फिराने की आज्ञा देता है। क्योंकि उस ने एक दिन को स्थित किया है कि उस में वह उस मनुष्य के द्वारा से जिस को उस ने ठहराया है धर्म्म से संसार का न्याय करेगा और उस ने मृतकों में से उसे उठाके यह बात सब लोगों पर निश्चय कर दिई है।

३२ जब उन्हों ने मृतकों के जी उठने की सुनी तब कोई कोई ठट्ठा करने लगे और कोई कोई बोले हम इस
३३ बात में तेरी फिर सुनेंगे। सो पौलुस उन में से चला
३४ गया। तथापि कितने एक मनुष्य उस से मिलके बिश्वास लाये; उन में दिओनोसियुस अरियोपगुस का एक मन्त्री था और दामारिस नाम एक स्त्री और कई और उन के संग थे॥

१८ पर्ब्ब इन बातों के पीछे पौलुस अथेने से चला जाके कोरिन्तुस में आया। २ और उस ने अकीला नाम एक यहूदी वहां पाया; जन्म का वह पोन्तुस का था और उन्हीं दिनों अपनी स्त्री प्रिसकिल्ला के साथ इतालिया से आया था क्योंकि क्लौदियुस ने सारे यहूदियों को रूम से निकल जाने की आज्ञा दिई थी; सो वह उन के पास आया। ३ और जो वह उन्हीं के उद्यम का था क्योंकि तंबू बनाने का उन का उद्यम था इस लिये वह उन के संग रहा और काम करने लगा। ४ और हर विश्राम के दिन वह मण्डलीघर में विवाद करके यहूदियों और यूनानियों को बोध देता था। ५ और जब सीलास और तिमोथेउस मकदूनिया से आये तब पौलुस का मन उभरा और उस ने यहूदियों के आगे साची दिई कि यिसू वही मसीह है। ६ जब वे विरोध करने और परमेश्वर की निन्दा करने लगे तब उस ने अपने कपड़े झाड़के उन से कहा तुम्हारा लोहू तुम्हारे सिर पर मैं निर्दोष हूं सो अब से मैं अन्यदेशियों में जाता हूं। ७ और वहां से चलके वह युस्तुस नाम परमेश्वर के एक भक्त के घर जो मण्डलीघर से मिला हुआ था गया। ८ तब मण्डलीघर का प्रधान क्रिसपुस अपने सारे घर समेत प्रभु पर बिश्वास लाया; और बहुत से कोरिन्ती लोग सुनके बिश्वास लाये और बपतिसमा पाया। ९ परन्तु रात को प्रभु ने दर्शन के द्वारा पौलुस से कहा मत डर पर कहता जा और चुप न हो। १० इस लिये कि मैं तेरे संग हूं

और कोई जन तेरी हानि करने नहीं पावेगा क्योंकि
११ इस नगर में मेरे बहुत लोग हैं। सो वह डेढ़ बरस वहां
ठहरके परमेश्वर का बचन उन में सिखाता रहा।
१२ फिर जब गल्लियून अखाया का अध्यक्ष हुआ तब
यहूदियों ने एका करके पौलुस पर चढ़ आये और
१३ उसे न्यायस्थान में लाके कहा। यह जन लोगों को
भरमाता है कि परमेश्वर के लिये व्यवस्था के बिरुद्ध
१४ की पूजा करें। और जब पौलुस बोलने चाहा तब
गल्लियून ने यहूदियों से कहा हे यहूदियो जो यह
कुछ अंधेर अथवा बुराई की बात होती तो उचित
१५ था कि मैं धीरज धरके तुम्हारी सुनता। परन्तु जो
यह तुम्हारी शिक्षा और नामों और व्यवस्था का विषय
है तो तुम्हीं जानो क्योंकि मैं ऐसी बातों का बिचार-
१६ नेहारा होने नहीं चाहता हूं। तब उस ने उन्हें न्याय-
१७ स्थान से निकाल दिया। इस पर सारे यूनानियों ने
मण्डलीघर के प्रधान सोस्तनीस को पकड़के न्याय-
स्थान के साम्हने मारा पर गल्लियून ने इस की कुछ
चिन्ता नहीं किई।
१८ और पौलुस और भी बहुत दिन वहां रहा फिर
भाइयों से बिदा होके कनकरिया में मनौती के लिये
अपना सिर मुण्डाया और प्रिसकिल्ला और अकीला के
१९ संग जहाज पर सूरिया को जा निकला। और एफसुस
में पहुंचके उस ने उन्हें वहीं छोड़ा और आप मण्ड-
२० लीघर में जाके यहूदियों से बातें किईं। तब उन्हों ने

चाहा कि और कुछ दिन वह उन के संग रहे पर उस ने न माना। २१ और उन से यह कहके बिदा हुआ कि आनेहारा पर्ब्ब यरूसलम में करना मुझे अवश्य है परन्तु जो परमेश्वर चाहे तो मैं तुम्हारे पास फिर लौट आऊंगा ; और एफसुस से जहाज खोला। २२ और कैसरिया में उतरके वह उधर गया और कलीसिया को नमस्कार करके अन्ताकिया को चला। २३ और वहां कुछ दिन रहके सिधारा और गलातिया और फ्रोगिया के देश में ठांव ठांव सर्वच फिरता हुआ सारे शिष्यों को दृढ़ करता गया।

२४ और अपोल्लुस नाम एक यहूदी जिस का जन्म इस्कन्दरिया का था और जो सुवक्ता और धर्म्मग्रन्थ के ज्ञान में बड़ा निपुण था सो एफसुस में आया। २५ उस मनुष्य ने प्रभु के मार्ग की शिक्षा पाई थी और जो लगाके प्रभु की बातें कहता और यत्न से सिखाता था परन्तु वह केवल यूहन्ना का बपतिसमा जानता था। २६ वह बेधड़क मण्डलीघर में बोलने लगा ; पर जब अकीला और प्रिसकिल्ला ने उस की सुनी तब उसे अपने यहां ले जाके परमेश्वर का मार्ग और भी शुद्धता से उस को बताया। २७ जब उस ने अखाया को उतर जाने चाहा तब भाइयों ने शिष्यों को लिखके चाहा कि उसे ग्रहण करें ; और वहां पहुंचके जो लोग कृपा के द्वारा से बिश्वास लाये थे उन की उस ने बड़ी सहाय किई। २८ क्योंकि उस ने धर्म्मग्रन्थ से दिखा दिखाके कि यिसू वही मसीह है बड़ी दृढ़ता से

१९ पर्ब्ब

यहूदियों को सब लोगों के आगे निरुत्तर किया॥

और ऐसा हुआ कि जब अपोल्लुस कोरिन्तुस में था तब पौलुस ऊपर के देशों से फिर के एफसुस में आया २ और कई शिष्यों को पाके उन से कहा। क्या तुम ने बिश्वास लाके पवित्र आत्मा पाया; उन्हों ने उस से कहा ३ हम ने तो सुना भी नहीं कि पवित्र आत्मा है। उस ने उन से कहा फिर तुम ने किस का बपतिसमा पाया; ४ वे बोले कि यूहन्ना का बपतिसमा। तब पौलुस ने कहा यूहन्ना ने मन फिराने का बपतिसमा दिया और लोगों से यों कहा जो मेरे पीछे आता है उस पर अर्थात ५ मसीह यिसू पर तुम बिश्वास लाओ। उन्हों ने यह सुनके ६ प्रभु यिसू के नाम पर बपतिसमा पाया। और जब पौलुस ने उन पर हाथ रखे तब पवित्र आत्मा उन पर उतरा और वे भांति भांति की भाषा बोलने और भविष्यत- ७ वाणी करने लगे। वे सब मनुष्य बारह एक थे।

८ और वह मण्डलीघर में जाके तीन महीने लों नि- धड़क परमेश्वर के राज्य के विषय में बादानुबाद कर- ९ ता और समझाता रहा। परन्तु जब एक कितने जन कठोर और अविश्वासी ठहरके लोगों के आगे इस मार्ग को बुरा कहने लगे तब उस ने उन्हें छोड़ के शि- ष्यों को अलग किया और तिरन्नुस नाम एक जन की १० पाठशाला में प्रतिदिन संबाद करता रहा। यह दो बरस लों होता रहा यहां लों कि आसिया के रहनेवाले क्या ११ यहूदी क्या यूनानी सभों ने प्रभु यिसू का बचन सुना। और

पौलुस के हाथों से परमेश्वर बड़े बड़े आश्चर्य्य कर्म्म दिखाता था। यहां लों कि अंगोछे और पटके उस के शरीर को छूवाके रोगियों पर डालते थे और उन के रोग जाते रहे और दुष्ट आत्मा उन से निकल गये। १२

तब कितने फिरनेवाले और झाड़ने फूंकनेवाले यहूदियों ने अपने मन में ठाना कि जिन लोगों को दुष्ट आत्मा लगे हैं उन पर प्रभु यिसू का नाम लेके कहें कि जिस यिसू को पौलुस प्रचारता है हम तुम्हें उस की किरिया देते हैं। और स्केवा यहूदी प्रधान याजक के सात बेटे यही करते थे। तब दुष्ट आत्मा ने उत्तर देके कहा यिसू को मैं जानता हूं और पौलुस को मैं पहचानता हूं परन्तु तुम ही लोग कौन हो। और जिस मनुष्य को दुष्ट आत्मा लगा था सो उन पर लपका और प्रबल होके उन्हें जीता यहां लों कि वे नंगे और घायल होके उस घर से निकल भागे। और यह बात सब यहूदियों और यूनानियों को जो एफसुस में रहते थे जान पड़ी और उन सभों पर डर पड़ी और प्रभु यिसू के नाम की बड़ाई ऊई। और जो लोग बिश्वास लाये थे उन में से बऊतेरों ने आके अपने अपने कर्म्म मान लिये और दिखा दिये। और बऊतेरे इन्द्रजालियों ने अपनी अपनी पुस्तकें एकट्ठी लाके उन्हें सब लोगों के साम्हने फूंक दिया ; और उन्हों ने उन के मोल का जो लेखा किया तो पचास सहस्र रुपैये निकले। ऐसे परमेश्वर का बचन परबल होके बढ़ा और जयवन्त ऊआ। १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०

२१ जब ये बातें हो चुकीं तब पौलुस ने मकदूनिया और अखाया से होके यरूसलम को जाने का मन किया और कहा वहां होके मुझे रूम को भी देखना अवश्य है।
२२ सो अपने सेवाकारियों में से उस ने दो जन तिमोदे-उस और एरास्तुस को मकदूनिया में भेजा परन्तु वह
२३ आप आसिया में कुछ दिन रहा। उस समय इस मार्ग
२४ के विषय में बड़ा हुल्लड़ मचा। क्योंकि देमेत्रियुस नाम एक सुनार अरतेमिस के मन्दिर के डौल पर चांदी के मन्दिर बनाता था और इस उद्यम के लोगों को
२५ बहुत कमवा देता था। उस ने उन को और दूसरों को जो ऐसा काम करते थे एकट्ठे करके कहा कि मनुष्यो तुम जानते हो कि हमारी जीविका इसी उद्यम से है।
२६ और तुम देखते और सुनते हो कि केवल एफसुस में नहीं परन्तु सारे आसिया के लोगों को इस पौलुस ने समझाके फेर दिया है क्योंकि कहता है कि जो हाथ
२७ के बनाये हैं सो परमेश्वर नहीं हैं। सो केवल यही तो खटका नहीं कि हमारे उद्यम की हानि हो जाय परंतु बड़ी देवी अरतेमिस का मन्दिर भी तुच्छ हो जायगा और जिसे समस्त आसिया और संसार ही पूज-
२८ ते हैं उस का प्रताप जाता रहेगा। यह सुनके वे कोप से भर गये और पुकारके बोले एफसियों की अरते-
२९ मिस महान है। तब सारे नगर में बड़ा रौला मचा और सब मिलकर गायुस और अरिस्तर्खुस को जो मकदूनिया के लोग और पौलुस के संगी यात्री थे उन्हें

पकड़के अखाड़े को दौड़ गये। और जब पौलुस ने ३०
लोगों के बीच में जाने चाहा तब शिष्यों ने उसे जाने
न दिया। और आसिया के प्रधानों में से भी कितनों ने ३१
उस के हितकारी होके उस से बिन्ती करके कहला
भेजा कि तू अखाड़े में मत जा। तब कितनों ने कुछ ३२
पुकारा और कितनों ने कुछ क्योंकि मण्डली गड़बड़ा
गई और बहुतेरे न जानते थे कि किस लिये एकट्ठे
हुए हैं। और उन्हों ने सिकन्दर को जिसे यहूदी धकि- ३३
याते थे लोगों के बीच से आगे कर लिया और सि-
कन्दर ने हाथ से सैन करके चाहा कि लोगों के आगे
अपनी निर्दोषी की बात करे। परन्तु जब उन्हों ने जाना ३४
कि वह यहूदी है तब सब के सब दो घड़ी लों एक साथ
पुकारे एफसियों की अरतेमिस महान है। कोतवाल ३५
ने लोगों को ठण्डा करके कहा कि हे एफसियो कौन
मनुष्य नहीं जानता है कि एफसियों का नगर बड़ी देवी
अरतेमिस का और देवलोक से गिरी हुई मूर्त का
पुजारी है। सो जब इन बातों के बिरुद्ध कोई नहीं बोल ३६
सकता है तब तुम्हें उचित है कि चुपके रहो और बिन
सोचे कुछ न करो। क्योंकि तुम लोग ये मनुष्य यहां ३७
लाये हो और वे न तो मन्दिर के चोर और न तुम्हारी
देवी के निन्दा करनेहारे हैं। फिर जो देमेत्रिउस ३८
का और उस के संग के उद्यमवालों का किसी से कुछ
बखेड़ा हो तो न्याय हो रहा है और न्यायक बैठे हैं
एक एक पर अपवाद करें। परन्तु जो तुम और बातों ३९

के विषय में पूछते हो तो बिचार सभा में वह निर्णय
४० किया जायगा। क्योंकि हमें खटका है कि आज के
झल्लड़ के लिये हम पर विवाद होवे इस लिये कि कोई
कारण नहीं है जो हम इस झल्लड़ का कुछ उत्तर दे
४१ सकें। और यों कहके उस ने मण्डली को बिदा किया॥

२० पर्ब्ब

जब झल्लड़ धीमा हुआ तब पौलुस शिष्यों को बुलाके
और गले लगाके वहां से मकदूनिया को सिधारा।
२ और उन देशों में से होके और उन्हें बहुत उपदेश दे-
३ के वह यूनान में आया। और तीन महीने वहां रहा;
जब वह जहाज पर सूरिया में जाने को था तब यहूदी
उस की घात में लगे; सो उस ने मनसा किई कि मक-
४ दूनिया से होके फिरे। और बरोया का सोपत्र और
थस्सलोनीके के अरिस्तर्खुस और सिकुन्दुस और दर्बी
का गायुस और तिमोथेउस और आसिया के तिखि-
कुस और त्रोफिमुस सो आसिया लों उस के संग गये।
५ वे आगे जाके त्रोआस में हमारे लिये ठहरे। और हम
६ अखमीरी रोटी के दिनों के पीछे फिलिपी से जहाज
पर चले गये और पांचवें दिन त्रोआस में उन के पास
पहुंचे और सात दिन वहां रहे।

७ और अठवारे के पहिले दिन जब शिष्य रोटी तोड़-
ने को एकट्ठे हुए तब पौलुस ने उन्हें उपदेश दिया
और बिहान को वह जाने पर था; सो आधी रात लों
८ बातें करता रहा। और जिस उपरौठी कोठरी में वे
९ एकट्ठे थे वहां बहुत से दीपक जलते थे। और यूतिखस

नाम एक तरुण खिड़की में बैठा था; उस को बड़ी नींद आई और जब पौलुस अबेर लों बातें करता रहा तब वह मारे नींद के झुक पड़ा और तीसरे खन से गिर पड़ा और मरा हुआ उठाया गया। पौलुस उतर के १० उसे लिपट गया और गले लगाके लोगों से कहा घबराओ मत क्योंकि उस का प्राण उस में है। फिर ११ ऊपर जाके रोटी तोड़के खाई और बड़ी बेर लों जब तक भोर न हुई तब तक बातें करता रहा; इस पर वह चला गया। और वे उस तरुण को जीता लाये १२ और बहुत शान्त हुए।

और हम जहाज पर चढ़के आगे अस्सुस को इस १३ मनसा से गये कि पौलुस को वहां चढ़ा लेवें क्योंकि वह पैदल जाने की इच्छा करके ऐसा कह गया था। जब १४ वह अस्सुस में हमें मिला तब हम उसे चढ़ाके मिती-लेने में आये। और वहां से जहाज खोलके हम दूसरे १५ दिन खियूस के साम्हने आये और तीसरे दिन सामुस में पहुंचे और त्रोगिल्लियुम में रहके अगले दिन मि-लेतुस में आये। क्योंकि पौलुस ने एफसुस से होके १६ जाने को ठाना था ऐसा न हो कि उसे आसिया में रहने से अबेर लगे; इस लिये वह जल्दी करता था कि जो हो सके तो पन्तिकोस्त का दिन यरूसलम में होय।

और उस ने मिलेतुस से एफसुस में कहला भेजकर १७ कलीसिया के प्राचीनों को बुलाया। जब वे उस पास १८ आये तब उन से कहा तुम जानते हो कि जब से मैं

आसिया में आया मैं पहिले दिन से हर समय किस
१९ रीति से तुम्हारे संग रहा। मन की दीनता से बहुत
आंसू बहा बहाके उन परीक्षों में जिन में मैं यहूदियों
के घात लगने से फंसा था मैं प्रभु की सेवा करता
२० रहा। और जो जो बात तुम्हारे लाभ की थी उस की मैं
ने कुछ रख न छोड़ी परन्तु तुम्हें बता दिई और तुम
२१ को मण्डली में और घर घर सिखलाया किया। और
यहूदियों और यूनानियों के आगे साक्षी दिई कि पर-
मेश्वर की ओर मन फिराओ और हमारे प्रभु यिसू
२२ मसीह पर बिश्वास लाओ। और अब देखो मैं आत्मा
का बंधा हुआ यरूसलम को जाता हूं और नहीं जान-
२३ ता कि वहां मुझ पर क्या बीतेगा। परन्तु इतना कि
पवित्र आत्मा हर एक नगर में यह कहके साक्षी देता
२४ है कि बन्ध और कष्ट तेरे लिये तैयार हैं। तौभी मैं
उसे कुछ नहीं समझता हूं और न मैं आप अपने प्राण
को प्यारा जानता हूं जिसतें मैं अपने दौड़ को और सेवा
को जिसे मैं ने करने को प्रभु यिसू से पाया है अर्थात
कि परमेश्वर की कृपा का मंगल समाचार की साक्षी
२५ देऊं सो आनन्द से पूरा करूं। और अब देखो मैं जान-
ता हूं कि तुम सब लोग जिन में मैं परमेश्वर के राज्य
२६ को प्रचारता फिरा हूं मेरा मुंह फिर न देखोगे। इस
कारण मैं आज के दिन तुम्हें साक्षी रखता हूं कि हर
२७ एक के लोहू से मैं निर्दोष हूं। क्योंकि मैं तुम्हारे आगे
परमेश्वर का सारा मता तुम्हें सुनाने से अलग न रहा।

अब अपने लिये और उस सारी पाल के लिये कि जिस पर पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया तुम सुचेत रहो और परमेश्वर की कलीसिया जिसे उस ने अपना लोहू देने से मोल लिया है उस को तुम पालो। क्योंकि मैं जानता हूं कि मेरे सिधारने के पीछे फाड़नेहार हुण्डार तुम में पैठके पाल को रक्षा न करेंगे। ऐसे मनुष्य कि जो शिष्यों को अपनी ओर खींचने को टेढ़ी बातें बोलेंगे सो निज तुम्हीं लोगों में से भी उठेंगे। इस लिये जागते रहो और चेत रखो कि तीन बरस लों मैं रात दिन रो रोके हर एक को नित चिताता रहा। और अब हे भाइयो मैं तुम्हें परमेश्वर पर और उस की कृपा के बचन पर छोड़ता हूं; वह तुम्हें सुधारने को और तुम्हें सारे पवित्र किये जनों में अधिकार देने को शक्तिमान है। मैं ने किसी के रूपे अथवा सोने अथवा बस्त्र का लालच न किया। तुम आप जानते हो कि जो मेरे लिये और मेरे संगियों के लिये अवश्य था सो इन्हीं हाथों ने कमाया। मैं ने तुम्हें सब कुछ बता दिया है कि तुम को चाहिये कि यों धंधा करके दुर्बल लोगों का उपकार करो और प्रभु यिसू के बचन को जो उस ने आप कहा है स्मरण करो अर्थात लेने से देना अधिक धन्य है। | २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५

और यों कहके उस ने घुटने टेकके उन सभों के संग प्रार्थना किई। वे सब बहुत रोये और पौलुस के गले लगके उसे चूमा। और निज करके इस बात से जो उस ने कही थी कि तुम मेरा मुंह फिर न देखोगे वे | ३६ ३७ ३८

बहुत उदास हुए; और उन्हों ने उसे जहाज तक पहुंचाया॥

२१ पर्ब्ब

और यों हुआ कि जब हम ने उन से अलग होके लंगर उठाया तब सीधे मार्ग कोस में आये और दूसरे दिन रोदुस को और वहां से पतरा को। २ और एक जहाज फुनीकी को जाते पाके हम उस पर चढ़के चल निकले। ३ और जब कप्रस दिखाई दिया तब उसे बायें हाथ छोड़के सूरिया को चले और सूर में लंगर डाला क्योंकि वहां जहाज का बोझ उतारना था। ४ और शिष्यों को पाके हम सात दिन वहां ठहरे और उन्हों ने आत्मा के बताने से पौलुस से कहा कि यरूसलम को मत जा। ५ पर उन दिनों को पूरा करके हम चल निकले और अपना मार्ग पकड़ा और वे सब लोग स्त्रियों और बालकों समेत नगर के बाहर लों हमारे संग आये और हम ने समुद्र के तीर पर घुटने टेकके प्रार्थना किई। ६ और आपस में बिदा होकर हम जहाज पर चढ़े और वे अपने अपने घर को लौट गये।

७ और जब हम सूर से जहाज का सफर कर चुके तब तोलमाइस में आये और भाइयों को नमस्कार करके एक दिन उन के संग रहे। ८ दूसरे दिन पौलुस और हम जो उस के संगी थे बिदा होके कैसरिया में आये और फिलिप मंगलसमाचारी जो उन सातों में से था उस के यहां उतरके उस के संग रहे। ९ और उस की चार कुंवारी पुत्रियां थीं और वे भविष्यतवाणी

कहतीं थीं। और जब हम वहां बज्जत दिन रहे यहूदाह से अगबस नाम एक भविष्यतवक्ता आया। उस ने हमारे पास आकर पौलुस का पटुका उठा लिया और अपने हाथ पांवों को बांधके कहा पवित्र आत्मा यों कहता है कि जिस मनुष्य का यह पटुका है उस को यहूदी लोग यरूसलम में यों बांधेंगे और अन्यदेशियों के हाथ में सौंपेंगे। जब हम ने ये बातें सुनीं तब हम और वहां के लोगों ने उस से बिन्ती किई कि यरूसलम को मत जा। पौलुस ने उत्तर दिया तुम क्या करते हो जो रोते और मेरे मन को तोड़ते हो; क्योंकि मैं केवल बांधे जाने को नहीं परन्तु यरूसलम में प्रभु यिसू के नाम के लिये मरने को भी तैयार हूं। और जब उस ने न माना तब हम यों कहके चुप रहे कि प्रभु की इच्छा होय। और उन दिनों के पीछे हम अपनी तैयारी करके यरूसलम को चले। तब कैसरिया में के कई एक शिष्य हमारे संग भी गये और हम को म्नासुन कप्रस के एक पुराने शिष्य के यहां ले गये कि उस के घर में टिकें। १० ११ १२ १३ १४ १५ १६

और जब हम यरूसलम में पज्जंचे तब भाइयों ने हमें जी खोलके ग्रहण किया। और दूसरे दिन पौलुस हमारे संग याकूब के यहां गया और सब प्राचीन वहां एकट्ठे थे। और उस ने उन्हें नमस्कार करके जो कुछ परमेश्वर ने अन्यदेशियों के बीच में उस की सेवकाई के द्वारा से किया था सो अलग अलग करके वर्णन १७ १८ १९

२० किया। उन्हों ने सुनके प्रभु की स्तुति किई और उस से कहा कि भाई तू देखता है कि कितने सहस्र यहूदी बिश्वास लानेहारे हैं और सब के सब व्यवस्था के बड़े
२१ पक्षपाती हैं। उन्हों ने तेरे बिषय में सुना है कि तू अन्यदेशियों में सारे यहूदियों को मूसा से फिर जाने को सिखाता है और कहता है कि अपने लड़कों का खतना न
२२ करो और व्यवस्था के व्यवहारों पर मत चलो। अब क्या किया चाहिये; मण्डली तो निस्सन्देह एकट्ठी होगी
२३ क्योंकि वे तेरे आने का सुनेंगे। सो जो हम तुझ से कहते हैं सो कर; चार मनुष्य कि जिन्हों ने मनौती
२४ मानी है हमारे पास हैं। उन्हें लेके आप को उन के संग पवित्र कर और उन के लिये कुछ पैसा लगा कि वे अपना सिर मुण्डावें तब सब लोग जान जायेंगे कि जो बातें तेरे विषय में सुनीं सो कुछ नहीं है परन्तु तू आप बिधि से चलता और व्यवस्था को मानता है।
२५ फिर बिश्वास लानेहारे अन्यदेशियों के विषय में हम ने ठहराके लिखा कि वे ऐसी ऐसी बातें न मानें परन्तु इतना कि मूर्तों के प्रसाद से और लोहू से और गला घोंटे जन्तुओं से और व्यभिचार से बचे रहें।

२६ तब पौलुस ने उन मनुष्यों को संग लेके और दूसरे दिन अपने को उन के संग पवित्र करके मन्दिर में प्रवेश किया और वार्त्ता किई कि जब लों उन में से हर एक का बलि न चढ़ाया जाय तब लों मैं पवित्र करने
२७ का समय पूरा करूंगा। और जब सात दिन पूरे होने

पर थे तब आसिया के यहूदियों ने उसे मन्दिर में देखके सारे लोगों को उस्काया और उस पर हाथ डालके पुकारा। कि हे इसराएलियो सहायता करो २८ यह वही मनुष्य है कि जो सभों को हर जगह हम लोगों के और व्यवस्था के और इस स्थान के बिरुद्ध सिखाता है और उस से अधिक वह यूनानियों को भी मन्दिर में लाया और इस पवित्र स्थान को अशुद्ध किया है। क्योंकि उन्हों ने आगे चोफिमुस एफसी को उस के २९ संग नगर में देखा था और वे समझते थे कि पौलुस उसे मन्दिर में लाया। तब सारे नगर में हुल्लड़ मचा ३० और सब लोग दौड़के एकट्ठे हुए; और उन्हों ने पौलुस को पकड़के मन्दिर में से बाहर घसीट लाये और झप द्वार बन्द किये गये।

और जब वे उस को मार डाला चाहते थे तब पल- ३१ टनपति को सन्देश पहुंचा कि सारे यरूसलम में हुल्लड़ हुआ। वह तुरन्त सिपाहियों और शतपतियों ३२ को लेके उन पर दौड़ा और जब उन्हों ने पलटनपति और सिपाहियों को देखा तब पौलुस को मारने से हाथ उठाये। पलटनपति ने पास आके उसे पकड़ा ३३ और उस को दो जंजीरों से बांधने को आज्ञा किई; फिर पूछा कि यह कौन है और उस ने क्या किया है। और भीड़ में से कितनों ने कुछ पुकारा और कितनों ३४ ने कुछ; और जब वह धूम के मारे कोई बात ठीक न जान सका तब उसे गढ़ में ले जाने की आज्ञा दिई।

३५ और जब वह सीढ़ी पर चढ़ने लगा तब लोगों के उप-
३६ द्रव के कारण सिपाहियों को उसे उठाना पड़ा। क्योंकि लोगों की भीड़ यह पुकारती ऊई उस के पीछे पड़ी कि उसे उठा डाल।

३७ जब पौलुस को गढ़ में ले जाने लगे तब उस ने पलटनपति से कहा जो आज्ञा होय तो मैं तुझ से कुछ
३८ कहूं; वह बोला क्या तू यूनानी जानता है। क्या तू वह मिसरी नहीं जिस ने इन दिनों से आगे दंगा मचाया
३९ और चार सहस्र डाकू बन में ले गया। पौलुस ने कहा मैं तो यहूदी मनुष्य हूं और किलीकिया के तर्सुस का जो यशहीन नगर नहीं है रहनेहारा; मैं तुझ से बिन्ती करता हूं कि मुझे लोगों से बोलने की आज्ञा
४० दे। जब उस ने उसे आज्ञा दिई पौलुस ने सीढ़ी पर खड़े होके लोगों को हाथ से सैन किई; जब वे चुपचाप ऊए तब वह इबरानी भाषा में कहने लगा॥

२२ पर्ब्ब

हे भाइयो और हे पितरो मेरी बिन्ती जो मैं अब
२ तुम से कहता हूं सो सुनो। जब उन्हों ने सुना कि वह इबरानी भाषा में उन से बातें करता है तब और भी
३ चुप हो गये। वह कहने लगा मैं यहूदी मनुष्य हूं और किलीकिया के तर्सुस में उत्पन्न ऊआ परन्तु इसी नगर में मैं ने प्रतिपाल पाया और पितरों की व्यवस्था में गमालिएल के पांवों तले ठीक शिक्षा पाई और जैसे तुम सब लोग आज के दिन हो वैसा मैं परमेश्वर के
४ मार्ग में सरगर्म था। और मैं ने इस पंथ का यहां तक

वैर किया कि पुरुष और स्त्रियां बांधके बन्दीगृह में डालके चाहा कि उन्हें मार डालूं। महायाजक और ५ प्राचीनों की सारी मण्डली भी मेरे साक्षी हैं कि उन से मैं भाइयों के लिये पत्री भी लेके दमिश्क को चला कि जो वहां होवें उन्हें मैं बांधके दण्ड दिलाने को यरूसलम में लाऊं। जब मैं चला जाता था और दमिश्क के ६ पास पहुंचा तब ऐसा हुआ कि दो पहर की अटकल में अचानक स्वर्ग से बड़ी ज्योति मेरी चारों ओर चमकी। और मैं भूमि पर गिर पड़ा और एक वाणी मुझ से ७ कहती हुई सुनी कि हे साऊल हे साऊल तू मुझे क्यों सताता है। तब मैं ने उत्तर देके कहा हे प्रभु तू कौन ८ है; उस ने मुझ से कहा मैं यिसू नासरी हूं जिसे तू सताता है। और मेरे संगियों ने उस ज्योति को तो ९ देखा और डर गये परन्तु जो मुझ से बोलता था उस की बात न समझी। मैं ने कहा हे प्रभु मैं क्या करूं; १० प्रभु ने मुझे आज्ञा दिई कि उठ और दमिश्क को जा और वहां सारी बातें जो तेरे करने के लिये ठहराई गई हैं सो तुझे कही जायेंगी। और जब मैं उस ज्यो- ११ ति के तेज के मारे देख न सका तब मेरे संगियों ने मेरा हाथ पकड़के मुझे ले चले और मैं दमिश्क में आया। और हनानियाह नाम व्यवस्था की रीति का भक्त १२ जन जिस का यश वहां के सब रहनेवाले यहूदी लोग मानते थे। सो मेरे पास आया और खड़ा होके मुझ १३ से कहा हे भाई साऊल अपनी आंखों से देख; और

१४ उसी घड़ी मैं ने अपनी आंखों से उस पर देखा। उस ने कहा हमारे पितरों के परमेश्वर ने तुझे इस लिये ठहरा रखा है कि तू उस की इच्छा को जाने और उस
१५ धर्म्मी को देखे और उस के मुंह की वाणी सुने। क्योंकि जो बातें तू ने देखीं और सुनों हैं उन का साक्षी तू
१६ सब लोगों के आगे होगा। और अब तू क्यों विलम्ब करता है ; उठके बपतिसमा ले और प्रभु का नाम ले-
१७ के अपने पापों को धो डाल। और जब मैं यरूसलम में फिर आया और मन्दिर में प्रार्थना करता था तब ऐसा
१८ हुआ कि मैं बेसुध हो गया। और उस को देखा और वह मुझ से कहता था फुर्त्ती कर के यरूसलम से जल्द निकल जा क्योंकि मेरे विषय में वे तेरी साक्षी ग्रहण न
१९ करेंगे। मैं ने कहा हे प्रभु वे तो जानते हैं कि जो तुझ पर विश्वास लाये उन्हें मैं बन्दीगृह में डालता रहा और हर एक मण्डलीघर में उन्हें कोड़े मारा किया।
२० और जब तेरे साक्षी स्तिफान का लोहू बहाया गया तब मैं भी वहां खड़ा होके उस के घात होने से सन्तुष्ट हुआ और उस के वधकों के वस्त्रों की रखवाली करता
२१ था। तब उस ने मुझे आज्ञा दिई जा क्योंकि मैं तुझे अन्यदेशियों के पास दूर भेजूंगा।

२२ इस बात तक लोगों ने उस की सुनी तब वे पुकार उठके बोले कि ऐसे को भूमि पर से उठा डाल क्योंकि
२३ इस का जीता रहना उचित नहीं है। और जब वे पु-
२४ कारके और अपने कपड़े फेंकके धूल उड़ाते थे। तब

पलटनपति ने उसे गढ़ में ले जाने की आज्ञा किई और कहा उसे कोड़े मारके बातें निचोड़ो जिसतें जाना जाय कि लोग क्यों उस पर ऐसी धूम करते हैं। २५ और जब वे उसे तस्मों से जकड़ते थे तब पौलुस ने पास खड़े हुए शतपति से कहा क्या यह बात तुम्हें उचित है कि एक मनुष्य को जो रूमी है और जिस पर कुछ दोष ठहराया नहीं गया है तुम कोड़े मारो। २६ शतपति ने यह सुनके पलटनपति पास जाके कहा सावधान हो कि तू क्या किया चाहता है क्योंकि यह मनुष्य तो रूमी है। २७ पलटनपति ने पास आके उस से कहा मुझे बता क्या तू रूमी है; उस ने कहा कि हां। २८ पलटनपति ने कहा मैं ने बहुत सा रूपैया देके यह अधिकार पाया; पौलुस बोला परन्तु मैं तो ऐसा ही उत्पन्न हुआ। २९ तब जो उस से बातें निचोड़ा चाहते थे उन्हों ने वोंहीं उस से हाथ उठाये और पलटनपति भी यह जानके कि वह रूमी है और मैं ने उसे जकड़ा था डर गया। ३० दूसरे दिन यहूदियों के अपवाद को ठिकाना करने के लिये उस ने उस की जंजीरें खोलीं और आज्ञा दिई कि प्रधान याजक और उन की सारी सभा आवे; फिर पौलुस को नीचे लाके उन के बीच में खड़ा किया॥

२३ पर्ब्ब

तब पौलुस ने सभा को ध्यान से देखके कहा हे भाइयो मैं आज लों परमेश्वर के आगे मन की सारी खराई से चला हूं। २ तब हननियाह महायाजक ने उन्हें जो उस के पास खड़े थे आज्ञा दिई कि उस के मुंह पर

३ थपेड़ा मारें। इस पर पौलुस ने उस से कहा हे चूना फेरी भीत पर मेश्वर तुझ को मारेगा क्या तू व्यवस्था की रीति पर मेरा न्याय करने को बैठा है और व्यवस्था के ४ बिरुद्ध मुझे मारने की आज्ञा करता है। तब जो पास खड़े थे सो कहने लगे क्या तू परमेश्वर के महायाजक ५ को बुरा कहता है। पौलुस ने कहा हे भाइयो मुझे सुरत नहीं थी कि महायाजक है क्योंकि लिखा है कि तू अपने लोगों के प्रधान को बुरा मत कह।

६ और जब पौलुस जान गया कि उन में कोई कोई सादूकी और कोई कोई फरीसी हैं तब सभा में पुकारा कि हे भाइयो मैं फरीसी हूं और फरीसी का पुत्र हूं; मृतकों के जी उठने की आशा के विषय में मुझ ७ पर दोष लगाया जाता है। जब उस ने यह कहा था ८ तब फरीसियों और सादूकियों में झगड़ा हुआ। और मण्डली के दो भाग हो गये क्योंकि सादूकी कहते हैं कि पुनरुत्थान नहीं है और न स्वर्गदूत है और न आत्मा है परन्तु फरीसी लोग दोनों को मानते हैं। ९ तब बड़ी धूम हुई और फरीसियों की ओर के अध्यापक उठे और झगड़के कहने लगे हम इस मनुष्य में कुछ बुराई नहीं पाते हैं फिर जो किसी आत्मा ने अथवा स्वर्गदूत ने इस से बातें किई हो तो हम लोग १० परमेश्वर से लड़ाई न करें। और जब बड़ा झगड़ा होने लगा तब पलटनपति ने इस खटके से कि वे पौलुस को कहीं टुकड़े न कर डालें जाके पलटन को आज्ञा

दिई कि उतरें और उसे उन के बीच में से बरबस कर-
के निकालें और गढ़ में ले आवें। अगली रात को प्रभु ११
ने उस के पास खड़ा होके कहा हे पौलुस ढाड़स बन्धे
रह क्योंकि जैसे तू ने मेरे विषय में यरूसलम में साची
दिई है वैसा ही तुझे रूम में भी साची देना होगा।

और जब दिन ज़ुआ यहूदियों में से कितनों ने एका १२
करके कहा कि जब लों पौलुस को हम मार न डालें
यदि कुछ खाय अथवा पीयें तो हम पर धिक्कार है।
और जिन्हों ने यह एका किया था सो चालीस जन से १३
ऊपर थे। उन्हों ने प्रधान याजकों और प्राचीनों के १४
पास आके कहा हम ने अपने ऊपर बड़ा धिक्कार लिया
है कि जब लों पौलुस को न मार डालें तब लों कुछ
खाना न छूवेंगे। सो तुम सभा से मिलके पलटनपति १५
से कहो कि कल उसे तुम्हारे पास निकाल लावे और
वह समझे कि तुम उस का समाचार और भी यतन से
विचार किया चाहते हो; फिर तुम्हारे पास न पज़ुंच-
ते ही हम उसे घात करने को तैयार रहेंगे। और १६
पौलुस का भांजा उन की घात की वार्त्ता सुनके गया
और गढ़ के भीतर आके पौलुस को कह दिया। इस १७
पर पौलुस ने शतपतियों में से एक को बुलाके कहा
कि इस तरुण को पलटनपति पास ले जा कि वह उसे
कुछ कहा चाहता है। सो उस ने उसे पलटनपति के १८
पास ले जाके कहा कि पौलुस बन्धुवे ने मुझे बुलाके
चाहा कि इस तरुण को तेरे पास लाऊं कि वह तुझ

१९ से कुछ कहा चाहता है। तब पलटनपति ने उस का हाथ पकड़के एकान्त में ले जा के उस से पूछा जो तेरा
२० मुझ से कहना है सो क्या है। उस ने कहा यहूदियों ने एका किया है कि तुझ से मांगें कि तू पौलुस को कल सभा में निकाल लावे और यह समझे कि वे उस का समाचार और भी यतन से बिचार किया चाहते हैं।
२१ पर तू उन की बात न मान क्योंकि उन में चालीस जन से ऊपर उस की घात में लग रहे हैं; उन्हों ने आपस में किरिया खाई है कि जब लों उसे मार न लें यदि हम कुछ खावें अथवा पीवें तो हम पर धिक्कार हो; और अब वे तैयार होके तेरी आज्ञा की बाट जोह रहे हैं।
२२ तब पलटनपति ने तरुण को बिदा करके कहा देख कोई न जाने कि तू ने मुझ पर ये बातें प्रगट किईं।
२३ और दो शतपति बुलाके उस ने कहा कैसरिया को जाने के लिये दो सौ सिपाही और सत्तर घुड़चढ़े
२४ और दो सौ भालैत पहर रात गये तैयार रखो। और पौलुस को चढ़ाने के लिये पशु सहेजो जिसतें उसे फे-
२५ लिकस अध्यक्ष के पास कुशलक्षेम से पहुंचावें। और
२६ उस ने इस रीति की पत्री लिखी। फेलिकस महामहि-
२७ मन अध्यक्ष को क्लौदियुस लिसियास का नमस्कार। इस मनुष्य को यहूदियों ने पकड़के मार डालने चाहा; मैं यह बूझके कि वह रूमी है पलटन लेके चढ़ गया और
२८ उसे छुड़ा लाया। और जब मैं ने जानने चाहा कि वे लोग उस पर किस बात का अपवाद करते हैं तब उसे

उन को सभा में ले गया। और उन की व्यवस्था के प्रश्नों के विषय में उस पर दोष लगाते पाया परन्तु उस के बध दण्ड के अथवा बन्ध में डालने के योग्य की बात मैं ने कुछ नहीं पाई। और जब मुझे सन्देश पहुंचा कि यहूदी लोग उस जन की घात में लगे हैं तब मैं ने झट उसे तेरे पास भेजा और उस के अपवादियों को भी आज्ञा दिई कि जो उस का दोष होवे सो तेरे आगे कहें; आगे शुभ। २९ ३०

तब सिपाहियों ने आज्ञा के समान पौलुस को लेके उसे रातोंरात अन्तीपातरिस में पहुंचाया। और बिहान होते घड़चढ़ों को छोड़ा कि उस के संग जायें और आप गढ़ को फिरे। कैसरिया में पहुंचकर उन्हों ने अध्यक्ष को पत्री दिई और पौलुस को भी उस के आगे किया। अध्यक्ष ने पत्री पढ़के पूछा कि वह किस देश का है; और उसे किलीकिया का बूझके। उस ने कहा जब तेरे अपवादी भी आवेंगे तब मैं तेरी सुनूंगा और उस ने आज्ञा दिई कि उसे हेरोदेस की कचहरी में बन्ध रखें॥ ३१ ३२ ३३ ३४ ३५

२४ पर्व्व

पांच दिन के पीछे महायाजक हननियाह ने प्राचीनों और तरतुल्लुस नाम एक सुवक्ता के संग वहां जाके अध्यक्ष के आगे पौलुस के दोष का बर्णन किया। और जब वह बुलाया गया तरतुल्लुस ने उस पर अपवाद लगाके कहा हे महामहिमन फेलिकस तेरे कारण से हम लोगों को बड़ा चैन मिलता है और तेरी प- २

वीणता से बक़ुत से शुभ कर्म्म इस देश के लोगों के
३ लिये होते हैं। यह हम बड़े धन्यबाद से हर समय
४ और हर स्थान में मान लेते हैं। तथापि जिसतें मैं
तुझे अधिक क्लेश न देऊं मैं तुझ से बिन्ती करता हूं
५ कि कृपा करके हमारी थोड़ीसी बातें सुन। हम ने
इस मनुष्य को महादड्डैत के ऐसा पाया और वह सारे
जगत के सब यहूदियों में दंगा मचानेहारा और
६ नासरियों के पन्थ का एक अगवा है। उस ने मन्दिर
को भी अपवित्र करने चाहा; सो उस को हम ने
पकड़के चाहा कि अपनी व्यवस्था की रीति पर उस
७ का न्याय करें। परन्तु लिसियास पलटनपति हम पर
आके बड़े बरबस से उस को हमारे हाथ से छीन ले
८ गया। और उस के अपवादियों को तेरे पास जाने की
आज्ञा किई; सो जिन जिन बातों का हम उस पर अप-
बाद करते हैं सो तू आप जांचके जान ले सकता है।
९ और यहूदियों ने भी उस का साथ देके कहा कि ये
बातें योंही हैं।

१० फिर जब अध्यक्ष ने पौलुस को सैन किई तब वह
उत्तर देके बोला मैं जानता हूं कि तू बक़ुत बरसों से
इस देश के लोगों का धर्माध्यक्ष है इस लिये मैं अधिक
११ ढाड़स से अपने निर्दोष होने का बर्णन करता हूं। क्यों-
कि तू समझ सकता है कि जब से मैं आराधना के लिये
यरूसलम को गया था तब से बारह दिन से अधिक
१२ नहीं ऊए। और उन्हों ने मुझे किसी के संग मन्दिर में

विवाद करते अथवा लोगों में दंगा मचाते नहीं पाया
और न मण्डलीघरों में और न नगर में। और जिन बा- १३
तों का वे मुझ पर दोष लगाते हैं सो वे भी सच नहीं
ठहरा सकते हैं। परन्तु मैं तेरे आगे यह बात मान १४
लेता हूं कि जिस धर्म्म को वे पन्थ कहते हैं उसी के
समान मैं अपने पितरों के परमेश्वर की उपासना कर-
ता हूं और जो बातें व्यवस्था और भविष्यतवक्ताओं में
लिखी हैं उन्हें मैं सच मानता हूं। और परमेश्वर से मैं १५
यह आशा रखता हूं जैसा कि वे भी मानते हैं कि मृतक
जो हैं क्या धर्मी क्या अधर्मी सो फिर जी उठेंगे। और १६
मैं इसी का साधना करता हूं कि परमेश्वर और मनुष्यों
के आगे कभी मेरा मन मुझे दोषी न ठहरावे। अब १७
कई बरसों के पीछे मैं भेंट चढ़ाने और अपने लोगों
के लिये दान पहुंचाने आया हूं। इस में आसिया के १८
कितने यहूदियों ने मुझ को मन्दिर में पवित्र किया
हुआ पाया पर भीड़ और धूम करते हुए नहीं पाया।
यदि वे मुझ में कुछ दोष पाते तो उचित था कि यहां १९
तेरे साम्हने आके अपवाद लगाते। अथवा ये ही आप २०
कहें कि जब मैं सभा के आगे खड़ा था क्या इन्हों ने तब
मुझ में कुछ बुराई पाई। केवल यह है कि मैं ने उन के २१
बीच में खड़े होके वह एक बाणी पुकारी कि मृतकों
के जी उठने के कारण आज तुम से मेरा विचार
किया जाता है।

फेलिक्स जो इस मार्ग को अच्छी रीति से जानता था २२

जब उस ने ये बातें सुनीं तब उस ने उन्हें टाल देके कहा जब लिसियास पलटनपति आवेगा तब मैं तुम्हारी बात निपटाऊंगा। २३ फिर उस ने एक शतपति को आज्ञा दिई कि पौलुस की रखवाली करे और उसे बिना छेड़ रखे और उस के जानपहचानों को उस की सेवा करने अथवा उस पास आने को न बरजे।

२४ कई दिनों के पीछे फेलिक्स ने अपनी स्त्री द्रूसिल्ला के संग जो यहूदिन थी आके पौलुस को बुला भेजा और उस से मसीह के मत की बात सुनी। २५ और जब वह धर्म्म और संयम और आनेहारे न्याय की बातें कह रहा था तब फेलिक्स भयातुर हुआ और उत्तर दिया अब तू जा मैं अवकाश पाके तुझे बुला भेजूंगा। २६ उसे आशा भी थी कि पौलुस उसे रुपैया देगा जिसतें उसे छोड़ देवे इस लिये उस ने उसे फिर फिर करके बुलवा भेजा २७ और उस से बातचीत करता रहा। और दो बरस पीछे फेलिक्स की जगह पर पोर्कियुस फस्तुस आया और फेलिक्स ने यहूदियों को सन्तुष्ट करने चाहा इस लिये पौलुस को बन्धवा छोड़ गया॥

२५ पर्ब्ब

जब फस्तुस ने उस देश में प्रवेश किया तब तीन दिन २ पीछे कैसरिया से यरूसलम को गया। तब महायाजक ने और यहूदियों के मुखिये लोगों ने उस के आगे ३ पौलुस के बिरुद्ध वार्त्ता करके उस से बिन्ती किई। और इतना अनुग्रह चाहा कि वह उसे यरूसलम में बुला ले; पर वे उसे मार्ग में मार डालने की घात में लगे थे।

तब फस्तुस ने उत्तर दिया कि पौलुस की रखवाली कैसरिया में होती है और मैं आप जल्द वहां जाने पर हूं। और जो तुम में से मेरे संग जा सकें सो चलें और जो इस जन में कुछ बुराई होय तो उस पर दोष देवें। ४ ५

सो उन में दस दिन से अधिक रहके वह कैसरिया को गया और दूसरे दिन न्याय की गद्दी पर बैठके उस ने पौलुस को लाने की आज्ञा किई। जब वह आया तब यहूदियों ने जो यरूसलम से आये थे उस के पास खड़े होके बहुत और भारी दोष जिन को ठहरा न सके पौलुस पर लगा रहे थे। तब वह अपने प्रत्युत्तर में कहने लगा मैं ने न तो यहूदियों की व्यवस्था का और न मन्दिर का और न कैसर का कुछ पाप किया। फस्तुस ने यहूदियों को प्रसन्न करने की इच्छा से पौलुस को उत्तर देके कहा क्या तू यरूसलम को जाने चाहता है कि वहां मेरे साम्हने इन बातों का निर्णय हो। पौलुस ने कहा मैं कैसर के न्यायस्थान में खड़ा हूं; यहीं मेरा न्याय किया चाहिये; यहूदियों का मैं ने कुछ अपराध नहीं किया है सो तू भी अच्छी रीति से जानता है। यदि मैं अपराधी हूं अथवा मैं ने बध दण्ड के योग्य कुछ किया है तो बध होने से मैं नहीं नकारता हूं पर जो बे दोष की बातें जो ये मुझ पर लगाते हैं बे ठौर ठिकाने हों तो कोई मुझे उन की इच्छा पर सौंप नहीं सकता है; मैं कैसर की दोहाई देता हूं तब फस्तुस ने मन्त्रियों से परामर्श करके उत्तर ६ ७ ८ ९ १० ११ १२

दिया कैसर की दोहाई तू ने दिई है कैसर ही के पास तू जायगा।

१३ और कितने दिनों के पीछे अग्रिप्पा राजा और बरनीके फस्तुस को नमस्कार करने के लिये कैसरिया १४ में आये। और जब वे बहुत दिन वहां रहे थे तब फस्तुस ने पौलुस का समाचार राजा से कहा कि एक १५ मनुष्य फेलिक्स का बन्ध में छोड़ा हुआ यहां है। जब मैं यरूसलम में था तब प्रधान याजकों और यहूदियों के प्राचीनों ने उस के विषय की वार्त्ता करके मुझ से १६ चाहा कि उस पर दण्ड की आज्ञा होवे। उन्हें मैं ने उत्तर दिया कि जब लों प्रतिवादी अपने वादियों के संमुख न होवे और वह अपवाद के उत्तर देने का अवकाश न पावे तब लों रूमियों का व्यवहार नहीं है १७ कि किसी जन पर बध दण्ड की आज्ञा देवें। सो जब वे यहां एकट्ठे होके आये तब मैं ने कुछ विलम्ब न करके बिहान ही को न्याय की गद्दी पर बैठके आज्ञा किई १८ कि उस जन को लाओ। फिर उस के वादियों ने खड़े होके जैसा अपवाद मैं समझता था वैसी कोई बात न १९ बताई। परन्तु वे अपने मत के और किसी यिसू के विषय में जो मर गया और जिसे पौलुस कहता था कि २० जीता है कुछ अपवाद उस पर करते थे। पर जब कि उस के विषय की बात में मुझे सन्देह था तब मैं ने उस से पूछा क्या तू यरूसलम को जाने चाहता है कि वहां २१ ये बातें निपटाये जावें। परन्तु जब पौलुस ने महारा-

जाधिराज की दोहाई देके बोला मेरा न्याय उस के निबटेरा पर छोड़ा जाय तब मैं ने आज्ञा दिई कि जब लों मैं उसे कैसर के पास न भेजूं तब लों उसे रखना।
२२ अग्रिप्पा ने फस्तुस से कहा मैं उस मनुष्य की आप भी सुना चाहता हूं; वह बोला कल तू उस की सुनेगा।

२३ और दूसरे दिन जब अग्रिप्पा और बरनीके बड़ी धूम धाम से पलटनपतियों और नगर के मुख्य लोगों के संग कचहरी में आये और फस्तुस की आज्ञा से पौलुस
२४ को लाये। तब फस्तुस ने कहा हे राजा अग्रिप्पा और हे सब मनुष्यो कि जो यहां हमारे साथ हो; तुम इस जन को देखते हो कि उस के कारण यहूदियों की सारी मण्डली यरूसलम में और यहां भी मेरे पीछे पड़े और पुकार रहे हैं कि उस का आगे को जीता रहना न
२५ चाहिये। परन्तु जब मैं ने देखा कि उस ने बध दण्ड के योग्य का कुछ काम नहीं किया और जब उस ने आप महाराजाधिराज की दोहाई दिई तब मैं ने उसे भेज
२६ देने का मन किया। उस के विषय में मुझे किसी बात का निश्चय नहीं है कि मैं अपने प्रभु को क्या लिखूं; इस लिये मैं उसे तुम्हारे आगे और निज करके हे राजा अग्रिप्पा तेरे आगे लाया हूं जिसतें मैं जांचने के पीछे
२७ कुछ लिख सकूं। क्योंकि किसी बन्धुवे को भेजना और उस पर जो अपवाद लगाये गये सो न बताना यह मुझे अनुचित बात समझ पड़ती है॥

२६ पर्व्व

तब अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा तुझे आज्ञा है कि

अपनी बात कह दे; तब पौलुस हाथ उठाके अपने
२ बचाव की बातें कहने लगा। कि हे राजा अग्रिप्पा मैं
अपने को भागमान जानता हूं कि आज के दिन तेरे
आगे उन सब दोषों से जो यहूदी लोग मुझ पर लगाते
हैं मैं अपने निर्दोष होने की बात सुना सकता हूं।
३ निज करके इस लिये कि तू यहूदियों के सारे व्यवहा-
रों और बातों को जानता है; सो मैं तुझ से बिन्ती
४ करता हूं कि धीरज धरके मेरी सुन। तरुणाई के समय
से जैसी कुछ मेरी चाल थी जो मैं आरंभ से यरूसलम
में अपने देश के लोगों में चलता था सो सब यहूदी
५ लोग जानते हैं। वे मुझे पहिले से जानके यदि चाह-
ते तो साक्षी दे सकते हैं कि मैं उन के मत के निपट
सिद्ध आचार के पन्थ के समान अर्थात फरीसी होके
६ चलता था। और अब उस बाचा की आशा रखने के
लिये जो परमेश्वर ने हमारे पितरों को दिया है मैं
७ न्यायस्थान में खड़ा किया गया हूं। और हमारे बारह
बंश रात दिन लौ लगाके आराधना करके उस बाचा
को पहुंचने की आशा रखते हैं हे राजा अग्रिप्पा इसी
आशा के कारण से यहूदियों ने मुझ पर दोष दिया
८ है। तुम यह बात क्यों बिश्वास के अयोग्य समझते हो
९ कि परमेश्वर मृतकों को जिलावे। हां मैं भी अपने
मन में समझता था कि यिसू नासरी के नाम के बिरुद्ध
१० बहुत कुछ किया चाहिये। सो भी मैं ने यरूसलम में
किया और प्रधान याजकों से अधिकार पाके बहुतेरे

सन्तों को बन्दीगृह में डाला और उन के घात होने से
मैं रीझ गया। और मैं ने बारंबार हर एक मण्डलीघर ११
में उन्हें ताड़ना दे देके बरबस उन से परमेश्वर की
निन्दा करवाई और उन पर निपट उन्मत्त होके मैं बि-
राने नगरों तक भी उन्हें सताता था। जब मैं इसी बात १२
के लिये प्रधान याजकों से अधिकार और आज्ञा पाके
दमिश्क को चला जाता था। तब दो पहर के समय में १३
हे राजा मैं ने मार्ग में क्या देखा कि स्वर्ग से एक ज्योति
सूर्य्य से अधिक तेजवन्त मेरी और मेरे संगी यात्रियों
को चारों ओर चमकी। और जब हम सब लोग भूमि १४
पर गिर पड़े तब मुझ से बोलती ऊई मैं ने एक बाणी
सुनी सो इबरानी भाषा में मुझ से कहती थी कि हे
साऊल हे साऊल तू मुझे क्यों सताता है आरों पर
लात मारना तेरे लिये कठिन है। तब मैं ने कहा हे १५
प्रभु तू कौन है; वह बोला मैं यिसू हूं जिसे तू सताता
है। अब उठ और खड़ा हो क्योंकि जो बातें तू ने देखीं १६
और जो बातें मैं तुझ पर प्रगट करूंगा उन का सेवक
और साक्षी तुझे ठहराने के लिये मैं तुझ पर प्रगट
ऊआ हूं। मैं तुझे इस देश के लोगों से और अन्य- १७
देशियों से कि जिन के पास अब मैं तुझे भेजता हूं
बचाऊंगा। जिसतें तू उन की आंखें खोल दे कि वे १८
अन्धियारे से उजाले को और शैतान के बश में से पर-
मेश्वर की ओर फिरें कि उन के पाप क्षमा किये जायें
और जो मुझ पर विश्वास लाने से पवित्र ऊए उन में वे

१९ अधिकार पावें। सो हे राजा अग्रिप्पा मैं स्वर्ग के दर्शन
२० का आज्ञाभंग करनेहार न ठहरा। परन्तु पहिले
दमिश्क और यरूसलम और सारे यहूदाह देश के लो-
गों को फिर अन्यदेशियों को जता दिया कि मन फिरा-
ओ और परमेश्वर की ओर फिरो और फिरे हुए मन
२१ के योग्य कार्य्य करो। इन्हीं बातों के लिये यहूदियों
ने मुझे मन्दिर में पकड़के मुझ को घात करने की
२२ युक्ति किई। पर परमेश्वर से उपकार पाके मैं आज
के दिन लों स्थिर रहा और छोटे बड़ों के आगे साक्षी
देता हूं और जो कुछ भविष्यतवक्ताओं ने और मूसा
ने कहा है कि होगा इस को छोड़ मैं कुछ नहीं कह-
२३ ता हूं। सो यह है कि मसीह दुःख उठावेगा और मृत-
कों में से जी उठनेवालों का पहिला होके इस देश के
लोगों और अन्यदेशियों पर उजाला प्रकाश करेगा।
२४ और जब वह यों अपने प्रतिवाद की बात कहता
था तब फस्तुस ने बड़े शब्द से कहा कि हे पौलुस तू
सिड़ी है विद्या की बहुताई ने तुझे सिड़ी कर दिया
२५ है। उस ने कहा हे महामहिमन फस्तुस मैं सिड़ी
नहीं हूं परन्तु सत्यता और सज्ञानता की बातें उच्चार-
ता हूं। कि राजा जिस के संमुख अब मैं निधड़क बोल-
२६ ता हूं सो ये बातें जानता है; और मुझे निश्चय है कि
उन में से कोई बात उस पर छिपी नहीं है क्योंकि
२७ यह बात कोने में नहीं हुई है। हे राजा अग्रिप्पा
तू भविष्यतवक्ताओं को मानता है कि नहीं; मैं जान-

ता हूं कि तू मानता है। तब अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा तनिक रहा कि तेरे समझाने से मैं क्रिस्तियान हो जाता। पौलुस बोला मैं तो परमेश्वर से चाहता हूं कि केवल तू ही नहीं परन्तु सब के सब जो आज मेरी सुनते हैं सो क्या तनिक में हों क्या अधिक में हों जैसा मैं हूं वैसे ही वे हो जावें पर इन जंजीरों को छोड़के। २८ २९

और जब उस ने यों कहा तब राजा और अध्यक्ष और बरनीके और उस के संग बैठनेहारे उठे। और निराले जाके आपस में कहने लगे यह मनुष्य तो वध दण्ड पाने के अथवा बन्ध में होने के योग्य कुछ नहीं करता है। अग्रिप्पा ने फक्तुस से कहा जो यह मनुष्य कैसर की दुहाई दिया न होता तो छूट सकता॥ ३० ३१ ३२

२७ पर्ब्ब

और जब हमारा जहाज पर इतालिया को जाना ठन चुका तब उन्हों ने पौलुस को और कितने और बन्धुवों को यूलियुस नाम महाराजी जथा के शतपति को सोंप दिया। और अद्रमित्ते के एक जहाज पर जो आसिया के तीर तीर जाने पर था चढ़के हम ने लंगर उठाया और अरिस्तर्खुस नाम थस्सलोनीके का एक मकदूनी हमारे संग था। दूसरे दिन हम सैदा में पहुंचे और यूलियुस ने पौलुस से सुशील करके उसे अपने मित्रों के पास जाने की छुट्टी दिई जिसतें उन के यहां सुखचैन पावे। फिर वहां से लंगर उठाके हम कुप्रस के नीचे से चले क्योंकि बयार साम्हने की २ ३ ४

५ थी। और हम किलीकिया और पंफीलिया के समुद्र से होके लीकिया के मीरा नगर में आये।

६ वहां शतपति ने एक इस्कन्दरिया का जहाज इतालिया को जाते ज़ए पाके हम को उस पर चढ़ाया।
७ और जब हम बज़त दिन धीरे धीरे चले गये और कठिनता से कनीदुस के साम्हने आये और बयार हमें आगे बढ़ने न देती थी तब हम क्रेते के नीचे से जाके
८ सलमूना के साम्हने आये। और कठिनता से वहां से आगे बढ़के शुभकोल नाम एक स्थान में आये और
९ लासीया नगर उस के परोस था। और जब बज़त दिन बीत गये और जहाज के चलने में जोखिम थी क्योंकि उपवास काल बीत गया था तब पौलुस ने उन्हें चिता-
१० के कहा। हे मनुष्यो मैं देखता हूं कि इस यात्रा में हानि और बज़त टूटी होगी केवल बोझे और जहाज की
११ नहीं परन्तु हमारे प्राणों की भी। परन्तु शतपति ने मांझी और जहाजपति की बातों को पौलुस की बा-
१२ तों से अधिक माना। और वह कोल जाड़ा काटने के लिये अच्छा नहीं था इस लिये लोगों ने बज़तेरा करके परामर्श दिया कि वहां से भी चल निकलें कि जो हो सके तो फुनीकी में पज़ंचके जाड़ा काटें; वह क्रेते का एक कोल दक्षिणपच्छिम और उत्तर-पच्छिम की ओर को था।

१३ और जब दक्षिना कुछ कुछ चलने लगी तब उन्हों ने समझा कि अब अपनी मनसा पाई; सो लंगर उठाके

क्रेते के पास से चले गये। परन्तु तनिक पीछे एक आंधी | १४
की बयार जिस का नाम यूरोक्लीदोन है उस पर
लगी। और जब जहाज उस के बश में आ पड़ा और | १५
बयार को संभाल न सका तब हम ने हाथ उठाके उसे
चलने दिया। और क्लौदे नाम एक टापू के तले से | १६
बह गये और बड़े ठक ठक से छोटी नाव को हाथ
लाये। उसे उठाके उन्हों ने अपने बचाव की तैयारी | १७
किई और जहाज को नीचे से बांधा और सिरतिस
नाम चोर बालू में धस जाने के खटके से हम ने जहाज
का पाल बाल गिरा दिया और यों उड़ाये गये। और | १८
जब हमें आंधी ने निपट सताया तब दूसरे दिन उन्हों
ने जहाज का बोझ फेंक दिया। और तीसरे दिन हम | १९
ने अपने हाथों से जहाज की सामग्री फेंक दिई। और | २०
जब बहुत दिन लों सूर्य्य और तारे दिखाई न दिये
और बड़ी आंधी चलती रही तब अन्त को बचने की
सारी आशा हम से जाती रही।

और बड़ी बेर लों उपासा रहने के पीछे पौलुस | २१
उन के बीच में खड़ा होके बोला कि साहिबो तुम्हें
मेरी सुनने और क्रेते से न खोलने को उचित था जिस-
तें यह हानि और टूटी न उठाते। तौ भी मैं अब | २२
तुम से बिन्ती करता हूं कि धीरज धरो क्योंकि तुम
में से किसी के प्राण का नाश न होगा परन्तु केवल
जहाज का होगा। क्योंकि परमेश्वर जिस का मैं हूं | २३
और जिस की सेवा मैं करता हूं उस के दूत ने रात

२४ को मेरे पास खड़ा होके कहा। हे पौलुस मत डर कि तुझे कैसर के आगे खड़ा होना है और देख जो लोग तेरे संग जहाज में हैं परमेश्वर ने इन
२५ सभों को तुझे दिया। इस लिये साहिबो तुम धीरज धरो क्योंकि मैं परमेश्वर पर बिश्वास रखता हूं कि
२६ जैसा मुझ से कहा गया वैसा ही होगा। परन्तु कि-
२७ सी टापू में हम अवश्य जा पड़ेंगे। जब चौदहवीं रात आई और हम अद्रिया को समुद्र के लहरों में टकरा रहे थे तब आधी रात के समय में जहाजियों ने अट-
२८ कल से जाना कि किसी देश के निकट पहुंचे। तब पानी की थाह लिई और बीस पुर्सा पाया; और थोड़ा आगे बढ़के फिर थाह लिई तब पन्द्रह पुर्सा पाया।
२९ और चटानी तीर पर पड़ने का खटका करके उन्हों ने जहाज की पतवार से चार लंगर डाले और बि-
३० हान होने की आशा में रहे। और जब जहाजियों ने जहाज से भागने चाहा और गलही पर से लंगर डालने की बात बनाके छोटी नाव को समुद्र में उतार-
३१ ने लगे। तब पौलुस ने शतपति और सिपाहियों से कहा जो ये लोग जहाज पर न रहें तो तुम लोग
३२ बच नहीं सकते हो। तब सिपाहियों ने छोटी नाव
३३ के रस्से काटके उसे बहा दिया। और जब दिन होने न पाया पौलुस ने सभों से बिन्ती किई कि कुछ खा लो और कहा आज चौदह दिन हुए कि तुम ऐसे बने रहे और उपास कर रहे हो और कुछ नहीं

खाया है। अब मैं तुम से बिन्ती करता हूं कुछ खा ३४
लो कि इस में तुम्हारा बचाव है क्योंकि तुम में से
किसी के सिर का एक बाल बीका न होगा। और ३५
यह कहके उस ने रोटी लेकर सभों के साम्हने पर-
मेश्वर का धन्य माना और तोड़के खाने लगा। तब उन ३६
सभों की ढाड़स बन्धी और उन्हों ने भी कुछ खाया।
और हम सब के सब जहाज पर दो सौ छिहत्तर ३७
प्राणी थे। और जब वे खाके सन्तुष्ट हुए तब उन्हों ३८
ने अनाज को समुद्र में फेंकके जहाज को हलका
किया। और जब दिन हुआ तब उन्हों ने उस भूमि ३९
को न पहिचाना परन्तु एक कोल देखा और उस का
घाट था; वहां उन्हों ने चाहा कि जो हो सके तो
जहाज को चढ़ा ले जावें। सो उन्हों ने लंगरों को ४०
काटके समुद्र में छोड़ा और पतवार की रस्सी खोली
और बयार के रुख पर छोटी पाल चढ़ाके घाट की
ओर चले। और एक स्थान जहां दो समुद्र मिले ४१
पहुंचके जहाज को तीर पर दौड़ा दिया; तब गलही
धक्का खाके फंस गई और लहरों के बल से पीछा
टूट गया। फिर सिपाहियों का यह परामर्श था ४२
कि बन्धुवों को मार डालें ऐसा न हो कि उन में से
कोई पैरके भाग जाय। परन्तु शतपति ने पौलुस ४३
को बचाने चाहा इस लिये उन को इस मनसा से
रोक रखके आज्ञा दिई कि जो लोग पैर सकते हैं
सो पहिले कूदके तीर पर जायें। और जो रहे सो ४४

कोई कोई सिल्लियों पर और कोई कोई जहाज के टुकड़ों पर गये और योंहीं सब के सब बचके भूमि पर पहुंचे॥

२८ पर्ब्ब

और उन के बच जाने के पीछे वे जान गये कि टापू का नाम मेलीता है। २ और वहां के जंगली लोगों ने हम सभों पर बड़ी हितकारी किई क्योंकि मेंह और जाड़े के कारण उन्हों ने आग सुलगाके हम सभों को पास बुलाया। ३ और जब पौलुस ने लकड़ियों की आंटी बटोरके आग में डाली तब एक नाग ताप पाके निकला और उस के हाथ पर लिपट गया। ४ तब उन जंगली लोगों ने वह कीड़ा उस के हाथ पर लिपटा देखकर आपस में कहा निश्चय यह मनुष्य हत्यारा है कि यद्यपि वह समुद्र से बच गया है तथापि डांडदाता उसे जीता नहीं छोड़ता। ५ पर उस ने उस कीड़े को आग में झटक दिया और उसे कुछ हानि नहीं पहुंची। ६ और वे देखते रहे कि वह कब सूज जायगा अथवा अचानक गिरके मर जायगा परंतु जब उन्हों ने बड़ी बेर लों अगोरके देखा कि उस का कुछ न बिगड़ा तब कुछ और समझके कहने लगे कि यह देवता है।

७ उस जगह के पास पोबलियुस नाम उस टापू के प्रधान की भूमी थी; उस ने हमें अपने घर ले जाके बड़े हित से तीन दिन लों हमारा शिष्टाचार किया। ८ और यों हुआ कि पोबलियुस का पिता ज्वर से और

आंवलोहू के रोग से पड़ा था; पौलुस ने उस के पास जाके प्रार्थना किई और उस पर हाथ रखके उसे चंगा किया। जब यह ज़ुआ तब और भी जो उस टापू में रोगी थे सो आये और चंगे ज़ुए। उन्हों ने भी बज़ुत आदर से हमारा संमान किया और जब हम चले गये तब जो कुछ हमें आवश्यक था सो उन्हों ने लाद दिया। और इस्कन्दरिया का एक जहाज जिस का चिन्ह दो देव बच्चे था और जिस ने उस टापू में जाड़ा काटा था उस पर हम तीन महीने के पीछे चल निकले। और सीराकूस में लंगर डालके तीन दिन रहे। फिर वहां से घूमके हम रेगियुम में आये; और एक दिन पीछे जब दखिना चली तब हम दूसरे दिन पुतियोली में पज़ुंचे। वहां हम ने भाई पाये और उन्हों ने हम से बिन्ती किई कि सात दिन हमारे पास रहो; और यों ही हम रूम को चले। वहां के भाइयों ने हमारे आने की बात सुनके अप्पीफोरुम और त्रिसरायलों हमारे मिलने को निकले और पौलुस ने उन्हें देखके परमेश्वर का धन्य माना और उस के जी में जी आया।

९ १० ११ १२ १३ १४ १५

और जब हम रूम में पज़ुंचे शतपति ने बन्धुवों को निज पलटन के प्रधान को सोंप दिया परन्तु पौलुस को आज्ञा ज़ुई कि अकेला एक पहरेवाले सिपाही के संग रहे। और तीन दिन के पीछे ऐसा ज़ुआ कि पौलुस ने यहूदियों के मुखिये लोगों को

१६ १७

बुलाया; जब वे एकट्ठे आये उस ने उन से कहा हे भाइयो मैं ने अपने देशी लोगों के अथवा पितरों के व्यवहारों के विरुद्ध कुछ नहीं किया तौभी उन्हों ने मुझे बन्ध में डालके यरूसलम से रूमियों के हाथ
१८ में सोंप दिया। उन्हों ने मुझे जांचके छोड़ देने चाहा क्योंकि उन्हों ने मेरे बध दण्ड का कोई कारण
१९ न पाया। पर जब यहूदी लोग विरोध की बातें कहने लगे तब मैं ने लाचारी से कैसर की दोहाई दिई पर इस लिये नहीं दिई कि मैं अपने देश के लोगों पर
२० किसी बात का दोष लगाऊं। सो इसी लिये मैं ने तुम्हें बुलाया कि तुम्हें देखूं और बात चीत करूं क्योंकि इसराएल की आशा के कारण से मैं इस जं-
२१ जीर से बन्धा हूं। उन्हों ने उस से कहा हम लोगों ने तेरे विषय में यहूदाह से पत्री नहीं पाई और न किसी ने भाइयों में से आके तेरा कुछ सन्देह दिया अथवा
२२ कुछ तेरी बुराई कही। परन्तु जो तू समझता है सो हम तुझ से सुनने चाहते हैं क्योंकि हम जानते हैं कि सब कहीं इस पन्थ के लोगों के विरुद्ध बोला
२३ जाता है। तब उन्हों ने उस के लिये एक दिन ठहराया और बहुतेरे लोग उस के डेरे पर आये; उस ने उन से परमेश्वर के राज्य पर साक्षी देके और मूसा की व्यवस्था और भविष्यतवक्ताओं की पुस्तकों से मसीह के विषय में प्रमाण लाके उन्हें समझाते हुए बिहान से लेके सांझ लों धर्मोपदेश किया।

तब कितनों ने उन बातों को माना और कितने लोग अबिश्वासी रहे। २४ जब वे आपस में एक मता न ऊए तब उन के चले जाने से पहिले पौलुस ने एक बात कही अर्थात पवित्र आत्मा ने हमारे पितरों से यसइयाह भविष्यतवक्ता के द्वारा ठीक कहा है। २५ कि इन लोगों के पास जा और कह कि तुम सुनते ऊए सुनोगे पर न समझोगे और देखते ऊए देखोगे पर तुम्हें न सूझेगा। २६ क्योंकि इन लोगों का मन कठोर हो गया और वे अपने कानों से ऊंचा सुनते हैं और अपनी आंखें उन्हों ने मूंद लिईं न होवे कि वे आंखों से देखें और कानों से सुनें और मन से समझें और फिराये जावें और मैं उन्हें चंगा करूं। २७ सो तुम जान रखो कि परमेश्वर का निस्तार अन्यदेशियों के पास भेजा गया है वे उसे सुन लेंगे। २८ जब वह ये बातें कह चुका तब यहूदी लोग आपस में बड़ा विवाद करते ऊए चले गये। २९

और पौलुस पूरे दो बरस अपने भाड़े के घर में रहा और जो उस के पास आते थे सभों को आने दिया। ३० और वह बड़े हियाव से और बिना रोक टोक परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता और प्रभु यिसू मसीह की बातें सिखाता रहा॥ ३१

पैालुस की पत्री

रूमियों को।

१ पर्व्व

पैालुस यिसू मसीह का दास और बुलाया हुआ प्रेरित और परमेश्वर के मंगल समाचार के लिये अलग किया गया। जो उस ने अपने भविष्यतवक्ताओं के द्वारा से पवित्र पुस्तकों में प्रण किया। अर्थात उस के पुत्र हमारे प्रभु यिसू मसीह की बात; शरीर के संबंध से वह दाऊद के बंश से हुआ। फिर पवित्रता के आत्मा के संबंध से वह मृतकों में से जी उठने के दृढ़ प्रमाण से परमेश्वर का पुत्र ठहरा। उस से हम ने कृपा और प्रेरितत्व पाया कि सब देशों के लोग उस के नाम के लिये बिश्वास की आधीनता में लावें। उन में तुम लोग भी यिसू मसीह के बुलाये हुए हो। उन सभों को जो रूम में होके परमेश्वर के प्यारे और बुलाये हुए सन्त हैं लिखता है; हमारे पिता परमेश्वर से और प्रभु यिसू मसीह से कृपा और कुशल तुम पर होवे।

पहिले मैं यिसू मसीह के द्वारा से तुम सभों के लिये अपने परमेश्वर का धन्य मानता हूं कि तुम्हारे बिश्वास की चर्चा सारे जगत में होती है। क्योंकि परमेश्वर जिस की सेवा मैं अपने आत्मा से उस के पुत्र के मंगल समाचार में करता हूं सा मेरा साक्षी है कि मैं कैसा तुम्हारा स्मरण निरन्तर करता हूं। और सदा अपनी प्रार्थना में बिन्ती करता हूं कि जो परमेश्वर की इच्छा से मेरी यात्रा कुशल से होय ता तुम्हारे पास आऊं। क्योंकि मैं तुम से भेंट करने का तरसता हूं जिसतें मैं कोई आत्मिक दान तुम्हें पहुंचा दूं कि तुम लाग दृढ़ हो जाओ। अर्थात हम दोनों के बिश्वास के कारण जो तुम में और मुझ में है तुम्हारे संग मेरी ढाड़स बन्धाई जावे। और हे भाइयो मैं तुम को इस बात के अज्ञान रखने नहीं चाहता हूं कि मैं ने तुम्हारे पास आने का बारंबार मन किया था जिसतें जैसा मुझ को और देशों के लागों से फल मिला वैसा ही मैं कुछ तुम्हों से भी पाऊं परन्तु आज लों रुका रहा। क्योंकि जो यूनानी हैं और जो यूनानी नहीं हैं और जो ज्ञानी हैं और जो ज्ञानी नहीं हैं मैं दोनों का धारक हूं। सा मैं तुम को भी जो रूम में हो अपनी शक्ति भर मंगल समाचार सुनाने को तैयार हूं। क्योंकि मैं मसीह के मंगल समाचार से नहीं लजाता हूं इस लिये कि वह हर एक बिश्वास लानेहारे का निस्तार देने के लिये परमेश्वर का सामर्थ्य है पहिले यहूदी को फिर यूनानी को। क्योंकि

८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७

उस में परमेश्वर का धर्म बिश्वास से बिश्वास पर प्रगट होता है कि ऐसा लिखा है धर्मी बिश्वास से जीवेगा।
१८ क्योंकि जो मनुष्य सच्चाई को अधर्म से रोक रखते हैं उन की सारी दुष्टता और अधर्मता पर परमेश्वर का
१९ क्रोध स्वर्ग से प्रगट हुआ है। इस लिये कि परमेश्वर का जो कुछ कोई जान सकता है सो उन पर खुला है
२० क्योंकि परमेश्वर ने उसे उन पर खोल दिया है। इस लिये कि उस के अलख गुण अर्थात उस का अनादि अनन्त पराक्रम और परमेश्वरत्व जगत की उत्पत्ति से लेके उस के कार्य्यों को सोच बिचार करने से ऐसा पहचा-
२१ ना जाता है कि वे निरुत्तर हैं। क्योंकि यद्यपि उन्हों ने परमेश्वर को पहचाना तो भी परमेश्वर के योग्य की उन्हों ने उस की महिमा नहीं किई और उस का धन्य नहीं माना परन्तु अपनी भावनों में मूढ़ हो गये
२२ और उन के मतहीन मन अन्धियारे हो गये। वे आप
२३ को ज्ञानी ठहराके मूर्ख बन गये। और उन्हों ने अबि-नाशी परमेश्वर की महिमा को बिनाशमान मनुष्य की और पंछियों की और चौपायों की और रेंगनेहारे
२४ जन्तुओं की मूर्ति से बदल डाला। इस लिये परमेश्वर ने भी उन्हें उन के मनों की कामना पर उन्हें अशुद्धता में छोड़ दिया कि आपस में अपने शरीरों का अपमान
२५ करें। उन्हों ने परमेश्वर की सच्चाई को झूठ से बदल डाला और सृजनहार से अधिक सिरजी हुई बस्तु की पूजा और सेवा किई है; वह सृजनहार सर्वदा

स्तुति के योग्य है आमीन। इस कारण से परमेश्वर ने उन्हें मलीन कामना पर छोड़ दिया क्योंकि उन की स्त्रियों ने अपने जाति स्वभाव का काम उस से जो जाति स्वभाव से विरुद्ध है बदल डाला। और वैसा ही उन के पुरुष भी स्त्रियों से जो जाति स्वभाव का काम है सो छोड़कर आपस में अपनी कुकामना में जले; पुरुषों ने पुरुषों के संग लज्जा के कर्म किये और अपनी चूक का ठीक फल आप में पाया। और जब कि परमेश्वर को अपने ज्ञान में रखना उन्हें अच्छा न लगा तब परमेश्वर ने भी उन्हें मूढ़ बुद्धि में छोड़ दिया कि वे घिणौने कर्म करें। और वे सारे अधर्मता व्यभिचार बुराई लालच और दुष्टता से भर गये; और डाह और हत्या झगड़ा ठगाई और दुर्भाव से भरपूर हुए। और फुसफुसानेहारे चवाई परमेश्वर के वैरी अंधेर करनेहारे घमण्डी दम्भबक्की बुराइयों के उत्पादक माता पिता के आज्ञाभंजक। निर्बुद्धि लोग वाचाभंजक मयाहीन कठोरमन निर्दय लोग हुए। और यद्यपि वे परमेश्वर की आज्ञा जानते हैं कि ऐसे कार्य्य करनेहारे वधदण्ड के योग्य हैं तथापि वे केवल आप ही नहीं करते परन्तु करनेहारों से भी प्रसन्न होते हैं॥

२६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२

२ पर्व्व

सो हे मनुष्य जो दोष लगाता है कोई क्यों न हो तेरा कुछ उत्तर नहीं है क्योंकि जिस बात में तू दूसरे पर दोष लगाता है उस में तू आप को दोषी ठहराता है कि जो दोष तू लगाता है तू वही कर्म करता

२ है। परन्तु हम जानते हैं कि ऐसे कर्म करनेहारों पर
३ परमेश्वर की ओर से दण्ड की आज्ञा ठीक है। सो
हे मनुष्य तू जो ऐसे कर्म करनेहारों पर दोष लगाता
है और आप वही करता है क्या तू यह समझता है
४ कि तू परमेश्वर के न्याय से बच निकलेगा। अथवा
क्या तू उस की अत्यन्त दया और सहन और धीरज
को तुच्छ जानता है और यह नहीं जानता है कि पर-
५ मेश्वर की दया तेरा मन फिराने के लिये है। परन्तु
क्रोध के दिन और परमेश्वर के धर्मन्याय के प्रगट
होने के दिन के लिये तू अपनी कठोरता से और पछ-
तावाहीन मन से अपने ऊपर क्रोध चढ़ाता जाता है।
६ वह हर एक जन को उस के कर्मों की कमाई देगा।
७ जो लोग धुन धीर से धर्मकार्य्य करते करते महिमा
और आदर और अमरपद के चाहनेहारे हैं उन्हें वह
८ अनन्त जीवन देगा। फिर जो झगड़ालू हैं और सत्य
के अधीन नहीं पर अधर्म के अधीन हैं उन के ऊपर
९ जलजलाहट और क्रोध होगा। हर एक मनुष्य जो
बुराई करता है उस के प्राण पर बिपत्ति और कष्ट
१० होगा पहिले यहूदी पर फिर यूनानी पर। परन्तु हर
एक जन जो भलाई करता है उसे महिमा और आदर
और शान्ति मिलेगी पहिले यहूदी को फिर यूनानी
११ को। इस लिये कि परमेश्वर किसी जन का पक्षपात
नहीं करता है।

१२ क्योंकि जिन लोगों ने बिन व्यवस्था पाये पाप किया

है सो बिन व्यवस्था नाश भी होंगे और जिन्हों ने व्यवस्था में पाप किया है सो व्यवस्था से दण्ड की आज्ञा पावेंगे। १३ क्योंकि व्यवस्था के सुननेहारे तो परमेश्वर के आगे धर्म्मी नहीं ठहरते हैं परन्तु व्यवस्था के पालनकरनेहारे धर्म्मी ठहराये जायेंगे। १४ क्योंकि अन्यदेशी लोग जिन्हों को व्यवस्था नहीं मिली जब वे अपने स्वभाव से व्यवस्था की बातें करते हैं तब व्यवस्था न रखके वे आप ही अपनी व्यवस्था हैं। १५ वे व्यवस्था का सार अपने मनों में लिखा हुआ दिखाते हैं; उन का विवेचन इस की भी साक्षी देता है और उन की चिन्ताएं आपस में अब दोष लगाती हैं और अब निर्दोष ठहराती हैं। १६ जिस दिन में परमेश्वर मेरे मंगलसमाचार के समान यिसू मसीह के द्वारा से मनुष्यों की गुप्त बातों का न्याय करेगा उस दिन में वह होगा।

१७ देख तू यहूदी कहावता है और व्यवस्था पर आशा रखता है और परमेश्वर पर घमण्ड करता है। १८ और उस की इच्छा जानता है और व्यवस्था का उपदेश पाके विभेद की बातों का विवेचक है। १९ और आप को निश्चय करके जानता है कि मैं अंधों का अगवा और जो अन्धियारे में हैं उन का मैं उजाला हूं। २० और मूर्खों का उपदेशक और बालकों का सिच्छक हूं और ज्ञान का और सच्चाई का ढब जैसा कि व्यवस्था में है वैसा मेरे पास है। २१ फिर तू जो दूसरे को सिखाता है क्या तू आप को नहीं सिखाता; तू जो उपदेश करता है कि चोरी

२२ मत कर क्या तू आप ही चोरी करता है। तू जो कहता है कि परस्त्रीगमन मत कर क्या तू आप ही परस्त्रीगमन करता है; तू जो मूर्तों से घिण करता है क्या तू
२३ आप ही मन्दिर को लूटता है। तू जो व्यवस्था पर घमण्ड करता है क्या तू व्यवस्था से उलटा करके पर-
२४ मेश्वर का अपमान करता है। कि ऐसा लिखा है कि अन्यदेशियों में तुम्हारे कारण परमेश्वर के नाम की निन्दा किई जाती है।

२५ जो तू व्यवस्था पर चले तो खतना से लाभ है परन्तु जो तू व्यवस्था से उलटा करे तो तेरा खतना अखतना
२६ ठहरा। सो यदि खतनाहीन लोग व्यवस्था की आज्ञाओं पर चलें तो उन का अखतना जो है क्या वह खतना
२७ न गिना जायगा। और यदि शरीर के खतनाहीन लोग व्यवस्था के समान चलें क्या वे तुझे जो पुस्तक और खतना मानके व्यवस्था से उलटा चलता है अप-
२८ राधी न ठहरावेंगे। क्योंकि जो बाहर ही से यहूदी है सो यहूदी नहीं है और खतना जो बाहर ही शरीर में
२९ है सो खतना नहीं है। परन्तु जो भीतर ही से यहूदी है सो ही यहूदी है और जो खतना मन में और आत्मा में है न कि अक्षर में सो ही खतना है; उस की बड़ाई मनुष्यों से तो नहीं परन्तु परमेश्वर से होती है॥

३ पर्ब्ब

सो यहूदी को अधिक क्या मिला और खतना का
२ क्या लाभ है। समस्त प्रकार से बहुत है निज करके यह है कि उन्हें परमेश्वर का बचन सौंपा गया है।

और यदि कोई कोई बिश्वास न लाये तो क्या हुआ | ३
क्या उन की अबिश्वासता परमेश्वर के बिश्वास को व्यर्थ
कर सकती है। ऐसा न होगा ; सब मनुष्य झूठे हों | ४
तो हों परन्तु परमेश्वर सच्चा है कि ऐसा भी लिखा
है अर्थात कि तू अपनी बातों में सच्चा ठहरे और जब
तेरा न्याय किया जाय तब जीत जाय। परन्तु यदि | ५
हमारा अधर्म परमेश्वर के धर्म को प्रगट करता है
तो हम क्या कहें ; क्या परमेश्वर अन्यायी नहीं है जो
उस पर क्रोध करे ; मैं तो मनुष्य की बूझ से बोलता
हूं। कधी नहीं होगा नहीं तो परमेश्वर क्योंकर जगत | ६
का न्याव करेगा। फिर यदि मेरे झूठ के कारण से | ७
परमेश्वर की सच्चाई अधिक निकलती और यों उस
की महिमा प्रकाश होती है तो किस लिये मेरा जैसा
पापी का न्याव किया जाता है। और जैसा कोई कोई | ८
हमारी निन्दा करके यह हमारा कहा हुआ बताते
हैं वैसा हम क्यों न कहें कि आओ बुराई करें जिसतें
भलाई निकले ; ऐसे लोगों पर दण्ड की आज्ञा ठीक
है।

अब क्या हुआ ; हमारा क्या अधिक ठहरा ; कुछ | ९
भी नहीं ; हम तो पहिले वर्णन कर चुके कि यहूदी
और यूनानी लोग सब के सब पाप के तले दबे हैं।
ऐसा भी लिखा है कि कोई धर्मी नहीं है एक भी नहीं। | १०
कोई समझनेहार नहीं है कोई परमेश्वर का खो- | ११
जिया नहीं है। सब लोग भूले भटके हैं सब के सब | १२

निकम्मे हैं कोई भला करनेहार नहीं एक भी नहीं
१३ है। उन का गला खुली ऊई कबर है ; अपनी जीभ से
उन्हों ने छल बल किया है ; उन के होंठों के नीचे
१४ संपोलियों का बिष है। उन्हों के मुंह धिक्कार और
१५ कड़वाहट से भरे ऊए हैं। उन के पांव लहू बहाने के
१६ लिये जलदी करते हैं। विनाश और सन्ताप उन के
१७ मार्गों में हैं। और कुशल का मार्ग उन्हों ने नहीं जा-
१८ ना। उन की आंखों के आगे परमेश्वर का भय नहीं
१९ है। अब हम जानते हैं कि व्यवस्था जो कुछ कहती है
सो व्यवस्था के लोगों से कहती है जिसतें हर एक का
मुंह बन्द होवे और सारा संसार परमेश्वर के आगे
२० दोषी ठहरे। इस लिये व्यवस्था के कर्मों से कोई मनुष्य
उस के आगे धर्मी ठहर नहीं सकता है क्योंकि व्यवस्था
से पाप की पहचान होती है।

२१ परन्तु अब परमेश्वर का धर्म व्यवस्था से न्यारे प्रगट
ऊआ है और उस पर व्यवस्था और भविष्यतवक्ताओं
२२ ने साची दिई है। अर्थात वह परमेश्वर का धर्म है
और यिसू मसीह पर बिश्वास लाने से सब के लिये है
और सब बिश्वासियों को मिलता है क्योंकि कुछ बीच
२३ नहीं है। इस लिये कि सब लोगों ने पाप किया है
२४ और परमेश्वर की महिमा से परे रहे हैं। और हम
उस की कृपा से उस छुड़ौती के कारण जो यिसू मसीह
२५ से ऊई संत ही धर्मी गिने जाते हैं। परमेश्वर ने उसे
उस के लोहू पर बिश्वास लाने के द्वारे से प्रायश्चित्त

ठहराया जिसतें वह गये समय के विषय में जिस में उस ने धीरज कर के पापों से आनाकाणी किई अपना धर्म प्रगट करे। और अब के समय के विषय में भी वह अपना धर्म प्रगट करे जिसतें वह आप ही धर्मी रहे और जो यिसू पर बिश्वास लावे उसे धर्मी ठहरावे। अब घमण्ड करना कहां रहा: उस की जगह ही न रही; किस व्यवस्था से; क्या कर्मों की; सो नहीं परन्तु बिश्वास की व्यवस्था से। सो हम यह सिद्धान्त निकालते हैं कि मनुष्य बिना व्यवस्था के कर्म किये से बिश्वास ही के कारण धर्मी गिना जाता है। क्या वह केवल यहूदियों का परमेश्वर है और अन्यदेशियों का नहीं है; निश्चय वह अन्यदेशियों का भी है। क्योंकि एक ही परमेश्वर है और वह खतना के लोगों को बिश्वास के कारण से और खतनाहीन लोगों को भी बिश्वास ही के द्वारा से धर्मी ठहरावेगा। सो क्या हम बिश्वास से व्यवस्था को व्यर्थ करते हैं; ऐसा न होवे परन्तु हम तो व्यवस्था को स्थापित करते हैं॥ | २६ २७ २८ २९ ३० ३१

४ पर्ब्ब

फिर हम क्या कहें कि हमारे पिता अबिरहाम ने शरीर के द्वारा से कुछ पाया है। क्योंकि जो अबिरहाम कर्म करने से धर्मी ठहरा तो उस की बड़ाई की जगह है तौभी परमेश्वर के आगे नहीं। क्योंकि धर्मग्रन्थ क्या कहता है; यह कहता है कि अबिरहाम परमेश्वर पर बिश्वास लाया और यह उस के लिये धर्म गिना गया। अब बनिहार को बन्नी देना कुछ दान नहीं है | २ ३ ४

५ परन्तु कमाई का फल है। पर जो कर्म नहीं करता परन्तु उस पर जो धर्महीन को धर्मी ठहराता है बिश्वास लाता है उसी का बिश्वास उस की धर्मता गिना
६ जाता है। इस के समान दाऊद भी उस मनुष्य की भागवानी का वर्णन करता है कि जिस को परमेश्वर
७ बिना कर्म से धर्मी गिनता है। कि कहता है जिन लोगों के अपराध छिमा किये गये श्रोर जिन के पाप
८ ढांपे गये सो धन्य हैं। जिस मनुष्य के पापों का लेखा
९ प्रभु न लेगा सो धन्य है। सो क्या यह भागवानी केवल खतना के लोगों के लिये है अथवा खतनाहीन लोगों के लिये भी है; हम तो कह चुके कि अबिरहाम
१० का बिश्वास उस की धर्मता गिना गया। सो वह कब गिना गया; क्या जब उस का खतना ज्ञत्रा था अथवा जब उस का खतना नहीं ज्ञत्रा था; जब खतना ज्ञत्रा था तब नहीं परन्तु जब खतना नहीं ज्ञत्रा था तब गिना
११ गया। श्रोर उस ने खतना का चिन्ह पाया कि जो उस के अखतना की दशा में उस के बिश्वास का धर्म था उस पर वह छाप होय जिसतें वह सभों का जो खतना-हीन होके बिश्वास लाते हैं पिता होय कि उन की
१२ श्रोर भी धर्म गिना जाय। श्रोर वह खतना के लोगों का भी पिता होय न केवल उन का जो खतना किये गये परन्तु जो हमारे पिता अबिरहाम के बिश्वास पर जब भी वह खतनाहीन था चलते हैं उन का भी वह
१३ पिता होय। क्योंकि जो बाचा अबिरहाम से अथवा

उस के वंश से ऊई कि तू जगत का अधिकारी होगा सो व्यवस्था के कारण से नहीं परन्तु बिश्वास के धर्म के कारण से किई गई। १४ क्योंकि यदि व्यवस्था के लोग अधिकारी होवें ताे बिश्वास व्यर्थ आैर बाचा निष्फल ठहरी। १५ क्योंकि व्यवस्था क्रोध का कारण होती है इस लिये कि जहां कहीं व्यवस्था नहीं तहां उल्लंघन भी नहीं है। १६ इस लिये वह बिश्वास के कारण ऊआ कि वह कृपा की बात ठहरे जिसतें वह बाचा वंश के लिये स्थिर होय; केवल व्यवस्थावाले वंश के लिये नहीं परन्तु जो लोग अबिरहाम का सा बिश्वास रखते हैं उन के लिये भी; वह हम सभों का पिता है। १७ क्यों- कि ऐसा लिखा है मैं ने तुझे बऊत से देशों के लोगों का पिता ठहराया है; परमेश्वर जिस पर वह बिश्वास लाया आैर जो मृतकों को जिलाता है आैर जो न होती ऊई वस्तुआें को होती ऊआें के समान बुलाता है उस के साम्हने वह हम सभों का पिता ठहरा। १८ जहां आशा की जगह न थी वहां वह आशा रखके बिश्वास लाया जिसतें जैसा कि लिखा है कि तेरा वंश ऐसा ही होगा वैसा वह बऊत देशों के लोगों का पिता होय। १९ वह बिश्वास में दुर्बल न ठहरा आैर न अपनी मरी सी देह को सोचा कि वह सैा बरस के निकट का था न सारा के मुरझाये ऊए गर्भ को सोचा। २० आैर वह अबिश्वासी न था जो परमेश्वर की बाचा पर सन्देह करे परन्तु बिश्वास में दृढ़ होके उस ने परमेश्वर की

२१ बड़ाई किई। और पूरा निश्चय किया कि जो कुछ उस
२२ ने बाचा किई है सो वह पूरा भी कर सकता है। इसी
२३ कारण यह उस के लिये धर्म गिना गया। फिर यह
बात कि यह उस के लिये धर्म गिना गया सो केवल
२४ उसी के लिये नहीं लिखी गई। परन्तु हमारे लिये
भी; कि जो हम लोग उस पर जिस ने हमारे प्रभु
यिसू को मृतकों में से जिलाया बिश्वास लावें तो वह
२५ हमारे लिये धर्म गिना जायगा। वह हमारे अपराधों
के कारण पकड़ा दिया गया और हमें धर्मी ठहराने
के लिये वह फिर जिलाया गया॥

५ पर्ब्ब

सो जब कि हम बिश्वास लाने से धर्मी ठहरे तो
हमारे प्रभु यिसू मसीह के कारण से हम में और
२ परमेश्वर में मेल हुआ। और उसी के कारण से हम
बिश्वास लाके उस कृपा में जिस पर हम स्थिर हैं
पहुंचते हैं और परमेश्वर के ऐश्वर्य्य की आशा पर
३ घमण्ड करते हैं। और केवल यही नहीं परन्तु हम
बिपत्ति पर भी घमण्ड करते हैं कि यह जानते हैं
४ कि बिपत्ति से धीरज उत्पन्न होता है। और धीरज
से परीक्षा; और परीक्षा से आशा उत्पन्न होती है।
५ और आशा लज्जित नहीं करती है क्योंकि पवित्र आ-
त्मा हमें दिया गया और उस की ओर से हमारे मनों
६ में परमेश्वर का प्रेम बहाया गया। क्योंकि जब हम
निर्बल थे तब ठीक समय में मसीह अधर्मियों के लिये
७ मूआ। अब किसी धर्मी के लिये अपना प्राण देना

कठिन है और क्या जाने किसी में यह साहस होय कि किसी भलाई करनेहारे के लिये अपना प्राण देय। ८ परन्तु परमेश्वर ने अपना प्रेम हम लोगों पर ऐसा प्रगट किया कि जब हम लोग पाप करते चले जाते ९ थे तब मसीह हमारे लिये मूआ। फिर यदि उस के लोहू से हम लोग धर्मी ठहरे तो कितना अधिक हम १० उस के द्वारा क्रोध से बच जायेंगे। क्योंकि जब परमेश्वर के बैरी होके हम उस के पुत्र की मृत्यु के कारण से मिलाये गये फिर अब मिलकर हम कितना अधिक ११ उस के जीवन से बच जायेंगे। और केवल यही नहीं परन्तु हम अपने प्रभु यिसू मसीह के कारण जिस के द्वारा से हम ने अब मिलाप पाई है परमेश्वर पर घमण्ड करते हैं।

१२ सो जैसा कि एक मनुष्य के कारण से पाप जगत में आया और पाप के कारण से मृत्यु आई वैसा ही मृत्यु सब मनुष्यों में व्यापी इस लिये कि सभों ने पाप किया। १३ क्योंकि व्यवस्था के प्रगट होने लों पाप तो जगत में था परन्तु जहां व्यवस्था नहीं है तहां पाप का लेखा नहीं १४ होता है। तिस पर भी मृत्यु ने आदम से लेके मूसा लों उन पर भी जिन्हों ने आदम के उल्लंघन के तुल्य का पाप नहीं किया था अधिकार पाया; वह उस आनेहारे का १५ चिन्ह था। तथापि यह नहीं कि जैसा अपराध है वैसा कृपा का दान भी हो क्योंकि जो एक ही के अपराध से बहुत लोग मर गये तो कितना अधिक परमेश्वर की

कृपा और दान एक ही मनुष्य अर्थात यिसू मसीह की
१६ कृपा से बहुत लोगों पर बहुत बड़ा हुआ। और जो
कुछ एक पापी से हुआ सो कृपा के दान के तुल्य नहीं
है क्योंकि एक ही अपराध से दण्ड की आज्ञा हुई परन्तु
कृपा का दान बहुत अपराधों से निर्दोष ठहराता है।
१७ क्योंकि यदि एक के अपराध से मृत्यु ने एक ही की ओर
से राज्य किया तो जो लोग कृपा की और धर्म के दान
की अधिकाई पाते हैं सो कितना अधिक एक के अर्थात
१८ यिसू मसीह के द्वारा से जीवन में राज्य करेंगे। सो
जैसा कि एक के अपराध के कारण से सारे मनुष्यों पर
दण्ड की आज्ञा हुई वैसा ही एक के धर्म के कारण से
१९ सारे मनुष्य जीवन के निर्दोषी ठहराये गये। क्योंकि
जैसा कि एक जन के आज्ञा भंग करने से बहुत से लोग
पापी ठहराये गये वैसा ही एक के आज्ञाकारी होने
२० से बहुत से लोग धर्मी ठहराये जायेंगे। और व्यवस्था
बीच में आई कि अपराध अधिक ठहरे परन्तु जहां पाप
अधिक हुआ तहां कृपा उस से बढ़के अधिक हुआ।
२१ जिसतें जैसा पाप ने मृत्यु के लिये राज्य किया वैसा ही
कृपा हमारे प्रभु यिसू मसीह के द्वारा से अनन्त जीवन
के लिये धर्म के कारण से राज्य करे॥

६ पर्ब्ब

सो हम क्या कहें; क्या हम पाप करते जावें जिसतें
२ कृपा अधिक होवे। ऐसा न होवे; हम लोग जो पाप
की ओर मरे हुए हैं फिर किस रीति से आगे को उस
३ में जीयेंगे। क्या तुम नहीं जानते हो कि हम में से

जिन्हों ने यिसू मसीह पर बपतिसमा पाया उन्हों ने उस की मृत्यु पर बपतिसमा पाया। ४ इस लिये मृत्यु पर बपतिसमा पाने के कारण से हम उस के संग गाड़े गये जिसतें जैसे पिता की महिमा से मसीह मृतकों में से जी उठा वैसे ही हम भी जीवन की नवीनता में चलें। ५ क्योंकि जो हम उस की मृत्यु की समानता में उस के संग बोये गये तो हम उस के जी उठने में भी उस के समान होंगे। ६ क्योंकि हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उस के संग क्रूस पर खैंचा गया है कि पाप का शरीर नष्ट होय जिसतें हम आगे को पाप के दास न रहें। ७ क्योंकि जो मर गया सो पाप से छूटा है। ८ फिर जो हम मसीह के संग मरे हैं तो हम निश्चय जानते हैं कि उस के संग भी जीयेंगे। ९ क्योंकि हम जानते हैं कि मसीह मृतकों में से जी उठके फिर नहीं मरने का; मृत्यु की प्रभुता उस पर आगे नहीं रही। १० क्योंकि जो वह मरा सो पाप के लिये एक बार मरा परन्तु जो वह जीता है सो परमेश्वर के लिये जीता है। ११ इसी रीति से तुम लोग भी आप को पाप की ओर मरे हुए जानो परन्तु परमेश्वर की ओर हमारे प्रभु यिसू मसीह में आप को जीता समझो। १२ इस लिये पाप तुम्हारे मरनेहार शरीर में राज्य न करने पावे कि तुम उस की कामनाओं में उस के बश में होओ। १३ और न तुम अपने अंग अधर्म के हथियार बन्ने के लिये पाप को सोंपो परन्तु तुम आप को जैसे मरके जी उठे हुए परमेश्वर

के हाथ सोंपो और अपने अंग धर्म के हथियार बन्ने के
१४ लिये परमेश्वर का सोंपो। कि पाप तुम पर प्रभुता
करने न पावेगा क्योंकि तुम व्यवस्था के अधिकार में
नहीं परन्तु कृपा के अधिकार में हो।

१५ फिर क्या; जो हम व्यवस्था के अधिकार में नहीं
परन्तु कृपा के अधिकार में हैं तो क्या हम इस लिये
१६ पाप करें; ऐसा न होवे। क्या तुम नहीं जानते कि जिस
किसी के अधीन होने का तुम आप का दास करके
सोंपो उस के तुम दास हो उस की तुम मानते हो;
चाहे पाप के; फिर उस का अन्त मृत्यु है; चाहे आज्ञा-
१७ धारण के; फिर उस का अन्त धर्म है। परन्तु धन्य पर-
मेश्वर का कि तुम जो आगे पाप के दास थे सो शिक्षा
१८ के सांचे में ढाले जाके मन से आधीन ऊए हो। और
१९ पाप से छूटके तुम धर्म के दास बने। तुम्हारे शरीर की
दुर्बलता के कारण मैं मनुष्य के समान बोलता हूं; सो
जैसे तुम ने अपने अंग अपवित्रता की दासता में और
अधर्म पर अधर्म करने का छोड़े थे वैसा ही अब अपने
२० अंग धर्म की दासता में पवित्रता के लिये सोंपो। क्योंकि
२१ जब तुम पाप के दास थे तब धर्म से न्यारे थे। और जिन
कामों से तुम अब लजाते हो उन्हों से तुम ने तब क्या
२२ फल पाया; क्योंकि उन का अन्त मृत्यु है। परन्तु अब
पाप से छूटके और परमेश्वर के दास बनके तुम पवित्र-
ता के लिये फल लाते हो और अन्त में अनन्त जीवन
२३ है। क्योंकि पाप का फल मृत्यु है परन्तु परमेश्वर का

दान हमारे प्रभु यिसू मसीह के कारण से अनन्त जीवन है।

हे भाइयो क्या तुम नहीं जानते हो क्योंकि मैं व्यवस्था के जाननेहारों से बोलता हूं कि जब लों मनुष्य जीता है तब लों वह व्यवस्था के अधीन है। २ क्योंकि बियाहता स्त्री अपने पति के जीते तक व्यवस्था से बन्धी हुई है परन्तु जो उस का पति मर जाय तो वह अपने पति की व्यवस्था से छूट गई। ३ फिर जो अपने पति के जीतेजी वह दूसरे पुरुष की हो जाय तो व्यभिचारिणी कहावेगी; पर जो उस का पति मर गया तो वह उस व्यवस्था से छूट गई; यद्यपि वह दूसरे पुरुष से बियाह करे तौभी वह व्यभिचारिणी नहीं ठहरी। ४ सो हे भाइयो तुम भी मसीह के शरीर से व्यवस्था की ओर मर गये हो जिसतें तुम दूसरे के अर्थात जो मर के जी उठा है उस के हो जाओ कि हम परमेश्वर के लिये फल लावें। ५ क्योंकि जब हम लोग शरीर में थे तब जो व्यवस्था के कारण से पापों की कामना थीं सो हमारे अंग अंग में मृत्यु के लिये फल लाने को व्यापती थीं। ६ परन्तु अब जो हम मर गये तो व्यवस्था से कि जिस के हम बन्ध में थे हम छूट गये कि हम लोग न अक्षर की प्राचीनता से पर आत्मा की नवीनता से सेवा करें।

७ सो अब हम क्या कहें; क्या यह कहें कि व्यवस्था पाप है; ऐसा न होवे; पर बिना व्यवस्था मैं तो पाप को नहीं जानता क्योंकि जो व्यवस्था न कहती कि तू

८ लालच मत कर तो मैं लालच को न जानता। परन्तु पाप ने आज्ञा के कारण से अवसर पाके मुझ में सब प्रकार की लालसा उत्पन्न किई क्योंकि बिना व्यवस्था पाप बेजान है। ९ कि बिना व्यवस्था मैं तो आगे जीता ही था परन्तु जब आज्ञा आई तब पाप जी उठा और मैं मर गया। १० और जो आज्ञा मेरे जीवन के लिये दिई गई थी सो मेरी मृत्यु का कारण हुआ। ११ क्योंकि पाप ने आज्ञा के कारण अवसर पाके मुझे ठगा और उसी के कारण मुझे मार डाला। १२ सो व्यवस्था तो पवित्र है और आज्ञा पवित्र है और सच्ची है और भली है।

१३ सो जो वस्तु भली है क्या वह मेरे लिये मृत्यु ठहरी; ऐसा न होवे; परन्तु पाप ने जिसतें उस की पापिष्ठता प्रगट होवे अच्छी वस्तु के कारण से मुझ में मृत्यु उत्पन्न किई जिसतें आज्ञा के कारण से पाप निपट पापिष्ठ ठहरे। १४ क्योंकि हम जानते हैं कि व्यवस्था आत्मिक है परन्तु मैं शारीरिक हूं और पाप के हाथ बिक गया हूं। १५ कि जो मैं करता हूं सो मुझे नहीं भावता है क्योंकि जो मैं चाहता हूं सो नहीं करता परन्तु जिस से मैं घिणाता हूं सो ही करता हूं। १६ सो जिसे नहीं किया चाहता हूं यदि वही करता हूं तो मैं मान लेता हूं कि व्यवस्था भली है। १७ फिर अब उस का करनेहार मैं ही नहीं हूं परन्तु जो पाप मुझ में वसता है सो ही है। १८ कि मैं जानता हूं कि मुझ में अर्थात मेरे शरीर में कोई अच्छी वस्तु नहीं वसती है क्योंकि मैं

चाहता तो हूं परन्तु जो अच्छा है सो करने नहीं पाता हूं। क्योंकि जो अच्छी बात मैं करने चाहता हूं सो नहीं करता परन्तु जो बुरी बात मैं करने नहीं चाहता हूं सो करता हूं। अब जिसे मैं नहीं चाहता जो मैं वही करता हूं तो फिर उस का करनेहार मैं ही नहीं हूं परन्तु पाप जो मुझ में बसता है सो ही है। सो मैं यह व्यवस्था पाता हूं कि जब मैं भला किया चाहता हूं तब बुराई पास ही धरी है। क्योंकि अन्तर की मनुष्यता से मैं परमेश्वर की व्यवस्था से प्रसन्न हूं। परन्तु दूसरी कोई व्यवस्था मैं अपने अंग अंग में देखता हूं; वह मेरे मन की व्यवस्था से लड़ती है और मुझे पाप की व्यवस्था का जो मेरे अंग अंग में है बन्धुवा करती है। आह मैं सन्तापी मनुष्य हूं कौन मुझे इस मृत्यु के शरीर से निस्तार करेगा। मैं परमेश्वर का धन्य मानता हूं हमारे प्रभु यिसू मसीह के द्वारा से; मैं अपने मन से परमेश्वर की व्यवस्था का दास हूं परन्तु शरीर से तो पाप की व्यवस्था का॥ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५

८ पर्ब्ब

अब जो लोग यिसू मसीह में हैं और शरीर को मानके नहीं परन्तु आत्मा को मानके चलते हैं उन पर दण्ड की कुछ आज्ञा नहीं है। क्योंकि जीवन के आत्मा की व्यवस्था ने जो यिसू मसीह में है मुझे पाप और मृत्यु की व्यवस्था से छुड़ाया है। इस लिये कि जो व्यवस्था से शरीर की निर्बलता के कारण न हो सका सो परमेश्वर से हुआ कि उस ने अपने पुत्र को | २ | ३

पाप के शरीर के रूप में और पाप के कारण भेज-
४ कर पाप पर शरीर में दण्ड की आज्ञा दिई। जिसतें
हम में जो शरीर को मानके नहीं परन्तु आत्मा को
५ मानके चलते हैं व्यवस्था का धर्म पूरा होवे। क्यों-
कि जो लोग शरीर को मानते हैं उन का स्वभाव शा-
रीरिक है परन्तु जो आत्मा को मानते हैं उन का
६ स्वभाव आत्मिक है। क्योंकि शारीरिक स्वभाव मृत्यु है
७ परन्तु आत्मिक स्वभाव जीवन और कुशल है। कि शा-
रीरिक स्वभाव परमेश्वर का बैर है क्योंकि वह पर-
मेश्वर की व्यवस्था के आधीन नहीं है और हो भी
८ नहीं सकता है। सो जो लोग शारीरिक हैं सो पर-
९ मेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते हैं। पर तुम लोग
शारीरिक नहीं हो परन्तु आत्मिक हो पर इतना
होय कि ईश्वर का आत्मा तुम में बसे; फिर जिस में
१० मसीह का आत्मा नहीं है सो उस का नहीं है। और
जो मसीह तुम में होय तो देह पाप के कारण मरी
११ है परन्तु आत्मा धर्म के कारण जीता है। फिर जिस
ने यिसू को मृतकों में से जिलाया यदि उस का आत्मा
तुम में बास करे तो जिस ने मसीह को मृतकों में से
जिलाया सो तुम्हारी मरनेहार देहों को भी अपने
उस आत्मा के द्वारा से जो तुम में बसता है जिलावे-
गा।

१२ सो हे भाइयो हम धारक हैं न तो शरीर के कि हम
१३ शरीर को मानके जीवें। इस लिये कि जो तुम लोग

शरीर को मानके जीओ तो मरोगे परन्तु जो आत्मा से तुम शरीर के कामों को मारो तो जीओगे। क्योंकि १४ जो जो परमेश्वर के आत्मा के चलाये चलते हैं सो सो परमेश्वर के पुत्र हैं। कि तुम्हें दासता का आत्मा नहीं १५ मिला कि फिर डरो परन्तु तुम ने पुत्रपन का आत्मा पाया है; उस से हम अब्बा हे पिता पुकारते हैं। फिर वह आत्मा आप ही हमारे आत्मा के संग साची १६ देता है कि हम परमेश्वर के बालक हैं। और जो बा- १७ लक ज़ए तो अधिकारी ठहरे परमेश्वर के अधिकारी और मसीह के संगी अधिकारी पर इतना होय कि हम लोग उस के संग दुःख उठावें जिसतें उस के संग महि- मा भी पावें। क्योंकि मैं समझता हूं कि इस समय के १८ दुःख जो हैं सो उस महिमा के साम्हने जो हम पर प्र- काश होनेहारी है कुछ गिन्ती में नहीं आती है। क्योंकि सृष्टि की अत्यन्त अपेचा परमेश्वर के पुत्रों की १९ प्रकाशता की आशा करती है। क्योंकि सृष्टि विनाश २० के आधीन ज़ई अपनी इच्छा से तो नहीं परन्तु आधीन करनेहारे के कारण से। इस आशा पर कि सृष्टि भी २१ नाश की दासता से छूटके परमेश्वर के बालकों के प्र- ताप के मोच्च को पज़ंचे। क्योंकि हम जानते हैं कि २२ सारी सृष्टि मिलके अब लों चीखें मारती है और उसे पीड़ें लगी हैं। और केवल वही नहीं परन्तु हम लोग २३ जिन्हों ने आत्मा का पहिला फल पाया है हम आप भी अपने में कराहते हैं और पुत्रपन को पज़ंचने का

अर्थात अपने शरीर की छुड़ौती का आसरा देखते हैं।
२४ क्योंकि हम लोग आशा से बच गये हैं परन्तु देखी
वस्तों की आशा तो कुछ आशा नहीं है इस लिये कि
जिसे कोई देखता है उस की वह क्योंकर आशा कर-
२५ ता है। परन्तु जिसे हम नहीं देखते हैं जो उस की
आशा हम करें तो धीरज धरके उस को पाने की बाट
२६ जोहते हैं। वैसा ही वह आत्मा भी हमारी दुर्बलता-
ओं में हमारा उपकार करता है क्योंकि जो कुछ प्रार्थ-
ना करके हमें मांगना अवश्य है सो हम नहीं जानते
हैं परन्तु वह आत्मा आप ही ऐसी आहें करके कि
जिन का उच्चारन हो नहीं सकता हमारी ओर से
२७ बिन्ती करता है। और जो मनों का जांचनेहारा है सो
जानता है कि आत्मा की क्या इच्छा है इस लिये कि वह
परमेश्वर की प्रसन्नता के समान सन्तों की ओर से
२८ बिन्ती करता है। फिर हम जानते हैं कि जो लोग
परमेश्वर को प्यार करते हैं उन की भलाई के लिये
सब बातें मिलके काम करती हैं; ये वे हैं जो उस के
२९ ठहराव के समान बुलाये हुए हैं। क्योंकि जिन्हें उस ने
आगे से जान लिया उन्हें उस ने आगे से ठहराया भी
कि वे उस के पुत्र के स्वरूप के समान होवें जिसतें वह
३० बहुत से भाइयों में पहिलौटा होवे। और जिन्हें उस
ने आगे से ठहराया उन्हें उस ने बुलाया भी; और
जिन्हें उस ने बुलाया उन्हें उस ने धर्मी ठहराया भी;

और जिन्हें उस ने धर्म्मी ठहराया उन्हें उस ने महिमा को भी पहुंचाया।

सो हम इन बातों को क्या कहें; यह कहें कि जो परमेश्वर हमारी ओर होय तो कौन हमारे विरुद्ध होगा। जिस ने अपने पुत्र को भी न छोड़ा परन्तु उसे हम सभों के सन्ती दे दिया; तो वह उस के संग सब वस्तें हमें क्योंकर न देगा। परमेश्वर के चुने हुए लोगों पर कौन अपवाद करेगा; परमेश्वर है; वह उन का धर्म्मी ठहरानेहारा है। दण्ड की आज्ञा कौन देगा; मसीह है; वह मर गया है हां वह जी भी उठा है और वह परमेश्वर की दहिनी ओर भी है और हमारे लिये बिन्ती भी करता है। मसीह के प्रेम से हम को कौन अलग करेगा; क्या क्लेश क्या कष्ट क्या सताया जाना क्या अकाल क्या नंगा रहना क्या जोखिम क्या तलवार। क्योंकि यह लिखा है हम लोग तेरे लिये दिन भर मारे जाते हैं और बध की भेड़ों के समान गिने जाते हैं। परन्तु इन सब बातों में हम उस के कारण से जिस ने हम से प्रेम किया है जयवन्त लोगों से भी बढ़के होते हैं। क्योंकि मुझे निश्चय है कि न तो मरना न जीना न स्वर्गदूत न आधिपत्य न शक्त न अब की बातें न आवनेहारी बातें। न ऊंचाई न नीचाई न कोई दूसरी रचना हम को परमेश्वर के प्रेम से जो हमारे प्रभु मसीह यिसू में है अलग कर सकेगी॥

३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९

९ पर्ब्ब

मैं मसीह के साम्हने सच बोलता हूं झूठ नहीं

कहता और मेरा मन भी पवित्र आत्मा के द्वारा से
२ मेरा साक्षी है। कि मुझे बड़ा शोक है और मेरे मन
३ में सदा उदासी है। क्योंकि मैं यहां तक चाहता था
कि मैं अपने भाइयों के बदले जो शरीर के संबंध से
४ मेरे भाईबन्द हैं मसीह से त्यक्त होऊं। वे इसराएली
हैं; फिर पुत्रपन और महिमा और नियम और व्यवस्था
का पाना और आराधना और बाचा; ये सब उन के
५ हैं। और पिता लोग उन्हीं के हैं और शरीर के संबंध
से मसीह भी उन्हीं में से निकला; वह सभों के ऊपर
परमेश्वर नित स्तुत है आमीन।

६ परन्तु यह न समझा चाहिये कि परमेश्वर का बचन
अकार्थ हुआ है क्योंकि जो लोग इसराएल में से हैं
७ सो सब इसराएली नहीं हैं। और न अबिरहाम के
बंश होने के कारण से वे सब सन्तान ठहरे परन्तु
८ इसहाक ही से तेरा बंश कहा जायगा। अर्थात जो
केवल शरीर के सन्तान हैं सो परमेश्वर के सन्तान नहीं
हैं परन्तु जो बाचा के सन्तान हैं सो बंश ही गिने जाते
९ हैं। क्योंकि बाचा की बात यह है कि इसी समय में मैं
१० आऊंगा और सारा को पुत्र होगा। और केवल इतना
नहीं परन्तु जब रबका भी एक से अर्थात हमारे पिता
११ इसहाक से गर्भवती हुई। जब लड़के उत्पन्न भी न हुए
थे और न कुछ भला न बुरा किया था तब उस से कहा
१२ गया छोटे की दासता बड़ा करेगा। जिसतें परमेश्वर
के चुनने के समान उस का ठहराव स्थिर रहे कि कर्म

करने से नहीं परन्तु बुलानेहारे से होता है। यह उस लिखे के समान है कि याकूब से मैं ने प्रेम किया और एसौ से मैं ने बैर किया। १३

सो हम क्या कहें; क्या यह कहें कि परमेश्वर के यहां अधर्म है; ऐसा न होवे। क्योंकि वह मूसा से कहता है जिस पर मैं दया किया चाहता हूं उस पर दया करूंगा और जिस पर मैं अनुग्रह किया चाहता हूं उस पर अनुग्रह करूंगा। सो वह न चाहनेहारे से और न दौड़नेहारे से परन्तु परमेश्वर दया करनेहारे से होता है। और धर्मग्रन्थ फिर ऊन से कहता है मैं ने इस लिये तुझे बढ़ाया कि अपना पराक्रम तेरे द्वारा से प्रगट करूं और कि मेरा नाम सारी पृथिवी में बिदित होवे। सो जिस पर वह दया करने चाहता है उस पर वह दया करता है और जिसे चाहता है उसे कठोर करता है। १४ १५ १६ १७ १८

अब तू मुझ से यह कहेगा फिर वह क्यों दोष देता है; किस ने उस की इच्छा का सामना किया है। हे मनुष्य तू जो परमेश्वर से बिवाद करता है कौन है; क्या कोई बनाई हुई बस्तु अपने बनानेहार से कह सकती है तू ने मुझे क्यों ऐसा बनाया है। और क्या कुम्हार का मिट्टी पर पराक्रम नहीं है कि एक ही लोंदे से एक आदर का पात्र और दूसरा अनादर का पात्र बनावे। यदि परमेश्वर ने अपना क्रोध प्रगट करने के लिये और अपनी सामर्थ दिखाने के लिये क्रोध के १९ २० २१ २२

पात्रों को जो नष्ट होने के लिये तैयार किये गये बड़ी
२३ समाई से सह लिया। और अपनी महिमा की अधि-
काई दया के पात्रों पर जिन्हें उस ने महिमा के लिये
आगे से तैयार किया था प्रगट किया तो क्या हुआ।
२४ अर्थात हम लोगों पर जिन्हें उस ने बुलाया केवल यहू-
२५ दियों में से नहीं परन्तु अन्यदेशियों में से भी। इस के
समान वह होसिया की पुस्तक में भी कहता है कि मैं
आन लोगों को अपने लोग कहूंगा और जो प्यारी न
२६ थी उसे मैं प्यारी कहूंगा। और यों होगा कि जिस
स्थान में उन से कहा गया था कि तुम मेरे लोग नहीं
२७ हो वहां वे जीवते परमेश्वर के पुत्र कहावेंगे। यसइ-
याह इसराएल के विषय में पुकारता है कि यद्यपि
इसराएल के सन्तान गिन्ती में समुद्र की बालू के समान
२८ होवें तथापि उन में से थोड़े बचाये जायेंगे। क्योंकि
वह लेखा को समाप्त करके धर्म से फरचावेगा कि प्रभु
२९ पृथिवी पर लेखा फरचा करेगा। और यसइयाह ने
भी आगे यों कहा था कि जो सेनाओं का प्रभु हमारे
लिये वंश न बचाता तो हम लोग सदूम के समान और
अमूरा के तुल्य बन जाते।

३० सो अब हम क्या कहें; यह कहते हैं कि अन्यदेशी
लोग जो धर्म के खोज में न थे उन्हों ने धर्म को प्राप्त
किया अर्थात जो बिश्वास से निकलता है वही धर्म।
३१ परन्तु इसराएल धर्म की व्यवस्था का पीछा करके धर्म
३२ की व्यवस्था लों नहीं पहुंचा है। किस लिये; इस

लिये कि उन्हें ने बिस्वास से नहीं परन्तु व्यवस्था के कर्मों से समझके उस का खोज किया क्योंकि उन्हें ने उस ठोकर के पत्थर से ठोकर खाई। कि यों लिखा है देखो मैं सैहून में एक ठोकर का पत्थर और ठेस की चटान रखता हूं और जो कोई उस पर बिस्वास लाता है सो लज्जित न होगा॥ ३३

१० पर्ब्ब

हे भाइयो मेरे मन का अभिलाष और परमेश्वर से मेरी प्रार्थना इसराएल के लिये यह है कि वे निस्तार पावें। मैं उन का साक्षी हूं कि वे परमेश्वर के लिये सर्गरम हैं परन्तु ज्ञान सहित नहीं। क्यों- कि जब परमेश्वर के धर्म से वे अजान रहे और अप- ने ही धर्म को स्थापन करने चाहा तब वे परमेश्वर ही के धर्म के आधीन न ऊए। क्योंकि हर एक बिस्वा- सी के धर्म के लिये व्यवस्था का अन्त मसीह है। इस लिये कि व्यवस्था के धर्म का बर्णन मूसा यह कहके करता है कि जो मनुष्य उन कर्मों को करता है सो उन से जीता रहेगा। परन्तु जो बिस्वास का धर्म है सो यों बोलता है तू अपने मन में मत कह कि स्वर्ग को कैान चढ़ेगा ; अर्थात मसीह को उतार लाने को। अथवा गहिरापे में कैान उतरेगा ; अर्थात मसीह को मृतकों में से फेर लाने को। परन्तु वह क्या कहता है ; यह कहता है कि बचन तेरे पास ही है तेरे मुंह में है और तेरे मन में है अर्थात बिस्वास का बचन जिसे हम प्रचारते हैं सो ही है। क्योंकि जो तू अपने २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९

मुंह से प्रभु यिसू को मान लेवे और अपने मन से बिश्वास लावे कि परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जिलाया तो तू
१० मुक्ति पावेगा। कि धर्म के लिये मन से बिश्वास लाना है
११ और मुक्ति के लिये मुंह से मान लेना है। क्योंकि धर्मग्रन्थ यों कहता है जो कोई उस पर बिश्वास लाता है
१२ सो लज्जित न होगा। सो यहूदियों में और यूनानियों में कुछ बीच नहीं है क्योंकि जो सभों का प्रभु है सो सभों
१३ के लिये जो उस का नाम लेते हैं धनी है। क्योंकि जो कोई प्रभु का नाम लेगा सो ही मुक्ति पावेगा।

१४ फिर जिस पर वे बिश्वास नहीं लाये उस का नाम वे क्योंकर लेवें; और जिस का समाचार उन्हों ने नहीं सुना उस पर वे क्योंकर बिश्वास लावें; और प्र-
१५ चार करनेहार बिना वे क्योंकर सुनें। और जब लों लोग भेजे न जावें तब लों वे क्योंकर प्रचार करें; कि ऐसा लिखा है जो लोग शान्ति का मंगल समाचार सुनाते हैं और उत्तम बातों का सुसन्देश देते हैं उन के
१६ पांव क्या ही सुन्दर हैं। परन्तु सभों ने मंगल समाचार को मान न लिया क्योंकि यसइयाह कहता है कि हे
१७ प्रभु हमारी बातों पर कौन बिश्वास लाया। सो बिश्वास तो सुन लेने से आता है और सुन लेना परमेश्वर के
१८ बचन से आता है। परन्तु मैं कहता हूं क्या उन्हों ने नहीं सुना है; निश्चय उन की बाणी तो सारी पृथिवी में गई और उन की बातें जगत के अन्त सिवानों लों
१९ पहुंचीं। परन्तु मैं कहता हूं क्या इसराएल ने न जा-

ना; मूसा ने तो पहिले कहा मैं तुम्हें पराये लोगों से झल दिलाऊंगा और अज्ञान लोगों से कोपित कराऊंगा। और यसइयाह बड़े साहस से कहता है जिन्हों ने मेरा खोज नहीं किया सो मुझे पा गये; जिन्हों ने मुझे नहीं पूछा उन पर मैं प्रगट हुआ। परन्तु इसराएल के विषय में वह यों कहता है एक कौम के लिये जो आज्ञा भंग करनेहार और बखेड़िये हैं मैं दिन भर अपने हाथ बढ़ाये हुए हूं॥ २० २१

११ पर्ब्ब

सो मैं यह कहता हूं क्या परमेश्वर ने अपने लोगों को त्याग किया; ऐसा न होवे; क्योंकि मैं भी इसराएली हूं अबिरहाम के बंश का और बन्यामीन के घराने का। परमेश्वर ने अपने लोगों को जिन्हें उस ने आगे से जान लिया उन्हें उस ने त्याग नहीं किया; इलियाह के विषय में जो धर्मग्रन्थ कहता है क्या तुम वह नहीं जानते हो; वह क्योंकर इसराएल के ऊपर परमेश्वर की दोहाई देके कहता है। कि हे प्रभु तेरे भविष्यतवक्ताओं को उन्हों ने घात किया और तेरी यज्ञबेदियों को खोदके ढा दिया और मैं ही अकेला रह गया हूं और वे मेरा प्राण भी लेने चाहते हैं। परन्तु परमेश्वर की वाणी उस से क्या कहती है; यह कहती है सात सहस्र मनष्य कि जिन्हों ने बआल के आगे घुटने नहीं टेके हैं मैं ने अपने लिये बचा रखे हैं। सो इस समय में भी वैसा ही कितने लोग कृपा से चुने जाके बच रहे हैं। फिर यदि कृपा से है तो कर्म २ ३ ४ ५ ६

करने से नहीं है नहीं तो कृपा जो है सो कृपा न रहेगी; परन्तु यदि कर्म करने से है तो फिर कृपा कुछ नहीं रही नहीं तो कर्म जो है सो कर्म न रहेगा।

७ सो क्या हुआ; इसराएल जिस वस्तु को ढूंढता है सो उसे नहीं मिली परन्तु चुने हुए लोगों को मिली
८ है और जो लोग रहे सो अन्धे हो गये। कि यों लिखा है परमेश्वर ने आज के दिन लों उन्हें ऊंघनेहार आत्मा दिया; आंखें जो न देखें और कान जो न सुनें
९ सो उन्हें दिये हैं। फिर दाऊद कहता है उन का मेज जो है सो जाल और फन्दा और ठोकर का पत्थर
१० और डांड बन जावे। उन की आंखें अंधियारी हो जावें कि देख न सकें और उन की पीठ को तू सदा झुका रख।

११ सो मैं कहता हूं क्या उन्हों ने इस लिये ठोकर खाई है कि गिर पड़ें; ऐसा न होवे; परन्तु उन के गिरने से अन्यदेशियों को निस्तार मिला कि वे उन्हें
१२ हिसका दिलावें। फिर जो उन का गिरना जगत के लिये धन हुआ और जो उन की घटी अन्यदेशियों के लिये धन हुआ तो कितना अधिक उन की भरती धन
१३ न होगी। मैं अन्यदेशियों का प्रेरित होकर तुम अन्यदेशियों से बोलता हूं और अपनी सेवकाई की बड़ाई
१४ करता हूं। जिसतें मैं अपने भाईबन्द को हिसका दि-
१५ लाऊं और उन में से कितनों को बचाऊं। कि जो उन का त्यक्त होना जगत के मिलाये जाने का कारण हुआ तो उन का आ मिलना कैसा कुछ होगा; मृतकों

१६ के जी उठने के ऐसा होगा। क्योंकि जो पहिला फल पवित्र होय तो पिण्डा वैसा ही होगा; और जो जड़ पवित्र होय तो डालियां वैसी ही होंगीं। १७ सो जो डालियों में से कई एक तोड़ी गईं और तू जंगली जलपाई होके उन का पैवन्द हुआ और जलपाई की जड़ और रस का भागी हुआ। १८ तो तू डालियों पर अभिमान मत कर और यदि अभिमान करे तो तू जड़ का आधार नहीं है परन्तु जड़ तेरा आधार है। १९ सो तू कहेगा कि डालियां इस लिये तोड़ी गईं जिसतें मैं पैवन्द होऊं। २० अच्छा वे अविश्वास के कारण तोड़ी गईं और तू बिश्वास के कारण से स्थिर है; अभिमान मत कर परन्तु डर। २१ क्योंकि जो परमेश्वर ने असली डालियों को न छोड़ा तो सावधान रह न हो कि तुझे भी न छोड़े।

२२ सो परमेश्वर की भलाई को और न्याव को देख; जो गिर गये हैं उन पर न्याव; और तुझ पर भलाई; पर इतना कि तू उस की भलाई पर स्थिर रहे और नहीं तो तू भी काटा जायगा। २३ फिर जो वे भी अविश्वासी न रहें तो पैवन्द किये जायेंगे क्योंकि परमेश्वर उन्हें फिर के पैवन्द कर सकता है। २४ इस लिये यदि तू उस जलपाई के पेड़ से जिस की जाति जंगली है काटा गया और जाति से उलटा अच्छी जलपाई के पेड़ में पैवन्द किया गया तो वे जो असली डालियां हैं सो अपनी ही जलपाई में कितना अधिक पैवन्द किई न जायेंगीं।

२५ हे भाइयो मैं नहीं चाहता हूं कि तुम इस भेद से अज्ञान रहो जिसतें तुम अपनी बुद्धि पर अभिमान मत करो कि इसराएल के बंश पर कुछ अन्धलापन आन पड़ा और जब लों अन्यदेशियों की भरती न होवे
२६ तब लों ऐसा ही होगा। सो सारा इसराएल बचाया जायगा कि ऐसा लिखा है सैहून से छुड़ानेहारा निकलेगा और वह याकूब से अधर्मता को दूर करेगा।
२७ और मेरा यह नियम उन के संग होगा जब मैं उन
२८ के पापों को क्षमा करूंगा। वे मंगल समाचार के विषय में तुम्हारे कारण वैरी हैं परन्तु चुने जाने के
२९ विषय में पितरों के कारण वे प्रिय हैं। क्योंकि परमेश्वर का दान और बुलावा सो पछतावा से परे है।
३० क्योंकि जैसा तुम लोग आगे परमेश्वर पर बिश्वास नहीं लाये थे परन्तु अब उन के अबिश्वास के कारण
३१ से तुम पर दया हुई। वैसा ही तुम पर दया होने के कारण से वे बिश्वास नहीं लाये जिसतें उन पर भी दया
३२ किई जाय। कि परमेश्वर ने उन सभों को अबिश्वासता के बन्ध में गिना जिसतें वह सब लोगों पर दया करे।

३३ वाह परमेश्वर के ज्ञान और बुद्धि की बहुतात की क्या ही गहिराई; उस के बिचार बूझने से क्या ही परे
३४ हैं और उस के मार्ग पता मिलने से क्या ही दूर हैं। कि प्रभु के मत को किस ने जाना है; अथवा कौन उस का
३५ मन्त्री हुआ। अथवा किस ने उसे पहिले कुछ दिया

है कि उसे फिर कुछ दिया जाय। क्योंकि उसी से और उसी के द्वारा और उसी के लिये सारी वस्तें ऊई हैं; उस की महिमा नित नित होती रहे आमीन॥ ३६

१२ पर्ब्ब

सो हे भाइयो मैं परमेश्वर की दया के द्वारा से तुम से बिन्ती करता हूं कि तुम लोग अपने शरीर परमेश्वर को समर्पण करो जिसतें वह जीता और पवित्र और ग्रहण योग्य बलिदान होय कि यह तुम्हारी सज्ञानी सेवा है। और इस संसार के ढब के समान मत हो जाओ परन्तु अपने मन की नवीनता करके दूसरे ढब के होते जाओ जिसतें तुम परमेश्वर की इच्छा को कि जो भली और ग्रहण योग्य और सिद्ध है सो बूझ लेओ। २ और मैं उस कृपा से जो मुझे दिई गई है तुम में से हर एक को कहता हूं कि अपनी मर्याद से अधिक आप को बड़ा मत समझो परन्तु जैसा परमेश्वर ने हर एक मनुष्य को बिश्वास का परिमाण बांट दिया वैसा तुम ठिकाने से अपने विषय में समझो। ३ क्योंकि जैसा हमारी एक देह में बऊत से अंग हैं और सब अंगों का वही एक काम नहीं है। ४ वैसा हम लोग जो बऊत से हैं मिलके मसीह की एक देह ऊए हैं और आपस में हम एक दूसरे के अंग हैं। ५ सो उस कृपा के समान जो हमें दिई गई है हम ने भिन्न भिन्न दान पाये; ६ सो यदि वह दान भविष्यवाणी का है तो वह बिश्वास के परिमाण के समान होवे। यदि सेवकाई का है तो हम सेवा में लगे रहें; ७ यदि कोई गुरु होय तो वह

८ सिच्छा देने में लगा रहे। यदि कोई उपदेशक होय तो वह उपदेश देने में बना रहे; यदि दानी होय तो सीधाई से दान देवे; यदि कोई अधिकर्म करे तो यतन से करे; यदि कोई दया करे तो जी खोलके करे।

९ प्रेम निष्कपट होय; बुराई से घिण करो भलाई से १० मिले रहो। भाइयों के से प्रेम से आपस में हितकारी करो; आदर मान करके दूसरे को आप से भला जा- ११ नो। काम करने में आलस न करो; आत्मा में लौ १२ लगाय रहो; प्रभु की सेवा करते रहो। आशा में आ- नन्द करो; दुःख में सहन करो; प्रार्थना करने में नित १३ लगे रहो। सन्तों की सकेत के भागी हो जाओ; १४ अतिथिओं की सेवा में बने रहो। अपने सतानेहारों का भला मनाओ; भला मनाओ धिक्कार मत करो। १५ आनन्द करनेहारों के संग आनन्द करो और रोने- १६ हारों के संग रोओ। आपस में एक सा मत रखो; अभिमानी मत होओ परन्तु दीन लोगों के संग दीन १७ हो जाओ; आप को बुद्धिमान मत समझो। बुराई के पलटे में किसी से बुराई मत करो; जो जो बातें सब १८ मनुष्यों के आगे भली हैं उन का अग्रसोच करो। जो हो सके तो अपनी शक्ति भर हर एक मनुष्य के संग मिले रहो।

१९ हे प्रिय अपना पलटा मत लेओ परन्तु क्रोध का मार्ग छोड़ देओ क्योंकि यह लिखा है प्रभु कहता है पलटा २० लेना मेरा काम है मैं ही डांड देऊंगा। सो यदि तेरा

वैरी भूखा होय तो उसे खाने को दे और यदि वह प्यासा होय तो उसे पीने को दे क्योंकि ऐसा करके तू उस के सिर पर आग के अंगारों का ढेर लगावेगा। २१ बुराई के वश में मत आ परन्तु भलाई से बुराई को जीत ले॥

१३ पर्व्व

हर एक प्राणी अधिकारियों के आधीन रहे; क्योंकि ऐसा कोई अधिकार नहीं है कि जो परमेश्वर की ओर से न हो; जितने अधिकार हैं सो परमेश्वर के ठहराये हुए हैं। २ सो जो कोई अधिकार का साम्हना करता है सो परमेश्वर की ठहराई हुई बात का साम्हना करता है फिर जो साम्हना करनेहारे हैं सो आप ही दण्ड पावेंगे। ३ क्योंकि धर्माध्यक्ष लोग तो सुकर्मियों को नहीं परन्तु कुकर्मियों को डरावनेहारे हैं; सो जो तू अधिकार से निडर रहा चाहता है तो भला कर और तेरा जस उस से होगा। ४ क्योंकि वह तेरी भलाई के लिये परमेश्वर का सेवक है परन्तु जो तू बुरा करे तो डर कि वह तलवार को बे काम हाथ धरे हुए नहीं है क्योंकि वह परमेश्वर का सेवक और बुराई करनेहारों के दण्ड के लिये डांडकरता है। ५ सो तुम लोग केवल क्रोध के भय से नहीं परन्तु धर्मबोध से भी आधीन रहो। ६ इस लिये तुम कर भी देओ कि वे परमेश्वर के सेवक हैं कि उसी काम में लगे रहें। ७ सो सभों का जो आवता हो भर देओ; जिसे कर दिया चाहिये उसे कर देओ; जिसे शुल्क

दिया चाहिये उसे शुल्क देओ; जिस से डरा चाहिये उस से डरो; जिसे आदर दिया चाहिये उसे आदर देओ।

८ आपस के प्यार को छोड़ किसी का कुछ मत धारो क्योंकि जो कोई औरों को प्यार करता है उस ने व्य-
९ वस्था को पूरा किया है। क्योंकि ये आज्ञा जो हैं कि तू परस्त्रीगमन मत कर तू हत्या मत कर तू चोरी मत कर तू झूठी साची मत दे तू लालच मत कर और और कोई आज्ञा जो हो उन का सारार्थ इसी एक बात में है अर्थात तू जैसा आप को प्यार करता है
१० वैसा अपने पड़ोसी को प्यार कर। प्यार अपने पड़ोसी को कुछ बुरा नहीं करता है इस लिये प्यार करना सो व्यवस्था को पूरा करना है।

११ और तुम लोग समय को जानके ऐसा करो इस लिये कि नींद से जाग उठने की घड़ी अब आन पहुंची है क्योंकि जिस समय हम लोग बिश्वास लाये तब से
१२ हमारी मुक्ति अब समीप है। रात बहुत गई और भोर हुआ चाहती है इस लिये अंधियारे के काम हम
१३ त्याग करें और उजाले के हथियार बांधें। और जैसे कि दिन को चाहिये वैसी ठीक चाल हम चलें न कि भोग बिलास और मतवालपन से न कि छिनाले और
१४ चंचलाई से न कि झगड़े और डाह से। परन्तु प्रभु यिसू मसीह को पहिन लेओ; और शरीर की चिन्ता उस की कामनाओं को पालने के लिये मत करो॥

१४ पर्व्व

जो बिश्वास में निर्बल है उस को तुम ग्रहण करो परन्तु खटकों का बिवेचन करने के लिये नहीं। (२) एक बिश्वास करता है कि मैं सब प्रकार की बस्तु खा सकता हूं परन्तु जो निर्बल है सो केवल सागपात खाता है। (३) सो जो खाता है सो उस को जो नहीं खाता है तुच्छ न जाने; फिर जो नहीं खाता है सो खानेवाले पर दोष न लगावे क्योंकि परमेश्वर ने उसे ग्रहण किया है। (४) तू जो दूसरे के सेवक पर आज्ञा करता है कौन है; वह तो अपने ही स्वामी के आगे खड़ा है अथवा पड़ा है; हां वह खड़ा किया जायगा क्योंकि परमेश्वर उसे खड़ा करने को शक्तिमान है। (५) कोई मनुष्य एक दिन को दूसरे दिन से बड़ा मानता है और दूसरा कोई सब दिन एक ही मानता है; हर एक अपने अपने मन में पूरी प्रतीति रखे। (६) जो दिन को मानता है सो प्रभु के लिये मानता है फिर जो दिन को नहीं मानता है सो प्रभु के लिये नहीं मानता है; जो खाता है सो प्रभु के लिये खाता है क्यों-कि वह परमेश्वर का धन मानता है फिर जो नहीं खाता है सो प्रभु के लिये नहीं खाता है और परमेश्वर का धन मानता है। (७) क्योंकि हम में से कोई अपने लिये नहीं जी-ता है और कोई अपने लिये नहीं मरता है। (८) जो हम जी-ते हैं तो प्रभु के लिये जीते हैं और जो हम मरते हैं तो प्रभु के लिये मरते हैं इस लिये क्या जीते क्या मरते हम प्रभु ही के हैं। (९) क्योंकि मसीह इसी बात के लिये मरा और उठा और फिर जीया कि मृतकों और जीव-

१० तों का प्रभु ठहरे। परन्तु तू किस लिये अपने भाई पर दोष लगाता है; अथवा तू किस लिये अपने भाई को तुच्छ जानता है क्योंकि हम सब लोग मसीह की
११ न्याय की गद्दी के आगे खड़े किये जायेंगे। क्योंकि ऐसा लिखा है कि प्रभु कहता है अपने जीवन की सोंह हर एक घुटना मेरे आगे झुकेगा और हर एक जीभ
१२ परमेश्वर के आगे मान लेगी। सो हर एक हम में
१३ से परमेश्वर को अपना अपना लेखा देगा। इस लिये हम एक दूसरे पर दोष न लगावें परन्तु यह हम बिचार करें कि जो कुछ मेरे भाई के लिये ठोकर की बात होय अथवा उस के गिरने का कारण होय सो मैं उस
१४ के आगे न रखूं। मैं जानता हूं और प्रभु यिसू मसीह से मेरा निश्चय ज़ुआ है कि कोई बस्तु आप ही अपवित्र नहीं है परन्तु यदि कोई किसी बस्तु को अपवित्र
१५ समझता है उस के लिये वह अपवित्र है। यदि तेरा भाई तेरे भोजन से उदास होवे तो तू प्रेम की रीति पर नहीं चलता है; जिस के लिये मसीह मरा उस
१६ को तू अपने भोजन से नाश मत कर। सो अपनी
१७ अच्छी बात की निन्दा मत कराओ। क्योंकि परमेश्वर का राज्य जो है सो न खाना है न पीना है परन्तु धर्म
१८ और शान्ति और पवित्र आत्मा से आनन्द है। और जो कोई इन्हीं में मसीह की सेवा करता है सोई परमेश्वर का प्रसन्न किया ज़ुआ और मनुष्यों का
१९ सराहा ज़ुआ है। इस लिये आओ जो जो बातें मेल

मिलाप की होवें और जिन से एक दूसरे को सुधारे उन का हम पीछा करें। भोजन के लिये तू परमेश्वर के कार्य्य को मत बिगाड़; सारी वस्तें तो पवित्र हैं परन्तु जो मनुष्य भोजन करके ठोकर खाता है उस के लिये वह बुरा है। यदि तू मांस न खाय मदिरा न पीये और कोई बात जिस से तेरा भाई धक्का अथवा ठोकर खाय अथवा निर्बल हो जाय न करे तो भला करता है। क्या तेरा बिश्वास है; भला परमेश्वर के आगे तू उसे अपने लिये रख; जो बात किसी को अच्छा लगे यदि वह आप को इस में दोषी न जाने वह जन धन्य है। परन्तु जो खटका रखके खाता है सो दोषी ठहरा इस लिये कि वह बिश्वास नहीं करके खाता है क्योंकि जो कुछ बिश्वास से बाहर है सो पाप है॥ २० २१ २२ २३

१५ पर्व्व

सो हम लोगों को जो शक्तिमान हैं चाहिये कि शक्तिहीनों की दुर्बलताओं को सह लें और अपने से सन्तुष्ट न होवें। हम में से हर एक अपने पड़ोसी की भलाई के लिये और उस के बन जाने के लिये उसे सन्तुष्ट करे। क्योंकि मसीह भी आप को सन्तुष्ट करने की बात न चाहता था पर जैसा लिखा है कि तेरे निन्दकों की निन्दा मुझ पर आ पड़ी वैसा हुआ। क्योंकि जो कुछ आगे लिखा गया सो हमारी शिक्षा के लिये लिखा गया जिसतें हम धीरज धरने से और धर्मग्रन्थ के संबोधन से भरोसा पावें। अब परमेश्वर जो धीरज २ ३ ४ ५

और संबोधन का दाता है तुम को यह देवे कि मसीह
६ यिसू के समान आपस में एक मन हो रहो। जिसतें
एक मत और एक बोली होके तुम परमेश्वर को जो
हमारे प्रभु यिसू मसीह का पिता है महिमा करो।
७ इस कारण हर एक तुम में से दूसरे को मिला लेवे जै-
सा कि मसीह ने भी हम लोगों को परमेश्वर की
महिमा के लिये मिला लिया।

८ अब मैं कहता हूं कि यिसू मसीह परमेश्वर की
सच्चाई के लिये खतना के लोगों का सेवक हुआ जिस-
तें जो बाचा पितरों से किई गईं थीं उन्हें वह पूरी करे।
९ और जिसतें अन्यदेशी लोग भी दया के कारण से पर-
मेश्वर की महिमा करें; कि ऐसा लिखा है इस कारण
मैं अन्यदेशियों के बीच में तुझे मान लेऊंगा और तेरा
१० नाम गाऊंगा। और फिर वह कहता है हे अन्यदे-
शियो तुम लोग उस के लोगों के संग आनन्द करो।
११ और फिर कि हे सारे अन्यदेशियो प्रभु की स्तुति करो
१२ और हे सारे लोगो उस का धन्यवाद करो। और फिर
यसइयाह कहता है यस्सी की जड़ होगी और अन्यदे-
शियों पर राज्य करने को एक जन उठेगा; उस पर
१३ अन्यदेशी लोग आशा रखेंगे। अब परमेश्वर जो आ-
शा का दाता है सो तुम को बिश्वास लाने के कारण
सारे आनन्द और कुशल से भरपूर करे जिसतें पवित्र
आत्मा के सामर्थ्य से तुम्हारी आशा बढ़ती चली जावे।

१४ और हे मेरे भाइयो तुम्हारे विषय में मैं निश्चय

जानता हूं कि तुम भलमनसी से भरपूर और सारे ज्ञान से भरे हो और एक दूसरे को समझा सकते हो। तिस पर हे भाइयो मैं ने हियाव करके तुम को चेत दिलाने की रीति से कुछ थोड़ा सा तुम्हें लिख भेजा; क्योंकि परमेश्वर ने मुझ पर इस लिये कृपा किई। कि मैं अन्यदेशियों के लिये यिसू मसीह का सेवक होके परमेश्वर के मंगल समाचार की सेवकाई करूं जिसतें अन्यदेशियों की भेंट पवित्र आत्मा से पवित्र होके ग्रहण किई जाय। सो उन बातों में जो परमेश्वर की हैं मैं यिसू मसीह के कारण घमण्ड कर सकता हूं। क्योंकि जो जो काम मसीह ने मुझ से करवाये कि मैं अचंभों और आश्चर्य्य कर्मों के सामर्थ्य से और परमेश्वर के आत्मा के पराक्रम से अन्यदेशियों को बचन से और कर्म से आधीन करूं उन से अधिक बोलने का मेरा हियाव नहीं है। सो यरूसलम से लेके चारों दिसा इल्लोरिकुम तक मैं ने मसीह के मंगल समाचार का प्रचार पूरा किया। फिर जहां जहां मसीह का नाम नहीं लिया गया तहां तहां मंगल समाचार सुनाने को मैं ने जतन किया; ऐसा न हो कि मैं दूसरे की नेव पर रहा रखूं। परन्तु मैं ने उस लिखे के समान किया कि जिन लोगों को उस की वार्ता न मिली थी सो देखेंगे और जिन्हों ने नहीं सुना था सो समझेंगे। | १५ १६ १७ १८ १९ २० २१

इसी कारण मैं तुम्हारे पास आने से बारंबार रुका रहा हूं। परन्तु अब इन देशों में जब जगह नहीं रही | २२ २३

और मैं बहुत बरसों से तुम से भेंट करने को चाहता
२४ आया हूं। सो जब मैं इसपानिया को यात्रा करूंगा तब
तुम्हारे पास आ जाऊंगा क्योंकि मैं उधर जाते हुए
तुम को देखने की आशा रखता हूं और तुम्हारे मिलन
से कुछ सन्तुष्ट होके तुम्हीं से उधर के लिये बिदा किया
जाऊं।

२५ परन्तु अब मैं सन्तों की सेवकाई करने के लिये यरू-
२६ सलम को जाता हूं। क्योंकि मकदूनिया और अखाया
के लोगों को अच्छा लगा कि यरूसलम के उन सन्तों के
२७ लिये जो दरिद्र हैं कुछ चन्दा करें। यह उन्हें अच्छा लगा
और सच वे उन के धारक ही हैं क्योंकि जब अन्यदेशी
लोग उन के आत्मिक पदार्थों के भागी हुए हैं तो उचित
है कि शारीरिक पदार्थों में ये लोग उन का उपकार
२८ करें। सो मैं यह काम पूरा करके और यह फल उन के
हाथ सोंपके तुम्हारे पास से होकर इसपानिया को
२९ जाऊंगा। और मैं जानता हूं कि मेरा आना तुम्हारे पास
मसीह के मंगल समाचार के बर की भरपूरी से होगा।

३० और हे भाइयो मैं प्रभु यिसू मसीह का और आत्मा
के प्रेम का कारण देके तुम से बिन्ती करता हूं कि तुम
मेरे लिये परमेश्वर की प्रार्थना करने में मेरे संग जी
३१ से परिश्रम करो। जिसतें मैं यहूदाह में के अबिश्वासी
लोगों से बच जाऊं और मेरी वह सेवकाई जो यरू-
३२ सलम के लिये है सो सन्त लोग प्रसन्न करें। कि मैं पर-
मेश्वर की इच्छा से तुम्हारे पास आनन्द से आऊं और

तुम्हारे संग सुख चैन पाऊं। अब शान्ति का परमेश्वर तुम सभों के संग होवे आमीन॥ ३३

१६ पर्ब्ब

मैं तुम से फोइबी का सराहन करता हूं; वह हमारी बहिन है और कनकरिया नगर की कलीसिया की सेवकी है। (२) जैसा सन्तों को योग्य है वैसा तुम उस को प्रभु में ग्रहण करो और जिस जिस काम में वह तुम लोगों से प्रयोजन रखती होय तुम उस में उस का उपकार करो क्योंकि वह बहुतों की और मेरी भी उपकारिणी हुई थी। (३) प्रिसकिल्ला को और अकीला को जो मसीह यिसू में मेरे सहायक हैं मेरा नमस्कार कहो। (४) उन्हों ने मेरे प्राण के लिये अपना ही गला धर दिया; उन का केवल मैं ही नहीं परन्तु अन्यदेशियों की सारी कलीसियाएं भी धन्य मानती हैं। (५) और जो कलीसिया उन के घर में है उसे नमस्कार कहो; और मेरे प्रिय एपनेतुस को जो अखाया का मसीही पहिला फल है तुम नमस्कार कहो। (६) मरियम को जिस ने हमारे लिये बहुत परिश्रम किया है नमस्कार कहो। (७) अन्द्रोनिकुस और यूनिया जो मेरे कुटुम्ब हैं और मेरे संगी बन्धुवे थे और प्रेरितों में प्रसिद्ध हैं और मुझ से पहिले मसीह में भी थे उन्हें नमस्कार कहो। (८) अंम्प्लियास जो प्रभु में मेरा प्रिय है उसे नमस्कार कहो। (९) और मसीह में मेरे सहायक उर्बानुस को और मेरे प्यारे स्ताखिस को नमस्कार कहो। (१०) अपल्लस जो परखा हुआ मसीही है उसे

नमस्कार कहो; अरिस्तोबूलुस के लोगों को नमस्कार
११ कहो। मेरे कुटुम्ब हेरोदियोन को नमस्कार कहो;
नरकिस्सुस के लोगों को जो प्रभु में हैं नमस्कार कहो।
१२ त्रोफेना और त्रिफोसा जिन्हों ने प्रभु में परिश्रम किया
है उन्हें नमस्कार कहो; प्यारे परसिस को जिस ने
प्रभु के लिये बहुत परिश्रम किया है नमस्कार कहो।
१३ रूफुस को जो प्रभु का चुना हुआ है और उस की माता
१४ को जो मेरी भी माता है उन्हें नमस्कार कहो। असिं-
क्रितुस को और फलेगोन को और हरमास को और
पत्रोबस को और हरमीस को और भाइयों को जो
१५ उन के संग हैं नमस्कार कहो। फिलोलोगुस और
यूलिया और नेरेउस को और उस की बहिन को और
ओलिंपास को और उन के संग के सब सन्तों को
१६ नमस्कार कहो। और तुम आपस में पवित्र चूमा लेके
एक दूसरे को नमस्कार कहो; मसीह की कलीसियाएं
तुम्हें नमस्कार कहती हैं।

१७ अब हे भाइयो मैं तुम से बिन्ती करता हूं कि जो
लोग इस सिच्छा से जो तुम ने पाई है उलटे चलके
फूट के और ठोकर खिलाने के कारण हैं उन्हें तुम
१८ चीन्ह रखो और उन से परे रहो। क्योंकि जो ऐसे हैं
सो हमारे प्रभु यिसू मसीह की नहीं परन्तु अपने पेट
की सेवा करते हैं और चिकनी बातों से और लल्लो-
१९ पत्तो की बातों से सूधे लोगों के मन ठगते हैं। क्यों-
कि तुम्हारी आधीनता सब लोगों में जानी गई है इस

लिये मैं तुम से आनन्दित हूं; फिर भी मैं यह चाहता हूं कि तुम भलाई में ज्ञानवान होओ और बुराई में भोले रहो। (२०) और शान्ति का परमेश्वर शैतान को तुम्हारे पांवों तले जल्द कुचलावेगा; हमारे प्रभु यिसू मसीह की कृपा तुम्हारे संग होवे; आमीन।

(२१) मेरा संगी कामकारी तिमोतेउस और मेरे कुटुम्ब लूकियुस और यासून और सोसीपत्र तुम्हें नमस्कार कहते हैं। (२२) मैं तर्तियुस जो इस पत्री का लेखक हूं सो तुम्हों को प्रभु में नमस्कार कहता हूं। (२३) गायुस जो मेरा और सारी कलीसिया का मेजबान है सो तुम्हें नमस्कार कहता है; इरास्तुस जो नगर का धन-अधिकारी है और भाई कारतुस तुम को नमस्कार कहते हैं। (२४) हमारे प्रभु यिसू मसीह की कृपा तुम सभों के संग होवे; आमीन।

(२५) अब उस को जो तुम्हें मेरे मंगल समाचार पर और यिसू मसीह के उपदेश पर अर्थात उस प्रकाश किये ऊए भेद पर स्थिर कर सकता है कि जो जगत के आरंभ से गुप्त रहा था। (२६) परन्तु अब भविष्यतवक्ताओं की पुस्तकों से अनन्त परमेश्वर की आज्ञा के समान खुल गया और सब देशों के लोगों पर प्रगट किया गया जिसतें वे बिश्वास की आधीनता में आवें। (२७) उसी अद्वैत बुद्धिमान परमेश्वर की यिसू मसीह के द्वारा से सर्वदा महिमा होवे; आमीन॥

पौलुस की पहिली पत्नी

कोरिन्तियों को।

१ पर्ब्ब

पौलुस जो परमेश्वर की इच्छा से यिसू मसीह का बुलाया हुआ प्रेरित है और भाई सोस्तनीस की ओर
२ से। परमेश्वर की कलीसिया को जो कोरिन्तुस में है अर्थात उन को जो यिसू मसीह में होके पवित्र किये हुए और बुलाये हुए सन्त हैं उन सब समेत जो हर स्थान में यिसू मसीह का नाम जो हमारा और उन
३ का प्रभु है लिया करते हैं। हमारे पिता परमेश्वर से और प्रभु यिसू मसीह से कृपा और कुशल तुम्हारे लिये होवे।

४ मैं परमेश्वर की उस कृपा के लिये जो यिसू मसीह से तुम्हें दिई गई है अपने परमेश्वर का नित धन्य मान-
५ ता हूं। कि हर एक बात में तुम लोग उसी के कारण से सब उच्चारन और सारे ज्ञान में धनी किये गये हो।
६ कि मसीह के विषय की साक्षी तुम लोगों में यहां लों
७ स्थापित हुई है। कि तुम किसी कृपादान में घाट नहीं हो और हमारे प्रभु यिसू मसीह के प्रकाश होने की
८ बाट जोहते हो। वही तुम्हें अन्त लों दृढ़ रखेगा जिस-

तें तुम हमारे प्रभु यिसू मसीह के दिन में निर्दोष ठहरो। परमेश्वर जिस ने तुम को अपने पुत्र हमारे प्रभु यिसू मसीह की संगत में बुलाया है वही सच्चा है। ९

अब हे भाइयो मैं प्रभु यिसू मसीह के नाम के कारण तुम से बिन्ती करता हूं कि तुम सब एक ही बात बोलो और टूट तुम में न होवे परन्तु तुम सब एक ही मन और एक ही मत होके मिले रहो। क्योंकि हे मेरे भाइयो मुझे क्लोए के लोगों से वार्ता मिली कि तुम में झगड़े हैं। मेरी बात यह है कि तुम में हर एक कहता है मैं पौलुस का हूं; मैं अपोल्लोस का हूं; मैं कैफा का हूं; मैं मसीह का हूं। तो क्या मसीह भाग भाग किया गया; क्या पौलुस तुम्हारे कारण क्रूस पर खींचा गया; अथवा क्या तुम ने पौलुस के नाम से बपतिसमा पाया। मैं तो परमेश्वर का धन्य मानता हूं कि क्रिसपुस और गायुस को छोड़ मैं ने तुम में से किसी को बपतिसमा नहीं दिया। न होवे कि कोई कहे उस ने अपने नाम से बपतिसमा दिया। और मैं ने स्तीफनस के घराने को भी बपतिसमा दिया और उन से अधिक मैं नहीं जानता हूं कि मैं ने किसी और को बपतिसमा दिया कि नहीं। क्योंकि मसीह ने बपतिसमा देने को नहीं परन्तु मंगल समाचार सुनाने को मुझे भेजा है सिच्छा के ज्ञान से नहीं न होवे कि मसीह का क्रूस व्यर्थ ठहरे। कि क्रूस की बात नष्ट होनेवालों के लिये मूरखता है परन्तु हम निस्तार पानेवालों के लिये वह परमेश्वर १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८

१९ का सामर्थ्य है। क्योंकि लिखा है ज्ञानियों का ज्ञान मैं नाश करूंगा और बुद्धिमानों की बुद्धि मैं तुच्छ करूंगा।
२० ज्ञानी कहां है; अध्यापक कहां है; इस संसार का विवादी कहां है; परमेश्वर ने इस संसार के ज्ञान को
२१ मूरखता ठहराया है कि नहीं। इस लिये कि जब परमेश्वर के ज्ञान से यों हुआ कि संसार ने ज्ञान से परमेश्वर को न पहचाना तब परमेश्वर की यह इच्छा हुई कि बचन के प्रचार की मूरखता से बिश्वास ला-
२२ नेहारों को बचावे। क्योंकि यहूदी लोग कोई चिन्ह
२३ मांगते हैं और यूनानी लोग ज्ञान ढूंढते हैं। परन्तु हम मसीह को जो क्रुस पर मारा गया प्रचार करते हैं; वह यहूदियों के लिये ठोकर का पत्थर है और
२४ यूनानियों के लिये मूरखता है। पर जो बुलाये हुए हैं क्या यहूदी हों क्या यूनानी हों उन के लिये मसीह तो परमेश्वर का सामर्थ्य और परमेश्वर का ज्ञान है।
२५ क्योंकि परमेश्वर की मूरखता मनुष्यों से अधिक ज्ञानी है और परमेश्वर की दुर्बलता मनुष्यों से बलवन्त है।
२६ हे भाइयो तुम अपनी बुलाहट पर देखो कि उस में जगत के बहुत से ज्ञानी और बहुत से सामर्थवाले
२७ और बहुत से कुलवन्त लोग नहीं हैं। परन्तु परमेश्वर ने जगत के ज्ञानहीनों को चुन लिया जिसतें ज्ञानवानों को लजवावे; और परमेश्वर ने जगत के बलहीनों को चुन लिया जिसतें बलवानों को लजवावे। और
२८ जगत में जो नीच हैं और जो तुच्छ हैं और जो भी नहीं

हैं उन को परमेश्वर ने चुन लिया जिसतें जो भी कुछ होय सो ही वह तुच्छ कर डाले। २९ जिसतें कोई जन उस के आगे घमण्ड न करे। ३० परन्तु मसीह यिसू में हो-के तुम उस के हो; कि वह परमेश्वर से हमारे लिये ज्ञान और धर्म और पवित्रता और मुक्ति ठहरा है। ३१ जिसतें उस लिखे के समान होवे कि जो घमण्ड करे सो प्रभु पर घमण्ड करे॥

२ पर्ब्ब

और हे भाइयो जब मैं परमेश्वर की साक्षी की वार्ता देता हुआ तुम्हारे पास आया तब बोल वाक्य की उत्तमता से अथवा ज्ञान से मैं नहीं आया। २ क्योंकि मैं ने यह ठाना कि मसीह को छोड़ और उस के क्रूस पर मारे जाने को छोड़ मैं और कुछ तुम्हारे पास आ-के न जानूं। ३ और मैं दुर्बलता में और डरता और नि-पट थरथराता हुआ तुम्हारे पास रहा। ४ और मेरा सिच्छा देना और मेरा प्रचार करना कुछ मनुष्यों के ज्ञान की लुभानेवाली बातों से नहीं परन्तु आत्मा के और सामर्थ्य के प्रबोध से हुआ। ५ जिसतें तुम्हारा बिश्वास मनुष्यों के ज्ञान पर नहीं परन्तु परमेश्वर के सामर्थ्य पर ठहरे। ६ तिस पर भी सिद्ध लोगों में हम ज्ञान की बातें बोलते हैं इस जगत का तो नहीं और न इस जगत के नष्ट होनेहारे प्रधानों का ज्ञान। ७ परन्तु परमेश्वर का निगूढ़ ज्ञान; वह गुप्त ज्ञान जिसे परमे-श्वर ने जगत से पहिले हमारी महिमा के लिये ठह-राया था वही हम बोलते हैं। ८ इस जगत के प्रधानों

में से किसी ने उसे न जाना क्योंकि जो वे जानते होते
९ तो ऐश्वर्य्य के प्रभु को क्रूस पर न मारते। परन्तु जैसा
कि लिखा है जो कुछ आंखों ने नहीं देखा और कानों
ने नहीं सुना और मनुष्य के मन में नहीं समाया है उसे
परमेश्वर ने अपने प्रेमियों के लिये तैयार किया है।
१० सो परमेश्वर ने अपने आत्मा के द्वारा से वह हम पर
प्रगट किया है क्योंकि आत्मा सब बातें हां परमेश्वर
११ की गंभीरताएं भी बिचार करता है। क्योंकि मनुष्यों
में से कौन मनुष्य की बातें जानता है परन्तु जो आत्मा
उस में है केवल वही जानता है; वैसा ही परमेश्वर
के आत्मा को छोड़ कोई परमेश्वर की बातें नहीं जान-
१२ ता है। अब हम ने संसार का आत्मा नहीं पाया परन्तु
जो आत्मा परमेश्वर की ओर से है सो ही हम ने पाया
जिसतें जो बातें परमेश्वर ने दया करके हमें दिई हैं
१३ सो हम जानें। वही हम भी बोलते हैं; मनुष्य के ज्ञान
की सिखाई हुई बातों से तो नहीं परन्तु पवित्र आत्मा
की सिखाई हुई बातों से; हम आत्मिक बस्तुओं को
१४ आत्मिक बस्तुओं से मिलाके बिचार करते हैं। परन्तु
शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की पदार्थों को
ग्रहण नहीं करता है कि वे उस के आगे मूरखता हैं
और वह उन्हें जान नहीं सकता है क्योंकि वे आत्मिक
१५ रीति पर बिचार किई जाती हैं। परन्तु जो आत्मिक
जन है सो सब बातें बिचार करता है पर वह आप
१६ किसी से नहीं बिचार किया जाता है। क्योंकि प्रभु का

मन किस ने जाना है जिसतें उस को समझावे परन्तु मसीह का मन हम में है॥

३ पर्ब्ब

और हे भाइयो मैं तुम से जैसा आत्मिकों से नहीं बोल सका परन्तु जैसा शारीरिकों से जैसा लोगों से जो मसीह में बालक हैं वैसा मैं बोल सका। २ मैं ने तुम्हें मांस न खिलाया पर दूध पिलाया क्योंकि तब तुम्हें शक्ति न थी और न अब भी तुम्हें शक्ति है। ३ क्योंकि तुम अब भी शारीरिक हो; इस लिये कि जब कि डाह और झगड़ा और फूट तुम में है तो क्या तुम लोग शारीरिक नहीं हो और मनुष्य की चाल पर नहीं चलते हो। ४ क्योंकि जब एक कहता है मैं पौलुस का हूं और दूसरा कहता है मैं अपोल्लोस का हूं फिर क्या तुम लोग शारीरिक नहीं ठहरे। ५ पौलुस कौन है और अपोल्लोस कौन है; सेवक हैं कि जिन के द्वारा से तुम लोग बिश्वास लाये; सो भी जितना प्रभु ने हर एक को दिया है इतना ही है। ६ मैं ने पेड़ लगाया और अपोल्लोस ने सींचा परन्तु परमेश्वर ने बढ़ाया। ७ फिर न तो लगानेहार कुछ है और न सींचनेहार कुछ है परन्तु परमेश्वर जो बढ़ानेहार है सो ही है। ८ पर लगानेहार और सींचनेहार दोनों एक हैं और हर एक अपने अपने परिश्रम के समान अपना अपना फल पावेगा। ९ क्योंकि हम परमेश्वर के संगी कामकारक हैं; तुम लोग परमेश्वर की खेती और परमेश्वर के घर हो।

१० मैं ने परमेश्वर की कृपा के अनुसार जो मुझे दिई गई बुद्धिमान थवई के समान नेव डाली और दूसरा उस पर रद्दा धरता है; फिर हर एक सुचेत रहे कि
११ किस रीति से उस पर रद्दा धरता है। क्योंकि जो नेव डाली गई है उस को छोड़ कोई जन दूसरी नेव नहीं
१२ डाल सकता है; वह यिसू मसीह है। फिर यदि कोई इस नेव पर सोने का रूपे का बज़मूल्य पत्थर का
१३ लकड़ी का घास का भूसे का रद्दा रखे। तो हर एक का कार्य्य प्रगट होगा कि वह दिन उसे प्रकाश कर देगा कि वह आग से खुल जाता है; और जिस का
१४ कार्य्य जैसा है वैसा आग परखेगी। जो किसी का कार्य्य उस पर बनाया ज़आ हो और वह बना रहे तो वह
१५ मजदूरी पावेगा। और जो किसी का कार्य्य जल जाय तो वह हानि उठावेगा; वह आप तो बच जायगा परन्तु जैसा आग में से वैसा होगा।

१६ क्या तुम लोग नहीं जानते हो कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो और कि परमेश्वर का आत्मा तुम में
१७ बसता है। यदि परमेश्वर के मन्दिर को कोई बिगाड़े तो उस को परमेश्वर बिगाड़ेगा क्योंकि परमेश्वर का
१८ मन्दिर पवित्र है और वह तुम लोग हो। कोई मनुष्य अपने को छल न देवे; यदि तुम में से कोई आप को इस जगत में ज्ञानवान जाने तो मूर्ख बने जिसतें ज्ञान-
१९ वान हो जावे। क्योंकि इस संसार का ज्ञान परमेश्वर के आगे मूरखता है क्योंकि ऐसा लिखा है वह ज्ञा-

नियों को उन की चतुराई में फसाता है। और फिर २० यह कि प्रभु ज्ञानियों के बिचार जानता है कि वे तुच्छ हैं। इस लिये कोई जन मनुष्यों पर घमण्ड न २१ करे क्योंकि सारी बस्तें तुम्हारी हैं। क्या पौलुस क्या २२ अपोल्लोस क्या कैफा क्या जगत क्या जीवन क्या मरण क्या अब की बस्तें क्या होनेहारी बस्तें सब तुम्हारी हैं। और तुम मसीह के हो और मसीह परमेश्वर २३ का है॥

४ पर्ब्ब

मनुष्य हम को ऐसा जाने जैसे मसीह के सेवक और परमेश्वर के भेदों के भण्डारी। फिर भण्डारियों में २ इस बात का खोज होता है कि ऐसा जन बिश्वासी ठहरे। परन्तु जो तुम लोग अथवा कोई मनुष्य मुझे ३ परखे तो यह मेरे लिये बहुत छोटी बात है हां मैं आप भी अपने को नहीं परखता हूं। मेरा मन तो ४ किसी बात में मुझे दोष नहीं देता है तौ भी मैं इस से कुछ निर्दोष नहीं ठहरता हूं परन्तु मेरा परखनेहार प्रभु है। इस लिये जब लों प्रभु न आवे तब लों ५ तुम लोग समय से पहिले न्याव मत करो; वह अन्धियारे की गुप्त बातें प्रकाशित करेगा और मनों के मताओं को प्रगट करेगा; तब परमेश्वर की ओर से हर एक जन की बड़ाई होगी।

हे भाइयो इन बातों में मैं ने अपना और अपोल्लोस ६ का बर्णन तुम्हारे कारण दृष्टान्त की रीति पर किया जिसतें तुम हम से सीखो कि लिखे हुए से अधिक किसी

को मत समझो न होवे कि तुम एक का नाम उतार-
७ के दूसरे के लिये फूलो। क्योंकि कौन तुझे दूसरे से भिन्न करता है; और तेरे पास क्या है जो तू ने नहीं पाया हो; सो यदि पाया तो तू जैसे न पाये हुए के लिये क्यों घमण्ड करता है।

८ तुम लोग अब तो सन्तुष्ट हुए; तुम अब धनवान हुए; तुम्हों ने हमारे बिना राज्य किया; और मैं क्या ही चाहता हूं कि तुम लोग राज्य करते तो हम लोग
९ भी तुम्हारे संग राज्य करते। क्योंकि मेरी समझ में परमेश्वर ने हम प्रेरितों को सभों से पिछलेवाले हां जैसे घात होनेवाले ठहराया है क्योंकि जगत के लिये और आत्मिक दूतों के लिये और मनुष्यों के लिये हम
१० लोग एक स्वांग ठहरे हैं। हम लोग मसीह के कारण से मूरख ठहरे हैं परन्तु तुम लोग मसीह में बुद्धिमान हो; हम लोग बलहीन हैं परन्तु तुम लोग
११ बलवन्त हो; तुम आदरवन्त हम आदरहीन हैं। हां हम अब की घड़ी लों भूखे हैं और प्यासे हैं और नंगे
१२ हैं और मार खाते हैं और मारे फिरते हैं। हम अपने हाथों से काम कर के परिश्रम करते हैं; गाली खाके हम भला मनाते हैं; सताये जाके हम सहते
१३ हैं। वे निन्दा करते हैं हम बिन्ती करते हैं; हम लोग जैसे जगत का कूड़ा और सभों की झाड़न आज लों हैं।

१४ मैं ये बातें तुम्हें लजवाने के लिये नहीं लिखता हूं

परन्तु मैं तुम्हें जैसे अपने प्रिय बालकों को चितावता हूं। क्योंकि यद्यपि मसीह में तुम्हारे दस सहस्र गुरु होवें तथापि तुम्हारे बहुत से पिता नहीं हुए क्योंकि मैं ही ने मंगल समाचार के द्वारा मसीह यिसू में तुम को जन्माया। सो मैं तुम से बिन्ती करता हूं कि मेरी चाल पर चलो। इस कारण मैं ने तिमोथेउस को जो मेरा प्रिय पुत्र और प्रभु में प्रभुभक्त है तुम्हारे पास भेजा जिसतें जो मसीह में मेरी चालें हैं जैसे मैं सर्वत्र हर एक कलीसिया में सिखाता हूं सो वैसा वह तुम्हें चेत करावे। १५ १६ १७

अब कोई कोई यह समझके फूलते हैं कि मैं तुम्हारे पास नहीं आने का। परन्तु जो प्रभु चाहे तो मैं तुम्हारे पास जल्द आऊंगा और बूझ लूंगा न अहंकारियों की बातों को परन्तु उन के पराक्रम को। क्योंकि परमेश्वर का राज्य बात में नहीं है परन्तु पराक्रम में है। तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे पास छड़ी लेके आऊं अथवा हम प्रेम से और आत्मा की कोमलता से आऊं॥ १८ १९ २० २१

५ पर्ब्ब

यह बात जगह जगह सुनने में आती है कि तुम्हारे बीच में व्यभिचार होता है और ऐसा व्यभिचार कि वैसा अन्यदेशियों में भी नहीं सुनते हैं अर्थात यह कि मनुष्य अपने पिता की स्त्री को रखे। और तुम फूलते हो और जैसा कि चाहिये वैसा शोक नहीं करते हो कि जिस ने यह कर्म किया है सो तुम में से २

३ निकाला जाय। क्योंकि मैं जो कि शरीर से तुम से दूर हूं तौभी आत्मा से तुम्हारे बीच में होके जैसा सचमुच तुम्हारे साथ हूं; सो जिस ने वह काम किया है ४ उस पर मैं यह आज्ञा दे चुका। कि तुम लोग और मेरा आत्मा मिलके हमारे प्रभु यिसू मसीह के अधिकार से ऐसे मनुष्य को हमारे प्रभु यिसू मसीह का ५ नाम लेके शैतान को सोंप देओ। जिसतें शरीर नाश हो जावे कि उस का आत्मा हमारे प्रभु यिसू के दिन में बच जाय।

६ तुम्हारा घमण्ड करना अच्छा नहीं है; क्या तुम लोग नहीं जानते हो कि थोड़ा सा खमीर सारी ७ लोई को खमीर कर डालता है। सो तुम पुराने खमीर को निकाल फेंको जिसतें तुम लोग नई लोई बनो; क्योंकि तुम लोग खमीरहीन हो इस लिये कि हमारा भी फसह का बलि अर्थात मसीह हमारे लिये ८ मारा गया। इस लिये अब आओ हम परब करें; न पुराने खमीर से और न बुराई और दुष्टता के खमीर से परन्तु निर्मलता और सच्चाई की अखमीरी रोटी से।

९ मैं ने पत्री में तुम्हें लिखा कि व्यभिचारियों की १० संगत मत करो। परन्तु यह नहीं कि तुम जगत के व्यभिचारियों से अथवा लालचियों से अथवा अन्धेर करनेहारों से अथवा मूर्तपूजकों से सर्वथा अलग रहना; नहीं तो तुम्हें जगत से निकल जाना होता ११ है। पर मैं ने अब तुम्हें लिखा है कि यदि कोई जन

भाई कहाके व्यभिचारी अथवा लालची अथवा मूर्त्त-पूजक अथवा गाली देनेहारा अथवा मद्यप अथवा अन्धेर करनेहारा होय तो तुम ऐसे की संगत न करना हां ऐसे के संग भोजन भी न करना। क्योंकि बाहर- १२ वालों से मुझे क्या काम है कि उन पर कुछ आज्ञा करूं; क्या तुम लोग भीतरवालों पर आज्ञा नहीं करते हो। फिर जो लोग बाहर हैं उन पर परमे- १३ श्वर आज्ञा करता है; सो तुम उस दुष्ट मनुष्य को अपने बीच में से निकाल दो॥

६ पर्ब्ब

यदि तुम में से किसी का दूसरे से कुछ वाद विवाद होय क्या उस का यह साहस है कि उसे निपटाने के लिये वह धर्महीन लोगों के पास जावे और सन्तों के पास नहीं। क्या तुम नहीं जानते हो कि सन्त लोग २ जगत का न्याव करेंगे; सो यदि जगत ही का न्याव तुम से किया जायगा तो क्या तुम छोटी छोटी बातों को निपटाने के अयोग्य हो। क्या तुम नहीं जानते ३ कि हम आत्मिक दूतों का न्याव करेंगे; तो कितना अधिक इस जीवन की बातें। सो यदि तुम में इस जीवन ४ के विषय के वाद विवाद होयें तो जो लोग कलीसिया में कुछ नहीं हैं उन को तुम पंच मानो। मैं तुम्हें ५ लजवाने के लिये यह कहता हूं; क्या ऐसा है कि तुम में कोई बुद्धिमान जन नहीं है; क्या एक भी नहीं है कि जो अपने भाई की बात निपटा सके। परन्तु भाई ६ से भाई वाद विवाद करता है और सो भी विश्वास-

७ हीनों के आगे। इस में तुम्हारा बड़ा दोष है कि तुम एक दूसरे पर बाद अपवाद करते हो; तुम लोग अंधेर क्यों नहीं सहते हो; तुम अपनी घटी क्यों नहीं
८ सहते हो। तुम लोग तो अंधेर और घटी करते
९ ही हो; सो भी भाइयों पर। क्या तुम नहीं जानते कि अधर्मी लोग परमेश्वर के राज्य के अधिकारी न होंगे; छल न खाओ; न कोई व्यभिचारी न मूर्तपूजक
१० न परस्त्रीगामी न गांडू न लौंडेबाज। न चोर न लालची न मद्यप न गाली बकनेहारे न अंधेर करनेहारे
११ परमेश्वर के राज्य के अधिकारी होंगे। और कोई कोई तुम में से ऐसे थे परन्तु प्रभु यिसू के नाम से और हमारे परमेश्वर के आत्मा से तुम धोये गये और पवित्र हुए और धर्मी भी ठहराये गये।

१२ सब बस्तें मेरे लिये ठीक हैं परन्तु सब बस्तें शुभकार नहीं हैं; सब बस्तें मेरे लिये ठीक हैं पर मैं
१३ किसी के पराधीन न हूंगा। भोजन तो पेट के लिये हैं और पेट भोजन के लिये; पर परमेश्वर उस को और उन को नष्ट करेगा; परन्तु देह तो व्यभिचार के लिये नहीं है पर प्रभु के लिये है और प्रभु देह
१४ के लिये है। और परमेश्वर ने प्रभु को जिलाया है
१५ और हम को भी अपने सामर्थ्य से जिलावेगा। क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारी देहें मसीह के अंग हैं; सो क्या मैं मसीह के अंगों को लेकर उन्हें वेश्या के
१६ अंग बनाऊं। ऐसा न होवे; क्या तुम लोग नहीं जानते

कि जो कोई वेश्या की संगत करता है सो उस से एक तन ऊआ; क्योंकि कहा गया है कि ऐसे दोनों एक तन होंगे। फिर जो कोई प्रभु की संगत करता है सो उस के साथ एक आत्मा ऊआ है। व्यभिचार से भागो; जो पाप कोई मनुष्य करता है सो देह से बाहर है परन्तु व्यभिचार करनेहारा अपनी ही देह का पापी ठहरता है। क्या तुम नहीं जानते कि पवित्र आत्मा जो तुम में बसता है जिस को तुम्हों ने परमेश्वर से पाया है उसी का मन्दिर तुम्हारी देह है और तुम लोग अपने नहीं हो। क्योंकि तुम दामों से मोल लिये गये हो; सो अपनी देह से और अपने आत्मा से जो परमेश्वर के हैं तुम परमेश्वर की महिमा करो॥ | १७ | १८ | १९ | २०

७ पर्व्व

अब जिन बातों के लिये तुम ने मुझे लिखा है सो अच्छा यह है कि स्त्री को पुरुष न छूवे। परन्तु व्यभिचार से बचने को हर पुरुष अपनी पत्नी रखे और हर स्त्री अपना पति रखे। पुरुष अपनी पत्नी का जैसा चाहिये ऐसा व्यवहार करे और स्त्री अपने पति का वैसा ही करे। स्त्री अपनी देह पर अधिकार नहीं रखती है पर पति उस का अधिकारी है; फिर वैसा ही पति अपनी देह पर अधिकार नहीं रखता है पर पत्नी उस की अधिकारिनी है। तुम दूसरे से अपने को अलग मत रखो परन्तु केवल दोनों की प्रसन्नता से कुछ दिन तक जिसतें तुम उपवास और प्रार्थना करने के कारण अवकाश पाओ और फिर एकट्ठे आ- | २ | ३ | ४ | ५

ओ न हो कि शैतान तुम्हारे कुसंयम के कारण तुम्हा-
६ री परीक्षा करे। परन्तु मैं आज्ञा करके नहीं पर
७ सम्मत करके बोलता हूं। क्योंकि मैं चाहता हूं कि
जैसा मैं हूं वैसे ही सब मनुष्य होते पर हर एक ने
अपना अपना दान परमेश्वर से पाया है एक ने ऐसा
८ दूसरे ने वैसा। सो मैं अनबियाहे लोगों से और बिध-
वाओं से कहता हूं कि उन के लिये अच्छा है कि
९ जैसा मैं हूं वैसे वे भी रहें। परन्तु जो रह न सकें तो
बियाह करें क्योंकि जलने से बियाह करना भला है।
१० परन्तु जिन का बियाह हुआ है उन्हें मैं नहीं परन्तु
प्रभु आज्ञा देता है कि स्त्री अपने पति को न छोड़े।
११ और यदि छोड़े तो वह बिन बियाह किये रहे अथवा
अपने पति से फिर मेल करे और पुरुष अपनी पत्नी
को त्याग न करे।

१२ फिर औरों को प्रभु नहीं कहता है परन्तु मैं ही
कहता हूं ; यदि किसी भाई की पत्नी अबिश्वासिनी
होय और पत्नी उस के संग रहने पर प्रसन्न होय
१३ तो पति उसे त्याग न करे। अथवा किसी स्त्री का पति
अबिश्वासी होय और पति उस के संग रहने पर
१४ प्रसन्न होय तो पत्नी उसे त्याग न करे। क्योंकि अबिश्वा-
सी पति अपनी पत्नी के कारण से पवित्र हुआ और
अबिश्वासिनी पत्नी अपने पति के कारण से पवित्र हुई
है ; नहीं तो तुम्हारे सन्तान अपवित्र होते परन्तु अब
१५ पवित्र हैं। पर यदि अबिश्वासी आप को अलग करे तो

करे; कोई भाई बहिन ऐसी बातों के बंधन में नहीं है और परमेश्वर ने हम को मिलाप के लिये बुलाया है। फिर हे स्त्री क्या जानिये तू अपने पति को बचावे; १६ अथवा हे पुरुष क्या जानिये तू अपनी पत्नी को बचावे। परन्तु जैसा भाग परमेश्वर ने एक एक को दिया है और १७ जैसा प्रभु ने एक एक को बुलाया है वह वैसा ही चले और मैं सारी कलीसियाओं में ऐसा ही ठहराता हूं।

यदि कोई जन खतना किया हुआ होके बुलाया १८ गया तो वह खतनाहीन न होवे; फिर यदि कोई खतनाहीन होके बुलाया गया होय तो खतना न करावे। खतना कुछ नहीं है और अखतना कुछ नहीं है १९ पर बात यह है कि परमेश्वर की आज्ञा पर चलना। जो जिस दशा में कोई बुलाया गया हो वह उसी में २० रहे। यदि तू दास होके बुलाया गया होय तो कुछ २१ चिन्ता न कर; परन्तु जो तू छुटकारा पा सके तो उसे पहिले ग्रहण कर। क्योंकि जिस दास को प्रभु ने बुलाया २२ सो परमेश्वर का निर्बन्ध किया हुआ है; और वैसा ही यदि कोई निर्बन्ध होके बुलाया गया तो वह मसीह का दास है। तुम लोग दामों से मोल लिये गये हो; २३ मनुष्यों के दास मत बनो। हे भाइयो जिस किसी दशा २४ में कोई बुलाया गया हो सो उसी दशा में वह परमेश्वर के आगे रहे।

फिर कुंवारियों के विषय में प्रभु की कोई आज्ञा २५ मुझ पास नहीं है; परन्तु जब कि प्रभुभक्त होने को

२६ मैं ने प्रभु से दया पाई तो मैं अपना सम्मत देता हूं। सो मैं समझता हूं कि इस समय की बिपत्ति के लिये यह भला है क्या भला है कि मनुष्य जैसा है वैसा ही रहे।
२७ यदि तू पत्नी के बन्ध में है तो छुटकारा मत चाह;
२८ यदि तू पत्नी से छूटा है तो फिर पत्नी मत ढूंढ। परन्तु जो तू बियाह करे तो कुछ पाप नहीं करता है; और यदि कुंवारी बियाही जावे तो वह पाप नहीं करती है; पर ऐसे लोग शरीर के दुःख पावेंगे परन्तु मैं तुम्हें बचाने चाहता हूं।

२९ परन्तु हे भाइयो मैं यह कहता हूं कि समय सकेत है; रहा यह कि पत्नीवाले ऐसे होवें जैसे उन के
३० पत्नियां नहीं हैं। और रोनेहारे ऐसे होवें जैसे वे नहीं रोते; और आनन्द करनेहारे ऐसे जैसे वे आनन्द नहीं करते; और कीन्नेहारे ऐसे जैसे वे अधिकारी
३१ नहीं। और जो इस जगत से व्यवहार रखते हैं सो उस से कुव्यवहार न रखें क्योंकि जगत का चलन जाता
३२ रहता है। परन्तु मैं चाहता हूं कि तुम लोग बिन चिन्ता रहो; जो अनबियाहा है सो प्रभु की बस्तुओं के लिये चिन्ता करता है कि वह प्रभु को क्योंकर प्रसन्न
३३ करे। परन्तु जो बियाहा है सो जगत के लिये चिन्ता
३४ करता है कि वह पत्नी को क्योंकर प्रसन्न करे। पति-वाली स्त्री में और कुंवारी में भी भेद है; अनबियाही जो है प्रभु के लिये चिन्ता करती है कि देह में और आत्मा में पवित्र होय परन्तु बियाही हुई जो है जगत

के लिये चिन्ता करती है कि किस रीति से अपने पति को प्रसन्न करे। पर मैं तुम्हारे ही लाभ के लिये यह कहता हूं; तुम्हें फन्दे में डालने को नहीं पर इस लिये कहता हूं कि वह सोभता है और कि तुम लोग प्रभु की सेवा में सुचित होके लगे रहो। ३५

परन्तु यदि कोई अपनी कन्या की तरुणाई का ढल जाना अयोग्य व्यवहार समझे और ऐसा ही अवश्य जाने तो जो चाहे सो कर ले कि वह पाप नहीं करता है; वे बियाह करें। पर जो कोई अवश्य न जानके अपने मन में दृढ़ रहे और अपनी ही इच्छा पर अधिकार रखता हो और अपने मन में यह ठाने कि मैं अपनी कन्या अनबियाही रहने दूंगा तो वह अच्छा करता है। सो जो बियाह देता है सो अच्छा करता है परन्तु जो बियाह नहीं देता है सो और भी अच्छा करता है। ३६ ३७ ३८

पत्नी जब लों उस का पति जीता रहे तब लों व्यवस्था से बन्धी है परन्तु जो उस का पति मर जाय तो वह छूट गई; जिस से चाहे उस से बियाह करे केवल इतना कि प्रभु में होय। परन्तु जो वह ऐसी ही रहे तो वह मेरे बिचार में अतिसुखी है; और मैं जानता हूं कि परमेश्वर का आत्मा मुझ में भी है॥ ३९ ४०

८ पर्व्व

अब मूर्तों के प्रसाद के विषय में हम जानते हैं; क्योंकि हम सब लोग ज्ञान रखते हैं; ज्ञान फुलाता है परन्तु प्यार सुधारता है। और जो कोई समझे कि मैं २

कुछ जानता हूं तो जैसा जानना चाहिये वैसा वह अब
३ तक कुछ नहीं जानता है। परन्तु जो कोई परमेश्वर
४ को प्यार करता है वह उस से जाना गया है। सो मूर्त्तों
के प्रसाद के खाने के विषय में हम जानते हैं कि मूर्त्त
जगत में कुछ नहीं है और कि एक को छोड़ और
५ कोई परमेश्वर नहीं है। क्योंकि यद्यपि स्वर्ग में और
पृथिवी में बहुत से हैं कि ईश्वर कहावते हैं क्योंकि
६ बहुतेरे ईश्वर और बहुतेरे प्रभु हैं। तो भी हमारा
एक ईश्वर है ; वह पिता है और उस से सारी वस्तें
हुई हैं और हम लोग उस में हैं ; और एक प्रभु यिसू
मसीह है ; उस के द्वारा से सारी वस्तें हैं और हम
७ लोग उस के द्वारा से हैं। परन्तु सब लोगों को यह
ज्ञान नहीं है क्योंकि कोई कोई तो मूर्त्त को कुछ वस्तु
समझके उस को आज लों मूर्त्त का प्रसाद जानके खाते
हैं और उन के मन दुर्बल होकर अशुद्ध होते हैं।

८ भोजन हमें परमेश्वर के आगे बढ़ाता नहीं है क्यों-
कि यदि खावें तो हमारी कुछ बढ़ती नहीं है और यदि
९ न खावें तो हमारी कुछ घटी नहीं है। परन्तु सुचेत
रहो न होवे कि जो तुम्हारे लिये योग्य बात है सो
कहीं दुर्बल लोगों के लिये ठोकर खाने का कारण
१० होवे। क्योंकि यदि कोई तुझे जो ज्ञान रखता है मूर्त्त-
शाले में भोजन करते देखे तो क्या उस का दुर्बल मन
११ मूर्त्तों का प्रसाद खाने को उभारा न जावेगा। और
तेरा वह दुर्बल भाई जिस के लिये मसीह मूआ क्या

वह तेरे ज्ञान से नष्ट न होगा। परन्तु जब तुम लोग १२ भाइयों को यों पाप करते और उन के दुर्बल मन घायल करते हो तो तुम मसीह का पाप करते हो। इस लिये १३ यदि भोजन जो है मेरे भाई को ठोकर खिलावे तो मैं अन्तकाल तक कधी मांस न खाऊंगा न होवे कि मैं अपने भाई की ठोकर का कारण होऊं॥

९ पर्ब्ब

क्या मैं प्रेरित नहीं हूं; क्या मैं निर्बन्ध नहीं हूं; क्या मैं ने हमारे प्रभु यिसू मसीह को नहीं देखा है; क्या तुम लोग प्रभु में मेरे बनाये ऊए नहीं हो। यदि मैं २ दूसरों के लिये प्रेरित नहीं हूं तथापि तुम्हारे लिये मैं तो निस्सन्देह हूं क्योंकि तुम लोग प्रभु में होके मेरे प्रेरितत्व पर छाप हो। जो मुझे परखते हैं उन के ३ लिये मेरा यह उत्तर है। क्या हमें खाने पीने का ४ अधिकार नहीं है। फिर जैसे और प्रेरित और प्रभु के ५ भाई और कैफा करते हैं क्या उन की चाल पर किसी बहिन को पत्नी करके अपने संग लिये फिरने का मुझे अधिकार नहीं है। और क्या केवल मुझ को ६ और बरनबा को अधिकार नहीं है कि बिना उद्यम रहें। कौन जन अपना रुपैया लगाके सिपाही का ७ काम करता है; कौन जन दाख की बारी लगाता है और उस का फल नहीं खाता है; और कौन मनुष्य पाल चराता है जो उस पाल का कुछ दूध नहीं पीता। क्या मैं मनुष्य के चलन पर ये बातें बोलता हूं; क्या ८ व्यवस्था भी यह नहीं कहती है। क्योंकि मूसा की ९

व्यवस्था में लिखा है तू दावते हुए बैल का मुंह मत
१० बांध; क्या परमेश्वर को बैलों की कुछ चिन्ता है। क्या
वह सर्वथा हमारे लिये यह नहीं कहता है; हां
निस्सन्देह हमारे लिये वह लिखा है जिसतें जोतने-
हार जो है सो आशा करके जोते और जो कोई आशा
११ करके दावता है सो अपनी आशा का फल पावे। यदि
हम ने तुम्हारे लिये आत्मिक वस्तें बोई हैं क्या यह
कुछ बड़ी बात है जो हम तुम्हारी शारीरिक वस्तें का-
१२ टें। जो और लोग इस अधिकार के भागी तुम पर
होयें तो कितना अधिक हम न होयें; परन्तु हम इस
अधिकार को काम में न लाय पर हम सारी बातें सह-
ते हैं न होवे कि हम मसीह के मंगल समाचार को
१३ रोकें। क्या तुम नहीं जानते कि जो मन्दिर की सेवकाई
करते हैं सो मन्दिर में से खाते हैं; और जो बेदी के
काम में लगे रहते हैं सो बेदी में से भाग लेते हैं।
१४ ऐसा ही प्रभु ने यों भी ठहराया है कि जो मंगल समा-
चार के सुनानेहारे हैं सो मंगल समाचार से अपनी
उपजीवन पावें।

१५ पर मैं आप इन बातों में से कुछ काम में न लाया
और न मैं ने इस मनसा से ये बातें लिखीं कि मेरे लिये
यों किया जावे क्योंकि कोई जन मेरी बड़ाई को व्यर्थ
करने न पावे; इस से मैं मरना अच्छा जानता हूं।
१६ क्योंकि यदि मैं मंगल समाचार सुनाऊं तो मेरी कुछ
बड़ाई नहीं क्योंकि वह मुझे अवश्य आन पड़ा है और

यदि मैं मंगल समाचार को न सुनाऊं तो मुझ पर हाय है। इस लिये कि यदि मैं प्रसन्नता से यह करूं १७ तो फल पाऊंगा फिर जो अप्रसन्नता से करूं तौ भी भण्डारीपन मुझे सोंपा गया है। सो मेरा फल अब १८ क्या ठहरा; यह कि मैं मंगल समाचार सुनाके मसीह के मंगल समाचार को बिन दाम ठहराऊं जिसतें जो मंगल समाचार के विषय में मेरा अधिकार है उसे मैं बुरे ढब पर काम में न लाऊं।

क्योंकि जो कि मैं सब से निर्बन्ध हूं तौ भी मैं ने अपने १९ को सभों का दास बनाया जिसतें मैं अधिक लोगों को प्राप्त करूं। यहूदियों में मैं यहूदी सा हुआ जिसतें मैं २० यहूदियों को प्राप्त करूं; व्यवस्था के लोगों में मैं व्यवस्थावाला सा हुआ जिसतें मैं व्यवस्था के लोगों को प्राप्त करूं। और व्यवस्था हीन लोगों में मैं व्यवस्था हीन सा २१ हुआ जिसतें मैं व्यवस्था हीन लोगों को प्राप्त करूं; तिस पर भी मैं परमेश्वर के आगे व्यवस्था हीन नहीं ठहरा परन्तु मैं मसीह की व्यवस्था के आधीन हूं। दुर्बल लोगों में मैं दुर्बल सा हुआ जिसतें मैं दुर्बल लो- २२ गों को प्राप्त करूं; मैं सब मनुष्यों के कारण सब कुछ बना कि मैं हर एक प्रकार से कितनों को बचाऊं। और मैं मंगल समाचार के कारण यह करता हूं २३ जिसतें मैं औरों के संग उस में भागी हो जाऊं।

क्या तुम नहीं जानते कि दौड़स्थान में जो दौड़ने- २४ हार हैं सो सब तो दौड़ते हैं परन्तु दांव एक ही पाता

२५ है ; सो तुम ऐसा दौड़ो कि तुम ही जीतो। और हर एक जो मल्लयुद्ध करता है सो सब बातों में मध्यम है ; वे लोग तो नाशमान हार के लिये यह करते हैं
२६ परन्तु हम लोग अविनाशी हार के लिये। सो मैं दौड़ता हूं पर बे ठिकाने नहीं ; मैं घूसे लड़ता हूं पर
२७ पवन को मारनेहार के समान नहीं। परन्तु मैं अपने शरीर को पीसे डालता हूं और उसे अपना दास बना डालके लिये फिरता हूं न होवे कि मैं औरों को उप-देश देके आप त्यक्त ठहरूं॥

१० पर्व्व

सो हे भाइयो मैं तुम को इस बात से अज्ञान रखने नहीं चाहता हूं कि हमारे पितर तो मेघ के नीचे सब थे और वे सब समुद्र में से होके निकल गये।
२ और सभों ने उस मेघ और समुद्र में मूसा का बपतिस-
३ मा पाया। और सभों ने एक ही आत्मिक भोजन खाया।
४ और सभों ने एक ही आत्मिक पान पीया क्योंकि जो आत्मिक पहाड़ी उन के संग चली उस से उन्हों ने
५ पीया और वह पहाड़ी मसीह था। परन्तु उन में के बहुतों से परमेश्वर प्रसन्न न था इस लिये वे बन में मारे पड़े।

६ अब ये बातें हमारे लिये दृष्टान्तें हुईं कि जैसी उन्हों ने लालसा किई वैसी हम लोग बुराई की लालसा न
७ करें। और जैसे उन में कोई कोई मूर्त्तपूजक हुए वैसे तुम लोग मत होओ ; कि लिखा है लोग खाने पीने
८ बैठे और खेला करने उठे। फिर जैसे कि उन में से

कितनों ने व्यभिचार किया वैसे हम लोग न करें कि दिन भर में उन में से तेईस सहस्र मारे पड़े। ९ और हम मसीह की परीक्षा न करें कि उन में से भी कितनों ने किई और सांपों से मर मिटे। १० और तुम लोग मत कुड़कुड़ाओ कि उन में से भी कोई कोई कुड़कुड़ाये और नाशक से नष्ट ऊए। ११ ये सब बातें जो उन पर पड़ीं सो हमारे लिये दृष्टान्तें ठहरीं और वे हमारे चेतने के लिये लिखी गईं कि समाप्ति का समय हम पर आन पड़ा है। १२ सो जो कोई अपने को खड़ा ऊआ समझता है सो सुचेत रहे ऐसा न होवे कि गिर पड़े। १३ जिस भांत की परीक्षों में मनुष्य पड़ा करते हैं तुम लोग और किसी में नहीं पड़े हो; और परमेश्वर सच्चा है; वह तुम्हारी शक्ति से अधिक की किसी परीक्षा में तुम्हें पड़ने न देगा परन्तु परीक्षा के संग निकलने का ठिकाना भी ठहरा देगा जिसतें तुम लोग सह सको।

१४ इस लिये हे मेरे प्यारो तुम मूर्तपूजा से भागो। १५ मैं तुम से जैसे बुद्धिमानों से बोलता हूं; जो मैं कहता हूं सो तुम लोग बिचार करो। १६ आशीश का कटोरा जिस पर हम आशीश मांगते हैं क्या वह मसीह के लोहू का मेल नहीं है; जो रोटी हम तोड़ते हैं क्या वह मसीह की देह का मेल नहीं है। १७ क्योंकि हम बऊत से जो हैं सो एक रोटी अर्थात एक तन हैं इस लिये कि हम सब उस एक ही रोटी के भागी हैं। १८ जो शरीर की रीति से इसराएल हैं उन पर तुम लोग

देखो; जो जो बलिदान से खाते हैं क्या वे बेदी से
१९ भागी नहीं हैं। सो क्या मैं कहता हूं कि मूर्त्त कुछ
२० बस्तु है और कि मूर्तों का प्रसाद कुछ बस्तु है। मैं यह
कहता हूं कि अन्यदेशी लोग जो कुछ बलि चढ़ाते
हैं सो परमेश्वर के लिये नहीं परन्तु देवों के लिये
चढ़ाते हैं और मैं नहीं चाहता हूं कि तुम लोग देवों
२१ के भागी होओ। तुम लोग प्रभु का कटोरा और देवों
का कटोरा दोनों पी नहीं सकते हो; तुम लोग प्रभु
के मेज के और देवों के मेज के भागी नहीं हो सक-
२२ ते हो। क्या हम प्रभु को भल दिलाते हैं; क्या हम
उस से बलवन्त हैं।

२३ सब बस्तें मेरे लिये ठीक हैं परन्तु सब बस्तें शुभ-
कार नहीं हैं; सब बस्तें मेरे लिये ठीक हैं परन्तु सब
२४ बस्तें सुधारती नहीं। कोई अपना स्वार्थ न ढूंढे परन्तु
२५ हर एक दूसरे की भलाई चाहे। सो जो कुछ कसाई
की दूकानों में बिकता है सो खाओ और धर्मबोध के
२६ कारण कुछ पूछो मत। क्योंकि पृथिवी और उस की
२७ भरपूरी प्रभु की है। और यदि अविश्वासियों में से
कोई तुम्हारा नेवता करे और तुम्हारी जाने की इच्छा
होय तो जो कुछ तुम्हारे आगे धरा जाय सो खाओ
२८ और धर्मबोध के कारण कुछ पूछो मत। परन्तु यदि
कोई तुम से कहे कि यह मूर्त का प्रसाद है तो उस
जतानेहार के कारण और धर्मबोध के कारण उस
से मत खाओ कि पृथिवी और उस की भरपूरी प्रभु

की है। धर्मबोध जो मैं कहता हूं सो तेरा ही नहीं | २९
परन्तु दूसरे का कहता हूं क्योंकि मेरी निर्बन्धता क्यों
किसी दूसरे के धर्मबोध के बन्ध में पड़े। क्योंकि यदि | ३०
मैं धन्य मानके खाता हूं तो जिस बस्तु के लिये मैं धन्य
मानता हूं उस के कारण मेरी निन्दा क्यों होती है।
इस लिये तुम खाते अथवा पीते अथवा जो कुछ करते | ३१
हो सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिये करो।
तुम लोग ठोकर के कारण मत बनो न तो यहूदियों | ३२
को और न यूनानियों को और न परमेश्वर की कली-
सिया को। क्योंकि मैं भी सब बातों में सब लोगों को | ३३
रिझाता हूं और अपना लाभ नहीं परन्तु बहुतेरों का
लाभ ढूंढता हूं जिसतें वे निस्तार पावें॥

११ पर्ब्ब

तुम मेरी चाल चलो कि मैं भी मसीह की चाल
चलता हूं। और हे भाइयो मैं तुम्हारी बड़ाई करता | २
हूं कि तुम सब बातों में मुझे स्मरण करते हो और
विधानों को जैसे कि मैं ने उन्हें तुम को सोंपा है वैसे
धारण करते हो। परन्तु मैं चाहता हूं कि तुम लोग | ३
जानो कि हर एक पुरुष का सिर मसीह है; और स्त्री
का सिर पुरुष है; और मसीह का सिर परमेश्वर है।
जो पुरुष अपने सिर को ढांपते हुए प्रार्थना करे अथवा | ४
भविष्यतवाणी कहे सो अपने सिर का अपमान करता
है। फिर जो स्त्री नंगे सिर होके प्रार्थना करे अथवा | ५
भविष्यतवाणी कहे सो अपने सिर का अपमान करती
है क्योंकि जैसे कि वह मुण्डाई गई हो वैसा यह भी

६ है। सो यदि स्त्री ओढ़नी न ओढ़े तो उस की चोटी भी कट जाय और यदि चोटी कटने से अथवा सिर मुण्डाने से स्त्री का अपमान होता है तो ओढ़नी ओढ़े। ७ पुरुष को तो न चाहिये कि अपना सिर ढांपे क्योंकि वह परमेश्वर का स्वरूप और उस की शोभा है परन्तु स्त्री जो है सो पुरुष की शोभा है। ८ क्योंकि पुरुष तो स्त्री से नहीं परन्तु स्त्री पुरुष से है। ९ और पुरुष स्त्री के लिये नहीं सिरजा गया परन्तु स्त्री पुरुष के लिये। १० सो दूतों के कारण स्त्री को चाहिये कि अपने सिर को ढांपे। ११ तिस पर भी प्रभु में होके न पुरुष स्त्री से अलग है न स्त्री पुरुष से अलग है। १२ क्योंकि जैसा पुरुष से स्त्री है वैसा ही स्त्री से पुरुष भी है परन्तु सब कुछ परमेश्वर से है।

१३ तुम आप ही बिचार करो; क्या उचित है कि स्त्री सिर नंगे होकर परमेश्वर की प्रार्थना करे। १४ क्या प्रकृति भी तुम को नहीं सिखाती है कि जो पुरुष का लंबा बाल होय तो यह उस के लिये लज्जा है। १५ परन्तु जो स्त्री का लंबा बाल होय तो वह उस की शोभा है क्योंकि उस का बाल तो ढांपने के लिये उसे दिया गया है। १६ परन्तु यदि किसी को झगड़ा करने का मन होवे तो जाने कि न हमारा न परमेश्वर की कलीसियाओं का कोई ऐसा व्यवहार है।

१७ अब जो मैं तुम्हें कह देता हूं इस में मैं तुम्हारी बड़ाई नहीं करता हूं सो यह है कि तुम लोग यदि एकट्ठे आते हो तो इस में तुम्हारी कुछ भलाई नहीं

परन्तु अधिक बुराई है। क्योंकि मैं सुनता हूं कि पहिले जब तुम लोग कलीसिया में एकट्ठे होते हो तो तुम में अनबनाव होते हैं और मैं उसे कुछ कुछ सच जानता हूं। क्योंकि अवश्य है कि तुम में पंथ पंथ भी होवें जिसतें जो खरे लोग हैं सो तुम में प्रगट हो जायें। १८ १९

फिर जो तुम लोग एक ही स्थान में एकट्ठे होते हो तो यह प्रभु की बियारी खाने के लिये नहीं है। क्योंकि उस के खाने के समय हर एक जन पहिले अपनी बियारी खा लेता है और कोई भूखा रह जाता है और कोई मतवाला होता है। क्या तुम्हारे खाने पीने को घर नहीं हैं; क्या तुम परमेश्वर की कलीसिया को तुच्छ जानते हो; और निर्धनों को लज्जित करते हो; मैं तुम से क्या कहूं; क्या तुम्हारी बड़ाई करूं; मैं इस बात में तुम्हारी बड़ाई नहीं करने का। २० २१ २२

क्योंकि मैं ने यह बात प्रभु से पाई और तुम्हें भी सौंपी कि प्रभु यिसू ने जिस रात कि वह पकड़वाया गया रोटी लिई। और धन्यवाद करके उसे तोड़ी और कहा लेओ खाओ यह मेरी देह है वह तुम्हारे लिये तोड़ी जाती है; तुम लोग मेरे स्मरण के लिये यह किया करो। उसी रीति से उस ने बियारी के पीछे कटोरा भी लिया और कहा यह कटोरा वह नया नियम है जो मेरे लोहू से है; जब जब तुम पीओ तब तब मेरे स्मरण के लिये यों करो। क्योंकि जब जब २३ २४ २५ २६

तुम लोग यह रोटी खाते और यह कटोरा पीते हो तब तब तुम प्रभु की मृत्यु को जब लों कि वह न आवे
२७ लेय जताया करते हो। इस लिये जो कोई अनुचित रीति से यह रोटी खावे अथवा प्रभु का कटोरा पीवे सो प्रभु की देह का और लोहू का अपराधी होगा।
२८ सो मनुष्य पहिले अपने को जांचे और योंही इस
२९ रोटी से खावे और इस कटोरे से पीवे। क्योंकि जो कोई अनुचित रीति से खाता और पीता है सो प्रभु की देह का सोच न करके अपना दण्ड खाता और
३० पीता है। इसी कारण से तुम लोगों में बहुतेरे दुर्बल
३१ और रोगी हैं और कितने तो सो गये। क्योंकि जो हम अपने को जांचते तो हमारा दण्ड नहीं होता।
३२ प्रभु दण्ड देने से हमारा ताड़ना करता है न होवे कि जगत के संग हम पर दण्ड की आज्ञा दिई जाय।
३३ सो हे मेरे भाइयो जब तुम लोग खाने को एकट्ठे आओ
३४ तो एक दूसरे के लिये ठहरो। और यदि कोई भूखा होय तो वह अपने घर में खावे न हो कि तुम लोग एकट्ठे आके दण्ड पाओ; अब जो जो बातें रह गई हैं सो मैं आके सुधारूंगा॥

१२ पर्व्व

हे भाइयो। मैं नहीं चाहता कि तुम लोग आत्मिक दानों के विषय में अजान रहो। तुम लोग जानते हो कि
२ तुम अन्यदेशी थे और गूंगी मूर्तों के पीछे जैसे चलाये
३ गये वैसे चलते थे। सो मैं तुम्हें जताता हूं कि कोई जन परमेश्वर के आत्मा की ओर से बोलके यिसू को

धिक्कार नहीं करता है; और फिर बिना पवित्र आत्मा की ओर से कोई जन यिसू को प्रभु नहीं कह सकता है।

४ अब नाना प्रकार के दान हैं परन्तु आत्मा एक ही ५ है। और नाना प्रकार की सेवकाइयां हैं परन्तु प्रभु ६ एक ही है। और नाना प्रकार की क्रियाएं हैं परन्तु परमेश्वर जो सभों में सब काम करता है सो एक ही ७ है। परन्तु आत्मा का प्रकाश सभों के लाभ के लिये ८ एक एक को दिया जाता है। एक को आत्मा से ज्ञान की बात दिई गई है; और दूसरे को उसी आत्मा से विद्या ९ की बात। फिर और किसी को उसी आत्मा से विश्वास दिया गया; फिर और किसी को उसी आत्मा से चंगा १० करने की शक्ति। और किसी को आश्चर्य्य कर्म करना; और किसी को भविष्यतवाणी कहना; और किसी को आत्माओं का विवेचन करना; और किसी को भांति भांति की भाषाएं बोलना; और किसी को भा-
११ षाओं का अर्थ करना। परन्तु वही एक ही आत्मा इन सभों का कर्त्ता है और जैसा चाहता है वैसा एक एक
१२ को बांटा करता है। क्योंकि जैसा कि देह एक है और अंग बहुत हैं और उसी एक देह के सब अंग मिलके
१३ एक देह होते हैं वैसा ही मसीह भी है। क्योंकि हम लोग क्या यहूदी क्या यूनानी क्या दास क्या निर्बन्ध होके सभों ने एक ही आत्मा से एक देह में बपतिसमा पाया और एक ही आत्मा में हम सब लोग पिलाये गये।

१४ क्योंकि देह में एक अंग नहीं है परन्तु बहुत से हैं।
१५ यदि पांव कहे मैं जो हाथ नहीं हूं तो देह का नहीं हूं;
१६ क्या वह इस लिये देह का नहीं है। और यदि कान
कहे मैं जो आंख नहीं हूं तो देह का नहीं हूं; क्या वह
१७ इस लिये देह का नहीं है। यदि सारी देह आंख होती
तो सुन्ना कहां होता; और यदि सारी देह सुन्ना
१८ होती तो सूंघना कहां होता। परन्तु अब परमेश्वर
ने जैसा उस ने चाहा वैसा देह में हर एक अंग को
१९ रखा है। फिर जो सब एक ही अंग होते तो देह कहां
२० होती। परन्तु अब बहुत से अंग हैं पर देह एक ही
२१ है। आंख जो है सो हाथ से नहीं कह सकती है मुझे
तेरा प्रयोजन नहीं है; न सिर जो है पांव से कह सकता
२२ मुझे तेरा प्रयोजन नहीं है। परन्तु देह में जो अंग
दुर्बल समझ पड़ते हैं सो बहुत अधिक करके अवश्य
२३ हैं। और जिन अंगों को हम आदरहीन जानते हैं
उन पर हम अधिक आदर लगाते हैं और हमारे
२४ बेडौल अंग अधिक सुडौल हो जाते हैं। क्योंकि हमारे
सुडौल अंगों को इस का प्रयोजन नहीं है; पर
परमेश्वर ने देह के अंग ऐसे मिलाके रखे कि उस ने
२५ हीन अंगों को बहुत अधिक आदर दिया। जिसतें देह
में फूटी न होवे परन्तु सब अंग एक दूसरे के लिये
२६ समान चिन्ता करें। और यदि एक अंग को दुःख होता
तो सारे अंग उस के संग दुःखी होते हैं; फिर यदि
एक अंग का आदर होवे तो सारे अंग उस के संग

आनन्द करते हैं। सो तुम लोग मिलके मसीह की देह हो और अलग अलग करके तुम अंग अंग हो। २७

और कलीसिया में परमेश्वर ने कितनों को ठहराया है; पहिले प्रेरितों को; दूसरे भविष्यतवक्ताओं को; तीसरे गुरुओं को; उस के पीछे आश्चर्य्य कर्म; फिर चंगा करने की शक्ति; और उपकार; और अधिकर्म; और नाना प्रकार की भाषाएं। क्या वे सब प्रेरित हैं; क्या वे सब भविष्यतवक्ता हैं; क्या वे सब गुरु हैं; क्या वे सब आश्चर्य्य कर्म करनेहार हैं। क्या सभों को चंगा करने की शक्ति है; क्या सब लोग भांति भांति की भाषाएं बोलते हैं; क्या सब लोग अर्थ करते हैं। तुम अच्छे से अच्छे दानों की लालसा करो; पर मैं एक और मार्ग जो उन से कहीं अच्छा है तुम्हें बताता हूं॥ २८ २९ ३० ३१

१३ पर्ब्ब

यदि मैं मनुष्यों की और स्वर्गदूतों की भाषाएं बोलूं परन्तु प्रेम न रखूं तो मैं झंझनाता पीतल अथवा ठंठनाती झांझ हूं। और यदि मैं भविष्यतवाणी कहूं और सारे भेद और सारी विद्याएं जानूं और मेरा विश्वास यहां लों सिद्ध होय कि मैं पहाड़ों को चलाऊं परन्तु यदि प्रेम न रखूं तो मैं कुछ नहीं हूं। और यदि मैं अपनी सारी संपत्ति भीख दे देके उड़ाऊं और यदि मैं अपनी देह जलाने के लिये देऊं परन्तु प्रेम न रखूं तो मुझे कुछ लाभ नहीं है। प्रेम जो है सो धीरज धरता है और दयावन्त है; प्रेम डाह नहीं करता है; प्रेम २ ३ ४

५ चौड़ाई नहीं करता है ; फूलता नहीं है। प्रेम कुचलन नहीं चलता है ; अपना स्वार्थ नहीं ढूंढता है ; जल्द रिसियाता नहीं ; बुराई सहके कुछ चिन्ता नहीं कर-
६ ता है। वह अधर्म पर आनन्द नहीं करता है परन्तु
७ सच्चाई पर आनन्द करता है। वह सब बातों की समाई करता है ; सब बातों को प्रतीति करता है ; सब बातों
८ की आशा रखता है ; सब बातें सह लेता है। प्रेम कभी जाता नहीं रहता ; परन्तु यदि भविष्यतवाणियां हों तो वे जाती रहेंगी ; यदि भाषाएं हों तो वे बन्द हो जायेंगीं ; यदि विद्या हो तो वह लोप हो जायगी।
९ क्योंकि हमारा ज्ञान अधूरा है और हमारा भविष्यत-
१० वाणी कहना अधूरा है। परन्तु जब पूरा आवेगा तब
११ अधूरा जाता रहेगा। जब मैं बालक था तब मैं बालक की सी बोली बोलता था ; मैं बालक का सा बोध रखता था और मैं बालक सा समझता था परन्तु जब मैं
१२ सियाना हुआ तब बालकपन से हाथ उठाया। अब हम दर्पण से धुंधला सा देखते हैं परन्तु उस समय आम्ने साम्ने देखेंगे ; अब मेरा ज्ञान अधूरा है परन्तु उस समय जैसा मैं ही जाना गया हूं वैसा मैं भी जानूं-
१३ गा। अब तो बिश्वास और आशा और प्रेम ये तीनों बने रहते हैं परन्तु प्रेम उन में बड़ा है॥

१४ पर्व्व

प्रेम का पीछा करो और आत्मिक दानों की लालसा रखो निज करके भविष्यतवाणी कहने की।
२ क्योंकि जो कोई परभाषा में बातें करता है सो मनुष्यों

से नहीं परन्तु परमेश्वर से बोलता है क्योंकि कोई नहीं समझता है परन्तु आत्मा से वह भेद की बातें बोलता है। फिर जो कोई भविष्यतवाणी कहता है ३ सो मनुष्यों से उन को सुधारने और उपदेश देने और संबोधन करने के लिये बोलता है। जो कोई ४ परभाषा में बातें करता है सो अपने को सुधारता है परन्तु जो कोई भविष्यतवाणी कहता है सो कलीसिया को सुधारता है। मैं चाहता हूं कि तुम लोग ५ सब के सब आन आन भाषाएं बोलो परन्तु अधिक करके यह चाहता हूं कि तुम लोग भविष्यतवाणी कहो क्योंकि जो भांति भांति की भाषाएं बोलता है यदि वह कलीसिया के सुधारने के लिये उस का अर्थ न करे तो भविष्यतवाणी कहनेहार उस से बड़ा है।

अब हे भाइयो जो मैं तुम्हारे पास आन आन भा- ६ षाएं बोलते हुए आता और तुम से न कोई प्रकाशित बात और न ज्ञान की बात और न भविष्यतवाणी और न शिक्षा की बात कहता तो मुझ से तुम्हें क्या लाभ होता। निर्जीव वस्तें भी जैसे तुरही अथवा बीन कि ७ जिस से शब्द निकलते हैं सो ऐसे हैं; उन के बोल जो वे बेवरे के संग न होवें तो जो कुछ फूंका अथवा बजा- या जाता है सो क्योंकर बूझा जायेगा। और यदि नर- ८ सिंगे के बोल दुबधे के साथ होवें तो कौन अपने को संग्राम के लिये तैयार करेगा। वैसे ही तुम लोग भी ९ यदि जीभ से समझ की बातें न निकालो तो तुम्हारा

कहा हुआ क्योंकर जाना जायगा; तुम बयार से बक
१० बक करनेहारे ठहरोगे। कितने प्रकार भाषाएं
जगत में न होंगीं और उन में से कोई अर्थहीन नहीं
११ है। फिर जो परभाषा मुझे न आती हो तो बोलने-
हार के आगे मैं बुद्धि हीन ठहरूंगा और बोलने-
हार मेरे आगे बुद्धि हीन ठहरेगा।
१२ सो तुम लोग भी जब कि आत्मिक दानों की लाल-
सा करते हो तो कलीसिया के सुधारने के लिये बढ़-
१३ ती पाने को जतन करो। इस कारण जो कोई परभा-
षा में बोलता है सो प्रार्थना करे कि उस का अर्थ भी
१४ कर सके। क्योंकि जो मैं किसी परभाषा में प्रार्थना
करूं तो मेरा आत्मा तो प्रार्थना करता है परन्तु मेरी
१५ बुद्धि काम हीन है। सो अब क्या चाहिये; मैं आत्मा से
प्रार्थना करूंगा और बुद्धि से भी प्रार्थना करूंगा; मैं
आत्मा से भजन गाऊंगा और बुद्धि से भी गाऊंगा।
१६ नहीं तो यदि तू आत्मा से आशीष की बात बोले तो
जो सामान्य लोगों की जगह में बैठा है सो तेरे धन्य-
वाद करने पर आमीन क्योंकर कहेगा क्योंकि जो कुछ
१७ तू कहता है सो वह नहीं समझता है। तू तो अच्छी
रीति से धन्यवाद करता है परन्तु दूसरा जो है सो सु-
१८ धारा नहीं जाता। मैं अपने परमेश्वर का धन्य मान-
ता हूं कि मैं तुम सभों से अधिक भाषाएं बोलता हूं।
१९ परन्तु जो मैं कलीसिया में सहस्रों बातें परभाषा में

बोलूं तो पांच बातें औरों को सिखाने के लिये अपनी बुद्धि से बोलना मैं उस से अधिक जानता हूं।

२० हे भाइयो बुद्धि में तुम बालक न बनो परन्तु बुराई में बालक रहो; फिर बुद्धि में तुम सियाने हो जाओ।
२१ व्यवस्था में लिखा है कि प्रभु कहता है मैं आन आन भाषाओं और आन आन होंठों से इन लोगों के संग बोलूंगा; तिस पर भी वे मेरी न सुनेंगे। २२ सो भाषाएं बिश्वासियों के लिये नहीं पर अविश्वासियों के लिये चिन्ह ठहरे हैं; परन्तु भविष्यतवाणी कहना अबिश्वासियों के लिये नहीं पर बिश्वासियों के लिये है। २३ सो यदि सारी कलीसिया एक स्थान में एकट्ठी होवे और सब लोग आन आन भाषाएं बोलें और सामान्य अथवा अबिश्वासी लोग भीतर आवें तो क्या वे न कहेंगे कि तुम बौरहे हो। २४ परन्तु जो सब लोग भविष्यतवाणी कहें और अबिश्वासी अथवा सामान्य लोगों में से कोई भीतर आ जाय तो वह हर एक से प्रबोध किया जायगा और वह हर एक से परखा जायगा। २५ और यों उस के मन के भेद प्रगट होंगे; तब वह मुंह के भल गिरके परमेश्वर को दण्डवत करेगा और कह देगा कि परमेश्वर सचमुच तुम लोगों में है।

२६ सो हे भाइयो क्या है; जब तुम लोग एकट्ठे आते हो तब तुम में से हर एक के संग कुछ है; एक के संग भजन है; एक के संग सिच्छा है; एक के संग भाषा है; एक के संग प्रकाशित बात है; एक के संग अर्थ है;

सो चाहिये कि सब बातें तुम्हारे सुधारने के लिये होवें। २७ यदि कोई परभाषा में बोले तो दो दो अथवा तीन तीन बहुत हुए; वे एक एक करके बोलें और एक जन अर्थ करे। २८ पर यदि कोई अर्थ करनेहार न होवे तो वह कलीसिया में चुपका रहे और अपने से और परमेश्वर से बोले। २९ दो अथवा तीन भविष्यतवक्ता बोलें और और लोग बिचार करें। ३० परन्तु यदि दूसरे पर जो बैठा है कोई बात खुल जावे तो पहिला चुपका रहे। ३१ क्योंकि तुम सब के सब एक एक करके भविष्यतवाणी कह सकते हो जिसतें सब सीखें और सभों को ढाढ़स बन्धाई जाय। ३२ और भविष्यतवक्ताओं के आत्मा भविष्यतवक्ताओं के बश में हैं। ३३ क्योंकि परमेश्वर बेठिकाने की बातों से नहीं पर मेल की बातों से प्रसन्न है; वैसा सन्तों की सारी कलीसियाओं में है।

३४ तुम्हारी स्त्रियां कलीसियाओं में चुपकी रहें क्योंकि बोलने की नहीं परन्तु आधीन रहने की आज्ञा उन्हें दिई गई है कि व्यवस्था भी ऐसा कहती है। ३५ और जो वे कुछ सीखा चाहें तो घर में अपने पतियों से पूछें क्योंकि लाज की बात है कि स्त्रियां कलीसिया में बोलें। ३६ क्या परमेश्वर की बात तुम्हों में से निकली; अथवा क्या वह केवल तुम्हीं लों पहुंची है।

३७ जो कोई अपने को भविष्यतवक्ता अथवा आत्मिक जाने तो जो बातें मैं तुम्हें लिखता हूं उन्हें वह प्रभु ही की आज्ञाएं मान लेवे। ३८ परन्तु यदि कोई अज्ञान हो तो

अज्ञान हो। सो हे भाइयो भविष्यतवाणी कहने को ३९ तुम लालसा रखो और भाषाएं बोलना मत बरजो। सा- ४० री बातें सुढब और ठिकाने के साथ होवें॥

१५ पर्ब्ब

अब हे भाइयो जिस मंगल समाचार को मैं ने तुम्हें सुनाया उसी की बात मैं तुम्हें जताता हूं; उसे तुम्हों ने ग्रहण भी किया है और उस में तुम लोग ठहरे भी हो। उसी के कारण तुम बच भी जाते हो पर इतना २ हो कि तुम उस मंगल समाचार को जो मैं ने तुम्हें प्रचारा है धरे रहो नहीं तो तुम्हारा बिश्वास लाना अकारथ है। क्योंकि जो मैं ने पाया सो मैं ने तुम्हें पहि- ३ ली बातों में भी सोंपा अर्थात यह कि मसीह धर्मग्रन्थ के समान हमारे पापों के लिये मूआ। और गाड़ा ४ गया और धर्मग्रन्थ के समान तीसरे दिन जी उठा। और केफा को दिखाई दिया; फिर उन बारहों को। ५ उस के पीछे कुछ ऊपर पांच सौ भाई थे उन्हें वह एक ६ साथ दिखाई दिया; उन में अधिक भाग अब लों हैं परन्तु कई एक सो गये। फिर वह याकूब को दिखाई ७ दिया; फिर सारे प्रेरितों को। और सब के पीछे मुझे ८ भी जो अधूरे दिनों का जनमा हुआ हूं दिखाई दिया। क्योंकि मैं प्रेरितों में सब से छोटा हूं और प्रेरित ९ कहाने के योग्य नहीं हूं इस कारण कि मैं ने परमे- श्वर की कलीसिया को सताया। परन्तु जो कुछ मैं हूं १० सो परमेश्वर की कृपा से हूं; और उस की कृपा जो मुझ पर हुई सो अकारथ न ठहरी परन्तु मैं ने उन

सभों से अधिक परिश्रम किया ; फिर तो मैं ने नहीं परन्तु परमेश्वर की कृपा जो मेरे संग थी उसी ने बह
११ किया। सो क्या मैं हूं क्या वे हों ऐसा हम प्रचार करते हैं और ऐसा ही तुम लोग विश्वास लाये हो।
१२ अब जो हम मसीह को प्रचार करते हैं कि वह मृतकों में से जी उठा तो तुम में से कोई कोई क्यों कह-
१३ ते हैं कि मृतकों का पुनरुत्थान नहीं होगा। क्योंकि जो मृतकों का पुनरुत्थान नहीं है तो मसीह भी नहीं
१४ जी उठा है। फिर जो मसीह नहीं उठा तो हमारा उपदेश झूठा है और तुम्हारा विश्वास भी झूठा है।
१५ हां हम परमेश्वर के झूठे साची ठहरे क्योंकि हम ने परमेश्वर के लिये साची दिई है कि उस ने मसीह को फिर जिलाया है ; जो मृतक नहीं जी उठते हैं
१६ तो उस ने उस को भी नहीं उठाया। क्योंकि जो मृतक
१७ नहीं उठते हैं तो मसीह भी नहीं उठा है। और जो मसीह नहीं उठा है तो तुम्हारा विश्वास बृथा है और
१८ तुम लोग अब लों अपने पापों में पड़े हो। और जो लोग मसीह में होके सो गये हैं सो भी नष्ट हुए हैं।
१९ यदि हम लोग केवल इसी जीवन में मसीह से आशा रखते हैं तो हम सारे मनुष्यों से अधिक अभागे हैं।
२० परन्तु अब मसीह तो मृतकों में से जी उठा है और
२१ उन में जो सो गये हैं पहिला फल हुआ। क्योंकि जब मनुष्य के कारण से मृत्यु है तो मनुष्य ही के कारण
२२ से मृतकों का पुनरुत्थान भी है। क्योंकि जैसा आदम

के कारण से सारे मरते हैं वैसा ही मसीह के कारण से सारे जिलाये जायेंगे। परन्तु हर एक अपनी अपनी पारी में; पहिला फल मसीह है; फिर वे जो मसीह के हैं उस के आने पर। इस पर जगतान्त होगा; तब वह राज्य को परमेश्वर को जो पिता है सौंप देगा और सारी प्रभुता और सारे अधिकार और सामर्थ्य को नष्ट करेगा। क्योंकि जब लों वह समस्त शत्रुओं को अपने पांवों तले न लावे तब लों उसे राज्य करना है। पिछला शत्रु जो नष्ट होगा सो मृत्यु है। क्योंकि उस ने सारी वस्तें उस के पांवों तले कर दिईं; फिर जब वह कहता है कि सारी वस्तें उस के पांवों तले कर दिईं तब प्रगट है कि जिस ने सब वस्तें उस के आधीन कर दिईं सो ही रह गया। और जब सब कुछ उस के आधीन हो लिया होगा तब जिस ने सारी वस्तें उस के आधीन कर दिईं उसी के आधीन पुत्र आप होगा जिसतें परमेश्वर सब कुछ सभों में होवे। | २३ २४ २५ २६ २७ २८

नहीं तो जो मृतकों के ऊपर बपतिसमा पाते हैं सो क्या करेंगे; यदि मृतक सचमुच जी न उठें तो वे क्यों मृतकों के ऊपर बपतिसमा पाते हैं। और फिर हम क्यों हर घड़ी जो जोखिम में पड़े हैं। जो बड़ाई मैं हमारे प्रभु मसीह यिसू में करता हूं उस की मैं किरिया खाता हूं कि मैं प्रति दिन मरता हूं। यदि मैं मनुष्यों के ढब पर एफसुस में बनैले पशुओं के संग लड़ा तो मुझे क्या फल है; यदि मृतक न जी उठें तो | २९ ३० ३१ ३२

३३ आओ खावें पीवें कि कल के दिन हम मरेंगे। भरमाये मत जाओ; बुरी संगतें अच्छे चलनों को बिगाड़ती
३४ हैं। तुम लोग तो धर्म की रीति से जाग जाओ और पाप न करो क्योंकि कितनों को परमेश्वर का ज्ञान नहीं है; मैं तुम्हारी लज्जा के लिये यह कहता हूं।

३५ फिर कोई कहे कि मृतक किस रीति से उठते हैं;
३६ और वे कैसी देह में आते हैं। हे निर्बुद्धि जो वस्तु तू बोता है यदि वह न मरे तो कभी जिलाई न जायगी।
३७ और जो कुछ तू बोता है सो वह देह जो होवेगी तू नहीं बोता है परन्तु निरा एक दाना है चाहे गोहूं का
३८ चाहे कुछ और का। परन्तु परमेश्वर जैसी उस की इच्छा हुई वैसी वह उसे एक देह देता है; और हर
३९ एक बीज की एक निज देह है। सारे शरीर एक ही रीति के शरीर नहीं हैं परन्तु मनुष्यों का शरीर और है; पशुओं का और है; मछलियों का और है; और
४० पंछियों का और है। आकाशी देहें भी हैं और पार्थिव देहें भी हैं परन्तु आकाशियों का तेज और है और
४१ पार्थिवों का और है। सूर्य्य का तेज और है; चन्द्रमा का तेज और है; और तारों का तेज और है; क्योंकि तारों के तेज भिन्न भिन्न हैं।

४२ मृतकों का पुनरुत्थान ऐसा ही है; नाशमान वह
४३ बोया जाता है और अविनाशी वह उठता है। अनादरता में बोया जाता है और महिमा में उठता है; दुर्बलता में बोया जाता है और पराक्रम में उठता है।

माणरूपी देह बोई जाती है और आत्मारूपी देह उठती है; एक माणरूपी देह है और एक आत्मारूपी देह है। ४४ और यों लिखा है कि पहिला पुरुष आदम जीवता माणी ज़ुआ और पिछला आदम जीवदाता आत्मा ठहरा। ४५ परन्तु आत्मारूपी पहिले न था पर माणरूपी था और उस के पीछे आत्मारूपी ज़ुआ। ४६ पहिला मनुष्य पृथिवी से होके पार्थिव ज़ुआ; ४७ दूसरा मनुष्य स्वर्ग से होके मभु है। ४८ जैसा पार्थिव है वैसे जो पार्थिव हैं भी हैं; और जैसा स्वर्गीय है वैसे जो स्वर्गीय हैं भी हैं। ४९ और जैसा कि हम ने पार्थिव का स्वरूप पाया था वैसे हम स्वर्गीय का भी स्वरूप पावेंगे।

५० हे भाइयो मैं यह कहता हूं कि मांस और रक्त परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं हो सकते हैं; और न नाशमान जो है अमरपद का अधिकारी हो सकता है। ५१ देखो मैं तुम्हें एक भेद बताता हूं सो यह है कि हम लोग सब न सोवेंगे परन्तु हम लोग सब बदले जायेंगे। ५२ एक क्षण भर में पल मारते में पिछला नरसिंगा फूंकते ज़ुए हम बदले जायेंगे; क्योंकि नरसिंगा फूंका जायगा और मृतक उठके अविनाशी होंगे और हम लोग बदले जायेंगे। ५३ क्योंकि इस नाशमान को चाहिये कि अविनाश को पहिन लेय और इस मरनेहार को कि अमरपद को पहिन लेय। ५४ सो जब यह नाशमान जो है अविनाश को और

यह मरनहार जो है अमर पद को पहिन चुकेगा तब वह लिखी ऊई बात पूरी होगी अर्थात जय ने मृत्यु

५५ को निगल लिया। हे मृत्यु तेरा डंक कहां रहा ; हे

५६ पाताल तेरी जय कहां रही। मृत्यु का डंक पाप है

५७ और पाप का बल व्यवस्था है। परन्तु परमेश्वर स्तुत है कि उस ने हमारे प्रभु यिसू मसीह के द्वारा से हमें जय

५८ दिई है। सो हे मेरे प्यारे भाइयो तुम स्थिर और अचल रहो और परमेश्वर के काम में सदा बढ़ती करते रहो क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हारा परिश्रम प्रभु में अकारथ नहीं है॥

१६ पर्ब्ब

अब उस चन्दे के विषय में जो सन्त लोगों के लिये है जैसा मैं ने गलातिया की कलीसियाओं को आज्ञा

२ दिई है वैसा तुम लोग भी करो। हर अठवारे के पहिले दिन तुम में से हर कोई अपनी बिसात के समान अपने पास निकाल रखके बटोरे जिसतें जब मैं

३ आऊं तब चन्दा करना न पड़े। और जब मैं आऊं तब जिन को तुम लोग ठहराओगे उन्हें मैं तुम्हारे चन्दे के रुपैया यरूसलम में ले जाने को पत्रियों के संग भे-

४ जूंगा। और जो मेरा भी जाना उचित होय तो वे मेरे संग जायेंगे।

५ मैं मकदूनिया से होके जाया चाहता हूं ; सो जब मैं मकदूनिया में होके निकलूंगा तब तुम्हारे पास

६ आऊंगा। क्या जाने मैं तुम्हारे पास कुछ दिन ठहरूं हां जाड़ा भी काटूं जिसतें जिधर मेरा जाना हो उधर

को तुम लोग मुझे बिदा करो। क्योंकि मैं अब तुम लो- ७
गों से मार्ग ही में भेंट करने नहीं चाहता हूं परन्तु
जो प्रभु चाहे तो मैं आशा रखता हूं कि कुछ दिन
तुम्हारे संग रहूं। और पन्तिकोस्त के दिन लों मैं एफ- ८
सुस में रहूंगा। क्योंकि एक बड़ा द्वार जो गुणकारी भी ९
है सो मेरे लिये खुला है और बिरोध करनेहारे बहुत
से हैं।

और जो तिमोदेउस आवे तो देखो कि वह बिना १०
खटका तुम्हारे पास रहे क्योंकि वह मेरे समान प्रभु
का कार्य्य करता है। कोई उस की अवज्ञा न करे परन्तु ११
उस को कुशल से इधर को बिदा करो कि मेरे पास
आवे क्योंकि मैं उस की बाट जोहता हूं कि वह भाइयों
के संग आवे। रहा भाई अपोल्लोस; सो मैं ने उस से १२
बहुत बिन्ती किई कि भाइयों के संग तुम्हारे पास
जाय; परन्तु अब की जाने की उस की इच्छा कुछ भी
नहीं थी फिर जब अवकाश पावेगा तब आवेगा।
जागते रहो; बिश्वास में दृढ़ हो; पुरुषार्थ करो; बल- १३
वान होओ। तुम्हारे सारे काम प्रेम के संग होवें। १४

अब हे भाइयो तुम स्तीफनस का घराना जानते १५
हो कि वह अखाया का पहिला फल है और कि वे
सन्त लोगों की सेवा करने को तैयार रहे हैं। मैं १६
तुम से बिन्ती करता हूं कि तुम ऐसों के और हर एक
संगी कर्मकारी और परिश्रम करनेहार के आज्ञा-
कारी होओ। और मैं स्तीफनस और फोर्तूनातुस और १७

अखायकुस के आने से आनन्दित हूं क्योंकि जो तुम
१८ लोगों से न ज़आ सो उन्हों ने भर दिया। क्योंकि
उन्हों ने मेरे और तुम्हारे आत्मा को सन्तुष्ट किया;
इस लिये तुम ऐसों को मानो।

१९ आसिया की सब कलीसियाएं तुम्हें नमस्कार कहती
हैं; अकीला और प्रिसकिल्ला और जो कलीसिया कि
उन के घर में है सो तुम्हें प्रभु में बज़त बज़त नमस्कार
२० कहते हैं। सारे भाई लोग तुम्हें नमस्कार कहते हैं;
तुम लोग पवित्र चूमा से आपस में नमस्कार करो।

२१ अब मुझ पौलुस का नमस्कार अपने ही हाथ से।
२२ यदि कोई जन प्रभु मसीह को प्यार न करे तो वह
२३ स्रापित होवे मारान आथा। प्रभु यिसू मसीह की कृपा
२४ तुम पर होवे। मेरा प्रेम मसीह यिसू में तुम्हारे संग
होवे आमीन॥

पौलुस की दूसरी पत्री

कोरिन्तियों को।

१ पर्ब्ब

पौलुस जो परमेश्वर की इच्छा से यिसू मसीह का प्रेरित है उस की और भाई तिमोटेउस की ओर से परमेश्वर की कलीसिया को जो कोरिन्तुस में है और अखाया में के सब सन्त लोगों को यह पत्री। २ हमारे पिता परमेश्वर से और प्रभु यिसू मसीह से कृपा और कुशल तुम्हारे लिये होवे।

३ परमेश्वर जो हमारे प्रभु यिसू मसीह का पिता है सो स्तुत कि वह दया का पिता और सारे संबोधन का परमेश्वर है। ४ वह हमारे हर एक क्लेश में हम को संबोधन देता है जिसतें जिस संबोधन से हमारी ढाड़स परमेश्वर से बन्धाई जाती है उस ही के कारण से हम उन लोगों को जो किसी प्रकार के क्लेश में हों संबोधन दे सकें। ५ क्योंकि जैसे मसीह के दुःख हम में बढ़ते जाते हैं वैसे हमारा संबोधन भी मसीह के

६ कारण से बढ़ता है। और यदि हम क्लेश उठाते हैं तो वह तुम्हारे संबोधन और निस्तार के लिये है; वह तुम्हारे उन दुःखों के सहने में जो हम भी उठाते हैं गुणकारी है; और यदि हम संबोधन पाते हैं तो ७ वह तुम्हारे संबोधन और निस्तार के लिये है। और हमारी आशा तुम्हारे विषय में दृढ़ है क्योंकि हम जानते हैं कि जैसा तुम लोग दुःखों के भागी हो वैसा ही तुम संबोधन में भी हो।

८ हे भाइयो हम नहीं चाहते कि तुम हमारे क्लेश से जो आसिया में हम पर पड़ा अज्ञान रहो कि हम शक्ति भर से अधिक बहुत ही दब गये थे यहां लों कि ९ हम ने जीने से भी हाथ धोया। परन्तु हम अपने में अपने ऊपर बध की आज्ञा दे चुके थे जिसतें हम अपना ही नहीं परन्तु परमेश्वर का जो मृतकों को जिला- १० ता है भरोसा रखें। उस ने हम को ऐसी महा मृत्यु से छुड़ाया और वह छुड़ाता है; और उस पर हमारा ११ भरोसा है कि वह आगे को भी छुड़ावेगा। तुम भी मिलके प्रार्थना से हमारी सहाय करो जिसतें जो दया बहुत से लोगों की प्रार्थना से हम को मिली उस पर बहुत से लोग उस का धन्यवाद भी हमारे लिये करें। १२ और हम इस बात से आनन्दित होते हैं कि हमारा मन साक्षी देता है कि हम ने ईश्वरीय सीधाई और सच्चाई से शारीरिक बुद्धि से नहीं परन्तु परमेश्वर की कृपा से जगत में अपना निर्वाह किया और निज करके

तुम्हारे बीच में किया। क्योंकि जो बातें तुम लोग पढ़ते और मानते हो वेही बातें हम तुम्हें लिखते हैं दूसरी नहीं; और मेरा भरोसा यह है कि तुम लोग अन्त लों मानते रहोगे। तुम ने कुछ कुछ हमें भी माना है कि हम तुम्हारी आनन्दिता हैं; वैसा प्रभु यिसू के दिन तुम भी हमारी हो। | १३ १४

और मैं ने उसी भरोसे पर पहिले तुम्हारे पास आने की मनसा किई कि तुम लोग दूसरा पदार्थ पाओ। और तुम्हारे पास से होके मकदूनिया को जाऊं और मकदूनिया से लौटके फिर तुम्हारे पास आऊं और तुम्हों से यहूदाह की ओर पहुंचाया जाऊं। सो जब मैं ने यह मनसा किई तो क्या हलकापन से किई; अथवा जो मनसा मैं करता हूं क्या मैं शरीर की रीति पर मनसा करता हूं कि हां हां और नहीं नहीं भी मेरी बात में होवे। परमेश्वर जानता है कि हमारी बात जो तुम से थी सो हां और नहीं न ठहरी। क्योंकि परमेश्वर का पुत्र यिसू मसीह जिसे हम लोगों ने अर्थात मैं ने और सिलवानुस ने और तिमोथेउस ने तुम्हारे बीच में प्रचार किया सो हां और नहीं न ठहरा परन्तु हां उस से ठहरा। क्योंकि परमेश्वर की जितनी वाचाएं हैं सो उस से हां ठहरीं और उस से आमीन ठहरीं जिसतें हमारे द्वारा से परमेश्वर की महिमा प्रकाश होय। अब जो हम को तुम्हारे संग मसीह में स्थिर करता है और जिस ने हम को मसीह किया है सो | १५ १६ १७ १८ १९ २० २१

२२ परमेश्वर है। उस ने हमें पर छाप भी किई है और
२३ आत्मा का बयाना हमारे मनें में दिया है। परन्तु मैं परमेश्वर को अपने आत्मा पर साची लाता हूं कि मैं ने तुम पर दया किई जो अब लों कोरिन्तुस में नहीं
२४ आया। कि हम तुम्हारे बिश्वास पर कुछ प्रभुता नहीं रखते हैं परन्तु तुम्हारे आनन्द के उपकार करने-हार हैं क्योंकि तुम लोग बिश्वास में स्थिर हो॥

२ पर्ब्ब

परन्तु मैं ने अपने मन में यह ठाना कि मैं उदास
२ होके तुम्हारे पास फिर न आऊं। क्योंकि यदि मैं तुम्हें उदास करूं तो मेरे उदास किये हुए को छोड़ कौन
३ मुझे आनन्दित कर सकता है। जो मेरा आनन्द है सो तुम सभों का आनन्द है; यह निश्चय मैं तुम सभों के विषय में रखता हूं इस लिये तुम को यह लिखा है न हो कि जब मैं आऊं तब जिन से मुझे आनन्दित होना
४ था उन हीं से मैं उदास होऊं। क्योंकि मैं ने बड़े क्लेश से और मन के शोक से बहुत आंसू बहा बहाके तुम्हें लिखा तुम लोगों को उदास करने के लिये तो नहीं परन्तु जिसतें उस प्रेम को जो मैं तुम से अधिक करके
५ रखता हूं जानो। फिर यदि किसी ने उदास किया तो उस ने मुझी को नहीं उदास किया परन्तु (मैं बढ़ाके
६ न बोलूं) उस ने थोड़ा सा तुम सभों को भी किया। जो ताड़ना उस ने बहुतेरों से पाया है सो उस के लिये
७ बस है। सो अब उस से उलटा यह अच्छा है कि तुम उस पर चमा करो और उस की ढाड़स बन्धाओ ऐसा

न होवे कि शोक की अधिकाई ऐसे जन को खा जाय। इस कारण मैं तुम से बिन्ती करता हूं कि तुम अपने प्रेम को उस पर दृढ़ करो। क्योंकि मैं ने इस कारण भी लिखा था जिसतें तुम्हें जांचूं कि तुम लोग सारी बातों में आज्ञाकारी हो कि नहीं। जिसे तुम लोग कुछ छिमा करो उसे मैं भी करता हूं और जिसे मैं ने कुछ छिमा किया तो तुम्हारे कारण से मसीह की जगह होकर उसे छिमा किया। ऐसा न होवे कि शैतान हमारे ऊपर कुछ दांव पावे क्योंकि हम उस की जुगतों से अज्ञान नहीं हैं। | ८ ९ १० ११

फिर जब मैं मसीह का मंगल समाचार सुनाने को त्रोआस में आया और प्रभु की ओर से एक द्वार मेरे लिये खुल गया। तब मैं ने अपने भाई तीतुस को जो न पाया तो मेरे मन को चैन न रहा और उन्हों से बिदा होकर वहां से मकदूनिया को चल निकला। अब हम परमेश्वर का धन्य मानते हैं क्योंकि वह मसीह में हम को सर्वदा जय देता है और अपने ज्ञान की सुगन्ध को हम से हर जगह में प्रगट करवाता है। क्योंकि हम परमेश्वर के आगे निस्तार पानेहारों के लिये और नष्ट होनेहारों के लिये मसीह की सुगन्ध हैं। कितनों को हम मृत्यु के लिये मृत्यु की गन्ध होते हैं; और कितनों को हम जीने के लिये जीवन की गन्ध होते हैं; और कौन इन बातों के योग्य है। क्योंकि हम बहुतों के समान परमेश्वर के बचन में मिलौनी | १२ १३ १४ १५ १६ १७

नहीं करते हैं परन्तु सचौटी से और परमेश्वर की और से हम परमेश्वर के संमुख मसीह के विषय में बोलते हैं॥

३ पर्ब्ब

क्या हम अपने को सराहना फिर आरंभ करते हैं; अथवा क्या औरों के समान हमें यह चाहिये कि सराहने के पत्र तुम्हारे पास लावें अथवा सराहने के पत्र तुम्हों से ले जावें। २ हमारा पत्र जो हमारे मनों पर लिखा हुआ है सो तुम लोग हो और उसे सारे मनुष्य जानते और पढ़ते हैं। ३ तुम लोग मसीह के पत्र हमारी सेवकाई से तैयार किये हुए प्रगट हो और पत्थर की पटरियों पर नहीं परन्तु मन की मांस सी पटरियों पर लिखे हुए हो मसि से तो नहीं पर जीवते परमेश्वर के आत्मा से।

४ हम ऐसा भरोसा मसीह के द्वारा से परमेश्वर पर रखते हैं। ५ न कि हम आप से इस बात के योग्य हैं कि हम किसी बात का सोच आप से कर सकें परन्तु हमारी योग्यता परमेश्वर ही से है। ६ उस ने नये नियम के सेवक होने की योग्यता भी हमें दिई; अक्षर के नहीं परन्तु आत्मा के सेवक; क्योंकि अक्षर मार डालता है परन्तु आत्मा जीवन देता है। ७ फिर मृत्यु की सेवकाई जो अक्षरों की थी और पत्थरों पर खोदी गई थी यदि वह ऐसे तेज के संग थी कि इसराएल के सन्तान मूसा के मुख पर उस तेज के कारण से जो उस के मुख पर था और जो नाशमान था ताक न सके। ८ तो आत्मा की

सेवकाई कितनी अधिक तेज के संग न होगी। क्योंकि यदि दण्ड की आज्ञा देनेहारी सेवकाई का तेज है तो धर्म की सेवकाई का तेज कितना अधिक न होगा। क्योंकि इस बड़े तेज का विचार करके वह जो तेजोमय ठहरा सो तेजोमय न रहा। क्योंकि यदि नष्ट होनेहारी वस्तु का तेज था तो उस का जो स्थिर रहेगा सो कितना अधिक तेज है। ९ १० ११

सो ऐसी आशा रखके हम बड़त ही निशंका होके बोलते हैं। और मूसा के समान हम नहीं हैं कि उस ने अपने मुंह पर पर्दा डाला जिसतें इसराएल के सन्तान उस उठ जानेहारी बात के तात्पर्य को अच्छी रीति से न देखें। परन्तु उन की बुद्धि अंधी हो गई क्योंकि आज के दिन लों पुराने नियम के पढ़ने में वही पर्दा रहता है और उठ नहीं जाता है क्योंकि वह पर्दा मसीह से जाता रहता है। पर आज के दिन लों जब मूसा की पढ़ी जाती है तब वह पर्दा उन के मन पर पड़ा रहता है। परन्तु जब वह प्रभु की ओर फिरेगा तब वह पर्दा सर्वथा उठेगा। अब प्रभु वही आत्मा है और जहां कहीं प्रभु का आत्मा है वहीं निर्बन्धता है। और हम सब बिना पर्दा प्रभु के तेज को दर्पण में देख देखके प्रभु के आत्मा के द्वारा से तेज से तेज लों उस के स्वरूप में बदलते जाते हैं॥ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८

४ पर्व्व

सो जब हम ने यह सेवकाई पाई और हम पर ऐसी दया ऊई तो हम निराश नहीं होते हैं। और हम ने २

लाज के गुप्त काम त्याग किये और छल की चाल नहीं चलते और परमेश्वर के बचन में घाट बाढ़ नहीं करते हैं परन्तु सच्चाई के प्रकाश से परमेश्वर के आगे हर एक मनुष्य के मन में जगह करते हैं।

३ फिर जो हमारा मंगल समाचार ढपा है तो नष्ट
४ होनेहारों के लिये ढपा है। कि इस जगत के ईश्वर ने अबिश्वासियों की बुद्धि को अंधी कर दिया है न होवे कि मसीह जो परमेश्वर की मूर्त्ति है उस का तेजोमय
५ मंगल समाचार का प्रकाश उन्हों पर चमके। क्योंकि हम अपना नहीं परन्तु मसीह यिसू का जो प्रभु है प्रचार करते हैं और हम आप यिसू के लिये तुम्हारे
६ दास हैं। क्योंकि परमेश्वर जिस ने आज्ञा दिई कि अंधकार में से उजाला चमके उसी ने हमारे मनों को उजाला कर दिया जिसतें परमेश्वर के तेज के ज्ञान
७ का उजाला यिसू मसीह के मुख से प्रकाश होवे। परन्तु हम यह धन मिट्टी के पात्रों में रखते हैं जिसतें सामर्थ्य की अधिकाई हमारी ओर की नहीं पर पर-
८ मेश्वर की ओर की ठहरे। हम हर प्रकार से क्लेश में हैं परन्तु दबाव में नहीं हैं; हम घबराहट में हैं
९ परन्तु निराश नहीं होते हैं। हम सताये जाते हैं पर अकेले छोड़े नहीं गये; हम गिराये जाते हैं पर नष्ट
१० नहीं हुए। कि हम प्रभु यिसू के मरण को अपनी देह में नित लिये फिरते हैं जिसतें यिसू का जीवन भी
११ हमारी देह में प्रगट होय। क्योंकि हम जो जीते हैं

सो यिसू के लिये मरने को नित सोंपे जाते हैं जिसतें यिसू का जीवन भी हमारी मरनेहार देह में प्रगट होवे।

१२ सो मरण हम में और जीवन तुम्हों में काम करता है। १३ और जैसा लिखा है मैं बिश्वास लाया इस लिये मैं बोला वैसे विश्वास का आत्मा पाके हम भी बिश्वास लाते हैं और इस लिये हम भी बोलते हैं। १४ हम जानते हैं कि जिस ने प्रभु यिसू को जिलाया सो हम को भी यिसू के कारण से जिलायेगा और तुम्हारे संग अपने संमुख करेगा। १५ क्योंकि सारी बस्तें तुम्हारे लिये हैं जिसतें वह उभरती ऊई कृपा परमेश्वर की महिमा के लिये बऊतों के द्वारा से धन्यबाद अधिक करावे।

१६ इस लिये हम निराश नहीं होते हैं परन्तु यद्यपि हमारी बाहरी मनुष्यता नाश होती है तथापि भीतरी मनुष्यता प्रतिदिन नई होती जाती है। १७ क्योंकि हमारा पल भर का हलका क्लेश जो है सो अत्यन्त ही अत्यन्त भारी और सदाकाल की महिमा हमारे लिये उत्पन्न करता है। १८ कि हम देखी वस्तुओं पर नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं पर दृष्टि करते हैं क्योंकि जो बस्तें देखने में आतीं सो थोड़े दिनों की हैं परन्तु जो देखने में नहीं आतीं सो अनन्त हैं॥

५ पर्व्व

क्योंकि हम जानते हैं कि जब हमारा तंबू सा घर जो पृथिवी पर है उजड़ जावे तो हमारा एक भवन परमेश्वर से तैयार है; वह हाथों का बनाया ऊआ

घर नहीं है परन्तु वह अविनाशी और स्वर्ग में है।
२ क्योंकि इस में हम आहें खैंचते हैं और अपना
३ स्वर्गीय घर पहिन लेने को जी से चाहते हैं। कि हम
४ पहिराये जाके नंगे न पाये जायें। क्योंकि जब लों हम
इस तंबू में हैं तब लों बोझ से दबकर आहें खैंचते हैं
तौ भी हम नहीं चाहते हैं कि उतारें परन्तु कि उस
पर पहिराये जायें जिसतें मृताई जो है सो जीवन से
५ निगल लिया जाय। फिर जिस ने हम को इस ही
के लिये तैयार किया है सो परमेश्वर है; उस ने
६ आत्मा का बयाना भी हम लोगों को दिया। इस
लिये हम नित ढाड़स बन्धे हुए रहते हैं कि जानते
हैं कि जब लों हम देह में डेरा करते हैं तब लों
७ हम प्रभु से बियोगी हैं। क्योंकि हम दृष्टि करके
८ नहीं परन्तु बिश्वास करके चलते हैं। हम ढाड़स
बन्धे हुए रहते हैं और देह से अलग होने और
प्रभु के यहां जा रहने को अधिक करके चाहते हैं।
९ इस कारण हम इस आदर की लालसा करते हैं कि
क्या साथ में क्या बियोग में वह हम से प्रसन्न होवे।
१० क्योंकि हम सभों को मसीह के न्याय की गद्दी के आगे
प्रगट होना है जिसतें हर एक जो कुछ उस ने देह
में होते हुए किया क्या भला क्या बुरा उस के समान
वह पावे।

११ इस कारण प्रभु के भय को जानके हम मनुष्यों को
समझाते हैं परन्तु परमेश्वर पर हम प्रगट हैं; और

मेरा भरोसा है कि तुम लोगों के धर्मबोध पर हम भी प्रगट ऊए हैं। १२ क्योंकि हम फिर अपने को तुम्हारे लिये नहीं सराहते हैं पर तुम्हें हमारे कारण बड़ाई करने की गों मिलती है जिसतें तुम उन को जो मन की बात पर नहीं परन्तु बाहर की दिखलाई पर बड़ाई करते हैं कुछ उत्तर दे सको। १३ क्योंकि जो हम बेसुधि हैं तो यह परमेश्वर के लिये है; फिर जो हम अपनी सुधि में हैं तो यह तुम्हारे लिये है। १४ कि मसीह का प्रेम हम को खेंचता है क्योंकि हम यों विचार करते हैं कि जो एक जन सभों की जगह में मूआ तो वे सब लोग मूए ऊए ठहरे। १५ और वह सभों की जगह में मूआ जिसतें जो लोग जीते हैं सो आगे को अपने लिये न जीवें परन्तु जो उन की जगह में मूआ और फिर जी उठा है उस ही के लिये वे जीवें। १६ सो अब से लेके हम किसी को शरीर की रीति पर नहीं पहचानते हैं; और यद्यपि हम ने मसीह को शरीर की रीति पर पहचाना है तथापि हम आगे को उसे ऐसा नहीं जानते हैं। १७ सो यदि कोई जन मसीह में है तो वह नई सृष्टि ठहरा; पुरानी वस्तें जाती रहीं; देखो सारी वस्तें नई हो गई। १८ और सारी वस्तें परमेश्वर से हैं; उस ने यिसू मसीह के कारण से हमों को अपने से मिला लिया और मिलाप की सेवकाई हम को दिई। १९ अर्थात परमेश्वर ने मसीह में होके जगत को अपने से यों मिला लिया कि उस

ने उन के अपराधों का लेखा उन पर न लगाया और
२० मिलाप का बचन हमें सोंपा। इस लिये हम मसीह
की ओर से दूत ठहरे हैं कि परमेश्वर हमारे द्वारा से
तुम्हें बुलवाता है; सो हम मसीह की जगह तुम्हों
से बिन्ती करते हैं कि तुम लोग परमेश्वर से मेल
२१ करो। क्योंकि जो जन पाप को न जानता था उस को
उस ने हमारी जगह में पाप ठहराया जिसतें हम उस
के कारण ईश्वरीय धर्म बनें॥

६ पर्ब्ब

सो हम संगी कर्मकारी होके तुम्हों से बिन्ती करते
हैं कि परमेश्वर की कृपा को जो ग्रहण किया सो तुम
२ में अकारथ न ठहरे। क्योंकि वह कहता है ग्रहण
करने के समय में मैं ने तेरी सुनी है और निस्तार के
दिन में मैं ने तेरी सहायता किई है; देखो ग्रहण कर-
ने का समय अब है; देखो निस्तार का दिन अब है।
३ क्योंकि हम कभी किसी के ठोकर के कारण नहीं
४ होते हैं जिसतें इस सेवकाई की निन्दा न होय। परन्तु
हम अपने को हर एक बात में परमेश्वर के सेवक दि-
खाते हैं; बहुत धीरज धरने में; क्लेशों में; सकेतों में;
५ जंजालों में। मार खाने में; बन्धों में; झल्लड़ों में; परि-
६ श्रमों में; जागा करने में; उपवासों में। पवित्रता से; ज्ञान
से; सहने से; भलमनसी से; पवित्र आत्मा से; निष्कपट
७ प्रेम से। सच्चाई की बात से; परमेश्वर के सामर्थ्य से;
धर्म के हथियारों से दहिने हाथ और बायें हाथ।
८ मान में और अपमान में होके; जस में और अपजस

में होके ; हम जैसे भरमानेहारे पर तौ भी सच्चे हैं।
हम जैसे अनजाने पर तौ भी अच्छी रीति से जाने ऊए ९
हैं; जैसे मरते ऊए फिर देखो हम जीते हैं; जैसे ताड़ना
किये ऊए पर तौ भी मूए नहीं। जैसे उदास पर सदा १०
आनन्द करनेहारे; जैसे निर्धन पर बऊतों को धनी
करनेहारे; जैसे जो कुछ नहीं रखते हैं पर तौ भी
सब कुछ रखते हैं।

हे कोरिन्थियो हमारा मुंह तुम्हारे लिये खुला; ११
हमारा मन बढ़ गया है। तुम हम में सकेत नहीं हो १२
परन्तु तुम अपने ही मनों में सकेत हो। मैं उस के १३
बदले में तुम से जैसे बालकों से यों कहता हूं तुम लोग
अपना ही मन भी बढ़ाओ।

अविश्वासियों के संग बेमेल जूवे में मत जुते जाओ १४
क्योंकि धर्म में और अधर्म में कौनसा साझा है; और
उजाले को अन्धियारे से कौनसा मेल है। और मसीह १५
में और बलीआल में कौनसा संबंध है; और बिश्वासी
का अबिश्वासी के संग कौनसा भाग है। और परमेश्वर १६
के मन्दिर को मूर्तों से कौनसा संयोग है; क्योंकि तुम
लोग जीवते परमेश्वर का मन्दिर हो कि परमेश्वर ने
कहा है मैं उन में रहूंगा और उन में चलूंगा और
मैं उन का परमेश्वर हूंगा और वे मेरे लोग होंगे।
इस लिये प्रभु कहता है तुम लोग उन के बीच से नि- १७
कल आओ और अलग हो रहो और अपवित्र बस्तु
को मत छूओ तब मैं तुम को ग्रहण करूंगा। और १८

मैं तुम्हारा पिता हूंगा और तुम लोग मेरे पुत्र और पुत्रियां होगे ; सर्वशक्तिमान प्रभु यही कहता है ॥

७ पर्ब्ब
सो हे प्यारो ऐसी बाचाएं पाके आओ हम हर प्रकार की शारीरिक और आत्मिक मलिनता से अपने को पवित्र करके परमेश्वर के डर से पवित्रता को सिद्ध करें।
२ हमें बूझ लो ; हम ने किसी पर अन्धेर न किया ; किसी को न बिगाड़ा ; किसी पर गों न चलाया।
३ मैं तुम्हें दोषी ठहराने के लिये यह नहीं कहता हूं ; मैं तो पहिले कह चुका कि तुम लोग यहां लों हमारे मनों में हो कि हम तुम लोग एक संग मरें और जीयें।
४ मेरी बातें तुम्हारे विषय में बहुत निशंक हैं; मैं तुम्हारे विषय में निपट बड़ाई करता हूं; मैं संबोधन से भरा हुआ हूं; मैं अपने सब क्लेशों में आनन्द के मारे उज्जल चला हूं।

५ क्योंकि जब हम मकदूनिया में आये तब हमारे शरीर को कुछ चैन न हुआ परन्तु हम हर प्रकार के क्लेश उठा रहे थे ; बाहर लड़ाइयां फिर भीतर धड़के।
६ परन्तु परमेश्वर जो मन हीनों को ढाड़स बन्धाता है उस ने तीतुस के आने से हमारी ढाड़स बन्धाई।
७ और केवल उसी के आ जाने से नहीं परन्तु जिस संबोधन से उस को ढाड़स तुम्हारे बीच में बन्धी जब उस ने तुम्हारी बड़ी लालसा और तुम्हारा बिलाप और तुम्हारी मनचली जो मेरे कारण थी हमारे आगे बर्णन किई तब उस से मैं ने अधिक आनन्द किया।

क्योंकि जो कि मैं ने पत्री से तुम्हें शोकित किया है उस ८
से मैं पछताता नहीं यद्यपि मैं पछताता था ; क्योंकि मैं
देखता हूं कि जो शोक तुम्हें उस पत्री से ज़ुआ सो थोड़े
समय लों रहा। फिर अब मैं आनन्द करता हूं न इस ९
लिये कि तुम लोग शोकित ज़ुए परन्तु इस लिये कि
तुम लोगों ने शोकित होके मन फिराये क्योंकि तुम
परमेश्वर के लिये शोकित ज़ुए हो न होवे कि तुम
लोग किसी बात में हम से हानि उठाओ। क्योंकि जो १०
शोक परमेश्वर के लिये है सो निस्तार पाने को मन
फिरवाता है और उस से पछताना नहीं होता है
परन्तु संसार का जो शोक है सो मृत्यु को लाता है।
देखो तुम्हारा शोक जो परमेश्वर के लिये था उस ही ११
ने तुम में क्या ही जतन उत्पन्न किया फिर क्या ही प्रति-
वाद क्या ही जलजलाहट क्या ही डर क्या ही बड़ी
बांछा क्या ही सर्गरमी क्या ही पलटा लेना उत्पन्न
किया है ; तुम्हों ने सर्वथा अपने को इसी बात में
निर्दोषी ठहराया। और जो मैं ने तुम्हें लिखा सो न १२
उस के कारण कि जिस ने वह अन्धेर किया था और न
उस के कारण कि जिस पर वह अन्धेर ज़ुआ था
परन्तु इस लिये लिखा कि हमारी चिन्ता तुम्हारे
लिये परमेश्वर के आगे तुम लोगों पर प्रगट होवे।
इस लिये तुम्हारे संबोधन से हमारा संबोधन ज़ुआ १३
और तीतुस के आनन्द के कारण हम अधिक आ-
नन्दित ज़ुए क्योंकि उस का आत्मा तुम सभों के कारण

१४ सन्तुष्ट हुआ। सो यदि मैं ने उस के आगे तुम्हारे बिषय में कुछ बड़ाई किई हो तो मैं लज्जित नहीं हुआ परन्तु जैसे सारी बातें जो हम ने तुम्हों से कहीं सच सच ठहरीं वैसा ही जो कुछ बड़ाई मैं ने तीतुस के आगे किई थी सो भी सच ठहरी। १५ और उस के मन का प्रेम तुम्हों पर बहुत बड़ा है क्योंकि वह तुम सभों की आधीनता चेत करता है कि तुम्हों ने कैसे डरते और थरथराते हुए उसे ग्रहण किया। १६ मैं आनन्द करता हूं कि हर एक बात में तुम्हों पर मेरा भरोसा है॥

८ पर्ब्ब

फिर हे भाइयो परमेश्वर की जो कृपा मकदूनिया की कलीसियाओं पर किई गई है सो हम तुम्हें जनाते हैं। २ कि क्लेश की बड़ी परीक्षा में उन के आनन्द की अधिकाई ने और उन के बड़े बड़े कंगालपन ने उन के दातापन के धन को बहुत बढ़ाया। ३ क्योंकि मैं साक्षी देता हूं कि अपनी अपनी शक्ति भर हां शक्ति से बाहर वे आप से तैयार थे। ४ और बहुत सी बिन्ती कर के हम से चाहा कि हम सन्तों की सेवकाई में यह साझे का दान पहुंचावें। ५ और यह उन्हों ने हमारी आशा के समान नहीं किया परन्तु पहिले उन्हों ने अपने तईं प्रभु को सोंपा और फिर परमेश्वर की इच्छा से हम को सोंपा। ६ सो हम ने तीतुस से बिन्ती किई कि जैसा उस ने पहिले आरंभ किया था वैसा तुम्हारे बीच में यह दान का चन्दा पूरा करे।

और जैसे हर एक बात अर्थात बिश्वास और बचन और ज्ञान और हर एक बात का जतन और जो प्रेम कि तुम्हें हम से है ये सब बातें तुम में अधिक ऊईं वैसा ही यह गुण भी तुम में अधिक होवे। मैं कुछ आज्ञा कर के नहीं बोलता हूं परन्तु औरों की मनचली के कारण से और तुम्हारे प्रेम की खराई को परखने के लिये मैं यह बोलता हूं। क्योंकि तुम लोग हमारे प्रभु यिसू मसीह की कृपा को जानते हो कि यद्यपि वह धनी था तथापि वह तुम्हारे लिये कंगाल ऊआ जिसतें तुम लोग उस के कंगालपन से धनी हो जाओ। और इस बात में मैं सम्मत देता हूं क्योंकि यही तुम्हारे लिये योग्य है कि तुम लोगों ने एक बरस आगे से न केवल यह काम करना आरंभ किया परन्तु उस के करने की मनसा भी किई थी। सो अब काम को भी पूरा करो कि जैसे तुम लोग मनसा करने पर तैयार थे वैसे ही अपनी बिसात के समान उसे पूरा करने पर भी हो। क्योंकि जो बांछा पहिले होय तो जो कुछ किसी के पास हो उस के समान वह ग्रहण किया जायगा; जो किसी के पास नहीं हो उस के समान नहीं। यह नहीं कि औरों पर सुख और तुम्हों पर दुःख होवे। परन्तु वह समता की रीति पर होवे कि इस समय में तुम्हारी अधिकाई उन की घटती को पूरा करे और उन की अधिकाई भी तुम्हारी घटती को पूरा करे जिसतें समता हो जावे। कि यों लिखा है जिस ने बऊत बटो-

७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५

रा था उस का कुछ बढ़ा नहीं और जिस ने थोड़ा बटोरा था उस का कुछ घटा नहीं।

१६ परन्तु परमेश्वर की स्तुति हो कि उस ने ऐसे बड़े १७ जतन को तुम्हारे लिये तीतुस के मन में डाला। क्योंकि उस ने उस बुलाहट को तो ग्रहण किया बरन बड़ी मनचली करके वह आप अपने मन से तुम्हारे १८ पास गया। और हम ने उस भाई को जिस का जस मंगल समाचार में सारी कलीसियाओं में है उस के १९ संग भेजा। और केवल इतना ही नहीं परन्तु वह कलीसियाओं का चुना हुआ है कि जिस दान की सेवकाई में हम प्रभु ही की महिमा और तुम्हारे मनों की तैयारी प्रगट करते हैं उस दान को साथ ले जाने २० को वह हमारे संग यात्रा करे। हम चौकस रहते हैं कि इस दान की बहुताई के कारण जिस के हम सेवक २१ हैं कोई जन हम को दोष न देवे। क्योंकि जो बातें कि केवल प्रभु ही के आगे नहीं परन्तु मनुष्यों के आगे २२ भी खरी हैं उन का हम अग्रसोच करते हैं। और हमारा भाई जिसे हम ने बहुत सी बातों में बारंबार परखके मनचला पाया पर अब उस बड़े भरोसे के कारण से जो तुम्हों पर है बहुत अधिक मनचला २३ पाया उस को हम ने उन के संग भेजा। यदि कोई तीतुस की पूछे तो वह मेरा साझी और तुम्हारे लिये मेरा संगी कर्मकारी है; फिर हमारे भाई जो हैं सो कलीसियाओं के प्रेरित और मसीह की महिमा हैं।

सो जो प्रेम तुम लोग हम से रखते हो और जो बड़ाई हम ने तुम पर किई है इस का प्रमाण उन को और कलीसियाओं के सामने दिखाओ॥ 24

परन्तु जो सेवकाई सन्तों के लिये होती है उस के विषय तुम्हें लिखना मुझे अवश्य नहीं है। 2 क्योंकि मैं तुम्हारी तैयारी जानता हूं और उस के विषय में मकदूनिया के लोगों के आगे तुम्हारी बड़ाई करके कहता हूं कि अखाया एक बरस आगे तैयार था; और तुम्हारी मनचली ने बहुतेरों को उस्काया। 3 तिस पर मैं ने भाइयों को भेजा न होवे कि हमारी बड़ाई जो तुम्हारे विषय इस बात में थी सो बे ठिकाना ठहरे जिसतें जैसा मैं ने कहा है तुम वैसे तैयार हो रहो। 4 कहीं ऐसा न होवे कि जो मकदूनिया के लोग मेरे संग आवें और तुम्हें तैयार न पावें तो हम नहीं कहते कि तुम ही परन्तु हम ही इस शंकाहीन बड़ाई करने से लज्जित हो जावें। 5 इस कारण मैं ने भाइयों से बिन्ती करना उचित जाना कि वे आगे से तुम्हारे पास जावें और तुम्हारे पदार्थ को जैसे पहिले बता दिया सो तैयार कर रखें जिसतें वह जैसे पदार्थ की बात न कि जैसे कंजूसी की बात ठहरे।

6 पर बात यह है कि जो जन थोड़ा करके बोता है सो थोड़ा काटेगा और जो बहुत करके बोता है सो बहुत काटेगा। 7 हर एक जैसा अपने मन में ठहराता है वैसा वह देवे; वह न पछताके और न लाचारी

से देवे क्योंकि जो जी खोलके दान करता है उस को
८ परमेश्वर प्यार करता है। और परमेश्वर सब प्रकार
की कृपा तुम्हों पर बढ़ा सकता है जिसतें तुम लोग
सब बातों में सर्वथा अपना सारा निवाह पाओ और
९ सब प्रकार के सुकर्मों में तुम्हारी बढ़ती होवे। क्योंकि
लिखा है उस ने बिथराया है; उस ने कंगालों को
१० दिया है; उस का धर्म सर्वदा धरा है। सो जो बोनेहार
को बीज देता है और खाने को रोटी देता है सो
तुम्हों को बोने के लिये बीज देवे और उसे बढ़ावे
११ और तुम्हारे धर्म के फल अधिक करे। जिसतें तुम हर
एक बात में सब प्रकार के दातापन के लिये धनी हो-
ओ कि यह हमारे द्वारा से परमेश्वर का धन्यबाद
१२ करवाता है। क्योंकि इस दात का काम काज न केवल
सन्तों की दरिद्रता को दूर करता है परन्तु बहुतेरों
के द्वारा से परमेश्वर के लिये धन्यबाद भी अधिक
१३ करवाता है। वे इस सेवकाई के प्रमाण से इस लिये
कि तुम लोग मसीह के मंगल समाचार के अंगीकार
के आधीन हुए और तुम्हारे चन्दे के दात पर जो उन्हों
पर और सभों पर है इस लिये भी परमेश्वर की स्तुति
१४ करते हैं। और वे तुम्हारे लिये प्रार्थना करते हैं और
परमेश्वर के उस अत्यन्त बड़ी कृपा के लिये जो तुम
१५ पर है तुम्हें बहुत चाहते हैं। परमेश्वर को उस के
दान के लिये जो बखान से बाहर है धन्यबाद होय॥

१० पर्व्व

अब मैं पौलुस जो तुम्हारे साथ में होके बेमन हूं

पर दूर होके तुम्हारे लिये मनचला हूं मैं आप ही मसीह की क्षमा और कोमलता के कारण से तुम्हें जताता हूं। २ मैं तुम्हों से बिन्ती करता हूं कि जब मैं तुम्हारे साथ होऊं तब उस भरोसे से मनचली न करूं कि जिस से मैं कितनों पर जो हमारी चाल शारीरिक समझते हैं मनचला होने चाहता हूं। ३ क्योंकि हम यद्यपि शरीर में चलते हैं तथापि शरीर की रीति पर युद्ध नहीं करते हैं। ४ क्योंकि हमारे योधन के हथियार शारीरिक नहीं हैं परन्तु परमेश्वर के कारण से गढ़ों के ढाने पर सामर्थ्य रखते हैं। ५ कि हम भावनों को और हर एक ऊंची बस्तु को कि जो अपने को परमेश्वर के ज्ञान के बिरुद्ध उभारती है गिरा देते हैं और हर एक बिचार को मसीह की आधीनता में बन्ध करते हैं। ६ और जब तुम्हारी आधीनता पूरी हो जाय तब हम सारे आज्ञा भंग का पलटा लेने को तैयार हैं।

७ क्या तुम लोग बस्तुओं की बाहरी बाहर देखते हो; यदि कोई मनुष्य अपने में निश्चय करे मैं मसीह का हूं तो वह यह भी अपने में बिचार करे कि जैसा वह मसीह का है वैसे हम भी मसीह के हैं। ८ क्योंकि जो मैं उस अधिकार पर जो प्रभु ने बनाने को न तुम्हें ढा देने को दिया है कुछ बड़ाई करूं तो मैं लज्जित न होऊंगा। ९ (मैं यह कहता हूं) न होवे कि जैसे पत्रियों से कोई तुम्हें लिखके डरावे वैसे मैं जाना जाऊं। १० क्यों-

कि कहते हैं उस की पत्रियां भारी और बलवन्त हैं पर साक्षात में उस की देह दुर्बल और उस की बोली ११ तुच्छ है। ऐसा कहनेहार जान रखे कि जैसे पीठ पीछे पत्रियों में हमारा बचन है वैसे तुम्हारे साथ होके १२ हमारा कर्म भी होगा। क्योंकि हमारा यह साहस नहीं है कि हम अपने को उन्हों में गिनें अथवा अपने को उन्हों से मिलाके बिचार करें कि जो अपने को सराहते हैं; पर वे अपने को आप से नापके और अपने को आप से मिलाके बुद्धिमान नहीं ठहरते हैं। १३ परन्तु हम परिमाण से बाहर जाके बड़ाई न करेंगे पर जिस विधान का परिमाण परमेश्वर ने हमें बांट दिया जो तुम्हों तक पहुंचता है उसी के समान हम १४ बड़ाई करेंगे। क्योंकि हम अपने को परिमाण से बाहर नहीं बढ़ाते हैं जैसे कि हम तुम्हों तक न पहुंचे होते क्योंकि हम ने मसीह का मंगल समाचार तुम्हों १५ तक भी पहुंचाया है। और हम परिमाण से बाहर जाके औरों के परिश्रमों से बड़ाई नहीं करते परन्तु आशा रखते हैं कि जब तुम्हारे बिश्वास की बढ़ती होय तब तुम लोग हम को हमारे विधान के समान बहुत १६ अधिक बढ़ा दो। कि हम तुम्हारे सिवाने के उस पार जाके मंगल समाचार सुनावें और दूसरे के विधान पर १७ जहां सब तैयार हैं बड़ाई न करें। परन्तु जो बड़ाई १८ करता है सो प्रभु में बड़ाई करे। क्योंकि जो अपने को

सराहता है सो नहीं परन्तु जिसे प्रभु सराहता है सो ही ग्रहण किया जाता है॥

२ मैं चाहता हूं कि तुम लोग मुझे मेरी निर्बुद्धिता में तनिक सहो और हां तुम तो मेरी सहते हो। क्योंकि ईश्वरीय झाल से मैं तुम्हारे लिये झलहाया हूं क्योंकि मैं ने तुम्हें संवारा है कि सती कन्या के समान एक ही पति अर्थात मसीह के संमुख करूं। ३ परन्तु मुझे खटका है कहीं ऐसा न होवे कि जैसा सांप ने अपनी चतुराई से हव्वा को ठगा ऐसा ही वह तुम्हारे मनों को उस सूधाई से कि जो तुम लोग मसीह की ओर रखते हो बिगाड़े। ४ क्योंकि यदि कोई आके दूसरे यिसू को प्रचार करता जिस को हम ने प्रचार नहीं किया है अथवा यदि तुम लोग कोई दूसरा आत्मा पाते जिसे तुम्हों ने नहीं पाया है अथवा यदि तुम्हें दूसरा मंगल समाचार मिलता जो तुम्हें नहीं मिला था तो तुम्हें सहना भला होता।

५ मैं अपने को अत्यन्त बड़े प्रेरितों से कुछ भी छोटा नहीं समझता हूं। ६ क्योंकि यद्यपि मैं बोल चाल में अनाड़ी हूं तथापि ज्ञान में नहीं हूं परन्तु हम तो सब प्रकार से हर एक बात में तुम्हों पर प्रगट हुए हैं। ७ मैं ने जो अपने को दीन किया जिसतें तुम लोग बढ़ जाओ तो क्या मैं ने इस में अपराध किया क्योंकि मैं ने तुम्हें परमेश्वर का मंगल समाचार सेंत सुनाया। ८ मैं ने दूसरी कलीसियाओं को लूट लिया कि महिनवारी उन

से लेके तुम्हारी सेवकाई करूं; और तुम्हारे पास होके जब मेरे निबाह को कुछ प्रयोजनी था तब भी मैं
९ ने किसी पर बोझ न दिया। क्योंकि जो भाई मकदूनिया से आये थे उन्हों ने मेरा निबाह किया; और हर एक बात में मैं तुम्हों पर बोझ देने से अलग रहा और
१० अलग रहूंगा। मसीह की उस सच्चाई से जो मुझ में है मैं कहता हूं कि अखाया के देशों में मुझे इस बड़ाई
११ से कोई न रोकेगा। किस कारण; क्या इस कारण कि मैं तुम्हें प्यार नहीं करता हूं; परमेश्वर जानता है।
१२ परन्तु मैं जो करता हूं सो ही करता रहूंगा कि मैं उन को जो दांव ढूंढते हैं दांव पाने न देऊं जिसतें जिस बात में वे लोग बड़ाई करते हैं उस में जैसे हम हैं
१३ वैसे वे लोग भी पाये जायेंगे। क्योंकि ऐसे लोग झूठे प्रेरित हैं छली कर्मकारी हैं; वे लोग अपने को
१४ मसीह के प्रेरितों के भेष से बदलते हैं। और यह कुछ अचंभे की बात नहीं है क्योंकि शैतान आप अपने भेष
१५ को उजाले के दूत से बदल डालता है। इस कारण जो उस के सेवक भी अपने अपने भेष को धर्म के सेवकों से बदल डालें तो कुछ बड़ी बात नहीं है; उन का अन्त उन के कर्मों के समान होगा।

१६ मैं फिर कहता हूं कि कोई जन मुझे निर्बुद्धि न समझे और नहीं तो मुझे निर्बुद्धि समझके ग्रहण करो
१७ जिसतें मैं भी थोड़ी सी बड़ाई करूं। जो कुछ कि मैं बड़ाई के भरोसे से कहता हूं सो मैं प्रभु की रीति पर

नहीं परन्तु निर्बुद्धिता की रीति से कहता हूं। जब कि १८
बहुतेरे लोग शरीर की रीति पर बड़ाई करते हैं
तो मैं भी बड़ाई करूंगा। क्योंकि तुम लोग बुद्धिमान १९
होके निर्बुद्धियों को आनन्द से सहते हो। क्योंकि २०
यदि कोई तुम्हें दास बना डाले; यदि कोई तुम्हें निग-
ले; यदि कोई तुम्हों से कुछ लेवे; यदि कोई आप को
बढ़ावे; यदि कोई तुम्हारे मुंह पर थपेड़ा मारे तो
तुम लोग सहते हो। लज्जा कर के मैं कहता हूं कि २१
हम मानो दुर्बल हुए हैं; तिस पर भी जिस बात में
कोई ढीठ है तो मैं निर्बुद्धि होके बोलता हूं कि उस
ही में मैं भी ढीठ हूं। क्या वे लोग इबरानी हैं; मैं भी २२
हूं; क्या वे लोग इसराएली हैं; मैं भी हूं; क्या वे लोग
अबिरहाम के बंश से हैं; मैं भी हूं। क्या वे लोग मसीह २३
के सेवक हैं; मैं बुद्धि हीन होके बोलता हूं मैं उन से
बढ़के हूं; परिश्रमों में बहुत अधिक; कोड़े खाने में
सहने से बाहर; मैं बन्दीगृहों में बार बार; और मृ-
त्युओं में अक्सर पड़ा। मैं ने एक एक कम चालीस २४
चालीस कोड़े यहूदियों से पांच बार पाये। तीन बार २५
मैं छड़ियों से मारा गया; एक बार मैं पत्थराओ किया
गया; तीन बार जहाज तोड़ में पड़ा; एक रात दिन
समुद्र में काटा। मैं याचा करने में बहुत था और २६
नदियों के खचों में; चोरों से खचों में; अपने देशि-
यों से खचों में; अन्यदेशियों से खचों में; नगर में
होके खचों में; बन में होके खचों में; समुद्र पर होके

२७ खर्चों में; झूठे भाइयों में होके खर्चों में। परिश्रम और थकाहट में; जागा करने में; भूख और प्यास में; उपवासों में बारंबार; शीत में; और नंगा रहने की
२८ दशा में मैं भी रहा हूं। इन बाहर की बातों से अधिक सारी कलीसियाओं की चिन्ता मुझ को प्रतिदिन दबा-
२९ ती है। कौन दुर्बल है कि मैं दुर्बल नहीं हूं; कौन ठो-
३० कर खाता है कि मैं नहीं जलता हूं। जो मुझे बड़ाई करना है तो मैं अपनी दुर्बलता की बातों पर बड़ाई
३१ करूंगा। परमेश्वर हमारे प्रभु यिसू मसीह का पिता जो सदा लों स्तुत है सो जानता है कि मैं झूठ नहीं
३२ बोलता। दमिश्क में राजा अरेतस की ओर से जो देशपति था सो मुझे पकड़ने की मनसा करके उस
३३ नगर पर चौकी बिठलाई। तब मैं खिड़की में से टोकरे में भीत पर से उतारा गया और उस के हाथों से बच निकला॥

१२ पर्ब्ब

निश्चय करके अपनी बड़ाई करना मुझे उचित नहीं है परन्तु मैं प्रभु के दर्शनों और प्रकाशवाणियों का
२ वर्णन किया चाहता हूं। चौदह बरस बीते होंगे कि मैं मसीह में एक मनुष्य को जानता हूं; क्या शरीर में होके सो मैं नहीं जानता अथवा शरीर से बाहर होके सो मैं नहीं जानता परमेश्वर जानता है; वही जन
३ तीसरे स्वर्ग लों अचानक पहुंचाया गया। हां ऐसे मनुष्य को मैं जानता हूं; क्या शरीर में होके अथवा शरीर से बाहर होके मैं नहीं जानता परमेश्वर जान-

ता है। वह स्वर्गलोक लों अचानक पहुंचाया गया ४
और ऐसी बातें जो कहने की नहीं और जिन का कह-
ना मनुष्य की शक्ति में नहीं है सो सुनीं। ऐसे ही पर ५
मैं बड़ाई करूंगा परन्तु अपनी दुर्बलताओं को छोड़के
मैं अपने पर बड़ाई नहीं करूंगा। कि यदि मैं बड़ाई ६
किया चाहूं तो निर्बुद्धि न बनूंगा क्योंकि मैं सच बोलूं-
गा; परन्तु मैं नहीं करता हूं न होवे कि जैसा लोग
मुझे देखते हैं अथवा जैसा मेरे विषय में सुनते हैं उस
से अधिक कोई मुझे जाने। और दैवदर्शनों की अधि- ७
काई के कारण जिसतें मैं फूल न जाऊं तो मेरे शरीर
में कांटा दिया गया सो शैतान का दूत है कि मुझे घूंसे
मारे न होवे कि मैं फूल जाऊं। इस के लिये मैं ने प्रभु ८
से तीन बार बिन्ती किई कि वह मुझ से दूर हो जाय।
और उस ने मुझ से कहा मेरी कृपा तेरे लिये बस है ९
क्योंकि दुर्बलता में मेरा बल सिद्ध ठहरता है; सो मैं
बड़े आनन्द से अपनी दुर्बलताओं पर बड़ाई करूंगा
जिसतें मसीह का बल मुझ पर ठहरा रहे। इस १०
कारण से मैं मसीह के लिये दुर्बलताओं में और
निन्दाओं में और कष्टों में और सताये जाने में और
सकेतों में प्रसन्न हूं क्योंकि जब मैं बल हीन हूं तब मैं
बलवान हूं।

मैं बड़ाई करने से निर्बुद्धि बना हूं परन्तु तुम्हों ने ११
मुझ से बरबस करवाया क्योंकि चाहता था कि तुम
लोग मुझे सराहते कि यद्यपि मैं कुछ नहीं हूं तथापि

मैं किसी बात में अत्यन्त बड़े प्रेरितों से छोटा नहीं
१२ हूं। निश्चय जो प्रेरित होने के चिन्ह हैं सो सारी
धीरता से और आश्चर्य्य कर्मों से और अचंभों से और
१३ शक्ति के कर्मों से तुम्हों में प्रगट हुए हैं। तुम लोग
कौनसी बात में दूसरी कलीसियाओं से छोटे थे;
केवल इस में कि मैं ने तुम्हों पर बोझ न दिया मेरी
१४ यह चूक छिमा करो। देखो मैं फिर तीसरी बार
तुम्हारे पास आने को तैयार हूं परन्तु फिर भी तुम्हों
पर बोझ न दूंगा क्योंकि मैं न तुम्हारा कुछ परन्तु
तुम्हीं को ढूंढता हूं कि लड़कों को माता पिता के
लिये नहीं परन्तु माता पिता को लड़कों के लिये धन
१५ बटोरना चाहिये। और मैं बहुत आनन्द से तुम्हारे
प्राणों के लिये खर्च करूंगा और खर्च हो जाऊंगा;
फिर भी जितना मैं तुम्हें अधिक प्यार करता हूं उतना
१६ थोड़ा मैं प्यार किया जाता हूं। परन्तु हां मैं ने माना
मैं तुम्हों पर बोझ न हुआ तो भी क्या जाने चतुराई
१७ करके मैं ने तुम्हें छल से फंसाया। भला जिन को मैं
ने तुम्हारे पास भेजा क्या मैं ने उन्हों में से किसी के
१८ द्वारा से कुछ तुम्हों से प्राप्त किया। मैं ने तीतुस से
बिन्ती किई और उस के संग उस भाई को भेजा; तो
क्या तीतुस ने तुम्हों से कुछ प्राप्त किया; क्या हम एक
ही आत्मा से और एक ही पग डग में न चलते थे।
१९ फिर क्या तुम लोग समझते हो कि हम तुम्हों से
अपनी निर्दोषी की बात करते हैं सो नहीं; हे प्यारो

हम परमेश्वर के आगे मसीह में होके ये सारी बातें तुम्हारे बन्ने बढ़ने के लिये बोलते हैं। क्योंकि मुझे २० खटका है कहीं ऐसा न होवे कि मैं आके जैसा तुम्हें चाहता हूं वैसा न पाऊं और तुम लोग मुझे भी जैसा नहीं चाहते हो वैसा पाओ न होवे कि विवाद और डाह और क्रोध और झगड़े और चबाव की बातें और कानाफूसियां और अहंकार और ऊल्लड़ होवें। और २१ न होवे कि जब मैं आऊं तब मेरा परमेश्वर मुझे तुम्हारे कारण से दीन करे कि बहुतेरों के कारण जिन्हों ने आगे पाप किया है और अपनी अपवित्रता और व्यभिचार और कामातुरता से जो उन्हों ने किई मन न फिराया है उन पर मैं शोक करूं॥

१३ पर्ब्ब

यह तीसरी बार है कि मैं तुम्हारे पास आता हूं; दो अथवा तीन साक्षियों के मुंह से हर एक बात ठहराई जायगी। मैं ने तुम्हें आगे कहा है और मैं २ अपने को तुम लोगों के साथ में जानके अब दूसरी बार आगे से कह देता हूं और अब दूर होके मैं उन को जिन्हों ने आगे पाप किये और और सभों को मैं लिखता हूं कि जब मैं फिर आऊं तब न छोड़ूंगा। क्योंकि तुम लोग इस बात का प्रमाण चाहते हो कि ३ मसीह मुझ में बोलता है; वह तुम्हारे लिये बल हीन नहीं है परन्तु वह तुम्हों में बलवन्त है। क्योंकि यद्यपि ४ वह दुर्बलता से क्रूस पर मारा गया तथापि परमेश्वर के सामर्थ्य से वह जीता है; और हम भी उस में दुर्बल

हैं पर परमेश्वर के सामर्थ्य से जो तुम्हारे विषय में
५ है हम उस के संग जीवेंगे। तुम लोग अपने को जांचो
कि तुम बिश्वास में बने हो कि नहीं; तुम लोग अपने
को परखो; क्या तुम आप को नहीं जानते कि यिसू
मसीह तुम्हों में है नहीं तो तुम अभाये ऊए हो।
६ पर मेरा भरोसा है कि तुम लोग जानोगे कि हम
७ अभाये ऊए नहीं हैं। और मैं परमेश्वर से बिन्ती कर-
ता हूं कि तुम लोग कुछ भी बुराई न करो; सो न इस
लिये कि हम भाये ऊए प्रगट होवें परन्तु इस लि-
ये कि तुम लोग भला करो जो भी हम अभाये ऊ-
८ ओं की गिन्ती में होवें। क्योंकि हम सच्चाई के बि-
रुद्ध कुछ नहीं कर सकते हैं परन्तु सच्चाई के लि-
९ ये सब कुछ कर सकते हैं। क्योंकि जब हम दुर्बल हैं
और तुम लोग बलवन्त हो तब हम आनन्द कर-
ते हैं; और हम यह भी चाहते हैं कि तुम लोग
१० सिद्ध हो जाओ। इस लिये मैं तुम्हों से दूर होके ये
बातें लिखता हूं न होवे कि मैं तुम्हारे साथ होके
उस अधिकार के समान जो प्रभु ने मुझे बनाने के
लिये न ढा देने के लिये दिया है तुम्हों पर कठोर-
ता करूं।

११ निदान हे भाइयो कुशल से रहो; सिद्ध हो
जाओ; ढाड़स बन्धे रहो; एक मता होओ; मिले
रहो; और प्यार और मिलाप का परमेश्वर तुम्हारे
१२ संग रहेगा। एक दूसरे का पवित्र चूमा लेकर

नमस्कार करो। सारे सन्त लोग तुम्हें नमस्कार कर- १३
ते हैं। प्रभु यिसू मसीह की कृपा और परमेश्वर का १४
प्यार और पवित्र आत्मा की संगत तुम सभों के साथ
होवे आमीन॥

पौलुस की पत्री

गलातियों को।

१ पर्ब्ब

पौलुस प्रेरित; सो न मनुष्यों से न मनुष्य के द्वारा से परन्तु यिसू मसीह से और परमेश्वर पिता से जिस ने उस को मृतकों में से जिलाया है ऐसा हुआ। २ और सारे भाइयों से जो मेरे संग हैं गलातिया की कलीसियाओं को यह पत्री। ३ परमेश्वर पिता से और हमारे प्रभु यिसू मसीह से कृपा और कुशल तुम्हों पर होवे। ४ उस ने हमारे पापों के कारण अपने को दिया कि वह हमारे पिता परमेश्वर की इच्छा के समान अब के दुष्ट जगत से हमें छुटकारा देवे। ५ सदा की महिमा उस की है आमीन।

६ जिस ने तुम्हें मसीह की कृपा में बुलाया है उसी से तुम लोग ऐसी जल्दी से फिर के दूसरे मंगल समाचार के हो गये इस बात पर मैं अचंभा करता हूं। ७ सो वह दूसरा तो है नहीं परन्तु कोई कोई हैं जो तुम्हें घब-

राते हैं और मसीह के मंगल समाचार को उलट देने चाहते हैं। परन्तु यदि हम अथवा स्वर्ग से कोई दूत उस मंगल समाचार को छोड़ जो हम ने तुम्हें सुनाया है कोई दूसरा मंगल समाचार सुनावे तो वह स्रापित होवे। जैसा हम ने आगे कहा वैसा ही मैं अब फिर कहता हूं कि यदि कोई उस मंगल समाचार को छोड़ जिसे तुम्हों ने पाया है किसी दूसरे को तुम्हें सुनावे तो वह स्रापित होवे। क्या मैं अब मनुष्यों को अथवा परमेश्वर को मनाता हूं; क्या मैं मनुष्यों को रिझाया चाहता हूं; क्योंकि यदि मैं अब लों मनुष्यों को रिझाता तो मैं मसीह का दास न ठहरता। ८ ९ १०

पर हे भाइयो मैं तुम्हें चिता देता हूं कि जो मंगल समाचार मैं ने तुम्हें सुनाया सो मनुष्य की बात नहीं है। क्योंकि मैं ने उसे न तो किसी मनुष्य से पाया न उसे सीखा परन्तु वह यिसू मसीह की प्रकाशवाणी है। क्योंकि मेरी पिछली चाल जब मैं यहूदी मत में था उस को तुम्हों ने सुना कि मैं परमेश्वर की कलीसिया को निपट ही सताता था और उसे उजाड़ता था। और अपने स्वदेशियों में अपनी अवस्था के बहुतेरे लोगों से यहूदी मत में बढ़ बढ़के अपने पितरों के संप्रदाय पर बहुत ही सरगर्म था। परन्तु परमेश्वर जिस ने मुझे मेरी मा के पेट में से अपने लिये अलगाके अपनी कृपा से बलाया जब उस को अच्छा लगा। कि अपने पुत्र को मुझ पर प्रकाश करे कि मैं उस का मंगल समा- ११ १२ १३ १४ १५ १६

चार अन्यदेशियों के बीच में सुनाऊं तुरन्त मैं ने मांस
१७ और लोहू की सम्मत नहीं लिई। और यरूसलम में
जो मुझ से पहिले प्रेरित थे उन पास नहीं गया परन्तु
मैं अरब को गया; फिर वहां से दमिश्क को फिरा।
१८ तब तीन बरस बीते पर मैं पथरस से भेंट करने को
यरूसलम को गया और पन्द्रह दिन उस के संग रहा।
१९ परन्तु प्रेरितों में से मैं ने प्रभु के भाई याकूब को छोड़
२० और किसी को न देखा। अब जो बातें मैं तुम्हों को
लिखता हूं देखो मैं परमेश्वर के आगे कहता हूं कि
२१ झूठी नहीं हैं। उस के पीछे मैं सूरिया और किली-
२२ किया के देशों में गया। और यहूदाह की कलीसियाएं
जो मसीह में थीं सो मेरे मुंह को नहीं जानते थे।
२३ उन्हों ने केवल इतना सुना था कि जो जन हमों को
पहिले सताता था सो उस बिश्वास को जिसे वह आगे
२४ नष्ट करता था अब प्रचार करता है। और वे मेरे
कारण परमेश्वर की स्तुति करते थे॥

२ पर्ब्ब

फिर चौदह बरस पीछे मैं बरनबा के संग तीतुस
२ को भी संग लेके फिर यरूसलम को गया। परन्तु मेरा
जाना प्रकाशवाणी से हुआ; और जिस मंगल समा-
चार को मैं अन्यदेशियों में प्रचार करता हूं उस को
मैं ने उन से वर्णन किया परन्तु निज करके मुखिये लो-
गों को न होवे कि मेरी अगली और अब की दौड़
३ धूप व्यर्थ होवे। परन्तु तीतुस जो मेरे संग था यद्यपि
वह यूनानी था तथापि खतना करवाना उस को अवश्यक

न ज्ञआ। और यह झूठे भाइयों के कारण से ज्ञआ कि वे छिपके घुस आये थे जिसतें उस निर्बन्धता का जो हमें को मसीह यिसू में मिली भेद लेवें कि हमें को दासता में लावें। उन्हों के हम दबेल न ज्ञए हां घड़ी भर भी उन्हों के बश में न रहे जिसतें मंगल समाचार की सच्चाई तुम्हारे पास बनी रहे। परन्तु जो मुखिये लोग थे सो जैसे थे वैसे थे मुझे कुछ काम नहीं है कि परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता है; भला जो मुखिये लोग थे उन्हों ने मुझे कुछ नहीं सिखाया। परन्तु उस के बिपरीत जब उन्हों ने देखा कि जैसा खतने के लोगें के लिये मंगल समाचार पथरस को समर्पण किया गया वैसा खतना हीन लोगें के लिये मंगल समाचार मुझ को समर्पण ज्ञआ। (क्योंकि जिस ने खतना के लोगें में के प्रेरितत्व के लिये पथरस में अपनी शक्ति प्रगट किई उसी ने मुझ में भी अन्यदेशियें के बीच में अपनी शक्ति प्रगट किई)। भला याकूब और कैफा और यूहन्ना जो जैसे कलीसिया के खंभे जाने गये जब उन्हों ने वह कृपा जो मुझे दिई गई थी जान लिई तब उन्हों ने मुझ को और बरनबा को संगत का दहिना हाथ दिया कि हम तो अन्यदेशियें के पास और वे ही खतना के लोगें के पास जावें। परन्तु उन्हों ने इतना कहा कि दरिद्रों की सुधि लेओ; सो उसी कार्य्य में मैं मनचला भी रहा।

फिर जब पथरस अन्ताकिया में आया तब उसे

४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११

ताड़ना पाने के योग्य देखके मैं ने उस के मुंह पर
१२ उस का साम्ना किया। क्योंकि याकूब के यहां से कई
एक के आने से पहिले वह अन्यदेशियों के संग खाया
करता था परन्तु जब वे आये तब खतनावालों से डर के
१३ वह पीछे हटा और अलग हुआ। और जो और यहूदी
थे उन्हों ने भी उस के संग कपट किई यहां लों कि
बरनबा भी दबकर उन्हों की कपट में उन का संगी
१४ हुआ। परन्तु जब मैं ने देखा कि वे मंगल समाचार
की सच्चाई के समान सीधी चाल नहीं चलते हैं तब
मैं ने सभों के साम्हने पथरस से कहा जो तू यहूदी
होकर यहूदियों की रीति पर नहीं पर अन्यदेशि-
यों की रीति पर चलता है फिर तू किस कारण
अन्यदेशियों को बरबस करके यहूदियों की रीति पर
चलाता है।

१५ हम जो जन्म से यहूदी हैं और अन्यदेशियों में के
१६ पापी नहीं हैं। सो यह जानते हैं कि व्यवस्था की
क्रियाओं से नहीं परन्तु यिसू मसीह पर बिश्वास लाने
से मनुष्य धर्मी गिना जाता है इस लिये हम भी मसीह
यिसू पर बिश्वास लाये हैं कि हम मसीह पर बिश्वास
लाने से न कि व्यवस्था की क्रियाओं से धर्मी गिने जावें
क्योंकि व्यवस्था की क्रियाओं से कोई मनुष्य धर्मी गिना
१७ नहीं जायगा। परन्तु हम लोग जो मसीह के द्वारा
से धर्मी ठहरने चाहते हैं यदि हम पापी ठहरें तो
१८ क्या मसीह पाप का कर्त्ता है; ऐसा न होवे। क्योंकि

जिन बस्तुओं को मैं ने ढा दिया यदि उन्हें फिरके बनाऊं तो मैं अपने ही को अपराधी ठहराता हूं। क्योंकि मैं व्यवस्था के द्वारा से व्यवस्था की ओर मर गया हूं जिसतें मैं परमेश्वर की ओर जीऊं। मैं मसीह के संग क्रूस पर खैंचा गया हूं; फिर भी मैं जीता हूं पर तो भी मैं ही नहीं परन्तु मसीह मुझ में जीता है और जो मैं अब शरीर में जीता हूं सो परमेश्वर के पुत्र पर बिश्वास लाने से जीता हूं कि उस ने मुझे प्यार किया और आप को मेरे बदले दिया। मैं परमेश्वर की कृपा को बेकाम नहीं ठहराता हूं क्योंकि जो व्यवस्था के कारण से धर्म प्राप्त होता है तो मसीह का मरना अकारथ ठहरा॥ १९ २० २१

३ पर्ब्ब

हे निर्बुद्धि गलातियो किस की जादू भरी आंखों ने तुम्हों को मारा कि तुम लोग सच्चाई को न मानो; कि यिसू मसीह जैसा तुम्हारे बीच में क्रूस पर खिंचा हुआ वैसा तुम्हारे आंखों के साम्हने बतलाया गया। तुम्हों से मैं केवल इतना जान्ने चाहता हूं कि तुम लोगों ने जो आत्मा को पाया सो क्या व्यवस्था की क्रियाओं से अथवा बिश्वास की वार्त्ता से पाया। क्या तुम लोग ऐसे निर्बुद्धि हो; आत्मा से तुम्हों ने तो आरंभ किया क्या शरीर से अब सिद्ध हुआ चाहते हो। क्या तुम्हों ने इतनी बातों का दुःख व्यर्थ सहा; यदि अब भी व्यर्थ होय। सो जो तुम्हें आत्मा देता है और तुम्हों में आश्चर्य्य कर्म करता है सो क्या व्यवस्था के कर्म करने से २ ३ ४ ५

६ अथवा बिश्वास की वार्त्ता से ऐसा करता है। क्योंकि अबिरहाम भी परमेश्वर पर बिश्वास लाया और यह
७ उस के लिये धर्म गिना गया। सो जानो कि जो बिश्वास
८ के लोग हैं सो ही अबिरहाम के पुत्र हैं। और धर्मग्रन्थ ने आगे से देखा कि परमेश्वर अन्यदेशियों को भी बिश्वास के द्वारा से धर्मी ठहरावेगा इस लिये अबिरहाम को आगे ही यह मंगल समाचार सुनाया
९ कि सारे अन्यदेशी तुझ से आशीश पावेंगे। सो जो बिश्वास के लोग हैं सो बिश्वासी अबिरहाम के संग
१० आशीश पाते हैं। क्योंकि जितने जो व्यवस्था की क्रियाओं पर भरोसा रखते हैं सो स्रापित हैं कि लिखा है जो कोई व्यवस्था की पुस्तक में की लिखी ऊई सारी बातों के मान्ने में बना नहीं रहता है सो स्रापित है।
११ परन्तु परमेश्वर के आगे कोई जन व्यवस्था के द्वारा से धर्मी नहीं ठहरता है यही बात प्रमाण है क्योंकि
१२ धर्मी बिश्वास से जीयेगा। अब व्यवस्था का बिश्वास से कुछ संबंध नहीं है परन्तु जो मनुष्य उसे पालन करे
१३ सो उस ही से जीयेगा। मसीह ने छुड़ौती देके हमें व्यवस्था के स्राप से बचाया कि वह हमारे सन्ते स्रापित ऊआ क्योंकि लिखा है जो कोई लकड़े पर लटकाया
१४ गया सो स्रापित है। जिसतें अबिरहाम की आशीश अन्यदेशियों पर यिसू मसीह के द्वारा से पऊंचे कि हम लोग बिश्वास के द्वारा से वह आत्मा जिस की बाचा है पावें।

हे भाइयो मैं मनुष्यों की रीति पर बोलता हूं; नियम जो करते हैं यदि मनुष्य ही का होये तौ भी जब वह प्रमाण ठहरा तो कोई उस में न कुछ लोप करता है न कुछ बढ़ाता है। अब अबिरहाम से और उस के वंश से बाचा किई गई है; और तेरे बंशों को जैसा कि अनेक होयें वैसा वह नहीं कहता है परन्तु और तेरे वंश को जैसा कि एक ही होय वैसा वह बोलता है; सो वह मसीह है। अब मैं यह कहता हूं कि जिस नियम को परमेश्वर ने मसीह के विषय में आगे प्रमाण ठहराया उसी को व्यवस्था जो चार सौ तीस बरस के पीछे आई सो लोप नहीं कर सकती है ऐसा कि वह बाचा व्यर्थ होा जावे। क्योंकि यदि अधिकार जो है व्यवस्था के द्वारा से होय तो फिर बाचा के कारण से नहीं है परन्तु परमेश्वर ने अबिरहाम को उसे बाचा करके दिया। १५ १६ १७ १८

सो व्यवस्था किस काम की है; वह अपराधों के लिये अधिक करके दिई गई कि जब लों वह वंश जिस के लिये बाचा किई गई न आवे तब लों रहे और वह स्वर्गदूतों के द्वारा से एक बिचवई के हाथ में सोंपी गई। अब बिचवई एक का नहीं होता परन्तु परमेश्वर एक ही है। सो क्या व्यवस्था परमेश्वर की बाचाओं के बिपरीत है; ऐसा न होवे; क्योंकि यदि ऐसी व्यवस्था दिई गई होती जो जीवन दे सकती तो धर्म सचमुच व्यवस्था से मिलता। परन्तु धर्मग्रन्थ ने सब लोगों को १९ २० २१ २२

पाप के बश में ठहराया जिसतें जो बाचा यिसू मसीह पर बिश्वास लाने के द्वारा से है सो बिश्वासियों को
२३ दिई जाय। परन्तु बिश्वास के आने से आगे हम लोग व्यवस्था के बन्ध में बन्धे थे और उस बिश्वास के लिये
२४ जो पीछे प्रगट होनेहार था हम लोग घेरे में रहे। सो व्यवस्था हमें मसीह तक पहुंचाने को हम लोगों का गुरू ठहरी कि हम बिश्वास से धर्मी ठहराये जावें।
२५ पर जब बिश्वास आ चुका तब हम लोग फिर गुरू के
२६ बश में न रहे। क्योंकि तुम सब लोग यिसू मसीह पर
२७ बिश्वास लाने से परमेश्वर के पुत्र ठहरे। क्योंकि तुम लोगों में से जितनों ने मसीह में बपतिसमा पाया
२८ उन्हों ने मसीह को पहिन लिया। फिर तो न यहूदी है न यूनानी है न दास है न निर्बन्ध है न पुरुष है न स्त्री
२९ है क्योंकि मसीह यिसू में तुम सब लोग एक हो। और जो तुम लोग मसीह के हो तो अबिरहाम के बंश ठहरे और बाचा के समान अधिकारी ठहरे॥

४ पर्व्व

अब मैं कहता हूं कि अधिकारी जो है यद्यपि वह सब का स्वामी है तौ भी जब लों लड़का है तब लों उस
२ में और दास में कुछ बीच नहीं है। परन्तु जो समय पिता ने ठहराया है उतना समय वह गुरुओं और
३ अधिकारियों के बश में रहता है। सो हम लोग भी जब लड़के थे तब जगत की मूल बातों की दासता में
४ रहे। परन्तु जब समय पूरा हुआ तब परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा; वह स्त्री से उत्पन्न होके व्यवस्था

के आधीन ज़ुआ। जिसतें जो लोग व्यवस्था के आधीन थे उन्हें को वह छुड़ैाते करे कि हम लोग पुत्रपन का पद पावें। फिर जो पुत्र ठहरे तो परमेश्वर ने अपने पुत्र का आत्मा तुम्हारे मनों में भेजा; वह अब्बा हे पिता पुकारता है। से तू अब से दास नहीं रहा परन्तु पुत्र ठहरा और जो पुत्र ठहरा तो मसीह के कारण से परमेश्वर का अधिकारी ज़ुआ। ५ ६ ७

परन्तु तुम लोग आगे जब परमेश्वर को नहीं जानते थे तब जो सच मुच परमेश्वर नहीं हैं उन की तुम लोग सेवा करते थे। परन्तु अब जब तुम्हों ने परमेश्वर को जाना बरन परमेश्वर ने तुम्हें जाना तब तुम लोग फिर क्यों इन दुर्बल और हीन मूल बातों की ओर मुंह फेरते हो और फिर उन की दासता करने चाहते हो। तुम लोग दिनों और महीनों और समयों और बरसों को मानते हो। तुम्हारे विषय में मुझे खटका है कि क्या जाने जो परिश्रम मैं ने तुम्हों पर किया है सो व्यर्थ ठहरे। ८ ९ १० ११

हे भाइयो मैं तुम्हों से बिन्ती करता हूं कि तुम लोग मेरे समान हो जाओ क्योंकि मैं भी तुम्हारे समान हूं; तुम्हों ने मेरा कुछ बिगाड़ा नहीं। तुम लोग जानते हो कि मैं ने शरीर की दुर्बलता में मंगल समाचार पहिले तुम्हों को सुनाया। और मेरी परीक्षा जो मेरे शरीर में थी उसे तुम्हों ने निन्दित न जाना और मुझे त्याग नहीं किया परन्तु मुझ को परमेश्वर के दूत के १२ १३ १४

१५ ऐसा हां मसीह यिसू के ऐसा ग्रहण किया। तब तुम्हारा क्या ही आनन्द था; क्योंकि मैं तुम्हों पर साक्षी देता हूं कि जो हो सकता तो तुम लोग अपनी आंखें
१६ तक निकालके मुझे देते। क्या तुम्हों से सच बोलने के
१७ कारण से मैं तुम्हारा बैरी ऊआ हूं। वे तुम्हारे लिये मनचले हैं परन्तु भलाई करके नहीं; वे तुम्हें अलग किया चाहते हैं कि तुम लोग उन्हों के लिये मनचले
१८ होओ। अच्छी बात में मनचली करना अच्छा है न
१९ केवल जब मैं तुम्हारे पास हूं पर हर समय में। हे मेरे बच्चो जब लों मसीह तुम्हों में स्वरूप न पकड़े
२० मुझे तुम्हारे लिये फिर जन्ने की पीड़ है। मैं चाहता हूं कि अब तुम्हारे पास होऊं और अपनी वाणी बदलूं क्योंकि मुझे तुम्हारे विषय में दुबधा है।

२१ तुम लोग जो व्यवस्था के आधीन ऊआ चाहते हो मुझ से कहो कि क्या तुम लोग व्यवस्था को नहीं सुन-
२२ ते। क्योंकि लिखा है कि अबिरहाम के दो पुत्र थे एक
२३ लौंडी से दूसरा निर्बन्ध स्त्री से। जो लौंडी से था सो शरीर की रीति पर जनमा परन्तु जो निर्बन्धस्त्री से था
२४ सो वाचा की रीति पर ऊआ। ये बातें दृष्टान्त हैं क्योंकि ये स्त्रियां दो नियम हैं एक तो सीना पर्वत से जो नि-
२५ रे दास जनती है सो ही हाजिरा है। क्योंकि यह हाजिरा अरब का सीना पर्वत है और अब के यरूसलम से मिलती है और अपने बालकों के संग दासता में
२६ है। परन्तु ऊपर का यरूसलम निर्बन्ध है सो हम

सभों की माता है। क्योंकि लिखा है हे बांझ जो नहीं जनती है तू जी से मगन हो और तू जो पीड़ नहीं जानती है अब फूल और जैजैकार कर क्योंकि जो अकेली रह गई उसी के लड़के सुहागन के लड़कों से अधिक हैं। २७

अब हे भाइयो हम लोग इसहाक के समान बाचा के पुत्र हैं। २८ जैसा उस समय में जिस का जन्म शरीर की रीति से था सो उस को जिस का जन्म आत्मा की रीति से था सताता था वैसा अब भी होता है। २९ परन्तु धर्मग्रन्थ क्या कहता है; लौंडी को और उस के पुत्र को निकाल क्योंकि लौंडी का पुत्र निर्बन्ध स्त्री के पुत्र के संग अधिकारी नहीं होगा। ३० सो हे भाइयो हम लोग लौंडी के नहीं परन्तु निर्बन्ध के लड़के हैं॥ ३१

५ पर्ब्ब

सो उस निर्बन्धता में कि जिस से मसीह ने हमें निर्बन्ध किया है तुम लोग स्थिर रहो और दासता के जूवे तले फिर के न जुतो। २ देखो मैं पौलुस तुम्हों से कहता हूं जो तुम लोग खतना करवाओ तो मसीह से तुम्हें कुछ लाभ न होगा। ३ और हर एक मनुष्य को जिस ने खतना करवाया है मैं फिर कह सुनाता हूं कि सारी व्यवस्था का धारण उस पर धरा है। ४ तुम्हों में से जो व्यवस्था के द्वारा से धर्मी बना चाहते हो तुम लोग तो मसीह से अलग हुए; तुम कृपा से गिरे। ५ क्योंकि हम तो आत्मा के कारण बिश्वास से धर्म की आशा की बाट जोहते हैं। ६ क्योंकि मसीह यिसू में न

खतना से न अखतना से कुछ प्राप्त होता है परन्तु
७ विश्वास से जो प्रेम से काम करता है। तुम तो अच्छी
रीति से दौड़ते थे; किस ने तुम्हें रोक दिया कि तुम
८ लोग सच्चाई से आज्ञाकार न होओ। यह प्रबोध तुम्हा-
९ रे बुलानेहार की ओर से नहीं है। थोड़ा सा खमीर
१० सारी लोई को खमीरी करता है। तुम्हारे विषय
में प्रभु की ओर से मुझे भरोसा है कि तुम्हारा और
ही मत न होगा; फिर जो तुम्हें घबराता है कोई क्यों
११ न हो सो अपना दण्ड भुगतेगा। और हे भाइयो जो
मैं अब लों खतना का प्रचार करता तो काहे को
अब लों सताया जाता कि क्रूस की ठोकर जाती रही
१२ होती। मैं चाहता हूं कि जो तुम्हें घबराते हैं सो कट
भी जावें।

१३ क्योंकि हे भाइयो तुम लोग तो निर्बन्धता के लिये
बुलाये गये हो; केवल निर्बन्धता को शरीर के लिये
दांव मत समझो परन्तु प्रेम से एक दूसरे के दास हो
१४ जाओ। क्योंकि सारी व्यवस्था का तात्पर्य्य इसी एक बात
में है कि तू जैसा आप को प्यार करता है वैसा अपने
१५ पड़ोसी को प्यार कर। परन्तु जो तुम लोग एक दूसरे
को काट खाओ तो सुचेत रहो न होवे कि तुम एक
दूसरे को निगल जाओ।

१६ सो मैं कहता हूं कि आत्मा के समान चलो तो तुम
१७ शरीर की कामना को पूरी न करोगे। क्योंकि शरीर
की कामना आत्मा से विरुद्ध है और आत्मा की शरीर

से बिरुद्ध है और ये एक दूसरे से बिपरीत हैं यहां लों कि जो कुछ तुम लोग चाहते हो सो नहीं कर सकते हो। परन्तु जो तुम लोग आत्मा के चलाये चलते १८ हो तो व्यवस्था के आधीन नहीं हो। अब शरीर के १९ काम तो प्रगट हैं सो ये ही हैं परस्त्रीगमन व्यभिचार अपवित्रता चंचलाई। मूर्त्तपूजा जादूगरी बैर अन- २० बनाव हिसका क्रोध झगड़े दंगा कुपथ। डाह हत्या २१ मतवालपन भोगबिलास और ऐसे ऐसे; उन के विषय में जैसा मैं ने आगे तुम्हों से कहा था वैसा मैं तुम्हें आगे से कहता हूं कि ऐसे काम करनेहारे परमेश्वर के राज्य के अधिकारी न होंगे। परन्तु आत्मा का २२ फल प्रेम है और आनन्द और शान्ति और सहना और भलमनसी और भलाई और बिश्वासता। और कोमल- २३ ता और संयम; ऐसे ऐसे कामों के बिरुद्ध कोई व्यवस्था नहीं है। और जो मसीह के लोग हैं उन्हों ने शरीर २४ को उस के स्वभाव और कामनाओं समेत क्रूस पर मारा है। जो हमारा जीवन आत्मा के समान होवे २५ तो चाहिये कि हमारा चलन भी आत्मा के समान होवे। हम लोग झूठा घमण्ड न करें; हम एक दूसरे २६ को न चिढ़ावें और एक दूसरे पर डाह न करें॥

६ पर्ब्ब

हे भाइयो यदि कोई जन किसी दोष में एकाएक फंस जाय तो तुम जो आत्मा के लोग हो ऐसों को कोमलता की आत्मा से फिर सुधारो और तू अपने लिये चौकस रह न होवे कि तू भी परीक्षा में पड़े। तुम २

लोग एक दूसरे का भार उठा लेओ और यों मसीह
३ को व्यवस्था को पूरा करो। कोई जन जो कुछ नहीं
है यदि अपने को कुछ समझे तो वह आप को धोखा
४ देता है। परन्तु हर एक अपने अपने कार्य्य को जांचे
तब वह बड़ाई का कारण आप में पावेगा दूसरे में
५ नहीं। हर एक जन अपना ही बोझ उठावेगा।

६ जो कोई बचन में सिच्छा पाता है सो सिखानेहार
७ को सब अच्छी बस्तुओं में साझी करे। भरमाये न जाओ; परमेश्वर ठट्ठों में उड़ाया नहीं जाता कि मनुष्य
८ जो कुछ बोता है सोई काटेगा। क्योंकि जो कोई अपने
शरीर के लिये बोता है सो शरीर से नष्टता लवेगा
परन्तु जो आत्मा के लिये बोता है सो आत्मा से अनन्त
९ जीवन लवेगा। और हम अच्छे काम करने में थक न
जावें क्योंकि जो हम ढीले न होवें तो ठीक समय में
१० हम लवेंगे। सो जब जब हम अवसर पावें तब आओ
हम सब लोगों से भलाई करें पर निज करके बिश्वास
के घराने के लोगों से।

११ तुम लोग देखते हो कि मैं ने अपने हाथ से कैसी
१२ बड़ी पत्री तुम्हें लिखी है। जितने जो शरीर में अच्छी
दिखलाई चाहते हैं सो तुम्हारा खतना करवाते हैं;
सो भी केवल इतने के लिये कि वे मसीह के क्रूस के
१३ कारण सताये न जावें। क्योंकि जो खतना किये गये हैं
सो आप ही व्यवस्था को नहीं मानते हैं पर चाहते हैं
कि तुम लोग खतना करवाओ जिसतें वे तुम्हारे शरीर

के विषय में बड़ाई करें। परन्तु ऐसा न होवे कि मैं बड़ाई करूं केवल हमारे प्रभु यिसू मसीह के क्रूस पर १४
में करूं कि उस ही से जगत मेरे आगे क्रूस पर खैंचा गया और मैं जगत के आगे। क्योंकि मसीह यिसू में न १५
खतना कुछ है और न अखतना कुछ है परन्तु नई सृष्टि है। और जो जो इस विधान पर चलते हैं कुशल और १६
दया उन पर और परमेश्वर के इसराएल पर होवे। अब से कोई मुझे दुःख न देवे क्योंकि मैं अपनी देह १७
पर प्रभु यिसू के चिन्ह लिये फिरता हूं। हे भाइयो १८
हमारे प्रभु यिसू मसीह की कृपा तुम्हारे आत्मा के संग होवे आमीन॥

पैालुस की पत्री

एफसियों को।

१ पर्ब्ब

पैालुस जो परमेश्वर की इच्छा से यिसू मसीह का प्रेरित है उन सन्तों का जो एफसुस में हैं और जो मसीह यिसू में बिश्वासी हैं यह पत्री। २ हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यिसू मसीह से कृपा और कुशल तुम्हों पर होवे।

३ परमेश्वर और हमारे प्रभु यिसू मसीह का पिता स्तुत है कि उस ने हम लोगों को मसीह के कारण से स्वर्गीय पदार्थों में के हर एक प्रकार का आत्मिक बर दिया। ४ क्योंकि उस ने हमों को जगत की रचना से पहिले उस ही में चुन लिया जिसतें हम उस के आगे प्रेम में पवित्र और निर्दोष होवें। ५ उस ने अपनी इच्छा की रीझ के समान हमें यिसू मसीह के द्वारा से अपनी ओर के पुत्रपन के लिये बदा है। ६ जिसतें उस की कृपा की महिमा का बखान होवे; कि उसी कृपा से उस ने

हमों को उस प्यारे में ग्रहण किया। हम उस में होके उस के लहू के द्वारा से छुटकारा अर्थात पापों का मोचन उस की कृपा के धन से पाते हैं। उस कृपा से उस ने हमों को सब प्रकार का ज्ञान और बुद्धि बहुत सी दिई। कि उस ने अपनी इच्छा के भेद को जिसे उस ने अपनी भली रीझ के समान समयों की संपूर्णता की नीति अवस्था के लिये अपने में आगे से ठहराया था सो हमों पर खोल दिया। अर्थात कि वह सब वस्तुओं को चाहे स्वर्ग में हों चाहे पृथिवी पर हों मसीह में एक संग मिलावे। उस से हम ने भी उस ही के ठहराव के समान कि जो अपनी ही इच्छा के मता पर सब कुछ करता है बदा होके अधिकार पाया। जिसतें हम लोग जिन्हों ने मसीह पर पहिले भरोसा किया उस के ऐश्वर्य्य की स्तुति के कारण होवें। और उस में तुम लोग भी जब सच्चाई का बचन अर्थात अपने निस्तार का मंगल समाचार सुना और जब उस पर भी बिस्वास लाये तब पवित्र आत्मा की जिस की बाचा हुई तुम्हें छाप मिली। वही जब लों उस मोल लिये हुए का मोचन होवे तब लों हमारे अधिकार पाने का बयाना है जिसतें उस के ऐश्वर्य्य की बड़ाई होवे। ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४

इस लिये मैं भी जब से कि सुना कि तुम लोग प्रभु यिसू पर बिस्वास लाये और सब सन्त लोगों को प्यार करते हो। तब से मैं तुम्हारे कारण धन्य मान्ना और अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हारा स्मरण करना नहीं छोड़- १५ १६

१७ ता हूं। जिसतें हमारे प्रभु यिसु मसीह का परमेश्वर जो ऐश्वर्य्य का पिता है सो तुम्हें ज्ञान और प्रकाशवाणी

१८ का आत्मा देवे जिसतें तुम लोग उस को जानो। कि तुम्हारे मन की आखें प्रकाशित होवें जिसतें तुम लोग जानो कि उस के बुलाने में क्या ही आशा है और उस के अधिकार के ऐश्वर्य्य का जो सन्तों के लिये है क्या

१९ ही धन है। और हम में जो बिश्वास लाये उस के सामर्थ्य का अत्यन्त महातम क्या है; वह उस के परा-

२० क्रम के सामर्थ्य के कार्य्य के समान हैं। जो उस ने मसीह में प्रगट किया जब कि उस ने उसे मृतकों में से जिलाया और उसे अपनी ही दहिनी ओर स्वर्ग में

२१ बैठाके। सारे आधिपत्य और अधिकार और शक्ति और प्रभुता पर और हर एक नाम पर जो न केवल इस जगत में परन्तु आनेहार जगत में भी लिया जाता

२२ है बढ़ाया। और उस ने सब कुछ उस के पांवों तले कर दिया और उस को कलीसिया के लिये सब का

२३ सिर बनाया। वह उस की देह और उस की भरपूरी है जो सब कुछ सब में भरता है॥

२ पर्ब्ब

और उस ने तुम्हों को जो अपराधों और पापों के

२ कारण मृतक थे जिलाया। कि उन्हों में तुम लोग इस जगत के चलन के समान आकाश के अधिकार के प्र-धान की रीति पर जो आत्मा है और अब आज्ञा भंग के

३ सन्तानों में काम करता है पहिले चलते थे। उन्हों में हम सब भी अपने शरीर की कामनाओं में पहिले

जीवन निबाहते थे और तन और मन की कामनाएं पूरी करते थे और औरों ही के समान स्वभाव से क्रोध के सन्तान थे। परन्तु परमेश्वर जो दया में धनवान है उस ने अपने बड़े प्रेम से जिस से उस ने हम के। प्यार किया। हमें जो पापों के कारण मृतक थे से। मसीह के संग जिलाया ; तुम लोग कृपा से बच गये हो। और उस ने हमें। को उस के संग उठाया और मसीह यिसू के कारण स्वर्ग स्थानों पर उस के संग बैठाया। जिसतें वह अपनी दैयावानी से जो मसीह यिसू के कारण हमों पर है आनेहार समयों में अपनी कृपा के अत्यन्त बड़े धन को दिखावे। क्योंकि तुम लोग कृपा से बिश्वास के कारण बच गये हो और यह तुम्हारी ही ओर से नहीं है ; वह परमेश्वर का दान है। वह कर्मों के द्वारा से नहीं न हो कि कोई जन घमण्ड करे। क्योंकि हम उस की रचना हैं और मसीह यिसू में होके अच्छे कर्मों के लिये सिरजे गये हैं और उन्हों के लिये परमेश्वर ने हमें आगे से ठहराया था कि हम उन्हें किया करें। | ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

इस कारण चेत रखो कि तुम लोग आगे शरीर के विषय में अन्यदेशी थे और जो लोग खतनावाले कहाते हैं जिन का खतना शारीरिक और हाथ से किया हुआ है उन्हों से तुम अखतना के लोग कहाते थे। और चेत रखो कि तुम लोग उस समय में मसीह से अलग थे और इसराएल के राज्य से पराये थे और | ११ १२

बाचा के नियमों से बाहर थे और आस्रा रहित थे
१३ और जगत में परमेश्वर हीन थे। परन्तु अब मसीह
यिसू में होके तुम लोग जो आगे दूर थे मसीह के
१४ लोहू के कारण से निकट हो गये। क्योंकि वही
हमारा मिलाप है कि उस ने दो को एक कर दिया और
१५ जो भीत कि बीच में थी उसे ढा दिया। क्योंकि उस ने
अपनी देह देने से शत्रुता को अर्थात व्यवस्था की आज्ञा-
ओं को जो विधानों में थीं सो खो दिया जिसतें वह मेल
१६ करवाके दो से आप में एक नया मनुष्य बनावे। और
शत्रुता को मिटा डालके वह क्रूस के द्वारा से दोनों
१७ को एक तन बनाके परमेश्वर से मिलावे। और उस
ने आके तुम्हें जो दूर थे और उन्हें जो निकट थे मिलाप
१८ का मंगल समाचार दिया। क्योंकि उसी के द्वारा से
हम दोनों को एक ही आत्मा से पिता के पास अवाई
मिलती है।

१९ सो अब से तुम लोग बाहरी और परदेशी नहीं
रहे परन्तु सन्तों के संगी पुरवासी और परमेश्वर के
२० घराने के हो। और प्रेरितों और भविष्यतवक्ताओं
की नेव पर जहां यिसू मसीह आप कोने का सिरा
२१ है वहां रहों के ऐसे उठाये गये हो। उस में सारा
घर एकट्ठे जोड़कर पवित्र मन्दिर परमेश्वर के लिये
२२ उठता जाता है। उस में तुम लोग भी औरों के संग
बनाये जाते हो जिसतें आत्मा के द्वारा से परमेश्वर के
लिये भवन बन जाओ॥

३ पर्ब्ब

इस कारण मैं पौलुस तुम अन्यदेशियों के लिये यिसू मसीह का बन्धुवा हूं। यदि इतना हो कि तुम्हों ने सुना कि तुम लोगों के लिये परमेश्वर की कृपा का भण्डारीपन मुझी को मिला है। कि उस ने प्रकाशवाणी से उस भेद को जैसा मैं थोड़े में आगे लिख चुका मुझ पर खोला। उसे पढ़के तुम लोग जान सकते हो कि मैं मसीह के भेद को क्या समझता हूं। वह जैसे अब आत्मा के द्वारा से उस के पवित्र प्रेरितों और भविष्यतवक्ताओं पर प्रकाश किया गया है वैसे अगिले समयों में मनुष्यों के सन्तानों को जनाया नहीं गया था। सो यह है कि अन्यदेशी लोग मंगल समाचार के द्वारा से संगी अधिकारी और सहदेही और उस की बाचा में जो मसीह में है भागी होवें। और परमेश्वर की कृपा के दान के समान जो उस के सामर्थ्य के गुण से मुझे मिला मैं इस मंगल समाचार का सेवक बना। मुझे जो सारे सन्तों के सब से छोटे से छोटा हूं यह कृपा दिई गई कि मैं अन्यदेशियों में मसीह के धन का जो बूझ से परे है मंगल समाचार सुनाऊं। और सभों के लिये प्रगट करूं कि परमेश्वर कि जिस ने यिसू मसीह के द्वारा से सब कुछ उत्पन्न किया उसी में जो भेद आदि से गुप्त था उस का मेल क्या है। जिसतें अब कलीसिया के द्वारा से आधिपत्यों को और अधिकारों को जो स्वर्ग स्थानों में हैं परमेश्वर का नाना प्रकार का ज्ञान प्रगट होवे। जैसा उस ने सनातन से

२ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११

१२ मसीह यिसू हमारे प्रभु में आगे से ठहराया था। हम उस में होके बिस्वास के द्वारा से भरोसे के संग साहस १३ और अवाई करते हैं। सो मैं चाहता हूं कि तुम लोग मेरे क्लेशों के लिये जो तुम्हारे कारण हैं दुर्बल मत होओ क्योंकि इस में तुम्हारी बड़ाई है।

१४ इसी कारण मैं अपने प्रभु यिसू मसीह का पिता। १५ कि जिस से स्वर्ग में और पृथिवी पर सारे परिवार का नाम रखा गया है उस के आगे मैं घुटने टेकता हूं। १६ कि वह अपनी महिमा के धन के समान तुम्हें यह देवे कि तुम लोग उस के आत्मा के द्वारा से अंतर की १७ मनुष्यता में बहुत ही बलवन्त हो जाओ। जिसतें मसीह तुम्हारे मनों में बिस्वास के द्वारा से बास करे और जिसतें तुम लोग प्रेम में जड़ पकड़के और नेव १८ डालके। सारे सन्तों समेत समझने की शक्ति पाओ कि उस की चौड़ाई और लंबाई और गहराई और १९ ऊंचाई कितनी है। और जिसतें मसीह के प्रेम को जो ज्ञान से परे है जानो कि तुम लोग परमेस्वर २० की सारी भरपूरी तक भर जाओ। अब उस को जो उस सामर्थ्य के समान जो हमों में काम करता है हमारे सारे मांगने और चिन्ता करने से अत्यन्त २१ अधिक देने को शक्तिमान है। उस को कलीसिया में मसीह यिसू के द्वारा से सदाकाल युग युग महातम होवे आमीन॥

४ पर्व्व सो मैं जो प्रभु के लिये बन्धुवा हूं सो तुम्हों से बिन्ती

करता हूं कि जिस बुलाहट से तुम लोग बुलाये गये
हो उस के योग्य चलो। सारी दीनता और कोमलता २
से और धीरता से चलो; और प्रेम से एक दूसरे को
सहो। और यत्न करो कि आत्मा की एकता मिलाप ३
के बन्ध से बन्धी रहे। एक देह और एक आत्मा है जैसा ४
कि तुम लोग अपने बुलाये जाने की एक ही आशा में
बुलाये गये हो। एक प्रभु एक बिश्वास एक बपतिसमा। ५
एक परमेश्वर; वह सभों का पिता है जो सब से ऊपर ६
है और सभों में व्यापता है और तुम सभों में है।

परन्तु हम में से हर एक को मसीह के दान के परि- ७
माण के समान कृपा दिई गई है। इस कारण वह ८
कहता है उस ने ऊंचे पर चढ़के बन्ध को बन्धवा किया
और मनुष्यों को दान दिये। अब उस का ऊपर चढ़ना ९
क्या है; यह है कि वह पहिले पृथिवी के नीचे स्थानों
में उतरा। जो उतरा है सो वही है जो सारे स्वर्गों के १०
ऊपर चढ़ा है जिसतें वह सब कुछ भरपूर करे। और ११
उस ने कितनों को प्रेरित होने को दिया; और कित-
नों को भविष्यतवक्ता; और कितनों को मंगलसमा-
चारी; और कितनों को चरवाहे और गुरु। जिसतें १२
सन्त लोग सेवकाई के काम के लिये तैयार होते जावें
कि मसीह की देह बनती जाय। जब लों कि हम सब १३
के सब बिश्वास की और परमेश्वर के पुत्र के ज्ञान की
एकता को पहुंचें अर्थात जब लों हम लोग पूरे मनुष्य
होवें और मसीह की पूरी अवस्था के मान तक पहुंचें।

१४ जिसतें हम आगे को लड़के न रहें और सिच्छा की हर प्रकार की बयार से और मनुष्यों की धूर्तता और चतुराई से जिसे वे भरमाने की जुगत से करते हैं उन १५ से हम उछलते बहते न फिरें। परन्तु प्रेम के साथ सच बोलके हम सर्वथा उस में जो सिर है अर्थात मसीह १६ में बढ़ते जावें। उस से सारी देह एक एक जोड़ की भरती से मिलकर और जुटकर उस काम के समान जो एक एक अंग के मान से होता है बढ़ती है ऐसा कि वह देह प्रेम में अपनी बढ़ती करती है।

१७ इस लिये मैं यह कहता हूं और प्रभु के आगे साची देता हूं कि जैसे अन्यदेशी लोग अपने मन की मूरखता १८ पर चलते हैं वैसी चाल तुम लोग मत चलो। कि उन की बुद्धि अन्धियारी हो गई है और वे उस अज्ञानता के कारण से जो उन्हों में है और अपने मन की कठोरता के कारण से परमेश्वर के जीवन से अलग हो गये १९ हैं। उन्हों ने सुन होके अपने तईं कामातुरता में छोड़ दिया कि सब प्रकार की मलिनता के काम ला- २० लच से करें। परन्तु तुम्हों ने मसीह को ऐसी शिचा २१ नहीं पाई है। तुम्हों ने तो उस की सुनी है और जैसी २२ सच्चाई यिसू में है वैसी उस की शिचा पाई है। कि तुम लोग अगिले चलन के विषय में पुरानी मनुष्यता को जो भरमानेहारी कामनाओं के कारण से भ्रष्ट है २३ उतारो। और अपने स्वभाव के आत्मा में नये बन जा- २४ ओ। और नई मनुष्यता को जो परमेश्वर के समान

धर्म में और सच्चाई की पवित्रता में सिरजी गई है पहिन लेओ।

इस लिये झूठ को छोड़के हर एक जन अपने पड़ोसी से सच बोले क्योंकि हम लोग तो आपस में एक दूसरे के अंग हैं। क्रोधित होके पाप मत करो ऐसा न हो कि सूर्य्य अस्त हो और तुम क्रोध करते रहो। शैतान को जगह मत देओ। २५ २६ २७

जिस ने चोरी किई हो सो फिर चोरी न करे परन्तु अच्छा धंधा करके हाथों से परिश्रम करे जिसतें वह दरिद्रों को कुछ दे सके। कोई गंदी बात तुम्हारे मुंह से न निकले परन्तु जो सुधारने के काम के लिये अच्छी है कि सुननेहारों को गुण करे सो ही निकले। और परमेश्वर के पवित्र आत्मा को जिस की छाप तुम्हों पर मोक्ष के दिन लों ऊई है उदास न करो। २८ २९ ३०

सारी कड़वाहट और क्रोध और रिस और कोलाहल और निन्दा की बातें सारी बुराई समेत तुम्हों से दूर हो जायें। और एक दूसरे से मिलनसार और दयावान होओ और जैसा परमेश्वर ने मसीह के कारण से तुम्हें छिमा किया है वैसे तुम लोग भी एक दूसरे को छिमा करो॥ ३१ ३२

५ पर्ब्ब

सो तुम प्यारे बालकों के समान परमेश्वर की चाल चलो। और जैसा कि मसीह ने हमों से प्रेम किया है और सुगन्ध के लिये हमारी जगह में अपने को पर- २

मेश्वर के आगे भेंट और बलिदान किया है वैसे तुम लोग भी प्रेम करके चलो।

३ परन्तु जैसा कि सन्तों को योग्य है वैसा व्यभिचार और हर एक प्रकार की मलिनता और लालच की ४ तुम्हों में चर्चा तक भी न होवे। और न लज्जा की बात न बकबक की बात न हंसी ठट्ठे की बात बोलना कि वे उचित नहीं हैं परन्तु अधिक करके स्तुति करना। ५ क्योंकि तुम लोग जानते हो कि न कोई व्यभिचारी न अपवित्र जन न लालची जन कि वह मूर्त्त पूजक है मसीह के और परमेश्वर के राज्य में कुछ अधिकार ६ रखता है। कोई मनुष्य तुम्हों को अनर्थ बातों से भुलावा न देवे क्योंकि ऐसी बातों के कारण परमेश्वर ७ का क्रोध आज्ञा भंग के सन्तानों पर पड़ता है। सो ८ तुम लोग उन्हों के भागी न होओ। क्योंकि तुम लोग आगे अंधकार थे परन्तु अब प्रभु में होके उजाला हो; ९ सो उजाले के सन्तानों के योग्य चलो। क्योंकि आत्मा का फल सारी भलाई में और धर्म में और सच्चाई में १० है। और बूझ लो कि प्रभु को क्या भावता है। और ११ अंधकार के फलहीन कार्य्यों में साझी मत होओ १२ परन्तु उस के बिपरीत में उन्हें दोष देओ। क्योंकि उन के गुप्त कार्य्यों की चर्चा तक भी करना लाज की बात १३ है। और सारी वस्तें जो दोषी ठहरती हैं सो उजाले से प्रकाश होती हैं क्योंकि जो कुछ प्रकाश करता है १४ सो उजाला है। इसी लिये कहा गया है तू जो सोता

है जाग और मृतकों में से उठ और मसीह तुझे उजाला करेगा।

सो सुचेत रहो कि तुम लोग देख भालके चलो; १५ अज्ञानियों के समान नहीं परन्तु ज्ञानियों के समान। समय को लाभ जानो क्योंकि दिन बुरे हैं। १६ इस लिये १७ तुम लोग निर्बुद्धि न होओ परन्तु बूझ लो कि प्रभु की इच्छा क्या है। और मदिरा पीके मतवाले न होओ १८ कि उस में बुराई है परन्तु आत्मा से भर जाओ। १९ और आपस में भजन और गीत और आत्मिक गान गाया करो और अपने मन में प्रभु के लिये गाते बजाते रहो। और सब बस्तुओं के लिये हमारे प्रभु यिसू २० मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का नित धन्य मानो। और परमेश्वर के डर से एक दूसरे के आधीन २१ रहो।

हे स्त्रियो जैसे प्रभु के वैसे अपने पतियों के तुम २२ लोग आधीन रहो। क्योंकि पत्नी का सिर पति है २३ जैसा कि मसीह भी कलीसिया का सिर है और वह देह का बचानेहारा है। सो जैसा कलीसिया मसीह २४ के आधीन है वैसे ही पत्नियां भी हर एक बात में अपने पतियों के आधीन होवें।

हे पुरुषो तुम लोग अपनी पत्नियों को प्यार करो २५ जैसा मसीह ने भी कलीसिया को प्यार किया और आप को उस के बदले दिया है। जिसतें वह उस को २६ जल के स्नान से जो बचन से है शुद्ध करके पवित्र करे।

२७ और अपने लिये तैयार करे अर्थात एक ऐसी तेजोमय कलीसिया कि जिस में न कलंक न चीन न कोई ऐसी २८ वस्तु होवे परन्तु वह पवित्र और निर्दोष होवे। यों ही पुरुषों को चाहिये कि अपनी पत्नियों को जैसा अपनी देह को प्यार करें; जो अपनी पत्नी को प्यार २९ करता है सो अपने को प्यार करता है। क्योंकि किसी ने अपने शरीर से कभी बैर न किया परन्तु वह उसे पालता और पोसता है जैसा कि प्रभु भी कलीसिया ३० को करता है। क्योंकि हम लोग उस की देह के अंग हैं और उस के मांस में से और उस की हड्डियों ३१ में से हैं। इसी कारण मनुष्य अपने माता पिता को छोड़ेगा और अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे ३२ दोनों एक तन होंगे। यह एक बड़ा भेद है पर मैं मसीह के और कलीसिया के विषय में बोलता ३३ हूं। तिस पर भी हर एक तुम्हों में से अपनी पत्नी को जैसा अपने को प्यार करे; और पत्नी अपने पति का आदरमान करे॥

६ पर्ब्ब

हे बालको तुम लोग प्रभु में अपने माता पिता की २ आज्ञा मानते रहो क्योंकि यह ठीक है। तू अपने माता पिता का आदर कर; यह पहिली आज्ञा है कि जिस ३ के संग बाचा है। जिसतें तेरा भला होवे और पृथिवी पर तेरा जीवन अधिक होवे।

४ और हे बच्चेवालो तुम लोग अपने बालकों को मत

कुढ़ाओ परन्तु परमेश्वर की सिच्छा और उपदेश में उन का प्रतिपाल करो।

५ हे दासो जो जगत में तुम्हारे स्वामी हैं तुम लोग डरते और थरथराते ऊए अपने मन की सीधाई से ६ जैसा मसीह के वैसा उन के आज्ञाकार रहो। मनुष्यों को रिझाने के लिये देखाने की सेवा टहल करके सो नहीं परन्तु मसीह के दासों के समान मन से पर-७ मेश्वर की इच्छा पर चलो। जो से सेवा टहल करो मनुष्यों की जानकर नहीं परन्तु प्रभु की जानकर करो। ८ क्योंकि जानते हो कि जो कुछ अच्छा काम कोई करे-गा क्या दास हो क्या निर्बन्ध हो वह प्रभु से वैसा ही पावेगा।

९ और हे स्वामियो तुम लोग वही बात उन्हों से करो और धमकियां कम दिया करो क्योंकि तुम लोग जानते हो कि तुम्हारा भी स्वामी स्वर्ग में है और वह किसी का पक्षपात नहीं करता है।

१० निदान हे मेरे भाइयो प्रभु में और उस के समार्थ्य ११ के पराक्रम से बलवन्त बनो। परमेश्वर के सारे हथि-यार बांधो जिसतें तुम लोग शैतान की जगतों के संमुख १२ स्थिर रह सको। क्योंकि देह से और लोहू से तो नहीं परन्तु आधिपत्यों से और अधिकारों से और इस जगत के अंधकार के महीपतियों से और दुष्टता के आत्माओं से जो आकाशी जगहों में हैं उन्हों से हमें १३ युद्ध करना है। इस कारण तुम लोग परमेश्वर के सारे

हथियार उठा लेओ जिसतें तुम बुरे दिन में सामना कर सको और सब काम करके स्थिर रह सको।
१४ इस लिये तुम लोग अपनी कटि को सत्यता से कसके
१५ और धर्म की झिलम पहिनके स्थिर रहो। और अपने पांवों में शान्ति के मंगल समाचार की तैयारी के
१६ जूते पहिनो। और बिश्वास की ढाल कि जिस से तुम लोग उस दुष्ट के सारे जलते तीरों को बुझा सको सो
१७ सब के ऊपर लगाओ। और मुक्ति का टोप और आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का बचन है सो ले
१८ लेओ। और सारी प्रार्थना और बिन्ती से तुम लोग आत्मा में हर समय प्रार्थना करो और उस पर सब सन्तों के लिये सारी धुनि और बिन्ती करने को जागते
१९ रहो। और मेरे लिये भी जिसतें बचन करने की शक्ति मुझे मिले कि मेरा मुंह निर्भयी से खुल जावे जिसतें मैं मंगल समाचार के भेद को कि जिस के लिये मैं
२० एक दूत जंजीर में हूं प्रकाश करूं। कि मैं उस में
२१ निर्भय होके जैसा मुझे चाहिये वैसा बोलूं। और तुखिकुस जो प्यारा भाई और प्रभु का बिश्वासी सेवक है वह तुम्हों को सब बातें बतावेगा जिसतें तुम लोग
२२ भी मेरा समाचार पाओ कि मैं क्या करता हूं। मैं ने उसे तुम्हारे पास इसी कारण भेजा कि तुम लोग हमारी दशा को जानो और वह तुम्हारे मनों की
२३ ढाड़स बन्धावे। भाइयों को कुशल होवे और परमेश्वर पिता की और प्रभु यिसू मसीह की और से

बिस्वास के संग प्रेम मिले। जितने जो हमारे प्रभु यिसू २४
मसीह से सच्चा प्रेम रखते हैं उन सभों पर कृपा होवे
आमीन॥

पौलुस की पत्री

फिलिपियों को।

१ पर्ब्ब

पौलुस और तिमोदेउस से जो यिसू मसीह के दास हैं फिलिपी के सब सन्तों को जो मसीह यिसू में हैं २ और अध्यक्षों और सेवकों को यह पत्री। हमारे पिता परमेश्वर से और प्रभु यिसू मसीह से कृपा और कुशल तुम्हों पर होवे।

३ मैं जब जब तुम्हें स्मरण करता हूं तब तब अपने पर- ४ मेश्वर का धन्यबाद करता हूं। और अपनी हर एक प्रार्थना में सदा तुम सभों के लिये आनन्द से प्रार्थना ५ करता हूं। इस लिये कि तुम मंगल समाचार में पहि- ६ ले दिन से आज लों भागी ऊए हो। और मैं इस बात का निश्चय रखता हूं कि जिस ने तुम्हों में उत्तम कार्य्य को आरंभ किया है सो यिसू मसीह के दिन लों कर- ७ ता चला जायगा। कि मुझे उचित है कि मैं तुम सभों के विषय में ऐसा ही समझूं क्योंकि मेरी जंजीरों में

और प्रतिवाद में और मंगल समाचार को प्रमाण करने में तुम लोग मेरे मन में हो और तुम सब मेरे संग कृपा के भागी हो। क्योंकि परमेश्वर मेरा साची है कि मैं यिसू मसीह के प्रेम से तुम सभों का कैसा अभिलाषी हूं। और मैं यह प्रार्थना करता हूं कि तुम्हारा प्रेम जो है सो ज्ञान में और हर भांति के विवेक में अधिक बढ़ता चला जाय। जिसतें तुम लोग बेवरा की बातों को परख सको और मसीह के दिन लों फरछा रहो और किसी के लिये ठोकर मत ठहरो। और धर्म के फलों से जो यिसू मसीह के द्वारा से हैं तुम लोग भर जाओ कि परमेश्वर की महिमा और स्तुति होवे। ८ ९ १० ११

परन्तु हे भाइयो मैं चाहता हूं कि तुम लोग जानो कि जो कुछ मुझ पर ज़ुआ है सो मंगल समाचार की अधिक बढ़ती के लिये ठहरा। यहां लों कि सारे राजभवन में और और सब स्थानों में प्रगट ज़ुआ है कि मैं मसीह के कारण बन्धुवा हूं। और बज़तेरे भाइयों ने प्रभु में मेरी जंजीरों से दृढ़ होके बचन को निर्भय बोलने का अधिक साहस प्राप्त किया। कोई कोई तो डाह और झगड़े से और कोई कोई भली मनसा से मसीह को प्रचार करते हैं। जो झगड़े से ऐसा करते हैं सो खरे मन से मसीह का समाचार नहीं सुनाते हैं परन्तु इस मनसा से कि मेरी जंजीरों पर क्लेश अधिक करें। परन्तु जो प्रेम से ऐसा करते हैं सो यह जानके १२ १३ १४ १५ १६ १७

कि मैं मंगल समाचार के प्रतिवाद के कारण ठहरा-
१८ या ऊआ हूं ऐसा करते हैं। सो क्या है; हर प्रकार
से मसीह का समाचार सुनाया जाता है चाहे गुप्र मत
से चाहे सच्चाई से; और इस में मैं आनन्द करता हूं
१९ बरन आनन्द करूंगा भी। क्योंकि मैं जानता हूं कि
तुम्हारी प्रार्थना से और यिसू मसीह के आत्मा की
२० सहायता से यह मेरे निस्तार का कारण होगा। क्यों-
कि मेरा बड़ा भरोसा और आशा है कि मैं किसी बात
में लज्जित न हूंगा परन्तु सारे साहस से जैसा आगे
ऊआ वैसा अब भी मेरी देह में चाहे मेरे जीते चाहे
२१ मेरे मूए पर मसीह की बड़ाई होवे। क्योंकि जीना
२२ मेरे लिये मसीह है और मरना लाभ है। परन्तु जो मैं
देह में जीऊं तो यही मेरे परिश्रम का फल होगा
२३ और मैं नहीं जानता कि मैं क्या चाहूं। क्योंकि मैं दो
बातों की बन्द में जकड़ा हूं; मेरा अभिलाष है कि मैं
यहां से छुटकारा पाके मसीह के संग रहूं कि यह
२४ बऊत ही अच्छा है। परन्तु देह में रहना तुम्हारे
२५ कारण अधिक अवश्य है। और मैं यह निश्चय करके
जानता हूं कि मैं रहूंगा और तुम सभों के संग ठहरूं-
गा जिसतें तुम लोग बिश्वास में बढ़ते जाओ और आ-
२६ नन्दित रहो। कि तुम्हारी आनन्दता जो मसीह यिसू
में मेरे कारण से है सो मेरे तुम्हारे पास फिर आने
से अधिक होवे।

२७ केवल इतना हो कि तुम्हारा चलन मसीह के मंगल

समाचार के योग्य होवे कि मैं चाहे तुम्हें देखने को आऊं चाहे न आऊं मैं तुम्हारा यह समाचार सुनूं कि तुम लोग एक ही आत्मा में स्थिर हो रहे हो और मंगल समाचार के बिश्वास के लिये एक मन होके मिलके परिश्रम करते हो। और यह कि तुम लोग अपने बिरोध करनेहारों से किसी बात में डराये न जाते हो; यह उन के लिये तो नाश होने का चिन्ह है परन्तु तुम्हारे लिये परमेश्वर की ओर से निस्तार पाने का चिन्ह है। क्योंकि मसीह के विषय में तुम्हें केवल यही नहीं दिया गया कि तुम लोग उस पर बिश्वास लाओ परन्तु यह भी दिया गया कि उस के कारण से दुःख पाओ। कि जो कष्ट तुम्हों ने मुझे उठाते देखा और सुनते हो कि मैं उठाता हूं सो तुम लोग अब वही उठाते हो॥ २८ २९ ३०

२ पर्ब्ब

सो यदि मसीह में कुछ संबोधन हो यदि प्रेम की कुछ ढाढ़स हो यदि आत्मा का कुछ मेल हो यदि मन की मया और दया होय। तो मेरे आनन्द को पूरा करो कि एक सा मत रखो; एक सा प्रेम रखो; एक मन और एक मत होओ। झगड़े से और झूठे घमण्ड से कुछ न करो परन्तु मन की नम्रता से एक दूसरे को अपने से बड़ा समझो। तुम्हों में से हर एक अपना स्वार्थ न करे परन्तु हर एक पराये की दशा पर भी बिचार करे। २ ३ ४

जो मन मसीह यिसू में था सो तुम्हों में भी होवे। ५

६ उस ने परमेश्वर का स्वरूप होके परमेश्वर के तुल्य
७ होना कुछ लूट न जाना। परन्तु उस ने आप को हीन
किया और दास का स्वरूप धारण किया और मनुष्य
८ का आकार बना। और मनुष्य के से ढब में प्रगट होके
उस ने अपने को दीन किया और मरने लों बरन क्रूस
९ पर मरने लों आधीन हुआ। इस कारण परमेश्वर ने
उसे भी अत्यन्त महान किया और उस को ऐसा नाम जो
१० सब नामों से श्रेष्ठ है दिया। जिसतें यिसू के नाम पर
जितने जो स्वर्ग में हैं और जो पृथिवी में हैं और जो
११ पृथिवी के नीचे हैं हर एक घुटना टेके। और हर
एक जीभ परमेश्वर पिता की महिमा के लिये मान
लेय कि यिसू मसीह जो है वही प्रभु है।

१२ सो हे मेरे प्यारो जैसा कि तुम लोग सदा आज्ञा-
कार होते आये हो वैसा ही न केवल मेरे साक्षात
में परन्तु अब मेरे बियोग में बहुत अधिक करके
डरते और थरथराते हुए अपने निस्तार के काम किये
१३ जाओ। क्योंकि परमेश्वर ही है कि जो तुम्हों में काम
करता है कि तुम लोग उस की रीझ के समान इच्छा
१४ करो और काम भी करो। जो कुछ करते हो सो
बिना कुड़कुड़ाते और बिना बिबाद करते करो।
१५ जिसतें तुम लोग निर्दोष और सूधे होके टेढ़े तिरछे
लोगों के बीच में परमेश्वर के कलंक हीन बालक बने
१६ रहो। कि उन्हों में तुम लोग जीवन का बचन लिये
हुए उजाले के समान जगत में चमको जिसतें मसीह

के दिन में मेरी बड़ाई होवे कि मेरी दौड़ और परिश्रम अकारथ न ज़ुआ।

क्योंकि जो मैं तुम्हारे बिश्वास की सेवा और बलिदान पर ढाला जाऊं तो मैं आनन्दित हूं और तुम सभों के संग आनन्द करता हूं। और इसी कारण तुम लोग भी आनन्दित हो और मेरे संग आनन्द करो। और मैं प्रभु यिसू से आशा रखता हूं कि तिमोदेउस को जल्द तुम्हारे पास भेजूं जिसतें तुम्हारा समाचार बूझके मैं भी सुचित होऊं। क्योंकि ऐसे मन का कोई मेरे संग नहीं है जो आप ही आप तुम्हारे लिये चिन्ता करे। क्योंकि सब अपनी अपनी स्वार्थ करते हैं और जो यिसू मसीह का है उस की चिन्ता नहीं करते हैं। परन्तु तुम लोग उस को परखा ज़ुआ जानते हो कि जैसा पिता के संग पुत्र वैसा मेरे संग उस ने मंगल समाचार के लिये सेवा किई। सो मैं आशा रखता हूं कि अपने ऊपर जो होनहार है जब देख लेऊं तब उस को तुरन्त भेज देऊं। परन्तु मुझे प्रभु से निश्चय है कि मैं आप भी जल्द आऊंगा।

अब एपाफ्रोदितुस को जो मेरा भाई और संगी कर्मकारी और संगी योद्धा और तुम्हारा प्रेरित और मेरे निबाह का सेवक है उस को मैं ने तुम्हारे पास भेजना उचित जाना। क्योंकि वह तुम सभों का निपट अभिलाषी था और तुम ने जो सुना कि वह रोगी था इस लिये वह बज़ुत उदास रहता था। वह तो रोगी

१७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७

होके मरने पर था परन्तु परमेश्वर ने उस पर दया किई और केवल उसी पर नहीं परन्तु मुझ पर भी
२८ किई न होवे कि मुझ पर शोक पर शोक आवे। सो मैं ने उसे बहुत जल्द भेजा जिसतें जब तुम लोग उसे फिर देखो तब आनन्द करो और मेरा भी शोक घटे।
२९ सो तुम लोग उस को प्रभु में बड़े आनन्द से ग्रहण करो
३० और ऐसों का आदर करो। क्योंकि मसीह के काम के लिये वह मरने पर था; उस ने अपने प्राण को कुछ न समझा जिसतें मेरे लिये तुम्हारी सेवा की घटती को पूरी करे॥

३ पर्व्व

अब हे मेरे भाइयो; प्रभु में आनन्दित रहो; तुम्हें एक ही बात फिर फिर लिखना मैं दुःख नहीं जानता
२ हूं और तुम्हारे लिये वह कुशल की बात है। कुत्तों से चौकस रहो; बुरे कर्मकारियों से चौकस रहो;
३ काट कूट करनेहारों से चौकस रहो। क्योंकि हम लोग जो आत्मा से परमेश्वर की सेवा करते हैं और मसीह यिसू पर बड़ाई करते हैं और शरीर पर भरोसा नहीं रखते हैं हम ही खतना के लोग हैं।
४ परन्तु मैं शरीर का भरोसा रख सकता हूं; यदि दूसरा कोई समझता हो कि शरीर पर भरोसा रख सकता है तो
५ मैं अधिक कर सकता हूं। कि मेरा खतना आठवें दिन हुआ; मैं इसराएल के कुल में का; बन्यामीन के बंश में का; इबरानियों का इबरानी; व्यवस्था के विषय में
६ फरीसी। सर्गरमी की बात पूछो तो कलीसिया का

सताने हारा; और व्यवस्था के धर्म के विषय में निर्दोष। परन्तु जो बस्तें मेरे लाभ की थीं उन को मैं ने मसीह के लिये हानि समझा। हां निःसन्देह अपने प्रभु मसीह यिसू के ज्ञान की उत्तमता को बिचार कर के मैं सब बस्तुओं को हानि समझता हूं; मैं ने उस के लिये हर एक बस्तु की हानि उठाई है और उन्हें कूड़ा जानता हूं जिसतें मैं मसीह को लाभ में पाऊं। और उस ही में पाया जाऊं; अपने ही धर्म जो व्यवस्था से है उस में नहीं परन्तु जो धर्म मसीह के बिश्वास से है अर्थात जो धर्म परमेश्वर से विश्वास के द्वारा मिलता है उस में मैं पाया जाऊं। कि मैं उस को जानूं और उस के जी उठने के सामर्थ्य को और उस के संग दुःखों में भागी होने को जानूं और उस के मरण की समता को प्राप्त करूं। जिसतें मैं किसी न किसी भांति से उस पुनरुत्थान को जो मृतकों में से है पहुंचूं। क्योंकि मैं अब तक पा न चुका; मैं अब तक सिद्ध न हो चुका परन्तु मैं पीछा किये जाता हूं जिसतें जिस बात के लिये मैं मसीह यिसू से पकड़ा गया हूं उसे मैं जा पकड़ूं। हे भाइयो मैं यह नहीं समझता हूं कि मैं पकड़ चुका हूं। पर इतना है कि मैं उन वस्तुओं को जो पीछे छूटीं भुलाके उन के लिये जो आगे हैं बढ़ा हुआ सीधा झण्डे की ओर पिलचा जाता हूं जिसतें मैं उस जयफल को जिस के लिये परमेश्वर

७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४

ने मुझ को यिसू मसीह के द्वारा से ऊपर बुलाया है पाऊं।

१५ सो जितने सिद्ध लोग हमों में हैं सो ऐसी समझ रखें और जो किसी बात में तुम लोग और ही समझते हो तो परमेश्वर तुम्हों पर यह भी प्रगट करेगा।
१६ तिस पर जहां लों हम पहुंचे हैं उसी के विधान पर
१७ हम चलें और वही बात हम समझें। हे भाइयो तुम सब के सब मेरी चाल पर चलो; और जैसा हम तुम्हारे लिये दृष्टान्त ठहरे हैं जो लोग वैसे चलते हैं
१८ उन्हें तुम लोग चीन्ह रखो। क्योंकि बहुतेरे चलते हैं कि जिन की चर्चा मैं तुम्हों से बारंबार कर चुका और अब रो रोके मैं कहता हूं कि वे मसीह के क्रूस के शत्रु
१९ हैं। नष्ट होना उन का अन्त है; उन का पेट सो उन का परमेश्वर है; उन का अपजस उन की बड़ाई है; वे
२० सांसारिक बातें मानते हैं। परन्तु हम लोग स्वर्गबासियों के स्वदेशी हैं और वहां से हम मुक्तिदाता प्रभु
२१ यिसूमसीह की बाट भी जोहते हैं। वह अपने सामर्थ्य के समान कि जिस से वह सब कुछ अपने आधीन कर सकता है हमारी लौकिक देह को बदलके अपनी तेजोमय देह के तुल्य करेगा॥

४ पर्व्व

इस कारण हे मेरे प्यारे और लालसित भाइयो; मेरे आनन्द और मेरे मुकुट; हे प्यारो तुम लोग प्रभु
२ में इसी रीति से स्थिर रहो। मैं अयोदिया से बिन्ती करता हूं और सिन्तीखे से बिन्ती करता हूं कि वे प्रभु

में होके एक मत होवें। और हे सच्चे सहकर्मी मैं ३
तुझ से भी बिन्ती करता हूं कि जिन स्त्रियों ने मेरे संग
मंगल समाचार की सेवा में परिश्रम किया है और
क्लेमनस और मेरे और और संगी कर्मकारी जिन के
नाम जीवन की पुस्तक में लिखे हुए हैं उन्हों की तू
सहायता कर।

प्रभु में सदा आनन्द करो; मैं फिर कहता हूं कि ४
आनन्द करो। तुम्हारी मध्यमता सब मनुष्यों पर प्र- ५
गट होवे; प्रभु निकट है। किसी बात की चिन्ता न ६
करो परन्तु हर एक बात में तुम्हारा निवेदन जो है सो
प्रार्थना और बिन्ती करने से धन्यवाद के संग परमेश्वर
से किया जाय। और परमेश्वर की शान्ति जो सारी बूझ ७
से बाहर है सो तुम्हारे मनों और अन्तःकरणों की
रखवाली मसीह यिसू के कारण करेगी।

निदान हे भाइयो जो जो बातें सच हैं जो जो बातें ८
योग्य हैं जो जो बातें खरी हैं जो जो बातें पवित्र हैं जो जो
बातें मनभावन हैं जो जो बातें शुभमान हैं यदि कुछ
गुण होवे और यदि कुछ सराह होवे तो उन बातों
को सोचो। और जो कुछ तुम्हों ने मुझ से सीखा और ९
ग्रहण किया और सुना और देखा है उन पर चलो तब
शान्ति का परमेश्वर तुम्हारे संग रहेगा।

परन्तु मैं प्रभु में बहुत आनन्दित हुआ कि अब अन्त १०
में तुम्हारी चिन्ता मेरे लिये फिर लहलहाती है;
तुम लोग तो आगे मेरे लिये चिन्ता करते थे परन्तु

११ तुम्हें अवसर न मिला। पर मैं कुछ संकेत के लिये नहीं कहता हूं क्योंकि मैं ने इतना सीखा है कि जिस दशा १२ में हूं उसी में सन्तोष करूं। मैं घटने जानता हूं और मैं बढ़ने जानता हूं; हर जगह में क्या सन्तुष्ट होना क्या भूखा रहना क्या बढ़ना क्या घटना मैं ने सब बातें १३ साध लिईं। मसीह से जो मुझे शक्ति देता है मैं सब कुछ कर सकता हूं।

१४ तिस पर तुम्हों ने भला किया जो दुःख में मेरी १५ सहायता किई। क्योंकि हे फिलिपियो तुम तो आप जानते हो कि मंगल समाचार के आरंभ में जब मैं मकदूनिया से निकल आया तब तुम्हें छोड़ किसी कली- १६ सिया ने देने लेने में मेरी सहायता नहीं किई। क्यों- कि थस्सलोनीके में भी तुम्हों ने मेरे निबाह के लिये १७ एक दो बेर कुछ भेजा। यह नहीं कि मैं दान ही को चाहता परन्तु फल को कि जिस का प्राप्त तुम्हारे १८ लेखे में लगे वही मैं चाहता हूं। क्योंकि मेरे पास सब कुछ है बरन बहुत ही है; मैं भरा हूं क्योंकि जो कुछ तुम्हों ने एपाफ्रोदितुस के हाथ भेजा सो मैं ने पाया; वह सुगन्ध और ग्राह्य बलिदान है कि जिस से १९ परमेश्वर प्रसन्न है। परन्तु मेरा परमेश्वर अपने ऐश्वर्य्य के धन के समान तुम्हारे सारे प्रयोजन को २० मसीह यिसू से भर देगा। अब हमारे पिता पर- मेश्वर के लिये युग युग महातम होवे आमीन।

२१ मसीह यिसू में हर एक सन्त को नमस्कार कहो;

जो भाई लोग मेरे संग हैं सो तुम्हें नमस्कार कहते हैं। २२ सारे सन्त लोग निज करके जो कैसर के घर के हैं सो तुम्हें नमस्कार कहते हैं। २३ हमारे प्रभु यिसू मसीह की कृपा तुम सभों पर होवे आमीन॥

पौलुस की पत्री

कोलोस्सियों को।

१ पर्ब्ब

पौलुस जो परमेश्वर की इच्छा से यिसू मसीह का प्रेरित है उस से और भाई तिमोथेउस से। कोलोस्से में जो सन्त और मसीह में बिश्वासी भाई लोग हैं उन को यह पत्री; हमारे पिता परमेश्वर से और प्रभु यिसू मसीह से कृपा और कुशल तुम्हों पर होवे।

३ जब से कि हम ने सुना कि तुम लोग मसीह यिसू पर बिश्वास लाये और सब सन्त लोगों को प्यार करते हो। ४ तब से हम तुम्हारे लिये नित प्रार्थना करके परमेश्वर और अपने प्रभु यिसू मसीह के पिता का धन्यवाद करते आये हैं। ५ उस आशा के कारण जो तुम्हारे लिये स्वर्ग में धरी है जिस का बर्णन तुम्हों ने आगे मंगल समाचार की सच्चाई के बचन में सुना है। ६ वह जैसा सारे जगत में वैसा तुम्हारे पास भी पहुंचा है और वह फल देता है और जिस दिन से तुम्हों ने

परमेश्वर की कृपा को सुना और सच मुच पहचाना तब से तुम्हों में भी फल लाया। ७ यह तुम्हों ने हमारे प्रिय संगी दास एपाफ्रस से भी जो तुम्हारे कारण मसीह का प्रभुभक्त सेवक है सीखा है। ८ उस ने तुम्हारा प्रेम भी जो आत्मा में है सो हमों पर प्रगट किया।

९ इस कारण हम भी जिस दिन से यह सुना है तुम्हारे लिये प्रार्थना करने से नहीं थमते हैं और बिन्ती करते हैं कि तुम लोग सारी बुद्धि और आत्मिक समझ में उस की इच्छा के ज्ञान से भर जाओ। १० जिसतें तुम लोग प्रभु को सब बातों में प्रसन्न करने को योग्य चाल चलो और हर एक अच्छे काम में फलवन्त होओ और परमेश्वर के ज्ञान में बढ़ते जाओ। ११ और उस के तेजोमय सामर्थ्य के समान सारी शक्ति के शक्तिमान हो जाओ जिसतें तुम आनन्द से हर प्रकार की धीरज और समाई कर सको। १२ और पिता का धन्यवाद करते रहो कि उस ने हमें सन्त लोगों के संग उजाले में अधिकार के भागी होने के योग्य किया। १३ उसी ने हमों को अंधकार के अधिकार में से छुड़ाया १४ और अपने प्रिय पुत्र के राज्य में जगह दिई। हम उस में होके उस के लोहू के द्वारा से छुटकारा अर्थात पापों का मोचन पाते हैं। १५ वह अनदेख परमेश्वर का स्वरूप है और सारी सृष्टि से पहिलौटा है। १६ क्योंकि उस से सारी वस्तें सिरजी गईं; जो वस्तें स्वर्ग और पृथिवी पर हैं देखी और अनदेखी क्या सिंहासन हों

क्या प्रभुता हों क्या आधिपत्य हों क्या अधिकार हों सारी वस्तें उस से और उस के लिये सिरजी गई हैं।
१७ वह सब से आगे है और उस से सारी वस्तें स्थिर रहती हैं।
१८ और वह देह का अर्थात कलीसिया का सिर है; वह आदि है और मृतकों में से पहिलौटा है जिसतें
१९ सब बातों में वह प्रधान ठहरे। क्योंकि उसे यह भाया
२० कि सारी संपूर्णता उस में बसे। और कि उस के लोहू के कारण से जो क्रूस पर बहा मिलाप कर के सारे वस्तुओं को क्या जो पृथिवी पर हैं क्या जो स्वर्ग पर हैं उन को उसी के द्वारा से अपने से मिला लेवे।
२१ और तुम्हों को जो आगे बाहरी और बुरे कर्मों के कारण मन से बैरी थे उस ने अपनी शारीरिक देह
२२ से मृत्यु के द्वारा अब मिला लिया। जिसतें वह तुम्हें अपनी दृष्टि में पवित्र और निर्दोष और कलंक हीन
२३ देखावे। पर इतना हो कि तुम लोग बिश्वास की नीव पर स्थिर रहो और दृढ़ रहो और मंगल समाचार की आशा से जिसे तुम्हों ने सुना है टल न जाओ; उस का प्रचार सारी सृष्टि के लिये जो आकाश के नीचे है
२४ किया गया और उस का मैं पौलुस सेवक बना हूं। अब अपने उन दुःखों में जो मैं तुम्हारे कारण खैंचता हूं मैं आनन्द करता हूं और मसीह के क्लेशों का जो रह गया सो उस की देह के अर्थात कलीसिया के लिये
२५ अपने शरीर में भरे देता हूं। मैं उस कलीसिया का

सेवक ज़ुआ हूं कि यह भण्डारीपन परमेश्वर की ओर से मुझे तुम्हारे लिये मिला कि मैं परमेश्वर के बचन का पूरा वर्णन करूं। अर्थात उस भेद को जो अगले समयों से और पीढ़ियों से गुप्त रहा था परन्तु अब उस के सन्तों पर प्रगट ज़ुआ है। उन्हों पर परमेश्वर ने प्रगट करने चाहा कि उस भेद की महिमा का धन अन्यदेशियों के लिये क्या है सो यह है कि मसीह तुम्हों में महिमा की आशा है। हम उसी की बात सुनाके हर एक मनुष्य को चिताते हैं और हर एक मनुष्य को सारी बुद्धि से शिक्षा देते हैं जिसतें हम हर एक मनुष्य को मसीह यिसू में सिद्ध कर लेवें। उसी के लिये मैं भी उस के गुण के समान जो मुझ में पराक्रम से काम करता है यत्न देके जी से परिश्रम करता हूं॥ २६ २७ २८ २९

२ पर्ब्ब

मैं चाहता हूं कि तुम लोग जानो कि तुम्हारे लिये और लाओदीकैया के लोगों के लिये और उन सभों के लिये कि जिन्हों ने मेरे शारीरिक स्वरूप को नहीं देखा है मैं क्या ही झंझट उठाता हूं। कि उन के मनों का संबोधन होवे और वे प्रेम से आपस में गठे रहें और वे पूरी समझ के सारे धन को प्राप्त करें जिसतें परमेश्वर अर्थात पिता के और मसीह के भेद को जानें। उस में बुद्धि और ज्ञान की सारी खान छिपी रही है। और मैं यह इसलिये कहता हूं न होवे कि कोई चिकनी चुपड़ी बातों से तुम्हें भरमावे। क्योंकि यद्यपि मैं देह से दूर हूं तौ भी आत्मा से तुम्हारे २ ३ ४ ५

पास हूं और तुम्हारी ठीक चाल को और मसीह में तुम्हारे बिश्वास की दृढ़ता को देखके आनन्द करता
६ हूं। सो जैसा तुम्हों ने मसीह यिसू प्रभु को ग्रहण किया
७ है वैसा ही उस में चलो। उस में जड़ बांधो और बनाये जाओ और जैसी तुम्हों ने शिक्षा पाई है वैसे तुम लोग बिश्वास में स्थिर रहो और उस में धन्यबाद करते ऊए बढ़ते जाओ।

८ सचेत रहो न होवे कि कोई जन ज्ञान सिद्धान्त और व्यर्थ धोखे से जो मसीह के समान नहीं परन्तु मनुष्यों के संप्रदाय के और जगत की मूल बातों के
९ समान हैं तुम्हें लूट लेवे। क्योंकि परमेश्वरत्व की सारी संपूर्णता उस में देह धारण करके रही है। और
१० उस में जो सारे आधिपत्य और अधिकार का सिर है
११ तुम लोग संपूर्ण हो। उस में तुम लोग भी बिन हाथ के खतना से खतना किये गये हो अर्थात मसीही खतना से सो शरीर के पापों की देह को उतार
१२ फेंकना है। कि तुम लोग उस के संग बपतिसमा के कारण गाड़े गये; और उस में परमेश्वर के सामर्थ्य पर बिश्वास लाने के द्वारा से कि जिस ने उस को मृतकों में से उठाया तुम लोग भी उस के संग जी
१३ उठे हो। और उस ने तुम्हें जो अपराधों के कारण और अपने शरीर के अखतना के कारण मृतक थे उस के संग जिलाया कि उस ने तुम्हारे सारे अपरा-
१४ धों को छिमा किया। और बिधानों का हस्तलेखन जो

हम से बिपरीत था सो हमारे विषय में मिटा डाला और उस को बीच में से उठाके क्रूस पर कील से ठोंक दिया। और आधिपत्यों को और अधिकारों को लूट- १५
के उस ने उन्हें खुले खुले दिखलावा करके इस में उन पर जैजैकार किया।

इस कारण खाने के और पीने के और परब के १६
और अमावस और बिश्राम दिन के विषय में कोई तुम्हें दोषी न ठहरावे। कि ये सब तो आनेहारी वस्तु- १७
ओं की परछाईं हैं परन्तु देह तो मसीह की है। कोई १८
जन दीनता करके और स्वर्गदूतों की आराधना की मनसा करके तुम्हों को तुम्हारे फल से निष्फल न करे कि ऐसा जन अपनी शारीरिक बुद्धि से अकारथ फूलके उन वस्तुओं में जिन्हें उस ने नहीं देखा है मन दौड़ाता है। और उस सिर को नहीं पकड़े रहता है कि जिस १९
से सारी देह बन्द बन्द और गांठ गांठ से प्रतिपाल पाके और आपस में जुटके परमेश्वर की बढ़ती से बढ़ती है।

सो जो तुम लोग मसीह के संग जगत की मूल बातों २०
की ओर मर गये हो तो तुम क्यों उन के समान जो जगत में जीते हैं रीति बिधि के आधीन हो। मत २१
छूना; मत चखना; मत हाथ लगाना। ये सारी बस्तें २२
काम में लाने से नष्ट हो जाती हैं और मनुष्यों की आ- ज्ञाओं और शिक्षाओं के समान होती हैं। ये बस्तें जो २३
मन की निकाली ऊई आराधना और दीनताई से और

देह को ताड़ना करने से ज्ञान की ऐसी दिखाई देती हैं सो शरीर को सन्तुष्ट करने को छोड़ और किसी काम की नहीं हैं॥

३ पर्ब्ब

१ सो जो तुम लोग मसीह के संग जी उठे हो तो ऊपर की वस्तुओं को खोजो जहां मसीह परमेश्वर की
२ दहिनी ओर बैठा है। जो वस्तु भूमि पर हैं उन पर नहीं परन्तु ऊपर की वस्तुओं पर चित्त लगाओ।
३ क्योंकि तुम लोग मर गये हो और तुम्हारा जीवन
४ मसीह के संग परमेश्वर में छिपा है। जब मसीह जो हमारा जीवन है प्रगट होगा तब उस के संग तुम लोग भी ऐश्वर्य्य में प्रगट हो जाओगे।

५ इस कारण अपनी इन्द्रियों को जो भूमि पर हैं अर्थात व्यभिचार को अपवित्रता को कामातुरता को बुरी लालसा को और लोभ को जो मूर्तपूजा है सो
६ मारा करो। कि उन्हीं के कारण से परमेश्वर का
७ क्रोध आज्ञा भंग के सन्तानों पर पड़ता है। और आगे जब तुम लोग उन में जीते थे तब तुम उन की रीति
८ पर भी चलते थे। पर अब तुम लोग उन सभों को अर्थात क्रोध और रिस और बुराई और निन्दा और
९ गंदी बातचीत को अपने मुंह से निकाल फेंको। एक दूसरे से झूठ न बोलो क्योंकि तुम्हों ने पुरानी मनुष्य-
१० ता को उस के कार्य्यों समेत उतार फेंका है। और नई मनुष्यता को जो ज्ञान में अपने सिरजनहार के
११ स्वरूप के समान नई बन रही है पहिना है। फिर

उस में न यूनानी है न यहूदी है न खतना है न अखतना है न मलेच्छ है न स्कूती है न दास है न निर्बन्ध है पर मसीह सब कुछ है और सब में है।

१२ सो परमेश्वर के चुने हुए और पवित्र और प्यारे लोग होकर तुम मन की मया और दया और दीनता कोमलता और धीरज को पहिन लेओ। १३ यदि कोई किसी से झगड़ा रखे तो एक दूसरे की सहे और एक दूसरे को छिमा करे; जैसा मसीह ने तुम्हों को छिमा किया है वैसा ही तुम लोग भी करो। १४ और प्रेम को जो सिद्धता का बन्धन है सो सब के ऊपर पहिन लेओ। १५ और परमेश्वर की शान्ति जिस के लिये तुम लोग एक देह होकर बुलाये गये हो सो तुम्हारे मनों में प्रभुता करे; और तुम लोग धन्य माना करो।

१६ मसीह का वचन तुम्हों में सारे ज्ञान के संग अधिकाई से रहे और तुम एक दूसरे को सिखाओ और उपदेश करो; और भजन और गीत और आत्मिक गान अपने मनों से धन्यवाद के संग प्रभु के लिये गाया करो। १७ और जो कुछ तुम लोग करते हो क्या बात हो क्या काम हो सो सब कुछ प्रभु यिसू के नाम से करो और उसी के द्वारा से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो।

१८ हे स्त्रियो तुम लोग जैसा प्रभु में उचित है वैसे अपने अपने पति के आधीन रहो। १९ हे पुरुषो तुम लोग

अपनी पत्नियों को प्यार करो और उन से कड़वे न होओ।

२० हे बालको तुम लोग अपने माता पिता की हर एक बात में आज्ञा मानते रहो क्योंकि प्रभु को यही

२१ भावता है। हे बच्चेवालो तुम लोग अपने बालकों को मत कुढ़ाओ न होवे कि वे ऊभ जायें।

२२ हे दासो जो जगत में तुम्हारे स्वामी हैं तुम लोग सब बातों में उन के आज्ञाकार रहो; मनुष्यों को रिझाने के लिये देखाने की सेवा टहल करके सो नहीं परन्तु मन की सीधाई से परमेश्वर से डरते हुए।

२३ और जो कुछ करो सो जैसा मनुष्यों के लिये नहीं परन्तु

२४ जैसा प्रभु के लिये जी से करो। क्योंकि तुम लोग जानते हो कि प्रभु से अधिकार का फल पाओगे क्योंकि तुम

२५ प्रभु मसीह की सेवा करते हो। पर जो बुरा करता है सो अपने किये के समान बुराई कमावेगा; और पक्षपात नहीं है॥

४ पर्ब्ब

हे स्वामियो तुम लोग अपने दासों से धर्म और समता का व्यवहार करो यह जानके कि तुम्हारा भी एक स्वामी स्वर्ग में है।

२ प्रार्थना करने में लौलीन रहो और धन्यवाद करते

३ हुए उस के लिये जागते रहो। और उस में हमारे लिये भी प्रार्थना करो कि परमेश्वर बोलने का द्वार हमारे लिये खोले जिसतें मैं मसीह के भेद को कि

जिस के लिये मैं बन्धुवा हूं बोल सकूं। कि जैसा मुझे बोलना चाहिये वैसा मैं उस को प्रगट करूं। ४

तुम लोग समय को लाभ जानके बाहरवालों के आगे बुद्धिमानी से चलो। तुम्हारी बात सर्वदा कृपा युक्त और सलोनी होय जिसतें जैसा चाहिये वैसा तुम लोग हर एक को उत्तर देने जानो। ५ ६

तिखिकुस जो प्यारा भाई और प्रभूभक्त सेवक और प्रभु में सहदास है सो मेरा सारा समाचार तुम्हें सुनावेगा। उस को मैं ने इस लिये तुम्हारे पास भेजा है कि वह तुम्हारी दशा देख लेवे और तुम्हारे मनों को ढाड़स बन्धावे। और ओनेसिमुस जो प्रभूभक्त और प्यारा भाई और तुम्हों में से है उस को उस के संग भेज दिया; वे तुम्हें यहां का सारा समाचार पहुंचायेंगे। अरिस्तर्खस मेरा संगी बन्धुवा और बरनबा का भांजा मरकुस भी (उस के विषय में तुम्हों ने आज्ञाएं पाईं यदि वह तुम्हारे पास आवे तो उस को ग्रहण करो)। और यिसू जो युस्तुस कहावता है; ये लोग जो खतनावालों में से हैं सो तुम्हें नमस्कार कहते हैं; केवल येही जो परमेश्वर के राज्य के लिये मेरे संगी कर्मकारी हैं सो मेरे लिये संबोधन ठहरे हैं। एपाफ्रस जो तुम्हों में से मसीह का दास है सो तुम्हों को नमस्कार कहता है; और वह तुम्हारे लिये प्रार्थना करने में नित लौ लगा रहा है कि तुम लोग परमेश्वर की इच्छा की हर एक बात में सिद्ध और पूरे होके ७ ८ ९ १० ११ १२

१३ स्थिर रहो। क्योंकि मैं उस का साची हूं कि वह तुम्हारे लिये और जो लाओदीकैया में हैं और जो हियरापोलिस में हैं उन्हों के लिये भी बज़त मनचला है।
१४ लूका प्यारा वैद्य और देमास तुम्हें नमस्कार कहते हैं।
१५ जो भाई लोग लाओदीकैया में हैं उन को और निम्फास को और जो कलीसिया उस के घर में है
१६ उस को भी नमस्कार कहो। और जब यह पत्री तुम्हों में पढ़ी जाय तो ऐसा करो कि लाओदीकैया की कलीसिया में वह भी पढ़ी जाय; और लाओदीकैया की
१७ पत्री तुम लोग भी पढ़ो। और अरखिप्पुस से कहो जो सेवकाई तू ने प्रभु में पाई है उस में तू चौकसाई
१८ कर जिसतें तू उसे सिद्ध करे। मुझ पौलुस के हाथ से नमस्कार; मेरे जंजीरों को स्मरण करो; कृपा तुम्हों पर होवे आमीन॥

पौलुस की पहिली पत्री

थस्सलोनियों को।

१ पर्ब्ब

पौलुस और सिलवानुस और तिमोदेउस की ओर से थस्सलोनियों की कलीसिया को जो पिता परमेश्वर में और प्रभु यिसू मसीह में है यह पत्री; हमारे पिता परमेश्वर से और प्रभु यिसू मसीह से कृपा और कुशल तुम्हों पर होवे।

२ हम तुम सभों के लिये परमेश्वर का धन्यवाद सर्व्वदा करते हैं और अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें स्मरण करते हैं। ३ और अपने पिता परमेश्वर के आगे तुम्हारे बिश्वास के कार्य्य को और प्रेम के परिश्रम को और आशा की धीरता को जो हमारे प्रभु यिसू मसीह के लिये है नित्य स्मरण करते हैं। ४ कि हे भाइयो परमेश्वर के प्यारो; हम जानते हैं कि तुम लोग चुने हुए हो। ५ क्योंकि हमारा मंगल समाचार केवल बचन से नहों परन्तु सामर्थ्य से और पवित्र आत्मा से

और पूरे निश्चय से तुम्हों में ठहरा कि तुम लोग जान-
६ ते हो कि हम तुम्हारे लिये तुम्हों में कैसे थे। और
तुम लोग हमारे और प्रभु के पीछे हो लिये क्यों-
कि तुम्हों ने बड़ा क्लेश उठाके पवित्र आत्मा के आनन्द
७ से बचन को ग्रहण किया। ऐसा कि तुम लोग मकदू-
निया और अखाया के सारे बिश्वासियों के लिये दृष्टान्त
८ बने हो। क्योंकि तुम्हों से न केवल प्रभु के बचन की
वार्ता मकदूनिया में और अखाया में निकली परन्तु
हर एक जगह में तुम्हारा बिश्वास जो परमेश्वर पर
है सो यहां लों प्रसिद्ध ऊआ कि हमारे कहने का कुछ
९ प्रयोजन नहीं है। क्योंकि वे आप हमारी चर्चा करते
हैं कि हम ने तुम्हों में कैसा प्रवेश पाया और तुम लोग
क्योंकर मूर्तों से परमेश्वर की ओर फिरे कि जीवते
१० और सच्चे परमेश्वर की सेवा करो। और उस के पुत्र
की कि जिसे उस ने मृतकों में से जिलाया बाट जोहो
कि वह स्वर्ग पर से आवे अर्थात यिसू जो हमों को
आनेवाले क्रोध से छुड़ाता है॥

२ पर्ब्ब

हे भाइयो तुम लोग तो आप जानते हो कि हमा-
२ रा प्रवेश तुम्हों में अकारथ न ठहरा। परन्तु यद्यपि
हम ने आगे फिलिपी में दुःख और अपमान उठाया
था जैसा कि तुम लोग जानते हो तौभी अपने पर-
मेश्वर में निर्भय होके हम परमेश्वर का मंगल समा-
३ चार बड़े झंझट के संग तुम्हों से कहते थे। क्यों-
कि हमारा उपदेश करना न भरमाने को और न

अपवित्रता और न छल से हुआ। परन्तु जैसा परमेश्वर ने हमें मंगल समाचार सौंपने के योग्य जाना वैसा ही हम बोलते हैं और मनुष्यों को नहीं परन्तु परमेश्वर घट घट के अन्तर्जामी को रिझाते हैं। ४
क्योंकि जैसा तुम लोग जानते हो हम फुसलाने की बातें कधी न बोलते थे न छिपे हुए लालच से कुछ करते थे; परमेश्वर जानता है। ५
और हम न मनुष्यों से न तुम्हों से न दूसरों से बड़ाई चाहते थे; फिर मसीह के प्रेरित होके हम तुम्हों पर बोझ डाल सकते थे। ६
पर जैसे दाई अपने बच्चों को पालती है वैसे हम तुम्हों में कोमल थे। ७
सो तुम्हें जी से चाहके हम न केवल परमेश्वर के मंगल समाचार को परन्तु अपने प्राणों को भी तुम्हें देने को तैयार थे किस लिये कि तुम लोग हमारे प्यारे थे। ८
क्योंकि हे भाइयो तुम लोग हमारे परिश्रम और कष्ट को चेत करते हो कि हम तुम्हों में से किसी पर बोझ न होने के लिये रात दिन धंधा करके तुम्हों में परमेश्वर के मंगल समाचार का प्रचार करते थे। ९
तुम साक्षी हो और परमेश्वर भी साक्षी है कि हम क्या ही पवित्र और खरे और निर्दोष होके तुम बिश्वासियों में निर्वाह करते थे। १०
और तुम लोग जानते हो कि जैसा पिता अपने बालकों से करता है वैसे हम तुम्हों में के हर एक से बिन्ती करते और तुम्हारी ढाढ़स बन्धाते और उपदेश करते थे। ११
कि परमेश्वर जिस ने तुम्हें अपने राज्य को और १२

ऐश्वर्य्य को बुलाया है उस के योग्य की चाल तुम लोग चलो।

१३ इस कारण हम निरन्तर परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं कि जब तुम्हों ने परमेश्वर के बचन को जिसे हम से सुना है ग्रहण किया तब तुम्हों ने उसे मनुष्यों के बचन के समान नहीं परन्तु जैसा वह सच मुच है अर्थात परमेश्वर के बचन के ऐसा ग्रहण किया और वह तुम बिश्वासियों में गुण करता है।

१४ क्योंकि हे भाइयो परमेश्वर की जो कलीसियाएं यहूदाह में मसीह यिसू की हैं उन्हों की चाल पर तुम चले क्योंकि जैसा उन्हों ने यहूदियों से वैसा तुम्हों ने भी अपने स्वदेशियों से दुःख पाये।

१५ कि उन्हों ने प्रभु यिसू को और अपने निज भविष्यतवक्ताओं को घात किया और हमों को सताया है और वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं करते हैं और सब मनुष्यों के बिरुद्ध हैं।

१६ और अपने पापों को सर्वथा संपूर्णता को पहुंचाने के लिये वे लोग हमों को बरजा करते हैं कि हम अन्यदेशियों को वह बचन कि जिस से उन का निस्तार हो नहीं सुनावें; परन्तु क्रोध उन पर अत्यन्त लों पहुंचा है।

१७ पर हे भाइयो जो हम तुम्हों से थोड़े समय लों कुछ मन से नहीं परन्तु तन से अलग हुए सो हम ने बड़ी लालसा से तुम्हारे मुंह को देखने को बहुत ही यत्न किया।

१८ इस कारण हम ने अर्थात मैं पौलुस ने

एक बार कि दो बार तुम्हारे पास आने चाहा पर शैतान ने हमें रोका। क्योंकि हमारी आशा अथवा आनन्द अथवा हमारे आनन्द का मुकुट क्या है; क्या तुम लोग भी हमारे प्रभु यिसू मसीह के संमुख उस के आने पर वह न ठहरोगे। तुम्हीं तो हमारी बड़ाई और आनन्द हो॥ १९ २०

३ पर्ब्ब

इस लिये जब हम आगे सह न सके तब हम मान गये कि अथेने में अकेले रह जायें। और तिमोटेउस जो हमारा भाई और परमेश्वर का सेवक और मसीह के मंगल समाचार में हमारा संगी कर्मकारी है उस को हम ने भेजा कि वह तुम्हों को तुम्हारे बिश्वास में दृढ़ करे और संबोधन देवे। जिसतें कोई उन क्लेशों के कारण से न डगमगावे क्योंकि तुम लोग आप जानते हो कि हम लोग इन्हीं के लिये ठहराये गये हैं। क्योंकि जब हम तुम्हारे पास थे तब हम ने तुम्हें आगे से कहा कि क्लेश उठाना होगा; सो वही हुआ और तुम लोग जानते हो। इस लिये जब मैं आगे सह न सका तब तुम्हारा बिश्वास बूझने को भेजा न होवे कि परीक्षक ने किसी रीति से तुम्हारी परीक्षा किई हो और हमारा परिश्रम अकारथ ठहरे। २ ३ ४ ५

पर अब तिमोटेउस जब तुम्हारे कने से हमारे पास फिर आया और तुम्हारे बिश्वास और प्रेम का सुसमाचार लाया और कि तुम लोग हमारा शुभ ६

स्मरण सदा करते हो और जैसा हम तुम्हों को वैसा
७ भी तुम हम लोगों को देखने चाहते हो। तब हे
भाइयो हम ने अपने सारे क्लेश और संकेत में तुम्हारे
८ बिश्वास के कारण से तुम्हों से संबोधन पाया। क्योंकि
अब जो तुम लोग प्रभु में स्थिर रहो तो हम जीते हैं।
९ क्योंकि उस सारे आनन्द के लिये कि जिस से हम
तुम्हारे कारण अपने परमेश्वर के आगे निहाल होते
हैं हम उस के बदले तुम्हारे लिये परमेश्वर का क्यों-
१० कर धन्यवाद कर सकें। हम रात दिन बड़त ही प्रार्थ-
ना करते रहते हैं कि तुम्हारा मुंह देखें और तुम्हारे
बिश्वास की घटतियों को पूरी करें।

११ और परमेश्वर हमारा पिता आप और हमारा
प्रभु यिसू मसीह हमारी यात्रा तुम तक सिद्ध करे।
१२ और प्रभु ऐसा करे कि जैसा हम को तुम्हों से प्रेम
है वैसा ही तुम्हारा प्रेम भी क्या आपस में और क्या
१३ हर एक से बढ़ जावे और बड़त हो जावे। जिस-
तें जब हमारा प्रभु यिसू मसीह अपने सब सन्तों के
संग दिखलाई देगा तब वह तुम्हारे मन हमारे पि-
ता परमेश्वर के आगे पवित्रता में निर्दोष और दृढ़
ठहरावे॥

४ पर्व्व

निदान हे भाइयो हम प्रभु यिसू के कारण तुम्हों
से बिन्ती करते हैं और उपदेश देते हैं कि जैसा तुम्हों
ने हम से सीखा कि कैसी चाल चलना और परमेश्वर
को प्रसन्न करना चाहिये तुम लोग वैसा उस में

अधिक बढ़ते जाओ। क्योंकि तुम लोग जानते हो कि हम ने तुम्हों को प्रभु यिसू की ओर से क्या क्या आज्ञाएं दिईं। २ क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है कि तुम लोग पवित्र होओ और व्यभिचार से बचे रहो। ३ कि हर एक तुम्हों में से अपने ही पात्र को पवित्रता से और आदर से रखना जाने। ४ और कामाभिलाष में अन्य-देशियों के समान नहीं कि उन को परमेश्वर का ज्ञान नहीं है। ५ और कोई किसी बात में अपने भाई पर गौं न चलावे और न ठगाई करे क्योंकि प्रभु ऐसे सब कामों का पलटा लेगा; यों ही हम ने आगे भी तुम्हों से कहा था और साक्षी दिई थी। ६ क्योंकि परमेश्वर ने हमों को अपवित्रता के लिये नहीं परन्तु पवित्रता के लिये बुलाया है। ७ इस कारण जो कोई अवज्ञा करता है सो मनुष्य की नहीं परन्तु परमेश्वर की अवज्ञा करता है; उस ने अपना पवित्र आत्मा भी हमें दिया है। ८

परन्तु भाइयों की संप्रीत के विषय में तुम्हें कुछ लिखा न चाहिये क्योंकि एक दूसरे से संप्रीत करने को तुम लोग तो आप परमेश्वर के सिखाये हुए हो। ९ और जो भाई लोग सारे मकदूनिया में हैं उन सभों से तुम लोग तो ऐसा भी करते हो; १० परन्तु हे भाइयो हम तुम्हों से बिन्ती करते हैं कि तुम लोग अधिक बढ़ती करो। और जैसा हम ने तुम्हें आज्ञा दिई वैसे ११ तुम लोग शान्त रहने के और अपना अपना काम

काज करने के और अपने ही हाथों से धंधा करने
१२ के अभिलाषी हो। जिसतें तुम लोग बाहरवालों के
आगे ठीक चाल चलो और किसी बस्तु का प्रयोजन
न रखो।

१३ परन्तु हे भाइयो मैं नहीं चाहता हूं कि जो लोग सो
गये तुम उन की गति से अज्ञान रहो जिसतें तुम लोग
औरों के समान जो आशा रहित हैं शोक न करो।
१४ क्योंकि हम ने जो बिश्वास किया कि यिसू मूआ और जी
उठा तो यह भी बिश्वास किया चाहिये कि परमेश्वर
उन को जो सो गये हैं सो यिसू के द्वारा से उस के संग
१५ ले आवेगा। कि हम तुम्हें प्रभु के बचन से यह कहते
हैं कि हम जो प्रभु के आने के समय में जीते और बचे
रहेंगे सो उन से जो सो गये हैं आगे न बढ़ जायेंगे।
१६ क्योंकि प्रभु आप जैजैकार से महादूत के शब्द के संग
परमेश्वर का नरसिंगा फूंकते ज़ए स्वर्ग पर से उतरे-
गा और जो लोग मसीह में होके मूए हैं सो पहिले
१७ उठेंगे। तिस पर हमों में से जो जीते छूटेंगे सो उन्हों
समेत मेघों में अचानक उठाये जायेंगे कि आकाश में
प्रभु से भेंट करें; सो हम प्रभु के संग सर्बदा रहेंगे।
१८ इस लिये तुम लोग इन्हीं बातों से एक दूसरे को संबो-
धन देओ॥

५ पर्ब्ब

परन्तु हे भाइयो उन समयों और कालों के बिषय
२ में तुम्हें कुछ लिखा न चाहिये। क्योंकि तुम लोग आप
निश्चय जानते हो कि जैसा चोर रात को आता है वैसा

प्रभु का दिन आवेगा। क्योंकि जब लोग कहेंगे कि कुशल है और कुछ खटका नहीं है तब जैसे गर्भवती स्त्री पर पीड़ आ पड़ती है वैसे अचानक उन्हों पर नाश आ पड़ेगा और वे न बचेंगे। ३

परन्तु हे भाइयो तुम लोग अंधकार में नहीं हो कि चोर के ऐसा वह दिन तुम्हों पर आ पड़े। तुम सब लोग उजाले के सन्तान हो और दिन के सन्तान हो; हम लोग न रात के हैं और न अंधकार के हैं। इस लिये हम लोग औरों के समान न सोवें परन्तु जागते रहें और चौकस रहें। क्योंकि जो लोग सोते हैं सो रात ही को सोते हैं और जो मतवाले होते हैं सो रात ही को मतवाले होते हैं। परन्तु हम लोग जो दिन के हैं सो बिश्वास और प्रेम की झिलम और मुक्ति की आशा का टोप पहिनके चौकस रहें। क्योंकि परमेश्वर ने हमों को क्रोध के लिये नहीं परन्तु हमारे प्रभु यिसू मसीह के द्वारा से निस्तार को प्राप्त करने के लिये ठहराया है। कि वह हमारे लिये मूआ जिसतें हम लोग क्या जागते क्या सोते एकट्ठे होके उस के संग जीयें। इस लिये तुम लोग एक दूसरे को संबोधन देओ और एक दूसरे की बढ़ती करो; और ऐसा तुम लोग करते भी हो। ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११

और हे भाइयो हम तुम्हों से बिन्ती करते हैं कि जो तुम्हों में परिश्रम करते हैं और प्रभु में तुम्हों पर अधिकर्म करते हैं और तुम को उपदेश देते हैं तुम १२

१३ उन को माना। और उन के काम के लिये तुम लोग प्रेम से उन का बड़ा आदर करो; और आपस में मिले
१४ रहो। और हे भाइयो हम तुम्हों से बिन्ती करते हैं कि तुम मगरे लोगों को उपदेश देओ; बेमन लोगों की ढाड़स बन्धाओ; दुर्बलों को संभालो; और सभों से धीरज धरो।

१५ देखो कि कोई जन किसी से बुराई के पलटे बुराई न करे परन्तु जो भला है सो तुम लोग एक दूसरे से और सभों से हर समय किया करो।

१६ सदा आनन्द करते रहो। १७ नित प्रार्थना करो।
१८ हर एक बात में धन्य माना करो क्योंकि मसीह यिसू में परमेश्वर की यही इच्छा तुम्हों पर है।

१९ आत्मा को मत बुझाओ। २० भविष्यतवाणियों तुच्छ
२१ मत जानो। सब बातों को परखो; अच्छे को रखो।
२२ जो कुछ बुराई सी देखाई देता है उस से परे रहो।

२३ और वह जो कुशल का परमेश्वर है सो आप ही तुम्हों को संपूर्ण करके पवित्र करे; और तुम्हारा सब कुछ अर्थात तुम्हारा आत्मा और प्राण और देह हमारे प्रभु यिसू मसीह के आने तक निर्दोष
२४ बना रहे। जिस ने तुम्हें बुलाया है सो सच्चा है; वह करेगा भी।

२५ हे भाइयो हमारे लिये प्रार्थना करो। २६ सारे भाइ-
२७ यों को पवित्र चूमा लेके नमस्कार कहो। मैं तुम्हें

प्रभु की किरिया देता हूं कि यह पत्री सारे पवित्र भाइयों में पढ़वाओ।

२८ हमारे प्रभु यिसू मसीह की कृपा तुम्हों पर होवे आमीन॥

पौलुस की दूसरी पत्री

थस्सलोनियों को।

१ पर्ब्ब

पौलुस और सिलवानुस और तिमोदेउस से थस्सलोनियों की कलीसिया को जो हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यिसू मसीह में है यह पत्री। २ हमारे पिता परमेश्वर से और प्रभु यिसू मसीह से कृपा और कुशल तुम्हों पर होवे।

३ हे भाइयो परमेश्वर का जैसा योग्य है वैसा सर्वदा धन्यवाद करना हमें उचित है इस लिये कि तुम्हारा बिश्वास बहुत ही बढ़ता जाता है और तुम सभों में हर एक का प्रेम जो दूसरों से है सो बढ़ता जाता है। ४ यहां लों कि हम आप परमेश्वर की कलीसियाओं में तुम्हारी इस बात की बड़ाई करते हैं कि सारे सताये जाने में और सारे क्लेशों में जो तुम लोग उठाते हो तुम्हारी धीरता और बिश्वास प्रगट होता है। ५ परमेश्वर के खरे न्याय का यह एक चीन्ह है जिसतें तुम

लोग परमेश्वर के राज्य के योग्य जिस के लिये तुम दुःख भी पाते हो गिने जाओ। ६ क्योंकि परमेश्वर के आगे यह धर्म की बात है कि जो लोग तुम को क्लेश देते हैं उन पर वह क्लेश का पलटा देगा। ७ और तुम्हें जो क्लेश उठाते हो जब प्रभु यिसू अपने पराक्रमी दूतों के संग स्वर्ग से प्रकाश होगा तब तुम्हें हमारे संग चैन मिलेगा। ८ कि जो परमेश्वर का ज्ञान नहीं रखते हैं और हमारे प्रभु यिसू मसीह के मंगल समाचार को नहीं मानते हैं उन से वह धधकती आग में पलटा लेगा। ९ वे प्रभु के मुख से और उस के सामर्थ्य के तेज से अनन्त विनाश का दण्ड पावेंगे। १० यह उस दिन में होगा जब वह आवेगा कि अपने सन्तों में तेजोमय होवे और अपने सब बिश्वासियों में आश्चर्य्यमय ठहरे; क्योंकि तुम लोग हमारी साक्षी पर बिश्वास लाये हो।

११ सो हम तुम्हारे लिये सदा प्रार्थना करते हैं कि हमारा परमेश्वर तुम्हें इस बुलाहट के योग्य जाने और भलाई की सारी प्रसन्नता को और बिश्वास के काम को सामर्थ्य से पूरा करे। १२ कि हमारे परमेश्वर और प्रभु यिसू मसीह की कृपा के समान हमारे प्रभु यिसू मसीह का नाम तुम्हों में ऐश्वर्य्यमान हो और तुम लोग उस में ऐश्वर्य्यमान हो॥

२ पर्ब्ब

अब हे भाइयो हमारे प्रभु यिसू मसीह के आने के और हमारे उस के पास एकट्ठे होने के विषय में

२ हम तुम्हों से बिन्ती करते हैं। कि तुम लोग प्रभु का दिन जैसा पहुंचा हुआ समझके जल्द अपने मन की ढाड़स मत खोओ और मत घबराओ न तो आत्मा से न बचन से न पत्री से यह सोचके कि वह हमारी ओर
३ से हो। कोई तुम्हें किसी रीति से न भरमावे क्योंकि उस के आने से पहिले वह धर्मत्याग आवेगा और वह पाप का जन अर्थात वह नाश का पुत्र प्रगट हो-
४ गा। जो कुछ कि परमेश्वर अथवा पूज्य कहलाता है उस सब का वह बिरोध करता और आप को उन से बड़ा जानता है यहां लों कि वह परमेश्वर के मन्दिर में परमेश्वर बन बैठेगा और अपने को यों दिखला-वेगा कि मैं ही परमेश्वर हूं।

५ क्या तुम्हें सुरत नहीं है कि तुम्हारे संग होते हुए
६ मैं ने तुम्हों से ये बातें कहीं। और जो अब रोकता है सो तुम लोग जानते हो जिसतें वह अपने ही समय
७ में प्रगट होवे। क्योंकि दुष्टता का भेद तो अब भी व्यापता है; केवल इतना चाहिये कि जो अब लों
८ रोकनेहारा है सो बीच से दूर किया जाय। और तब वह दुष्ट जन प्रगट होगा; उसे प्रभु अपने मुंह के सांस से चय करेगा और अपने आने के प्रकाश से नाश
९ करेगा। उस का आना शैतान के किये के समान सारे सामर्थ्य से और झूठे चिन्हों और अचंभों से होगा।
१० और नाश होनेहारों में सब प्रकार के अधर्म के छल के संग होगा क्योंकि सच्चाई का प्रेम कि जिस

से वे मुक्ति पाते उसे उन्हों ने ग्रहण नहीं किया। और | ११
इसी कारण से परमेश्वर उन के पास काम करनेवाला धोखा भेजेगा यहां लों कि वे झूठ को सच जानेंगे।
जिसतें सब जो सच्चाई पर बिश्वास न लाये परन्तु अधर्मता से प्रसन्न थे सो दण्ड पावें। | १२

परन्तु हे भाइयो प्रभु के प्यारो; तुम्हारे लिये सर्वदा | १३
परमेश्वर का धन्य मान्ना हमें उचित है क्योंकि परमेश्वर ने आदि से लेके आत्मा की पवित्रता से और सच्चाई पर विश्वास लाने से तुम्हें निस्तार के लिये चुना है। उस के लिये उस ने हमारे मंगल समाचार के | १४
द्वारा से तुम्हें बुलाया है कि तुम लोग हमारे प्रभु यिसू मसीह की महिमा को प्राप्त करो।

सो इस कारण हे भाइयो स्थिर रहो और जो बातें | १५
तुम्हें सौंपी गईं जो तुम्हों ने वचन से अथवा हमारी पत्री से सीखीं थीं सो थामे रहो। अब हमारा प्रभु यिसू | १६
मसीह आप और हमारा पिता परमेश्वर जिस ने हमें प्यार किया है और कृपा करके हमें सदाकाल का संबोधन और अच्छी आशा दिई है। वह तुम्हारे | १७
मनों को संबोधन देवे और तुम्हों को हर एक अच्छी बात और काम में दृढ़ करे॥

३ पर्ब्ब

निदान हे भाइयो हमारे लिये प्रार्थना करो कि परमेश्वर का वचन फैल जावे और जैसा तुम्हों में है वैसा तेजोमय ठहरे। और यह प्रार्थना करो कि हम | २
अबिचारी और दुष्ट मनुष्यों से छुटकारा पावें क्योंकि

३ सभों में बिश्वास नहीं है। परन्तु प्रभु बिश्वस्त है; वह तुम्हों को दृढ़ करेगा और दुष्ट से बचायेगा। ४ और तुम्हारे विषय में प्रभु पर हमारा भरोसा है कि जो कुछ हम तुम्हें आज्ञा देते हैं तुम लोग उस को ५ पालन करते हो और करोगे भी। और प्रभु तुम्हारे मनों को परमेश्वर के प्रेम की ओर की और मसीह के धीरज की ओर की अगवाई करे।

६ परन्तु हे भाइयो हम अपने प्रभु यिसू मसीह के नाम से तुम्हें आज्ञा देते हैं कि हर एक भाई जो उस पाई हुई शिक्षा पर नहीं परन्तु अनरीति से चलता है ७ तुम लोग उस से परे रहो। क्योंकि तुम लोग आप जानते हो कि हमारी चाल पर कैसे चला चाहिये क्योंकि हम तो तुम्हारे साथ होके अनरीति से नहीं ८ चलते थे। और हम किसी की रोटी सेंत न खाते थे परन्तु परिश्रम और यत्न कर के रात दिन काम करते थे न होवे कि हम तुम्हों में से किसी पर भार होवें। ९ सो यह इस लिये नहीं कि हम को अधिकार न था परन्तु इस लिये कि हम आप को तुम्हारे लिये दृष्टान्त ठहरावें जिसतें तुम लोग हमारी चाल पर चलो। १० क्योंकि जब हम तुम्हारे संग भी थे तब हम ने तुम्हें यह आज्ञा दिई थी कि जो कोई काम न करे सो खाने ११ को न पावे। कि हम सुनते हैं कि तुम्हों में से कोई कोई अनरीति से चलते और कुछ काम नहीं करते १२ हैं परन्तु औरों के काम में हाथ डालते हैं। हम अप-

ने प्रभु यिसू मसीह से ऐसें को आज्ञा देते हैं चिताते हैं कि तुम लोग चुपचाप काम कर के अपनी ही रोटी खाओ। और हे भाइयो तुम लोग भले काम करने में १३ हार न जाओ। पर यदि कोई जन हमारी बात को जो १४ इस पत्री में है न माने तो उसे चीन्ह रखो और उस की संगति मत करो जिसतें वह लज्जित होवे। तिस पर १५ उस को बैरी सा मत समझो परन्तु उस को जैसे भाई को चिता दो। अब शान्ति का प्रभु तुम्हें को हर १६ प्रकार से सर्वदा शान्ति देवे; प्रभु तुम सभों के संग रहे।

मेरे ही हाथ के लिखे से मुझ पौलुस का नमस्कार; १७ यह हर एक पत्री में चिन्ह है; ऐसा मैं लिखता हूं। हमारे प्रभु यिसू मसीह की कृपा तुम सभों पर होवे १८ आमीन॥

पौलुस की पहिली पत्री

तिमोदेउस को।

१ पर्ब्ब

पौलुस जो हमारे मुक्तिदाता परमेश्वर और हमारे आश्रय प्रभु यिसू मसीह की आज्ञा से यिसू मसीह
२ का प्रेरित है उस की ओर से। तिमोदेउस को जो विश्वास में मेरा सच्चा पुत्र है उस को यह पत्री; कृपा दया और कुशल हमारे पिता परमेश्वर और हमारे प्रभु यिसू मसीह से तुझ पर होवे।

३ मैं ने मकदूनिया को जाते हुए तुझ से बिन्ती किई थी कि एफसुस में ठहरियो जिसतें तू कितनों को चितावनी करे कि और भांति की शिक्षा न देवें।
४ और कहानियों और बे ठिकाने की वंशावलियों पर चित्त न लगावें कि वे बिबाद का विषय होती हैं और ईश्वरीय भक्ति को जो विश्वास में है सो नहीं बढ़ाती हैं।

५ और आज्ञा का अभिप्राय यह है कि पवित्र मन

से और अच्छे धर्मबोध से और निष्कपट बिश्वास से प्रेम करना। उस से कोई कोई हटके अनर्थ बकवाद ६ की ओर फिरे हैं। वे व्यवस्था के गुरु होने चाहते ७ हैं पर नहीं बूझते हैं कि क्या क्या कहते और किन किन बातों को प्रमाण करते हैं। फिर हम तो ८ जानते हैं कि व्यवस्था अच्छी है परन्तु चाहिये कि लोग उसे व्यवस्थित रीति पर काम में लावें। और ९ यह जानें कि व्यवस्था जो है सो धर्मी जन के लिये नहीं है परन्तु जो दुष्ट लोग और आज्ञा भंजक और धर्महीन और पापी और कुकर्मी और पाखण्डी और पितृघातक और मातृघातक और हत्यारे। और १० व्यभिचारी और लौंड़ेबाज और नरचोर और झूठे और झूठी किरिया खानेवाले हैं और जो उन से अधिक और कोई वस्तु खरी शिक्षा के बिरुद्ध हो उन के लिये वह है। उस सच्चिदानन्द परमेश्वर के ते- ११ जोमय मंगल समाचार के समान जो मुझे सौंपा गया है।

और मैं अपने प्रभु मसीह यिसू का जिस ने मुझे १२ सामर्थ्य दिया है धन्य मानता हूं इस लिये कि उस ने मुझे बिश्वस्त जाना और सेवकाई में मुझे रखा। मैं तो आगे परमेश्वर का निन्दा करनेहारा और १३ सतानेहारा और अन्धेर करनेहारा था परन्तु मुझ पर दया ऊई क्योंकि मैं ने जब बिश्वास न लाया था तब अज्ञानता में किया जो किया। और हमारे प्रभु १४

की कृपा बिश्वास और प्रेम समेत जो मसीह यिसू में
१५ है सो बहुत ही उभरी। यह बात प्रमाण है और
सर्व्वथा ग्रहण करने के योग्य है कि मसीह यिसू
पापियों के बचाने को जगत में आया और उन में
१६ बड़ा पापी मैं हूं। परन्तु मुझ पर इस लिये दया हुई
कि मुझ बड़े पापी पर यिसू मसीह अपने सारे धीरज
को दिखावे जिसतें उन के लिये जो आगे उस पर
अनन्त जीवन के लिये बिश्वास लावेंगे दृष्टान्त बनूं।
१७ अब युगानुयुग का राजा जो अविनाशी और अलख
है जो अकेला बुद्धिमान परमेश्वर है उस का आदर
और ऐश्वर्य्य सदाकाल हो रहे आमीन।

१८ हे पुत्र तिमोथेउस उन भविष्यतवाणियों के समान
जो आगे तेरे विषय में किई गईं मैं तुझे यह आज्ञा
१९ देता हूं कि उन के लिये तू अच्छा योधन कर। और
बिश्वास को और अच्छे धर्म्मबोध को धरे रह कि
२० कितनों ने उसे छोड़के बिश्वास की नाव तोड़ी। उन
में से हिमेनैयुस और सिकन्दर हैं; उन्हें मैं ने शैतान
को सोंपा जिसतें वे ताड़ना पाके निन्दा न करें॥

२ पर्व्व

अब मैं उपदेश करता हूं कि सब से पहिले बिन्तियां
और प्रार्थनाएं और परार्थ बिन्तियां और धन्यवाद सब
२ लोगों के लिये किये जायें। राजाओं के लिये और
मर्य्यादवालों के लिये जिसतें हम लोग भलाई और
सच्चाई करके चैन और कुशल से जीवन निर्बाह करें।
३ क्योंकि हमारे निस्तारक परमेश्वर के आगे यही

भला और भाया है। वह चाहता है कि सारे मनुष्य बचाये जावें और सत्य के ज्ञान लों पहुंचें। क्योंकि परमेश्वर एक है और परमेश्वर के और मनुष्यों के बीच में एक मनुष्य बिचवई है सो मसीह यिसू है। उस ने अपने को सभों की छुड़ौती के लिये दिया कि समय पर उस की साक्षी दिई जाय। उस के लिये मैं प्रचार करनेहार और प्रेरित ठहराया गया; मैं मसीह में सच बोलता हूं झूठ नहीं कहता; मैं अन्यदेशियों को बिश्वास और सच्चाई का सिखानेवाला हूं।

सो मैं यह चाहता हूं कि पुरुष हर जगह में क्रोध रहित और बिवाद रहित पवित्र हाथों को उठाके प्रार्थना करें। इसी रीति से यह कि स्त्रियां भी संकोच और संयम करके योग्य बस्त्र से अपने को संवारें; न बाल गूथने से न सोने से न मोतियों से न बहुमूल्य सिंगार से। परन्तु जैसा स्त्रियों को जो परमेश्वर की भक्ताई की मान लेनेहारियां हैं योग्य है वैसा ही अच्छे कामों से आप को संवारें।

स्त्री लोग सारी आधीनता से चुपचाप होके सीखें। परन्तु सिखलाने को और पुरुष पर प्रभुता करने को मैं स्त्री को छुट्टी नहीं देता हूं परन्तु वह चुपचाप रहे। क्योंकि आदम पहिले बनाया गया पीछे हव्वा। और आदम ने छल न खाया परन्तु स्त्री छल खाके पाप में फंसी। पर वह बच्चे जनके बचाई जायगी यदि इतना

४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५

हो कि वे लोग बिश्वास में और प्रेम में और पवित्रता में संयम के संग स्थिर रहें॥

३ पर्ब्ब

यह बात निश्चय है कि यदि कोई जन अध्यक्षी का अभिलाषी हो तो वह अच्छे कार्य्य को चाहता है। २ सो अध्यक्ष को चाहिये कि वह निर्दोष हो और एक पत्नी का पति और चौकस और सचेत और भलामानस ३ और अतिथिपालक और सिखलाने योग्य होवे। वह न मद्यप होवे न मार पीट करनेहार न अयोग्य प्राप्त का लालची हो परन्तु वह मध्यम चाल का हो वह ४ बखेड़िया और लोभी न हो। वह अपने घर की प्रधानता अच्छी रीति से कर जाने और सारी गंभीरता ५ से अपने बालकों को बश में रखे। कि यदि कोई अपने ही घर की प्रधानता करने न जाने तो वह परमे- ६ श्वर की कलीसिया की रक्षा क्योंकर करेगा। और वह नया शिष्य न होवे कि कहीं वह गर्व से फूलके ७ शैतान के दण्ड में न पड़े। फिर यह भी उचित है कि बाहरवालों में उस का अच्छा नाम होवे न हो कि वह निन्दा में और शैतान के फन्दे में पड़े।

८ वैसा ही सेवकों को चाहिये कि मान्य होवें और दोजीभी नहीं; न वे मद्यप हों न अयोग्य प्राप्त के ९ लालची हों। वे बिश्वास के भेद को खरे धर्म- १० बोध से धरे रहें। और ऐसे भी पहिले परखे जावें; ११ फिर यदि वे निर्दोष निकलें तो सेवकाई करें। वैसा ही उन की स्त्रियां भी मान्य होवें और निन्दक न होवें;

वे सज्ञान और सारी बातों में बिश्वस्त होवें। सेवक १२
एक एक पत्नी के पति होवें और अपने बालकों की
और अपने घरों की अच्छी रीति से प्रधानता करें।
क्योंकि जिन्हों ने अच्छी रीति से सेवकाई किई सो १३
अपने लिये अच्छे पद को और बिश्वास में जो मसीह
यिसू पर है बड़ी ढाड़स को प्राप्त करते हैं।

मैं इस आशा पर कि जल्द तुझ पास आऊं ये बातें १४
लिखता हूं। परन्तु यदि बिलम्ब हो जाय तो तू इन १५
बातों से जान रखे कि परमेश्वर के घर में जो जीवते
परमेश्वर की कलीसिया और सच्चाई का खंभा और
नेव है उस में क्योंकर निर्बाह किया चाहिये। और १६
निःसन्देह परमेश्वर की भलाई का बड़ा भेद है ; पर-
मेश्वर शरीर में प्रगट हुआ ; आत्मा से सत्य ठहराया
गया ; स्वर्गदूतों को दिखाई दिया ; अन्यदेशियों में
वह प्रचार किया गया ; जगत में बिश्वास किया गया ;
ऐश्वर्य्य को वह ऊपर उठाया गया ॥

४ पर्ब्ब

फिर आत्मा खोलके कहता है कि पिछले समयों
में कोई कोई बिश्वास को त्याग देंगे और भरमाने-
वाले आत्माओं से और पिशाचों की शिक्षा से जा लि-
पटेंगे। वे कपट से झूठ बोलेंगे ; उन का धर्मबोध २
सुन हो गया है। वे बिवाह करने से बरजेंगे और ३
खाना कि जिसे परमेश्वर ने बनाया है कि बिश्वासी
लोग और सत्यज्ञानी लोग धन्यवाद करके उसे खावें
उस को वे न खाने को सिखावेंगे। क्योंकि परमेश्वर ४

की सिरजी हुई हर एक वस्तु अच्छी है और जो वह धन्यवाद के साथ खाई जावे तो त्याग करने को नहीं
५ है। क्योंकि परमेश्वर के बचन से और प्रार्थना करने से वह पवित्र होती है।

६ सो जो तू भाइयों को ये बातें चितावे तो तू बिश्वास की और अच्छी शिक्षा की बातों में कि जिन्हें तू ने प्राप्त किया है प्रतिपाल पाके यिसू मसीह का
७ अच्छा सेवक ठहरेगा। परन्तु ओछी और बुढ़ियों की कहानियों से मुंह मोड़ और परमेश्वर की भक्ताई
८ का साधन कर। क्योंकि शरीर की साधना का थोड़ा लाभ है परन्तु परमेश्वर की भक्ताई सब बातों के लाभ के लिये है कि अब के और आनेवाले जीवन
९ की बाचा उसी के लिये है। यह बात प्रमाण है और
१० सर्वथा ग्रहण करने के योग्य है। क्योंकि जीवता परमेश्वर जो सब मनुष्यों का निज करके बिश्वासियों का बचानेहारा है उस पर जो हम ने आशा रखी है तो इस लिये हम परिश्रम करते और निन्दा सहते
११ हैं। इन बातों की आज्ञा कर और उन्हें सिखा।

१२ कोई तेरी तरुणाई की निन्दा करने न पावे परन्तु बातचीत से और बोलचाल से और प्रेम से और आत्मा से और बिश्वास से और पवित्रता से तू बिश्वासियों
१३ के लिये दृष्टान्त बन जा। जब लों मैं न आऊं तब लों तू पढ़ता रह और उपदेश देता और शिक्षा
१४ करता रह। जो दान तुझ में है जो तुझे भविष्यतवा-

णी के द्वारा प्राचीनगण के हाथ रखने से मिला है उस से तू अचेत न हो। इन्हीं बातों पर ध्यान कर; १५ तू उन में लगा रह जिसतें तेरी बढ़ती सब लोगों पर प्रगट होवे। अपनी और अपनी शिक्षा की चैाक- १६ सी रख और उन में बना रह क्योंकि ऐसा करने से तू आप को और अपने सुन्नेहारों को बचायगा॥

५ पर्ब्ब

तू किसी बूढ़े को मत दपट दे परन्तु उसे पिता के ऐसा समझा; और तरुणों को भाइयों के ऐसे। और बुढ़ियों को जैसे माताओं को; और तरुणियों २ को जैसे बहिनों को सारी पवित्रता से समझा।

जो विधवाएं सचमुच अनाथ हैं उन का आदर ३ कर। परन्तु यदि किसी विधवा के पुत्र अथवा पोते ४ होवें तो वे पहिले अपने घर की सेवा करने और माता पिता का भाग भर देने सीखें क्योंकि यह भला है और परमेश्वर उस से प्रसन्न है। अब जो सच्ची ५ बिधवा और अनाथ है सो परमेश्वर पर भरोसा रखती है और रात दिन बिन्ती और प्रार्थना करने में लगी रहती है। पर जो सुख भोगिनी है सो जीते ६ जी मरी ऊई है। इन बातों की चितावनी कर जिसतें ७ वे निर्दोष होवें। परन्तु यदि कोई अपनों के लिये ८ और निज करके अपने घर के लोगों के लिये न सहेजे तो वह विश्वास से मुकर गया और धर्महीन से बुरा है। कोई बिधवा साठ बरस के नीचे गिनती में न ९ आवे; और वह एक ही पुरुष की पत्नी ऊई होय।

१० और वह सुकर्म्मों का नाम रखती होय; और उस ने लड़कों को ढंग दिया हो; और अतिथियों को अपने यहां टिकाया हो; और सन्तों के पांव धोये हों और दुःखियों का उपकार किया हो और हर एक भले कार्य्य की धुन रखती हो। ११ पर तरुणी बिधवाओं को छांट डाल क्योंकि जब वे मसीह के बिरुद्ध खिलाड़ हो जाती हैं तब बिवाह किया चाहती हैं। १२ और पहिला बिश्वास छोड़के वे दण्ड के योग्य ठहरती हैं। १३ फिर वे आलसी भी होके घर घर डोलती फिरती हैं और केवल आलसी नहीं बरन बकवासी भी होती हैं और हर एक काम में हाथ डालती हैं और जो बातें न चाहिये सो ही बोलती हैं। १४ इस कारण मेरी इच्छा है कि तरुणी बिधवाएं बिवाह करें और बच्चे जनें और गृहस्थी करें और शत्रु को निन्दा करने की गैां न देवें। १५ क्योंकि कई एक अभी से शैतान के पीछे फिरी हैं। १६ परन्तु जो किसी बिश्वासी अथवा बिश्वासिनी की बिधवाएं हों तो वह उन का उपकार करे और वे कलीसिया पर बोझ न होवें जिसतें वह उन का जो सचमुच अनाथ हैं उपकार करे।

१७ जो जो प्राचीन अच्छा अधिकर्म करते हैं निज करके जो बचन और शिक्षा में परिश्रम करते हैं उन्हें दूने आदर के योग्य जानो। १८ क्योंकि धर्मग्रन्थ कहता है खलियान के बैल का मुंह मत बांध और यह कि बनिहार अपनी बनी के योग्य है।

जो प्राचीन पर कुछ अपवाद हो तो बिना दो तीन साक्षियों के मत सुन। जो लोग पाप करते हैं उन को सभों के संमुख दपट दे जिसतें औरों को भी डर होवे। मैं परमेश्वर के और प्रभु यिसू मसीह के और चुने ऊए स्वर्गदूतों के आगे तुझे आज्ञा देता हूं कि तू पक्ष छोड़के इन बातों को पालन कर और मुंह देखी से कुछ मत कर। १९ २० २१

हाथ किसी पर जल्द न रख और न औरों के पापों में भागी हो; अपने को पवित्र रख। २२

तू अब से केवल पानी न पीया कर परन्तु पाचक के लिये और अपने बारंबार व्याधों के कारण थोड़ा दाखरस पी। २३

कितने मनुष्यों के पाप आगे प्रगट हैं और न्याव में पहिले ही पहुंच जाते हैं और कितनों के पाप पीछे जाते हैं। वैसा ही उत्तम कार्य्य भी आगे प्रगट हैं और जो और ढब के हैं सो छिप नहीं सकते हैं॥ २४ २५

६ पर्ब्ब

जो जो दास जूए के नीचे हैं सो सो अपने स्वामियों को सारे संमान के योग्य जानें न होवे कि परमेश्वर के नाम और शिक्षा को कोई बुरा कहे। और जिन के बिश्वासी स्वामी हैं सो उन्हें भाई जान्ने से उन की अवज्ञा न करें परन्तु वे अधिक कर के उन की सेवा टहल करें क्योंकि वे बिश्वासी और प्यारे और पदारथ में भागी हैं; इन बातों की शिक्षा और उपदेश कर। २

३ यदि कोई जन और ढब की शिक्षा करता है और सजीवन बचन को अर्थात हमारे प्रभु यिसू मसीह के बचन को और भलाई के योग्य की शिक्षा को ग्रहण ४ नहीं करता है। तो वह घमण्डी है और कुछ नहीं जानता है परन्तु उस को वादानुवाद का और बात बात के बखेड़े का व्याधि है और उन से डाह और झगड़े और निन्दा की बातें और बुरी चिन्ताएं उपज- ५ ती हैं। और बुद्धि के बिगड़े और सच्चाई हीन लोगों के तुच्छ विवाद निकलते हैं कि वे समझते हैं कि प्राप्ति जो है सो ही भलाई है; ऐसों से तू परे रह।

६ परन्तु भलाई जो सन्तोष के संग हो सो बड़ी प्राप्ति ७ है। क्योंकि हम लोग जगत में कुछ न लाये; और ८ प्रगट है कि हम यहां से कुछ ले जा नहीं सकते। सो खाना और कपड़ा पाके हम लोग इन से सन्तोष करें। ९ परन्तु जो लोग धनवान हुआ चाहते हैं सो परीक्षा में और फन्दे में और बहुत सी बुद्धि हीन और बुरी लालसाओं में पड़ते हैं और वे मनुष्यों को भ्रष्टता १० और नष्टता में डुबा देती हैं। क्योंकि धन की प्रीति सारी बुराइयों की जड़ है; कोई कोई उस का लालच करके बिश्वास के मार्ग से भटक गये और उन्हों ने आप को नाना प्रकार के शोकों से छेद दिया।

११ पर तू हे परमेश्वर के जन इन बस्तुओं से भाग जा और धर्म का और भलाई का और बिश्वास का और प्रेम का और धीरज का और कोमलता का पीछा कर।

विश्वास के युद्ध का अच्छा योधन कर; अनन्त जीवन को धर ले कि उस के लिये तू बुलाया गया और बहुत से साक्षियों के आगे तू ने भला मान्ना मान लिया है। १२
परमेश्वर सब के जिलानेवाले के आगे और मसीह यिसू जिस ने पोन्तियूस पिलातूस के साम्हने भला मान्ना मान लिया है उस के आगे भी मैं तुझे आज्ञा देता हूं। कि तू हमारे प्रभु यिसू मसीह के प्रगट होने लों कलंकरहित और निर्दोष होके इस आज्ञा को धारण कर। सच्चिदानन्द और अद्वैत सामर्थवाला जो है राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु सो अपने समयों में उसे प्रगट करेगा। अमरता केवल उसी की है; वह अगम्य ज्योति में रहता है; उसे किसी मनुष्य ने नहीं देखा है न कोई उसे देख सकता है; उसी का आदर और सामर्थ सर्वदा है आमीन। १३ १४ १५ १६

इस संसार के धनवानों को आज्ञा दे कि मन में गर्व न करें और वे ठिकाने के धन पर नहीं परन्तु जीवते परमेश्वर पर जो हमारे भोग के लिये सब कुछ बहुताई से देता है उस पर भरोसा रखें। और यह कि वे भले काम करें और सुकर्मों के धनी और दान करने को तैयार और बांटने को लैस रहें। और आगम को अपने लिये एक अच्छे मूल का धन बटोरें जिसतें वे अनन्त जीवन पावें। १७ १८ १९

हे तिमोदेउस जो तुझे सोंपा गया है सो बचाय रख और धर्महीन और व्यर्थ बकबक से और जिसे झूठ २०

झूठ करके विद्या कहते हैं उस के वादानुवादों से मुंह
२१ फेर ले। उसे कोई कोई मानके विश्वास के मार्ग से
भटक गये हैं; कृपा तुझ पर होवे आमीन॥

पौलुस की दूसरी पत्री

तिमोदेउस को।

१ पर्व

पौलुस जो परमेश्वर की इच्छा से उस जीवन की बाचा के समान जो मसीह यिसू में है यिसू मसीह का प्रेरित है। मेरे प्रिय पुत्र तिमोदेउस को कृपा दया २ और कुशल पिता परमेश्वर और हमारे प्रभु मसीह यिसू की ओर से होवे।

परमेश्वर जिस की सेवा मैं पितरों की रीति पर ३ खरे धर्मबोध से करता हूं उस का मैं धन्य मानता हूं कि मैं रात दिन अपनी प्रार्थनाओं में निरन्तर तुझे स्मरण करता हूं। और तेरे आंसुओं को चेत करके मैं तुझे ४ देखने की बड़ी लालसा रखता हूं कि मैं आनन्द से भर जाऊं। मैं तेरे निष्कपट विश्वास को स्मरण करता हूं ५ कि जो पहिले तेरी नानी लोइस में और तेरी माता यूनीके में था और मुझे निश्चय है कि तुझ में भी है। इस कारण मैं तुझे चेत कराता हूं कि परमेश्वर के ६

उस दान को जो मेरे हाथ रखने से तुझे मिला सो
७ फिर के सुलगा। क्योंकि परमेश्वर ने हम को डर-
पोकना आत्मा नहीं दिया परन्तु सामर्थ्य का और प्रेम
८ का और बुद्धि का आत्मा दिया है। इस लिये तू न तो
हमारे प्रभु की साक्षी से न मुझ से जो उस का बन्धुवा
हूं लज्जित हो जा परन्तु परमेश्वर के सामर्थ्य से मंगल
९ समाचार के दुःखों में भागी हो। क्योंकि उस ने हमें
बचाया और पवित्र बुलाहट से बुलाया है और हमारे
कामों के कारण नहीं परन्तु अपने ही ठहराव के
और कृपा के समान जो मसीह यिसू में सनातन से हमें
१० दिई गई है उस ने यह किया। वह अब हमारे मुक्ति-
दाता यिसू मसीह के प्रगट होने से प्रकाश हुई; उस
ने मृत्यु को नष्ट किया और जीवन को और अमरपद
११ को मंगल समाचार के द्वारा से प्रकाश किया। उस के
लिये मैं सिच्छक और प्रेरित और अन्यदेशियों का
१२ गुरु ठहराया गया हूं। और उस के लिये मैं इन दुःखों
को भी पाता हूं; तिस पर मैं लजाता नहीं क्योंकि मैं
जानता हूं कि मैं किस पर बिश्वास लाया हूं और मुझे
निश्चय है कि वह मेरी धरोहर को उस दिन लों
बचाय रख सकता है।

१३ जो सजीवन बातें तू ने मुझ से सुनीं हैं उन को
चाल को तू उस बिश्वास और प्रेम में जो यिसू मसीह
१४ में है धरे रख। उस अच्छी धरोहर को पवित्र आत्मा
से जो हमों में बसता है बचाय रख।

१५ तू जानता है कि आसिया के सब लोग और उन में से फिगल्लुस और हरमोगनस मुझ से फिर गये। १६ आनेसीफोरुस के घर पर प्रभु दया करे क्योंकि उस ने बारंबार मेरी ढाड़स बन्धाई और मेरी जंजीर से न लजाया। १७ परन्तु रूम में होते हुए उस ने मुझे बड़े जतन से ढूंढा और पाया। १८ प्रभु उसे यह देवे कि उस दिन में प्रभु की दया उस पर होवे; और जितनी सेवकाइयां उस ने एफसुस में किईं सो तू अच्छी रीति से जानता है॥

२ पर्ब्ब

सो हे मेरे पुत्र तू उस कृपा में जो मसीह यिसू में है दृढ़ हो। २ और जो बातें तू ने बहुत से साक्षियों के आगे मुझ से सुनी हैं उन्हें प्रभूभक्त मनुष्यों को जो औरों को भी सिखाने जानते हैं सोंप दे। ३ सो तू यिसू मसीह के अच्छे योद्धा के समान दुःख सह ले। ४ कोई योधापन करके अपने को जगत के विषयों में नहीं उलझाता है जिसतें जिस ने उसे योधन को लगाया है उसे वह रिझावे। ५ और जो कोई मल्लयुद्ध भी करता है जब वह ठीक चाल पर मल्लयुद्ध न करे तब मुकुट नहीं पाता। ६ जो किसान परिश्रम ही करता है सो अवश्य करके फल का भागी पहिले होगा। ७ मेरा कहा सोच रख और प्रभु तुझे सब बातों की समझ देवे।

८ यिसू मसीह जो दाऊद के वंश से है और मृतकों में से जी उठा है मेरे मंगल समाचार के समान

९ उसे तू स्मरण कर। उस के लिये मैं कुकर्मी के समान यहां लों दुःख पाता हूं कि बन्ध में हूं परन्तु परमेश्वर
१० का बचन बन्धा नहीं है। सो मैं चुने हुओं के लिये सब कुछ सहता हूं जिसतें जो निस्तार यिसू मसीह
११ से है सो उन्हें अनन्त ऐश्वर्य्य के संग मिले। यह बचन प्रमाण है कि जो हम उस के संग मरें तो हम उस
१२ के संग जीयेंगे भी। जो हम उस के संग दुःख उठावें तो हम उस के संग राज्य भी करेंगे; जो हम उस
१३ से मुकर जायें तो वह हम से भी मुकरेगा। जो हम अविश्वासी होवें तो वह बिश्वस्त ठहरता है; वह अपने को मुकर नहीं सकता है।

१४ तू ये बातें चेत करवा और प्रभु के साम्हने यह साची दे कि बात बात के बखेड़े जो सुन्नेहारों के डिगने को छोड़ और कुछ काम के नहीं हैं सो न
१५ करना। जैसा परमेश्वर का भाया हुआ एक कर्मकारी जिसे लजाना न हो और जो सच्चाई के बचन की ठीक ठीक बटाई करे वैसा तू अपने तईं दिखाने को जतन
१६ कर। परन्तु धर्महीन और व्यर्थ बकवादों से परे रह
१७ क्योंकि वे अधर्मता में अधिक बढ़ते जायेंगे। और उन का बचन मांस सड़न के बिकार के ऐसा खाता चला जायगा; उन में से हिमेनेउस और फिलेतुस हैं।
१८ वे सच्चाई से फिरे हुए होके कहते हैं कि पुनरुत्थान हो चुका और कितनों का बिश्वास डिगा देते हैं।

१९ तौ भी परमेश्वर की नेव दृढ़ ठहरी है और उस

पर यह छाप है प्रभु अपनों को जानता है और यह कि हर एक जो मसीह का नाम लेता है सो अधर्म से दूर रहे। पर बड़े घर में केवल सोने रूपे के पात्र नहीं हैं परन्तु काठ के और मिट्टी के भी हैं और कोई कोई तो आदर के और कोई कोई अनादर के काम के लिये हैं। इस लिये यदि कोई अपने को इन से पवित्र करे तो वह आदर का पात्र और पवित्र किया हुआ और स्वामी के काम के योग्य और हर एक अच्छे काम के लिये तैयार ठहरेगा। २० २१

तरुणाई की कामनाओं से भाग जा और जो पवित्र मन से प्रभु का नाम लेते हैं तू उन के संग धर्म का और विश्वास और प्रेम और शान्ति का पीछा कर। परन्तु मूढ़ और बुद्धि हीन वादानुबादों से परे रह कि तू जानता है कि वे झगड़े उपजाते हैं। परन्तु प्रभु के दास को झगड़ा न किया चाहिये परन्तु वह सभों से कोमल रहे और सिखाने को तैयार और दुःखों का सहनेहार होवे। वह बिरोध करनेहारों को कोमलता से समझावे कदाचित परमेश्वर सच्चाई के ज्ञान की ओर उन का मन फिरवावे। और वे जिन्हें शैतान ने अपनी इच्छा में मिलाके बझाया था सो अपनी सुध में आके उस के फन्दे से छूट जावें॥ २२ २३ २४ २५ २६

३ पर्व्व

और तू यह जान रख कि अन्त समय में सकेत के दिन आवेंगे। क्योंकि मनुष्य आपस्वार्थी होंगे और लालची और दम्भबक्की और घमण्डी और ठट्ठा करने- २

हारे और माता पिता के आज्ञा भंजक और अधन्य-
३ मानी और अपवित्र। और मया रहित और नेम
रहित और निन्दक और संयम हीन और कठोर
४ और भलों के बैरी। बिश्वासघाती और मगरे और
फूलनेहारे और परमेश्वर से अधिक सुख बिलास के
५ चाहनेहारे। वे भलाई का भेष रखते हैं परन्तु उस
के गुण को नकारते हैं; तू ऐसों से मुंह मोड़।
६ क्योंकि उन में से वे हैं जो घर घर घुसा करते हैं और
उन छिछोरी रण्डियों को जो पापों से लदी ऊई हैं
और नाना मकार के कामनाओं से खैंची ऊई हैं।
७ और नित्य शिक्षा पाती हैं परन्तु सच्चाई को जान्ने
लों कधी पऊंच नहीं सकती हैं उन्हें अपने बश में
८ कर लाते हैं। और जैसे यन्नस और यंब्रस ने मूसा
का सामना किया वैसे ये भी सच्चाई का बिरोध करते
हैं; वे बुद्धि के बिगड़े हैं और बिश्वास की बात में
९ त्यक्त ठहरे हैं। पर वे आगे न बढ़ेंगे क्योंकि जैसे
उन्हों की वैसे इन लोगों की अज्ञानता सभों पर मगट
हो जायगी।

१० परन्तु मेरी शिक्षा और चालचलन और मनसा
और बिश्वास और अतिधीरज और मेम और सहना।
११ और सताया जाना और मेरे दुःख जो अन्ताकिया
में और इकोनियुम में और लिस्तरा में मुझ पर पड़े
तू ने उन्हें अच्छी रीति से बूझ लिया; और मैं कहां
तक सताया गया परन्तु मभु ने मुझे उन सभों से छुट-

कारा दिया। हां सब लोग जो यिसू मसीह में भलाई से आप को निबाहने चाहते हैं सो सताये जायेंगे। १२
परन्तु दुष्ट और धोखा देनेहारे मनुष्य जो हैं सो भरमा भरमाके और भरमाये जाके दुष्टता में आगे बढ़ते जायेंगे। १३

पर जो जो बातें तू ने सीखीं और निश्चय किईं तू उन्हों पर स्थिर रह क्योंकि तू जानता है कि किस से सीख लिया। १४ और कि तू लड़काई से धर्मग्रन्थों को जानता है; वे तुझे मसीह यिसू पर बिश्वास लाने से निस्तार का ज्ञान दे सकती हैं। १५ सारी धर्मग्रन्थ परमेश्वर उक्ति है और शिक्षा के और प्रबोध के और सुधारने के और धर्म में प्रतिपाल देने के काम का है। १६ जिसतें परमेश्वर का जन सिद्ध होवे और हर एक भले काम के लिये तैयार होवे॥ १७

४ पर्ब्ब

सो परमेश्वर और प्रभु यिसू मसीह के आगे जो अपने प्रगट होने पर और अपने राज्य के स्थापित करने पर जीवतों और मृतकों का न्याय करेगा मैं आज्ञा देता हूं। तू बचन को प्रचार कर; समय में और असमय में उसी में लगा रह; सब अतिधीरज और शिक्षा से प्रबोध दे धमका दे और उपदेश दे। २ क्योंकि वह समय आवेगा कि लोग सजीवन शिक्षा को न सह लेंगे पर कान खुजलाते ज़ुए अपनी निज लालसाओं के समान गुरु पर गुरु करेंगे। ३ और अपने कानों को सच्चाई की ओर से फेरके कहानियों पर ४

५ लगावेंगे। परन्तु सब बातों में तू चौकस रह; दुःख सह ले; मंगलसमाचारी का काम कर; अपनी सेवकाई को पूरा कर।

६ क्योंकि अब मेरा लहू ढाला जाता है और मेरे ७ सिधारने का समय आ पहुंचा है। मैं अच्छे युद्ध का योधन कर चुका; मैं अपनी दौड़ को समाप्त कर चुका; ८ मैं बिश्वास को धरे रहा हूं। आगे धर्म का मुकुट मेरे लिये धरा है; प्रभु जो धर्मी न्यायी है सो उस दिन वह मुझे देगा; और केवल मुझी को नहीं परन्तु जितने जो उस के प्रगट होने के प्रेमी हैं उन सभों को वह भी देगा।

९ तू मेरे पास जल्द आने को यत्न कर। क्योंकि १० देमास ने इस ही जगत को प्यार करके मुझे छोड़ दिया है और थस्सलोनीके को चला गया; क्रसकंस गलातिया को गया और तीतुस दलमातिया को। ११ लूका अकेला मेरे संग है; तू मरकुस को अपने संग ले आ क्योंकि वह इस सेवकाई में मेरे काम का है। १२ मैं ने तिखिकुस को एफसुस को भेजा। वह लबादा १३ जिसे मैं ने त्रोआस में कर्पुस के यहां छोड़ा था और पुस्तकें बिशेष करके चर्मी पत्रों को लेता आ।

१४ सिकन्दर ठठेरे ने मुझ से बहुत बुराई किई; १५ प्रभु उस के कामों के समान उस को फल देवे। उस से तू भी चौकस रह क्योंकि उस ने हमारी बातों का बड़ा बिरोध किया।

मेरे पहिले प्रतिवाद में कोई मेरा साथी न था परन्तु सभों ने मुझे छोड़ दिया; इस का लेखा उन्हें देना न पड़े। पर प्रभु मेरे साथ रहा और उस ने मुझे बल दिया कि मेरे द्वारा से बचन का पूरा प्रचार होवे और सब अन्यदेशी लोग सुनें; और मैं सिंह के मुंह से छूट गया। और प्रभु मुझे हर एक बुरे काम से बचावेगा और अपने स्वर्गीय राज्य तक बचाय रखेगा; उस की महिमा सदाकाल होवे आमीन। १६ १७ १८

प्रिसका और अकीला को और ओनेसीफोरस के घर को नमस्कार कह। एरास्तुस कोरिन्तुस में रहा और त्रोफिमुस को मैं ने मिलेतुस में रोगी छोड़ा। तू जाड़े से आगे आने को जतन कर; यूबुलुस और पूदेंस और लीनुस और क्लौदिया और सब भाई लोग तुझे नमस्कार कहते हैं। प्रभु यिसू मसीह तेरे आत्मा के संग होवे; कृपा तुम्हों पर होवे आमीन॥ १९ २० २१ २२

पैालुस की पत्री

तीतुस को।

१ पर्ब्ब
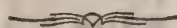
पैालुस से जो परमेश्वर का दास और यिसू मसीह का प्रेरित है सो परमेश्वर के चुने ज़ओं के विश्वास और उस सच्चाई के ज्ञान के लिये जो भक्ताई के विषय २ में है ऐसा ज़आ है। ये बातें अनन्त जीवन की आशा के लिये हैं और उस की बाचा परमेश्वर ने जो झूठ ३ नहीं बोलता आदि समय के आगे किई थी। परन्तु उस ने निज समय में अपने बचन का प्रचार कराके प्रगट किया और यह बचन हमारे मुक्तिदाता पर-४ मेश्वर की आज्ञा से मुझे सोंपा गया है। तीतुस जो सामान्य विश्वास की रीति से मेरा सच्चा पुत्र है उस को यह पत्री; कृपा दया और कुशल पिता परमेश्वर से और हमारे मुक्तिदाता प्रभु यिसू मसीह से तुझ पर होवे।

५ मैं ने तुझे इस लिये करीते में छोड़ा था जिसतें

जो बातें रह गईं थीं तू उन को संवारे और जैसा मैं ने तुझे आज्ञा दिई थी वैसे नगर नगर में प्राचीनों को ठहरावे। ६ यदि कोई निर्दोष हो और एक पत्नी का पति हो और उस के लड़के बिश्वासी हों और वह कुचाल से और झगराई से दोष रहित हो। ७ क्योंकि अध्यक्ष जो परमेश्वर का भण्डारी है उस को चाहिये कि वह निर्दोष होवे और अपना स्वार्थी नहीं हो और जल्द रिसिया न जाय; वह न मद्यप हो न मार पीट करनेहार न अयोग्य प्राप्त का लालची हो। ८ परन्तु वह अतिथिपालक हो और अच्छे लोगों का प्रेमी और सचेत और धर्मी और भक्तिमान और संयमी हो। ९ वह धर्मोपदेश के समान बिश्वास के बचन को धरे रहे जिसतें वह सजीवन शिक्षा से उपदेश कर सके और बिरोध करनेहारों को प्रबोध दे सके।

१० क्योंकि बहुत से झगरे और बकवादी लोग और ११ भरमानेवाले हैं निज करके खतनावालों में से। उन का मुंह बन्द किया चाहिये; वे अयोग्य प्राप्त के लिये अनुचित बातें सिखा सिखाके घराने के घराने उलट पुलट कर डालते हैं। १२ उन्हीं में से एक ने जो उन्हीं लोगों का भविष्यतवक्ता था यह कहा है करीती लोग नित झूठे हैं बुरे पशु और आलसी पेटू हैं। १३ यह साक्षी सत्य है इस लिये तू उन्हें दृढ़ता से डांट दे जिसतें वे बिश्वास में खरे हो जावें। १४ और यहूदियों की कहानियों पर और मनुष्यों की आज्ञाओं पर जो

१५ सच्चाई से फिर गये हैं ध्यान न लगावें। पवित्र लोगों के लिये सब कुछ पवित्र है परन्तु मलीन और बिश्वास हीन लोगों के लिये कुछ भी पवित्र नहीं है बरन
१६ उन की बुद्धि और धर्मबोध भी मलीन है। वे परमेश्वर के जान्नेहारे आप को मान लेते हैं परन्तु घिणौने और आज्ञा भंग करनेहारे और हर एक अच्छे काम के विषय में अभाये ज़ए होकर वे लोग अपने कामों से उस के मुकरनेहारे ठहरे हैं॥

२ पर्ब्ब

पर जो बातें सजीवन शिक्षा के योग्य हैं सो तू
२ बोला कर। कि बूढ़े जो हैं सचेत रहें और गंभीर और सज्ञान हों और बिश्वास में और प्रेम में और
३ धीरज में खरे होवें। वैसे ही बूढ़ियां भी भलाई के योग्य की चाल चलें और निन्दक न होवें और मदिरा पीने के बश में न हों परन्तु वे अच्छी बातों को सिख-
४ लानेवालियां हों। जिसतें वे तरुणी स्त्रियों को सज्ञानी करें कि वे अपने पतियों को प्यार करें और अपने
५ बच्चों को प्यार करें। कि वे सचेत होवें और पतिब्रता और घर में रहनेवालियां और सुशील और अपने पतियों के आधीन होवें जिसतें परमेश्वर के बचन की निन्दा न होवे।

६ वैसा ही तरुण पुरुषों को भी उपदेश दे कि वे
७ सचेत होवें। सब बातों में तू अपने को उत्तम कामों का दृष्टान्त कर दिखला ; और तेरी शिक्षा निर्मल और गंभीर और खोट रहित हो और तेरा बचन

खरा और दोष रहित हो। जिसतें बिरोध करने- | ८
हारे तुम्हों पर कुछ बुरी बात लगाने का अवसर
न पाके लज्जित हो जायें।

दास जो हैं सो अपने ही स्वामियों के आधीन रहें | ९
और सारी बातों में उन को रिझावें और फिरके
उत्तर न दिया करें। और कुछ न चुरावें परन्तु सारी | १०
अच्छी सचौटी दिखावें जिसतें वे हमारे मोक्षदाता
परमेश्वर की शिक्षा को सारी बातों में शोभा देवें।

क्योंकि परमेश्वर की निस्तारवाली कृपा सब मनुष्यों | ११
पर प्रगट ऊई है। वह हमें सिखाती है कि हम | १२
अधर्मता को और सांसारिक लालसा को त्यागके
अब के जगत में सचेत और धर्मी और भक्तिमान
होके जीवें। और उसी भागमान आशा की बाट और | १३
महान परमेश्वर और अपने मुक्तिदाता यिसू मसीह
की महिमा के प्रगट होने की बाट जोहें। कि उस | १४
ने आप को हमारे बदले दिया जिसतें वह सारे अधर्म-
ता से हमारी छुड़ौती करे और अपने लिये एक निज
लोग को जो भले कामों के लिये मनचले हों पवित्र
करे। तू ये बातें बोल और उपदेश कर और सारे | १५
अधिकार से दपट दे; कोई जन तुझे तुच्छ न जाने।

३ पर्ब्ब

उन्हें चिता दे कि वे प्रधानों और अधिकारियों के
आधीन होवें और धर्माध्यक्षों को मानें और हर एक
अच्छे काम पर तैयार रहें। वे किसी की निन्दा न करें | २
और लड़ा न करें परन्तु धीमे रहें और मनुष्यों पर

३ कोमलता दिखावें। क्योंकि हम लोग आपभी आगे निर्बुद्धि थे और आज्ञा भंजक और भटके हुए थे और नाना प्रकार की कामनाओं और सुखाभिलाषों के बश में रहा करते थे और बुराई और डाह से अपना जीवन निर्वाह करते थे; हम घिणौने थे और एक दूसरे से बैर करते थे।

४ परन्तु जब हमारे मुक्तिदाता परमेश्वर की दया
५ और प्रेम प्रगट हुआ। तब धर्म के कर्मों से नहीं जो हम ने किये परन्तु अपनी दया के कारण से उस ने नये जन्म के स्नान से और पवित्रआत्मा के नये बनाने से
६ हमें बचाया। कि उस ने उसे हमारे मुक्तिदाता यिसू
७ मसीह के द्वारा से बहुताई से हमों पर डाला। जिसतें हम उस की कृपा से धर्मी ठहरके आशा के समान अनन्त जीवन के अधिकारी बनें।

८ यह बचन प्रमाण है और मैं चाहता हूं कि तू दृढ़ता से इन बातों को कहा कर जिसतें जो लोग परमेश्वर पर बिश्वास लाये हैं सो यत्न करके भले काम करने में लगे रहें; ये बातें अच्छी हैं और मनुष्यों के
९ लिये सफल हैं। परन्तु मूढ़ बातों से और बंशावलियों से और व्यवस्था के बिषय के झगड़ों और टण्टों से परे
१० रह क्योंकि वे अकारथ और व्यर्थ हैं। जो मनुष्य धर्म का कुपथी है उस को दो एक बेर प्रबोध देके त्याग
११ कर। तू जानता है कि ऐसा जन फिर गया है और मन ही मन दोषी ठहरके पाप करता है।

१२ जब मैं अरतेमस अथवा तिखिकुस को तेरे पास भेजूं तब तू मेरे पास निकोपोलिस में आने को जल्दी कर क्योंकि मैं ने वहां जाड़ा काटने को ठाना है। १३ शास्त्री सेनास और अपोल्लोस को उन की यात्रा में बढ़ाने का यत्न कर कि उन्हें किसी बस्तु की घटी न होवे। १४ और हमारे ही लोग भी सीखें कि प्रयोजन के लिये अच्छे काम करने में बने रहें जिसतें वे निष्फल न होवें। १५ सब जो मेरे संग हैं सो तुझे नमस्कार कहते हैं; जो लोग बिश्वास में होके हम से प्रेम रखते हैं उन्हें नमस्कार कह; कृपा सभों पर होवे आमीन॥

पौलुस की पत्री
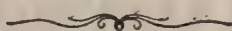
फिलेमोन को।

१ पर्ब्ब

पौलुस जो मसीह यिसू का बन्धुवा है उस से और भाई तिमोदेउस से फिलेमोन को जो हमारा प्यारा २ और संगी कर्मकारी है। और अफिया प्यारी को और हमारे संगी योद्धा अरखिप्पुस को और तेरे घर में की ३ कलीसिया को। हमारे पिता परमेश्वर से और प्रभु यिसू मसीह से कृपा और कुशल तुम्हों पर होवे।

४ ५ मैं तेरे प्रेम को जो सारे सन्तों से है। और तेरे बिश्वास को जो प्रभु यिसू पर है सुनके अपने परमेश्वर का धन्य मानता हूं और तुझे अपनी प्रार्थनाओं में नित ६ स्मरण करता हूं। कि तेरे बिश्वास की संगति ऐसी फलदायक होवे कि सब अच्छी बातें जो तुम से मसीह ७ के कारण होती हैं सो जानी जावें। क्योंकि हम तेरे प्रेम से बक़त आनन्द और संबोधन पाते हैं कि तुझ से हे भाई सन्तों के जी सन्तुष्ट ऊए हैं।

सो यद्यपि मुझे मसीह से यह साहस है कि जो उचित बात है उस को मैं तुझे आज्ञा करूं। तथापि प्रेम के कारण से मैं बिन्ती करना उस से भला मानता हूं क्योंकि मैं पौलुस बूढ़ा हूं और अब यिसू मसीह का बन्धुवा भी हूं। सो मैं अपने एक पुत्र के लिये जो मेरे बन्ध में मेरे लिये जनमा अर्थात ओनेसिमुस के लिये बिन्ती करता हूं। ८ ९ १०

वह आगे तेरे काम का नहीं था पर अब तेरे और मेरे काम का है। मैं ने उसे फिराके भेजा है; अब तू उस को अर्थात मेरे कलेजे के टुकड़े को ग्रहण कर। मैं ने तो उसे अपने ही पास रखने चाहा था जिसतें वह तेरी जगह मंगल समाचार के बन्धनों में मेरी सेवकाई करे। परन्तु तेरी इच्छा बिना मैं ने कुछ करने न चाहा जिसतें तेरा सुकर्म लचारी से नहीं पर प्रसन्नता से होवे। क्योंकि क्या जाने वह तुझ से इस लिये थोड़ी बेर अलग हुआ कि तू सदा के लिये उसे फिर पावे। अब से दास के समान नहीं परन्तु दास से अच्छा अर्थात वह प्यारे भाई के समान होवे निज करके मेरे लिये; फिर कितना अधिक करके वह शरीर में और प्रभु में तेरे लिये ऐसा न होगा। सो जो तू मुझे संगती जानता है तो जैसा मुझ को वैसा उस को ग्रहण कर। ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७

जो उस ने तेरा कुछ बिगाड़ा है अथवा वह तेरा कुछ धराता है तो तू उसे मेरे नाम पर लिख रख। मैं १८ १९

पौलुस अपने ही हाथ से लिखता हूं मैं आप भर देऊंगा; और मैं तुझ से नहीं कहता हूं कि जो तू मुझे
२० धराता है सो तू आप ही है। मुझे प्रभु में तुझ से सुख
२१ तो मिले; प्रभु में मेरा कलेजा ठण्डा कर। मैं ने तेरी आधीनता का भरोसा रखके तुझे लिखा और जानता हूं कि तू मेरे कहने से भी अधिक करेगा।
२२ और भी एक कोठरी मेरे लिये तैयार कर क्योंकि मुझे आसा है कि मैं तुम्हारी प्रार्थना के द्वारा से तुम्हें दिया जाऊं।

२३ एपाफ्रस जो मसीह यिसू में मेरा संगी बन्धुवा है।
२४ और मरकुस और अरिस्तर्खुस और देमास और लूका जो मेरे संगी कर्मकारी हैं सो तुझे नमस्कार
२५ कहते हैं। हमारे प्रभु यिसू मसीह की कृपा तुम्हारे आत्मा के संग होवे आमीन॥

पैालुस की पत्री

इबरानियों को।

१ पर्ब्ब

परमेश्वर जो अगले समय में भविष्यतवक्ताओं के द्वारा पितरों से वारंवार और नाना प्रकार से बोला। वह इन्हीं पिछले दिनों में पुत्र के द्वारा हम से बोला; उस ने उसे सब बस्तुओं का अधिकारी ठहराया और उस के द्वारा से उस ने जगतों को भी बनाया। वह उस के तेज का प्रकाश और उस के भाव का आकार है और वह अपने सामर्थ्यवाले बचन से सब कुछ संभालता है और आप ही से हमारे पापों को शुद्ध करके ऊपर की महामहिमा के दहिने जा बैठा। २ ३

जितना उस ने स्वर्गदूतों के से उत्तम नाम का अधिकार पाया उतना वह उन्हों से महान ठहरा। क्योंकि स्वर्गदूतों में से किस को उस ने यह कभी कहा तू मेरा पुत्र है; आज तू मुझ से उत्पन्न ज़आ; ४ ५

और फिर यह मैं उस का पिता हूंगा और वह मेरा
६ पुत्र होगा। फिर जब वह पहिलौटे को जगत में
लाया तब कहा और परमेश्वर के सारे दूतगण उस
७ की पूजा करें। और स्वर्गदूतों के विषय में वह कहता
है वह अपने दूतों को पवन और अपने सेवकों को
८ आग की लौ बनाता है। परन्तु पुत्र से वह कहता
है हे परमेश्वर तेरा सिंहासन सनातन लों है; तेरे
९ राज्य का दण्ड न्याव का दण्ड है। तू ने धर्म से प्रेम किया
और अधर्म से बैर किया इस लिये हे परमेश्वर तेरे
परमेश्वर ने आनन्द के तेल से तुझ को तेरे संगियों
१० से अधिक मसीह किया। फिर यह कहता है हे प्रभु तू
ने आदि में भूमि की नेव डाली और स्वर्ग तेरे हाथ के
११ बनाये हुए हैं। वे जाते रहेंगे पर तू बना रहता है;
१२ वस्त्र के समान वे सब पुराने हो जायेंगे। और चादर
के समान तू उन्हें लपेटेगा और वे बदल जायेंगे पर तू
जैसा का तैसा है और तेरे बरस जाते न रहेंगे।

१३ फिर स्वर्गदूतों में से उस ने किस से कभी कहा
है तू मेरे दहिने बैठ जब लों कि मैं तेरे बैरियों को
१४ तेरे पांवों तले की पीढ़ी कर डालूं। क्या वे सब सेवा
करनेवाले आत्मा हैं कि नहीं और निस्तार के अधि-
कार के पानेवालों की सेवा के लिये भेजे गये हैं कि
नहीं॥

२ पर्व्व

इस लिये जो बातें कि हम ने सुनीं उन पर और
भी मन लगाके हमें ध्यान किया चाहिये न होवे कि

हम उन्हें खो देवें। क्योंकि जब वह बचन जो स्वर्गदूतों के द्वारा से कहा गया दृढ़ रहा और हर एक अपराध का और आज्ञा भंग का ठीक ठीक पलटा हुआ। ‌२

फिर हम लोग यदि ऐसे बड़े निस्तार से अचेत रहें तो क्योंकर बचेंगे; वह तो आरंभ में प्रभु से सुनाया गया और सुन्नेहारों ने उसे हमों पर प्रमाण किया। ३

और परमेश्वर ने भी चिन्हों से और अचंभों से और नाना प्रकार के आश्चर्य्य कर्मों से और पवित्र आत्मा को अपनी ही इच्छा के समान दिया करने से उन्हों पर साक्षी दिई। ४

क्योंकि आनेवाले जगत को जिस के विषय में हम बोलते हैं उस ने स्वर्गदूतों के आधीन नहीं किया है। ५

परन्तु किसी ने कहीं साक्षी देके यों कहा मनुष्य क्या है जो तू उस की सुधि लेवे; अथवा मनुष्य का पुत्र क्या है जो तू उस पर दृष्टि करे। ६

तू ने उस को स्वर्गदूतों से तनिक छोटा किया; तू ने महिमा और मान का मुकुट उस पर रखा और अपने हाथों के कार्य्यों पर उसे प्रधान किया। ७

तू ने सब कुछ उस के पांवों तले कर दिया; फिर जब उस ने सब कुछ उस के आधीन किया तब कोई बस्तु बिना उस के आधीन किये न रही; परन्तु अब लों हम नहीं देखते हैं कि सब कुछ उस के आधीन हुआ। ८

पर हम देखते हैं कि यिसू जो स्वर्गदूतों से तनिक छोटा किया गया था जिसतें परमेश्वर की कृपा से सब मनुष्यों के लिये मृत्यु को ९

पीछे उस ने मृत्यु की पीड़ा के कारण महिमा और
१० मान का मुकुट पाया। क्योंकि उस को जिस के लिये
सारी वस्तें हैं और जिस के द्वारा से सारी वस्तें हैं
यह उचित था जब बहुत से पुत्रों को ऐश्वर्य्य को
पहुंचावे कि उन के निस्तार के अधिपति को दुःखों
से सिद्ध करे।

११ क्योंकि जो पवित्र करता है और जो पवित्र किये
जाते हैं सब एक ही के हैं इस लिये वह उन्हें भाई
१२ कहने से नहीं लजाता है। कि वह कहता है मैं
अपने भाइयों को तेरा नाम सुनाऊंगा; मैं कलीसिया
१३ के बीच में तेरी गुणावाद गाऊंगा। और फिर कहता
है मैं उस पर भरोसा रक्खूंगा; और फिर यह कि
देख मुझे और उन लड़कों को कि जिन्हें परमेश्वर
१४ ने मुझे दिया है। सो जैसा कि लड़के मांस और रक्त
के भागी हैं वैसा ही वह भी आप उस का भागी
हुआ जिसतें वह मरने के द्वारा से उस को जिस
पास मृत्यु का बल है अर्थात शैतान को नष्ट करे।
१५ और जिसतें जो लोग मृत्यु के डर के मारे जीवन भर
१६ दासता के बन्ध में थे उन्हें वह छुड़ावे। क्योंकि निश्चय
करके वह स्वर्गदूतों का नहीं परन्तु अबिरहाम के
१७ बंश का साथ देता है। इस कारण उसे अवश्य हुआ
कि वह हर एक बात में अपने भाइयों के तुल्य हो
जाय जिसतें वह परमेश्वर की बातों में लोगों के
पापों के कारण प्रायश्चित्त करने को दयाल और

विश्वस्त महायाजक ठहरे। क्योंकि जब उस ने आप ही परीक्षा में पड़के दुःख पाया तब जो लोग परीक्षा में पड़ते हैं उन्हों का वह उपकार कर सकता है। १८

३ पर्व्व

सो हे सन्त भाइयो जो स्वर्ग की बुलाहट में भागी हो गये हो; मसीह यिसू कि जिसे हम प्रेरित और महायाजक मान लेते हैं उस पर तुम लोग ध्यान करो। २ जैसा कि मूसा अपने सारे घर में विश्वस्त था वैसा वह भी अपने ठहरानेवाले के आगे बिश्वस्त ठहरा। ३ क्योंकि जैसा घर से अधिक घर का बनानेवाला आदरवन्त है वैसा ही वही मूसा से अधिक आदर के योग्य गिना गया। ४ कि हर एक घर का कोई बनानेवाला है पर सब बस्तुओं का बनानेवाला परमेश्वर है। ५ और मूसा सेवक ठहरके उस के सारे घर में विश्वस्त था कि उन बातों पर जो प्रगट होने को थीं साक्षी देवे। ६ परन्तु मसीह पुत्र होके अपने घर का अधिकारी ठहरा; उस का घर हम लोग ठहरे हैं पर इतना होय कि हम अपनी ढाड़स को और आशा की बड़ाई को अन्तकाल लों दृढ़ रखें।

७ इस लिये जैसा पवित्र आत्मा कहता है यदि आज तुम उस की वाणी सुनो। ८ तो जैसे रिसियाने के समय में जैसे परीक्षा के दिन बन में हुआ था वैसे तुम लोग अपने मनों को कठोर मत करो। ९ कि तुम्हारे पितरों ने मुझे वहां परखा और मेरी परीक्षा किई

१० और चालीस बरस लों मेरे काम देखे। इस लिये मैं ने उस पीढ़ी से क्रोधित होके कहा ये लोग सदा मन में भटक जाते हैं और उन्हों ने मेरे मार्गों को नहीं
११ पहचाना। सो मैं ने क्रोध करके किरिया खाई कि ये लोग मेरे बिश्राम में प्रवेश न करेंगे।

१२ देखो हे भाइयो कि अविश्वास का बुरा मन जो जीवते परमेश्वर से फिर जावे सो तुम में से किसी में
१३ न होवे। पर जब लों कि आज के दिन कहा जाता है तब लों एक दूसरे को प्रतिदिन उपदेश दिया करो न होवे कि पाप के छल के कारण तुम में से कोई
१४ कठोर हो जाय। क्योंकि हम लोग मसीह के भागी ज़ए हैं केवल इतना होय कि हम अपने आरंभ के भरोसे को अन्त लों दृढ़ता से थामे रहें।

१५ जब कि यह कहा जाता है कि आज जो तुम उस की वाणी सुनो तो जैसे रिसियाने के समय में ज़आ था वैसे तुम लोग अपने मनों को कठोर मत करो।
१६ क्योंकि कितनों ने सुनके उसे रिस दिलाई परन्तु जो लोग मूसा के द्वारा मिसर से निकले सो सभों ने नहीं
१७ दिलाई। और वह किन लोगों से चालीस बरस लों क्रोधित रहा; जिन्हों ने पाप किया क्या उन से रहा कि नहीं और उन की लोथें बन में पड़ी रहीं।
१८ और किन पर उस ने किरिया खाके कहा कि वे लोग मेरे बिश्राम में प्रवेश न करेंगे; जो लोग विश्वास न

लाये; क्या उन पर कि नहीं। सो हम देखते हैं कि वे लोग अविश्वास के कारण से प्रवेश न कर सके॥ १९

४ पर्व्व

सो जब कि उस के बिश्राम में प्रवेश करने को बाचा रह गई है तब चाहिये कि हम डरें; क्या जाने कि हम में से कोई पीछे रह जाय। क्योंकि जैसा उन्हें २ वैसा हमें भी मंगल समाचार सुनाया गया है परन्तु जो बचन उन्हों ने सुना उस से उन को कुछ लाभ न ज़ुआ क्योंकि सुन्नेहारों ने बिश्वास लाके नहीं सुना। सो हम लोग बिश्वास लाके बिश्राम को पज़ुंचते हैं ३ कि उस ने यों कहा मैं ने क्रोध करके किरिया खाई कि वे लोग मेरे बिश्राम में प्रवेश न करेंगे जो कि जगत की रचना से सब काम बने। क्योंकि सातवें ४ दिन के विषय में उस ने किसी स्थल में यों कहा परमेश्वर ने अपने सारे काम करके सातवें दिन बिश्राम किया। फिर इस स्थल में कहता है वे लोग ५ मेरे बिश्राम में प्रवेश न करेंगे। सो जब कि कितने ६ लोगों के लिये उस में प्रवेश करना रह गया और जिन लोगों को मंगल समाचार पहिले सुनाया गया उन्हों ने अविश्वास के कारण से प्रवेश न किया। तब ७ वह उस के बड़ी बेर पीछे फिर दाऊद के द्वारा एक दिन ठहराता और उसे आज का दिन कहता जैसा कि लिखा है यदि आज तुम उस की वाणी सुनो तो तुम लोग अपने मनों को कठोर मत करो। सो यदि यिसू ८ ने उन्हें बिश्राम को पज़ुंचाया होता तो वह उस के

९ पीछे दूसरे दिन के विषय में न कहता। सो एक बिश्रामवार का मान्ना परमेश्वर के लोगों के लिये १० रह गया है। क्योंकि जिस ने अपने बिश्राम में प्रवेश किया सो जैसा कि परमेश्वर ने अपने कामों से वैसा ११ उस ने भी अपने ही कामों से बिश्राम पाया। सो आओ हम उस बिश्राम में प्रवेश करने को यत्न करें ऐसा न होवे कि उन लोगों के समान अविश्वास के कारण १२ कोई गिर पड़े। क्योंकि परमेश्वर का बचन जीवता और गुणकारी और हर एक दो धारी तलवार से चोखा है और प्राण और आत्मा को और गांठ गांठ और गूदे गूदे को अलग करके बेध जाता है और मन की चिन्ताओं को और मनसाओं को जांचता है। १३ और कोई सिरजी हुई वस्तु उस के आगे छिपी नहीं है परन्तु जिस ही से हम को काम है उस की दृष्टि में सारी वस्तें नंगी और खुली हुई हैं।

१४ सो जब कि हमारा एक बड़ा महायाजक जो स्वर्ग से पार चला गया अर्थात परमेश्वर का पुत्र यिसू है १५ तो आओ हम अपने मत पर दृढ़ रहें। क्योंकि ऐसा महायाजक जो हमारी दुर्बलताओं में हम लोगों के दुःख से दुःखी न हो सके वैसा हमारा नहीं है परन्तु सब बातों में वह हमारे समान परखा गया पर पाप १६ रहित। इस लिये आओ हम लोग ढाड़स बन्धके कृपा के सिंहासन के पास जावें जिसतें हम दया पावें

और प्रयोजन के समय में उपकार के लिये कृपा
पावें ॥

५ पर्ब्ब

क्योंकि हर एक महायाजक जो मनुष्यों में से लिया
जाता है सो मनुष्यों के कारण उन बातों के लिये जो
परमेश्वर से संबंध रखती हैं ठहराया जाता है जिसतें
वह भेंट और पापबलि चढ़ावे। और वह अज्ञानियों २
पर और भटके हुओं पर मया कर सके क्योंकि वह
आप भी दुर्बलताओं से घिरा हुआ है। और इसी ३
कारण भी चाहिये कि जैसा लोगों के लिये वैसा वह
अपने लिये पापबलि चढ़ावे। और कोई मनुष्य आप ४
से यह पद नहीं लेता है परन्तु जो हारून के समान
परमेश्वर से बुलाया गया है सो ही पाता है। वैसा ५
ही मसीह ने भी महायाजक होने का महातम आप
ही अपने लिये नहीं लिया परन्तु जिस ने उस से कहा
तू मेरा पुत्र है आज तू मुझ से उत्पन्न हुआ उसी
ने वह दिया। वैसा ही वह आन स्थल में कहता है ६
तू मल्कीसिदक की रीति पर सदाकाल का याजक
है। उस ने अपने देहधारण के दिनों में अति विलाप ७
कर करके और आंसू बहा बहाके उस से जो उसे
मृत्यु से बचा सकता था प्रार्थनाएं और बिन्तियां कियां
और डर से बचके सुना गया। यद्यपि वह पुत्र था ८
तथापि उस ने दुःख उठाने से आधीनता साध लिई।
और सिद्ध होके वह अपने आधीन लोगों के लिये ९

१० सदा के निस्तार का कर्त्ता ज़ुआ। और परमेश्वर से मल्कीसिदक की रीति पर महायाजक कहलाया।

११ उस के विषय में हमारी बज़ुत सी बातें हैं पर उन का बर्णन करना कठिन है क्योंकि तुम्हारे कान भारी १२ हैं। क्योंकि इतने समय में चाहिये था कि तुम लोग उपदेशक होते परन्तु अब भी अवश्य होता कि परमेश्वर के धर्मोपदेश के मूल सूचों को कोई तुम लोगों को फिरके सिखावे और तुम्हें दूध पिलावे न कि कड़ा १३ भोजन खिलावे। क्योंकि हर एक जो दूध पिया करता है सो धर्म के बचन में अप्रवीण है क्योंकि वह बच्चा १४ है। परन्तु कड़ा भोजन सियाने लोगों के लिये है कि अभ्यास करने से वे भले और बुरे का बिचार करने को चैतन्य के निपुण ज़ुए हैं॥

६ पर्ब्ब

इस कारण मसीह की शिक्षा की पहिली बातों को छोड़के हम लोग संपूर्णता को बढ़ते चले जावें और बेजान कामों से मन फिराने की और परमेश्वर २ पर विश्वास लाने की। और बपतिसमों की शिक्षा की और हाथ रखने की और मृतकों के जी उठने की और सदाकाल के न्याय की नेव फिरके न डालें। ३ ४ और जो परमेश्वर चाहे तो हम वह करेंगे। क्योंकि जो लोग एक बार उजाला लिये गये और स्वर्गीय दान ५ का स्वाद पाया और पवित्र आत्मा के भागी ज़ुए। और परमेश्वर के उत्तम बचन का और आनेवाले जगत ६ के सामर्थ्य का स्वाद पाया। यदि वे भ्रष्ट हो जायें तो

उन्हें मन फिराने को नये सिर से रचना अनहोना है क्योंकि उन्हों ने परमेश्वर के पुत्र को फिरके अपने लिये क्रूस पर खींचा और खोलके उस का अपमान किया है।

क्योंकि जो भूमि मेंह को जो उस पर फिर फिर बरसे पी जाती है और किसान के काम की हरियाली उपजाती है सो परमेश्वर से आशीश पाती है। पर जो भूमि कांटे और ऊंटकटारे उपजाती है सो अभाई ऊई है और स्रापित होने पर है; उस का अन्त यह है कि जलाई जाय। परन्तु हे प्यारो यद्यपि हम यों बोलते हैं तथापि तुम्हारे विषय में हम उन से अच्छी और निस्तारवाली बातों का प्रबोध रखते हैं। क्योंकि परमेश्वर अन्यायी नहीं है कि तुम्हारे काम को और प्रेम के परिश्रम को जो तुम्हों ने उस के नाम पर सन्तों की सेवा करके दिखलाया है और दिखलाते हो भूल जावे। | ७ ८ ९ १०

और हम चाहते हैं कि हर एक तुम्हों में से आशा का पूरा निश्चय पाने के लिये अन्त लों जतन करे। कि तुम लोग आलसी न होओ परन्तु जो लोग बिश्वास और धीरज करते ऊए बाचा के अधिकारी ऊए हैं उन की चाल पर तुम लोग चलो। क्योंकि परमेश्वर ने अबिरहाम को बाचा देते ऊए जब अपने से बड़ा किसी को न पाया कि उस की किरिया खावे तब अपनी किरिया खाके कहा। निश्चय मैं तुझे आ- | ११ १२ १३ १४

शीश पर आशीश देऊंगा और तेरे बंश को बढ़ाते
१५ बढ़ाऊंगा। और यों धीरज करके उस ने बाचा को
१६ प्राप्त किया। सचमुच लोग बड़े ही की किरिया खाते
हैं और उन्हें में किसी बात को दृढ़ करने के लिये
१७ हर एक झगड़े का अन्त किरिया है। इस से परमेश्वर
ने जब मनसा किई कि बाचा के अधिकारियों पर
दृढ़ प्रमाण से अपनी इच्छा की अटलता देखावे तब
१८ किरिया को अंतर लाया। जिसतें दो अटल बातें
से कि जिन में परमेश्वर का झूठा ठहरना अनहोना
था हम लोग जो साम्हने रखी ऊई आशा को धरने
के लिये शरणागत ऊए हैं सो दृढ़ संबोधन पावें।
१९ वह आशा हमारे प्राण का दृढ़ और स्थिर लंगर है
२० और परदे के भीतर पऊंचती है। उस में हमारे
अगवा यिसू ने जो मल्कीसिदक की रीति पर सदाकाल
का महायाजक है हमारे कारण प्रवेश किया॥

७ पर्व्व

क्योंकि यह मल्कीसिदक सलीम का राजा और अति
महान परमेश्वर का याजक था; वह अबिरहाम से
जब वह राजाओं को मारके फिरा आता था तब जा
२ मिला और उसे आशीश दिई। अबिरहाम ने सारे
द्रव्य का दशांश भी उसे दिया; वह पहिले अपने नाम
के अर्थ के समान धर्म का राजा है; और फिर भी
३ सलीम का राजा अर्थात कुशल का राजा है। बिना
पिता बिना माता बिना बंशावली; उस के न तो दिनों

का आदि है न जीवन का अन्त है परन्तु परमेश्वर के पुत्र के समान होके वह नित्य याजक रहता है।

४ अब बिचार करो कि जिस जन को अबिरहाम पित्राध्यक्ष ने लूट के द्रव्य का दशांश दिया वह कैसा ५ महापुरुष था। फिर लावी के पुत्रों में से जो याजकता का काम पाते हैं उन्हें आज्ञा है कि लोगों से अर्थात अपने भाइयों से यद्यपि वे अबिरहाम की कटि से ६ निकले तौ भी व्यवस्था के समान दशांश लेवें। परन्तु जिस जन की वंशावली उन से न चली आती है उस ने अबिरहाम से दशांश लिया; और जिसे बाचा मिली ७ थी उसे उस ने आशीश दिई। और निःसन्देह छोटा ८ जो है सो बड़े से आशीश पाता है। और यहां मरने-वाले मनुष्य दशांश लेते हैं परन्तु वहां जिस के विषय में साक्षी दिई गई कि वह जीता है सो ही लेता है। ९ बरन यह भी हम कह सकते हैं कि दशांश लेनेवाला १० लावी ने अबिरहाम के द्वारा से दशांश दिया। क्योंकि जिस समय मल्कीसिदक उसे जा मिला उस समय वह अपने पिता की कटि में था।

११ सो यदि लावीवाली याजकता से सिद्धि हुई होती (क्योंकि व्यवस्था जो लोगों को मिली सो उसी पर ठहरी) फिर क्या चाहिये था कि दूसरा याजक मल्की-सिदक की रीति पर निकले और हारून की रीति पर १२ न कहलावे। फिर जहां याजकता बदल जाय तहां १३ व्यवस्था को भी बदल डाला चाहिये। क्योंकि जिस

के विषय में ये बातें कही जातीं हैं सो दूसरे पितृबंश में से है और उस में से किसी ने यज्ञबेदी की सेवा
१४ नहीं किई। क्योंकि यह बात प्रमाण है कि यहूदाह पितृबंश जिस के विषय में मूसा ने कुछ याजकता की बात न कही थी उस में से हमारा प्रभु निकला।
१५ और यह बात और भी अति प्रमाण है कि दूसरा
१६ याजक मल्कीसिदक के तुल्य उठता है। और वह शारीरिक आज्ञा की व्यवस्था के समान नहीं परन्तु
१७ अनन्त जीवन के सामर्थ्य के समान बना है। क्योंकि वह साची देता है तू मल्कीसिदक की रीति पर सदाकाल का याजक है।

१८ सो अगली आज्ञा निर्बल और निष्फल होने के
१९ कारण उठ गई। क्योंकि व्यवस्था ने कुछ सिद्ध नहीं किया परन्तु एक अति अच्छी आशा ने प्रवेश किया और उस के द्वारा से हम परमेश्वर के समीप पहुंचते हैं।

२० फिर जैसा यिसू बिना किरिया खाने के ठहराया न गया था वैसा ही वह एक अति अच्छे नियम का जा-
२१ मिन हुआ। क्योंकि याजक लोग तो बिना किरिया के ठहराये जाते हैं परन्तु यही किरिया खाने के संग उसी से याजक बना कि जिस ने उस से कहा प्रभु ने किरिया खाई और न पछतावेगा कि तू मल्कीसिदक
२२ की रीति पर सदाकाल का याजक है। फिर जो याजक
२३ होते चले आये सो बहुत से थे। क्योंकि वे मरने

के कारण से रह न सके। पर यह जो है सो सदा- २४
काल रहने से एक अचल याजकता का अधिकारी हु-
आ। इसी लिये जो लोग उस के द्वारा से परमेश्वर २५
के पास आते हैं उन्हें वह संपूर्णता लों बचाने को
शक्तिमान है क्योंकि वह उन के लिये परार्थ बिन्ती
करने को सदा जीता है।

और ऐसा महायाजक जो पवित्र निर्दोष कलंकहीन २६
और पापियों से अलग और स्वर्गों से भी महान है
सो हमारे योग्य भी था। और उन महायाजकों के २७
समान इस के लिये प्रयोजन न था कि प्रतिदिन पहिले
अपने पापों के लिये और फिर लोगों के पापों के
लिये बलिदान चढ़ावे क्योंकि उस ने आप को बलि
देके एक बार में यह किया। कि व्यवस्था दुर्बल मनुष्यों २८
को महायाजक ठहराती है परन्तु किरिया का बचन
जो व्यवस्था के पीछे हुआ सो सदाकाल के प्रतिष्ठित
पुत्र को महायाजक ठहराता है॥

८ पर्ब्ब

अब जो कुछ कि हम ने कहा है उस का यह तात्पर्य
है कि हमारा एक ऐसा महायाजक है जो स्वर्ग में
महामहिमा के सिंहासन के दहिने बैठा है। और २
वह पवित्रालय का और सच्चे तंबू का सेवक है कि
मनुष्य ने नहीं परन्तु प्रभु ने उसे खड़ा किया है। क्योंकि ३
हर एक महायाजक भेंट और बलिदान चढ़ाने के
लिये ठहराया जाता है; सो उस को भी चाहिये
कि चढ़ाने को कुछ उस के पास हो। जो वह पृथिवी ४

पर होता तो याजक न होता इस लिये कि याजक
५ तो हैं और वे व्यवस्था के समान भेंट चढ़ाते हैं। वे
स्वर्गीय वस्तुओं के दृष्टान्त और परछाईं पर सेवा
करते हैं; कि जब मूसा तंबू को बनाने पर था तब
उसे परमेश्वर से प्रकाशवाणी मिली; वह कहता है
देख जो कुछ तुझे पहाड़ पर दिखलाया गया उस
६ के डौल पर तू सारी वस्तें बना। अब जैसा यिसू उस
से उत्तम नियम का बिचवई हुआ जो अति उत्तम
बाचाओं से किया गया वैसा ही उस ने उस से उत्तम
सेवकाई पाई है।

७ क्योंकि जो वह पहिला नियम संपूर्ण हुआ होता
८ तो दूसरे की जगह का खोज नहीं होता। सो वह
उस को असंपूर्ण ठहराके उन से बोलता है कि प्रभु
कहता है देख वे दिन आते हैं कि मैं इसराएल के
घराने और यहूदाह के घराने के ऊपर एक नया नि·
९ यम ठहराऊंगा। प्रभु कहता है कि जैसा नियम मैं
ने उन के पितरों के संग उस दिन में किया जब उन्हें
मिसर देश से निकाल लाने को मैं ने उन का हाथ
पकड़ा उस नियम के समान वह नहीं होगा क्योंकि
वे मेरे नियम पर स्थिर न रहे और मैं ने उन्हों की
१० चिन्ता नहीं किई। प्रभु कहता है जो नियम मैं इन
दिनों के पीछे इसराएल के घराने से करूंगा सो यह
है मैं अपनी व्यवस्थाओं को उन की बुद्धि में डालूंगा
और उन्हें उन के मनों पर लिखूंगा और मैं उन का

परमेश्वर हूंगा और वे मेरे लोग होंगे। और कोई अपने पड़ोसी को और कोई अपने भाई को सिखला- ने को न कहेगा कि तू प्रभु को जान; क्योंकि छोटे से बड़े लों सब लोग मुझे जानेंगे। क्योंकि मैं उन की अधर्मता पर दया करूंगा और उन के पापों को और अपराधों को मैं फिर स्मरण न करूंगा। और जब उस ने कहा कि नया तब पहिले को पुराना ठहराया; फिर जो कुछ पुराना और दिनी ज्जआ सो जाता रहने पर है।

९ पर्ब्ब

सो पहिले तंबू में पूजा की बिधें भी थीं और एक लौकिक पवित्रालय था। कि पहिला तंबू जो बनाया गया उस में दीवट थी और मेज और भेंट की रोटियां थीं; और उसे पवित्र आलय कहते हैं। और दूसरे परदे के परे वह तंबू था जो महापवित्र आलय कहा- वता है। उस में सोने का धूपपात्र था और नियम का सन्दूक जो चारों ओर सोने से मढ़ा था; उस में एक सोने का पात्र मन्न से भरा ज्जआ था और हारून की छड़ी जिस में डालियां फूटीं थीं और नियम की पटियां थीं। और उस के ऊपर तेजस्वी करूबीम थे; वे प्रायश्चित्त निधान पर छाया करते ज्जए थे; उन के विषय में हम अब अलग अलग कर के वर्णन नहीं कर सकते हैं।

सो जब ये बस्तें यों सिद्ध हो चुकीं तब पहिले तंबू में याजक हर समय प्रवेश करके सेवा करते थे।

११ १२ १३ २ ३ ४ ५ ६

७ पर दूसरे में महायाजक अकेला बरस भर में एक बार जाता था परन्तु बिना लोहू नहीं और वह उसे अपनी ८ और लोगों की भूल चूक के लिये चढ़ाता था। इस से पवित्र आत्मा यह बताता था कि जब लों पहिला तंबू खड़ा रहा तब लों महापवित्र आलय का मार्ग न ९ खुला था। वह तंबू इस समय लों एक दृष्टान्त है कि उस में भेंट और बलिदान चढ़ाये जाते हैं और वे सेवा करनेहारों को उन के मन के विषय में सिद्ध नहीं १० कर सके। कि वे केवल खाना और पीना और नाना प्रकार के स्नान जो हैं सो शारीरिक धर्म के कर्म होके सुधराई के समय लों ठहराये गये थे।

११ पर जब मसीह आनेवाले उत्तम पदार्थों का महा-याजक होके आया तब उस ने एक उस से महान और अति सिद्ध तंबू के द्वारा से जो हाथों का बना नहीं १२ अर्थात जो इस रचना का नहीं है। और न बकरों न बछड़ों का लोहू लेके परन्तु अपना ही लोहू लेके एक बार पवित्रालय में प्रवेश किया कि उस ने हमारे लिये १३ सदाकाल का मोक्ष प्राप्त किया। क्योंकि जो बैलों और बकरों का लोहू और कलोर की राख अपवित्र लो-गों पर छिड़की जाने से शरीर को शुद्ध करके उन्हें १४ पवित्र करती है। तो मसीह का लोहू जिस ने निष्-कलंक होके सनातन के आत्मा के द्वारा से अपने को परमेश्वर के आगे चढ़ाया सो कितना अधिक करके

तुम्हारे मनों को बेजान कामों से पवित्र करेगा जिसतें तुम लोग परमेश्वर की सेवा करो।

१५ और वह इसी लिये नये नियम का बिचवई है जिसतें जब वह पहिले नियम के अपराधों के छुड़ाने के लिये मृत्यु पावे तो जो लोग बुलाये हुए हैं सो सर्व्वदा के अधिकार की वाचा को प्राप्त करें। १६ क्योंकि जहां नियम है वहां उस बल की मृत्यु कि जिस पर वह ठहराया जाता है अवश्य है। १७ क्योंकि नियम मरे हुओं पर प्रमाण ठहरता है और जब तक वह बल जीता है तब तक नियम पक्का नहीं है।

१८ इस कारण पहिला नियम भी बिना लोहू से स्थापित नहीं किया गया। १९ क्योंकि जब मूसा ने व्यवस्था के समान हर एक आज्ञा सारे लोगों को कह सुनाई थी तब उस ने बछड़ों और बकरों का लोहू जल और लाल ऊन और जूफा के संग लेकर पुस्तक पर और सारे लोगों पर छिड़कके कहा। २० उस नियम का लोहू जो परमेश्वर ने तुम्हारे लिये ठहराया सो यह है। २१ और उस ने तंबू पर और आराधना के सारे पात्रों पर भी लोहू छिड़का। २२ और बहुधा सारी बस्तें व्यवस्था के समान लोहू से पवित्र किई जाती हैं और बिना लोहू बहाये पापमोचन नहीं होता है।

२३ सो स्वर्गीय बस्तुओं की प्रतिमाएं इन्हीं से पवित्र किया चाहिये थीं परन्तु स्वर्गीय बस्तें आप ही इन्हों से अच्छे बलिदानों से पवित्र करना अवश्य था। २४ क्योंकि

जो पवित्रालय हाथों का बनाया ज़आ है और जो सच्चे की प्रतिमा है उस में नहीं परन्तु स्वर्ग ही में मसीह ने प्रवेश किया जिसतें वह अब से परमेश्वर के आगे
२५ हमारे लिये उपस्थित रहे। फिर जैसा महायाजक दूसरे का लोहू लेके पवित्रालय में बरस बरस प्रवेश करता है वैसे अपने को फिर फिर करके चढ़ाना
२६ उसे अवश्य नहीं था। नहीं तो जगत के आरंभ से उसे फिर फिर करके मरा करना चाहिये होता परन्तु अब अन्त के समय में वह एक ही बार प्रगट ज़आ है जिसतें अपने को बलिदान देके पाप को नाश
२७ करे। और जैसा कि मनुष्यों के लिये ठहराया गया है कि एक बार मरना और उस के पीछे न्याय होता
२८ है। वैसा ही मसीह बज़तेरों के पापों को उठाने के लिये एक बार चढ़ाया गया; और जो उस की बाट जोहते हैं उन्हें वह दूसरी बार बिना पाप उन के निस्तार के लिये प्रगट होगा॥

१० पर्ब्ब

व्यवस्था जो आनेवाली पदार्थों की परछाईं है और उन वस्तुओं की सच्ची प्रतिमा नहीं है सो उन बलिदानों से जो वे बरस बरस नित्य चढ़ाया करते थे उन को जो वहां आते हैं कभी सिद्ध नहीं कर सकती है।
२ नहीं तो उन का चढ़ाना बन्द हो जाता क्योंकि आराधना करनेहारे एक बार पवित्र होके आगे को
३ अपने तईं पापी नहीं जानते। परन्तु उन बलिदानों से बरस बरस पापों की सुरत ज़आ करती है।

क्योंकि बैलों और बकरों के लोहू से पापों को मिटाना अनहोनी बात है। इस लिये वह जगत में आते हुए कहता है बलिदान को और अर्पण को तू ने नहीं चाहा परन्तु मेरे लिये एक देह तैयार किई। होम से और पापबल से तू प्रसन्न न था। तब मैं ने कहा कि देख मैं आता हूं (पुस्तक के कांड में मेरे विषय में लिखा है) जिसतें हे परमेश्वर तेरी इच्छा पर मैं चलूं। पहिले जब उस ने कहा कि बलिदान को और अर्पण को और होम को और पापबल को तू ने नहीं चाहा और उन से प्रसन्न न था और ये बलि व्यवस्था की रीति पर चढ़ाये जाते हैं। तब उस ने कहा कि देख हे परमेश्वर मैं आता हूं जिसतें तेरी इच्छा पर चलूं; सो वह पहिले को मिटाता है जिसतें दूसरे को स्थापित करे। उसी इच्छा के कारण से हम यिसू मसीह की देह के एक ही बार बलिदान होने से पवित्र किये गये हैं। और हर एक याजक प्रतिदिन खड़ा होके सेवा किया करता है और एक ही प्रकार के बलिदान जो पाप को मिटाने नहीं सकते हैं फिर फिर कर के चढ़ाया करता है। परन्तु यह जो है जब उस ने पापों का एक ही बलिदान सर्वदा के लिये चढ़ाया था तब परमेश्वर के दहिने जा बैठा है। और तब से ले इस बात की बाट जोहता है कि मेरे बैरी मेरे पांवों तले की पीढ़ी हो जावें।

क्योंकि एक ही अर्पण से उस ने पवित्र किये हुओं

४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४

१५ को सर्वदा के लिये सिद्ध किया है। पवित्र आत्मा भी हमारे लिये साची देता है क्योंकि जब उस ने कहा
१६ था। यह वह नियम है जो मैं उन दिनों के पीछे उन्हों से करूंगा तब प्रभु कहता है मैं अपनी व्यवस्था को उन के मनों में डालूंगा और उन्हें उन की बुद्धि में
१७ लिखूंगा। और उन के पापों को और अपराधों को
१८ मैं फिर स्मरण न करूंगा। अब जहां इन्हों का मोचन है वहां पाप के लिये फिर कुछ चढ़ाना नहीं है।

१९ सो हे भाइयो जब कि हमें यिसू के लोहू से महा-
२० पवित्र आलय में प्रवेश करने की ढाड़स है। उस नये और जीते मार्ग से कि जिसे उस ने परदे के द्वारा से अर्थात अपने शरीर के द्वारा से हमारे लिये तैयार
२१ किया है। और जब कि परमेश्वर के घर के ऊपर
२२ हमारा बड़ा याजक है। तो आओ हम खरे मन से और बिश्वास के पूरे भरोसे से और मन के बुरे धर्म-बोध पर छिड़काव किये हुए और अपनी देह को
२३ निर्मल जल से धोये हुए निकट जावें। और अपनी आशा का मान्ना बिना डगमगाने से थाम्भे रहें क्योंकि
२४ बाचा करनेहारा बिश्वस्त है। और हम एक दूसरे पर चिन्ता करें कि एक दूसरे को प्यार और अच्छे
२५ काम करने को उस्कावें। और जैसा कितनों की चाल है वैसे हम लोग न करें और आपस में एकट्ठा होना न छोड़ें परन्तु हम एक दूसरे को उपदेश देवें और

जितना तुम लोग देखते हो कि दिन निकट होता जाता है उतना अधिक तुम ऐसा करना।

क्योंकि जो हमें ने सच्चाई के ज्ञान को प्राप्त किया और इस के पीछे हठ करके पाप करें तो पाप के कारण कोई बलिदान आगे को नहीं रहा। परन्तु न्याय और आग की जलजलाहट जो बिरोध करनेवालों को खा जायगी उस का भयानक बाट जोहना रहा है। जो कोई मूसा की व्यवस्था को तुच्छ जानता है सो दो तीन साक्षियों के प्रमाण पर बिना दया मारा जाता था। फिर जिस जन ने परमेश्वर के पुत्र को पांव तले कर दिया और जिस नियम के लोहू से वह पवित्र किया गया उस को जिस ने अपवित्र जाना और जिस ने कृपा के आत्मा को तुच्छ किया सो कितना अधिक दण्ड के योग्य ठहरेगा। क्योंकि हम उसे जानते हैं जिस ने यह कहा है पलटा लेना मेरा काम है; प्रभु कहता है मैं ही डांड देऊंगा; और फिर यह कि प्रभु अपने लोगों का न्याय करेगा। जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है।

२६ २७ २८ २९ ३० ३१

परन्तु अगिले दिनों को स्मरण करो कि उन में तुम्हों ने प्रकाशमय होके दुःखों के बड़े युद्ध को सह लिया। कुछ तो इस से कि तुम लोग निन्दा के और कष्टों के उठाने के कारण औरों के आगे सवांग से ठहरे और कुछ इस से कि इन बातों के उठानेवालों के संगती हुए। क्योंकि जब मैं जंजीरों में था तब तुम

३२ ३३ ३४

लोग मेरे संग दुःखी ऊए और अपनी संपत्ति का लुट जाना आनन्द से ग्रहण किया यह जानके कि एक ऐसी संपत्ति जो उस से उत्तम है और जो बनी रहेगी सो हमारे लिये स्वर्ग में धरी है। ३५ सो तुम लोग अपनी ढाड़स को मत खोओ कि उस का बड़ा फल है। ३६ क्योंकि तुम्हें धीरज धरा चाहिये जिसतें परमेश्वर की इच्छा को पालन करके तुम लोग बाचा को पऊंचो। ३७ क्योंकि थोड़ी बेर और है तब जो आनेवाला है सो आवेगा और अबेर न करेगा। ३८ फिर धर्मी बिस्वास से जीयेगा परन्तु जो वह हट जावे तो मेरा प्राण उस से प्रसन्न न होगा। ३९ परन्तु जो लोग नष्ट होने को हटे जाते हैं उन में के हम नहीं हैं परन्तु जो लोग प्राण बचाने को बिस्वास लाते हैं उन्हीं में से हम हैं॥

११ पर्व्व

अब बिस्वास आशा की बातों का तत्व है और अन-देखी बस्तुओं का प्रमाण है। २ उस ही से प्राचीनों के लिये साक्षी दिई गई।

३ बिस्वास ही से हम जानते हैं कि परमेश्वर के बचन से जगत रचे गये ऐसा कि जो बस्तें देखने में आतीं हैं सो देखी वस्तुओं से नहीं बनीं हैं।

४ बिस्वास से हाबिल ने काइन से अच्छा बलिदान परमेश्वर को चढ़ाया; उसी के कारण उस पर यह साक्षी ऊई कि धर्मी है क्योंकि परमेश्वर ने उस की भेंटों पर साक्षी दिई और उसी के कारण यद्यपि वह मर गया तौ भी उस का बखान अब लों किया जाता।

विश्वास के कारण हनूख उठाया गया जिसतें मृत्यु को न देखे और वह न मिला इस लिये कि परमेश्वर नें उसे उठाय लिया क्योंकि उस के उठ जाने से पहिले उस पर यह साची ठहरी थी कि उस ने परमेश्वर को प्रसन्न किया। परन्तु बिना बिश्वास से परमेश्वर को प्रसन्न करना अनहोना है क्योंकि जो परमेश्वर कने आता है उस को यह बिश्वास चाहिये कि वह है और कि वह अपने ढूंढनेहारों का फलदाता है। ५ ६

बिश्वास से नूह ने जो बातें तब लों देखने में नहीं आई थीं उन की चितावनी परमेश्वर से पाके डर से जहाज को अपने घराने के बचाव के लिये बनाया और उसी से उस ने संसार को दोषी ठहराया और जो धर्म बिश्वास से मिलता है उस का वह अधिकारी हुआ। ७

बिश्वास से अबिरहाम जब बुलाया गया तब आज्ञाकारी होके जिस जगह को वह अधिकार में पाने को था उस के लिये निकल गया और यद्यपि वह न जानता था कि किधर जाता है तौभी निकल चला। बिश्वास से उस ने बाचावाली भूमि में जैसे वह उस को न थी वैसा प्रवास किया और इसहाक और याकूब समेत जो उसी बाचा के संगी अधिकारी थे तंबुओं में रहा किया। क्योंकि एक नगर जिस की नेवें हैं और जिस का बनानेवाला और रचनेवाला परमेश्वर है उस में जाने का वह आसरा रखता था। बिश्वास से सारा ने भी गर्भवती होने की शक्ति पाई और अवस्था बीते ८ ९ १० ११

पर जनी क्योंकि उस ने बाचा करनेवाले को बिश्वस्त
१२ जाना। इस लिये एक ही जन से और सो भी मरा सा था बहुताई में आकाश के तारों के समान और समुद्र तीर की रेत के समान अगणित लोग उपजे।
१३ ये सब लोग बाचाओं को न पहुंचके बिश्वास करके मर गये परन्तु उन्हों ने दूर से उन्हें देखा और निश्चय किया और उन्हें प्रिय जानके ग्रहण किया और मान लिया कि हम पृथिवी पर परदेशी और प्रवासी हैं।
१४ क्योंकि जो लोग ऐसी बातें कहते हैं सो प्रगट करते
१५ हैं कि हम अपना देश ढूंढते हैं। और जो वे उस देश को कि जिस से वे निकल गये सुरत करते तो
१६ उन्हें उधर को लौटने का अवसर था। परन्तु वे एक उस से अच्छे देश के अर्थात एक स्वर्गीय देश के अभिलाषी थे; इस कारण परमेश्वर उन से नहीं लजाता है कि उन का परमेश्वर कहावे क्योंकि उस ने उन के लिये एक नगर तैयार किया है।

१७ बिश्वास से अबिरहाम ने जब परीक्षा किया गया इसहाक को बलि में दिया; हां जिस ने बाचाओं को
१८ पाया था उस ने अपने एकलौते को चढ़ाया। अर्थात उस को जिस के विषय में यह कहा गया था कि इसहाक
१९ ही से तेरा वंश कहा जायगा। क्योंकि वह यह समझा कि परमेश्वर उस को मृतकों में से भी जिलाने पर शक्तिमान है; वहां से उस ने उसे दृष्टान्त के लिये फिर पाया।

विश्वास से इसहाक ने आनेवाली बातों के विषय में याकूब और एसौ को आशीश दिई। विश्वास से याकूब ने मरतेकाल यूसफ के दोनों पुत्रों को आशीश दिई और अपने दण्ड के सिरे पर टेकके दण्डवत किई। विश्वास से यूसफ ने जब मरने पर था तब इसराएल के सन्तानों के सिधारने की बात कही और अपनी हड्डियों के विषय में आज्ञा दिई। | २० २१ २२

विश्वास से मूसा उत्पन्न होके तीन महीने लों अपने माता पिता से छिपाया गया क्योंकि उन्हों ने देखा कि बालक सुन्दर है; और वे राजा की आज्ञा से न डरे। विश्वास से मूसा ने जब सियाना हुआ तब फिरऊन की पुत्री का पुत्र कहाने न चाहा। कि परमेश्वर के लोगों के संग दुःख उठाना उस ने थोड़े समयवाले पाप के सुख भोगने से बहुत अच्छा जाना। और उस ने मसीही अपमान को मिसर के निधानों से बड़ा धन समझा क्योंकि उस की दृष्टि प्रतिफल पाने पर थी। विश्वास से उस ने राजा के क्रोध से भय न खाके मिसर को छोड़ा क्योंकि उस ने अनदेखे को मानो देखा और दृढ़ बना रहा। विश्वास से उस ने फसह करने को और लोहू छिड़कने को धारण किया न होवे कि पहिलौठों का नाशक उन्हें छूवे। विश्वास से वे लाल समुद्र से जैसे सूखे से पार गये; और मिसरियों ने जब उस मार्ग से जाने चाहा तब डूब मरे। विश्वास से यरीहो की भीतें जब उन्हें सात दिन तक घेर रखीं | २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३०

३१ थीं तब गिर गईं। बिश्वास से राहाब जो वेश्या थी सो भेदियों को कुशल से ग्रहण करके अबिश्वासियों के संग नाश न हुई।

३२ अब मैं और क्या कहूं; इतना अवसर कहां है जो मैं जदऊन की और बरक की और समसून की और यफतह की और दाऊद की और समुएल की और ३३ भविष्यतवक्ताओं की कथा कहता। उन्हों ने बिश्वास से राज्य जीत लिये और धर्म के काम किये और बाचाओं को प्राप्त किया और सिंहों के मुंह बन्द ३४ किये। और आग के तेज को बुझा दिया और तल-वार की धारों से बच निकले और दुर्बलता में बलवान हुए और युद्ध में बीर बने और अन्यदेशियों की से-३५ नाओं को हटा दिया। स्त्रियों ने अपने मरे हुओं को जी उठे हुए पाया; कोई कोई पीटे गये और छुटकारा ग्रहण नहीं किया जिसतें वे अति अच्छे ३६ पुनरुत्थान को पहुंचें। कोई कोई ऐसी परीक्षा में पड़े कि ठट्ठों में उड़ाये गये; कोड़े मारे गये; बरन ३७ जंजीरों में और बन्ध में भी पड़े। वे पत्थराओ किये गये; आरे से चीरे गये; कसन किये गये; तलवार से मारे गये; वे भेड़ों और बकरियों की खाल ओढ़े हुए ३८ दरिद्री में कष्ट में दुर्दशा में होके मारे फिरे। संसार उन के योग्य नहीं था; वे बन बन में और पहाड़ों पर और गुफाओं में और भूमि के गढ़ों में भरमते फिरे। ३९ और ये सब लोग जिन के बिश्वास पर साक्षी दिई गई

४० सो बाचा को न पहुंचे। क्योंकि परमेश्वर ने अग्रदृष्टि करके हमारे लिये उस से कुछ अच्छी बात ठहराई थी जिसतें वे हमें छोड़के सिद्ध न हो जावें॥

१२ पर्व्व

सो जब कि साक्षी लोगों की इतनी बड़ी घटा ने हमें आ घेरा है तो हर एक बोझ और लिपटनेवाले पाप को उतारके हम उस दौड़ में जो हमारे आगे आ पड़ी है धुन देके दौड़ें। २ और यिसू को जो बिश्वास का आदिकर्ता और पूर्णकर्ता है ताकते रहें; उस ने उस आनन्द के लिये जो उस के आगे धरा था अपमान को कुछ नहीं समझके क्रूस को सहा और वह परमेश्वर के सिंहासन के दहिने जा बैठा।

३ क्योंकि जिस ने अपने बिरोध में पापियों से ऐसी बिपरीतता सही है उस को तुम लोग सोचो न होवे कि तुम अपने मनों में उदास और निराश हो जाओ। ४ तुम्हों ने पाप के बिरुद्ध में अति परिश्रम करते करते अब लों लोहू तक सामना नहीं किया। ५ और जो उपदेश तुम्हों से जैसे पुत्रों से कहती है कि हे मेरे पुत्र प्रभु की ताड़ना को छोटी बात मत जान और जब वह तुझे दपटे तब तू बेमन मत हो जा क्या तुम लोग उसे भूल गये हो। ६ क्योंकि जिसे प्रभु प्यार करता है उसे वह ताड़ना करता है और हर एक पुत्र जिसे वह ग्रहण करता है उसे वह पीटता है। ७ जो तुम लोग ताड़ना सहो तो परमेश्वर तुम्हारा जैसे

पुत्रों का प्रतिपाल करता है क्योंकि कौन सा पुत्र है
८ जिसे पिता ताड़ना नहीं करता। परन्तु वह ताड़ना
जिस के सब लोग भागी ऊए हैं यदि वह तुम्हों पर
न होय तो तुम लोग पुत्र नहीं पर बर्णसंकर हो।
९ फिर हमारे शरीर के पिता थे और उन्हों ने हमें
ताड़ना किई और हम ने उन का आदर किया तो
क्या हम उस से अधिक आत्माओं के पिता के बश में
१० न रहें और जीयें। उन्हों ने तो थोड़े दिनों के लिये
अपनी भावना के समान हमें ताड़ना किई पर वह
जो है सो हमारे लाभ के लिये करता है जिसतें हम
११ उस की पवित्रता को प्राप्त करें। और कोई ताड़ना
जब पाते ही हैं तब आनन्द की बात नहीं परन्तु दुःख
की बात सूझ पड़ती है परन्तु पीछे को वह उन्हें जो
उस से साधन किये गये हैं धर्म के शान्तिमय फल को
देती है।
१२ इस लिये ढीले हाथों और बल हीन घुटनों को
१३ सीधा करो। और अपने पांवों के लिये सीधे मार्ग
बनाओ जिसतें जो लंगड़ाता है सो भटक न जाय बरन
१४ चंगा हो जाय। सभों से मिले रहो और पवित्रता का
पीछा करो क्योंकि उस के बिना प्रभु को कोई न दे-
१५ खेगा। और चौकस रहो न होवे कि कोई परमेश्वर
की कृपा का भाग रहित ठहरे; न होवे कि कोई
कड़वी जड़ उगके दुःख देवे और उस से बऊतेरे लोग
१६ अशुद्ध हो जायें। न होवे कि कोई जन एसौ के समान

व्यभिचारी अथवा धर्महीन हो जाय कि उस ने एक बेर के भोजन के लिये अपने जन्मभाग को बेच डाला। क्योंकि तुम लोग जानते हो कि उस के पीछे १७ जब उस ने आशीश का अधिकार चाहा तब वह त्याग किया गया क्योंकि यद्यपि उस ने आंसू बहा बहाके मन फिराने को जी से चाहा तौभी उस की जगह न पाई।

क्योंकि तुम लोग उस पहाड़ को जिसे छू सकते १८ थे और जो आग से जलता था नहीं पहुंचे और न घोर मेघ के और अंधकार के और आंधी के पास। और न नरसिंगे के शब्द के पास और बातों की वाणी १९ के पास जिसे सुन्नेहारों ने सुनके चाहा कि यह बचन उन्हों से फिर न कहा जाय। क्योंकि जो आज्ञा दिई २० गई सो वे सह न सके; और यदि कोई पशु उस पहाड़ को छूवे तो पत्थरवाओ किया जाय अथवा भाले से छेदा जाय। और वह ऐसा घोर दर्शन था कि मूसा २१ बोला मैं बहुत ही डरता और कांपता हूं। परन्तु २२ तुम लोग सैहून के पहाड़ को और जीवते परमेश्वर के नगर को जो स्वर्गीय यरूसलम है और लाखों स्वर्गदूतों की महासभा के पास आये हो। और पहि- २३ लौठों की कलीसिया के पास जिन के नाम स्वर्ग में लिखे हैं और परमेश्वर सभों के न्यायी के पास और सिद्ध किये हुए धर्मियों के आत्माओं के पास। और २४ नये नियम के बिचवई यिसू के पास और छिड़कने

के लोहू के पास जो हाबिल के लोहू से अच्छी बातें बोलता है तुम लोग आये हो।

२५ देखो कि तुम लोग बोलनेवाले को त्याग न करो क्योंकि जो भूमि पर बोलता था यदि उस के त्यागनेहारे भाग न निकले फिर जो स्वर्ग पर से बोलता है यदि उस ही से हम मुंह मोड़ें तो क्योंकर भाग २६ निकलेंगे। उस की वाणी ने उस समय में भूमि को हिला दिया परन्तु अब उस ने बाचा करके कहा फिर एक बार मैं केवल पृथिवी को नहीं परन्तु स्वर्ग २७ को भी हिला देऊंगा। और यह बात कि फिर एक बार सो यह बताती है कि जिन वस्तुओं को कोई हिला सकता है सो बनी ऊई वस्तुओं की रीति पर टल जाती हैं जिसतें जो वस्तें टलने की नहीं हैं सो २८ बनी रहें। सो जब कि हम ने अटल राज्य पाया तो आओ हम कृपा को प्राप्त करें जिस से हम ग्राह्य रीति पर डर और भक्ताई से परमेश्वर की सेवा २९ करें। क्योंकि हमारा परमेश्वर भस्म करनेवाली आग है॥

१३ पर्ब्ब

भाइयों की संप्रीति बनी रहे। अतिथिपाल करने २ को मत भूलो क्योंकि उसी से कितनों ने बिन जाने ३ स्वर्गदूतों को अपने यहां टिकाया। जो लोग बन्ध में हैं तुम जैसे उन के संग बन्ध में होते ऊए उन की सुधि लो; जो लोग अन्धेर सहते हैं तुम जैसे जिन का ४ भी शरीर है वैसे उन की सुधि लो। ब्याह करना सब

में भला है और बिछौना कुछ अशुद्ध नहीं है परन्तु बेश्यागामियों और परस्त्रीगामियों को परमेश्वर दण्ड देगा। तुम्हारा चलन लोभ रहित होवे और जो कुछ तुम्हारा है उस से तुम लोग सन्तोष करो क्योंकि उस ने कहा है मैं तुझे कभी न छोड़ूंगा और तुझे कभी त्याग न करूंगा। सो हम मन की ढाढ़स से कह सकते हैं प्रभु मेरा सहायक है फिर मैं क्यों डरूंगा; मनुष्य मेरा क्या करेगा। ५ ६

जिन्हों ने तुम्हारी अगवाई करके परमेश्वर की बात तुम्हों से कही है तुम उन्हें स्मरण करो; उन के चाल चलन के अन्त को बिचार करके उन के बिश्वास का पीछा करो। यिसू मसीह कल और आज और सदाकाल एकसा है। बिरानी और भांति भांति की शिक्षाओं से इधर उधर दौड़ते न फिरो क्योंकि यह भला है कि मन कृपा से दृढ़ होय न कि भोजनों से कि जो उन पर चलते थे उन्हों ने उन से कुछ लाभ नहीं पाया। हमारी तो एक यज्ञबेदी है और उस से तंबू के सेवा करनेवालों को खाने का अधिकार नहीं है। ७ ८ ९ १०

क्योंकि जिन पशुओं का लोहू पाप के लिये महायाजक पवित्रालय में ले जाता है उन की देहें छावनी के बाहर जलाई जाती हैं। इस कारण यिसू भी लोगों को अपने लोहू से पवित्र करने को नगरद्वार के बाहर मारा गया। सो आओ हम उस के अपमान ११ १२ १३

के भागी होके छावनी से बाहर उस पास निकल
१४ चलें। क्योंकि हमारा ठहरनेवाला नगर यहां नहीं
है परन्तु जो नगर आनेवाला है सो हम लोग ढूंढते
१५ हैं। इस लिये स्तुति का बलिदान अर्थात होंठों का
फल जो उस के नाम को मान लेते हैं सो हम उसी
१६ के द्वारा से परमेश्वर के लिये हर समय चढ़ावें। परन्तु
भलाई और दान करना तुम मत भूलो क्योंकि ऐसे
१७ बलिदानों से परमेश्वर प्रसन्न होता है। अपने अग-
वाओं के आज्ञाकार और आधीन रहो क्योंकि वे लेखा
देनेहारों के समान होके तुम्हारे प्राणों के लिये
जागते रहते हैं जिसतें वे आनन्द करते हुए न कि
आहें मारते हुए यह करें क्योंकि वह तुम्हारे लिये
१८ हानि है। हमारे लिये प्रार्थना करो क्योंकि हमें
निश्चय है कि हमारा खरा धर्मबोध है कि सब बातों
१९ में हम खराई से चला चाहते हैं। और मैं ऐसा
करने को बिन्ती निज करके इस लिये करता हूं कि
मैं जल्द तुम्हारे पास फिर पहुंचूं।

२० अब कुशल का परमेश्वर जो सनातन के नियम के
लोहू से भेड़ों के महाचरवाहे को अर्थात हमारे प्रभु
२१ यिसू को मृतकों में से फिर लाया। वह तुम को हर
एक अच्छे काम में सिद्ध करे जिसतें तुम लोग उस की
इच्छा पर चलो; और जो कुछ कि उस के आगे प्रसन्न
है सो वह यिसू मसीह के द्वारा से तुम्हों में करे; उस
का महातम सदाकाल है आमीन।

अब हे भाइयो मैं तुम्हों से बिन्ती करता हूं कि उपदेश के बचन को मान लेओ कि मैं ने संक्षेप में तुम्हों को पत्री लिखी। जानो कि भाई तिमोदेउस छूट गया; जो वह जल्द आवे तो मैं उस के संग होके तुम्हें देखूंगा। अपने सब अगवाओं को और सब सन्तों को नमस्कार कहो; जो इतालिया के लोग हैं सो तुम्हें नमस्कार कहते हैं। कृपा तुम सभों पर होवे आमीन॥

२२ २३ २४ २५

याकूब की

पत्री।

१ पर्ब्ब

१ याकूब से जो परमेश्वर का और प्रभु यिसू मसीह का दास है बारह पितृवंशों को जो तितर बितर हैं कल्याण।

२ हे मेरे भाइयो जो तुम लोग नाना प्रकार की परीचों में पड़ो तो उसे पूर्ण आनन्द समझो। ३ और यह जानो कि तुम्हारे बिश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है। ४ परन्तु धीरज को काम पूरा करने दो जिसतें तुम लोग किसी बात में हीन न होके सिद्ध और परिपूर्ण हो जाओ।

५ परन्तु यदि तुम्हों में से कोई बुद्धि रहित होवे तो वह परमेश्वर से मांगे कि वह सब मनुष्यों को दातापन करके देता है और उलाहना नहीं देता है तो वह उसे दिई जायगी। ६ परन्तु वह बिश्वास सहित मांगे और दुवधा न करे क्योंकि जैसा समुद्र की लहर

है जिसे पवन टकराती और उड़ाती है वैसा दुबधा करनेहारा मनुष्य है। ७ ऐसा मनुष्य न समझे कि मैं प्रभु से कुछ पाऊंगा। ८ दुचित्ता मनुष्य अपनी सारी चाल में डगमगाता है।

९ भाई जो दीन है सो अपनी महित पर बड़ाई करे। १० और जो धनवान है सो अपनी दीनताई पर बड़ाई करे इस लिये कि घास के फूल के समान वह जाता रहेगा। ११ क्योंकि जब सूर्य्य निकलता और लूह चलती है तब घास उस से मुरझा जाती है और उस का फूल झड़ जाता है और उस के रूप की शोभा जाती रहती है; वैसा ही धनवान मनुष्य भी अपनी चाल में मुरझा जायगा। १२ जो मनुष्य परीक्षा को सहता है सो धन्य है क्योंकि जब खरा निकला तब जीवन का मुकुट जिस की बाचा प्रभु ने अपने प्रेमियों से किई है पावेगा। १३ जब कोई मनुष्य परीक्षा में फंसे तो वह न कहे कि मैं परमेश्वर का फंसाया परीक्षा में फंसा हूं क्योंकि परमेश्वर बुराइयों से न तो आप परखा जाता और न वह किसी को परखता है। १४ परन्तु हर कोई अपनी ही कामना से लुभाया जाके और जाल में फंसके परीक्षा में पड़ता है। १५ और जब कामना गर्भवती हुई तब वह पाप जनती है और पाप पूरा होके मृत्यु को उत्पन्न करता है।

१६ हे मेरे प्यारे भाइयो धोखा मत खाओ। १७ हर एक अच्छा दान और हर एक संपूर्ण दान ऊपर ही से है

और ज्योतों के पिता की ओर से उतरता है ; उस
१८ में न कुछ बिकार है न फिर जाने की छाया है। उस
ने अपनी मनसा से हमें सच्चाई के बचन से उत्पन्न
किया कि हम उस की रचनाओं में पहिले फलों के
ऐसे होवें।

१९ सो हे मेरे प्यारे भाइयो हर एक मनुष्य सुन्ने में चटक
और बोलने में धीमा और क्रोध करने में धीमा होवे।
२० क्योंकि मनुष्य का क्रोध परमेश्वर के धर्म का कार्य्य नहीं
२१ करता है। इस लिये सब मलिनता और बुराई की
बढ़ताई को फेंकके तुम लोग उस बचन को जो पैवन्द
होता है और तुम्हारे प्राणों को बचा सकता है सो
कोमलता से ग्रहण करो।

२२ परन्तु तुम लोग बचन के पालनेहारे हो ; और
अपने को धोखा देके केवल सुन्नेहारे मत ठहरो।
२३ क्योंकि यदि कोई जन बचन का सुन्नेहारा हो और
पालनेहारा नहीं हो तो वह एक मनुष्य के समान
है जो अपने शारीरिक मुंह को दर्पण में देखता है।
२४ इस लिये कि उस ने अपने को देखा और वह चला
२५ गया और वोंहीं भूल गया कि मैं कैसा था। पर जो
कोई निर्बन्धता की सिद्ध व्यवस्था पर टकटकी बांधके
उस के सोच में रहता है वह सुनके भूलनेवाला नहीं
पर काम का करनेवाला है और वह मनुष्य अपने
काम में भागमान होगा।

२६ यदि कोई आप को भक्तिमान समझता है और

अपनी जीभ को लगाम नहीं देता परन्तु अपने ही मन को धोखा देता है तो उस मनुष्य की भक्ताई व्यर्थ है। भक्ताई जो परमेश्वर और पिता के आगे खरी २७ और दोषरहित है सो यह है कि माता पितृहीनों की और विधवों की उन के क्लेश के समय में सुध लेना और अपने को जगत से कलंकहीन बचाय रखना॥

२ पर्व्व

हे मेरे भाइयो हमारे ऐश्वर्य्यवाले प्रभु यिसू मसीह का विश्वास रखके तुम लोग मनुष्यों में पक्षता मत करो। क्योंकि यदि कोई मनुष्य सोने की अंगूठी और २ भड़कीले वस्त्र पहिने तुम्हारी मण्डली में आवे और कोई कंगाल भी मलीन वस्त्र पहिने आवे। और तुम ३ भड़कीले वस्त्रवाले पर चित लगाके उस से कहो कि आप यहां इस अच्छी जगह में बैठिये और कंगाल से कहो कि वहां खड़ा रह अथवा यहां मेरे पांवों की पीढ़ी के नीचे बैठ जा। तो तुम्हों ने आपस में पक्षता ४ किई कि नहीं और बुरी भावनों के विचारनेहारे ऊए कि नहीं। हे मेरे प्यारे भाइयो सुनो; क्या पर- ५ मेश्वर ने इस जगत के कंगालों को नहीं चुना है कि विश्वास के धनी होवें और कि जिस राज्य की बाचा उस ने अपने प्रेमियों से किई है उस के वे अधिकारी होवें। परन्तु तुम्हों ने कंगाल का अपमान किया; क्या ६ धनवान लोग तुम्हों पर अंधेर करते हैं कि नहीं और तुम्हें न्याय स्थान में खिचवाते हैं कि नहीं। और वह ७ उत्तम नाम जो तुम्हारा रखा गया क्या वे उस की निन्दा

८ करते हैं कि नहीं। सो जो तुम लोग उस राजकीय व्यवस्था को पूरा करो जैसा कि लिखा है तू अपने पड़ोसी को अपने समान प्यार कर तो तुम भला कर-
९ ते हो। परन्तु जो तुम लोग पक्षता करते हो तो पाप करते हो और व्यवस्था के टालनेहारे ठहराये जाते हो।

१० इस लिये कि जो कोई सारी व्यवस्था को माने और एक बात में चूक करे सो सारी बातों का दोषी
११ ठहरा। क्योंकि जिस ने यह कहा तू व्यभिचार मत कर उस ने वह भी कहा तू हत्या मत कर; सो जो तू व्यभिचार न करे परन्तु हत्या करे तो तू व्यवस्था का
१२ टालनेहारा ठहरा। जैसे जिन लोगों का न्याय निर्बन्धता की व्यवस्था के समान किया जायगा वैसे तुम लोग
१३ बोलो और करो। क्योंकि जिस ने दया न किई उस का न्याय बिना दया होगा; और न्याय के ऊपर दया जैजैकार करती है।

१४ हे मेरे भाइयो यदि कोई कहे मेरा बिश्वास है और उस की क्रिया न होवें तो वह किस काम का
१५ है; क्या वह बिश्वास उस को बचा सकता है। यदि कोई बहिन अथवा कोई भाई वस्त्रहीन होय और
१६ प्रतिदिन का भोजन उन को नहीं हो। और तुम में से कोई उन से कहे कि कुशल से जा; तात रह और सन्तुष्ट हो; और तुम उन्हें देह के प्रयोजन की बस्तें
१७ न देओ तो वह किस काम का है। वैसा ही बिश्वास

भी यदि वह क्रिया रहित हो तो वह आप में बेजान है। पर क्या जाने कोई कहे कि तेरा तो बिश्वास है १८ और मेरी क्रियाएं हैं भला तू अपने बिश्वास को बिना क्रिया मुझे दिखा और मैं अपने बिश्वास को अपनी क्रियाओं से तुझे दिखाऊंगा। तू बिश्वास रखता है १९ कि परमेश्वर एक है; भला करता है पिशाच भी बिश्वास रखते और थर्थराते हैं। परन्तु हे बुद्धि हीन २० मनुष्य क्या कभी तुझे समझ पड़ेगा कि बिन क्रिया का बिश्वास बेजान है। जब हमारे पिता अबिरहाम ने २१ अपने पुत्र इसहाक को यज्ञबेदी पर चढ़ाया वह तब क्रियाओं से धर्मी ठहराया गया कि नहीं। सो तू देखता २२ है कि बिश्वास ने उस की क्रियाओं के संग काम किया और क्रियाओं से बिश्वास संपूर्ण ठहरा। और धर्मग्रन्थ २३ जो कहता है कि अबिरहाम परमेश्वर पर बिश्वास लाया और वह उस के लिये धर्म गिना गया सो पूरा हुआ और वह परमेश्वर का मित्र कहलाया। सो तुम २४ लोग देखते हो कि मनुष्य केवल बिश्वास से नहीं परन्तु क्रियाओं से धर्मी ठहराया जाता है। वैसा ही राहाब २५ भी जो वेश्या थी जब उस ने दूतों को ग्रहण किया और उन्हें दूसरे मार्ग से बाहर कर दिया तो वह क्रिया करके धर्मी ठहरी कि नहीं। क्योंकि जैसे बिन आत्मा २६ की देह बेजान ठहरी वैसा ही बिन क्रिया का बिश्वास भी बेजान ठहरता है॥

३ पर्ब्ब

हे मेरे भाइयो तुम में बहुत से गुरु न बनें क्यों-

कि तुम लोग जानते हो कि हम उस से अधिक दण्ड
२ पावेंगे। इस लिये कि बहुत सी बातों में हम सब के
सब चूक करते हैं; यदि कोई जन बात करने में चूक
न करे तो वही सिद्ध जन है और अपनी सारी देह
३ को अपने बश में भी कर सकता है। देखो घोड़ों के
मुंह में हम बाग देते हैं जिसतें वे हमारे बश में रहें
४ और हम उन की सारी देह को फेरते हैं। देखो
जहाज भी यद्यपि वे ऐसे बड़े बड़े हैं और प्रचण्ड
बयारों से उड़ाये जाते हैं तथापि वे छोटी छोटी
पतवार से जहां कहीं मांझी चाहता है तहां फेराये
५ जाते हैं। वैसा ही जीभ छोटा सा अंग है पर बड़ा
ही बोल बोलती है; देखो थोड़ी सी आग कैसे बड़े
६ जंगल को जला देती है। सो जीभ एक आग है और
अधर्मता का एक संसार है; जीभ हमारे अंगों में
ऐसी है कि सारी देह को कलंकी करती है और
जन्म के चक्र को जलाती है और उस ने आप ही नरक
७ से जलन को पाया है। क्योंकि सब प्रकार के पशु और
पक्षी और कीड़े और जल के जन्तु मनुष्य के बश में
८ आते हैं और आये हैं। परन्तु जीभ को कोई मनुष्य
बश में ला नहीं सकता है; वह एक दुर्बस्तु है जो दबती
९ नहीं; वह मारू बिष से भरी हुई है। उसी से हम
परमेश्वर अर्थात पिता का धन्यवाद करते हैं और
उसी से हम मनुष्यों को जो परमेश्वर के स्वरूप में
१० उत्पन्न हुए हैं धिक्कार देते हैं। एक ही मुंह से धन्य-

वाद और धिक्कार निकलते हैं; हे मेरे भाइयो ऐसा न चाहिये। क्या कोई सोता एक ही मुंह से मीठा और खारा पानी देता है। हे मेरे भाइयो क्या गूलर के पेड़ में जलपाई और दाख की लता में गूलर फल सकते हैं; ऐसा ही किसी सोते से खारा और मीठा पानी नहीं निकलता है।

११ १२

तुम्हों में बुद्धिमान और ज्ञानवान कौन है; वह जन अच्छे चालचलन से ज्ञान की कोमलता सहित अपनी क्रियाएं दिखावे। पर जो तुम लोग कड़वी डाह और झगड़े अपने मनों में रखते हो तो बड़ाई न करो और सत्य के बिरुद्ध झूठ न बोलो। जो ज्ञान ऊपर से उतरता है सो यह नहीं है परन्तु यह सांसारिक है इन्द्रियाधीन है शैतानी है। क्योंकि जहां डाह और झगड़ा है वहां हड़बड़ी और हर प्रकार का बुरा काम होता है। परन्तु ऊपर का ज्ञान जो है सो पहिले पवित्र है फिर मिलनसार और कोमल है; वह सहज समझाया जाता है; वह दया से और अच्छे फलों से लदा हुआ है; पक्षता रहित है और निष्कपट है। और मिलाप करनेहारे जो हैं सो धर्म का फल मिलाप के संग बोते हैं॥

१३ १४ १५ १६ १७ १८

४ पर्ब्ब

लड़ाइयां और झगड़े तुम्हों में कहां से आये; जो कामनाएं तुम्हारे अंगों में लड़ रही हैं उन से वे आते हैं कि नहीं। तुम लोग लालच करते हो और पाते नहीं; तुम हत्या करते हो और डाह करते हो और

२

कुछ प्राप्त नहीं कर सकते हो; तुम लड़ते और झगड़ते हो पर कुछ हाथ नहीं लगता क्योंकि तुम
३ लोग मांगते नहीं हो। तुम मांगते हो और पाते नहीं क्योंकि तुम बुरी रीति से मांगते हो जिसतें तुम
४ उसे अपनी कामनाओं में उड़ाओ। हे व्यभिचारियो और हे व्यभिचारिणियो क्या तुम लोग नहीं जानते कि जगत की संगत करना सो परमेश्वर का बिरोध करना है; इस लिये जो कोई जगत का संगती हुआ चाहता है सो परमेश्वर का बिरोध करनेहारा ठहरता है।
५ तुम क्या समझते हो; क्या धर्मग्रन्थ वृथा कहता है कि आत्मा जो हमों में बसता है सो डाह की लालसा करता है।
६ परन्तु वह अधिक कृपा देता है क्योंकि कहता है परमेश्वर अभिमानियों का सामना करता है परन्तु दीनों पर वह कृपा करता है।
७ इस कारण तुम परमेश्वर के आधीन हो; शैतान का सामना करो तो वह तुम्हों से भाग निकलेगा।
८ परमेश्वर के समीप जाओ तो वह तुम्हारे समीप आवेगा; हे पापियो तुम लोग अपने हाथ शुद्ध करो; और हे दुचित्तो
९ अपने मन पवित्र करो। उदास हो जाओ और शोक करो और रोओ; तुम्हारा हंसना कुढ़ने से बदल जावे
१० और तुम्हारा आनन्द शोक हो जावे। तुम लोग अपने को प्रभु के आगे दीन करो तो वह तुम्हों को बढ़ावेगा।

११ हे भाइयो तुम लोग आपस में एक दूसरे पर बुरी

बातें मत कहो ; जो कोई अपने भाई के विषय में बुरा कहता है और अपने भाई का न्याव करता है सो व्यवस्था के विषय में बुरा कहता है और व्यवस्था का न्याव करता है ; फिर यदि तू व्यवस्था का न्याव करे तो तू व्यवस्था पर चलनेवाला नहीं परन्तु तू न्यायी ठहरा। व्यवस्था कर्त्ता एक है और वही बचाने का और नष्ट करने का सामर्थ्य रखता है ; फिर तू कौन है जो दूसरे का न्याव करता है। १२

अरे आओ तुम लोग जो कहते हो कि हम आज अथवा कल ऐसे कि वैसे नगर में जायेंगे और वहां बरस दिन रहेंगे और व्योपार करेंगे और कुछ प्राप्त करेंगे। और नहीं जानते कि कल क्या होगा ; क्योंकि तुम्हारा जीवन क्या है ; वह तो एक कुहासा है ; थोड़ी बेर लों वह दिखाई देता है फिर वह जाता रहता है। परन्तु इस के बिपरीत तुम्हें चाहिये कि कहो जो प्रभु की इच्छा होय और हम जीते रहें तो हम यह काम अथवा वह काम करेंगे। परन्तु अब तुम लोग अपनी गलफटाकियों पर बड़ाई करते हो ; ऐसा बड़ाई करना सर्वथा बुरा है। सो जो कोई भला करने जानता है और नहीं करता है वह उस पर पाप होता है॥ १३ १४ १५ १६ १७

५ पर्व्व

अब हे धनवानो जो बिपत्ति तुम लोगों पर आने को हैं तुम उन के कारण चिल्ला चिल्लाके रोओ। कि तुम्हारा द्रव्य सड़ गया और तुम्हारे वस्त्र कीड़े खा २

३ गये। तुम्हारे सोने रूपे को मोरचा लगा और उन का मोरचा तुम्हों पर साक्षी देगा और वह आग के समान तुम्हारा मांस खायगा; तुम ने अन्त के दिनों
४ के लिये धन बटोरा है। देखो जिन मजूरों ने तुम्हारे खेत काटे उन की मजूरी जिसे तुम्हों ने अंधेर करके रखा है सो पुकार उठती है और काटनेवालों की
५ पुकार सेनाओं के प्रभु के कान लों पहुंची है। तुम भूमि पर बिलास में रहे और सुखभोगी हुए; तुम ने अपने अपने मनों को जैसा बध के दिन के लिये
६ मोटा किया है। तुम ने धर्म्मी जन को दोषी ठहराके घात किया; वह तुम्हारा सामना नहीं करता है।

७ सो हे भाइयो प्रभु के आने लों धीरज धरो; देखो किसान भूमि के अच्छे अच्छे फल का आशावन्त होके जब लों पहिला और पिछला मेंह न पावे तब लों
८ उस के लिये धीरज करता है। वैसा ही तुम लोग भी धीरज धरो और अपने अपने मन को स्थिर रखो क्योंकि प्रभु का आना निकट है।

९ हे भाइयो एक दूसरे पर मत कुड़कुड़ाओ जिसतें तुम्हों पर दण्ड की आज्ञा न होय; देखो न्यायी द्वार
१० पर खड़ा है। हे मेरे भाइयो भविष्यतवक्ता लोग जो प्रभु का नाम लेके बोलते थे उन का दुःख उठाना और
११ धीरज धरना तुम अपने लिये दृष्टान्त समझो। देखो हम सहनेवालों को भागमान जानते हैं; तुम्हों ने

ऐयूब के सहाव की सुनी है और प्रभु के अभिप्राय को जानते हो कि प्रभु मया से पूर्ण और अति दयालु है।

१२ पर हे मेरे भाइयो सब से पहिले तुम लोग किरिया न खाओ न तो स्वर्ग की न पृथिवी की न और किसी बात की किरिया; परन्तु तुम्हारा हां हां हो और तुम्हारा नहीं नहीं हो ऐसा न हो कि तुम लोग दण्ड के योग्य ठहरो।

१३ यदि तुम में से कोई दुःखी हो तो वह प्रार्थना करे; १४ यदि कोई मगन हो तो भजन गावे। यदि तुम में से कोई रोगी हो तो वह कलीसिया के प्राचीनों को बुलवावे और वे प्रभु का नाम लेके उस की देह पर तेल मलें और उस पर प्रार्थना करें। १५ और वह प्रार्थना जो बिश्वास के संग किई जाय सो रोगी को बचायेगी और प्रभु उसे उठा खड़ा करेगा; और जो उस ने पाप किये हों तो वे छिमा किये जायेंगे। १६ तुम लोग अपने अपने अपराधों को आपस में एक दूसरे के आगे मान लो और एक दूसरे के लिये प्रार्थना करो जिसतें तुम चंगे हो जाओ; धर्मी जन की प्रार्थना जो वह लौ लगाके किई जाय सो बड़ा काम करती है। १७ इलियाह हमारे समभाव का मनुष्य था और उस ने प्रार्थना करके बिन्ती किई कि मेंह न बरसे: सो साढ़े तीन बरस लों भूमि पर मेंह न बरसा। १८ और उस ने फिर प्रार्थना किई और आकाश ने पानी बरसाया और भूमि अपना फल उगा लाई।

१९ हे भाइयो यदि कोई तुम में से सच्चाई को छोड़के भटक जाय और कोई उसे फिरा लावे तो वह जाने कि जो कोई एक पापी को उस के मार्ग के भरम से फिरा लाता है सो एक प्राण को मृत्यु से बचायेगा और पापों के समुदाय को ढांकेगा॥

पथरस की

पहिली पत्री।

१ पर्ब्ब

पथरस जो यिसू मसीह का प्रेरित है सो यह पत्री लिखता है उन प्रबासियों को जो पनतुस और गलातिया और कपादोकिया और आसिया और बितीनिया में तितर बितर ज़ए। तुम लोग जो परमेश्वर २ पिता के अग्रज्ञान के समान आत्मा के पवित्रीकरण से आधीन होने के लिये और यिसू मसीह के लोहू से छिड़का जाने के लिये चुने ज़ए हो; कृपा और कुशल तुम्हों पर अधिक होता जाय।

परमेश्वर और हमारे प्रभु यिसू मसीह का पिता ३ स्तुत है कि उस ने अपनी बड़ी दया से यिसू मसीह के मृतकों में से जी उठने के कारण हमें जीवती आशा के लिये नये सिर से उत्पन्न किया है। जिसतें जो ४ अधिकार अक्षय और निर्मल और अजर है और हमारे लिये स्वर्ग में रखा ज़आ है सो हमें मिले। और हम ५

बिश्वास के द्वारा परमेश्वर के सामर्थ्य से उस निस्तार के लिये जो अन्त के समय में प्रगट होने को तैयार

६ है रक्षा किये जाते हैं। इस में तुम लोग बहुत सा आनन्द करते हो; परन्तु अब थोड़े दिन लों जो अवश्य होय तुम लोग नाना प्रकार की परीक्षों के कारण

७ से शोक में पड़े हो। जिसतें तुम्हारे बिश्वास की परीक्षा जो नाशमान सोने से यदि भी वह आग में ताया जाय कितना ही बहुमूल्य है सो यिसूमसीह के प्रगट होने के समय सराह और प्रतिष्ठा और महिमा के योग्य

८ पाया जाय। उसे बिन देखे तुम लोग प्यार करते हो और यद्यपि तुम लोग अब उसे नहीं देखते हो तथापि बिश्वास लाके तुम ऐसे आनन्द से जो बर्णन से बाहर

९ और महिमा से भरा है आनन्दित होते हो। और अपने बिश्वास के अभिप्राय को अर्थात अपने प्राणों का निस्तार प्राप्त करते हो।

१० भविष्यतवक्ता लोग जिन्हों ने उस कृपा की जो तुम्हों पर प्रगट होने को थी भविष्यतवाणी कहते थे सो उस निस्तार की खोझ बूझ और सोच बिचार

११ करते थे। वे सोच करते थे कि मसीह का आत्मा जो उन में था जब वह आगे से मसीह के दुःखों की और उस के पीछे की महिमा की साक्षी देता था तब वह किस का और किस प्रकार के समय का बर्णन

१२ करता था। उन्हों पर यह प्रगट हुआ कि वे न अपनी परन्तु हमारी सेवा के लिये वे बातें कहते थे; उन

का सन्देश अब तुम्हें उन लोगों के द्वारा से दिया जाता है कि जिन्हों ने स्वर्ग से उतरे ङ्गए पवित्र आत्मा की ओर से मंगल समाचार को तुम्हें सुनाया ; और उन्हीं बातों को देखने बूझने को दूतगण की लालसा है।

इस लिये तुम लोग अपने अपने अन्तःकरण की कमर बांधके और चैतन्य होके जो कृपा यिसू मसीह के प्रगट होने के समय में तुम्हों पर होगा उस की आशा अन्त लों रखो। तुम लोग आज्ञाकार पुत्रों के समान अपनी अगिली कामनाओं के ढब पर जो तुम्हारी अज्ञानता के समय में थीं मत चलो। परन्तु जैसा कि तुम्हारा बुलानेहार पवित्र है वैसा तुम लोग भी अपनी सारी चाल में पवित्र बनो। क्योंकि लिखा है तुम पवित्र होओ क्योंकि मैं पवित्र हूं। | १३ १४ १५ १६

और जो बिना पक्षता करके हर एक जन के काम के योग्य का न्याय करता है यदि उस को तुम लोग पिता कहो तो तुम डरते ङ्गए अपने प्रवास का समय काटो। क्योंकि तुम लोग जानते हो कि तुम्हों ने जो अपने पितरों की परम्परा के निकम्मे चालचलन से छुड़ौती पाई सो न रूपे सोने के ऐसे नाशमान वस्तुओं के कारण। परन्तु मसीह के बज्जमूल्य लोहू के कारण पाई कि वह दोष हीन और कलंक हीन लेखा था। वह जगत की रचना के पहिले से ठहराया गया था परन्तु इसी अन्त समय में तुम्हारे लिये प्रगट ङ्गआ है। तुम लोग उसी के द्वारा से परमेश्वर पर | १७ १८ १९ २० २१

विश्वास लाते हो; कि उस ने उस को मृतकों में से जिलाया और ऐश्वर्य्य को पहुंचाया जिसतें तुम्हारा विश्वास और भरोसा परमेश्वर पर ठहरे।

२२ सो जब कि तुम्हों ने आत्मा के द्वारा से सत्य के आधीन हो जाके अपने प्राणों को यहां लों पवित्र किया है कि तुम्हों में भाइयों का निष्कपट प्रेम होता है तो एक
२३ दूसरे को खरे मन से जी लगाके प्यार करो। क्योंकि तुम लोग नाशमान बीज से नहीं परन्तु अविनाशी से अर्थात परमेश्वर के बचन से जो सदा लों जीवता और
२४ बना रहता है नये सिर से उत्पन्न हुए हो। क्योंकि सारी मनुष्यजाति घास के समान है और मनुष्य का सारा प्रभाव घास के फूल के समान है; घास सूख
२५ जाती है और फूल झड़ जाता है। परन्तु परमेश्वर का बचन सदाकाल बना रहता है; सो यह वही बचन है जिस का मंगल समाचार तुम्हें सुनाया गया है॥

२ पर्व्व

इस लिये तुम लोग सारी बुराई और सब छल और कपट और डाह और सब चवाव की बातें छोड़-
२ के। नये जनमे बच्चों के समान बचन के निराले दूध के अभिलाषी होओ जिसतें तुम उस से बढ़ते जाओ।
३ क्योंकि तुम्हों ने वह स्वाद पाया है कि प्रभु दयाल है।

४ तुम लोग उस पास जो जीवता पत्थर है आये हो; मनुष्यों से वह तो निकम्मा जाना गया परन्तु परमे-

श्वर का वह चुना ज़ुआ और बज़मूल्य है। सो तुम लोग भी जीते पत्थरों के समान होके आत्मारूपी घर बनते जाते हो और याजकों की पवित्र मण्डली ज़ुए जाते हो जिसतें तुम लोग आत्मारूपी बलिदान जो यिसू मसीह के द्वारा से परमेश्वर को भावते हैं चढ़ाओ। इस लिये धर्मग्रन्थ में यह बात भी है कि देख मैं सैहून में एक पत्थर रख देता हूं; वह कोने का सिरा और चुना ज़ुआ और बज़मूल्य है और जो कोई उस पर बिश्वास लावे सो कभी लज्जित न होगा। सो तुम्हारे लिये जो विश्वास लाये हो वह बज़मूल्य है परन्तु जो लोग बिश्वास न लाये उन के लिये वह पत्थर जिसे थवइयों ने निकम्मा जाना कोने का सिरा ज़ुआ। और ठोकर खिलानेवाला पत्थर और ठेस दिलानेवाली चटान ज़ुआ; वे अविश्वासी होके बचन से ठोकर खाते हैं और इस के लिये वे ठहराये भी गये। परन्तु तुम लोग चुने ज़ुए वंश हो और राजकीय याजकगण और पवित्र जाति और निज लोग हो जिसतें जिस ने तुम्हें अंधकार में से अपने अदभुत उजाले में बुलाया है उस के गुण तुम लोग प्रगट करो। तुम आगे उस के लोग न थे परन्तु अब परमेश्वर के लोग हो; तुम्हों पर आगे दया न ज़ुई थी परन्तु अब तुम्हों पर दया ज़ुई।

हे प्यारो मैं तुम्हों से जैसे बिदेशियों और प्रबासियों से बिन्ती करता हूं कि शारीरिक कामनाओं से

५ ६ ७ ८ ९ १० ११

जो प्राण के बिरुद्ध होके युद्ध करती हैं तुम लोग परे
१२ रहो। और अपनी चाल को अन्यदेशियों में खराई
से रखो जिसतें जो लोग तुम्हें कुकर्मी जानके तुम्हों
पर बुरा कहते हैं सो तुम्हारे भले कर्मों को बूझके
उस दिन जब उन्हों पर दयादृष्टि होय परमेश्वर की
स्तुति करें।

१३ प्रभु के कारण तुम लोग मनुष्यों के हर एक अधि-
कार के आधीन होओ; राजा के कि वह अधिपति है।
१४ अथवा प्रधानों के कि वे उस के भेजे हुए हैं जिसतें जो
बुरे काम करते हैं उन्हों को वे दण्ड देवें और जो भले
१५ काम करते हैं उन्हों को सराहें। क्योंकि परमेश्वर की
इच्छा यों है कि तुम लोग भले काम करके निर्बुद्धि
१६ मनुष्यों की अज्ञानता के मुंह को बन्द करो। तुम लोग
आप को निर्बन्ध जानो परन्तु अपनी निर्बन्धता को
दुष्टता की आड़ मत करो पर आप को परमेश्वर के
१७ दास जानो। सब लोगों का आदर करो; भाइयों
को संप्रीति करो; परमेश्वर से डरो; राजा का आदर
करो।

१८ हे नौकरो तुम लोग सारे डर से अपने स्वामियों
के आज्ञाकारी होओ; केवल अच्छे और कोमल के
१९ नहीं परन्तु कुभाववालों के भी। क्योंकि यदि कोई
जन अंधेर का दुःख उठावे और परमेश्वर पर अपना
धर्मबोध छोड़के सोगवारी को सहे तो यह अनुग्रह
२० की बात है। क्योंकि जो तुम लोग पाप करके पीटे

गये और सह लिया तो वह कौन सी बड़ाई है; परन्तु जो तुम लोग भलाई करके दुःख पाओ और उसे सहो तो यह परमेश्वर के आगे अनुग्रह की बात है। क्यों- (२१) कि इसी के लिये तुम लोग बुलाये गये हो कि मसीह भी हमारे कारण दुःख उठाके एक दृष्टान्त हमारे लिये छोड़ गया है कि उस की डग पर चले जाओ। उस ने पाप नहीं किया और उस के मुंह में छल बल (२२) नहीं पाया गया। वह गालियां खाके गाली न देता था (२३) और दुःख पाके धमकाता नहीं था परन्तु जो धर्म से न्याय करता है उस पर उस ने अपने को छोड़ा। उस (२४) ने आप हमारे पापों को अपनी ही देह में क्रूस पर उठा लिया जिसतें हम पापों की ओर मरके धर्म के लिये जीवें; उन कोड़ों के कारण से जो उस पर पड़े तुम लोग चंगे ऊए हो। क्योंकि तुम लोग भटकी (२५) ऊई भेड़ों के समान थे पर अब अपने प्राणों के चरवाहे और अध्यक्ष के पास फिर आये हो॥

३ पर्ब्ब

वैसा ही हे स्त्रियो तुम लोग अपने अपने पतियों (१) के आधीन रहो; कि यदि उन में से भी कोई कोई बचन को न मानते हों तो वे बिना बचन के अपनी पतियों के चलन से लब्ध हो जायें। क्योंकि वे तुम्हारे (२) पवित्र चलन को जो भय के साथ है देखते हैं। और (३) बाहरी सिंगार जैसे सिर गूंधना सोने का आभूषन और वस्त्रों का पहिन्ना सो तुम्हारा सिंगार न ठहरे। परन्तु मन की गुप्त मनुष्यता जो कोमल और शान्त (४)

आत्मा के अबिनाशी सिंगार में है सो परमेश्वर के
५ आगे बहुमूल्य है। क्योंकि अगले समय की पवित्र स्त्रियां भी जो परमेश्वर पर भरोसा रखती थीं सो इसी रीति से अपने को सिंगारतीं थीं और अपने अपने
६ पतियों के आधीन रहतीं थीं। ऐसा ही सारा भी अबिरहाम की आज्ञाकार होती थी और उस को स्वामी कहती थी; सो जब तुम लोग भले काम करो और किसी धड़के से भयमान न हो तब तुम उस की पुत्रियां हो।

७ वैसा ही हे पतियो तुम लोग ज्ञान की रीति पर उन के संग निबाह करो और स्त्री को अबला रचना समझकर आदर दो और जानो कि जीवन के अधिकार के पदार्थ में तुम दोनों भागी हो जिसतें तुम्हारी प्रार्थनाएं रुक न जायें।

८ निदान सब के सब एकमत होओ; दुःखियों के समदुःखी होओ; भाइयों की संप्रीति रखो; दयावान
९ और मिलनसार हो। बुराई के पलटे में बुराई न करो; निन्दा सहके निन्दा मत करो; परन्तु उस के बिपरीत में आशीश देओ क्योंकि तुम लोग जानते हो कि तुम आशीश के अधिकारी होने को बुलाये
१० गये हो। क्योंकि जो जीवन को संप्रीति किया चाहे और अच्छे दिनों को देखा चाहे सो अपनी जीभ को बुराई से बचा रखे और अपने होठों को छल की
११ बात बोलने से। वह बुराई से परे रहे और भलाई

करे; वह मिलाप को खोजे और उस का पीछा करे। क्योंकि प्रभु की आंखें धर्मी लोगों पर हैं और उस के कान उन की प्रार्थनाओं पर हैं परन्तु परमेश्वर का मुंह बुराई करनेहारों के विरुद्ध है। और जो तुम लोग भलाई की चाल चलो तो कौन तुम्हारी बुराई करे। फिर जो धर्म के लिये तुम लोग दुःख भी पाओ तो तुम धन्य हो; और उन के डराने से मत डरो और मत घबरा जाओ। परन्तु प्रभु परमेश्वर को अपने मनों में पवित्र जानो; और हर एक जो तुम्हों से उस आशा का जो तुम्हों में है प्रमाण पूछे उस को कोमलता से और भय से उत्तर देने को सदा तैयार रहो। अपना धर्मबोध खरा रखो जिसतें जो लोग तुम्हें बुराई करनेहारे जानके तुम को बुरा कहते हैं और तुम्हारे मसीही अच्छे चाल-चलन की निन्दा करते हैं सो लज्जित हो जावें। क्यों-कि यदि परमेश्वर की इच्छा यों होय कि तुम लोग भला करके दुःख पाओ तो बुरा करके दुःख पाने से वह भला है।

क्योंकि मसीह ने भी एक बार पापों के कारण दुःख उठाया; धर्मी ने अधर्मियों के लिये पाया जिसतें वह हम को परमेश्वर के पास पहुंचावे; कि शरीर के विषय में वह तो मारा गया परन्तु आत्मा के विषय में वह जिलाया गया। उस में भी उस ने उन आत्मा-ओं के पास जो बन्ध में थे जाके प्रचार किया। वे लोग

१२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०

आगे जिस समय में परमेश्वर के अतिधीरज ने नूह के दिनों में बाट जोहता रहा जब जहाज तैयार होता था तब आज्ञा भंजक थे; उस में थोड़े से अर्थात
२१ आठ प्राणी जल के द्वारा बच गये। उस के दृष्टान्त पर बपतिसमा भी (न देह का मैल छुड़ाना परन्तु खरे धर्मबोध से परमेश्वर को उत्तर देना) सो यिसू मसीह के जी उठने के द्वारा से अब हम को भी बचा-
२२ ता है। वह स्वर्ग पर जाके परमेश्वर के दहिने है और दूतगण और अधिकार और सामर्थ्यवाले उस के आधीन हैं॥

४ पर्ब्ब

सो जब कि मसीह ने हमारे कारण शरीर में दुःख उठाया तो तुम लोग भी इसी मनसा के हथियार बांधो क्योंकि जिस ने शरीर में दुःख उठाया सो पाप
२ से न्यारे ऊआ। जिसतें वह अपना समय जो शरीर में जीने को रहा सो आगे को मनुष्यों के कुकामनाओं के समान नहीं परन्तु परमेश्वर की इच्छा के समान
३ बितावे। क्योंकि हमारे जीवन का जितना समय हमों ने अन्यदेशियों की इच्छा पर बिताई सो ही बस है कि उस समय में हम लोग लम्पटता में कुकामनाओं में मतवालापन में भोग बिलास में मद्यपान करने में और घिणौनी मूर्तपूजाओं में अपने दिन काटते
४ थे। इस बात में वे अचंभा मानते हैं कि तुम लोग उन की छुटखेली की रेलपेल में उन के संग नहीं रेल-
५ ते हो और वे तुम्हारी निन्दा करते हैं। वे उस को

जो जीवतों का और मरे ज्ञओं का न्याय करने को तैयार है लेखा देंगे। क्योंकि मरे ज्ञओं को भी मंगल समाचार इस लिये सुनाया गया कि वे तो मनुष्यों के आगे शरीर में अपराधी ठहरें पर परमेश्वर के आगे आत्मा में जीवें। ६

परन्तु सब वस्तुओं का अन्त निकट है; इस लिये सचेत होओ और प्रार्थना के लिये जागते रहो। विशेष करके एक दूसरे को जी से प्यार करो क्योंकि प्यार पापों की बज्ञताई को ढांक देता है। तुम लोग आपस में बिना कुड़कुड़ाये अतिथिपाल करो। जैसा एक एक को गुण मिला है वह वैसा परमेश्वर के नाना प्रकार की कृपा के अच्छे भण्डारियों के समान एक दूसरे की सेवा में उस से खर्च करे। यदि कोई बोले तो वह परमेश्वर के वचन के समान बोले; यदि कोई सेवकाई करे तो वह परमेश्वर की दिई ज्ञई बिसात के समान करे जिसतें सब बातों में यिसू मसीह के द्वारा से परमेश्वर की महिमा होवे; महातम और प्रभुता सदाकाल उस के लिये है आमीन। ७ ८ ९ १० ११

हे प्यारो तुम लोग उस तानेवाली आग से जो तुम्हारे परखने के लिये तुम्हों पर आई है अचंभा मत करो कि मानो तुम्हों पर कोई अनूठी बात बीत गई हो। परन्तु तुम लोग मसीह के दुःखों के भागी होने पर आनन्द करो जिसतें जब उस की महिमा प्रकाश हो जावे तब तुम लोग भी बड़ी आनन्दता से १२ १३

१४ मगन होओ। जो मसीह के नाम के कारण से तुम्हारा अपमान हो जावे तो तुम धन्य हो क्योंकि ऐश्वर्य्य का और परमेश्वर का आत्मा तुम्हों पर रहता है; वे लोग तो उस की निन्दा करते हैं परन्तु तुम्हों से
१५ उस की महिमा प्रगट होती है। ऐसा न होवे कि कोई तुम्हों में से हत्यारा होके अथवा चोर होके अथवा जो बुरा काम करे अथवा जो औरों के काम में
१६ हाथ डालता होय वैसा होके दुःख पावे। पर यदि क्रिस्तियान होने के कारण कोई दुःख पावे तो वह न लजावे परन्तु इस कारण से परमेश्वर की महिमा
१७ प्रगट करे। क्योंकि अब समय पहुंचा है कि परमेश्वर के घराने पर ताड़ना का आरम्भ हो; और यदि हमों से आरम्भ हुआ तो जो लोग परमेश्वर के मंगल समाचार को नहीं मानते हैं उन्हों का अन्त क्या
१८ होगा। और यदि धर्मी मनुष्य कठिनता से बचाया जावे तो धर्म हीन और पापी का ठिकाना कहां है। इस लिये जो परमेश्वर की इच्छा के समान दुःख पाते हैं सो उस को बिश्वस्त सृष्टिकर्ता जानके अच्छे काम करते हुए अपने प्राणों को उस के हाथ सौंपें॥

५ पर्ब्ब

जो प्राचीन तुम्हों में हैं उन्हें मैं संगी प्राचीन होके और मसीह के दुःखों का साक्षी होके और प्रकाश होनेवाली महिमा का भी भागी होके उपदेश देता
२ हूं। परमेश्वर की पाल को जो तुम्हों में है पालो और अध्यक्षी करो न लाचारी से पर प्रसन्नता से; न

अयोग्य प्राप्ति के लालच से पर मन की बांछा से। और प्रभु के अधिकार पर साहिबी मत करो परन्तु पाल के लिये दृष्टान्त बनो। और जब महाचरवाहा प्रगट होगा तब तुम महिमा का अक्षय हार पाओगे। ३ ४

वैसा ही हे तरुणों तुम लोग प्राचीनों के आधीन रहो; बरन तुम लोग सब के सब एक दूसरे के आधीन रहो और दीनताई को पहिन लेओ क्योंकि परमेश्वर अभिमानियों का सामना करता है परन्तु दीनों को वह कृपादान करता है। सो परमेश्वर के शक्तिमान हाथ के तले दीन रहो जिसतें वह तुम्हें समय पर महान करे। और अपनी सारी चिन्ता उस पर डाल दो क्योंकि वह तुम्हारे लिये चिन्ता करता है। ५ ६ ७

चौकस होओ और जागते रहो क्योंकि शैतान तुम्हारा शत्रु जो है सो गरजनेवाले सिंह के समान ढूंढता फिरता है कि किस को फाड़ खावे। तुम लोग बिश्वास में दृढ़ होके उस का सामना करो और जान रखो कि तुम्हारे भाई लोग जो जगत में हैं सो ऐसे ही दुःख उठाते हैं। ८ ९

अब सारी कृपा का परमेश्वर जिस ने हम को अपनी अनन्त महिमा के लिये मसीह यिसू से बुलाया है सो आप ही तुम्हारे थोड़ी बेर लों दुःख उठाने पर तुम्हें सिद्ध और स्थिर और दृढ़ और स्थापित करे। महातम और प्रधानता सदाकाल उसी की है आमीन। १० ११

सिलवानुस जो मेरे जान ते में प्रभूभक्त भाई है उस १२

के हाथ मैं ने थोड़ा करके तुम्हें लिखके उपदेश और साक्षी दिई कि जिस कृपा में तुम लोग स्थिर हो सो
१३ परमेश्वर की सच्ची कृपा है। जो तुम्हारे संग चुनी ऊई होके बाबुल में है और मेरा पुत्र मरकुस तुम्हें
१४ नमस्कार कहते हैं। तुम लोग आपस में प्रेम का चूमा लेके एक दूसरे को नमस्कार करो; तुम सभों पर जो मसीह यिसू में हो कुशल होवे आमीन॥

पथरस की

दूसरी पत्री।

१ पर्व्व

समऊन पथरस से जो यिसू मसीह का दास और प्रेरित है उन को जिन्हों ने हमारे परमेश्वर और मुक्तिदाता यिसू मसीह के धर्म से हमारे संग एक ही बहुमूल्य विश्वास पाया है यह पत्री। २ परमेश्वर और हमारे प्रभु यिसू मसीह के ज्ञान से कृपा और कुशल तुम्हारे लिये अधिक होता जाय।

३ जब कि उसी के ईश्वरीय सामर्थ्य ने जिस ने हम लोगों को अपने ऐश्वर्य्य और गुण के द्वारा से बुलाया है सारी बातें जो जीवन और भलाई के काम की हैं उस के ज्ञान के कारण से हमें दिईं हैं। ४ और उन के द्वारा से निपट बड़ी और बहुमूल्य बाचाएं हमें दिईं गईं जिसतें तुम उस भ्रष्टता से जो कुकामना के कारण से जगत में है छूटके उन्हों के द्वारा से ईश्वरीय स्वभाव के भागी हो जाओ। ५ तो इस लिये तुम लोग

सर्वथा यत्न करके अपने बिश्वास पर धर्म बढ़ाओ और
६ धर्म पर ज्ञान। और ज्ञान पर बराव; और बराव पर
७ धीरज; और धीरज पर भक्ताई। और भक्ताई पर भा-
इयों की संप्रीति; और भाइयों की संप्रीति पर प्रेम
८ बढ़ाओ। क्योंकि यदि ये बातें तुम में हों और बढ़ती
भी जावें तो वे तुम्हों को हमारे प्रभु यिसू मसीह के
९ ज्ञान में मन्द और निष्फल होने न देंगी। परन्तु जिस
किसी में ये बातें नहीं हैं वह अंधा है और आंखें
मीचता है और अपने अगले पापों के धोये जाने को
१० भूल बैठा है। इस लिये हे भाइयो तुम लोग अपनी
बुलाहट और अपना चुना जाना दृढ़ करने को यत्न
करो क्योंकि जो तुम लोग ऐसा करो तो कभी न
११ गिरोगे। बरन यों तुम्हें हमारे प्रभु और मुक्तिदाता
यिसू मसीह के सदाकाल के राज्य में बहुताई से प्र-
वेश मिलेगा।

१२ इस लिये यद्यपि तुम लोग इन बातों को जानते हो
और इस ही सच्चाई पर स्थिर हो तो भी तुम्हें इन को
१३ सदा स्मरण कराने में मैं न चूकूंगा। बरन मैं यह
उचित जानता हूं कि जब लों मैं इस तंबू में हूं तब लों
१४ मैं तुम्हें स्मरण करा करा के उभारूं। क्योंकि मैं जान-
ता हूं जैसा हमारे प्रभु यिसू मसीह ने भी मुझ पर
खोल दिया है कि वह समय कि जिस में मेरा तंबू गि-
१५ राया जाय सो निकट आया है। इस से मैं यत्न करूंगा

कि तुम लोग मेरे कूच करने के पीछे इन बातों को नित सुरत रखो।

१६ क्योंकि जब हम ने अपने प्रभु यिसू मसीह के सामर्थ्य की और उस के आने की वार्ता तुम्हें सुनाई तब हम ने ज्ञान की बनाई ऊई कहानियों का पीछा करके ऐसा नहीं किया परन्तु हम ने उस की महामहिमा को अपनी आंखों से देखा है। १७ क्योंकि जब अत्यन्त बड़े तेज से उस के लिये ऐसी वाणी आई यह मेरा प्रिय पुत्र है उस से मैं प्रसन्न हूं तब उस ने परमेश्वर पिता से सम्मान और महिमा पाई। १८ जब हम उस के संग पवित्र पहाड़ पर थे तब हम ने यह आकाशवाणी सुनी।

१९ सो हम को भविष्यतवक्ताओं के वचन का अधिक निश्चय ऊआ और तुम लोग अच्छा करते हो जो यह जानके उसे चेत करते हो कि वह एक दीपक है जो अन्धेरी जगह में जब लों पौ न फटे और प्रभात तारा तुम्हारे मनों में उदय न होवे तब लों उजाला देता है। २० और यह सब से पहिले जानो कि धर्मग्रन्थ की कोई भविष्यतवाणी किसी जन की निज प्रकाश से नहीं निकली। २१ क्योंकि मनुष्य की इच्छा से भविष्यतवाणी कभी नहीं ऊई परन्तु परमेश्वर के पवित्र लोग पवित्र आत्मा के बोलवाये बोलते थे॥

२ पर्ब्ब

जैसे झूठे भविष्यतवक्ता उन लोगों में थे वैसे झूठे गुरु तुम लोगों में भी होंगे; वे दूसरी बातों के संग संग कुपथ की नाश करनेवाली बातें चलावेंगे और

सर्ब्बस्वामी से जिस ने उन्हें मोल लिया है मुकरेंगे
२ और अपने को जल्द नाश करेंगे। और बहुत से
लोग उन की दुष्टता की चाल पर चलेंगे और उन के
३ कारण से लोग सच्चाई का मार्ग बुरा कहेंगे। वे अप-
ने लालच से बातें बनाके तुम लोगों को व्योपार सा
जानके तुम्हों से व्यवहार करेंगे; दण्ड की आज्ञा जो
बहुत दिनों से उन्हों पर हुई सो आने में विलम्ब
नहीं करती है और उन का विनाश ऊंघता नहीं।

४ क्योंकि परमेश्वर ने दूतगण को जिन्हों ने पाप
किया है नहीं छोड़ा परन्तु उन्हें नरक में डाला और
अंधकार की जंजीरों से बांधे जाने को सौंपा कि महा-
५ न्याय के लिये रखे रहें। और उस ने अगले संसार
को नहीं छोड़ा परन्तु जलमय को धर्म हीनों के संसार
पर लाके आठवें जन अर्थात नूह को जो धर्म का प्रचार
६ करनेहारा था बचाया। और उस ने सदूम और
अमूरा के नगरों को भस्म कर डाला और उन के नष्ट
होने के दण्ड की आज्ञा देके उन लोगों के लिये जो
उस के पीछे धर्म हीन होंगे एक चेतने का दृष्टान्त
७ बना रखा। और उस ने धर्मी लूत को जो दुष्ट लोगों
८ के लुचपन के चाल चलन से उदास था छुड़ाया। क्यों-
कि वह धर्मी जन उन में रहके उन की अनरीति की
चाल देख सुनके प्रतिदिन अपने धर्मिष्ठ प्राण का
९ कसन कर रहा था। सो प्रभु भक्तों को परीक्षा से
छुड़ाने और अधर्मियों को न्याय के दिन लों दण्ड के

लिये रखना जानता है। परन्तु निज करके उन को जो अशुद्ध कामनाओं से शरीर का पीछा करते हैं और आधिपत्य को तुच्छ जानते हैं; वे ढीठ और स्वेच्छावन्त हैं और महतों की निन्दा करने से नहीं डरते हैं। ११ फिर दूतगण जो पराक्रम में और सामर्थ्य में उन से बढ़कर हैं सो प्रभु के आगे उन पर दोष देके निन्दा नहीं करते हैं। १२ परन्तु जैसे पशु जाति से चैतन्य हीन हैं और पकड़े जाने और नष्ट होने के लिये उत्पन्न ऊए हैं वैसे वे लोग भी हैं और उन बातों की जिन्हें वे नहीं समझते हैं निन्दा करते हैं; वे अपनी भ्रष्टता में नष्ट होंगे। १३ और अधर्मता का फल प्राप्त करेंगे; वे दिन को भोग बिलास करना सुख मानते हैं; वे कलंक हैं और खोट हैं और तुम्हारे संग खाके अपने छल से सुख बिलास करते हैं। १४ उन की आंखें छिनाले से भरी हैं; वे पाप से हाथ उठा नहीं सकते हैं; वे चंचल प्राणियों को फन्दलाते हैं; उन के मन लोभ के जुगतों में साधे ऊए हैं; वे स्रापित सन्तान हैं। १५ वे सीधे मार्ग को छोड़के भटक गये हैं और बोसर के पुत्र बलआम के मार्ग पर जिस ने अधर्मता की मजूरी को चाहा हो लिये हैं। १६ परन्तु उस ने अपने अपराध की दपट पाई क्योंकि अनबोले गधे ने मनुष्य की बोली बोलके उस भविष्यतवक्ता के बौरापन को रोक रखा। १७ वे अंधे कूए हैं और आंधी के उड़ाये ऊए मेघ हैं; सदाकाल का घोर अन्धकार

१८ उन्हों के लिये धरा हुआ है। वे घमण्ड की व्यर्थ बकवाद करके उन्हें जो भटके हुओं में से कुछ कुछ बच निकले थे शरीर के कुकामनाओं में और लुच-
१९ पन में फंसाते हैं। वे लोग उन से निर्बन्धता की बाचा करके आप ही भ्रष्टता के दास ठहरते हैं क्योंकि जो जिस का जीता हुआ है सो उसी की दासता में
२० वह पड़ा। क्योंकि यदि वे लोग प्रभु और मुक्तिदाता यिसू मसीह का ज्ञान पाके संसार की मलिनता से बचकर उन में फिरके फंसें और हार जावें तो उन
२१ की पिछली दशा पहिली से बुरी हो चुकी। क्योंकि जो वे लोग धर्म का मार्ग जानकर उस पवित्र आज्ञा से जो उन्हें सौंपी गई थी फिर गये इस से अच्छा उन
२२ के लिये यह होता कि वे उसे नहीं जानते। परन्तु यह सच्ची कहावत उन पर ठीक आती है अर्थात कुत्ता अपने छांड़े हुए को फिर खा जाने को और धोई हुई सूअर दलदल में लोटने को फिरी है॥

३ पर्ब्ब

हे प्यारो मैं तुम्हें अब दूसरी पत्री लिखता हूं और दोनों में स्मरण कराने की रीति पर तुम्हारे खरे
२ मनों को उभारता हूं। जिसतें जो जो बातें पवित्र भविष्यतवक्ताओं ने आगे कहीं हैं और हमों ने जो प्रभु और मुक्तिदाता के प्रेरित होके आज्ञा दिई है
३ सो तुम लोग स्मरण करो। और यह पहिले जान रखो कि पिछले दिनों में हंसी ठट्ठा करनेहारे आवेंगे; वे अपनी कुकामनाओं की रीति पर चलेंगे।

और कहेंगे कि उस के आने की बाचा क्या हो गई | ४
है; क्योंकि जब से पितर लोग सो गये हैं तब से
लेके सब कुछ जैसा सृष्टि के आरम्भ में था अब लों
वैसा ही है।

परन्तु वे लोग जान बूझके भूल गये कि परमेश्वर | ५
के बचन से आकाश आदि से हैं और भूमि जो है सो
जल से और जल के द्वारा से बन गई है। उन से जगत | ६
जो तब ही था सो जल में डूबके नष्ट हुआ। परन्तु | ७
आकाश और पृथिवी जो अब हैं सो उसी बचन से
रखी हैं और उस दिन लों जब कि अधर्मी मनुष्यों
का न्याय और नाश होवे जलाये जाने को बने रहेंगे।

परन्तु हे प्यारो यह बात तुम्हों पर छिपी न रहे | ८
कि प्रभु कने एक दिन सहस्त्र बरस के ऐसा है और
सहस्त्र बरस एक दिन के ऐसे हैं। प्रभु अपनी बाचा | ९
के विषय में बिलम्ब नहीं करता जैसा कि कोई कोई
बिलम्ब समझते हैं परन्तु वह हमों पर धीरज करता
है क्योंकि वह नहीं चाहता है कि कोई जन नष्ट होवे
परन्तु कि सब लोग मन फिरावें। पर जैसा रात को | १०
चोर आता है वैसा प्रभु का दिन आवेगा; उसी में
आकाश बड़े सन्नाटे से जाते रहेंगे और तत्व जो हैं
सो जलके गल जायेंगे और पृथिवी उन क्रियाओं
समेत जो उस में हैं जलके पिघल जायगी।

सो जब कि ये सब बस्तें गल जायेंगी तो तुम लोगों | ११
को पवित्र चलन में और भलाई में कैसा बना उचित

१२ है। और परमेश्वर के दिन जिस में आकाश जलके गल जायेंगे और तत्व जलके पिघल जायेंगे उस के आने की बाट जोहो और उस के लिये तरसते रहो।
१३ परन्तु उस की बाचा के समान हम लोग नये आकाश और नई पृथिवी की कि जिन में धर्म बसता है बाट जोहते हैं।

१४ इस लिये हे प्यारो जब कि तुम लोग ऐसी बातों की बाट जोहते हो तो यत्न करो कि तुम कलंक हीन और दोष रहित होके शान्ति से उस के आगे पाये
१५ जाओ। और हमारे प्रभु का धीरज धरना तुम लोग अपना निस्तार जानो; वैसा ही हमारे प्यारे भाई पौलुस ने भी उस बुद्धि के समान जो उसे दिई गई
१६ तुम्हें लिखा है। और वह अपनी सब पत्रियों में भी इन बातों के विषय में कहता है; उन में कई बातें हैं कि जिन का समझना कठिन है और मूर्ख और अस्थिर लोग जैसे धर्मग्रन्थ की दूसरी बातें वैसे उन बातों को अपनी नष्टता के लिये फेरते हैं।

१७ इस लिये हे प्यारो जब तुम लोग यह आगे से जान गये तो चौकस रहो न होवे कि तुम भी दुष्टों की भूल
१८ से भरमाये जाके अपनी दृढ़ता से जाते रहो। परन्तु हमारे प्रभु और मुक्तिदाता यिसू मसीह की कृपा और ज्ञान में बढ़ते जाओ; उसी का महातम अब है और सदाकाल रहेगा आमीन॥

यूहन्ना की

पहिली पत्री।

१ पर्ब्ब

जीवन के बचन के बिषय में जो आरम्भ से था जिसे हम ने सुना है और अपनी आंखों से देखा है और ताक रखा है और हमारे हाथों ने छूआ है उस का समाचार हम तुम्हें देते हैं। २ क्योंकि जीवन प्रगट ज़ुआ और हम ने देखा है और हम साक्षी देते हैं और जो अनन्त जीवन पिता के संग था और जो हम पर प्रगट ज़ुआ है उस का समाचार हम तुम्हें देते हैं। ३ जो हम ने देखा है और सुना है उस का समाचार हम तुम्हें देते हैं जिसतें तुम लोग भी हमारे संग मेल रखो और हमारा मेल तो पिता के और उस के पुत्र यिसू मसीह के संग है। ४ और हम ये बातें तुम्हें लिखते हैं जिसतें तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाय।

५ जो समाचार हम ने उस से सुना है और तुम्हें सुनाते हैं सो यह है कि परमेश्वर उजाला है और

६ उस में अंधेरा कुछ भी नहीं है। यदि हम कहें कि हम उस से मेल रखते हैं और अंधेरे में चलते हैं तो हम झूठे ठहरते और सच्चाई पर नहीं चलते हैं। ७ पर जैसा कि वह उजाले में है यदि वैसा ही हम लोग उजाले में चलें तो हम लोग आपस में एक दूसरे से मेल रखते हैं और उस के पुत्र यिसू मसीह का लोहू हम को सब पाप से पवित्र करता है।

८ यदि हम कहें कि हमारा कुछ पाप नहीं है तो हम अपने को धोखा देते हैं और सच्चाई हमों में ९ नहीं है। यदि हम अपने पापों को मान लेवें तो वह हमारे पापों को छिमा करने को और सारे अधर्मता १० से हमें पवित्र करने को बिश्वस्त और धर्मी है। यदि हम कहें कि हम ने पाप नहीं किया तो हम उसे झूठा ठहराते हैं और उस का बचन हम में नहीं है॥

२ पर्ब्ब

हे मेरे बच्चो मैं ये बातें तुम्हें लिखता हूं जिसतें तुम लोग पाप न करो; परन्तु यदि कोई जन पाप करे तो यिसू मसीह जो धर्मी है सो पिता के पास हमारा २ पक्षवादी है। और वही हमारे पापों का प्रायश्चित्त है; और केवल हमारे पापों का नहीं है परन्तु सारे ३ संसार के भी। यदि हम उस की आज्ञाओं को पालन करें तो हम इस से जानते हैं कि हमें उस का ज्ञान ४ है। जो कहता है मुझे उस का ज्ञान है और वह उस की आज्ञाओं को पालन न करे सो झूठा है और सच्चाई ५ उस में नहीं है। परन्तु जो उस का बचन पालन करता

है उस में निश्चय करके परमेश्वर का प्यार सिद्ध हुआ है; इस से हम जानते हैं कि हम उस में हैं। जो कहता है मैं उस में बना रहता हूं उस को चाहिये कि जैसी चाल वह चलता था वैसी वह भी चले। ६

हे भाइयो कोई नई आज्ञा नहीं परन्तु पुरानी आज्ञा जो तुम्हें आरम्भ से मिली थी सो मैं तुम्हें लिखता हूं; जो वचन तुम्हों ने आरम्भ से सुना है सो वह पुरानी आज्ञा है। फिर एक नई आज्ञा जो उस में और तुम्हों में सच है सो मैं तुम्हें लिखता हूं क्योंकि अंधेरा बीत गया और सच्चा उजाला अब चमकता है। जो कहता है मैं उजाले में हूं और अपने भाई से बैर करता है सो अब लों अंधेरे में है। जो अपने भाई को प्यार करता है सो उजाले में बना रहता है और उस में ठोकर का कारण नहीं है। परन्तु जो अपने भाई से बैर रखता है सो अंधेरे में है और अंधेरे में चलता है और वह नहीं जानता है कि मैं किधर चला जाता हूं क्योंकि अंधेरे ने उस की आंखें अंधी कर दिई हैं। हे बच्चो मैं तुम्हें लिखता हूं क्योंकि उस के नाम से तुम्हारे पाप छिमा किये गये हैं। हे पितरो मैं तुम्हें लिखता हूं क्योंकि जो आरम्भ से है उसे तुम ने जाना है; हे तरुणो मैं तुम्हें लिखता हूं क्योंकि तुम ने उस दुष्ट को जीता है; हे बच्चो मैं तुम्हें लिखता हूं क्योंकि तुम ने पिता को जाना है। हे पितरो मैं ने तुम्हें लिखा है क्योंकि जो आरम्भ से है उसे तुम ने ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४

जाना है; हे तरुणो मैं ने तुम्हें लिखा है क्योंकि तुम बलवन्त हो और परमेश्वर का बचन तुम में बसता है और तुम ने उस दुष्ट को जीता है।

१५ संसार को और जो कुछ संसार में है उस को प्यार मत करो; यदि संसार को कोई प्यार करे तो उस में

१६ पिता का प्यार नहीं है। क्योंकि सब कुछ जो संसार में है अर्थात शरीर की कामना और आंखों की कामना और जीवन का गर्ब जो है सो पिता से नहीं परन्तु

१७ संसार से है। और संसार और उस की कामना जाती रहती है परन्तु जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता

१८ है सो सदाकाल बना रहता है। हे बच्चो यह अन्त का समय है और जैसा कि तुम्हों ने सुना है कि मसीह का बिरोध करनेवाला आता है सो अभी बहुत से मसीह के बिरोध करनेवाले हुए हैं; इस से हम

१९ जानते हैं कि यह अन्त का समय है। वे हमों में से तो निकले पर वे हमों में के नहीं थे क्योंकि यदि वे हमों के होते तो हमारे संग रहते परन्तु वे निकले जिसतें वह बात कि वे सब हमों में के नहीं थे प्रगट

२० होवे। और तुम ने उस पवित्रमय से अभिषेक पाया

२१ और सब कुछ जानते हो। मैं ने तुम्हें इस लिये नहीं लिखा है कि तुम लोग सत्य को नहीं जानते परन्तु इस लिये कि तुम इसे जानते हो और यह कि कोई

२२ झूठ सत्य में से नहीं है। जो कोई कहता है कि यिसू वह मसीह नहीं है यदि वह जन झूठा न होय तो

कौन है; जो पिता को और पुत्र को मुकरता है सो मसीह का बिरोध करनेवाला है। जो कोई पुत्र को मुकरता है सो पिता को नहीं मानता है। २३

इस लिये जो तुम ने आरम्भ से सुना है सोई तुम्हों में बसे; जो तुम ने आरम्भ से सुना है यदि वह तुम्हों में रहे तो तुम भी पुत्र में और पिता में रहोगे। और जो बाचा उस ने हम से किई है सो यह है अर्थात अनन्त जीवन। जो तुम्हें भरमाते हैं उन हीं के विषय में मैं ने ये बातें तुम्हें लिखीं हैं। और जो अभिषेक तुम ने उस से पाया है सो तुम्हों में रहता है और तुम्हारे लिये नहीं चाहिये कि कोई तुम्हें सिखावे परन्तु जैसा यही अभिषेक तुम्हें सब बातों के विषय में सिखाता है और सच है झूठ नहीं है और जैसा उस ने तुम्हें सिखाया है वैसा तुम लोग उस में रहो। २४ २५ २६ २७

अब हे बच्चो तुम लोग उस में रहो जिसतें जब वह प्रगट होवे तब हम निश्शंका ठहरें और उस के आने पर उस के आगे लज्जित न होवें। सो जब कि तुम लोग जानते हो कि वह जो है धर्मी है तो तुम जानते हो कि जो कोई धर्म करता है सो उस से उत्पन्न हुआ है॥ २८ २९

३ पर्ब्ब

देखो कैसा प्रेम पिता ने हम से किया है कि हम लोग परमेश्वर के पुत्र कहावें; इस लिये संसार हम को नहीं जानता क्योंकि उस ने उस को नहीं जाना। हे प्यारो अब हम परमेश्वर के पुत्र हैं और यह तो २

अब लों प्रगट नहीं होता कि हम क्या कुछ होंगे परन्तु हम जानते हैं कि जब वह प्रगट होगा तब हम उस ही के समान होंगे क्योंकि हम उसे जैसा
३ वह है वैसा देखेंगे। और हर एक जिस को यह आशा उस से है सो जैसा वह पवित्र है वैसा अपने
४ को पवित्र करता है। जो कोई पाप करता है सो व्यवस्था को भी भंग करता है क्योंकि पाप जो है सो
५ व्यवस्था को भंग करना है। और तुम जानते हो कि वह हमारे पापों को उठा ले जाने को प्रगट हुआ
६ है और उस में कुछ पाप नहीं है। जो कोई उस में बसता है सो पाप नहीं करता है; जो कोई पाप करता है उस ने उसे नहीं देखा है और उसे नहीं जाना है।

७ हे बच्चो तुम्हें कोई भरमाने न पावे; जो जन धर्म किया करता है सो जैसा कि वही धर्मी है वैसा ही
८ धर्मी ठहरता है। जो जन पाप किया करता है सो शैतान का है क्योंकि शैतान आरम्भ से पाप करनेहारा ठहरा; परमेश्वर का पुत्र इस लिये प्रगट हुआ कि
९ शैतान के कामों को नष्ट करे। जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है सो पाप नहीं करता है क्योंकि उस का बीज उस में रहता है और वह पाप कर नहीं सकता है क्योंकि वह परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है।
१० इस से परमेश्वर के पुत्र और शैतान के पुत्र प्रगट होते हैं; जो कोई धर्म किया नहीं करता है और जो अपने

भाई को प्यार नहीं करता है सो परमेश्वर का नहीं है।

११ क्योंकि जो समाचार तुम्हों ने आरम्भ से सुना है सो यह है कि हम आपस में एक दूसरे को प्यार करें। १२ काइन के समान नहीं कि वह उस दुष्ट का था और उस ने अपने भाई को घात किया; और उस ने क्यों उसे घात किया; उस के कर्म बुरे थे और उस के भाई के भले थे इस लिये किया। १३ हे मेरे भाइयो यदि संसार तुम्हों से बैर रखे तो तुम लोग अचंभा मत करो। १४ हम तो जानते हैं कि हम मृत्यु से पार होके जीवन में आये क्योंकि हम भाइयों को प्यार करते हैं; जो अपने भाई को प्यार नहीं करता है सो मृत्यु में रहता है। १५ जो कोई अपने भाई से बैर रखता है सो हत्यारा है और तुम लोग जानते हो कि किसी हत्यारे में अनन्त जीवन नहीं बसता है। १६ हम ने इस से प्यार को जाना कि उस ने हमारे लिये अपना प्राण धर दिया; सो हमें भी चाहिये कि भाइयों के लिये अपना प्राण धर देवें। १७ इस कारण जिस किसी के पास जगत का द्रव्य होय और वह अपने भाई को दरिद्री देखके अपने मन की मया उस से अलग रखे तो परमेश्वर का प्यार उस में क्योंकर बसता है। १८ हे मेरे बच्चो हम बात ही से और जीभ ही से नहीं परन्तु काम से और सच्चाई से प्रेम करें।

१९ और इस से हम जानते हैं कि हम सच्चाई के हैं

और अपने मनों को ढाड़स उस के आगे बन्धावेंगे।
२० क्योंकि यदि हमारा मन हम पर दोष देवे तो परमे-
श्वर हमारे मन से बड़ा है और वह सब कुछ जानता
२१ है। हे प्यारो यदि हमारा मन हमें दोष न देवे तो
२२ हम परमेश्वर के आगे निश्शंका होते हैं। और जो
कुछ हम मांगते हैं सो हम उस से पाते हैं क्योंकि
हम उस की आज्ञाओं को पालन करते हैं और जो
२३ कुछ उस को भावता है सो हम करते हैं। और उस
की आज्ञा यह है कि हम उस के पुत्र यिसू मसीह के
नाम पर बिश्वास लावें और जैसा उस ने आज्ञा दिई है
२४ वैसा हम एक दूसरे को प्यार करें। और जो उस की
आज्ञाओं को पालन करता है सो उस में रहता है
और वह इस में रहता है; और इस से अर्थात आत्मा
से जिस को उस ने हमें दिया है हम जानते हैं कि वह
हम में रहता है॥

४ पर्ब्ब

हे प्यारो तुम लोग हर एक आत्मा की प्रतीति न
करो परन्तु आत्माओं को परखो कि वे परमेश्वर की
ओर से हैं अथवा नहीं हैं; क्योंकि बहुत से झूठे
२ भविष्यतवक्ता जगत में निकल गये हैं। तुम लोग इस
से परमेश्वर के आत्मा को जानते हो; जो कोई आत्मा
यिसू मसीह को देह धारण किया हुआ मान लेता है
३ सो परमेश्वर की ओर से है। और जो कोई आत्मा
यिसू मसीह को देह धारण किया हुआ नहीं मान
लेता है सो परमेश्वर की ओर से नहीं है; और यही

मसीह का वह विरोध करनेवाला है; उस का समाचार तुम ने सुना कि वह आता है और वह अब संसार में आ चुका है।

४ हे बच्चो तुम लोग तो परमेश्वर के हो और उन पर जयवन्त हुए हो क्योंकि जो तुम्हों में है सो उस से जो संसार में है बड़ा है। ५ वे लोग संसार के हैं इस लिये संसार की बोलते हैं और संसार उन की सुनता है। ६ हम लोग परमेश्वर के हैं; जिसे परमेश्वर का ज्ञान है सो हमारी सुनता है; जो परमेश्वर का नहीं है सो हमारी नहीं सुनता है; इस से हम सच्चाई के आत्मा को और भ्रम के आत्मा को पहचान लेते हैं।

७ हे प्यारो आओ हम एक दूसरे को प्यार करें क्योंकि प्यार परमेश्वर की ओर से है और हर एक जो प्यार करता है सो परमेश्वर से जनमा हुआ है और परमेश्वर का ज्ञान रखता है। ८ जिस जन में प्यार नहीं है उस में परमेश्वर का ज्ञान नहीं है क्योंकि परमेश्वर तो प्यार ही है। ९ परमेश्वर का प्यार जो वह हम से रखता है सो इस से प्रगट हुआ कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा जिसतें हम उस के द्वारा से जीवें। १० इस में प्यार है; यह नहीं कि हम ने परमेश्वर को प्यार किया है परन्तु कि उस ने हम को प्यार किया और अपने पुत्र को भेजा है कि वह हमारे पापों का प्रायश्चित्त होवे। ११ हे प्यारो यदि परमेश्वर ने हमों को ऐसा प्यार किया है तो हमें भी चाहिये कि

१२ एक एक से प्यार रखें। किसी जन ने परमेश्वर को कभी नहीं देखा है; यदि हम लोग एक दूसरे से प्यार रखें तो परमेश्वर हम में रहता है और उस का प्यार १३ हम में सिद्ध हुआ है। इसी से हम जानते हैं कि हम उस में रहते हैं और वह हम में रहता है कि उस ने अपने आत्मा में से हमें दिया है।

१४ और हम ने देखा है और हम साक्षी देते हैं कि पिता ने पुत्र को संसार का मुक्तिदाता होने को भेजा १५ है। जो कोई यिसू को मान लेवे कि वह परमेश्वर का पुत्र है उस में परमेश्वर रहता है और वह पर-१६ मेश्वर में रहता है। और परमेश्वर का प्यार जो वह हमों से रखता है उस को हम ने जान लिया और बिश्वास किया; परमेश्वर जो है सो प्यार है और जो जन प्यार में रहता है सो परमेश्वर में रहता है और १७ परमेश्वर उस में रहता है। इस से प्यार हमों में सिद्ध होता है कि हम न्याय के दिन में निशंका ठहरें क्योंकि जैसा वह है वैसा हम लोग इस जगत में हैं। १८ प्यार में डर नहीं है परन्तु पूरा प्यार जो है सो डर को निकाल देता है क्योंकि डर में संकट है; जो १९ डरनेवाला है सो प्यार में सिद्ध नहीं ठहरा। हम उसे प्यार करते हैं क्योंकि पहिले उस ने हम को २० प्यार किया है। यदि कोई कहे मैं परमेश्वर को प्यार करता हूं और वह अपने भाई से बैर रखे तो वह झूठा है क्योंकि जो अपने भाई को जिसे उस ने देखा

है प्यार नहीं करता है सो परमेश्वर को जिसे उस ने नहीं देखा है क्योंकर प्यार कर सकता है। २१ और यह आज्ञा हम ने उस से पाई है कि जो जन परमेश्वर को प्यार करता है सो अपने भाई को भी प्यार करे॥

५ पर्व्व

जो कोई बिश्वास करता है कि यिसू जो है सो मसीह है सो परमेश्वर से जनमा हुआ है; और जो कोई जनमानेहारे को प्यार करता है सो उस को भी जो उस से जनमा है प्यार करता है। २ जब कि हम परमेश्वर को प्यार करते और उस की आज्ञाओं को पालन करते हैं तो इस से जानते हैं कि हम परमेश्वर के बालकों को प्यार करते हैं। ३ क्योंकि परमेश्वर का प्यार यह है कि हम उस की आज्ञाओं को पालन करें और उस की आज्ञाएं तो कठिन नहीं हैं। ४ क्योंकि जो कि परमेश्वर से जनमा हुआ है सो संसार पर जयवन्त होता और वह जय जो संसार पर जयवन्त होता है सो हमारा बिश्वास है। ५ जो संसार पर जयवन्त होता है सो कौन है; केवल वही है जो बिश्वास रखता है कि यिसू जो है सो परमेश्वर का पुत्र है। ६ यह वही है जो पानी और लोहू के संग आया अर्थात यिसू वह मसीह; वह केवल पानी से नहीं परन्तु पानी और लोहू के संग आया और आत्मा सो ही साक्षी देनेहारा है क्योंकि आत्मा जो है सो सच्चाई है। ७ कि स्वर्ग में जो साक्षी देते हैं सो तीन हैं अर्थात पिता और बचन और पवित्र आत्मा और ये तीनों एक हैं। ८ और

भूमि पर जो साची देते हैं सो तीन हैं अर्थात आत्मा और पानी और लोहू और ये तीनों एक में मिलते हैं। ९ यदि हम लोग मनुष्यों की साची मानें तो परमेश्वर की साची उस से बड़ी है क्योंकि परमेश्वर की साची वह है जिसे उस ने अपने पुत्र के विषय में दिई है। १० जो कि परमेश्वर के पुत्र पर बिश्वास लाता है सो साची को अपने ही में रखता है ; जो कि परमेश्वर पर बिश्वास नहीं लाता है उस ने उस को झूठा ठहराया क्योंकि जो साची परमेश्वर ने अपने पुत्र के विषय में ११ दिई है उस पर उस ने बिश्वास नहीं किया। और वह साची यह है कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन १२ दिया है और यह जीवन उस के पुत्र में है। वह पुत्र जिस का होय जीवन उसी का है ; परमेश्वर का पुत्र जिस का नहीं होय जीवन उसी का नहीं है।

१३ मैं तुम्हों को जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर बिश्वास लाये हो ये बातें लिखता हूं जिसतें तुम लोग जानो कि अनन्त जीवन तुम्हारा है और जिसतें तुम परमेश्वर १४ के पुत्र के नाम पर बिश्वास लाओ। और जो ढाढ़स हम उस के आगे रखते हैं सो यह है कि यदि हम उस की इच्छा के समान कुछ उस से मांगें तो वह १५ हमारी सुनता है। और यदि हम जानते हैं कि जो कुछ हम उस से मांगते हैं वह हमारी सुनता है तो हम जानते कि जो कुछ हम ने उस से मांगा है सो हम पावेंगे।

यदि कोई अपने भाई को देखे कि ऐसा पाप करता है जो मृत्यु लों नहीं पहुंचाता तो वह मांगे और उसे जीवन दिया जायगा ; जो जन मृत्यु लों पहुंचानेवाला पाप नहीं करता है उस के लिये यह है ; ऐसा मृत्यु लों पहुंचानेवाला पाप है ; मैं नहीं कहता कि वह उस के लिये प्रार्थना करे। हर एक अधर्म पाप है परन्तु ऐसा पाप है कि जो मृत्यु लों नहीं पहुंचाता है। हम जानते हैं कि जो कोई परमेश्वर से जनमा हुआ है सो पाप नहीं करता है परन्तु जो परमेश्वर से जनमा हुआ है सो अपनी चौकसी करता है और वह दुष्ट उसे नहीं छूता है। हम जानते हैं कि हम परमेश्वर से हैं और सारा संसार दुष्ट में पड़ा है। परन्तु हम जानते हैं कि परमेश्वर का पुत्र आया है और हमें वह समझ दिई है कि हम उस को जो सत्य है जानें ; और हम उस में जो सत्य है अर्थात उस के पुत्र यिसू मसीह में हैं ; सत्य परमेश्वर और अनन्त जीवन यही है। हे बच्चो तुम लोग अपने को मूर्तों से बचाय रखो आमीन ॥ | १६ १७ १८ १९ २० २१

यूहन्ना की

दूसरी पत्री।

१ पर्ब्ब

प्राचीन की ओर से चुनी हुई बीबी को और उस के बालकों को यह पत्री; कि सच्चाई के कारण से जो हम में रहती है और हमारे संग सर्व्वदा रहेगी मैं
२ उन्हें प्यार करता हूं। और केवल मैं ही नहीं परन्तु जितनों को सच्चाई का ज्ञान है वे सब भी प्यार करते
३ हैं। कृपा और दया और कुशल परमेश्वर पिता से और पिता के पुत्र प्रभु यिसू मसीह से तुम्हारे संग सच्चाई में और प्रेम में रहे।

४ जब मैं ने तेरे बालकों में से कई एक उस आज्ञा के समान जो हमें पिता से मिली सच्चाई पर चलते पाया
५ तब मैं ने बहुत आनन्द किया। और अब हे बीबी मैं तुझ को कोई नई आज्ञा नहीं परन्तु जो हम ने आरम्भ से पाई थी सो ही लिखके तुम से बिन्ती करता हूं कि
६ हम आपस में एक दूसरे को प्यार करें। और प्यार यही है कि हम उस की आज्ञाओं पर चलें; यह वही

आज्ञा है जैसा तुम ने आरम्भ से सुना है कि तुम उस पर चलो।

क्योंकि बहुत भरमानेवाले लोग जगत में निकले हैं; वे यिसू मसीह को देह धारण किया हुआ नहीं मान लेते हैं; भरमानेवाला और मसीह का बिरोध करनेवाला यही है। चौकस रहो जिसतें जो काम हम ने किये हैं सो हम खो न देवें परन्तु पूरा फल प्राप्त करें। जो कोई अपराध करता है और मसीह की शिक्षा में नहीं रहता है परमेश्वर उस का नहीं है; जो मसीह की शिक्षा में रहता है पिता और पुत्र उस के हैं। यदि कोई तुम्हारे पास आके यह शिक्षा न लावे तो उसे घर में न आने दो और उस को कल्याण का नमस्कार मत कहो। क्योंकि जो जन कल्याण बचन उस से कहे सो उस के बुरे कामों का भागी ठहरता है। ७ ८ ९ १० ११

मुझे बहुत सी बातें तुम्हें लिखना है पर मैं ने न चाहा कि लिखनपत्र और मसि से लिखूं परन्तु मुझे आसा है कि तुम्हारे पास आऊं और मुंहामुंह बोलूं जिसतें हमारा आनन्द पूरा हो जाय। तेरी चुनी हुई बहिन के लड़के तुझे नमस्कार कहते हैं आमीन ॥ १२ १३

यूहन्ना की

तीसरी पत्री।

१ पर्ब्ब

प्राचीन की ओर से प्रिय गायुस को जिसे मैं सच्चाई में प्यार करता हूं यह पत्री।

२ हे प्यारे मैं यह प्रार्थना करता हूं कि जैसा तेरा प्राण कुशलक्षेम से रहता है वैसा ही तू सब बातों ३ में कुशलक्षेम से और भला चंगा रहे। क्योंकि जब भाइयों ने आके तेरी सच्चाई पर साक्षी दिई जैसा तू सच्चाई से चलता है तब मैं बहुत आनन्दित हुआ। ४ जो मैं यह बात सुनता कि मेरे बालक सच्चाई में चलते ५ हैं तो इस से बड़ा मेरा कोई आनन्द नहीं है। हे प्यारे जो कुछ तू भाइयों से और परदेशियों से करता है ६ सो तू विश्वस्तता से करता है। उन्हों ने कलीसिया के आगे तेरे प्रेम पर साक्षी दिई है; यदि तू उन्हें जैसा परमेश्वर के लोगों को योग्य है वैसा ही यात्रा में ७ आगे बढ़ावे तो तू अच्छा करता है। क्योंकि उस के नाम के लिये वे लोग निकले और अन्यदेशियों से ८ कुछ नहीं लिया। सो ऐसों को ग्रहण करना हमें

उचित है जिसतें हम लोग सच्चाई के काम में संगी कर्मकारी ठहरें।

९ मैं ने कलीसिया को लिखा है परन्तु दियोत्रेफस ने जो उन में प्रधानता को चाहता है सो हमें ग्रहण नहीं करता है। १० सो जब मैं आऊंगा तब जो काम वह करता है उन्हें मैं चेत करूंगा क्योंकि वह हमारे विषय में बुरी बातें बका करता है और इसे बस नहीं जानके वह भाइयों को आप ग्रहण नहीं करता है और औरों को जो उन्हें ग्रहण किया चाहते हैं रोकता है और उन्हें कलीसिया से निकाल देता है। ११ हे प्यारे तू बुराई की चाल नहीं परन्तु भलाई की चाल चल; जो भला करता है सो परमेश्वर का है परन्तु जो बुरा करता है उस ने परमेश्वर को नहीं देखा।

१२ दैमेत्रियुस जो है सो सब मनुष्यों से और सच्चाई से भी साक्षी रखता है और हम भी साक्षी देते हैं और तुम जानते हो कि हमारी साक्षी सच है।

१३ मुझे तो बहुत कुछ लिखना था परन्तु मैं मसि और लेखनी से तुझे लिखने नहीं चाहता हूं। १४ परन्तु मुझे आसा है कि जल्द तुझे देखूं; तब हम मूंहामूंह कह सुन लेंगे। १५ तुझ पर कुशल होवे; हमारे मित्र तुझे नमस्कार कहते हैं; तू मित्रों को नाम लेके नमस्कार कह॥

यहूदाह की

पत्री।

१ पर्ब्ब

यहूदाह की ओर से जो यिसू मसीह का दास और याकूब का भाई है उन बुलाये हुओं को जो पिता परमेश्वर में पवित्र किये गये और यिसू मसीह में रक्षा किये गये हैं यह पत्री। २ दया और कुशल और प्रेम तुम्हारे लिये बढ़ता रहे।

३ हे प्यारो जब मैं ने साधारण निस्तार के विषय में तुम्हें लिखने को मनचली किई तब मैं ने उस लिखे से तुम्हें उपदेश देना उचित जाना कि जो विश्वास एक बार सन्तों को सौंपा गया उस के लिये तुम लोग जी लगाके परिश्रम करो। ४ क्योंकि कोई कोई मनुष्य जो पराचीन से इस दण्ड की आज्ञा के लिये आगे ठहराये गये थे सो आ घुसे हैं; वे धर्म्म हीन लोग होके हमारे परमेश्वर की कृपा को लुचपन से पलटते हैं और अकेले सर्व्वस्वामी परमेश्वर से और हमारे प्रभु यिसू मसीह से मुकरते हैं।

५ परन्तु मैं चाहता हूं कि तुम्हें वह बात जो तुम लोग एक बार जान चुके हो चेत कराऊं कि प्रभु लोगों को मिसर देश से बचा लाया; फिर उन्हें जो बिश्वास न लाये उस ने नष्ट किया। ६ और जो दूतगण अपने आधिपत्य को धरे न रहे परन्तु अपने निज निवास को छोड़ दिया उन्हें उस ने सदाकाल की जंजीरों में अंधकार के अंतर न्याय के महादिन लों रखा है। ७ वैसा ही सदूम और अमूरा और उन के आस पास के नगर जिन्हों ने उन के समान छिनाला किया और पराये शरीर का पीछा किया सो सदाकाल की आग का दण्ड पाके चेतने का दृष्टान्त बने रहते हैं।

८ वैसा ही ये स्वप्न देखनेहारे भी शरीर को अशुद्ध करते हैं और आधिपत्य को तुच्छ जानते हैं और महतों की निन्दा करते हैं। ९ परन्तु मीकाईल महादूत ने जब शैतान के संग टण्टा करके मूसा की लोथ के विषय में विवाद किया तब उसे साहस नहीं हुआ कि उस की निन्दा करके उसे दोष देवे परन्तु उस ने कहा कि प्रभु तुझ को डांटे। १० पर जिन बातों को ये लोग नहीं जानते उन की वे निन्दा करते हैं; और जिन बातों को वे चैतन्य हीन पशुओं के समान जाति से जानते हैं इन में वे अपने को सत्यानाश करते हैं। ११ उन पर हाय क्योंकि वे काइन के मार्ग पर चले हैं और बलआम की चूक में मजूरी के लिये बह गये और कोरह की विपरीत में नष्ट हुए।

१२ तुम्हारे प्रेम की जेवनारों में वे कलंक हैं; जब वे तुम्हारे संग खाते हैं तब डर को छोड़के अपना पेट भर लेते हैं; वे पवन के उड़ाये हुए निर्जल मेघ हैं; वे पतझड़ी के पेड़ हैं फल हीन और दो बार मरे १३ हुए और जड़ से उखाड़े हुए हैं। समुद्र की प्रचण्ड लहरें होके वे अपनी निर्लज्जता का फेन फेंकते हैं; वे भटकनेवाले तारे हैं; उन के लिये सदाकाल का घोर अन्धकार धरा हुआ है।

१४ हनूख जो आदम से सातवां था उस ने भी उन के विषय में भविष्यतवाणी यह कही है कि देख प्रभु १५ अपने लाखों सन्तों को लेके आता है। कि सब लोगों पर न्याय करे और कि जो उन में से धर्म हीन हैं उन्हें उन के अधर्मता के सब कामों पर जो उन्हों ने धर्म हीन होके किये हैं और सारी कठोर बातों पर जो धर्म हीन पापियों ने उस के बिरोध में कहीं हैं दोष १६ देवे। ये कुड़कुड़ानेवाले और असन्तुष्ट लोग हैं; वे अपने कुकामनाओं पर चलते और मुंह से बड़ा बोल बोलते हैं और स्वार्थ के लिये लोगों के स्तुतिकार हैं।

१७ परन्तु हे प्यारो जो बातें हमारे प्रभु यिसू मसीह के प्रेरितों ने आगे कहीं हैं सो तुम लोग चेत करो। १८ क्योंकि उन्हों ने तुम्हें कह दिया है कि अन्त समय में हंसी ठट्ठा करनेहारे होंगे और वे अपनी अधर्मता १९ की कुकामनाओं पर चलेंगे। वे अपने को अलग

कर नेहारे हैं; वे इन्द्रियाधीन हैं और आत्मा उन में नहीं है। परन्तु हे प्यारो तुम लोग अपने महापवित्र २० बिश्वास का घर बनाके पवित्र आत्मा से प्रार्थना करते हुए। अपने को परमेश्वर के प्रेम में बनाये रखो और २१ अनन्त जीवन के लिये हमारे प्रभु यिसू मसीह की दया की बाट जोहते रहो। और विवेक करके कितनों २२ पर दया करो। और कितनों को डर के साथ आग में २३ से खैंचके बचाओ और शरीर से कलंक लगा हुआ वस्त्र जो है उस से भी घिण रखो।

अब उस के लिये जो तुम्हें गिरने से बचा सकता है २४ और अपने ऐश्वर्य्य के संमुख अत्यन्त आनन्द से निर्दोष खड़ा कर सकता है। अर्थात अकेले बुद्धिमान परमे- २५ श्वर हमारे मुक्तिदाता के लिये महातम और महा-महिमा और पराक्रम और अधिकार अब और युग-युग होवे आमीन॥

यूहन्ना के

प्रकाशितवाक्य

की पुस्तक।

१ पर्व्व

यिसू मसीह का प्रकाशितवाक्य जो परमेश्वर ने उसे दिया कि उन बातों को जो जल्द होनेवालियां हैं अपने दासों को दिखावे सो यह है; और उस ने अपने स्वर्गदूत को भेजके उसे अपने दास यूहन्ना को
२ जनाया। उस ने परमेश्वर के बचन पर और यिसू मसीह की साची पर जो कुछ उस ने देखा है साची
३ दिई। जो इस भविष्यतवाणी की बातें पढ़ता है और जो उसे सुनते हैं और उन बातों को जो इस में लिखी हैं पालन करते हैं सो ही धन्य हैं क्योंकि समय निकट है।

४ यूहन्ना उन सात कलीसियाओं को जो आसिया में हैं लिखता है; वह जो है और जो था और जो आनेवाला है उस की ओर से कृपा और कुशल तुम को होवे; और सात आत्माओं की ओर से कि जो उस
५ के सिंहासन के आगे हैं। और यिसू मसीह की ओर

से होवे कि जो बिश्वस्त साक्षी है और मरे हुओं में
से जो उठके पहिलौठा है और पृथिवी के राजाओं
का अधिपति है; जिस ने हमें को प्यार किया और
अपने लोहू से हमारे पाप धो डाले। और परमेश्वर ६
अपने पिता के आगे हमें राजा और याजक बनाया
उसी को महातम और पराक्रम सदाकाल है आमीन।
देखो वह मेघों पर आता है और हर एक आंख ७
उसे देखेगी और जिन्हों ने उसे छेदा है सो उसे भी
देखेंगे और पृथिवी पर के सब बंश उस के लिये
छाती पीटेंगे; ऐसा होवे आमीन। प्रभु कहता है मैं ८
अलफा और ओमेगा हूं पहिला और पिछला हूं
जो है और जो था और जो आनेवाला है मैं सर्वसामर्थी
हूं।

मैं यूहन्ना जो तुम्हारा भाई और यिसू मसीह के ९
दुःख में और राज्य में और धीरज में तुम्हारा संगी
हूं सो परमेश्वर के बचन के लिये और यिसू मसीह
की साक्षी के लिये उस टापू में जो पतमुस कहावता
है था। प्रभु के दिन में मैं आत्मा में आ गया और १०
नरसिंगे की सी एक महावाणी अपने पीछे सुनी।
वह कहती थी मैं अलफा और ओमेगा हूं पहिला ११
और पिछला हूं; और जो कुछ तू देखता है सो एक
पुस्तक में लिख और सात कलीसियाओं के पास जो
आसिया में हैं अर्थात जो एफसुस में और स्मिरना में
और परगमुस में और थियातीरा में और सारदीस

में और फिलादल्फिया में और लाओदिकैया में हैं उसे भेज।

१२ और मैं देखने को फिरा कि यह किस की वाणी है जो मुझ से बोलती है; सो मैं ने फिरके क्या देखा १३ कि सोने की सात दीवटें हैं। उन सात दीवटों के बीच में मैं ने मनुष्य के पुत्र सा कोई देखा; वह एक पैराहन पहिने हुए और सोने का पटका छाती पर १४ बांधे हुए था। उस का सिर और बाल ऊन के ऐसा उजला बरन पाला के ऐसा उजला था; और उस की १५ आंखें आग की लौ की ऐसी थीं। और उस के पांव जैसा चोखा पीतल जो भट्ठी में दहकाया हुआ हो वैसे थे; और उस की वाणी बहुत से पानियों के सन्नाटे की १६ सी थी। और उस के दहिने हाथ में सात तारे थे; और उस के मुंह से दोधारी चोखी तलवार निकलती थी; और जैसा सूर्य्य जो बड़े तेज से चमके वैसा उस १७ का मुंह था। और जब मैं ने उसे देखा तब उस के पांवों पर मरा सा गिर पड़ा; तब उस ने अपना दहिना हाथ मुझ पर रखके कहा कि मत डर मैं १८ पहिला और पिछला हूं। जो जीवता है और मूआ था सो ही मैं हूं और देख मैं सदाकाल जीवता रहता हूं आमीन; और पाताल और मृत्यु की कुंजियां मुझ १९ पास हैं। जो बस्तें तू ने देखी हैं और जो हैं और २० जो इन के पीछे होनेवालियां हैं सो लिख रख। उन सात तारों का भेद जिन्हें तू ने मेरे दहिने हाथ में

देखा और सोने की सात दीवटों का भेद यह है; सात तारे सात कलीसियाओं के दूत हैं और सात दीवटें जो तू ने देखी से सात कलीसियाएं हैं॥

२ पर्ब्ब

एफ़सुस की कलीसिया के दूत के। यें लिख; जो अपने दहिने हाथ में सात तारे रखता है और सोने की सात दीवटों के बीच में फिरता है से ये बातें कहता है। २ मैं तेरे काम और तेरा परिश्रम और तेरा धीरज जानता हूं और यह कि तू बुरों के। सह नहीं सकता है; और यह कि जो अपने के। प्रेरित कहते हैं और नहीं हैं तू ने उन के। परखके झूठा पाया। ३ और तू ने सह लिया है और तू धीरज धरता है और मेरे नाम के लिये परिश्रम करके थक नहीं गया। ४ तिस पर भी मैं तुझ से यह अपवाद रखता हूं कि तू ने अपना अगला प्रेम छोड़ दिया है। ५ तू कहां से गिरा है से चेत कर और मन फिरा और अपने अगले काम किया कर; नहीं तो मैं तुझ पास जल्द आनेवाला हूं और यदि तू मन न फिरावे तो मैं तेरी दीवट के। उस की जगह से दूर करूंगा। ६ परन्तु यह बात तुझ में है कि तू निकोलाईनियों के कामों से घिण रखता है; जिन से मैं भी घिण रखता हूं। ७ जिस के कान हों से सुने कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है; जो जयवन्त होता है उसे मैं जीवन के पेड़ से जो परमेश्वर के स्वर्गलोक के बीचोंबीच है खाने के। देऊंगा।

८ और स्मिरना की कलीसिया के दूत को यों लिख; जो पहिला है और पिछला है जो मूआ था और जिया
९ है सो ये बातें कहता है। मैं तेरे कामों को और क्लेश और दरिद्रता को जानता हूं परन्तु तू धनवान है; और जो अपने को यहूदी कहते हैं पर नहीं हैं बरन शैतान की मण्डली हैं उन का निन्दा बकना मैं
१० जानता हूं। जो जो दुःख की बातें तुझ पर आनेवालियां हैं तू उन में की किसी से मत डर; देख शैतान तुम्हों में से कई एक को बन्ध में डालेगा जिसतें तुम परीक्षा किये जाओ; और तुम लोग दस दिन लों क्लेश उठाया करोगे; तू मरने तक विश्वस्त रह तो मैं जीवन
११ का मुकुट तुझे देऊंगा। जिस के कान हों सो सुने कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है; जो जयवन्त होता है सो दूसरी मृत्यु से कुछ हानि नहीं उठावेगा।

१२ और परगमुस की कलीसिया के दूत को यों लिख; जो चोखी दोधारी तलवार रखता है सो ये बातें कह-
१३ ता है। मैं तेरे कामों को और तेरे रहने की जगह को जहां शैतान का सिंहासन है जानता हूं; और तू मेरे नाम को थामे रहता है और जिन दिनों में मेरा विश्वस्त साक्षी अन्तिपास तुम्हों में जहां शैतान रहता है वहां मारा गया उन दिनों में भी तू मेरे
१४ विश्वास से न मुकरा। तिस पर भी मैं तुझ से थोड़ा सा अपवाद रखता हूं सो यह है कि बलआम जिस

ने बालाक को सिखाया कि इसराएल के सन्तानों के आगे ठोकर खिलानेवाला पत्थर डाल रखे जिसतें वे मूर्तों का मसाद खावें और छिनाला करें उस की शिक्षा के धारण करनेहारे तेरे यहां हैं। वैसा ही १५ निकोलाईनियों की शिक्षा के धारण करनेहारे भी तेरे यहां हैं; उस से मैं घिण रखता हूं। तू मन फिरा १६ नहीं तो मैं तुझ पास जल्द आनेवाला हूं और मैं अपने मुंह की तलवार ले के उन से लड़ूंगा। जिस के कान हों १७ सो सुने कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है; जो जयवन्त होता है उस को मैं गुप्त मन्न खाने देऊंगा और मैं उसे एक उजला पत्थर देऊंगा और एक नया नाम जिसे उस के पानेवाले को छोड़ कोई नहीं जानता है सो उस पत्थर पर लिखा हुआ है।

और थियातीरा की कलीसिया के दूत को यों लिख; १८ परमेश्वर का पुत्र जिस की आंखें आग की लौ के समान हैं और जिस के पांव चोखे पीतल के ऐसे हैं सो ये बातें कहता है। मैं तेरे कामों को और प्रेम १९ और सेवा और विश्वास और धीरज को जानता हूं और यह कि तेरे पिछले काम अगले कामों से अधिक हुए हैं। तिस पर भी मैं तुझ से थोड़ा सा २० अपवाद रखता हूं कि तू उस रण्डी यजाबेल को जो अपने को भविष्यतवक्तिनी कहती है मेरे दासों को सिखाने और भरमाने देता है कि वे छिनाला करें और मूर्तों का मसाद खावें। और मैं ने उसे २१

अवकाश दिया कि वह अपने छिनाले से मन फिरावे
२२ पर उस ने मन नहीं फिराया। देख मैं उसे एक बिछौने
पर डालूंगा और जो उस के संग व्यभिचार करते हैं
यदि वे अपने कामों से मन न फिरावें तो उन्हें बड़े
२३ क्लेश में डालूंगा। और उस के बालकों को मैं मार
डालके क्षय करूंगा और सारी कलीसियाएं जानेंगीं
कि मैं जो हूं सो गुरदों और हृदों का जांचनेहारा
हूं और मैं तुम में से हर एक को उस के कामों के
२४ समान का फल देऊंगा। परन्तु तुम लोग अर्थात
थियातीरा के जो लोग बच रहे हैं जितनों के पास
यह शिक्षा नहीं है और जिन्हों ने शैतान के गहरापे
(जैसा वे कहते हैं) नहीं जाने तुम्हों से मैं यह कहता
२५ हूं कि और कुछ बोझ मैं तुम पर न डालूंगा। परन्तु
जो अब तुम्हारा है उसे मेरे आने लों थाम्भे रहो।
२६ और जो जयवन्त होता है और जो मेरे कामों को
अन्त लों धरे रहता है उसे मैं देशों के लोगों पर
२७ अधिकार देऊंगा। जैसा मैं ने अपने पिता से पाया है
वैसा वह भी लोहे के दण्ड से उन पर प्रभुता करेगा
और वे कुम्हार के पात्रों के समान चकनाचूर हो
२८ जायेंगे। और मैं उसे प्रभात तारा देऊंगा। जिस के
२९ कान हों सो सुने कि आत्मा कलीसियाओं से क्या
कहता है॥

३ पर्ब्ब

और सारदीस की कलीसिया के दूत को यों लिख;
जिस पास परमेश्वर के सात आत्मा और सात तारे

हैं सो ये बातें कहता है; मैं तेरे कामों को जानता हूं कि तू जीता होने का नाम रखता है परन्तु तू मरा हुआ है। तू जाग जा और जो बातें रह गई हैं और मरने पर हैं तू उन्हें दृढ़ कर क्योंकि मैं ने तेरे काम परमेश्वर के आगे पूरे नहीं पाये। सो चेत कर कि तू ने कैसे पाया और सुना है और थांभे रख और मन फिरा; परन्तु यदि तू न जागेगा तो मैं चोर के ऐसा तुझ पर आऊंगा और तू नहीं जानेगा कि मैं किस घड़ी तुझ पर आऊंगा। सारदीस में तेरे भी कई एक नाम हैं कि जिन्हों ने अपने पहनावे को अशुद्ध नहीं किया और वे उजले पहनावे में मेरे संग फिरेंगे क्योंकि वे योग्य हैं। जो जयवन्त होता है उसे उजला पहनावा पहिराया जायगा और मैं उस का नाम जीवन की पुस्तक से न काटूंगा परन्तु मैं अपने पिता के और उस के दूतों के आगे उस का नाम मान लेऊंगा। जिस के कान हों सो सुने कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है। २ ३ ४ ५ ६

और फिलादलफिया की कलीसिया के दूत को यों लिख; वह जो पवित्रमय और सच्चा है जो दाऊद की कुंजी रखता है जो खोलता है फिर कोई बन्द नहीं करता जो बन्द करता है फिर कोई नहीं खोलता सो ये बातें कहता है। मैं तेरे कामों को जानता हूं; देख मैं ने तेरे आगे एक खुला द्वार रखा है और उसे कोई बन्द नहीं कर सकता है क्योंकि तेरा थोड़ा सा बल है ७ ८

और तू ने मेरे बचन को पालन किया है और मेरे
९ नाम से मुकर नहीं गया। देख मैं ऐसा करूंगा कि
शैतान की मण्डली में से जो अपने को यहूदी कहते हैं
और नहीं हैं परन्तु झूठ कहते हैं देख मैं ऐसा करूं-
गा कि वे आके तेरे पांवों के आगे दण्डवत करेंगे
१० और जानेंगे कि मैं ने तुझे प्यार किया है। तू ने जो
मेरे धीरज की बात की रक्षा किई इस लिये मैं उस
परीक्षा की घड़ी से जो पृथिवी पर के रहनेवालों को
परखने के लिये सारे संसार पर आवेगी तेरी भी
११ रक्षा करूंगा। देख मैं जल्द आता हूं; जो तेरा है सो
१२ थाम्भे रख जिसतें कोई तेरा मुकुट न ले ले। जो जय-
वन्त होता है उसे मैं अपने परमेश्वर के मन्दिर का
खंभा बनाऊंगा और वह फिर कभी बाहर न निकले-
गा; और मैं अपने परमेश्वर का नाम उस पर लिखूं-
गा और अपने परमेश्वर के नगर का अर्थात नये
यरूसलम का नाम जो मेरे परमेश्वर से स्वर्ग से नीचे
उतरता है सो भी और अपना नया नाम उस पर
१३ लिखूंगा। जिस के कान हों सो सुने कि आत्मा कली-
सियाओं से क्या कहता है।

१४ और लाओदिकैया की कलीसिया के दूत को यों
लिख; आमीन जो है जो बिश्वस्त और सच्चा साक्षी है
जो परमेश्वर की सृष्टि का आदि है सो ये बातें कहता
१५ है। मैं तेरे कामों को जानता हूं कि तू न तो ठण्डा
है न तप्त है; मैं क्या ही चाहता हूं कि तू ठण्डा अथवा

तप्त होता। परन्तु तू जो गुनगुना है और न ठण्डा न तप्त है इस लिये मैं तुझे अपने मुंह में से उगल देऊंगा। क्योंकि तू कहता है मैं धनी हूं और द्रव्यवान हुआ हूं और किसी वस्तु का मेरा प्रयोजन नहीं है; फिर तू नहीं जानता कि तू अधम और लाचार और दरिद्री और अंधा और नंगा है। मैं तुझे परामर्श देता हूं कि सोना जो आग में ताया गया है सो मुझ से मोल ले जिसतें तू धनवान होवे; और उजला वस्त्र ले जिसतें तू पहिने हो और तेरे नंगापन की घिण दिखाई न देय; और अपनी आंखों में अंजन लगा जिसतें तू देखे। जिन जिन लोगों को मैं प्यार करता हूं उन को मैं दपटता हूं और ताड़ना करता हूं इस लिये मनचला हो और मन फिरा। १६ १७ १८ १९

देख मैं द्वार पर खड़ा होके खटखटाता हूं; यदि कोई मेरी वाणी सुने और द्वार खोले तो मैं उस के पास भीतर जाऊंगा और उस के संग खाना खाऊंगा और वह मेरे संग खायगा। जो जयवन्त होता है उसे मैं अपने सिंहासन पर अपने संग बैठने देऊंगा। जैसा कि मैं भी जयवन्त होके अपने पिता के संग उस के सिंहासन पर बैठ गया हूं। जिस के कान हों सो सुने कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है॥ २० २१ २२

४ पर्ब्ब

इन बातों के पीछे मैं ने देखा तो क्या देखता हूं कि स्वर्ग में एक द्वार खुला है और नरसिंगे की सी वह पहिली वाणी जो मैं ने सुनी थी सो मुझ से बातें

कर के कहती थी कि इधर ऊपर आ और जिन बातें का होना इस के पीछे अवश्य है सो मैं तुझे दिखाऊंगा। २ और वोंहीं मैं आत्मा में आ गया; फिर क्या देखता हूं कि स्वर्ग में एक सिंहासन धरा है और उस ३ पर कोई बैठा है। और जो उस पर बैठा था सो देखने में सूर्य्यकान्त मणि और आग्नि पत्थर के ऐसा था; और एक मेघधनु जो देखने में मरकत मणि के ४ ऐसा था सो उस सिंहासन को घेरा हुआ था। और उस सिंहासन के आस पास चौबीस सिंहासन थे; और उन सिंहासनों पर मैं ने चौबीस प्राचीन उजले बस्त्र पहरे हुए बैठे देखे और उन के सिरों पर सोने ५ के मुकुट थे। और बिजलियां और गर्जें और वाणियां उस सिंहासन से निकलतीं थीं और आग के सात दीपक उस सिंहासन के आगे बरते थे; परमेश्वर के ६ सात आत्मा ये ही हैं। और उस सिंहासन के आगे जैसा कांच का समुद्र बिल्लौर के ऐसा था और सिंहासन के बीचोंबीच और सिंहासन के आस पास चार ७ जीवधारी आगे पीछे आंखों से भरे हुए थे। पहिला जीवधारी सिंह के ऐसा था और दूसरा जीवधारी बछड़े के ऐसा था और तीसरा जीवधारी मनुष्य का सा मुंह रखता था और चौथा जीवधारी उड़ते उकाब के ८ ऐसा था। और चारों जीवधारियों के छः छः पंख थे; और उन की चारों ओर और उन के भीतर आंखें ही आंखें थीं; और वे कहते हैं कि पवित्र पवित्र पवित्र प्रभु

परमेश्वर सर्वशक्तिमान जो था और जो है और जो आ-नेवाला है और यों कहते हुए वे दिन रैन कुछ चैन न करते हैं। ९ और जब वे जीवधारी उस का जो सिंहासन पर बैठा है और जो सदाकाल जीवता है महातम और आदर और धन्यवाद करते हैं। १० तब वे चौबीस प्राचीन उस के सामने जो सिंहासन पर बैठा है गिर पड़ते हैं और उस की जो सदाकाल जीवता है आ-राधना करते हैं और अपने मुकुट यह कहते हुए उस के सिंहासन के आगे डाल देते हैं। ११ कि हे प्रभु तू महिमा और आदर और पराक्रम पाने के योग्य है क्योंकि तू ने सारी वस्तें उत्पन्न किईं और वे तेरी ही इच्छा के लिये हैं और उत्पन्न हुई हैं॥

५ पर्ब्ब

और जो सिंहासन पर बैठा था उस के दहिने हाथ में मैं ने एक पुस्तक देखी; उस के अंतर और बाहर लिखा हुआ था और वह सात छापों से बन्द थी। २ और मैं ने एक बलवान दूत को देखा; वह बड़े शब्द से पुकारता था इस पुस्तक को खोलने और उस की छापों को तोड़ने के योग्य कौन है। ३ और उस पुस्तक को खोलने और उस में देखने की शक्ति न स्वर्ग में न पृथिवी पर न पृथिवी के तले किसी को थी। ४ तब मैं बहुत रोया क्योंकि पुस्तक को खोलने और पढ़ने के और उस में देखने के योग्य कोई नहीं निकला। ५ तब उन प्राचीनों में से एक ने मुझ से कहा रो मत; देख यहूदाह के बंश का सिंह और दाऊद का मूल जो है

सो उस पुस्तक को खोलने और उस की सात छापों को तोड़ने के लिये जयवन्त हुआ है।

६ तब मैं ने जो देखा तो क्या देखता हूं कि उस सिंहासन के और चार जीवधारियों के बीच में और प्राचीनों के बीच में एक लेला जैसा बध किया हुआ खड़ा है; उस के सात सींग और सात आंखें थीं; परमेश्वर के सात आत्मा जो सारी पृथिवी पर भेजे गये हैं सो ये ही हैं। ७ और उस ने आके सिंहासन पर बैठनेवाले ८ के दहिने हाथ में से पुस्तक को लिया। और जब उस ने पुस्तक लिई तब वे चारों जीवधारी और चौबीसों प्राचीन लेला के आगे गिर पड़े और हर एक के हाथ में बीणा और सुगन्ध से भरे हुए सोने के कटोरे थे; ९ सन्तों की प्रार्थनाएं ये ही हैं। और वे यह कहते हुए एक नया भजन गाये कि पुस्तक को लेने और उस की छापों को तोड़ने के तू ही योग्य है क्योंकि तू बध किया गया और सब बंशों और भाषाओं और लोगों और देश बिदेशियों में से हमें अपने लोहू से १० परमेश्वर के लिये मोल लिया है। और तू ने हम को हमारे परमेश्वर के लिये राजा और याजक बनाया ११ और हम पृथिवी पर राज्य करेंगे। फिर मैं ने देखा और मैं ने सिंहासन की और जीवधारियों की और प्राचीनों की चारों ओर से बहुत स्वर्गदूतों की बाणी सुनी और उन की गिनती लाखों लाख और १२ सहस्रों सहस्र थी। वे बड़े शब्द से कहते थे कि लेला

जो बध हुआ है सो सामर्थ्य और धन और बुद्धि और पराक्रम और आदर और महिमा और गुणावाद पाने के योग्य है। और जितने जो सिरजे हुए हैं स्वर्ग में और पृथिवी पर और पृथिवी के तले और जो समुद्र पर हैं और जो कुछ उन में हैं उन्हें मैं ने यह कहते सुना कि सिंहासन पर बैठनेवाले को और लेला को गुणावाद और आदर और महातम और पराक्रम सदाकाल है। तब चारों जीवधारी बोले कि आमीन; और चौबीसों प्राचीनों ने गिरके उस की जो सदाकाल जीवता है आराधना किई॥ | १३ १४

६ पर्ब्ब

और जब लेला ने उन छापों में से एक को तोड़ा तब मैं ने देखा और मैं ने उन चारों जीवधारियों में से एक को मेघगर्जन के ऐसे शब्द से बोलते सुना कि आ और देख। और मैं ने जो देखा तो क्या देखता हूं कि एक श्वेत घोड़ा है और उस पर एक चढ़नेवाला धनुष लिये है और एक मुकुट उसे दिया गया; और वह जयवन्त होते हुए और जय करने को निकला। | २

और जब उस ने दूसरी छाप तोड़ी तब मैं ने दूसरे जीवधारी को कहते सुना कि आ और देख। तब एक दूसरा सुरंग घोड़ा निकला और उस के चढ़नेवाले को पृथिवी पर से शान्ति को छीन लेने की शक्ति दिई गई और कि लोग एक एक को मार डालें; और एक बड़ी तलवार उसे दिई गई। | ३ ४

और जब उस ने तीसरी छाप तोड़ी तब मैं ने | ५

तीसरे जीवधारी को यह कहते सुना कि आ और देख; फिर मैं ने जो देखा तो क्या देखता हूं कि एक काला घोड़ा है और उस का चढ़नेवाला एक तुला हाथ में लिये है। ६ और मैं ने चारों जीवधारियों के बीच में से यह कहते हुए एक वाणी सुनी कि गोहूं सूकी का सेर भर और जव सूकी के तीन सेर; फिर तेल को और मदिरा को मत घटाना।

७ और जब उस ने चौथी छाप तोड़ी तब मैं ने चौथे जीवधारी की वाणी यह कहते सुनी कि आ और देख। ८ फिर मैं ने जो देखा तो क्या देखता हूं कि फीके रंग का एक घोड़ा है और उस के चढ़नेवाले का नाम काल था और पाताल जो है सो उस के पीछे पीछे हो लेता था और उन्हें चौथाई पृथिवी पर अधिकार दिया गया कि वे तलवार से और भूख से और मृत्यु से और धर्ती के बन पशुओं से चय करें।

९ और जब उस ने पांचवीं छाप तोड़ी तब जो लोग परमेश्वर के बचन के लिये और दिई हुई साची के लिये मारे गये थे उन के प्राणों को मैं ने यज्ञबेदी के नीचे देखा। १० और उन्हों ने बड़े शब्द से पुकारके कहा कि हे सर्वस्वामी पवित्र और सत्य जो है तू कब लों न्याय न करेगा और कब लों पृथिवी के रहनेवालों से हमारे लोहू का पलटा नहीं लेगा। ११ तब उन में से हर एक को उजला पैराहन दिया गया और उन से कहा गया कि जब लों तुम्हारे संगी दास और

भाई लोग जिन का तुम्हारी रीति पर मारा जाना होनेवाला है पूरे न होवें तब लों तुम लोग और थोड़े समय लों बिश्राम करो।

१२ और जब उस ने छटवीं छाप तोड़ी तब मैं ने जो देखा तो क्या देखता हूं कि बड़ा भैांचाल ङुआ और सूर्य्य बालों के कम्बल के ऐसा काला ङुआ और चन्द्रमा लोहू के ऐसा हो गया। १३ और जैसे गूलर का पेड़ जब बड़ी आंधी उसे हिलाती है तब अपने कच्चे फल गिराता है वैसे आकाश के तारे भूमि पर गिर पड़े। १४ और जैसा लिखनपत्र जो लपेटा हो वैसे आकाश जाता रहा और हर एक पहाड़ और टापू अपनी अपनी जगह से टल गया। १५ और पृथिवी के राजाओं ने और महत लोगों ने और धनवान लोगों ने और सेनापतियों ने और बलवानों ने और हर एक दास ने और हर एक निर्बन्ध जन ने अपने को गफों में और पहाड़ों के पत्थरों की ओट में छिपाया। १६ और उन्हों ने पहाड़ों से और पत्थरों से कहा हम पर गिरो और जो सिंहासन पर बैठा है उस के मुंह से और लेला के क्रोध से हमें छिपा लेओ। १७ क्योंकि उस के क्रोध का महादिन आ पङ्गंचा है; अब कौन ठहर सकता है॥

७ पर्व्व

और इन बातों के पीछे मैं ने पृथिवी के चारों कोनों पर चार स्वर्गदूतों को खड़े देखा; वे पृथिवी की चारों पवनों को थाम्भते थे ऐसा न हो कि धर्ती

पर अथवा समुद्र पर अथवा किसी पेड़ पर पवन चले।

२ फिर मैं ने एक दूसरे स्वर्गदूत को जिस के पास जीवते परमेश्वर की छाप थी पूर्ब से उठते देखा; उस ने उन चार स्वर्गदूतों से जिन्हें धर्ती को और समुद्र को हानि पहुंचाने की शक्ति दिई गई बड़े शब्द से पुकार-

३ के कहा। जब लों हम अपने परमेश्वर के दासों के माथों पर छाप न कर लें तब लों तुम पृथिवी को और समुद्र को और पेड़ों को हानि न पहुंचाना।

४ और जिन्हों पर छापें किई गईं उन की गिन्ती मैं ने सुनी कि इसराएल के सन्तानों के सब बंशों में से

५ एक सौ चवालीस सहस्रों पर छाप किई गईं। यहूदाह के बंश में से बारह सहस्रों पर छाप किई गईं; रूबीन के बंश में से बारह सहस्रों पर छाप किई गईं; गाद के बंश में से बारह सहस्रों पर छाप किई गईं।

६ अशर के बंश में से बारह सहस्रों पर छाप किई गईं; नफताली के बंश में से बारह सहस्रों पर छाप किई गईं; मनस्सी के बंश में से बारह सहस्रों पर छाप

७ किई गईं। समऊन के बंश में से बारह सहस्रों पर छाप किई गईं; लावी के बंश में से बारह सहस्रों पर छाप किई गईं; यिसखार के बंश में से बारह

८ सहस्रों पर छाप किई गईं। सबुलून के बंश में से बारह सहस्रों पर छाप किई गईं; यूसफ के बंश में

से बारह सहस्त्रों पर छाप किई गईं; बन्यामीन के वंश में से बारह सहस्त्रों पर छाप किई गईं।

९ इस के पीछे मैं ने जो देखा तो क्या देखता हूं कि सब देश बिदेशियों में से और वंशों में से और लोगों में से और भाषाओं में से एक बड़ी भीड़ जिसे कोई गिन न सका सो उजले मानबस्त्र पहिने हुए और खजूर की डालियां हाथों में लिये हुए सिंहासन के आगे और मेम्ना के आगे खड़ी थी। १० और बड़े शब्द से पुकार के कहती थी हमारे परमेश्वर को जो सिंहासन पर बैठा है और मेम्ना को निस्तार की जय। ११ और सारे स्वर्गदूत जो हैं सो सिंहासन की और प्राचीनों की और चारों जीवधारियों की चहुं ओर खड़े थे; फिर वे सिंहासन के आगे अपने मुंह के भल गिरे और परमेश्वर की पूजा करके बोले। १२ कि आमीन; गुणावाद और महिमा और बुद्धि और धन्यबाद और आदर और सामर्थ्य और पराक्रम सदाकाल हमारे परमेश्वर के लिये है आमीन।

१३ फिर उन प्राचीनों में से एक मुझ से पूछने लगा जो लोग उजले मानबस्त्र पहिने हुए हैं सो कौन हैं और कहां से आये हैं। १४ तब मैं ने उस से कहा हे स्वामी तू जानता है; उस ने मुझ से कहा जो लोग बड़े क्लेश में से आये हैं सो ये ही हैं और उन्हों ने अपने बस्त्रों को मेम्ना के लोहू से धोया है और उन्हें उजला किया है। १५ इस लिये वे परमेश्वर के सिंहासन के आगे

हैं और उस के मन्दिर में रात दिन उस की आराधना करते हैं और जो सिंहासन पर बैठा है सो उन में डेरा करेगा। १६ वे फिर भूखे न होंगे और फिर प्यासे न होंगे और न घाम न और कोई ताप उन पर पड़ेगा। १७ क्योंकि लेला जो सिंहासन के बीचोंबीच है सो उन्हें पालेगा और उन्हें जल के जीते सोतों लों पहुंचायगा; और उन की आंखों से परमेश्वर हर एक आंसू पोंछेगा॥

८ पर्ब्ब

और जब उस ने सातवीं छाप तोड़ी तब स्वर्ग में आध घड़ी लों मौनता रही। २ और मैं ने उन सात स्वर्गदूतों को जो परमेश्वर के आगे खड़े थे देखा और उन्हें सात नरसिंगे दिये गये। ३ फिर एक और स्वर्गदूत आया और सोने का धूपपात्र लिये ज़ुए बेदी के पास जा खड़ा ज़ुआ और बज़ुत सा सुगन्ध उसे दिया गया जिसतें वह उसे सारे सन्तों की प्रार्थनाओं के संग सोने की बेदी पर जो सिंहासन के आगे है मिलावे। ४ और उस सुगन्ध का धुवां सन्तों की प्रार्थनाओं में मिलके स्वर्गदूत के हाथ से परमेश्वर के आगे ऊपर गया। ५ और स्वर्गदूत ने धूपपात्र को लिया और बेदी की आग से कुछ लेके उस में भर दिया और उसे पृथिवी पर डाला; तब वाणियां ज़ुईं और गर्जें और बिजलियां और भूईंडोल।

६ और सात स्वर्गदूतों ने जिन पास सात नरसिंगे थे उन्हों ने अपने तईं फूंकने को तैयार किया।

७ और पहिले स्वर्गदूत ने नरसिंगा फूंका; तब ओले और लोहू से मिली हुई आग प्रगट हुई और पृथिवी पर फेंकी गई और तिहाई पेड़ जल गये और सब हरी घास जल गई।

८ फिर दूसरे स्वर्गदूत ने नरसिंगा फूंका; तब जैसा एक बड़ा पहाड़ आग से जलता हुआ समुद्र में फेंका गया और समुद्र की तिहाई लोहू हो गई। ९ और जन्तुओं की तिहाई जो समुद्र में जीते थे सो मर गये और जहाजों की तिहाई नष्ट हुई।

१० फिर तीसरे स्वर्गदूत ने नरसिंगा फूंका; तब दीपक सा जलता हुआ एक बड़ा तारा स्वर्ग से गिरा और तिहाई नदियों पर और जल के सोतों पर गिरा। ११ उस तारे का नाम नगदौना है और तिहाई पानी नगदौना हो गया और बहुत से मनुष्य उस पानी से मर गये क्योंकि वह कड़वा हो गया था।

१२ फिर चौथे स्वर्गदूत ने नरसिंगा फूंका; तब सूर्य्य की तिहाई और चन्द्रमा की तिहाई और तारों की तिहाई मारी गई ऐसा कि उन की तिहाई अंधेरी हो गई और दिन की तिहाई और वैसे ही रात की तिहाई उजाली न थी।

१३ फिर यदि मैं ने देखा तो एक स्वर्गदूत को स्वर्ग के बीचोंबीच उड़ते हुए बड़े शब्द से यह कहते सुना तीन स्वर्गदूतों के नरसिंगे जो रह गये और फूंके

जायेंगे उन के लिये पृथिवी के रहनेवालें पर हाय हाय हाय है॥

९. पर्ब्ब

फिर पांचवें स्वर्गदूत ने फूंका; तब मैं ने आकाश से एक तारा भूमि पर गिरते देखा और अथाह गढ़े २ की कुंजी उसे दिई गई। और उस ने अथाह गढ़े के खोला और उस गढ़े में से बड़े भट्ठे का सा धुवां उठा और उस गढ़े के धुवें से सूर्य्य और पवन अन्धेरी हो ३ गई। और उस धुवें में से भूमि पर टिड्डियां निकलीं और जैसा भूमि के बिच्छूओं के सामर्थ्य है वैसा ही ४ उन्हें सामर्थ्य दिया गया। और उन से कहा गया कि तुम न धर्ती की घास के न किसी हरियाली के न किसी पेड़ के परन्तु केवल उन मनुष्यों के जिन के माथें पर परमेश्वर की छाप नहीं है हानि पहुंचा-५ ओ। और उन्हें यह शक्ति दिई गई कि वे उन के प्राण से न मारें परन्तु कि वे पांच महीने लें उन्हें पीर देवें; जैसा बिच्छू के डंक मारने से मनुष्य के ६ पीर होती है वैसी पीर उन की होती थी। और उन दिनों में मनुष्य मरण ढूंढेंगे और न पावेंगे और वे ७ मरने के चाहेंगे और मृत्यु उन से भागेगी। और जैसे घोड़े जो लड़ाई के लिये तैयार हों वैसे उन टिड्डियों का रूप था और उन के सिरों पर जैसे सोने के तुल्य के मुकुट थे और उन के मुंह जैसे मनुष्यों ८ के मुंह थे। और उन के बाल जैसे स्त्रियों के बाल थे ९ और उन के दांत जैसे सिंहों के दांत थे। और वे

झिलम जैसे लोहे की झिलम रखते थे और जैसे बहुत से घोड़ों की गाड़ियों का शब्द जो लड़ाई में दौड़े जाते हैं वैसे उन के पंखों का शब्द हुआ। और उन्हें बिच्छूओं की सी पूंछें थीं और डंक उन की पूंछों में थे और उन्हें पांच महीने लों मनुष्यों पर अंधेर करने का अधिकार मिला। और उन का एक राजा था; वह अथाह गढ़े का दूत था और उस का नाम इबरानी भाषा में अबदोन है और यूनानी में अपलि-योन है। एक सन्ताप बीत गया और देखो और दो सन्ताप उन के पीछे आते हैं। १० ११ १२

फिर छठे स्वर्गदूत ने नरसिंगा फूंका; तब जो सोने की बेदी परमेश्वर के आगे है उस की चारों कोनों में से मैं ने एक वाणी सुनी। वह छठे स्वर्गदूत से जिस के पास नरसिंगा था कहती थी कि उन चारों दूतों को जो फुरात की बड़ी नदी पर बन्द हैं सो खोल दे। फिर वे चारों दूत जो एक घड़ी और एक दिन और एक महीने और एक बरस के लिये तैयार किये गये थे सो छूट गये जिसतें मनुष्यों में से तिहाई को मार डालें। और सेना के घुड़चढ़े गिन्ती में बीस कड़ोड़ थे और मैं ने उन की गिन्ती सुनी। और मैं ने उन घोड़ों को और उन के चढ़ने-वालों को दर्शन में यों देखा कि उन की झिलमें आग और नीलमणि और गन्धक की सी थीं; और घोड़ों के सिर जैसे सिंहों के सिर थे; और उन के मुंह से १३ १४ १५ १६ १७

१८ आग और धुवां और गन्धक निकलती थी। आग और धुवां और गन्धक जो उन के मुंह से निकती थी इन्हीं १९ तीनों से तिहाई मनुष्य मारे गये। क्योंकि उन का अधिकार उन के मुंह में है और उन की पूछों में है; और उन की पूंछें सांपों के ऐसे थीं और उन में सिर २० थे और उन से वे दुःख देते थे। और जो लोग रह गये और इन आपदों से मारे न गये थे उन्हों ने अपने हाथों के कामों से मन नहीं फिराये और इस लिये देवों की पूजा से और सोने और रूपे और पीतल और पत्थर और लकड़ी की मूर्तों की जो न देख न सुन न चल सकतीं हैं उन की पूजा करने से २१ हाथ न उठाये। और उन्हों ने अपने हत्या करने से और मन्त्र जन्त्र करने से और छिनाला करने से और चोरियां करने से मन नहीं फिराये॥

१० पर्ब्ब

फिर मैं ने एक और बलवान दूत स्वर्ग से उतरते देखा; वह मेघ को ओढ़े ऊए था और उस के सिर पर मेघ धनुष था और उस का मुंह सूर्य्य के ऐसा था २ और उस के पांव जैसे आग के खंभे थे। और उस के हाथ में एक छोटी सी पुस्तक खुली ऊई थी; और उस ने अपना दहिना पांव समुद्र पर और बायां धर्ती पर ३ धरा। और जैसे सिंह गरजता है वैसे बड़े शब्द से उस ने पुकारा और जब उस ने पुकारा तब सात ४ गर्जों ने अपना अपना शब्द किया। और जब वे सात गर्जें अपना अपना शब्द कर चुकीं तब मैं लिखने पर

था ; फिर मैं ने एक आकाशवाणी मुझ से यह कहती हुई सुनी कि सात गर्जें जो कुछ बोलीं उस पर छाप कर रख और उन बातों को मत लिख। ५ तब जिस दूत को मैं ने समुद्र पर और धर्ती पर खड़ा देखा उस ने अपना हाथ स्वर्ग की ओर उठाया। ६ और वह जो सदाकाल जीवता है जिस ने स्वर्ग को और जो कुछ उस में है और पृथिवी को और जो कुछ उस में है और समुद्र को और जो कुछ उस में है सिरजा है उस की उस ने किरिया खाके कहा कि अब से बेर न होगी। ७ परन्तु सातवें दूत के शब्द करने के दिनों में जब वह फूंकने लगेगा तब परमेश्वर का भेद जैसा उस ने उस का मंगल समाचार अपने दासों अर्थात भविष्यतवक्ताओं को सुनाया है पूरा होगा।

८ और वह वाणी जो मैं ने स्वर्ग से सुनी थी सो फिर मुझ से बातें करके बोली कि जो दूत समुद्र पर और धर्ती पर खड़ा है तू वह छोटी खुली हुई पुस्तक जो उस के हाथ में है सो जाके ले। ९ तब मैं ने उस दूत के पास जाके उस से कहा वह छोटी पुस्तक मुझे दे ; उस ने मुझ से कहा ले और उसे खा जा ; और वह तेरा पेट कड़वा कर देगी परन्तु तेरे मुंह में वह मधु की ऐसी मीठी होगी। १० तब मैं ने वह छोटी पुस्तक उस दूत के हाथ से लिई और उसे खा गया और वह मेरे मुंह में मधु की ऐसी मीठी थी ; और जब मैं उसे खा गया तब मेरा पेट कड़वा हो गया। ११ और उस ने

मुझ से कहा बज्जत से जातिगणों को और देशों के लोगों को और भाषाओं को और राजाओं को फिर भविष्यतवाणी सुनाना तुझे अवश्य है ॥

११ पर्व्व

फिर छड़ी के समान एक सरकण्डा मुझे दिया गया ; और वह स्वर्गदूत खड़ा होके कहता था तू उठ और परमेश्वर के मन्दिर को और वेदी को और २ उस में जो आराधना करनेहारे हैं सो नाप। परन्तु आंगन जो मन्दिर से बाहर है सो छोड़ दे और उसे मत नाप क्योंकि वह अन्यदेशियों को दिया गया है और वे पवित्र नगर को बयालीस महीने ३ लों रौंदेंगे। और मैं अपने दो साचियों को शक्ति देऊंगा और वे टाट पहरके एक सहस्र दो सौ ४ साठ दिन लों भविष्यतवाणी कहेंगे। दो जलपाई के पेड़ और दो दीवटें जो पृथिवी के परमेश्वर ५ के आगे खड़े हैं सो ये ही हैं। और यदि कोई उन पर अन्धेर किया चाहे तो उन के मुंह में से आग निकलती और उन के वैरियों को चय करती है ; और यदि कोई उन पर अन्धेर किया चाहे तो उस ६ को इस रीति से मारा चाहिये है। उन्हें मेघद्वार बन्द करने का अधिकार है कि उन के भविष्यतवाणी कहने के दिनों में पानी न बरसे ; और उन्हें पानियों पर अधिकार है कि उन्हें लोहू बना डालें और जब जब चाहें तब तब पृथिवी पर हर प्रकार की आपदा ७ लावें। और जब वे अपनी साची दे चुकेंगे तब वह

जन्तु जो अथाह गढ़े में से निकलता है सो उन से युद्ध करेगा और उन पर जयवन्त होके उन्हें मार डालेगा। ८ और वह बड़ा नगर जो दृष्टान्त की रीति पर सदूम और मिसर कहावता है जहां हमारा प्रभु भी क्रूस पर खैंचा गया उस के बाज़ार में उन की लोथें पड़ी रहेंगीं। ९ और लोगों में से और बंशों में से और भाषाओं में से और देश देश के जातिगणों में से जो लोग हैं सो उन की लोथें साढ़े तीन दिन लों देखेंगे और उन की लोथें कबर में रखने न देंगे। १० और जो भूमि में रहते हैं सो उन पर आनन्द करेंगे और मगन होंगे और एक दूसरे को बैना भेजेंगे क्योंकि इन दो भविष्यतवक्ताओं ने पृथिवी के रहनेवालों को सताया था। ११ और साढ़े तीन दिन के पीछे जीवन के आत्मा ने परमेश्वर की ओर से फिर उन में प्रवेश किया और वे अपने पांवों पर खड़े हो गये; तब जिन्हों ने उन्हें देखा उन पर बड़ा भय पड़ा। १२ और उन्हों ने स्वर्ग से एक महावाणी उन से यह कहती हुई सुनी कि इधर ऊपर आओ; तब वे मेघ में आके स्वर्ग को उठ गये और उन के बैरियों ने उन्हें देखा। १३ फिर उसी घड़ी बड़ा भूईंडोल हुआ और उस नगर का दसवां अंश गिर गया और उस भूईंडोल से सात सहस्र मनुष्य मारे पड़े; फिर जो लोग बच गये सो भयभीत हो गये और स्वर्ग के परमेश्वर को

१४ महिमा किई। दूसरा सन्ताप बीत गया ; देखो तीसरा सन्ताप जल्द आता है।

१५ फिर सातवें स्वर्गदूत ने नरसिंगा फूंका ; तब स्वर्ग में महावाणियां ऊईं ; उन्हों ने कहा संसार के जो राज्य हैं सो हमारे प्रभु के और उस के मसीह के

१६ हो गये और वह युग युग राज्य करेगा। और चौबीस प्राचीन जो अपने अपने सिंहासन पर परमेश्वर के आगे बैठे थे सो मुंह के भल गिरे और परमेश्वर की

१७ आराधना करके बोले। हे प्रभु सर्वशक्तिमान परमेश्वर जो है और जो था और जो आनेवाला है हम तेरा धन्यवाद करते हैं कि तू ने अपना बड़ा सामर्थ्य

१८ ले लिया और राज्य किया है। और देश देश के लोग क्रोधित ऊए और तेरा कोप आया और समय आ पऊंचा है कि मरे ऊओं का न्याय किया जाय और कि तू अपने दासों को और भविष्यतवक्ताओं को और सन्तों को और जो तेरे नाम से डरते हैं क्या छोटे क्या बड़े उन को फल देवे और कि जो पृथिवी को नाश करते हैं उन को तू नाश करे।

१९ और परमेश्वर का मन्दिर स्वर्ग में खुल गया और उस के मन्दिर में उस के नियम का सन्दूक देखने में आया और बिजलियां और वाणियां और गर्जें और भूईंडोल ऊए और बड़े ओले पड़े॥

१२ पर्व्व

और एक बड़ा अचंभे का चिन्ह स्वर्ग में दिखाई दिया अर्थात एक स्त्री सूर्य्य को ओढ़े ऊए थी और

चन्द्रमा उस के पांवों तले था और बारह तारों का मुकुट उस के सिर पर था। २ और वह गर्भवती होके पीड़ें लगने से चिल्लाई और जन्ने को ऐंठती थी।

३ फिर एक दूसरा अचंभे का चिन्ह स्वर्ग में दिखाई दिया अर्थात एक बड़ा लाल अजगर था; उस के सात सिर और दस सींग थे और सात मुकुट उस के सिरों पर थे। ४ उस की पूंछ ने स्वर्ग के तिहाई तारे खैंच लिये और उन्हें पृथिवी पर डाल दिया; फिर वह अजगर उस स्त्री के आगे जो जन्ने पर थी जा खड़ा ज़ुआ जिसतें जब वह जने तब उस के बच्चे को भक्षण करे। ५ और वह पुरुष बालक जनी; वह लोहे का दण्ड लेके सब देशों के लोगों पर प्रभुता करने को था; और उस का लड़का परमेश्वर के आगे और उस के सिंहासन के आगे उठा लिया गया। ६ और वह स्त्री बन में भाग गई कि वहां परमेश्वर ने उस के लिये जगह तैयार किई थी जिसतें वहां बारह सौ साठ दिन लों प्रतिपाल पावे।

७ फिर स्वर्ग में लड़ाई ज़ुई; मीकाईल और उस के दूत अजगर से लड़े और अजगर और उस के दूत उन से लड़े। ८ परन्तु वे प्रबल न ज़ुए और न स्वर्ग में उन की फिर जगह मिली। ९ सो वह बड़ा अजगर निकाला गया; वही पुराना सांप जिस का नाम इबलीस और शै-तान है जो सारे जगत को भरमाता है सो पृथिवी पर

गिराया गया और उस के दूत भी उस के संग गिराये
१० गये। फिर मैं ने एक बड़ी वाणी स्वर्ग में यह कहती
सुनी अब निस्तार और सामर्थ्य और हमारे परमेश्वर
का राज्य और उस के मसीह का अधिकार प्रगट
हुआ है क्योंकि हमारे भाइयों का दोषदायक जो
रात दिन हमारे परमेश्वर के आगे उन पर दोष
११ दिया करता था सो निकाल डाला गया। और उन्हों
ने मेम्ना के लोहू से और अपनी साची की बात से उस
को जीत लिया और प्राण देने लों उन के प्राण
१२ उन को प्यारे नहीं थे। इस लिये हे स्वर्गो और तुम
जो उन में रहते हो आनन्द करो; फिर जो धर्ती के
और समुद्र के रहनेवाले हैं उन पर हाय है क्योंकि
शैतान बड़े क्रोध से तुम पर उतरा है और वह जान-
ता है मेरी थोड़ी ही बेर रही है।

१३ और जब अजगर ने देखा कि पृथिवी पर गिराया
गया तब उस ने उस स्त्री को जो पुरुष बालक जनी
१४ थी सताया। और उस स्त्री को बड़े उकाब के दो पंख
दिये गये जिसतें वह सांप के सामने से अपनी जगह
को बन में उड़ जाय; वहां एक समय और दो समय
और आधे समय लों उस का प्रतिपाल ठहराया गया।
१५ फिर सांप ने उस स्त्री के पीछे अपने मुंह से नदी के
समान पानी बहाया जिसतें उस की बाढ़ से उसे बहा
१६ ले जाय। और धर्ती ने उस स्त्री की सहायता किई;
और धर्ती ने अपना मुंह खोलके उस बाढ़ को जो

अजगर ने अपने मुंह से बहाई थी पी लिया। और १७
वह अजगर स्त्री पर क्रोधित हुआ और उस के और
सन्तानों से जो रह गये और जो परमेश्वर की आज्ञा
मानते हैं और यिसु मसीह की साक्षी रखते हैं लड़ने
को चला गया॥

१३ पर्व्व

और मैं ने समुद्र की रेती पर खड़ा होके क्या
देखा कि एक जन्तु समुद्र में से निकला; उस के सात
सिर और दस सींग थे और उस के सींगों पर दस
मुकुट थे; और उस के सिरों पर परमेश्वर की निन्दा
का नाम था। और वह जन्तु जो मैं ने देखा सो चीते २
के ऐसा था और उस के पांव जैसे भालू के और उस
का मुंह जैसे सिंह का मुंह था; और अजगर ने अपना
सामर्थ्य और अपना सिंहासन और बड़ा अधिकार
उसे दिया। और मैं ने देखा कि उस के एक सिर में ३
जैसा मार डालनेवाला घाव लगा है; परन्तु उस का
मार डालनेवाला घाव चंगा हो गया था और सारी
पृथिवी जन्तु के पीछे अचंभा करती थी। और उन्हों ४
ने अजगर को जिस ने जन्तु को अधिकार दिया था
पूजा किये; और वे जन्तु को पूजा करके बोले जन्तु
के समान कौन है; उस से कौन लड़ सकता है। और ५
एक मुंह बड़ा बोल बोलनेवाला और परमेश्वर की
निन्दा बकनेवाला उसे मिला और बयालीस महीने
लों लड़ाई करने को उसे अधिकार दिया गया। और ६
उस ने परमेश्वर के विषय में निन्दा की बातें बकने

को अपना मुंह खोला कि उस के नाम की और उस के तंबू की और स्वर्ग में रहनेवालों की निन्दा करे।
७ और सन्तों से युद्ध करने की और उन्हें जीत लेने की शक्ति उसे दिई गई और सब वंशों और भाषाओं और
८ देश देश के लोगों पर उसे अधिकार मिला। और पृथिवी के सब रहनेवाले जिन के नाम लेला की जीवन की पुस्तक में जो जगत के आदि से बध किया
९ गया लिखे नहीं गये सो उस की पूजा करेंगे। यदि
१० किसी के कान होवें तो वह सुने। जो बन्ध में डालने को लिये जाता है सो बन्ध में पड़ेगा; और जो तलवार से घात करता है सो तलवार ही से घात किया जायगा; सन्त लोगों का धीरज और विश्वास इस में है।

११ फिर मैं ने एक और जन्तु धर्ती में से उठते देखा; लेला के समान उस के दो सींग थे और अजगर के
१२ ऐसा वह बोलता था। यह पहिले जन्तु के सारे अधिकार से उस के आगे काम करता है और वह पहिले जन्तु को जिस का मार डालनेवाला घाव चंगा हुआ था पृथिवी और उस के रहनेवालों से पुजवाता है।
१३ और वह बड़े अचंभे की बातें दिखाता है यहां लों कि वह मनुष्यों के देखने में आकाश से पृथिवी पर
१४ आग बरसाता है। और उस अचंभे की बातों से जिन के दिखाने की शक्ति जन्तु के सामने उसे दिई गई वह पृथिवी के रहनेवालों को भरमाता है कि वह पृथिवी के रहनेवालों से कहता है वह जन्तु जिसे

तलवार का घाव था और वह जिया उन को तुम एक मूर्त बनाओ। और उसे सामर्थ्य दिया गया कि जन्तु की मूर्त को जीव देवे कि जन्तु की मूर्त बातें भी करे और जितने जो जन्तु की मूर्त को न पूजें उन को घात करवावे। और यह कि क्या छोटे क्या बड़े क्या धनवान क्या निर्धन क्या निर्बन्ध क्या दास सब लोगों के दहिने हाथ में अथवा उन के माथे पर एक चिन्ह करवा दे और यह कि जिस जन में वह चिन्ह अथवा जन्तु का नाम अथवा उस के नाम की संख्या हो उन को छोड़ और कोई न कोन सके न बेच सके। ज्ञान यहां है; जिस को समझ हो सो जन्तु की संख्या का लेखा लगावे क्योंकि वह मनुष्य ही की संख्या है और उस की संख्या छः सौ छियासठ है॥ १५ १६ १७ १८

१४ पर्व्व

फिर मैं ने जो देखा तो क्या देखता हूं कि एक लेखा सैहून पहाड़ पर खड़ा है और एक लाख चवालीस सहस्र जिन के माथें पर उस के पिता का नाम लिखा है सो उस के संग खड़े हैं। फिर जैसा बहुत पानियों का सुन्नाटा और जैसा महागर्ज का शब्द वैसा शब्द मैं ने स्वर्ग से सुना; और वीणा बजनी जो वीणा बजाते थे उन का शब्द मैं ने सुना। और वे सिंहासन के आगे और चारों जीवधारियों के और प्राचीनों के आगे एक नया भजन गा रहे थे; और एक लाख चवालीस सहस्र जो पृथिवी से मोल लिये गये हैं उन को छोड़ कोई उस भजन को सीख न २ ३

४ सका। जो लोग स्त्रियों के संग मलिनता में न पड़े हैं सो वे ही हैं क्योंकि वे कुंवारे हैं; जो लोग मेम्ना के पीछे जहां कहीं वह जाता है हो लेते हैं सो वे ही हैं; वे लोग परमेश्वर के लिये और मेम्ना के लिये पहिले फल होके मनुष्यों में से मोल लिये गये हैं।
५ और उन के मुंह में कुछ छल न पाया गया क्योंकि परमेश्वर के सिंहासन के आगे वे कलंक हीन हैं।

६ और मैं ने एक दूसरे स्वर्गदूत को सनातन का मंगल समाचार लिये ऊए स्वर्ग के बीचोंबीच उड़ते देखा जिसतें पृथिवी के रहनेवालों को और सब देशों के लोगों और वंशों और भाषाओं और सब
७ लोगों को मंगल समाचार सुनावे। और उस ने महा-वाणी से कहा परमेश्वर से डरो और उस की महिमा प्रकाश करो क्योंकि उस के न्याय की घड़ी आई है; और जिस ने आकाश और धर्ती और समुद्र और पानी के सोते सिरजे हैं उस को तुम आराधना करो।

८ और उस के पीछे एक दूसरा स्वर्गदूत आके बोला गिर गया वह महानगर बाबुलून गिर गया क्योंकि उस ने अपने छिनाले के क्रोध का मद्य सब देशों के लोगों को पिलाया है।

९ फिर एक तीसरा स्वर्गदूत उन के पीछे आके महा-वाणी से बोला यदि जन्तु को और उस की मूर्त्त की पूजा कोई करे और उस का चिन्ह अपने माथे पर
१० अथवा अपने हाथ पर कोई लेवे। वही जन परमेश्वर

के क्रोध का मद्य जो उस के कोप के कटोरे में निराला ढाला गया पीयेगा और वह पवित्र स्वर्गदूतों के आगे और मेम्ना के आगे आग और गन्धक में दगधा जायगा। और उन के दगधे जाने का धुवां सदाकाल उठता रहता है; और जो जन्तु को और उस की मूर्त्त की पूजा करते हैं और जो कोई उस के नाम का चिन्ह लिये है उन को रात दिन कभी बिश्राम नहीं होता है। सन्तों का धीरज यहां है; जो परमेश्वर की आज्ञा को और यिसू के बिश्वास को लिये रहते हैं सो यहां हैं। ११ १२

फिर मैं ने स्वर्ग से एक वाणी मुझ से यह कहती सुनी कि मृत लोग जो प्रभु में होके मरते हैं सो अब से धन्य हैं; आत्मा कहता है कि हां वे अपने परिश्रमों से बिश्राम पाते हैं और उन के काम उन के पीछे चले आते हैं। १३

फिर मैं ने जो देखा तो क्या देखता हूं कि एक उजला मेघ है और उस मेघ पर मनुष्य के पुत्र के ऐसा कोई बैठा हुआ है; उस के सिर पर सोने का मुकुट और उस के हाथ में एक चोखा हंसिया था। और एक और स्वर्गदूत मन्दिर में से निकलके मेघ पर बैठनेवाले को महावाणी से पुकारके कहा तू अपना हंसिया लगा और काट क्योंकि तेरे काटने का समय आन पहुंचा है कि पृथिवी की खेती पक गई है। और जो मेघ पर बैठा था उस ने अपना हंसिया पृथिवी पर लगाया और पृथिवी का खेत कट गया। १४ १५ १६

१७ फिर एक और स्वर्गदूत मन्दिर में से जो स्वर्ग में है निकला; उस का भी एक चोखा हंसिया था। १८ और एक और स्वर्गदूत जिस को आग पर अधिकार था सो बेदी में से निकला; उस ने उस को जिस का चोखा हंसिया था महापुकार से पुकारके कहा तू अपना चोखा हंसिया लगा और पृथिवी की दाख के गुच्छों को काट क्योंकि उस की दाखें पक चुकीं हैं। १९ फिर उस दूत ने अपना हंसिया पृथिवी पर धरा और पृथिवी की दाखों को काटा और परमेश्वर के क्रोध की दाख के बड़े कोल्हू में डाल दिया। २० और वह उस दाख के कोल्हू में नगर के बाहर पेड़ा गया और उस दाख के कोल्हू से लोहू सौ कोस तक ऐसा बहा कि वह घोड़ों की बागों लों पहुंचा॥

१५ पर्ब्ब

फिर मैं ने एक और बड़ा और अचंभे का चिन्ह स्वर्ग में देखा सो यह है कि सात स्वर्गदूत पिछली सातों आपदों को लिये हुए हैं क्योंकि परमेश्वर का क्रोध उन में पूरा हुआ है। २ और मैं ने जैसे कांच का एक समुद्र आग से मिला हुआ देखा; और जो लोग जन्तु के ऊपर और उस की मूर्त्त के ऊपर और उस के चिन्ह के ऊपर और उस के नाम की संख्या के ऊपर जयवन्त हुए थे उन को मैं ने कांच के समुद्र पर परमेश्वर की बीणाओं को लिये हुए खड़े देखा। ३ और वे परमेश्वर के दास मूसा का भजन और मेम्ना का भजन यह कहके गाते हैं कि हे प्रभु परमेश्वर

सर्वशक्तिमान तेरे काम बड़े और अचंभे हैं; हे सन्तों के राजा तेरे मार्ग खरे और सच्चे हैं। हे प्रभु कौन तुझ से न डरेगा और कौन तेरे नाम का महातम बखान न करेगा क्योंकि तू ही अकेला पवित्र है कि सब देशों के लोग आके तेरे आगे आराधना करेंगे क्योंकि तेरे न्याय के काम प्रकाश हुए हैं। ४

और इस के पीछे जो मैं ने देखा तो क्या देखता हूं कि साक्षी के तंबू का मन्दिर स्वर्ग में खोला गया। और वे सातों स्वर्गदूत सातों आपदों को लिये शुद्ध और झलकता हुआ वस्त्र पहिरे हुए और सोने का पटका छाती पर बांधे हुए मन्दिर में से निकल आये। और चारों जीवधारियों में से एक ने सोने के सात कटोरे जो सदाकाल जीवते परमेश्वर के कोप से भरे हुए हैं उन सात स्वर्गदूतों को दिये। और वह मन्दिर परमेश्वर के ऐश्वर्य्य और उस के सामर्थ्य के कारण धुवें से भर गया; और जब लों उन सात स्वर्गदूतों की सात आपदें समाप्त न हुईं तब लों कोई उस मन्दिर में प्रवेश न कर सका॥ ५ ६ ७ ८

१६ पर्ब्ब

फिर मैं ने मन्दिर में से एक महावाणी सुनी; वह उन सातों स्वर्गदूतों से कहती थी कि जाके परमेश्वर के कोप के कटोरों को पृथिवी पर उण्डेलो। सो पहिला चला गया और अपना कटोरा पृथिवी पर उण्डेला; तब उन मनुष्यों पर जिन पर जन्तु का चिन्ह २

था और उन पर जो उस की मूर्त्त की पूजा करते थे एक बुरा और घिणेना फोड़ा ऊआ।

३ फिर दूसरे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा समुद्र में उण्डेला और वह मृत जन के लोहू के ऐसा हो गया और हर एक प्राणधारी जो समुद्र में था सो मर गया।

४ फिर तीसरे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा नदियों में और पानी के सोतों में उण्डेला और वे लोहू ५ हो गये। और मैं ने पानियों के स्वर्गदूत को यह कहते सुना कि हे प्रभु तू जो है और जो था और जो होगा तू धर्म्मी है कि तू ने ऐसा न्याय किया है। ६ क्योंकि सन्तों का और भविष्यतवक्ताओं का लोहू उन्हों ने बहाया है; सो तू ने पीने को उन्हें लोहू ७ दिया है कि वे इस के योग्य हैं। फिर मैं ने एक और स्वर्गदूत को बेदी में से यह कहते सुना कि हां हे प्रभु परमेश्वर सर्वशक्तिमान तेरे न्याय के काम सच्चे और खरे हैं।

८ फिर चौथे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा सूर्य्य पर उण्डेला और उसे मनुष्यों को आग से झुलसाने की ९ शक्ति दिई गई। और मनुष्य बड़े ताप से झुलस गये और वे परमेश्वर के नाम की जिसे इन आपदों पर अधिकार है निन्दा करते थे और अपने मन न फिराते थे न हो कि परमेश्वर का महातम प्रकाश होवे।

१० फिर पांचवें स्वर्गदूत ने जन्तु के सिंहासन पर

अपना कटोरा उण्डेला और उस के राज्य पर अन्धकार छा गया और वे पीड़ा के मारे अपनी जीभें चबाते थे। ११ और अपनी पीड़ा के और फोड़ों के कारण वे स्वर्ग के परमेश्वर की निन्दा करते थे और अपने कामों से मन नहीं फिराते थे।

१२ फिर छठे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा बड़ी नदी फुरात में उण्डेला और उस का पानी सूख गया जिसतें पूर्व के राजाओं के लिये मार्ग तैयार होवे। १३ फिर अजगर के मुंह में से और जन्तु के मुंह में से और झूठे भविष्यतवक्ता के मुंह में से मैं ने मेंडकों के रूप के ऐसे तीन अपवित्र आत्मा निकलते देखा। १४ क्योंकि वे अचंभे दिखलानेवाले पिशाचों के आत्मा हैं; और वे भूमि के और सारे जगत के राजाओं के पास जाते हैं कि उन्हें सर्वशक्तिमान परमेश्वर के महादिन के संग्राम के लिये एकट्ठा करें। १५ देख चोर के समान मैं आता हूं; धन्य वह है जो जागता है और अपने बस्त्रों की चौकसी करता है न हो कि वह नंगा फिरे और लोग उस का नंगापन देखें। १६ फिर एक जगह में जिस का नाम इबरानी भाषा में अरमगिद्दोन है उस ने उन को एकट्ठा किया।

१७ फिर सातवें स्वर्गदूत ने अपना कटोरा आकाश में उण्डेला; तब स्वर्ग के मन्दिर में से सिंहासन से एक महावाणी यह कहती हुई निकली कि हो चुका। १८ तब वाणियां और गर्जें और बिजलियां हुईं और

बड़ा भूईंडोल ऊआ कि जब से मनुष्य पृथिवी पर ऊए तब से ऐसा भारी और बड़ा भूईंडोल न ऊआ था। १९ और वह बड़ा नगर तीन टुकड़े हो गया और देश देश के लोगों के नगर गिर गये और बड़ी बाबुलून परमेश्वर के आगे स्मरण किई गई जिसतें वह अपने कोप की जलजलाहट के मद्य का कटोरा उसे देवे। २० तब हर एक टापू भाग गया और पहाड़ कहीं पाये न गये। २१ और आकाश से मनुष्यों पर मन मन भर के ओले गिरे और ओलों की आपदा के कारण से मनुष्यों ने परमेश्वर की निन्दा किई क्योंकि ओलों की आपदा निपट बड़ी थी॥

१७ पर्व्व

और उन सात स्वर्गदूतों में से जिन के पास वे सात कटोरे थे एक ने आके मुझ से बातें करके कहा कि अजी आओ महाछिनाल जो है जो बऊत से पानियों पर बैठी है उस का दण्ड मैं तुझे दिखाऊंगा। २ पृथिवी के राजाओं ने उस के संग छिनाला किया है और पृथिवी के रहनेवाले उस के छिनाले के मद्य से मद्यपीत हो गये हैं। ३ सो वह मुझे आत्मा की रीति से बन में ले गया और मैं ने एक लाल जन्तु पर जो परमेश्वर की निन्दा के नामों से भरा ऊआ था और जिस के सात सिर और दस सींग थे एक स्त्री बैठी देखी। ४ और वह स्त्री बैंजनी और लाल जोड़ा पहरे थी और सोने और रत्न और मोतियों से बिभूषित थी और वह एक सोने का कटोरा घिणौनी वस्तों से और

अपने छिनाले की मलिनता से भरा ऊआ अपने हाथ में लिये थी। और उस के माथे पर एक नाम लिखा था ; भेद ; बाबुलून महान ; छिनालों और पृथिवी की घिणौनी बातों की माता। और मैं ने देखा कि वह स्त्री सन्त लोगों के लोहू से और यिसू के साक्षी लोगों के लोहू से मतवाली हो रही थी और उस को देखकर मैं बड़े आश्चर्य्य से विस्मित हो गया।

तब स्वर्गदूत ने मुझ से कहा तू क्यों विस्मित हो गया ; उस स्त्री का भेद और वह जन्तु जिस पर वह बैठी है जिस के सात सिर और दस सींग हैं उस का भेद मैं तुझे बताऊंगा। वह जन्तु जो तू ने देखा है सो था और नहीं है और अथाह गढ़े में से निकलेगा और विनाश को जायगा और पृथिवी के रहनेवाले जिन के नाम जगत के आदि से जीवन की पुस्तक में लिखे नहीं गये जब वे उस जन्तु को जो था और नहीं है और तो भी है देखेंगे तब अचंभा करेंगे। यहां बुद्धिवाली समझ है ; वे सात सिर जो हैं सो सात पहाड़ हैं कि जिन पर वह स्त्री बैठी है। और सात राजा हैं ; पांच तो गिर गये ; एक है ; और दूसरा अब लों नहीं आया ; और जब वह आवेगा तब थोड़ी बेर लों उस का रहना होगा। और वह जन्तु जो था और नहीं है सो ही आठवां है और उन सातों में से है परन्तु वह विनाश को जाता है। और दस सींग जो तू ने देखे सो दस राजा हैं ; उन्हों ने राज्य अब

५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२

लों नहीं पाया परन्तु जन्तु के संग एक घड़ी भर राजा-
१३ ओं का सा अधिकार पावेंगे। इन की एक ही मत है
और वे अपना सामर्थ्य और अधिकार जन्तु को देंगे।
१४ वे लेला से युद्ध करेंगे और लेला उन्हें जीतेगा क्योंकि
वह प्रभुओं का प्रभु और राजाओं का राजा है और
जो उस के संग हैं सो बुलाये हुए और चुने हुए और
१५ विश्वस्त हैं। फिर उस ने मुझ से कहा जो पानी तू
ने देखे जहां वह छिनाल बैठी है सो जातिगण हैं
और समूह और देश देश के लोग और भाषाएं हैं।
१६ और उस जन्तु के दस सींग जो तू ने देखे सो छिनाल
से बैर करेंगे और उसे उजाड़ और नंगी करेंगे
और उस का मांस खायेंगे और उस को आग से जला-
१७ वेंगे। क्योंकि परमेश्वर ने उन के मनों में यह डाला
कि उस की मत पूरी करें और एक ही मत होवें और
जब लों परमेश्वर की बातें पूरी न होवें तब लों अपना
१८ राज्य जन्तु को देवें। और स्त्री जो तू ने देखी सो वह
महानगर है कि जो पृथिवी के राजाओं पर राज्य
करता है॥

१८ पर्ब्ब

इन बातों के पीछे मैं ने एक बड़े अधिकारवाले
स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा और पृथिवी उस
२ के तेज से प्रकाशमान हो गई। और उस ने बल की
बड़ी वाणी से पुकारके कहा गिर गया बाबुलून
महान जो है सो गिर गया और पिशाचों का निवास
और हर एक गंदे भूत की ठौर और हर एक अशुद्ध

और घिणौने पंछी का बसेरा हो गया। क्योंकि सब देशों के लोगों ने उस के छिनाले के क्रोध का मद्य पी लिया है और पृथिवी के राजाओं ने उस के संग छिनाला किया है और पृथिवी के ब्योपारी उस के भोग बिलास के द्रव्य से धनवान ऊए हैं। ३

फिर मैं ने एक और आकाशवाणी यह कहती सुनी कि हे मेरे लोगो तुम उस में से निकल आओ जिसतें तुम उस के पापों के भागी न होओ और उस की आपदों में से कुछ तुम पर न पड़े। क्योंकि उस के पाप स्वर्ग लों पऊंच गये हैं और उस के अधर्म के कर्म परमेश्वर ने स्मरण किया है। जैसा उस ने तुम से किया है वैसा ही तुम भी उस से करो और उस के कामों का दूना पलटा उसे देओ; उस कटोरे में जिसे उस ने भरा है तुम दुगणा करके उस के लिये भरो। जितना उस ने अपनी बड़ाई किई है और भोग बिलास में रही है उतना तुम उस को पीड़ा और शोक देओ क्योंकि वह अपने मन में कहती है मैं रानी बन बैठी हूं और रांड नहीं हूं और कभी शोक न देखूंगी। सो एक ही दिन में उस की आपदाएं अर्थात मृत्यु और शोक और काल उस पर टूटेंगी और वह आग से जलाई जायगी क्योंकि प्रभु परमेश्वर जो उस पर न्याय करता है सो शक्तिमान है। और पृथिवी के राजा जिन्हों ने उस के संग छिनाला और भोग बिलास किया है सो उस ४ ५ ६ ७ ८ ९

१० के जलने का धुवां देखके रोयें पीटेंगे। और उस की पीड़ा के डर से वे दूर खड़े हुए कहेंगे हाय हाय बाबुलन वह महानगर वह बलवन्त नगर क्या हुआ क्योंकि एक ही घड़ी में तेरा दण्ड आ पहुंचा है।
११ और पृथिवी के ब्योपारी लोग उस के लिये रोवेंगे और शोक करेंगे क्योंकि अब कोई उन को ब्योपार
१२ की वस्तें मोल नहीं लेता है। अर्थात सोना और रूपा और रत्न और मोती और मिहीन कपड़ा और बैंजनी और चेवली और लाल कपड़े और हर एक सुगन्द लकड़ी और नाना प्रकार के हाथीदांत के पात्र और नाना प्रकार के बहुमूल्य काष्ट के पात्र और पीतल के और लोहे के और संगमरमर के नाना प्रकार
१३ के पात्र जो ब्योपार की वस्तें हैं। और दारचीनी और धूप और सुगन्द द्रव्य और लुबान और मद्य और तेल और चोखा पिसान और गोहूं और पशु और भेड़ें और घोड़े और रथ और दास और मनुष्यों के प्राण।
१४ और तेरे मन माने को फलफलारी तुझ से अलग हो गई हैं और सारी भड़कोली और अदभुत पदार्थें तुझे छोड़ गईं और तू उन को फिर कभी न पावेगी।
१५ इन वस्तुओं के ब्योपारी लोग जो उस के कारण धनवान हो गये थे सो उस की पीड़ा के भय से दूर खड़े
१६ रहके रोवेंगे और बिलाप करेंगे। और कहेंगे कि हाय हाय वह महानगर जो मिहीन कपड़ा और बैंजनी और लाल वस्त्र पहने था और सोने से और

रत्नों और मोतियों से विभूषित था सो क्या हुआ
क्योंकि घड़ी भर में ऐसा बड़ा धन नष्ट हो गया है।
और हर एक मांझी और जहाज के सब लोग और १७
डांडी लोग और जितने जो समुद्र से काम रखते हैं
सो दूर खड़े रहे। और उस के जलने का धुवां उठते १८
देखकर पुकार उठके बोले इस महानगर के समान
कौन नगर है। और उन्हों ने अपने सिरों पर धूल १९
उड़ाई और रो रोके और विलाप कर करके पुकार
उठे कि हाय हाय ऐसा महानगर जिस के ठाठ से
सब लोग जो समुद्र में जहाज चलाते हैं धनवान हो
गये सो क्या हुआ क्योंकि घड़ी भर में वह उजड़ गया
है। हे स्वर्ग और हे पवित्र प्रेरितो और भविष्यतवक्ता २०
लोगो तुम उस पर आनन्द करो क्योंकि परमेश्वर ने
तुम्हारे लिये उस से पलटा लिया है।

फिर एक बलवान स्वर्गदूत ने बड़ी चक्की के पाट २१
का वैसा पत्थर उठाके यह कहके समुद्र में फेंका
बाबुलून वह महानगर यों बरबस से फेंका जायगा
और फिर कभी पाया न जायगा। और वीणा बजनि- २२
यों का और बाजेवालों का और बांसुरीवालों का
और नरसिंगा फूंकनेवालों का शब्द तुझ में कभी
फिर न सुना जायगा; और किसी प्रकार का उद्यम-
वाला कोई उद्यम क्यों न हो तुझ में कभी फिर न
पाया जायगा; और चक्की का शब्द तुझ में कभी फिर
न सुना जायगा। और दिया का उजाला तुझ में कभी २३

फिर न होगा; और दुल्हा दुल्हिन की वाणी तुझ में कभी फिर सुनी न जायगी क्योंकि तेरे ब्योपारी पृथिवी के बड़े लोग थे क्योंकि तेरी टोनाटानी से

२४ सब देशों के लोग धोखा खा गये हैं। और भविष्यत-वक्ता लोग और सन्त लोग और जितने जो पृथिवी पर घात किये गये उन का लोहू उसी में पाया गया॥

१९ पर्ब्ब

इन बातों के पीछे मैं ने स्वर्ग में बहुत लोगों की बड़ी वाणी यह कहती हुई सुनी कि हल्लिलूयाह; निस्तार और महातम और आदर और सामर्थ्य प्रभु

२ हमारे परमेश्वर को है। क्योंकि उस के न्याय सत्य और खरे हैं इस लिये कि उस ने उस महाछिनाल का जिस ने अपने छिनाले से पृथिवी को भ्रष्ट कर दिया है न्याय किया और अपने दासों के लोहू का

३ पलटा उस से लिया है। फिर दूसरी बार उन्हों ने कहा कि हल्लिलूयाह; और उस का धूआं सदाकाल

४ लों उठा रहता है। और वे चौबीसों प्राचीन और चारों जीवधारी मुंह के भल गिरे और परमेश्वर को जो सिंहासन पर बैठा है आराधना करके बोले

५ कि आमीन हल्लिलूयाह। और सिंहासन से यह कहती हुई एक वाणी निकली कि तुम लोग जो उस के दास हो और जो उस से डरते हो क्या छोटे क्या बड़े सब हमारे परमेश्वर की स्तुति करो।

६ और मैं ने महामण्डली का सा शब्द और बहुत से पानियों का सा शब्द और महागर्जों का सा शब्द

यह कहते सुना कि हल्लिलूयाह; क्योंकि प्रभु परमेश्वर सर्वशक्तिमान जो है सो राज्य करता है। हम ७ आनन्द करें और मगन होवें और उस का महातम बखान करें क्योंकि मेम्ना का बियाह आ पहुंचा है और उस की दुल्हिन ने अपने को संवारा है। और ८ उस को यह दया मिली कि वह निर्मल और उजला मिहीन कपड़ा पहिने क्योंकि मिहीन कपड़ा सन्तों का धर्म्म है। और उस ने मुझ से कहा तू यह लिख ९ जिन लोगों को मेम्ना के बियाह के खाने का नेवता दिया गया है सो धन्य हैं; और उस ने मुझ से कहा ये परमेश्वर की सत्य बातें हैं। और मैं उस के पांवों १० पर उस की पूजा करने को गिरा; तब उस ने मुझ से कहा देख ऐसा न करना क्योंकि मैं तेरा और तेरे भाइयों का जिन के पास यिसू की साची है संगी दास हूं; तू परमेश्वर की पूजा कर क्योंकि यिसू की साची जो है सो भविष्यतवाणी का आत्मा है।

फिर मैं ने स्वर्ग को खुला देखा और क्या देखता हूं ११ कि एक श्वेत घोड़ा है और उस का चढ़नेवाला बिश्वस्त और सत्य कहलाता है और वह धर्म से न्याय करता है और युद्ध करता है। उस की आंखें आग की लौ १२ की ऐसी थीं और उस के सिर पर बहुत से मुकुट थे और उस का एक नाम जिसे उस को छोड़ कोई नहीं जानता था सो लिखा हुआ था। और लोहू में १३ बोड़ा हुआ बस्त्र वह पहिने था और परमेश्वर का

१४ बचन उस का नाम है। और जो सेनाएं स्वर्ग में हैं सो उजले और निर्मल मिहीन कपड़ा पहिने ऊए श्वेत १५ घोड़ों पर उस के पीछे हो लिईं। उस के मुंह से एक चोखी तलवार निकलती है जिसतें वह देश देश के लोगों को उस से मारे; वह लोहे के दण्ड से उन पर प्रभुता करेगा और सर्वशक्तिमान परमेश्वर के कोप और जलजलाहट के मद्य के कोल्हू में वह रौंदता १६ है। और उस के बस्त्र पर और उस के जांघ पर यह नाम लिखा ऊआ है कि राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु यह है।

१७ फिर मैं ने एक स्वर्गदूत को सूर्य्य में खड़ा ऊआ देखा; उस ने सारे पच्छियों को जो आकाश के बीच में उड़ते हैं यह कहके बड़े शब्द से पुकारा तुम आओ और महान परमेश्वर का खाना खाने को एकट्ठे १८ आओ। कि तुम राजाओं का मांस खाओ और सेनापतियों का मांस और पराक्रमवालों का मांस और घोड़ों का मांस और उन के चढ़नेवालों का मांस और जो निर्बन्ध हैं और जो दास हैं और जो छोटे हैं और बड़े हैं सभों का मांस तुम खाओ।

१९ फिर मैं ने देखा कि वह जन्तु और पृथिवी के राजा और उन की सेनाएं एकट्ठी ऊईं जिसतें उस से २० जो घोड़े पर चढ़ा था और उस की सेना से लड़ें। और वह जन्तु पकड़ा गया और वह झूठा भविष्यतवक्ता जिस ने उस के आगे आश्चर्य्य कर्म दिखाये कि जिन

से उस ने उन लोगों को जिन्हों ने जन्तु का चिन्ह अपने पर लिया था और उन को जो उस की मूर्त्त को पूजते थे भरमाया था सो भी उस के संग पकड़ा गया; आग की झील में जो गन्धक से जल रहा है ये दोनों जीते डाले गये। और जो लोग रह गये सो उस तलवार से जो उस घोड़े के चढ़नेवाले के मुंह से निकलती थी मारे गये और सारे पच्ची उन के मांस से अघा गये॥ २१

२० पर्ब्ब

फिर मैं ने एक स्वर्गदूत को अथाह गढ़े की कुंजी और एक बड़ी जंजीर हाथ में लिये ऊए स्वर्ग से उतरते देखा। और उस ने अजगर को अर्थात पुराने सांप को जो इबलीस और शैतान है पकड़ा और सहस्र बरस लों जकड़ रखा। और उस ने उस को अथाह गढ़े में डाल दिया और उसे बन्द करके उस पर छाप किई जिसतें वह आगे को जब लों सहस्र बरस पूरे न होवें तब लों देश देश के लोगों को न बहकावे; इस के पीछे चाहिये कि वह थोड़ी बेर के लिये छूट जाय। २ ३

फिर मैं ने सिंहासन देखे और वे उस पर बैठ गये और न्याय उन्हें दिया गया; और जिन लोगों ने यिसू की साची के लिये और परमेश्वर के बचन के लिये अपना सिर दिया था और जिन्हों ने न तो जन्तु को न उस की मूर्त्त को पूजा था और न उस का चिन्ह अपने माथों पर और अपने हाथों पर लिया था उन्हों ४

के आत्माओं को मैं ने देखा; वे जी गये और सहस्र
५ बरस लों मसीह के संग राज्य करते रहे। परन्तु जो
मरे हुए लोग रह गये सो जब लों ये सहस्र बरस
पूरे न हुए तब लों जी नहीं गये; पहिला पुनरुत्थान
६ यही है। जो पहिले पुनरुत्थान का भागी है सो धन्य
और पवित्र है; ऐसों पर दूसरी मृत्यु का कुछ अधि-
कार नहीं है परन्तु वे परमेश्वर के और मसीह के
याजक होंगे और सहस्र बरस लों उस के संग राज्य
७ करते रहेंगे। और जब वे सहस्र बरस हो चुकेंगे
८ तब शैतान अपने बन्ध में से छुटाया जायगा। और
देश देश के लोग जो पृथिवी के चारों कोने में हैं
अर्थात गोग और मागोग जो हैं उन्हें भरमाने को
और संग्राम के लिये एकट्ठे करने को वह निकलेगा;
९ वे गिनती में समुद्र की रेत के समान हैं। वे पृथिवी
की चौड़ान पर चढ़ गये और सन्तों की छावनी को
और प्रिय नगर को घेर लिया; तब स्वर्ग से परमेश्वर
१० के पास से आग उतरी और उन को खा गई। और
शैतान जिस ने उन्हें भरमाया था सो आग और गन्धक
की झील में जहां जन्तु और झूठा भविष्यतवक्ता है
वहां डाला गया और वे रात दिन सदाकाल लों
पीड़ा में रहेंगे।

११ फिर मैं ने एक उजला बड़ा सिंहासन और उस
को जो उस पर बैठा था देखा; उस के संमुख से
पृथिवी और आकाश भागे और उन्हें कहीं जगह

न मिली। फिर मैं ने क्या देखा कि मृत लोग जो हैं क्या छोटे क्या बड़े सो परमेश्वर के आगे खड़े ऊए; और पुस्तकें खोली गईं और एक दूसरी पुस्तक जो जीवन की है सो खोली गई और मृत लोगों का न्याय जैसा उन पुस्तकों में लिखा था वैसा उन के कामों के समान किया गया। १३ और समुद्र ने जो मृत लोग उस में थे उन को उछाल फेंका; और काल और पाताल ने जो मृत लोग उन में थे उन को फेर दिया और उन में हर एक का न्याय उस के कामों के समान किया गया। १४ फिर काल और पाताल जो हैं सो आग की झील में डाले गये; दूसरी मृत्यु यही है। १५ और जो कोई जीवन की पुस्तक में लिखा ऊआ न मिला सो आग की झील में डाला गया॥

२१ पर्ब्ब

फिर मैं ने एक नये स्वर्ग को और एक नई पृथिवी को देखा क्योंकि अगला स्वर्ग और अगली पृथिवी जाती रही थी और कोई समुद्र आगे न रहा। २ और जैसे दुल्हिन अपने पति के लिये सिंगारी ऊई है वैसे मुझ यूहन्ना ने परमेश्वर की ओर से पवित्र नगर को अर्थात नये यरूसलम को तैयार किया ऊआ स्वर्ग से उतरते देखा। ३ और मैं ने स्वर्ग से एक महावाणी यह कहती सुनी कि देख परमेश्वर का तंबू मनुष्यों के संग है और वह उन के संग डेरा करेगा और वे उस के लोग होंगे और परमेश्वर आप उन के संग उन का परमेश्वर होगा। ४ और उन की आंखों से

परमेश्वर हर एक आंसू पोंछेगा; फिर आगे न मृत्यु न शोक न विलाप होगा न आगे फिर दुःख होगा; क्योंकि अगली बातें जाती रहीं।

५ और जो सिंहासन पर बैठा था उस ने कहा देख मैं सब कुछ नया करता हूं; और उस ने मुझ से कहा ६ लिख क्योंकि ये बातें सत्य और बिश्वस्त हैं। और उस ने मुझ से कहा कि हो चुका; मैं अलफा और ओमेगा मैं आदि और अन्त हूं; जो प्यासा है उस को मैं अमृत ७ जल के सोते से सेंत देऊंगा। जो जयवन्त होता है सो सब का अधिकारी होगा और मैं उस का परमे- ८ श्वर हूंगा और वह मेरा पुत्र होगा। परन्तु डरनेवाले जो हैं और अविश्वासी और घिणौने और हत्यारे और छिनले और टोनहे और मूर्त्त पूजनेवाले और सारे झूठे जो हैं सो अपना अपना कुभाग उस झील में जो आग और गन्धक से जल रही है पावेंगे; दूसरी मृत्यु यही है।

९ और उन सात स्वर्गदूतों में से जिन के पास सात पिछली आपदों से भरे हुए सात कटोरे थे एक मुझ पास आके मुझ से बातें करके बोला कि इधर आ मैं १० तुझे दुल्हिन अर्थात लेला की पत्नी दिखाऊंगा। और वह मुझे आत्मा की रीति से एक बड़े और ऊंचे पहाड़ पर ले गया और उस ने उस बड़े नगर पवित्र यरू- सलम को परमेश्वर के पास से स्वर्ग से उतरते मुझे ११ दिखाया। परमेश्वर का तेज उस में था और उस का

प्रकाश बहुमूल्य मणि के समान था जैसा सूर्य्यकान्त मणि जो बिल्लौर के ऐसा उज्जल हो वह वैसा था। और उस की भीत बड़ी और ऊंची थी और उस के बारह नगरद्वार थे और उन द्वारों पर बारह स्वर्ग-दूत थे और इसराएल के सन्तानों के बारह वंशों के नाम उस पर लिखे थे। पूर्व्व को तीन नगरद्वार उत्तर को तीन नगरद्वार दक्षिण को तीन नगरद्वार और पश्चिम को तीन नगरद्वार थे। और नगर की भीत की बारह नेवें थीं और उन पर मेम्ने के बारह प्रेरितों के नाम थे। और जो मुझ से बातें करता था उस के हाथ में एक सोने की छड़ी थी जिसतें वह नगर को और उस के द्वारों को और उस की भीत को नापे। और वह नगर चौकोर था और जितनी उस की लंबाई उतनी उस की चौड़ाई थी; उस ने नगर को उस छड़ी से नापकर साढ़े सात सौ कोस पाया; और उस की लंबाई और चौड़ाई और ऊंचाई एकसां थी। फिर उस ने भीत को नापा तो मनुष्य की नाप से जो स्वर्गदूत की है उस ने एक सौ चवालीस हाथ पाया। और वह भीत सूर्य्यकान्त की बनी थी और वह नगर चोखे कुंदन का था वह निर्मल कांच के समान था। और उस नगर की भीत की नेवें अनेक प्रकार के मणियों से बिभूषित थीं; पहिली नेव सूर्य्यकान्त की थी; और दूसरी नीलमणि की; और तीसरी गोमेद सन्निभ की; और चौथी मरकत की। और पांचवीं गोमेदक

१२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०

को; और छठी आगिन पत्थर की; और सातवीं सुनहरे पत्थर की; और आठवीं पेरोज की; और नवीं पुखराज की; और दसवीं गोदन्त की; और ग्यारहवीं सुम्बुली पत्थर की; और बारहवीं मर्टी
२१ मणि की। और बारह नगरद्वार बारह मोती थे एक एक द्वार एक एक मोती का था; और नगर की सड़क
२२ चोखे कुंदन की और निर्मल कांच के समान थी। परन्तु मैं ने उस में कोई मन्दिर न देखा क्योंकि प्रभु परमेश्वर सर्वशक्तिमान और लेला जो है सो उस का मन्दिर
२३ हैं। और वह नगर सूर्य्य और चन्द्रमा से कुछ प्रयोजन नहीं रखता था जो उन को ज्योतिमान करें क्योंकि परमेश्वर के तेज ने उसे ज्योतिमान कर रखा है
२४ और लेला जो है सो उस की ज्योति है। और देश देश के लोग जिन्हों ने मुक्ति पाई है सो उस की ज्योति में फिरेंगे और पृथिवी के राजा अपना महा-
२५ तम और मान महत उस में लाते हैं। और उस के द्वार कभी दिन को बन्द नहीं होंगे क्योंकि रात वहां
२६ नहीं होगी। और वे देश देश के लोगों का महातम
२७ और मान महत उस में लावेंगे। और जो कुछ अपवित्र है अथवा घिणौनी बात का अथवा झूठ का जो करनेहारा है सो उस में कभी प्रवेश न करेगा परन्तु जो लेला के जीवन की पुस्तक में लिखे ऊए हैं सो ही प्रवेश करेंगे॥

२२ पर्ब्ब

और उस ने अमृत जल की एक निर्मल नदी बिल्लौर

के ऐसा उज्जल मुझे दिखाई और वह परमेश्वर और लेला के सिंहासन से निकलती थी। और उस की सड़क के बीच में और नदी के वार पार जीवन का वृक्ष था; वह हर एक महीने में अपना फल लाके बारह बार फलता था और उस वृक्ष के पत्ते देश देश के लोगों के चंगा करने के लिये थे। फिर कोई स्राप आगे न रहेगा और परमेश्वर का और लेला का सिंहासन उस में होगा और उस के दास उस की सेवा करेंगे। और वे उस का मुंह देखेंगे और उस का नाम उन के माथों पर होगा। वहां रात न होगी और उन को दीपक का और सूर्य्य के प्रकाश का कुछ प्रयोजन नहीं है क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन को प्रकाश देता है और वे लोग सदाकाल राज्य करेंगे। २ ३ ४ ५

फिर उस ने मुझ से कहा ये बातें बिश्वस्त और सत्य हैं; और पवित्र भविष्यतवक्ताओं के प्रभु परमेश्वर ने अपने स्वर्गदूत को भेजा है जिसतें उन बातों को जो जल्द होने को हैं सो अपने दासों पर प्रगट करे। देख मैं जल्द आता हूं; जो इस पुस्तक की भविष्यतवाणी की बातों को धरे रहता है सो धन्य है। ६ ७

और मुझ यूहन्ना ने इन बातों को देखा और सुना; और जब मैं ने सुना और देखा था तब मैं उस स्वर्गदूत के पांवों पर जिस ने ये बातें मुझे दिखाईं पूजा करने को गिरा। तब उस ने मुझ से कहा देख ८ ९

ऐसा न करना क्योंकि मैं तेरा और भविष्यतवक्ताओं का जो तेरे भाई हैं और जो इस पुस्तक की बातों को धारण करते हैं उन का संगी दास हूं; तू परमे-
१० श्वर ही की पूजा कर। फिर उस ने मुझ से कहा तू इस पुस्तक की भविष्यतवाणी की बातों पर छाप
११ मत कर क्योंकि वह समय निकट आया है। जो अधर्मी है सो अधर्मी ही बना रहे; और जो मलीन है सो मलीन ही बना रहे; जो धर्मी है सो धर्मी ही बना रहे; और जो पवित्र है सो पवित्र ही बना रहे।
१२ और देख मैं जल्द आता हूं और मेरा फल मेरे संग है जिसतें मैं हर एक को जो जैसे उस के काम हैं
१३ सो वैसा उसे देऊं। मैं अलफा और ओमेगा मैं आदि
१४ और अन्त मैं पहिला और पिछला हूं। धन्य वे जो उस की आज्ञाओं पर चलते हैं जिसतें जीवन के वृक्ष में उन को अधिकार मिले और वे नगर द्वारों से नगर
१५ में प्रवेश करें। क्योंकि कुत्ते और टोनहे और छिनले और हत्यारे और मूर्त्त पूजनेहारे जो हैं और जो कोई झूठ का चाहनेहारा और करनेहारा है ये
१६ सब बाहर हैं। मुझ यिसू ने अपने स्वर्गदूत को भेजा है जिसतें मैं कलीसियाओं में इन बातों की साक्षी तुम्हें देऊं; मैं दाऊद का मूल और बंश हूं और तेजस्वी
१७ प्रभात तारा हूं। और आत्मा और दुल्हिन कहती हैं कि आ; और जो सुनता है सो कहे कि आ; और जो

प्यासा है सो आवे; और जो कोई चाहे सो अमृत जल सेंत लेवे।

१८ मैं हर एक जन के लिये जो इस पुस्तक की भविष्यत-वाणी की बातें को सुनता है यह साची देता हूं कि यदि कोई इन बातें में कुछ बढ़ावे तो परमेश्वर उन आपदें को जो इस पुस्तक में लिखी हुई हैं उस पर बढ़ावेगा। १९ और यदि कोई इस भविष्यतवाणी की पुस्तक की बातें में से कुछ निकाल डाले तो परमेश्वर उस का भाग जीवन की पुस्तक में से और पवित्र नगर में से और इन बातें में से जो इस पुस्तक में लिखी हैं निकाल डालेगा।

२० जो इन बातें की साची देता है सो यह कहता है मैं निश्चय जल्द आता हूं; आमीन; हां हे प्रभु यिसु आ। २१ हमारे प्रभु यिसु मसीह की कृपा तुम सभें पर होवे; आमीन॥

इति॥